गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १६



बिज्जी : गोहि सभक बीच

न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा :
सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार
गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक
आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १६

बिज्जी : गोहि सभक बीच

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १६

बिज्जी : गोहि सभक बीच

न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा : सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

प्रकाशकीय विवरण

शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड : १६

आलोचनाक विषय : बिज्जी : गोहि सभक बीच — न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल उपन्यासक प्रकाशन-विवरण : विदेह; मूल पाण्डुलिपिमे © गजेन्द्र ठाकुर, २०२१/२०२६ अंकित अछि।

एहि समीक्षा-संस्करणक कॉपीराइट : © प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित।

मुद्रित आकार : ६ × ९ इंच

एहि पोथीमे मूल उपन्यासक ४१८ दृश्यक सम्पूर्ण साहित्यिक अध्ययन अछि। अध्ययन-इकाईसभ आलोचनात्मक विन्यास लेल बनाओल गेल; मूल उपन्यासमे क्रमाङ्कित अध्याय नहि अछि।

भूमिका

‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क आरम्भ एक जीवक हस्तक्षेप आ एक परिवारक बचावसँ होइत अछि। कथा धीरे-धीरे निविदा-व्यवस्था, आर्थिक दबाव, मृत्यु-जाँच, डिजिटल वित्तीय अपराध, अदालत, पारिवारिक शोक आ सामाजिक पुनर्वास धरि फैलैत अछि। एहि विस्तारमे न्याय-दर्शन अमूर्त उपदेशक रूपमे नहि, अनेक पात्रक निर्णय आ गलत सिद्ध होयवला अनुमानक परीक्षणमे उपस्थित होइत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक एहि मूल मैथिली उपन्यासमे ४१८ दृश्य-प्रसङ्ग अछि। समीक्षा ओकरा सम्पादकीय दृष्टिसँ एक सय पाँच अध्ययन-इकाईमे पढ़ैत अछि। प्रत्येक मूल दृश्यक अलग आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि; प्रत्येक दृश्य-समूहक बाद तुलनात्मक मूल्याङ्कन अछि। अन्तमे सम्पूर्ण कृतिक कथात्मक, भाषिक, दार्शनिक आ सामाजिक मूल्याङ्कन प्रस्तुत अछि।

समीक्षाक केन्द्र ‘अपराधी के?’ मात्र नहि, ‘अभिलेख कतेक कहैत अछि?’, ‘निर्दोष व्यक्तिक सम्मान कोना सुरक्षित रहय?’, ‘दोषसिद्धि आ नैतिक दायित्वमे की अन्तर अछि?’ आ ‘अपराधक न्यायिक निर्णयक बाद जीवन कोना चलैत अछि?’ सन प्रश्न अछि। उपन्यासक भीतर कल्पित पात्रक कथन, पुलिसक अनुसन्धान, न्यायालयक निर्णय आ पारिवारिक स्मृति अलग-अलग स्रोत छथि; एहि पुस्तकमे ओहि भेदकेँ बनौने राखल गेल अछि।

मूल आख्यानक निजी पात्र, संस्था आ अपराधक प्रसङ्ग साहित्यिक कल्पना छथि। साहित्यिक आलोचना ककरो वास्तविक व्यक्ति वा संस्थाक विरुद्ध आपराधिक निष्कर्ष नहि बनबैत। भारतीय प्रमाण-विचार, नव्य न्याय, पाश्चात्य अपराध-आख्यान आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक उपयोग स्रोत-निष्ठ

तुलनाक लेल कएल गेल अछि; मूल पाठमे अनुपस्थित शास्त्रीय उद्धरण वा बाहरी घटनाकेँ मूल सामग्री मानि नहि जोड़ल गेल।

न्यायक विवेक, आलोचनाक पद्धति आ मानवीय गरिमाक प्रश्न साहित्यक भीतर कोना बदलैत अछि, से देखब एहि खण्डक उद्देश्य अछि। आरम्भिक बिज्जीक साहस अन्तिम पृष्ठ धरि रहैत अछि, मुदा ओकर अर्थ युद्धक विजयसँ आगाँ नागरिकक वितरित सतर्कता बनैत अछि।

अनुक्रमणिका

१. पहराक प्राक्कथा सँ कागजक अदृश्य खर्चा धरि 16

२. अनाम धमकी, मृत्यु आ पहिल प्रमाण-संघर्ष 16

३. सङ्ख्याक सङ्केत, रक्षकक पुनरागमन आ सम्भावित भ्रामक प्रमाण 20

४. पूछताछ, छओ प्रतिशतक मेल आ गलत सुरागक टूटनाइ 24

५. दबाव, मोहन पासवानक मृत्यु आ निविदा-प्रतिस्पर्धाक नियन्त्रण 28

पहिल अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १–२० 31

६. लोकसेतुक कागज, भयक चिट्ठी आ संयुक्त अन्वेषण 34

७. आँकड़ा, लेखापालक शब्द आ दिगन्तक केन्द्र 37

८. मयंकक भय, सरोजिनीक प्रश्न आ प्रणवेशक कथन 40

९. आंशिक साक्षी, सभ्य अपराधभाषा आ अम्बरक उद्भव 43

१०. रंजनाक प्रतिवाद, देवांशुक पूछताछ आ कन्हैयाक क्षति 46

दोसर अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २१–४० 49

११. जनविश्वासक धन-प्रवाह सँ ‘अलग उपाय’ धरि 52

१२. विहानक मंच, अनिरुद्धक परिवार आ अनिलक असिद्ध कथन 55

१३. आर्थिक गिरफ्तारी सँ न्यायालयक अनिश्चित दहलीज धरि 58

१४. दोषसिद्धि, निर्दोषक दाग आ पुनर्वासक अपूर्णता 60

१५. ईशानक गणना सँ हथेलीक डिजिटल जाल धरि 62

तेसर अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ४१–६० 65

१६. नदी पढ़बाक शिक्षा सँ आँकड़ाक नैतिकता धरि 67

१७. ऋणक लोभ, धन-वाहक व्यवहार आ वचनक भार 71

१८. रात्रि कक्षक अर्थतन्त्र आ निर्दोष परिवारक समय 75

१९. समानान्तर जाँच आ पारिवारिक स्मृतिक प्रतिरोध 79

२०. प्रमाणक सीमापर प्रतिशोध, साझेदारी आ मनोजक चिन्ह 83

चारिम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ६१–८० 87

२१. छापाक दृश्य, प्रचारक भाषा आ असिद्ध सम्बन्ध 91

२२. व्यक्तिगत शोक, संस्थागत जोखिम आ तीन सम्भावना 95

२३. पुरान धन-प्रवाह, ई-पत्र आ जाँचक सीमाविस्तार 99

२४. साझा मध्यस्थ, जीविका आ मृतकक उत्तरदायित्व 103

२५. वास्तविक व्यापार, मुखौटा संस्था आ नकारात्मक प्रमाण 107

पाँचम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ८१–१०० 111

२६. जानि-बुझि अनभिज्ञ रहबाक मूल्य आ अनुपस्थित रहि गेल अन्तिम क्षण 115

२७. शोकक उत्तराधिकार, सामाजिक बदनामी आ नव डिजिटल सूत्र 118

२८. हेरायल लेखाधिकारी, बिरजूक लिफाफा आ पुरान पैसाक सम्भावित बाट 121

२९. देखाइत पहरा, बूढ़ गवाहक अधिकार आ कथित षड्यन्त्रक परीक्षा 124

३०. मरल गवाहक बही, ‘चन्द्र’क सम्भावना आ दस्तावेजी वित्तीय सेतु 127

छठम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १०१–१२० 130

३१. शशांकक उत्तर, ईशानक नब दायित्व आ प्रदीपक आत्मसमर्पण 133

३२. काराक समय, पारिवारिक उत्तरदायित्व आ ‘चन्द्र’क द्विअर्थी सङ्केत 137

३३. अम्बरक कर्मी, समृद्धिक परिसमापन आ दू उदयरेखाक भ्रम 140

३४. अदितिक अनिश्चित पहिचान, घरक भय आ बिज्जीक मेटायल चिह्न 143

३५. सत्यप्रकाशक लिखित आपत्ति, वृद्ध साक्षी आ ‘डी.आर.’क असिद्ध सङ्केत 146

सातम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १२१–१४० 149

३६. देवांशुक सीमित स्वीकार, हरिचरणक अपूर्ण सूत्र आ मृणालिनीक प्रश्न 152

३७. गिरफ्तारीक अर्थ, काराक विधि आ प्रदीपक अधूर परिवर्तन 156

३८. अम्बरक संस्थागत आत्मालोचना आ सत्यप्रकाशक दस्तावेजी पुनरागमन 159

३९. अदितिक पेटी, पुनः खुलल मृत्यु-जाँच आ जीविका पर रोकक दुष्परिणाम 162

४०. प्रयोजनक दार्शनिक विवेचन, बदलल भूगोल आ बासुदेवक अनिश्चित साक्ष्य 166

आठम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १४१–१६० 170

४१. परिवहन-बहीक अधूर सङ्केत, जीवित गवाही आ वित्तीय जालक नव कड़ी 174

४२. मनोजक कथनक सीमा, वैध परामर्शक आवरण आ शैलेशक गृहत्रासदी.. 178

४३. आँकड़ाक संशोधन, द्वि-परिकल्पना आ प्रमाणक नकारात्मक फल..... 182

४४. मारपीटक आदेश-शृंखला, सौरभक उदय आ चश्माक स्मृति..... 186

४५. सौरभ बर्धन, समवायक सिद्धान्त आ निजी दाँवक स्वीकृत चर्चा..... 189

नवम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १६१–१८०..... 193

४६. विधिक सावधानी, कारागारक अपमान आ धनक अदृश्य यात्रा..... 197

४७. पूछताछ, ई-पत्र, सार्वजनिक चेहरा आ पुरान वाहन..... 201

४८. स्मृतिक असमर्थ भाषा, हरियर ट्रक आ अभियुक्तक सार्वजनिक प्रतिमा. 205

४९. अनुसन्धानक पद्धति, पारिवारिक सत्य आ समयसँ हेरायल साक्षी..... 209

५०. बाढ़ि, इतिहासक छँटनी आ ‘एस.के. प्रकरण’..... 213

दसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य १८१–२००..... 217

५१. राहत-शिविरक बिज्जी, स्मृतिक कागज आ वाहन-साक्ष्य..... 222

५२. स्वीकारोक्तिक जाँच, वृद्ध विधवा आ न्यायिक स्वतन्त्रता..... 226

५३. खुलल फाटक, भीजल पोथी आ राज्यक सावधान प्रतिवेदन..... 230

५४. आरोप-पत्रक वर्गीकरण, सामाजिक क्षति आ नकारात्मक निष्कर्ष..... 234

५५. न्यायालयक पहिल साक्षी : वित्तीय असामान्यता आ सबीनाक निर्णय... 238

एगारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २०१–२२०..... 242

५६. खाताधारकक गवाही, प्रत्यक्ष कथन आ हिंसाक अनुमान..... 247

५७. डायरीक बहिष्कार, कार्यकारी ज्ञान आ प्रचारित दोष..... 251

५८. सार्वजनिक सनसनी, बाढ़-दाग आ सीमित आरोप-विचार..... 255

५९. डिजिटल प्रमाणक सीमा, वित्तीय विश्लेषण आ घरेलू विश्वास..... 259

६०. सार्वजनिक अभिलेखमे नामक पुनरागमन आ पहराक उत्तराधिकार..... 263

बारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २२१–२४०..... 267

६१. सामूहिक जालक भीतर व्यक्तिगत दोषक पृथक्करण..... 272

६२. बचावक अधिकार, दण्डक सीमा आ साक्षी-स्मृतिक शुद्धता.....276

६३. निर्णय पढ़बाक नैतिकता आ वैयक्तिक दण्डक सीमा.....280

६४. संस्थागत सुधार आ पुरान मृत्यु-मामलाक अन्तिम प्रमाण-शृंखला.....284

६५. सीमित न्यायिक निष्कर्ष, शोकक स्वायत्तता आ प्रतीक्षाक अन्त.....289

तेरहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २४१–२६०.....293

६६. पहराक उत्तराधिकार आ प्रमाणक घरेलू परम्परा.....298

६७. निर्णयक पछाति अपील, क्षमाक सम्भावना आ सावधान रक्षक.....302

६८. संस्थागत आत्मपरीक्षण, शिक्षण आ रोजीरोटीक पुनर्प्राप्ति.....305

६९. कलङ्कक प्रतिवाद, पुनर्स्थापनक श्रम आ अपीलक स्वाधीनता.....309

७०. उत्तराधिकारविहीन न्याय नहि : अनिरुद्धक विदाइ आ नव नीति.....313

चौदहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २६१–२८०.....317

७१. सार्वजनिक अभिलेख, निजी दुःख आ स्मृतिलिखनक नैतिकता.....323

७२. भयमुक्त पहरा आ जाँच-पद्धतिक पीढ़ीगत हस्तान्तरण.....326

७३. अपीलक आधा-सत्य, वित्तीय अपराधक देहधारी पीड़ा आ कारागारक प्रश्न 328

७४. दण्डक बाद पुनर्वास, बेटीक न्यायबोध आ लेखकीय प्रमाणशास्त्र.....326

७५. गलत गिरफ्तारी रोकनाइ, आँकड़ाक अर्थ आ अनुभवसँ जन्मल पहरा....332

पन्द्रहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य २८१–३००.....344

७६. अपराधक अनुभवसँ सार्वजनिक चेतावनी धरि : प्रतिपूर्ति, शिक्षण आ साक्षात्कार.....326

७७. बिज्जी-रूपकक सीमा आ ईशानक लेखकीय आरम्भ.....336

७८. स्मृतिक अनिश्चितता, तथ्यगत भूल आ जाँचक अनुपात.....326

७९. पुस्तकक सार्वजनिक उपयोग, अपीलक विभाजित अर्थ आ दोषस्वीकारक व्यवहार.....340

८०. आत्मबोध, काल्पनिक रूपान्तरण आ साझा प्रमाण-पद्धति.....326

सोलहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ३०१–३२०.....372

८१. जीव आ रूपकक पृथक अधिकार : बिज्जीक परिवारसँ सार्वजनिक जीवन धरि.....349

८२. परिवारक पाँच पाँति, बदलैत संसार आ लेखकीय प्रमाण-अनुशासन.....326

८३. नकारात्मक न्याय, स्मृतिक उपयोग आ सार्वजनिक संस्थाक आत्मस्वीकार 354

८४. स्मृतिक प्रशिक्षण, अपीलक सीमित अर्थ आ पुनर्वासक व्यावहारिक परीक्षा 326

८५. पुनर्वास, संस्थागत जागरूकता आ भयक साम्राज्यक सीमित पराजय....358

सत्रहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ३२१–३४०.....401

८६. पोथीक छठम पाँति आ नव युगक आवाज : जीवनक अधिकारसँ तकनीकी साक्ष्य धरि.....326

८७. विश्वसनीय ध्वनि आ सामाजिक भरोसा : पीड़ितक अपमानसँ रोकथामक लोकभाषा धरि.....363

८८. सामाजिक अनुभवक पुनर्वितरण : सबीनाक दोकानसँ संस्थाक स्वीकार-दीवाल धरि.....326

८९. दण्डपश्चात व्यक्तित्व, वृद्धावस्था आ पोथीक सातम पाँति.....367

९०. जाँचक पाँच नियम, अपूर्ण उपन्यास आ जीवनक अन्तिम विकल्प.....326

अठारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ३४१–३६०.....430

९१. औषधिक समयसँ आठम पाँति धरि : पहराक उद्देश्य आ प्रियजनक स्वातन्त्र्य 376

९२. निजी पोथीक सार्वजनिक यात्रा आ बीमारीमे बदलैत निर्णय.....326

९३. अनाम अधिकारसँ अन्तिम देखभालक निर्णय धरि : साहित्यक संयम आ जीवनक मर्यादा.....381

९४. अन्तिम चिकित्सकीय निर्णय आ मृत्युकेँ कथात्मक तमाशासँ बचायब....326

९५. रिक्त नवम पाँति, निजी पत्र आ ‘शायद’ पर रुकल निर्णय.....386

उन्नैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ३६१–३८०.....456

९६. शोकक कथनाधिकार, जीवित समय आ पोथीक उपयोग.....326

९७. उत्तरदायित्वक पृथक्करण आ छोट सङ्केतक समयोचित परीक्षा.....326

९८. संस्थागत रिक्ति, अपराध-पश्चात संवाद आ इतिहासक स्वार्थ.....326

९९. विद्यालय, दोकान, शोध आ अनाम आवाजक सार्वजनिक जीवन.....396

१००. घरक वस्तु, विपरीत प्रमाण आ जाँच-पछात विनम्रता.....326

बीसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ३८१–४००.....479

१०१. किनारक परिवर्तन, अन्तक तैयारी आ अधूर प्रमाण.....405

१०२. निर्दोष विसंगति, उत्तरदायित्वक भाषा आ सुधारक असुविधा.....326

१०३. संस्थागत पहरा, अधूर पोथी आ कथाक काट-छाँट.....410

१०४. जीवित जीवक दृश्य आ उपन्यासक संयमित अन्त.....326

१०५. वितरित पहरा आ अन्हारक भीतर अविरत जीवन.....415

एकैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · दृश्य ४०१–४१८.....500

सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन.....503

अध्ययन-इकाई १ — पहराक प्राक्कथा सँ कागजक अदृश्य खर्चा धरि

बिज्जी, गहुमन आ गोहि : रक्षकक तीन तह

उपन्यासक पहिल दृश्य गढ़ नारिकेलक भीजल आँगनमे साँप आ बिज्जीक टकरावसँ शुरू होइत अछि। बरखा नहि भेलाक बावजूद कमला-बलानक पातर धारक गन्ध ठाढ़ रहब केवल वातावरण-चित्र नहि; नायक-समूहक जीवनमे जे खतरा एखन अदृश्य अछि, ओकर भौतिक पूर्वसूचना अछि। धनेश्वरी देवी सुतल बहू मृणालिनी आ सात बरखक ईशानक रक्षा करबाक समय चिचिआब अथवा चुप रहबाक दू विपरीत संकट देखैत छथि। दृश्यक तनाव एहि निर्णय-विलम्बसँ बनैत अछि; बिज्जीक आविर्भाव नायकक आदेशक अनुसरण नहि, स्वतन्त्र प्राकृतिक क्रिया अछि। एहि कारण आरम्भमे रक्षकक छवि मनुष्यक इच्छासँ बाहर रहलो पर मनुष्यक विवेकमे प्रवेश करैत अछि।

गहुमन मरल भेटैत अछि, बिज्जी नहि भेटैत अछि; केवल ओकर चारि छोट पदचिह्न रहि जाइत अछि। एहि अनुपस्थित उपस्थिति पर पूरा उपन्यासक शीर्षकीय संकेत ठाढ़ अछि। धनेश्वरीक बूढ़-पुर्खासँ सुनल कहबीकेँ कथन स्वयं विज्ञानक प्रमाण नहि मानैत अछि। आलोचनामे एहि वाक्यकेँ प्राणिविज्ञानक सत्य जकाँ उद्धृत करब अनुचित होयत। गोहि पानिमे रहि देरिसँ डराउत अछि, गहुमन सोझाँ देखाइत अछि, बिज्जी छोट होइतहुँ पहरा दैत अछि—एहि त्रिभाजनमे दृश्य-अदृश्य आ शक्ति-विवेकक रूपक निर्माण होइत अछि।

ईशानक बाल्यकालसँ आठ वर्ष बादक समयमे कथा अचानक छलाङ्ग लगबैत अछि। पहिल दृश्यक बाल-भय पछिला दृश्यसभक सामाजिक भय लेल पूर्वपीठिका बनैत अछि। कथावाचक भविष्यक हिंसाक सङ्केत दैत अछि, मुदा अपराधीक नाम वा परिणाम नहि बतबैत। एहि अग्रसूचना-संरचनासँ पाठक रक्षकक रूपक मोनमे लऽ कऽ संस्थागत संसारमे प्रवेश करैत अछि। यहाँ प्रतीकक शक्ति ओकर बारम्बार स्पष्टीकरणमे नहि, पहिल पदचिह्न आ बादक अनुपस्थिति बीच बनल दूरीमे अछि।

विकासक दृश्य आ निविदाक अदृश्य व्यवस्था

दोसरा दृश्यमे सड़क, मोबाइल टावर, स्वचालित धननिकासी केन्द्र आ विकास-योजनाक सार्वजनिक सूची सामाजिक परिवर्तनक दृश्य चिह्न अछि। तटबन्ध, पुलिया, विद्यालय भवन आ पाथर-आपूर्ति कागज पर स्वतंत्र काज अछि; आख्यान कहैत अछि जे व्यवहारमे पैसाक प्रवाह परस्पर जुड़ल अछि। सत्यप्रकाश कर्णक “कमला निर्माण सेवा”क सीमित मशीन, ट्रक आ स्थायी मजदूरक उल्लेख हुनका पैघ व्यावसायिक नायक नहि, निर्भर आर्थिक इकाईक मालिक ठहरबैत अछि। ई लघुता हुनकर नैतिक निर्णयक मूल्य बढ़बैत अछि, कारण प्रतिस्पर्धी निविदामे प्रवेश हुनका लेल जीवनक दुर्लभ अवसर अछि। ऑनलाइन निविदाक कागज, बैंक गारंटी आ अनुभव-प्रमाणपत्र संस्थागत पारदर्शिताक सम्भावना खोलैत अछि; एक अनाम फोन तुरन्त छह प्रतिशतक “ऊपरक हिस्सा” माँगैत अछि। दू प्रतिशत अग्रिमक माँगक संख्यात्मक स्पष्टता धमकीकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि, मुदा फोन करनिहारक परिचय अस्पष्ट रहैत अछि। “ई रिश्वत नहि। ई व्यवस्था अछि” कहबाक शिल्प ई देखबैत अछि जे अवैध लाभकेँ स्वीकृत प्रथाक नाम दऽ सामान्य बनेबाक भाषिक प्रयास कएल जा रहल अछि। सत्यप्रकाशक प्रतिवाद निविदा-पत्रक नियम पर ठाढ़ अछि; हुनकर आक्रमणकारीक नाम अज्ञात अछि। एहि कारण आलोचना कोनो विशिष्ट अधिकारीक अपराध मानि नहि चलि सकैत।

मृणालिनीक “के छल?” पर सत्यप्रकाशक “गलत नम्बर” कहलनि—ई छोट घरेलू असत्य संवेदनशील कथानक-निर्णय अछि। सार्वजनिक नियमक रक्षा करनिहार पति निजी घरमे जोखिमक पूरा सूचना साझा नहि करैत छथि। मृणालिनी एखन दबावक सह-अनुभवक बाहर रखल गेलीह; एतहि लैङ्गिक सत्ता आ पारिवारिक रक्षा बीच टकराव उघड़ैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ पति केँ निरपेक्ष नायक बनएबाक बजाय कथा हुनकर गोपनक नैतिक मूल्यांकनक द्वार खोलैत अछि।

दृश्यक श्रृंखला आ न्याय-बुद्धिक उदय

तेसर दृश्यमें लगातार फोनक पछाति गिट्टी लादल ट्रक रोकनाइ, मजदूरक मजदूरीक माँग आ माटिक घनत्व परीक्षणक विवाद क्रमबद्ध अबैत अछि। ई घटनासभ एक स्रोतसँ संचालित अछि, ई तत्काल सिद्ध नहि। सत्यप्रकाश तीन अलग घटना देखबाक सम्भावना बचबैत छथि, मृणालिनी ओकर बीच समयगत निकटता देखैत छथि। दू दृष्टिबिन्दु पाठकेँ एकहि निर्णयसँ वञ्चित राखैत अछि। निजी प्रयोगशालाक प्रतिवेदन सरकारी कागज पर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा नमूना बदलबाक अन्तिम तथ्य बनि नहि जाइत। एतय संशय कथात्मक दुर्बलता नहि, प्रमाण-संरचनाक आरम्भ अछि।

कारी डायरीमे तिथि, समय, फोनक आवाज आ पछाति घटल घटनाक लेखा शुरू होइत अछि। ईशान जे “अदृश्य खर्चा” शब्द पकड़ैत अछि, से उपन्यासक प्रथम गम्भीर आर्थिक-नैतिक रूपक अछि। नापल जा सकयवला माटिक घनत्वक समक्ष एकटा एहन मूल्य अछि जे बिलमे दर्ज नहि, मुदा श्रमिक, पारिवारिक सुरक्षा आ व्यावसायिक निर्णय पर पड़ैत अछि। वस्तु-लेखा आ अनुभूति-लेखाक एहि द्वन्द्वसँ अपराध-गाथा केवल सनसनी नहि रहि सामाजिक अर्थतन्त्रक आलोचनामे बदलैत अछि।

चारिम दृश्य राजधानीक लेखा-कार्यालयमे मयंक झा नामक पात्रकेँ प्रवेश करबैत अछि। अलग-अलग ठेकेदारक फाइलमे “प्रवाही परामर्श प्राइवेट लिमिटेड”क समान प्रमाणपत्र आ “स्थानीय समन्वय प्रलम्बित”क अनियमित टिप्पणी हुनकर दृष्टि खींचैत अछि। “संशयक बाद जाँच नहि करब दोष” हुनकर पिताक शिक्षाक स्मृति अछि। ई सूत्र नव्य न्यायसँ सम्बन्धित परीक्षण-वृत्तिक पात्रगत रूप अछि; कथावाचक एखन व्याप्ति अथवा दोषसिद्धिक पूर्ण प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत। मयंक केवल फाइल-क्रमांक लिखैत छथि, जे गोपनीय सरकारी कागज पर प्रत्यक्ष स्वामित्वक दाबी न करबाक शिल्पगत सीमा सेहो अछि।

कलात्मक उपलब्धि आ आरम्भिक सीमा

पहिल चारि दृश्य प्रकृति, परिवार, निविदा आ सरकारी लेखा-कक्षकेँ एक क्रममे जोड़ैत अछि। बिज्जीक छोट पदचिह्न, फोनक अनाम आवाज, डायरीक अदृश्य खर्चा आ मयंकक लाल पेंसिलक गोल घेरा—चारू सूक्ष्म चिह्न ज्ञानक अलग-अलग पद्धति बनैत अछि। रसात्मक स्तर पर भय करुणाक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा लेखा-परीक्षण कथाकेँ अविश्वसनीय रोमाञ्चमे फिसलनाइ सँ रोकैत अछि। एक आलोचनात्मक सीमा ई जे विकासक सार्वजनिक सूची आ प्रतिशतक गणनाक रूपक किछु स्थलमे व्याख्यात्मक होइए; तथापि ई आरम्भिक विस्तार पाछाँक आर्थिक जाल बुझबाक ठोस जमीन दैत अछि।

अध्ययन-इकाई २ — अनाम धमकी, मृत्यु आ पहिल प्रमाण-संघर्ष

नैतिक निर्णयक परिवारगत मूल्य

पाँचम मूल दृश्य सत्यप्रकाशक पाँचम फोन पर केन्द्रित अछि। “सरकार काज चलबैत अछि”क सामने फोनक आवाज “कागचपर” कहैत अछि। एहि दू शब्दक विरोध उपन्यासक संस्थागत द्वैत स्पष्ट करैत अछि: लिखित व्यवस्था आ अनौपचारिक पहुँच एक स्थानमे प्रतिस्पर्धा करैत अछि। सत्यप्रकाशक पुलिस जाएबाक घोषणा सुनि फोनक दूसरी दिस “जाउ” कहल जाइत अछि। धमकीक स्थान पर ई निश्चिन्त अनुमति अधिक भयावह बनैत अछि, कारण पात्र स्वयं अनुमान करैत छथि जे अपराधीक पहुँच पुलिस धरि भऽ सकैत अछि। मुदा कथा ई सम्बन्ध सिद्ध नहि करैत; पात्रक भय आ संस्थाक वास्तविक संलिप्ततामे स्पष्ट अन्तर अछि।

सत्यप्रकाश मृणालिनीकेँ डायरीक किछु पन्ना देखबैत छथि आ कखनो संकट अबला पर जिला पुलिस अधीक्षकक कार्यालय तथा मयंक झाकेँ संदर्भ देबाक बात कहैत छथि। हुनकर मयंक सँ परिचय नहि, केवल फाइल पर टिप्पणी देखल अछि; एहि सूक्ष्म विवरणसँ पात्रक अनुमानक सीमा बाँचि जाइत अछि। मृणालिनी व्यवसाय छोड़ि देबाक आग्रह करैत छथि। प्रतिपक्षमे सत्यप्रकाश मानैत छथि जे हुनकर हटला सँ छह प्रतिशतक अघोषित नियम अगिला ठेकेदार पर लागू भऽ जाएत। दायित्व आ परिवारक सुरक्षा बीच कोनो एक वाक्यमे समाधान नहि; प्रश्न “ओ आदमी अहाँए किएक?”क अनुत्तरित रहब दृश्यक नैतिक अन्तर्बोध अछि।

बाहर बिज्जीक क्षणिक दौड़ प्राक्कथाक प्रतिध्वनि बनैत अछि। पहिल दृश्यमे बिज्जी तत्काल देहगत खतरा दूर करैत छल; एहि दृश्यमे ओ भयक क्षणमे देखाइत अछि, मुदा संस्थागत दुष्चक्र रोकबाक प्रत्यक्ष सामर्थ्य नहि रखैत। प्रतीकक एहि परिवर्तनमे उपन्यासक आलोचनात्मक सम्भावना अछि: प्रकृतिक पहरा समाजक उत्तरदायित्वक विकल्प नहि बनि सकैत।

“दुर्घटना” नामक प्रारम्भिक अभिलेख

छठम दृश्य दू सप्ताहक अन्तरालक बाद सत्यप्रकाशक मृत्युक संक्षिप्त आघात दैत अछि। सड़क सोझ, मौसम साफ, पत्थल लादल भारी ट्रकक संग टक्कर, चालक रघुनाथक मृत्यु आ ट्रक चालकक अनुपस्थिति—ई चारू स्थिति दर्ज अछि। पुलिस पहिल उल्लेख दुर्घटनाक करैत अछि; मृणालिनी हत्या-सन्देह व्यक्त करैत छथि। एकर भीतर कोण तथ्य, कोण संस्थागत प्रारम्भिक निष्कर्ष, आ कोण शोकाकुल व्यक्तिक विश्वास अछि, ई भेद साहित्यिक समीक्षा लेल अनिवार्य अछि। कथाक दुःख वास्तविक अछि, मुदा मृत्युक विधिक वर्गीकरण एखन खुलल प्रश्न।

ईशानक भावनात्मक प्रतिक्रिया सामान्य रुदनक स्थानपर कम्पित देह सँ प्रकट होइत अछि। ओ “बाबू सावधान रहत” दोहरबैत अछि—एहन भविष्य-आश्वासन जे मृत्यु भेला पर व्यर्थ भऽ गेल। कथावाचक भविष्यकालक वचनक क्रूरताक बात कहैत अछि। ई भाषिक रूपान्तरण दुःख केँ घटनाक सूचीसँ बाहर निकालैत अछि; व्याकरण स्वयं विश्वासघातक अनुभूतिक साधन बनैत अछि। जखन पाठक आगू अदालत आ लेखा-पत्र देखत, एहि असमाप्त भविष्यक स्मृति प्रमाणगत निष्ठुरताकेँ मानवीय आधार देत।

अनिरुद्धक प्रश्न : प्रत्यक्ष, अनुमान आ सिद्धि

सातम दृश्य पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरीक जाँच-दृष्टिक स्थापना करैत अछि। सड़क पर खरोंच, ब्रेकक अस्पष्ट चिह्न, वाहनक स्थिति आ उपलब्ध थाना-विवरण सुनलाक बाद ओ तथ्यक सीमित सूची बनबैत छथि: दू मृत्यु, दू वाहनक टक्कर आ एक चालकक अनुपस्थिति। दुर्घटना आ हत्या दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। नव्य न्यायगत दृष्टिसँ ई प्रत्यक्ष आ अनुमानक अन्तरक नाटकीय अभिव्यक्ति अछि। कथनमे विवेकक मूल्य एहि कारण अछि जे ओ आरोप केँ अवमानित कएने बिना प्रमाणक स्वतंत्र जाँच चाहैत छथि।

अनिरुद्धक कथा केवल विचारक विजय नहि। हुनका थानाक पहिल कथन, सड़कक क्षतिग्रस्त चिह्न आ सम्भावित टोल-प्लाजा चित्रक सीमित

उपलब्धतापर निर्भर रहय पड़ैत अछि। अनुसन्धानक प्रत्येक स्रोतक अभाव कथाक गति नियंत्रित करैत अछि। “हत्या सम्भव?” कहि ओ अधीनस्थकेँ न्यायिक वर्गीकरणक जड़ता सँ बाहर निकालैत छथि; सम्भव शब्द सिद्ध शब्द नहि बनैत। एहि पद्धतिसँ पाठक सेहो अपन अनुमानक परीक्षण करबाक बाध्यता अनुभव करैत अछि।

हेरायल डायरी आ मौखिक साक्षीक नैतिकता

आठम दृश्य मृणालिनीक हाथे सत्यप्रकाशक अलमारी खोलबाक घटना सँ आरम्भ होइत अछि। कारी डायरीक न भेटब एक नकारात्मक तथ्य अछि, चोरी करनिहारक पहिचान नहि। ईशान घरमे आयल ठेकेदार संघ, मुंशी, विभागीय व्यक्ति, पुलिस आ कुटुम्बीक अनेक नाम बतबैत अछि; एहि सूचीमे ककरो निश्चित दोषी बनाओल नहि गेल। कथानकक तनाव एहि अस्पष्ट सम्भावित उपस्थितिसँ पैदा होइत अछि। अनुपलब्धि न्याय-चिन्तनक उपयोगी संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा “नहि भेटल” सँ “फलाँ व्यक्ति नेलक” निष्कर्ष निकलैत नहि।

मृणालिनी स्थानीय थानाक बजाय जिला पुलिस कार्यालयक सार्वजनिक नम्बर सँ संपर्क करैत छथि। ई निर्णय सत्यप्रकाशक पहिल सावधानीक पालन अछि, मुदा पति द्वारा अधूर सूचना देबाक परिणामस्वरूप परिवारकेँ अनुमानक भार सेहो उठब पड़ैत अछि। अनिरुद्ध डायरी हेराबाक बात सुनि हत्या सिद्ध नहि मानैत छथि; ओ दुर्घटनाक एकमात्र अनुमान कमजोर भेलाक चर्चा करैत छथि। मृणालिनीक “हमरा सत्य चाही” आ अनिरुद्धक प्रमाण-परीक्षा विषयक उत्तर विवादक भाषा नहि, साझा लक्ष्यक दू अलग विधि अछि। दृश्य एहि सहमतिक सरलताक बजाय दुरूहता सुरक्षित रखैत अछि।

प्रसङ्ग-समूहक समालोचनात्मक निष्कर्ष

मूल दृश्य पाँच सँ आठ धरि परिवारक नैतिक प्रतिरोधक परिणाम मृत्यु आ अभिलेखीय अनिश्चिततामे बदलैत अछि। लेखक मृत्युकेँ तत्काल जासूसी-समाधान बनौने बिना शोकक आन्तरिक काल आ जाँचक सार्वजनिक कालकेँ

समानान्तर रखैत छथि। क्षमतावान पुलिस-अधिकारीक स्पष्ट न्याय-सूत्र कथाकेँ कखनो-कखनो पाठशालाक संवादसँ निकट अनैत अछि; मुदा तकर मुकाबिलामे मृणालिनीक डर, ईशानक शब्द आ हेरायल डायरी कथात्मक घनत्व बचबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३ — सङ्ख्याक सङ्केत, रक्षकक पुनरागमन आ सम्भावित भ्रामक प्रमाण

साङ्ख्यिक समानता आ नैतिक संयोग

नवम दृश्य एकान्त लेखा-कक्षमे मयंक झाक अनुसन्धान आगाँ बढ़बैत अछि। “प्रवाही परामर्श”सँ जुड़ल अलग-अलग रसीदक अनुपात १.९८, २.०२, १.९६ आ २.०१ प्रतिशत लिखल गेल अछि। ई अंकसँ लगभग दू प्रतिशतक प्रवृत्ति देखाइत अछि; मुदा नमूनाक चयन, शुल्कक करार आ रकमक वास्तविक लाभार्थीक पूरा प्रमाण नहि। पात्र स्वयं सामान्य पेशेवर शुल्क, उद्योग-दर अथवा आन सम्भावनाक विकल्प खुलल रखैत छथि। एहि पात्रगत संयममे उपन्यासक न्याय-विचार अमूर्त न रहि लेखा-विवरणक अनिश्चिततामे अवतरित होइत अछि।

अनाम फोन मयंककेँ सत्यप्रकाशक मृत्युक सूचना दैत अछि। पहिने संख्या मात्र लेखनीमे छल, आब ओकर कात एक मृत व्यक्तिक नाम जुड़ैत अछि। एतय दोसर घटनाक ज्ञान पहिल संख्यासभक अर्थ बदलैत अछि, मुदा पश्चात् घटल घटना पूर्व अनियमितताक कारण-सिद्धि नहि बनैत। मयंकक पिताक आगि-धुँआ विषयक शिक्षा एहि अन्तरकेँ बोधगम्य बनबैत अछि। वास्तविक पाठमे धुँआ धूलि सेहो भऽ सकैत अछि—एहि छोट संशोधनसँ अनुमानक असावधानी पर व्यंग्य उत्पन्न होइत अछि।

मयंक अपन नोटबुक बैगमे राखैत छथि; बाह्य दफ्तरक साधारण कर्मचारीक भीतर साक्षी बनबाक भय उठैत अछि। “हम किएक?”क उत्तर सामाजिक स्थान सँ नहि, देखने घटनाक नैतिक भार सँ अबैत अछि। एहि क्षणमे उपन्यासक नायकत्व अधिकारिक पदक बाहरी ऊँचाइ सँ स्वतन्त्र भऽ निरीक्षणक जिम्मेवारी पर स्थापित होइत अछि।

पदचिह्नक फेर आगमन आ शोकक रूपक

दसम दृश्य बिज्जीक पुनरागमन पर केन्द्रित अछि। शोकग्रस्त घरमे चूल्हि ठीकसँ नहि जरब, लोकक अबैत-जाइत रहब आ अलमारीक खिड़की लग बिज्जीक ठमकनाइ–ई छोट क्रियासभ पहिल दृश्यक व्यापक प्रतिध्वनि बनैत अछि। ईशान पूछैत अछि जे पहिने देखल बिज्जी इएह अछि कि नहि; धनेश्वरी निश्चित उत्तर नहि दैत छथि। प्राकृतिक जीवक व्यक्तिगत पहिचान अनिश्चित अछि, मुदा परिवारगत प्रतीक जिए रहल अछि। एहि भेदमे पात्रक धार्मिक अथवा लोकविश्वासक सम्मान अछि, वैज्ञानिक निश्चिततताक दाबी नहि।

धनेश्वरीक “जे बचल अछि, तकर” उत्तर रक्षकक लक्ष्यकेँ अनिर्धारित छोड़ैत अछि। बाँचल परिवार, स्मृति, मृतकक नाम, अथवा न्याय तक पहुँचबाक सम्भावना–सभ एहि रिक्तिमे समा सकैत अछि। पाठक पर कथनक एक अर्थ थोपल नहि गेल। बिज्जीक गन्ध आ देहरीक पयर-निशान मानवीय न्याय-संस्थाकेँ प्रतिस्थापित नहि करैत; ओ केवल ओकर नैतिक आवश्यकता प्रतिध्वनित करैत अछि।

तीन स्रोत एक मेज पर

एगारहम दृश्य अनिरुद्धक मेजपर तीन पृथक सामग्री अनैत अछि: टोल-प्लाजाक झलफलाइत चलचित्र, मृणालिनीक बयान आ मयंकक ई-पत्र। चलचित्रमे सत्यप्रकाशक गाड़ी ३ बजि ४१ मिनट पर गुजरैत अछि आ सात मिनट पाछाँ पत्थलवला ट्रक; एहन समयगत समीपता ककरो उद्देश्य बतबैत नहि। मृणालिनीक सूचना धमकी आ हेरायल डायरी विषयक अछि; ई-पत्र निजी परामर्श कम्पनीक भुगतान-क्रम पर प्रश्न उठबैत अछि। स्रोतसभ एक दिशामे सङ्केत करैत अछि, मुदा हुनकर प्रमाण-स्वरूप एक नहि। तीन भिन्न माध्यमक वास्तविक भेद एहि दृश्यक बौद्धिक केन्द्र अछि।

अनिरुद्ध सहायक रोहितकेँ निर्णय टारबाक नहि, तथ्य जोड़बाक निर्देश दैत छथि। ट्रकक मालिक, चालक, कॉल-अभिलेख आ करार सम्बन्धी जाँचक सूची एहि स्थगनकेँ सक्रिय पद्धति बनबैत अछि। कथाक दूरदृष्टि असगर सत्यप्रकाशक मृत्यु धरि सीमित नहि; कथावाचक डिजिटल खेल, खाता आ जुआक संसारमे बादक रूपान्तरणक सङ्केत दैत अछि। ई भविष्यवाणी पात्रसभक तात्कालिक ज्ञान नहि। एहिमे कथावाचकक सर्वज्ञ संकेत आ अनिरुद्धक सीमित ज्ञानक दूरी स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

गोदामक भ्रम-रचना

बारहम दृश्य परित्यक्त गोदामक जारल वाहन, हटाओल नम्बर-पट्टी, रंग मेटायल ढाँचा, देवालक “सरिता” आ रजिस्टरक “कौ. म.”क सङ्केत एकठाम रखैत अछि। सहायक रोहित जल्दी कौशल महतोसँ मेल बैठबैत अछि; अनिरुद्धक प्रतिवाद एहि अनुमान पर अछि जे आकार, नामक पुरान रंग अथवा संक्षिप्ताक्षर स्वामित्वक पर्याप्त प्रमाण नहि। वाहन-परीक्षक सेहो पहचान-संख्या आ मरम्मति-अभिलेखक पुष्टि अपेक्षित कहैत अछि। दृश्य पाठमे अपराधक वातावरण आ वैज्ञानिक परीक्षणक धीमापन बीच उग्र तनाव उत्पन्न करैत अछि। गन्ध, चायवला चूल्हि आ फाटल रजिस्टर जासूसी आख्यानक वस्तु-बिम्ब अछि; मुदा ओ दृश्यकेँ अन्तिम सत्य नहि, सम्भावित निष्कर्षक परीक्षण-स्थल बनबैत अछि। रोहितक अनुमान-उत्साह पर पुलिस-अधीक्षकक कटु प्रश्न अनुसन्धानक मनोवैज्ञानिक कठिनाई बतबैत अछि—पहिल मेल भेटलापर समाधान पाबि लेबाक सुख। एहि ठाम कथानक पाठककेँ सेहो सतर्क करैत अछि जे जतेक नाटकीय प्रमाण, ओतेक आवश्यक नहि जे ओ सत्य हो।

कलात्मक संयोगक प्रश्न

सङ्ख्या, जीव-प्रतीक, दृश्य-रजिस्ट्री आ गोदाम-सामग्रीक आवर्तन सँ लेखक अत्यन्त सुव्यवस्थित बौद्धिक ताल बनबैत छथि। सीमा ई जे अनिरुद्धक लगभग प्रत्येक प्रश्नक पछाति अनुसन्धान-विधिक स्पष्ट सूत्र आवि जाइत

अछि; एकर अधिकता पात्रक स्वतन्त्रता घटा सकैत अछि। मुदा दृश्य ९-१२मे ई समझाइश रोहितक भूल, मयंकक भय, परिवारक शोक आ गोदामक विचित्र वस्तुसभ सँ प्रत्यक्ष टकराएल अछि; एहि कारण सूत्र आ घटना एक-दोसरकेँ सुधारैत अछि।

अध्ययन-इकाई ४ — पूछताछ, छओ प्रतिशतक मेल आ गलत सुरागक टूटनाइ

कौशल महतो : प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु नहि

तेरहम दृश्य कौशल महतोक आगमनसँ आरम्भ होइत अछि। “सरिता लॉजिस्टिक्स हमर अछि। मुदा ओ ट्रक हमर नहि” कथनक बाद अधूर वाहन-हस्तान्तरणक विवरण सामने अबैत अछि। पञ्जीकरणक रिकॉर्ड आ वास्तविक कब्जाक सम्भावित अन्तर एहि दृश्यक विधिक गाँठ अछि। कौशलक ऋण, कन्हैया रजक नामक दलाल आ दोसर मालवाहक संस्थाक उल्लेख जाँचक बाट खोलैत अछि, मुदा एकर सत्यापन एखन नहि भेल। लेखक अपराधक संकेत-शृंखला भीतर एक व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्वीक असहज जीवन सेहो बचा रखैत छथि।

अनिरुद्ध “प्रवाही परामर्श”कँ भुगतानक बारेमे पुछैत छथि; कौशल दू बेर भुगतान मानैत अछि, मुदा रकम अथवा प्रतिवेदनक ठोस उत्तर नहि दैत। एहि चुप्पीकँ दोषक प्रमाण मानब उतावलापन होयत। प्रश्न “मित्र?” आ “शत्रु?”क बीच “प्रतिद्वन्द्वी” उत्तर पूँजीगत प्रतिस्पर्धाक सामाजिक अर्थ खोलैत अछि। बाहर जाइत कौशलक वाक्य जे भुगतान रोकिदेने घर टूटि सकैत अछि, हिंसाक गैर-शारीरिक रूपपर प्रकाश डालैत अछि। आब अपराधक सामाजिक सिद्धान्त देह-हत्या मात्र नहि, आर्थिक बहिष्कारक साधन तक फैलैत अछि।

मयंक आ अनिरुद्धक संयोग : अभिलेखीय पद्धतिक वाद

चौदहम दृश्य मयंक झाक बस-यात्रा आ सर्किट-हाउसक बैठकमे स्थापित अछि। नितान्त साधारण नोटबुकक भीतर दू प्रतिशतक सङ्ख्या, अलग-अलग काजक लगभग समान भाषावला परामर्श-प्रतिवेदन, आ “स्थानीय सहयोग” सन भुगतानक आवर्ती विवरण अछि। मयंक स्वयं दू प्रतिशतक सामान्य शुल्क होयबाक सम्भावना स्वीकार करैत छथि। हुनकर शंका तखन पैघ होइत अछि जखन पुल, विद्यालय भवन आ सड़क-मरम्मतिक अत्यन्त भिन्न कामक निष्कर्षक

भाषा लगभग एक सन भेटैत अछि। एहि तुलनामे मात्र प्रतिशत नहि, कार्यक प्रकृति आ दस्तावेजक बनावट पर जाँच केन्द्रित अछि।

छओ प्रतिशतक कुल समीपता मृणालिनीक पहिने कहल फोन-दबावसँ मेल खाइत अछि; अनिरुद्ध एकरा संगति मानैत छथि, स्वतः अपराध नहि। नव्य न्यायमे एक घटना पर व्यापक व्याप्ति गढ़नाइ दोषपूर्ण होइत अछि; पात्रसभ एहि खतरा सँ बचैत अछि। मयंकक पिताक आगि-धुँआ विषयक सूत्र पर माएक भानसघर जा कऽ देखबाक सलाह दृश्यकेँ मानवीय हास्य दैत अछि। एहि हँसीमे दर्शनक जमीन छूटैत नहि; ओ प्रत्यक्ष परीक्षणक व्यवहारिक आग्रहकेँ सुदृढ करैत अछि।

“लोकसेतु जनसंपर्क सेवा”क नाम, मालती घोषक कागजी स्वामित्व आ “अम्बर क्रीड़ा मीडिया”क आरम्भिक संकेत संस्थागत जालक विस्तार अछि। कथावाचक भविष्यक रहस्यक सङ्केत दैत अछि; एखन यी संस्थासभक अपराधक निश्चित स्वरूप नहि बतायल गेल। सार्वजनिक आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चुनावी प्रचार अथवा विज्ञापन—ई गतिविधि स्वतः अपराध नहि। आलोचनामे काल्पनिक संस्थाक गतिविधि आ पात्रक अनुसन्धानक शंका अलग रखब जरूरी अछि।

ईशानक न्याय-माँग आ धनेश्वरीक प्रतिबन्ध

पन्द्रहम दृश्य घरक शोकक कालकेँ तीन सप्ताहक घटैत भीड़ सँ नापैत अछि। सत्यप्रकाशक कुर्सी, चश्मा आ खुट्टीक अंगा वस्तुगत अवशेष अछि, जे अनुपस्थित व्यक्तिक घरेलू उपस्थिति बचा रखैत अछि। ईशान पढ़बाक अभिनय करैत अछि; ओकर प्रश्न “बाबूकेँ के मारलक?”क उत्तर मृणालिनी नहि दैत छथि, कारण पुलिस स्वयं मृत्युक हत्या होयबाक पुष्टि नहि केलक अछि। परिवारक भीतर पीड़ा आ न्यायिक सावधानीक असंगति एहि दृश्यकेँ मार्मिक बनबैत अछि।

धनेश्वरी बदला आ न्यायक अन्तर समझबैत छथि—जल्दी बदला होइत अछि, न्याय नहि। मुदा ईशानक प्रश्न “जँ न्याय नहि भेटय?”क उत्तर हुनको लेल सरल नहि। वृद्ध पात्रक मौन प्राक्कथाक बिज्जी-विश्वाससँ भिन्न रूपमे देखाइत अछि। एखन पहरा बाहरी जीव पर नहि छोड़ा जा सकैत; अपन भीतर सावधानी जगयबाक आग्रह करुणा आ नैतिक अनुशासनक संयुक्त रूप अछि। ईशानक विद्रोही प्रश्न उपन्यासकेँ उपदेशक एकरूपता सँ बचबैत अछि।

झूठ प्रमाणक विघटन आ कथाक आत्मसंशोधन

सोलहम दृश्य जारल वाहनक जाँचक नकारात्मक परिणाम दैत अछि: ओ सत्यप्रकाशक टक्करवला ट्रक नहि छल। इञ्जिन आ ढाँचाक पहिचान अलग; देवालक “सरिता” दू बरख पुरान; “कौ. म.”क सम्भावित अर्थ कौशिक मिस्त्री हो सकैत अछि। लेखक पाठकक प्रारम्भिक रोमान्च पर प्रतिप्रमाणक कठोर हस्तक्षेप करैत छथि। एहि दृश्यकेँ “मुख्य अपराधी भेटल” कहि पढ़नाइ ठोस पाठ-विरोधी भऽ जाएत।

गलत दिशा बनाओल गेल कि केवल पुरान गोदामक संयोग भेटल—ई प्रश्न सेहो खुलल अछि। अनिरुद्ध भ्रामक वस्तु होयबाक सम्भावनासँ अपराधी मनक दिशा तक पहुँचबाक सङ्केत दैत छथि, मुदा ताहि सँ ककरो निश्चित षड्यन्त्र प्रमाणित नहि होइत। थानाक बाहर पत्रकार तुरन्त गिरफ्तारीक नाम माँगैत छथि; अगिला दिन “पुलिसक हाथ खाली” शीर्षक जनता आ अनुसन्धानक काल-अन्तर देखबैत अछि। एहि ठाम न्यायिक धैर्य निष्क्रियता नहि, गलत गिरफ्तारीसँ बचबाक नैतिक श्रम बनैत अछि।

समीक्षात्मक निर्णय

दृश्य १३–१६क मुख्य उपलब्धि तथ्य आ भ्रमक नियमित फेर-बदल अछि। पूछताछक मानवीय झिझक, नोटबुकक गणना, गृहस्थीमे शोक आ प्रयोगशालाक प्रतिवेदने एकहि विषय—“हम की जानैत छी?”—क चारि अलग उत्तर दैत अछि। सीमा ई जे सहायक पात्र रोहितकेँ बारम्बार जल्दी निष्कर्षक

मूर्ति बनेबाक प्रवृत्ति किछु संवादमे सरल द्वन्द्व रचैत अछि; तथापि कौशल महतोक प्रतिद्वन्द्विता आ ईशानक बेचैनी एही सरलता पर संशय जोड़ैत अछि।

अध्ययन-इकाई ५ — दबाव, मोहन पासवानक मृत्यु आ निविदा-प्रतिस्पर्धाक नियन्त्रण

नाम माँगनिहार सत्ता आ जाँचक समय

सतरहम दृश्य अत्यन्त छोट अछि, मुदा ओकर नाटकीय घनत्व पैघ। जिला आ राजधानीक वरिष्ठ अधिकारी सभ जाँचक प्रगति सँ बेसी “नाम” चाहैत छथि। अनिरुद्ध उत्तर दैत छथि जे जनता प्रक्रिया नहि बुझैत अछि, तेँ प्रक्रिया बदलिएब सम्भव नहि। ई प्रसङ्ग न्यायिक संस्थाक भीतर सूचना देबाक राजनीतिक दबाव आ प्रमाण-संग्रहक अलग गति उजागर करैत अछि। “समय देलनि—बिना समय कहने”क अन्तिम कथन अप्रकट प्रशासनिक चेतावनीक भाषिक रूप अछि। कथामे दबावक अस्तित्व स्पष्ट, मुदा एहि दबावक पीछे कोन ठोस अपराध-संरचना अछि, से एखन निर्धारित नहि।

मोहन पासवानक जीवन : आर्थिक क्षतिक पार मानवीय मापन

अठारहम दृश्य “शिवधारा निर्माण”क औद्योगिक यार्डमे आगि लगबाक दृश्य आनैत अछि। मशीन, डीजल आ तिरपालक जारल क्षतिक बीच रात्रि-पहरुआ मोहन पासवानक मृत्यु कथाक केन्द्र बनैत अछि। ओकर उम्र बियालीस, गाममे पत्नी आ तीन बच्चा—ई संक्षिप्त परिचय मशीनी लागतक सूचीकेँ मानवीय असमानताक सोझाँ ठाढ़ करैत अछि। जारल खाटक लोहाक चौखटि दृश्यक करुण बिम्ब अछि: सभ काजक सामग्री घुरि किनल जा सकैत अछि, मृत कमेनिहारक जीवन नहि।

शिवकुमार मंडल अपन मालिकाना हानिक बदला मृतकक घरपर की कहब से प्रश्न करैत छथि। न्याय-दर्शनक शब्द—आगजनी, दबाव, आपराधिक षड्यन्त्र—विधिक वर्गीकरणक आवश्यक साधन अछि; तथापि मोहनक परिवार लेल मूल क्षति रोजी कमेनिहारक अभाव अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास समाजशास्त्रीय वर्ग-भिन्नता केँ सूचनाक दाबी नहि, कथानकक विशिष्ट मृतकक माध्यमसँ पाठकक संवेदनामे लैत अछि। मोहन पासवानकेँ केवल उदाहरण बना देबाक जोखिमो लेखक ओकर परिवारक उल्लेख सँ आंशिक रूपेँ टारैत छथि।

रामजीवन मालिकक फोन पर “हम निविदा वापस नहि लेब” वाक्य सुनने छल। ई सुनल कथन आगिक कारण-सम्बन्ध वा फोन करनिहारक पहिचान नहि सिद्ध करैत। एतय साक्षी कानसँ जे सुनलक से निर्धारित अछि, ओकरा “मालिकक फोनक पाछाँ षड्यन्त्र सिद्ध” कहब अनुचित। तथापि निविदाक दबाव आ आगिक कालिक निकटता जाँचक अगिला आधार बनैत अछि। लेखक भावनात्मक तीव्रताक क्षणमे सेहो प्रमाण-सीमा सुरक्षित रखैत छथि।

भयग्रस्त साक्षीक सामाजिक स्थिति

उन्नीसम दृश्य सत्यप्रकाशक सड़क-दुर्घटनाक विवादित स्वरूप आ यार्ड आगिक स्पष्ट आपराधिक स्थिति बीच तुलना करैत अछि। शिवकुमारकेँ निविदा वापस लेबाक धमकी आयल छल; फेर हुनकर “हम अपन बच्चा अनाथ कराबी?” प्रश्न पुलिसक काजक नैतिक मुश्किल खोलैत अछि। गवाहीक आशा राखनिहार संस्था गवाहक परिवारक सुरक्षाक प्रश्नक उत्तर बिना पूरा सहयोगक अपेक्षा नहि कऽ सकैत। भय एहि दृश्यमें चरित्रक कमजोरी नहि, सामाजिक जालक वास्तविक दबावक रूपमे देखाएल अछि।

शिवकुमारक लेल गवाह होयब पहिने पिता अथवा पति होयबाक जोखिमसँ भरल अछि। ई भूमिका-विभाजन सामान्य नागरिकक सार्वभौम कर्तव्य पर व्यावहारिक प्रश्न उठबैत अछि। मृणालिनीक पहिल दृश्यक सुरक्षा-आग्रह, ईशानक बदला-सन्देह आ शिवकुमारक परिवारगत आशङ्काक एक-दोसरसँ तुलना योग्य अछि; फरक केवल कथानकक ठाम नहि, भयक सामाजिक मूल्य सेहो अछि।

उपमान, प्रवृत्ति आ प्रतिस्पर्धा-नियन्त्रण

बीसम दृश्य मयंकक दस्तावेज-परीक्षणसँ नव आर्थिक सूत्र खोलैत अछि। “प्रवाही परामर्श”क भुगतान अधिक रहल ठाम प्रतिस्पर्धी बोली घटब, अन्तिम क्षणमे नामांकन वापस लेब अथवा तकनीकी त्रुटिक दोहराव देखल गेल अछि। ई तथ्यसभ पात्रक उपलब्ध कागज पर आधारित प्रवृत्ति-निरीक्षण अछि, सम्पूर्ण

निविदा-व्यवस्थाक स्वतन्त्र साङ्ख्यिक सिद्धि नहि। अलग-अलग सामान्य घटनाक समूह असामान्यता उत्पन्न करैत अछि; व्याप्ति स्थापित करबाक लेल तकर परीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

मयंक उपमानक उदाहरणमे नीलगायक पहिचानक प्रसङ्ग लैत छथि: पहिने सुनल लक्षणक आधारपर नव वस्तुक चिन्हारि बनैत अछि। अनिरुद्ध तुरन्त सीमा बतबैत छथि—उपमान सँ पहिचानक सम्भावना, अपराधक दोषसिद्धि नहि। उपमानक विशिष्ट प्रयोग एतय केवल शास्त्रीय शब्द सजेनाइ नहि; गूढ़ आर्थिक तन्त्रक रूपान्तरण बुझबाक जाँच-साधन अछि। मयंक आ अनिरुद्धक सहज विनोद भयावह कथासंसारमे दुर्लभ साँसक ठाम बनबैत अछि।

लोकसेतु जनसंपर्क सेवा नामक संस्थाक भुगतान शिवधारा निर्माणक पुरान अभिलेखमे भेटैत अछि, मुदा सत्यप्रकाशक कम्पनीक भुगतान ताहि ठाम नहि। एहि विषमताक प्रश्न पाछाँक अन्वेषणक प्रारम्भ-बिन्दु बनैत अछि, ताहि सँ उक्त संस्था अथवा ओकर सञ्चालकक दोष स्वत: निश्चित नहि। “किएक?”क पुनरागमन आख्यानक खुलल रचनापद्धति बनैत अछि; उत्तरक विलम्ब रहस्यक कृत्रिम टाल-मटोल नहि, अभिलेखक अधूरापनक कलात्मक स्वीकार अछि।

बचावक सामूहिक नैतिकता : पहिल बीस दृश्यक अर्थ

पहिल बीस दृश्य साँप आ बिज्जीक प्राकृतिक मुठभेड़सँ आरम्भ भऽ ठेका-आधारित हिंसा, पारिवारिक शोक, पुलिसक प्रतिप्रमाण आ मजदूरक मृत्युक सामाजिक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। “पहरा” एकटा पशुक कार्यसँ रूपान्तरित भऽ सरकारी कर्मचारीक प्रश्न, पुलिसक निष्पक्षता, पीड़ित परिवारक स्मृति आ श्रमिकक अधिकारक संरक्षणमे विभाजित होइत अछि। एहि बहुकेन्द्रिक रचनामे अपराधक पैघ अदृश्य रूपकेँ चिन्हबाक काज असगर महानायकक लेल राखल नहि गेल। हुनकर सत्य-अन्वेषण बहुधा धीमा अछि, मुदा एहि धीमापनसँ कृति अपन न्यायिक नैतिकता निर्मित करैत अछि।

पहिल अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दृश्य १–२० : रक्षक, पीड़ित आ प्रमाणक समानान्तर संरचना

पहिल बीस दृश्यकेँ एकरेखीय अपराध-सारांशक रूपमे पढ़ने उपन्यासक प्रमुख निर्माण-योजना हेराएत। गढ़ नारिकेलक देहरी, विकासाधीन तटबन्ध, राजधानीक लेखा-कक्ष, दुर्घटना-स्थल, जारल गोदाम आ श्रमिकक यार्ड—ई सभ अलग भूगोल अछि। एक दिशामे प्राकृतिक जीवक पहरा; दोसर दिशामे दफ्तरक जाँच; तेसर दिशामे घरक शोक। कथावाचक क्रमशः तीनूकेँ समानान्तर राखैत छथि, मुदा कोनो दृश्यकेँ बाकी दृश्यसभक एकमात्र व्याख्या नहि बनबैत। एहि भूगोलिक आवागमनमे विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक तुलनात्मक सामर्थ्य भेटैत अछि: गामक रूपान्तरण आ प्रशासनिक संस्थाक विस्तार एकहि समयमे एखन भिन्न गति सँ चलैत अछि।

धनेश्वरीक लोकवाणी मे बिज्जी जीवित रक्षक अछि; मयंकक लेखा-परीक्षणमे रक्षक संशयक बाद प्रश्न करबाक जिम्मेवारी अछि; अनिरुद्धक जाँचमे रक्षक निर्दोष व्यक्ति पर शीघ्र आरोप रोकबाक विवेक अछि। एहि रूपकसभक सांकेतिक साम्य स्पष्ट, मुदा मनुष्यक न्यायकेँ प्राकृतिक शिकारी-शिकार सम्बन्धमे विलीन नहि करब आवश्यक अछि। गहुमनक सोझा जैविक खतरा सिद्ध भेल छल; ठेका-जालक प्रत्येक कड़ी एखन मानवीय व्यवहार, दस्तावेज आ संदिग्ध भुगतानक व्यवस्थित परीक्षण माँगैत अछि।

कथाक काल तीन परतमे व्यवस्थित अछि। आरम्भक बाल-ईशानक समय आठ बरख पाछाँक व्यावसायिक संकटमे बदलैत अछि। दुर्घटनाक बाद शोकमे सप्ताहक अवधि विस्तार पबैत अछि, जखन कि प्रशासनिक जाँच फोन, दफ्तर आ घटनास्थलक घण्टा-मिनटक विवरण पर निर्भर करैत अछि। उपन्यासक अग्रसूचना बादक डिजिटल अपराध-रूपक कल्पना खोलैत अछि, मुदा पहिल बीस दृश्यक पात्रसभ एहि भविष्यक पूर्ण ज्ञान नहि रखैत। कथावाचकक दूरदृष्टि आ पात्रक वर्तमान सीमाकेँ अलग रखब आख्यानशास्त्रक अनिवार्य शर्त अछि।

भारतीय आलंकारिक पठनमे भय आ करुणाक संयोग बारम्बार बदलैत अछि। गहुमनक पहिल संकट रोमाञ्चक स्थायी भाव जगबैत अछि, सत्यप्रकाशक मृत्युक पछाति वियोग करुणाक रूप लैत अछि, आ मोहन पासवानक मृत्युक दृश्य मजदूर-जीवनक सामाजिक करुणा खोलैत अछि। व्यञ्जनाक मुख्य सामर्थ्य “अदृश्य खर्चा”, “पहरा” आ “हाथ खाली” सन छोट सूत्रसभमे अछि। न्यायिक भाषामे “हाथ खाली” असफलताक प्रतीक, किंतु अनिरुद्धक व्यवहारमे गलत गिरफ्तारी टारबाक नैतिक क्षमता बनैत अछि।

नव्य न्यायगत परीक्षणमे सामग्री चारि स्तर पर अछि: प्रत्यक्ष देखल दुर्घटना-अवशेष; साक्षीसँ सुनल धमकी; लेखा-अनुपातसँ निकालल सामान्य प्रवृत्ति; आ गलत संकेतक निरसन। अनुपलब्ध डायरीक रिक्ति सेहो नकारात्मक सूचना अछि, मुदा ओकर लोपक कारण ककरो पक्षमे निश्चित नहि। परामर्श-रसीदक दू प्रतिशत आ मांगल छह प्रतिशतक समीपता अनुमानक विषय, सिद्ध अपराध नहि। गोदामक गलत वाहन परीक्षण एहि बातक आन्तरिक उदाहरण अछि जे प्रारम्भिक अनुकूल सङ्केत खोजक अन्तिम सत्य नहि।

पाश्चात्य आख्यान-विश्लेषणक दृष्टिसँ ई रचना बहुकेन्द्रित फोकलाइजेशन पर निर्भर अछि। धनेश्वरीक लोकज्ञान, सत्यप्रकाशक व्यावसायिक भय, मृणालिनीक संदेह, ईशानक आक्रोश, मयंकक साङ्ख्यिक नोट आ अनिरुद्धक अनुसन्धान अपन-अपन नैतिक तथा ज्ञानगत सीमा रखैत अछि। कथावाचक ई सभ सीमापार भविष्यक सङ्केत देबैत अछि; एही कारण कथाक नीतिगत प्रश्न दृश्य-विशेषक संवादसँ पैघ बनैत अछि।

रचनात्मक सीमा सेहो चिन्हबाक चाही। अनिरुद्धक प्रत्येक प्रतिवाद बौद्धिक रूपसँ आकर्षक अछि, मुदा सहायक रोहित निरन्तर गलत अनुमान करैत देखाइत अछि; एहि वितरित भूमिकासँ न्याय-दर्शनक चर्चा किछु ठाम शिक्षक-शिष्यक नाटच बनि सकैत अछि। “सङ्केत अपराध नहि”क भाव अनेक रूपमे फिरैत अछि। तथापि उपन्यास एहि पुनरावृत्तिक नियन्त्रण कथात्मक प्रतिघातसँ

करैत अछि: सत्यप्रकाशक मृत्यु जाँचक कठिनाई बढ़बैत अछि, गलत वाहन पुरान अनुमान तोड़ैत अछि, मोहन पासवानक मृत्यु अर्थतन्त्रक अमूर्ततासँ मूर्त दु:खमे बदलैत अछि।

पहिल बीस दृश्यक समेकित निर्णय ई जे उपन्यासक पहरा सर्वोपरि कोनो अद्भुत रक्षकक तुरन्त हिंसक विजय नहि। पहरा अछि—प्रमाणकेँ अपराधक सुविधा अनुसार नहि मोड़ब, पीड़ितक निजी शोककेँ सार्वजनिक न्यायसँ निर्वासित नहि करब, आ श्रमिकक मृत्युक मानवीय मूल्यकेँ निर्माण-व्यवस्थाक क्षतिक एक छोट प्रविष्टि नहि बनब। ई व्याख्या एखन धरि पढ़ल दृश्य १–२० पर आधारित अछि; आगाँक दृश्यसभक प्रमाण एखने पूर्वनिर्णीत नहि कएल जा सकैत।

अध्ययन-इकाई ६ — लोकसेतुक कागज, भयक चिट्ठी आ संयुक्त अन्वेषण (दृश्य २१–२४)

सांस्कृतिक छविक भीतर प्रमाणक अस्थिर तिथि

इक्कीसम दृश्यमे “लोकसेतु जनसंपर्क सेवा”क कार्यालय एक सांस्कृतिक केन्द्रक ऊपर दू कोठलीमे देखाओल गेल अछि। लोकनृत्यक फोटो, रक्तदानक प्रमाणपत्र आ खेलक पुरस्कार प्रथम दृष्टिमे समाजोपयोगी संस्थाक छवि दैत अछि। मालती घोष लिखित शुल्क-पद्धति, नियमित कर आ कर्मचारी-पञ्जीक सहायता सँ अपन कार्यक वैधता रखैत छथि। मुदा अनिरुद्ध तटबन्ध-जागरूकता शिविरक फोटोमे लिखल बारह जूनक तिथि पर प्रश्न उठबैत छथि, कारण कथित कार्यक्रमक क्षेत्रमे ओहि दिन बाढ़ि सँ आवागमन बाधित छल। एहि ठाम सामग्रीक अस्तित्व आ फोटोमे अंकित तिथिक यथार्थ दू स्वतंत्र साक्ष्य अछि। फोटो वास्तविक भेलो पर कार्यक्रमक दावा यथार्थ होएत, ई स्वयंसिद्ध नहि; तिथि गलत भेलासँ समस्त कार्यक्रम बनावटी सिद्ध होएत, ईहो आवश्यक नहि। उपन्यासक जाँच-विवेक एहि द्वैधकेँ खुलल राखैत अछि।

बाइसम दृश्य एहि प्रथम विसंगतिक पुनरावृत्ति पर केन्द्रित अछि। मयंक तीन फोटोमे अलग-अलग तिथिगत असंगति देखबैत छथि; दू कार्यक्रमक दिन सरकारी अभिलेखमे निषेधाज्ञा अथवा मौसमगत बाधाक सूचना अछि। तीन त्रुटि एक त्रुटिसँ अधिक गम्भीर प्रश्न उठा सकैत अछि, मुदा ताहिसँ जालसाजी स्वतः सिद्ध नहि होइत। अनिरुद्धक बारम्बार “सम्भव”क आग्रह कथानकमे हास्य उत्पन्न करैत अछि; रोहित ओकरा व्यङ्ग्य करैत अछि। ई हास्य केवल मनोरञ्जन नहि, अनुसन्धानक अधीर मनःस्थितिक आलोचना अछि। आरोपक तत्परता जतेक तीव्र, निर्दोषक अधिकार ओतबे असुरक्षित भऽ सकैत अछि।

शोकग्रस्त घरमे धमकीक प्रवेश

तेइसम दृश्य एक लिफाफाक माध्यमसँ सार्वजनिक आर्थिक-जालक भयकेँ मृणालिनीक देहरी धरि अनैत अछि। मोटरसाइकिल पर आबि दू युवक

सत्यप्रकाशक फोटो आ चुप रहबाक चेतावनी फेंकि जाइत छथि; पड़ोसी वाहनक रङ मात्र देखलनि, नम्बर नहि। धनेश्वरी फोटो जरा कऽ नष्ट नहि करैत छथि, प्लास्टिक थैलीमे राखि पुलिसकेँ देबाक निश्चय करैत छथि। प्रारम्भिक बिज्जी-प्रसङ्गमे शारीरिक पहराक सूत्र आब प्रमाण-संरक्षणक व्यवहार बनैत अछि। जे घरमे सत्यप्रकाशक कारी डायरी हेरायल छल, ओही घरमे शेष प्रमाण सुरक्षित रखबाक नब अनुशासन आरम्भ होइत अछि।

ईशान एहि धमकीकेँ पिताक हत्या सिद्ध होयबाक समान मानैत अछि। अनिरुद्ध स्पष्ट करैत छथि जे ई काज परिवारकेँ चुप करेबाक इच्छा देखबैत अछि, मुदा मृत्युक कारणक स्वतन्त्र परीक्षा चाही। एहि अन्तरमे जाँचक भाषा आ शोकक भाषाक गहिर टकराव अछि। ईशान न्यायसँ पूछैत अछि जे मृत पिता नहि घुरताह तँ न्याय की बदलत। अनिरुद्धक चुप्पी एतय नीरस विधिक उपदेशसँ बेसी प्रभावी अछि: न्यायक सामाजिक अर्थक समक्ष प्रमाणवाद अपन सीमित साधन स्वीकार करैत अछि। बिज्जीक क्षणिक पुनरागमन धनेश्वरीक पहराक विश्वासकेँ प्रत्यक्ष देखेबैत अछि, मुदा ओकरा पुलिसक साक्ष्यक विकल्प नहि बनबैत।

संस्थागत विस्तारक नैतिक कसौटी

चौबीसम दृश्यमे गठित “समेकित आर्थिक-अपराध अन्वेषण कक्ष”क साधारण कार्यालय, पाँच कोठली आ मिश्रित कर्मचारी दल सरकारी औपचारिकता सँ बेसी जाँचक विषयक विस्तार दर्शबैत अछि। अनिरुद्ध समन्वय, मयंक वित्तीय विश्लेषण, रोहित क्षेत्रीय परीक्षा, बैंकक अधिकारी आ नैना वर्मा डिजिटल अभिलेखक काज लेल राखल गेल छथि। सत्यप्रकाशक मृत्यु एक मात्र विषय नहि रहि निविदा, दबाव, भुगतान, आगजनी आ जनसंपर्क-प्रतिवेदनक संभावित सम्बन्ध तक पसरैत अछि। बोर्डपर ‘घटना, सम्बन्ध, हेतु, प्रमाण, निर्णय’ लिखबाक क्रम महत्त्वपूर्ण अछि; अनुसन्धान निष्कर्षसँ उलटा चलए तऽ समस्त संस्था दोषपूर्ण अनुमानक सेवा करए लगत।

ई आरम्भिक चारि दृश्यक प्रमुख उपलब्धि प्रमाणकेँ सामाजिक वस्तु बनायब अछि। फोटो, तिथि, लिफाफा, मृतकक छवि, सरकारी बैठक आ बोर्डक पाँच शब्द सभ अर्थहीन कागज नहि, लोकक अधिकार आ जीवनक बीच खड़ा वस्तु अछि। तथापि लगातार पात्रक मुँहसँ जाँच-विधिक सूत्र कहेबाक एक सीमा अछि: कतेको ठाम कथावाचक दृश्यकेँ स्वयं निष्कर्ष धरि पहुँचेबाक अवसर कम दैत अछि। मुदा मृणालिनी आ ईशानक मौन, धनेश्वरीक साक्ष्य-संरक्षण आ मालतीक संयत उत्तर एहि शिक्षात्मक झुकावकेँ मानवीय प्रतिपक्ष प्रदान करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ७ — आँकड़ा, लेखापालक शब्द आ दिगन्तक केन्द्र (दृश्य २५–२८)

नैना वर्माक गणना : नियमितता दोष नहि

पच्चीसम दृश्य नैना वर्माकेँ कोनो काल्पनिक सर्वज्ञ तकनीकी पात्र नहि बनबैत। ओ बैंकिंग प्रणालीक उपलब्ध आँकड़ा देखैत छथि—एके दिन सक्रिय खाता, सम्बन्धित संस्थाक भुगतान, आ भुगतानक बादक व्यावसायिक प्रवाह। हुनकर ध्यान ‘अस्वाभाविक रूपेँ नियमित’ छोट कम्पनीसभ पर पड़ैत अछि। ई नियमितता अपने अपराध नहि; एकरा सँ अधिकतम अभिलेख बनौनिहारक अनुशासनक अनुमान निकलैत अछि। कथाक उत्कृष्टता ई जे आँकड़ा-परीक्षणकेँ इलेक्ट्रॉनिक चमत्कार नहि, शङ्काक विन्यस्त प्रक्रिया बनाओल गेल अछि। अनिरुद्ध नैना सँ स्पष्ट पूछैत छथि जे ई अपराधक प्रमाण अछि कि नहि, आ नैना ‘नहि’ कहैत छथि। एहि ‘नहि’ सँ कथाक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि। नव्य न्यायगत विचारसँ असाधारण नियमितता एकटा सम्भावित हेतु-अन्वेषण अछि, सिद्ध व्याप्ति नहि। जँ अनेक वैध संस्थामे सेहो नियमनिष्ठ लेखा रहि सकैत अछि तँ समान लक्षणसँ अवैधता निष्कर्षित करब हेत्वाभासक जोखिम उत्पन्न करैत। कथा एकर उदाहरण पात्रक संवादमे दैत अछि। तखन प्रश्न बदलैत अछि: दिगन्त अथवा प्रवाही कतेक एकरूप, कोन उद्देश्यसँ, कोन वास्तविक सेवा आ कोन सम्बन्धक आधार पर भुगतान पबैत अछि? कागजक साफ-सुथरापन निश्चिन्ततताक कारण नहि, प्रश्नक विषय बनैत अछि।

हरिनाथ मिश्र आ साक्षीक ज्ञान-सीमा

छब्बीसम दृश्यमे “प्रवाही परामर्श” आ “लोकसेतु”क वार्षिक लेखा एकहि बाहरी फर्म “सम्यक लेखा सहयोग” द्वारा बनबाक तथ्य भेटैत अछि। अलग कार्यालय, निदेशक आ बैंकक बावजूद समान लेखापाल एकटा सम्बन्ध दैत अछि; ई साझा सेवा अपने आपराधिक सहभागिता नहि। साठि बरखक हरिनाथ

मिश्र सहयोग करैत छथि, आ दुनू संस्थाक वार्षिक मिलानक समय आबयवला एक युवकक विषयमे कहैत छथि, जिनका ‘प्रणव बाबू’ कहल जाइत छल। उपनाम ‘सेन’ कि ‘सिंह’, से हुनका निश्चित नहि। अनिरुद्ध अनिश्चित अनुमान पूरा कहबाक आग्रह नहि करैत, उलटे जतेक ज्ञात अछि ततेक धरि कथन सीमित रखबाक निर्देश दैत छथि।

एहि छोट प्रसङ्गमे ‘शब्द’ प्रमाणक एक गम्भीर सीमा ठाढ़ होइत अछि। साक्षी जे देखलनि आ जे सुनलनि, तकर भेद केवल भाषिक शुद्धताक नहि; जँ अधिकारी अधूर नाम भरि देताह तँ अपन अनुमान साक्षीक मुँहसँ कहाओल बात बनि सकैत अछि। कथाकार हरिनाथक राहतक साँसक सहारे ई बतबैत छथि जे प्रमाणक शुद्धता साक्षीक सुरक्षासँ सेहो जुड़ल अछि। हरिनाथक कथन न तऽ पूर्ण दोषमुक्ति, न पूर्ण स्वीकारोक्ति; ओ नाम खोजबाक एक सीमित रास्ता अछि।

पाँच प्रणव सँ प्रणवेश तक : सम्बन्ध आ अपराधक भेद

सत्ताइसम दृश्य ‘प्रणव बाबू’क खोजमे पाँच अलग लोकक सूची बनबैत अछि। बीमा अभिकर्ता, शिक्षक, वाहन-विक्रेता, बेरोजगार युवक आ दिगन्त परियोजना समूहक परियोजना-समन्वयक प्रणवेश पाठकमे एक नामक समानता पहिचानक समता नहि। अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचलाक बाद दिगन्तक पुरान कर्मचारी, लोकसेतुक अनुबन्ध, सरिता लॉजिस्टिक्सक वाहन-सेवा आ अम्बर क्रीड़ा मीडियाक प्रचारक सम्बन्ध दिखाइत अछि। ई पहिल संगठित जालक नक्शा अछि, मुदा सम्बन्धक रेखा स्वयं अपराधक रेखा नहि। अनिरुद्ध बोर्डपर नाम लिखबैत छथि, लाल दोष-घेरा नहि।

अठाइसम दृश्यमे देवांशु रक्षितक सार्वजनिक जीवनक छवि—पुलपर हेलमेट, विद्यालयमे कम्प्यूटर दान, बाढ़ि-समय राहत आ व्यापार-मण्डलक सम्मान—सकारात्मक संस्थागत प्रस्तुति बनबैत अछि। आख्यान ओकरा हठात् अपराधी घोषणा नहि करैत। न तऽ परोपकार अपराधक अभाव सिद्ध करैत, न आम

व्यावसायिक समन्वय अपराधक उपस्थितिक। सत्यप्रकाशक मृत्यु-वला ट्रक हेरायल अछि आ शिवधारा यार्डक धमकीक फोनक क्षेत्र व्यापक मात्र भेटल अछि। ई तथ्य पाठकक मनमे ‘दिगन्त’कैं अपराधक केन्द्र घोषित करबाक प्रवृत्ति रोकैत अछि।

अन्तर्विषयी कलात्मक महत्त्व

एहि चारि दृश्य आधुनिक अपराध-गाथाक शिल्प बदलि दैत अछि। पुलिसक दौड़-धूपक स्थानपर आँकड़ाक असामान्य लय, लेखापालक अधूर स्मृति आ संस्थासभक अन्तरसम्बन्ध कथाक गति बनैत अछि। पश्चिमी आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ जानकारीक वितरण असमान अछि—पाठक संदेहक जाल देखैत अछि, मुदा पात्रक पास सीमित अभिलेख अछि। भारतीय प्रमाण-चिन्तनक दृष्टिसँ प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमान तीनू परस्पर सुधार करैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे अनेक संस्था आ नामक त्वरित प्रवेश सामान्य पाठकसँ विशेष ध्यान माँगैत अछि; तथापि एहि घनत्वक कारणेँ उपन्यास आर्थिक-जालक प्रपञ्च कैं ठोस आकार दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८ — मयंकक भय, सरोजिनीक प्रश्न आ प्रणवेशक कथन (दृश्य २१–३२)

अपराध-जाँचक घरभितरी लागत

उनतीसम दृश्यमे मयंक घर घुरैत काल लगातार तीन मोड़ तक एक मोटरसाइकिल पाछाँ देखैत छथि। वाहन आगाँ चलि जाइत अछि; नम्बर नहि भेटैत; पीछा कएल गेल कि संयोग छल, निर्णय असम्भव अछि। ओ पहिने पत्नी सँ ‘किछु नहि’ कहैत छथि। एहि छोट झूठसँ जाँचक बाहरी भय घरक भीतरी विश्वासमे प्रवेश करैत अछि। अनिरुद्ध जखन सुरक्षाक प्रस्ताव दैत छथि तँ मयंक संभावित संयोगक कारण मना करैत छथि; उत्तर भेटैत अछि जे ‘बहादुरी’ प्रमाणक श्रेणी नहि। ई बात पात्रक मनोविज्ञानमे असाधारण अछि: प्रमाणगत सावधानीकेँ अपन व्यक्तिगत सुरक्षा न करबाक बहाना नहि बनाओल जा सकैत।

मयंक अन्ततः पत्नीकेँ सत्य कहैत छथि। पत्नी जखन काज छोड़बाक सम्भावना पूछैत छथि तखन ओ छोड़ि सकबाक क्षमता स्वीकार करैत छथि, मुदा छोड़बाक इच्छाकेँ अस्वीकार करैत छथि। उपन्यास यहाँ कर्तव्यक नैतिक महिमामण्डन मात्र नहि करैत; मयंकक निर्णयक मूल्य पत्नी आ घरक असुरक्षामे चुकाएल जाइत अछि। पहिनुक सत्यप्रकाशक ‘गलत नम्बर’ आ मृणालिनी सँ गोपनक घटनाक संग ई दृश्य समानान्तर पढ़बाक योग्य अछि। पुरुष पात्र परिवारक रक्षा लेल जानकारी दबबैत छथि, मुदा गोपन स्वयं परिवारक निर्णय-अधिकार घटबैत अछि।

सरोजिनीक प्रश्नसँ न्याय-दर्शनक सामाजिक परीक्षा

तीसम दृश्य मोहन पासवानक पत्नी सरोजिनीक गाम पहुँचिते कृतिगत स्वर बदलैत अछि। जारल यार्डमे मृत मजदूरक नाम जाँचक फाइलमे एक सूचना छल; माटिक घर, टीनक छत, विवाहकालीन फोटो आ तीन बच्चाक बीच ओ जीवनक सामाजिक रिक्ति बनैत अछि। सरोजिनी पूछैत छथि जे पतिक कोनो

दोष नहि छल तँ आगि किएक लगाओल गेल, आ बेटी अगिला मास विद्यालयक शुल्क कोना देत। एतय प्रमाणगत उत्तर पर्याप्त नहि। अनिरुद्धक मौन आ मयंकक दर्शन छोट पड़बाक कथन अपराध-सम्बन्धी विचारकेँ उत्तरजीवी परिवारक आर्थिक अधिकारक प्रश्न धरि अनैत अछि।

ई दृश्य पूर्व “मोहनक मृत्यु” सँ कलात्मक रूपेँ अलग अछि। पहिने करुणा मृतकक पहचान आ हिंसाक घटनासँ उत्पन्न भेल छल; आब करुणाक भार भविष्यक व्यावहारिक व्यय पर अछि। रस-सिद्धान्तक करुण आ न्याय-पद्धतिक प्रमाण-विवेक एतय सम्मुख ठाढ़ अछि। यदि अनुसन्धान सत्य अनैतो परिवारक शिक्षाक पानि नहि भरत तँ न्यायक लोकजीवनमे अर्थ अधूर रहि जाएत—ई उपन्यासक प्रश्न अछि, कानून विषयक पुष्ट ऐतिहासिक दाबी नहि।

पाँच घेरा, एक प्रश्नचिह्न

एकतीसम दृश्य अन्वेषण-कक्षक बोर्डपर प्रवाही, लोकसेतु, दिगन्त, सरिता आ अम्बरक पाँच घेरा बनबैत अछि। नैना अम्बरक आय कम होयबाक, खेल-विज्ञापन करबाक आ दिगन्त-सँग दू भुगतान-स्रोत जुड़बाक सूचना रखैत छथि, मुदा आपराधिक संकेत नहि भेटैत। अनिरुद्ध ओकर घेरा मेटा दैत छथि; सम्बन्धक रूपमे नाम रहैत अछि, आरोपक रूपमे नहि। बोर्डमे नाम लिखब, घेरा मेटब आ प्रश्नचिह्न राखब कथनक दृश्य व्याकरण अछि। उपन्यास केवल जाँचक विषय नहि, जाँचमे प्रयुक्त चिह्नसभक नैतिक अर्थ सेहो निर्मित करैत अछि।

प्रणवेश पाठकक आगमन : स्वीकारोक्तिक सीमा

बत्तीसम दृश्य प्रणवेश पाठक स्वयं अनिरुद्ध लग पहुँचैत छथि। हुनकर कथन अनुसार दिगन्त ठेकेदारसभक ‘समन्वय’ नामपर बोली हटेबाक, स्थानीय विरोध सँ बचेबाक आ परामर्श अथवा जनसंपर्कक नामपर भुगतान मिलबाक व्यवस्था करैत छल। ओ प्रवाही आ लोकसेतुकेँ दिगन्तक ‘बाहरक जेब’ कहैत छथि। अनिरुद्ध एहि रूपक आ वास्तविक तथ्यक भेद पूछैत छथि। प्रणवेश छह

प्रतिशत स्थिर नहि होयबाक बात कहैत छथि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु, शिवधारा यार्ड आ मोहन पासवान विषयमे प्रत्यक्ष ज्ञान नकारैत छथि। अतः हुनकर कथन आर्थिक व्यवस्था सम्बन्धी सम्भावित साक्ष्य अछि, हिंसाक दोषसिद्धि नहि।

प्रणवेश कहैत छथि जे पैघ जालमे स्पष्ट 'आदेश' कम, अपेक्षाक सङ्केत बेसी चलैत अछि। ई विवेचन सत्ताक अप्रत्यक्ष भाषा पर महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि, मुदा एहि समय ई एक पात्रक कथन मात्र रहैत अछि। अनिरुद्ध ओकरा बचावक भाषा सेहो मानि सकबाक सम्भावना छोड़ैत नहि। अन्ततः प्रणवेश गवाह बनबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि आ स्वीकारैत छथि जे भय आ अपराध-बोध दुनू कारण अछि। गवाहीक प्रेरणा आ गवाहीक सत्य एक वस्तु नहि; उपन्यासक प्रमाणगत अनुशासन एही अलगाव पर टिकैत अछि।

अध्ययन-इकाई १ — आंशिक साक्षी, सभ्य अपराधभाषा आ अम्बरक उद्भव (दृश्य ३३–३६)

साक्षीक एक गाँठ सम्पूर्ण जाल नहि

तैंतीसम दृश्यमे प्रणवेशक कथन तुरन्त अन्तिम बयान नहि मानल जाइत। तीन बैठकक तिथि यात्रा-अभिलेखसँ, दू होटलक विवरण भुगतानक कागजसँ, आ छह प्रतिशतक सामान्य विभाजन वित्तीय गणनासँ आंशिक मिलैत अछि। मुदा हत्या सम्बन्धी हुनका प्रत्यक्ष सूचना नहि। अनिरुद्ध जे सीमा बनबैत छथि—आर्थिक जालक गवाह होयब सम्भव, मृत्युक प्रत्यक्ष गवाह नहि—से कथाक केन्द्रीय न्याय-विवेक अछि। एक व्यक्ति जालक किछु गाँठ देखैत अछि; ओकरा सभ गाँठक साक्षी मानल जाए तँ सही कथन सेहो अविश्वसनीय बनि सकैत अछि। शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता केवल वक्ताक भावुक पश्चात्ताप सँ नहि तय होइत। ओकर पहुँच, स्थान, तिथि, दस्तावेज सँ मेल आ जे नहि जनैत अछि तकर स्वीकार सर्वाधिक आवश्यक अछि। प्रणवेशक सुरक्षा बढ़बैत अनिरुद्ध ओकर भूमिका जाँचय छोड़ैत नहि। अनुसन्धानक ई दोहरी जिम्मेदारी—गवाहक सुरक्षा आ आरोपक निष्पक्ष परीक्षण—कथा कैं एकरेखीय ‘भेदिया भेटल, रहस्य खुलल’ शिल्पसँ ऊपर उठबैत अछि।

देवांशुक मौन आ वाक्यक आवरण

चौंतीसम दृश्यमे देवांशु रक्षितक कार्यालयमे प्रणवेशक अनुपस्थिति आ फोन बन्द होयबाक सूचना पहुँचैत अछि। देवांशु स्वयं हड़बड़ी नहि देखबैत छथि। सहकर्मी संग हुनकर बातचीतमे ‘जाल व्यक्ति सँ पैघ’ होयबाक विचार अबैत अछि, मुदा हत्या, आगि, धमकी सन शब्द उच्चरित नहि होइत। एहि प्रसङ्गक भाषिक शिल्प महत्त्वपूर्ण अछि। अपराधक अन्तिम आधिकारिक आदेश अस्फुट रहि सकैत अछि, जबकि व्यवहारिक दबावक चिन्ह लोकक आचरण बदलैत अछि। तथापि पाठक एहन भाषा सँ देवांशुक व्यक्तिगत अपराध विधिक रूपेँ सिद्ध मानि नहि लेबाक चाही; ई दृश्य चरित्रक सम्भावित मानसिकता देखबैत अछि।

एहि दृश्य पर एक कलात्मक प्रश्न सेहो उठैत अछि: कथावाचकक व्याख्यात्मक टिप्पणी ‘अपराध अपन भाषा सभ्य बना लेने छल’ सम्भावित अर्थकेँ प्रत्यक्ष कहि दैत अछि। जँ पाठ संवादक आन्तरिक अर्थ पाठकपर छोड़ितय तँ अस्पष्ट सत्ता-सम्बन्ध अधिक जटिल भऽ सकैत छल। मुदा अपराधक भाषिक आवरणक उपन्यासगत पुनरावृत्तिक दृष्टिसँ ई स्पष्टता विषयक एक सूत्र बनैत अछि।

ईशानक पिता-लेखा आ छोट पर्चीक महत्त्व

पैंतीसम दृश्यमे ईशान पहिल बेर सत्यप्रकाशक बिल, बैंक-पर्ची, मशीन-रसीद आ मजदूरक हिसाब स्वयं व्यवस्थित करैत अछि। मृणालिनीक ‘फाड़ब नहि’ निर्देश प्रमाण-संरक्षणक पारिवारिक नैतिकता स्पष्ट करैत अछि। छोट कागजमे ‘अम्बर —दू बेर फोन’ भेटैत अछि। नामक सन्दर्भ अस्पष्ट अछि: सत्यप्रकाश स्वयं फोन केने छलाह कि सम्पर्क सम्बन्धी स्मृति लिखने छलाह, पर्चीक कथनसँ एकरेखीय उत्तर नहि बनैत। मुदा ईशानक हाथसँ भेटल सूक्ष्म सूचना अम्बर क्रीड़ा मीडियाकेँ बोर्ड पर फेर आनैत अछि। कथा अन्वेषणक स्वामित्व केवल पुलिसक हाथमे नहि रखैत; पीड़ित परिवारक श्रम सेहो ज्ञान उत्पन्न करैत अछि।

अम्बरक कबड्डी, क्रिकेट, खेल-सूचना अनुप्रयोग आ विज्ञापनक योजना एखन घोषित वैध गतिविधि अछि। छोट तीर-जेकाँ बिज्जीक चिह्न पाठककेँ सम्भावित भविष्यक दिशा देखबैत अछि, मुदा एहि क्षण कम्पनीक अपराध सिद्ध नहि। उपन्यास नदीक ‘दोसर धार’ आ डिजिटल खेलजगतक भावी विस्तारक सङ्केत दैत अछि। ई भविष्यसूचना कथनक दीर्घकालिकता बनबैत अछि; एकर आधारपर एहि प्रारम्भिक दृश्यसभमे वर्तमान अवैध जुआ-विन्यासक ठोस रूप कल्पित करब असंगत होयत।

किनारक नैतिकता : धनेश्वरी आ नैना

छत्तीसाम दृश्य वस्तुत: दू परस्पर जुड़ल प्रसङ्ग लऽ कऽ अबैत अछि। पहिलेमे धनेश्वरी ईशानकेँ कमला-बलानक कछार पर लऽ जाइत छथि, जतय ओ सत्यप्रकाशक बाल्यकालक स्मृति कहैत छथि। बिज्जी फेर देखाइत अछि;

‘किनार छोड़य नहि’क कथन रक्षकक अर्थ बदलैत अछि। पहिल दृश्यमें पहरा साँपक शारीरिक सामना छल, आब पहरा दीर्घकालिक उपस्थिति आ हेरायल सत्यक पाछाँ नहि हटबाक धैर्य अछि। कछार पर माए-पिताक स्मृतिक अभाव ईशानक शोककेँ नव अन्तरङ्गता दैत अछि।

दोसर प्रसङ्गमे नैना साधारण ग्राहक बनि अम्बरक कार्यालयमे जाइत छथि। खेलक परिणाम, खिलाड़ी आँकड़ा, प्रतियोगिता-पंजीकरण, विज्ञापन आ सम्भावित प्रायोजन विषयक सूचना पबैत छथि। ‘पाइ लगा कऽ’ खेल आयोजित होएबाक प्रश्नपर कर्मचारी जुआसँ दूरी बतबैत अछि; नैना प्रतिक्रिया नोट करैत छथि, मुदा अपराध ठहरबैत नहि। ई अवलोकन मात्र अछि—व्यवसायगत शब्दपर परिचय देखब, आपराधिक कृत्य देखब नहि। उपन्यास एहि दू प्रसङ्गकेँ जोड़ि बुढ़ायल स्मृति आ नव डिजिटल संकेतक बीच दीर्घ कथाक पुल बनबैत अछि।

अध्ययन-इकाई १० — रंजनाक प्रतिवाद, देवांशुक पूछताछ आ कन्हैयाक क्षति (दृश्य ३७–४०)

सुरक्षा देल गेल, मुदा घरक विश्वास हेरायल

सैंतीसम दृश्यमे प्रणवेश सरकारी अतिथि-गृहमे सुरक्षित छथि, मुदा पत्नी रंजना हुनका भेटिते क्रोध व्यक्त करैत छथि। छह वर्षक अतिरिक्त आयकेँ बोनस, परियोजना आ यात्राक नामसँ छपएबाक कारण परिवार वास्तविक आर्थिक स्रोतसँ अनभिज्ञ रहल। रंजनाक प्रतिवादक मूल बिन्दु ई नहि जे पति हुनका बचा लेने छथि; हुनका अनजान रखल गेल। एहि दुनू वाक्यक अन्तर उपन्यासक पारिवारिक राजनीति स्पष्ट करैत अछि। सत्यप्रकाशक प्रारम्भिक ‘गलत नम्बर’सँ प्रणवेशक छह वर्षक गोपन धरि एक नैतिक रेखा बनैत अछि, मुदा दुनूक परिस्थितिक समता नहि—पहिल पात्र धमकीक पीड़ित, दोसर आर्थिक जालसँ जुड़ल सम्भावित सहभागी अछि।

अनिरुद्ध प्रणवेश प्रति सहानुभूति रहितो हुनका स्वयमेव दोषमुक्त नहि करैत छथि। ‘गवाह’ आ ‘मुक्त’ दू अलग स्थिति अछि। रंजनाक पारिवारिक असहमतिकेँ मात्र पति-सुधारक साधन बनबएबाक बदला कथा ओकर अपन निर्णय-अधिकार देखबैत अछि: ओ बेटाकेँ नजिक रखब स्वीकार नहि करैत छथि। करुणा आ दायित्वक एहि समवेत अर्थसँ अपराध-गाथाक निजी संसार विश्वसनीय होइत अछि।

देवांशुक सार्वजनिक तर्क आ पुलिसक मर्यादा

अड़तीसम दृश्यमे दिगन्त परियोजना समूहक कागज विधिवत् मँगाओल गेल अछि। देवांशु वकीलक संग पहुँचैत छथि आ स्थानीय समन्वयक कठिनाइ बतबैत छथि—मजदूर, जमीनक विवाद, पंचायत, परिवहन आ मौसम। ई तर्क अपने असत्य नहि; वास्तविक परियोजनामे एहन सेवा उपयोगी भऽ सकैत अछि। अनिरुद्ध कम्पनीक भूमिका जाँचबाक बात रखैत छथि, व्यक्तिक दोष पूर्वनिर्धारित नहि करैत। एतय कथा प्रतिस्पर्धी भाषाक परीक्षा करैत अछि:

व्यावसायिक तर्क जाँचसँ पूर्ण उन्मुक्ति नहि, आ संदेह औचित्यहीन अपमानक अनुमति नहि।

देवांशु जखन नाम मेटाबयमे संसार कमजोर होयबाक टिप्पणी करैत छथि, ओ शिकायत कि अप्रत्यक्ष चेतावनी, ई अनिश्चित अछि। कथनक ई दोहरा सम्भावना शब्द-प्रमाणक सीमा खोलैत अछि। आधुनिक अपराध-आख्यानमे अत्यन्त प्रभावी शिल्प ई जे संवाद अनिर्णय जीवित रखैत अछि; आरोपक रुचि सहल पाठक तखन अपन जल्दबाजी पर सोचैत अछि।

अम्बरक छोट भुगतान आ आर्थिक प्रवाहक क्रम

उनतालीसम दृश्यमे दिगन्तक तीन कोठरी भरि गेल कागजक परीक्षणसँ अम्बरक अनेक छोट प्रायोजन सामने अबैत अछि। पाँच लाखक परियोजनासँ बीस हजार, दू करोड़क परियोजनासँ एक लाख सन राशि मूल पाठमे उदाहरण रूपेँ अछि; ई सभ एके अपराधी प्रतिशतक गणना नहि। नैना स्पष्ट करैत छथि जे ई छह प्रतिशतक भीतरक भुगतान नहि, ओकर पछिला अलग छोट धारा-जेकाँ होइत अछि। दिगन्तक ग्राहक आ अम्बरक कार्यक्रमक वास्तविक सम्बन्ध खोजबाक आवश्यकता अछि। कम्पनी खेल-महोत्सव आयोजित करैत अछि; अतः खेलक फोटो आपराधिक छद्म साबित नहि करैत, मुदा असामान्य भौगोलिक प्रायोजन प्रश्न अवश्य उठबैत अछि।

नदीक शाखा-प्रवाहक रूपक एतय सम्पूर्ण आर्थिक अभिलेख-रचनाकेँ स्थानीय भूगोलसँ जोड़ैत अछि। कमला-बलानक कछार पर धनेश्वरीक ‘किनार’ आ बैंक-पर्चीमे निकलैत छोट धनधारा—दू दृश्य-भाषा एक समेकित सौन्दर्य बनबैत अछि। कथानकक आलोचनात्मक शक्ति हुनका एक करबमे नहि, हुनकर सम्बन्धक सीमा पहिचानबमे अछि।

कन्हैया रजक आ असिद्ध नामक सार्वजनिक दण्ड

चालीसम दृश्य कथाक अनिवार्य आत्मालोचनात्मक बिन्दु अछि। ट्रक-खरीदबिक्रीक दलाल कन्हैया रजककेँ पुलिस पूछताछ लेल खोजैत अछि, मुदा

‘संदिग्ध’ कहि नाम सार्वजनिक भऽ जाइत अछि। छोट व्यवसाय प्रभावित होइत अछि, बेटी नेहाक विवाह-वार्ता रुकैत अछि आ घरपर अपमान पहुँचैत अछि। जाँचक औपचारिक आरोप स्थापित नहि भेलो पर सामाजिक दण्ड लागू भऽ जाइत अछि। अपराधक समुचित अन्वेषण आ असिद्ध व्यक्तिक सम्मान—दुनू एके न्यायिक मर्यादाक अनिवार्य पक्ष बनैत अछि।

कन्हैयाक पर्चीमे ट्रकक भुगतान तीन हिस्सामे होयबाक सूचना अछि—नगद, बैंक आ “जनविश्वास बहुउद्देशीय सहकारी समिति”क ड्राफ्ट। कथाक ई नब स्रोत जाँचक दिशा बढ़बैत अछि, मुदा कन्हैयाक व्यक्तिगत आपराधिक संलिप्तता स्वतः सिद्ध नहि करैत। अनिरुद्ध दलकेँ सूचना कत्तऽ सँ बाहेर गेल से जाँचबाक निर्देश दैत छथि। उपन्यास स्पष्ट करैत अछि जे अनुसन्धानक गोपनीयता केवल अपराधीकेँ बचबाक अवसर न देबाक लेल नहि, निरपराधक सामाजिक जीवन सुरक्षित रखबाक लेल सेहो अछि। एहि दृश्यमे प्रक्रिया स्वयं न्याय-नीतिक विषय बनैत अछि; अपराधी धरबाक अन्तिम सफलतासँ मध्यवर्ती अन्यायक क्षति मेटि नहि सकैत।

दोसर अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दृश्य २१–४० : अभिलेखक शक्ति आ नामक क्षति

प्रारम्भिक नायकक मृत्युसँ संस्थाक इतिहास धरि

दृश्य १–२०क जाँच मुख्यतः सत्यप्रकाशक मृत्यु आ मोहन पासवानक आगजनीक बाद उघड़ल आर्थिक दबावपर केन्द्रित छल। दृश्य २१–४०मे लोकसेतु, प्रवाही, दिगन्त, सरिता, अम्बर आ सम्यक लेखा सहयोगक परस्पर सम्बन्ध खुलैत अछि। ई विस्तार दोषीक स्वतः वृद्धि नहि, प्रमाणक नब श्रेणीसभक प्रवेश अछि—फोटो, तिथि, यात्रा-रजिस्टर, बैंक आँकड़ा, होटल-बिल, कर्मचारी-सम्बन्ध, पर्ची, मौखिक कथन आ संस्थागत आदेश। प्रत्येक स्रोत अलग प्रश्नक उत्तर दैत अछि; सबकेँ मिला कऽ व्यापक निष्कर्ष जाँचल जा सकैत अछि, मुदा बिना मिलान कोनो एक स्रोत सम्पूर्ण निर्णायक नहि।

प्रमाणक पाँच रूप आ न्यायगत त्रुटि

मालती घोषक कार्यक्रम-फोटो प्रत्यक्ष दृश्य वस्तु होइतहुँ तिथि-सत्यापन माँगैत अछि। हरिनाथक ‘प्रणव बाबू’ शब्द-साक्ष्य अधूर पहिचान दैत अछि। नैनाक नियमित भुगतान पर निरीक्षण अनुमानक प्रारम्भिक आधार दैत अछि, सिद्ध व्याप्ति नहि। प्रणवेशक कथन आंशिक दस्तावेजीय संगति पबैत अछि, मुदा हत्या सम्बन्धी ज्ञानक सीमा मानैत अछि। कन्हैयाक भुगतान-पर्ची नब सहकारी संस्थाक नाम अनैत अछि, मुदा सार्वजनिक दुष्प्रचारक क्षति नहि रोकि सकैत। एहि पाँच भिन्न स्रोतक तुलनामे उपन्यास एक विस्तृत प्रमाण-नीति रचैत अछि।

नव्य न्याय-चिन्तनक उपयोग एतय सजावटी पदावली नहि होयबाक चाही। जहाँ प्रत्यक्ष सन्दिग्ध अछि, ओतय प्रत्यक्षक सीमा; जहाँ शब्द अछि, ओतय वक्ताक विश्वसनीयता; जहाँ आँकड़ाक समानता अछि, ओतय हेतुव्याप्तिक अभाव; जहाँ नाम जोड़ल अछि, ओतय उपाधि आ परिचयक अपूर्णता—प्रसङ्गक अनुरूप विश्लेषण आवश्यक अछि। अनिरुद्धक ‘सम्भव’ कहलनि

जाँचक संयम थिक, मुदा एहि संयमकेँ सरोजिनीक बेटी लेल विद्यालय-शुल्क जोगेबाक उत्तर मानि नहि सकैत। प्रमाणक नीतिक संग सामाजिक प्रतिपूर्ति पर विचार अनिवार्य अछि।

चारि पारिवारिक अनुभव

मृणालिनी धमकीक कागज राखैत छथि, सरोजिनी आर्थिक अस्तित्वक उत्तर माँगैत छथि, रंजना गोपनक विरोध करैत छथि, आ मयंकक पत्नी सुरक्षाक साझा निर्णय चाहैत छथि। ई चारि स्त्रीक भूमिका एक भावुक प्रतिमामे समेटब अनुचित अछि। हुनकर जोखिम, सूचना, अधिकार आ निर्णय अलग अछि। ईशान पिता-लेखाक व्यवस्थापनसँ अनुसन्धानक भागीदार बनैत अछि; धनेश्वरी ‘पहरा’केँ वन्यजीवक बाहरी क्रियासँ मानवीय धैर्यक व्यवहारमे बदलैत छथि। एहि गाथामे परिवार अनुसन्धानक निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहि, प्रमाणक संरक्षण आ नैतिक परीक्षणक सक्रिय स्थल अछि।

स्थानीय भाषा, सामाजिक भूगोल आ भावी डिजिटल संकेत

गढ़ नारिकेलक कमला-बलान, धनेश्वरीक पुरान स्मृति, छोट ठेकेदारक जोखिम, मजदूरक शोक, ग्रामीण विवाह-वार्ताक अपमान आ औद्योगिक-पट्टिक आगजनी एक सामाजिक भूगोल बनबैत अछि। डिजिटल परत नैना वर्माक बैंक आँकड़ा आ अम्बरक खेल-अनुप्रयोगक योजना सँ प्रवेश करैत अछि। कथाक वर्तमान भागमे अवैध जुआ अथवा धनशोधनक पूर्ण यन्त्र-रचना प्रमाणित नहि; एखन ई सम्भावित आगामी कथाप्रवाहक सङ्केत अछि। एहि अन्तरक सम्मान नहि कएल जाए तँ समीक्षक मूल उपन्यासक काल-व्यवस्था भंग कऽ देत।

शिल्पक उपलब्धि आ सीमा

अत्यधिक संस्था-नाम आ लगातार ‘प्रमाण नहि’ सूत्र सामान्य पाठक पर विचारक भार राखैत अछि। कोनो-कोनो ठाम कथावाचक अर्थ स्वयं कहि दैत अछि, जाहिसँ दृश्यात्मक अस्पष्टता घटैत अछि। मुदा ईहो सत्य अछि जे चालीसम दृश्य धरि कथाक सनसनी एकटा मनमाना अपराधी निश्चित करबा सँ

बचल अछि। मालतीक चित्तक डोलनाइ, हरिनाथक अधूर नाम, मयंकक अघोषित भय, प्रणवेशक आंशिक स्वीकार, देवांशुक दोअर्थी वचन, सरोजिनीक विद्यालय-शुल्क आ कन्हैयाक सामाजिक बदनामी—ई सभ विशिष्ट छवि उपन्यासकेँ प्रमाणगत अनुशासनसँ मानवीय कथा धरि अनैत अछि। एही कारण एहि खण्डक कलात्मक महत्त्व अपराध-कथाक समाधानमे नहि, समाधान पाबय सँ पहिने लोकक संग व्यवहार केहन होयबाक चाही, ताहि प्रश्नमे अछि।

अध्ययन-इकाई ११ — जनविश्वासक धन-प्रवाह सँ ‘अलग उपाय’ धरि (दृश्य ४१–४४)

सहकारी खाताक एक दिनक असामान्य गति

एकचालीसम दृश्य कन्हैया रजकक पर्चीमे भेटल “जनविश्वास बहुउद्देशीय सहकारी समिति”क नामसँ आरम्भ होइत अछि। संस्थाक घोषित उद्देश्य ग्राम्य बचत, लघु ऋण आ स्वयं-सहायता अछि; मुदा ड्राफ्ट निर्गत होयबाक दिन एक पैघ राशि दिगन्तक उपठेकेदारसँ आयल आ अगिला दिन वाहन-विक्रेता धरि पहुँचि गेल। ई प्रवाह सामान्य ऋणक स्वरूपसँ अलग देखाइत अछि, मुदा नैना आ मयंक वैकल्पिक व्याख्या—पुरान देनदारी, समायोजन आ कर सम्बन्धी कारण—अद्यापि समाप्त नहि मानैत छथि। एहि स्थल पर खाता-आँकड़ा प्रश्न उठबैत अछि, लाभार्थी कोनो दोषी अछि ई अन्तिम निर्णय नहि दैत। कथाकार वित्तीय गतिविधिक सूक्ष्म कालक्रमसँ संशयक विश्वसनीय आधार निर्मित करैत छथि।

सत्तर बरखक अध्यक्ष बासुदेव मंडलक हस्ताक्षर उपलब्ध अछि, मुदा निर्णयक वास्तविक उद्देश्य सम्बन्धी हुनकर ज्ञान प्रबन्धक जितेन्द्र पालक कथन पर निर्भर अछि। जितेन्द्र तीन मास पहिने काज छोड़ने छथि, तेँ रोहितक मनमे तुरन्त फरारीक अनुमान उपजैत अछि। तीन दिनमे ज्ञात होइत अछि जे ओ वृक्क-रोगक उपचार लेल अस्पतालमे छथि। ई उलटफेर जासूसी-कथाक परम्परागत भ्रमक उपयोग करैत अछि, मुदा उद्देश्य केवल पाठककेँ चकमे देब नहि। बीमारीक कारण अनुपस्थिति आ अपराधसँ बचबाक कारण अनुपस्थिति एकहि बाहरी लक्षण दे सकैत अछि; हेतुक पहचान लेल अलग प्रमाण आवश्यक अछि।

जितेन्द्र पाल : फाइलक कोष्ठक आ मनुष्यक जीवन

बेचालीसम दृश्यमे अस्पतालक बिछौनापर जितेन्द्र पाल कमजोर छथि। हुनकर कथन अनुसार पुरान ऋण-पुंज खरीदबाक सूचना देल गेल छल, कागज तैयार करबाक बाद अन्तिम लाभार्थी बदलबाक बात हुनका पछाति ज्ञात भेल। एक

सलाहकारक कर्मीक सम्भावित नाम 'सुरजीत' कहल गेल, मुदा पक्का परिचय नहि। अनिरुद्ध बीमारीक अवस्थामे प्रश्न सीमित करैत छथि। अदालतक अपेक्षित अर्थ निकालबाक लेल अस्वस्थ मनुष्य पर शारीरिक अथवा मानसिक दबाव देब कथाक न्याय-नीतिक विरुद्ध अछि। एतय पँजी-पत्रक सटीकता मात्र नहि, मनुष्यक मर्यादा सेहो प्रमाण-संग्रहक नियम अछि।

जितेन्द्र किछु सप्ताह बाद रोगसँ मरि जाइत छथि। मूल कथामे हुनकर मृत्यु केओ हिंसक षड्यन्त्रक परिणाम नहि कहैत; उलटे बीमारीक कारण स्पष्ट करैत अछि। मुदा जाँचक फाइलमे हुनका नामक सोझाँ ‘मृत’ लिखि देल जाइत अछि। एहि शब्द-संक्षेप आ बितल जीवनक बीचक दूरी पाछाँ मोहन पासवानक पारिवारिक क्षतिक पुनरावृत्ति करैत अछि। उपन्यास प्रत्यक्ष हिंसाक अतिरिक्त दस्तावेजी संक्षेपणक नैतिक मूल्य देखबैत अछि: संस्था लेल व्यक्ति एक प्रविष्टि, परिवार लेल पूर्ण संसार।

समायोजन-सूची : वर्गीकरणक हिंसक सम्भावना

तेरचालीसम दृश्यमे दिगन्तक पुरान ‘समायोजन सूची’ नैना विधिसम्मत सहमति आ आदेशक बाद सुरक्षित करैत छथि। कर्मचारीक निजी मेघ-संग्रहमे रहल पुरान प्रति संस्थागत वर्गीकरणक चिन्ह दैत अछि। ठेकेदारसभक नामक सोझाँ ‘मृदु’, ‘दबाव आवश्यक’, ‘परिवार-संवेदनशील’, ‘मीडिया-भय’ आ ‘कठोर’ सन टिप्पणी अछि। सत्यप्रकाशक आगाँ ‘कठोर। परिवार-संवेदनशील नहि। अलग उपाय’ लिखल भेटैत अछि। ई निस्सन्देह एक चिन्ताजनक अभिलेखीय संकेत अछि, मुदा ‘अलग उपाय’ स्वयं हत्याक आदेशक साक्ष्य नहि। व्यावसायिक रोक, आर्थिक दबाव अथवा हिंसक उपाय—बहुविध सम्भावना खुलल अछि।

ई सूची पात्रकेँ मानवीय जटिलतासँ हटाकऽ प्रबन्धकीय श्रेणीमे बदलैत अछि। परिवारक प्रति संवेदनशीलता जे नैतिक गुण होयबाक चाही छल, जालक वर्गीकरणमे ओ दबाव-संकेत बनि जाइत अछि। एतय कथाक सामाजिक

आलोचना धनक लेनदेनसँ आगाँ जा कऽ शासन-भाषाक अमानवीय प्रवृत्तिक उद्घाटन करैत अछि। अनिरुद्ध प्रश्नचिह्नकेँ तत्क्षण उत्तर नहि बनबैत छथि, आ एहि संयमसँ सूची अप्रामाणित हत्या-कथा बनेबासँ बचैत अछि।

स्वर-स्मृति आ रुकल चेक

चौआलीसम दृश्यमे अम्बरक संग सत्यप्रकाशक दू फोनक अवधि क्रमशः सात आ एकोनइस मिनट भेटैत अछि; पाँचे दिनक अन्तराल अछि। पछाति एक लाख पच्चीस हजारक चेक रोकल गेल, लाभार्थी अम्बर। मृणालिनीकेँ याद अबैत अछि जे खेलक नामपर सेहो हिस्सा माँगबाक सन्दर्भ पति कहने रहथि, मुदा ओ शब्दशः निश्चित नहि छथि। अनिरुद्ध स्मृत आशय आ शब्दशः बयानकेँ अलग दर्ज करबैत छथि। एहि सूक्ष्म भेदक नाटकीय मूल्य एहि कारण अछि जे पाठक धन-प्रवाहक वास्तविक क्रमसँ हत्या-सन्देह दिस तीव्र गति सँ बढ़य चाहैत अछि, मुदा पाठ साक्षीक ज्ञानक सीमा अनिवार्य करैत अछि।

पीड़ित मृणालिनीक लेल एहि सत्यनिष्ठाक मूल्य कठोर अछि। हुनका लग प्रमाणक सावधानी प्रत्यक्ष न्याय-विलम्ब जकाँ अनुभव होइत अछि। उपन्यास हुनकर असहमतिपर नैतिक दण्ड नहि लगबैत। कानूनक मर्यादा आ दुःखक असहनीय प्रतीक्षा—दुनू सत्य एहि दृश्यसमूहमे सह-अस्तित्व रखैत अछि।

अध्ययन-इकाई १२ — विहानक मंच, अनिरुद्धक परिवार आ अनिलक असिद्ध कथन (दृश्य ४५–४८)

अम्बरक संस्थापक आ खेलक डिजिटल सम्भावना

पैंतालीसम दृश्यमे विहान सारंग अम्बरक व्यावसायिक आरम्भ बतबैत छथि: जिला-स्तरीय क्रिकेटक बाद चोट, तकर बाद विज्ञापन, स्थानीय प्रतियोगिता आ खिलाड़ी-सूचनाक डिजिटल मंच। सत्यप्रकाशक रोकल भुगतानकेँ ओ बजटक समस्या कहैत छथि, जबकि मृणालिनीक स्मृति खेलक नामपर हिस्साक माँग दिस इशारा करैत अछि। दुनू कथनक आधार अलग अछि; कोन सही अछि से तत्काल ठहराओल नहि गेल। विहान दिगन्त आ प्रणवेशसँ व्यावसायिक सम्बन्ध स्वीकारैत छथि, मुदा एहि सम्बन्धक दोषात्मक अर्थ स्वतः स्पष्ट नहि।

विहानक ‘दाँव’ विषय प्रश्नपर तुरन्त ‘नहि’ कहब नैना नोट करैत छथि; पहिनुक कर्मचारी सेहो एहि शब्दक अर्थ तुरन्त बुझने छल। एहि समान प्रतिक्रियासँ व्यवसायकेँ अवैध जुआ घोषित नहि कएल जा सकैत, किएक तँ खेल-उद्योगमे कौशल, प्रतियोगिता, पुरस्कार आ दाँव बीच कानूनी सीमा सामान्य विषय भऽ सकैत अछि। आलोचक लेल महत्त्वपूर्ण ई अछि जे कथाकार नव डिजिटल उद्योगक भाषा पाठककेँ सिखबैत छथि, मुदा एखन ओकर भविष्यक अपराध-विन्यासक पूर्ण प्रतिरूप प्रस्तुत नहि करैत।

आर्थिक कार्रवाई आ परिवारपर दबाव

छियालीसम दृश्यमे दिगन्त पर पहिल वैधानिक कार्रवाई आर्थिक अनियमितताक जाँचसँ जुड़ल अछि, सत्यप्रकाशक हत्या-सिद्धिसँ नहि। संदिग्ध परामर्श-भुगतान, सम्भावित बनावटी कार्यक्रम, सहकारी खाता आ निविदा-पश्चात समायोजनक आधारपर किछु खाताक गतिविधि अस्थायी रूपेँ रोकल जाइत अछि। देवांशु प्रेसमे स्वयंकेँ विकासक पक्षधर कहैत छथि। एही समय सामाजिक माध्यमक अनजान खातासभ अनिरुद्ध विषय भ्रामक आ आरोपात्मक बात प्रसारित करैत अछि; परिवारक पुरान फोटो आ बच्चाक विद्यालयक नाम

सेहो खुलैत अछि। कथा एहि प्रचारक वास्तविक आयोजककेँ प्रमाण बिना देवांशु घोषित नहि करैत।

अनिरुद्ध अपन बच्चाक चिन्तासँ ओहि क्रोधक अनुभव करैत छथि जकर नियन्त्रण ओ आन लोकसँ माँगैत रहलाह। मयंकक संवादमे न्यायकेँ व्यक्तिक आवेगसँ ऊपर संस्था पर टिकेबाक आग्रह आवैत अछि। मुदा संस्था सेहो मनुष्यसभसँ बनैत अछि—ई प्रतिवाद सूत्रकेँ वास्तविक कठिनाइमे अनैत अछि। एहि दृश्य पर आलोचनाक केन्द्र नायकक अलौकिक निष्पक्षता नहि, निष्पक्षता बनौने रखबाक आत्म-संघर्ष अछि।

प्रणवेशक बेटा : दोष आ सम्बन्धक दोसर भाषा

सैंतालीसम दृश्य न्यायालयमे सम्भावित बयानक दिनक मौसम आ सुरक्षासँ आरम्भ होइत अछि; बादमे पत्नी रंजनाक फोन आठ बरखक बेटाक प्रश्न लग अनैत अछि। बालक पूछैत अछि पिता कखन घुरताह, फेर खराब लोकक संग काज केलाक अर्थ की अछि। प्रणवेश तत्काल सत्य पूरा नहि कहि सकैत छथि; ओ अपन अपराध-बोध आ पितृत्वक बीच अटकल छथि। कानून गवाह, सम्भावित अभियुक्त आ दण्डनीय भागीदारी अलग करैत अछि, मुदा बालक लेल पिता एक व्यक्ति अछि। एहि द्वैधसँ कथा परिवारकेँ अपराध-जालक नैतिक पर्दा नहि, उत्तरदायी सम्बन्धक सक्रिय स्थान बनबैत अछि।

राजनक कथन आ दोसर जीवित चालकक असहमति

अड़तालीसम दृश्यमे वाहन-समन्वयक राजन चौरसिया सत्यप्रकाशक दुर्घटनाक सप्ताहमे एक भारी वाहनक व्यवस्था करबाक बात बतबैत अछि। चालक अनिल महतो कहल गेल, जे करीब दू मास बाद नाव पलटबाक घटनामे मरि गेल। राजनक स्मृतिमे अनिलक मदिराक अवस्थाक एक अस्पष्ट वाक्य रहल—देल काज सड़कक नहि छल। मुदा सुननिहार दोसर जीवित चालक एहन कथन मोन नहि करैत। वाहन हेरायल अछि, कथित चालक मरल, प्रत्यक्ष पुष्टिक अभाव। एहिसँ हत्या-सन्देह प्रश्नरूपेँ रहैत अछि; राजनक शब्द मृत्युक प्रकार प्रमाणित नहि करैत।

मृणालिनी जखन ‘निश्चित नहि’ पुनः सुनैत छथि तँ हुनकर थाकल हँसी कथाक तीव्र मानवीय बिन्दु अछि। एतय जाँचक नियम एकरेखा शिक्षण नहि; न्यायिक संयम पीड़ितक अपूरणीय दुःखक सोझाँ व्याकरणहीन भऽ जाइत अछि। पश्चिमी अपराध-आख्यानक प्रचलित समाधान-पद्धतिक अपेक्षा ई दृश्य अनिर्णयकेँ जानि-बुझि जीवित रखैत अछि।

अध्ययन-इकाई १३ — आर्थिक गिरफ्तारी सँ न्यायालयक अनिश्चित दहलीज धरि (दृश्य ४९–५२)

प्रमाणहीन हत्या-आरोप जोड़बाक प्रलोभन

उनचासम दृश्यमे आर्थिक अपराधक जाँच ठेकेदारसभक बयान आ भुगतानक कागजसँ दृढ होइत अछि। एक हिस्सा स्वयं भुगतान स्वीकार करैत, किछु ठेकेदार दबावक बात कहैत, किछु कागज जरा चुकल, किछुक अर्थ विवादित अछि। अभियोजनमे कियो सत्यप्रकाशक मृत्युक आरोप सेहो जोड़बाक सुझाव दैत अछि। अनिरुद्ध स्पष्ट करैत छथि जे प्रणवेश आर्थिक जालक केन्द्र विषयमे कहि सकैत अछि, मुदा ‘अलग उपाय’क हत्या-आदेश प्रत्यक्ष नहि सुनने अछि। जाँच-प्रक्रिया दबावक माध्यम बनय तऽ राज्यक आ अपराधक व्यवहारगत दूरी संकुचित होयत—ई कथाक केन्द्रीय संस्थागत प्रश्न अछि।

एहि दृश्यमे ‘पूर्ण जाल’ देखबाक इच्छा आ ‘पूर्ण प्रमाण’ पाबबाक स्थिति अलग अछि। कथा समाधान विलम्बित करबैत अछि, मुदा ई विलम्ब आलस्यक कथानक नहि, एक कठिन नैतिक निर्णय अछि। रोहितक अधीरता पाठकक सम्भावित असन्तोषक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

देवांशुक गिरफ्तारी आ अम्बर इंटरैक्टिवक समकालिक जन्म

पचासम दृश्य देवांशुक गिरफ्तारी एहन काजक रूपमे देखबैत अछि जाहिमे न गोली, न दौड़, न प्रदर्शन: आर्थिक षड्यन्त्र आ वित्तीय आरोप पर विधिवत कार्रवाई। देवांशु जखन सत्यप्रकाशक प्रश्न उठबैत छथि, अनिरुद्ध आर्थिक मामला आ मृत्युक जाँचक विभाजन कायम रखैत छथि। गिरफ्तार व्यक्ति पर सभ अपराधक भार रखि देबाक सुविधा पाठ नकारैत अछि। एकर पाछाँ खबर फैलैत अछि, किछु फोन बन्द, किछु फाइल अनुपलब्ध, किछु धनक गतिविधि बदलैत अछि। एहि गतिविधिसभक कर्ता-सन्दर्भ प्रत्येक ठाम अलग जाँच माँगैत अछि।

ओही सप्ताह ‘अम्बर इंटरैक्टिव’क पंजीकरण होइत अछि। नैना केवल तिथि घेरा दैत छथि। एक समयगत संगति कथात्मक पूर्वसंकेत अवश्य, मुदा एहि मात्रसँ अम्बरक नव संस्था देवांशुक अपराधक निरन्तरता सिद्ध नहि। कथा जतेक जानकारी दैत अछि, तकर सीमा राखि पढ़ब—एहि बिन्दु पर समीक्षाक स्वतन्त्र अनुशासन अछि।

मिठाइक डिब्बा आ ‘शायद’क उत्तर

एकावनम दृश्यमे गिरफ्तारीक बाद पड़ोसी मृणालिनीक घर मिठाइ अनैत छथि। ओ डिब्बा लौटा दैत छथि: सत्यप्रकाशक मृत्युक कारण न्यायालय निर्धारित नहि केलक। सामाजिक उत्सव आ पीड़ितक अपूर्ण प्रश्नक बीच कठोर दूरी अछि। ईशानक प्रश्न पर मृणालिनी पहिल बेर ‘शायद’क सहायता सँ न्यायक सम्भावना कहैत छथि। ई शब्द अनिरुद्धक ‘सम्भव’क घरेलू रूप बनैत अछि। पहिले जे न्यायिक अनिर्णय परिवारक विरुद्ध कठोर बुझाइत छल, आब परिवार भीतर ओकर अनिवार्यता प्रवेश करैत अछि, मुदा शोक समाप्त नहि होइत।

न्यायालयमे हेत्वाभास आ असंगत आरोपक भेद

बावनम दृश्य बचाव-पक्षक तर्कसभकेँ पूर्वसँ निरर्थक घोषित नहि करैत: सलाहक वैध शुल्क, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धाक प्रतिशोध, प्रणवेशक स्वार्थ, कार्यक्रमगत प्रशासनिक त्रुटि—एक-एक सम्भावना जाँचबाक पड़ैत अछि। मयंक ईशानकेँ समझबैत छथि जे आर्थिक अपराध सिद्ध होयबासँ सत्यप्रकाशक हत्या सेहो ओहि लोक द्वारा कएल गेल, ई निष्कर्ष स्वत: नहि निकलैत। ‘हेत्वाभास’ एतय दार्शनिक लेबल नहि, अदालतमे प्रमाणक असंगत विस्तारसँ बचबाक व्यावहारिक औजार बनैत अछि।

न्यायिक सत्यक ई सीमा उपन्यासक त्रासदीक मूल स्रोत बनैत अछि। ईशान जखन कहैत अछि जे कतेको सत्य बिना दण्ड रहि सकैत अछि, मयंक ओकर सम्भावना स्वीकार करैत छथि। न्याय-विजयक सूत्र अपेक्षा एहि स्वीकारमे अधिक जटिल साहित्यिक अर्थ अछि: कानून सर्वज्ञ नहि, मुदा ओकर अज्ञानक घोषणामे सेहो नैतिक जिम्मेदारी निहित अछि।

अध्ययन-इकाई १४ — दोषसिद्धि, निर्दोषक दाग आ पुनर्वासक अपूर्णता (दृश्य ५३–५६)

अपराधक वर्गीकरणमे भेद

तेपनम दृश्य आर्थिक मामलाक निर्णयक रूपमे अबैत अछि। मूल कथानुसार निविदा-प्रतिस्पर्धा बाधित करब, भय सँ भुगतान, जाली सेवाक अभिलेख आ वित्तीय छल सम्बन्धी आरोपमे देवांशु दोषी सिद्ध होइत छथि; किछु सह-अभियुक्त दोषमुक्त, किछु पर कम अपराध सिद्ध, प्रणवेश सहयोगक कारण कम दण्ड पबैत अछि मुदा पूर्ण मुक्त नहि। एहि निर्णयक पूर्ण पाठ उपन्यासमे नहि देल गेल अछि, तेँ समीक्षामे विशिष्ट विधि-धारा अथवा दण्ड-अवधि कल्पनासँ जोड़ल अनुचित होयत। निर्णायक बात ई जे सत्यप्रकाशक मृत्यु स्वतंत्र जाँचमे अनिर्णीत रहैत अछि।

मृणालिनी लिखित पाँति पढ़ैत छथि—अतिरिक्त साक्ष्य पाबला पर पुनः परीक्षण। हुनकर प्रतिवादक केन्द्र ई नहि जे आर्थिक अपराधक दण्ड किएक देल गेल; हुनकर प्रश्न जे मृत पति विषयमे न्याय कोन उत्तर देने अछि। अनिरुद्धक सही प्रक्रिया पीड़ितकेँ शान्ति नहि देबैत—मृणालिनी एही सत्यकेँ कठोरतासँ रखैत छथि। कथा कानूनी औचित्यक विजयक बाद भावनात्मक विजय स्वतः घोषित नहि करैत।

लिखित निर्दोषिता बनाम सामाजिक स्मृति

चौपनम दृश्य कन्हैया रजकक विरुद्ध अपराधक आधार नहि होयबाक औपचारिक पत्र दैत अछि। मुदा बेटी नेहाक विवाह-वार्ता वापस नहि अबैत, व्यवसायक हानि सेहो कायम रहैत अछि। नाम पर पड़ल सार्वजनिक दागक तुलनामे नाम साफ होयबाक सरकारी पत्र कम व्यापक समाजिक प्रभाव रखैत अछि। एहि अन्तरमे स्रोतक विश्वसनीयता आ प्रसारक असमानता आलोचनाक मुख्य विषय अछि। कन्हैयाक संकट गलत अभियोग प्रमाणित होयब नहि; आरोपित मानि चर्चामे अनल जाइबाक परिणाम अछि।

रोहित समाचार-पत्रक लोकसँ बात करबाक ढङ्ग बदलैत अछि। पात्र-विकासक दृष्टिसँ ई तात्त्विक महत्त्वपूर्ण अछि: प्रारम्भमे जे रोहित तुरन्त नाम चाहैत छल, ओ एक निर्दोष व्यक्तिक क्षतिसँ प्रक्रियागत नैतिकता सीखैत अछि। एहि परिवर्तनक गवाही ओकर भाषण नहि, व्यवहार अछि।

सरोजिनीक पुनर्वास : व्यय आ स्मृतिक अलग अनुक्रम

पचपनम दृश्य मोहन पासवानक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटबाक, सरोजिनीक छोट दोकान खुलेबाक आ बेटीक विद्यालय फेर घुरबाक विवरण दैत अछि। फाइलमे ई ‘पुनर्वास’ होइत अछि। मुदा बच्चाक मनमे रातिक केवाड़ी खुलबाक ध्वनिसँ बाबूक लौटबाक अपेक्षा निरन्तर रहैत अछि। आर्थिक प्रतिपूर्ति आ शोकक समयरेखा एक नहि। उपन्यास सरोजिनीकेँ न्याय-व्यवस्थाक एक सूत्र मात्र नहि बनबैत, हुनकर श्रम, शिक्षा आ घरेलू स्मृतिक अनवरत संघर्षपर ध्यान रखैत अछि।

अम्बरक वृद्धि आ भविष्यक विधिक सीमा

छप्पनम दृश्यमे वर्ष बदलला पर दिगन्तक नाम बाजारसँ घटैत अछि, प्रवाही बन्द होइत अछि, लोकसेतु नव रूप धारण करैत अछि, मुदा अम्बर बढ़ैत अछि। डिजिटल खेलक प्रत्यक्ष परिणाम, विज्ञापन आ प्रतियोगिता-पञ्जी अनेक जिलामे प्रसारित होइत अछि। विहान सारंग परोपकारी उद्यमीक सार्वजनिक छवि बनबैत छथि। अनिरुद्ध नैना सँ पूछैत छथि जे अम्बर विरुद्ध अपराधक ठोस आधार अछि कि नहि; ‘नहि’ भेटला पर फाइल बन्द करबाक कहैत छथि। कथावाचक भावी दृष्टिसँ एहि निर्णयकेँ अपूर्ण देखबैत अछि, मुदा तत्कालिक प्रमाणक दृष्टिसँ विधिसम्मत मानैत अछि।

ई गहन दार्शनिक स्थिति अछि: भविष्यक परिणाम जानयवला कथावाचक आ वर्तमानमे सीमित साक्ष्य रखनिहार अधिकारी समान ज्ञान-स्थिति नहि रखैत। समीक्षामे एहि दू समयकेँ गड़मड़ करब अनुचित। जँ भविष्यक अपराध एखन सिद्ध नहि तखन केवल नामक निरन्तरता या पुरान व्यावसायिक सम्बन्धक आधारपर दण्ड दैत नीतिक नाम न्याय नहि होयत।

अध्ययन-इकाई १५ — ईशानक गणना सँ हथेलीक डिजिटल जाल धरि (दृश्य ५७–६०)

अगिला पीढ़ीक ज्ञान-क्षेत्र

सत्तावनम दृश्यमे ईशान निर्माण-व्यवसायक बदला गणित आ आँकड़ा-विज्ञान पढ़बाक बाट चुनैत अछि। पिता सत्यप्रकाशक आर्थिक-जाल सँ संघर्षक अनुभव एतय नव पीढ़ीक ज्ञान-चयनक पृष्ठभूमि बनैत अछि, मुदा ईशानक सम्पूर्ण भविष्य एखन स्पष्ट नहि। मृणालिनीक संगणक-विषयक आशंका पर धनेश्वरीक टिप्पणी—यन्त्र स्वयं साँप नहि, मुदा साँप यन्त्रमे घुसि सकैत—प्रारम्भक बिज्जी, गहुमन आ गोहिक रूपकेँ डिजिटल संसारमे स्थानान्तरित करैत अछि। ई रूपान्तरण किसी तकनीकी साधनकेँ स्वतः दूषित घोषित नहि करैत; उपयोग आ नियन्त्रणक नैतिक प्रश्न अनैत अछि।

खेल-परिणामसँ शुल्क-आधारित प्रतियोगिता

अठावनम दृश्यमे अम्बरक अनुप्रयोग पहिने खेलक परिणाम देखबैत अछि, फेर टोली बनायब, खिलाड़ी चुनब, प्रदर्शन आधारित अंक आ प्रायोजित पुरस्कारक सुविधा दैत अछि। ग्रामीण आ शहरी खेल-समुदाय, चाय-दोकानक चर्चा आ अनेक पंजीकरण एहि उत्पादक सामाजिक स्वीकार्यता देखबैत अछि। कानूनक सलाह लऽ ‘कौशल-आधारित प्रतियोगिता’ कहल जाइत अछि। एहि कथनकेँ विशिष्ट भारतीय कानूनी निष्कर्षक रूपमे बिना बाह्य प्रमाण स्वीकार करब नहि चाही; ई उपन्यासक भीतर कम्पनीक औपचारिक प्रस्तुति अछि।

नव वित्त-अधिकारी प्रवेश-शुल्क, प्रतियोगिता आ प्रोत्साहनकेँ अनुमत ढाँचामे राखबाक प्रस्ताव दैत अछि। विहान पैसा केँ मनोरञ्जनक सहायक आकर्षण कहैत छथि। एहि शब्द-संयोजनक द्वैध उल्लेखनीय अछि: कियो मनोरञ्जन खोजैत अछि, कियो जीतक सम्भावना; दोनों प्रेरणा एके पर्दापर मिलि सकैत

अछि। कथाकार एखन समस्त उपयोगकर्ताकेँ पीड़ित नहि बनबैत, मुदा आर्थिक आकर्षणक व्यवहारिक मार्ग खोलैत अछि।

उत्तरायणक अनेक परत आ इतिहासक बचल धागा

उनसठिम दृश्यमे “उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्ग” अम्बर इंटरैक्टिवक निवेशक रूपमे प्रवेश करैत अछि। कागज पर पूँजी वैध आ लेखा नियमित अछि। नैना दोसर विभागमे छथि, संयुक्त जाँचकक्ष भंग भऽ चुकल, पुरान फाइल अभिलेखागारमे अछि। निवेशकक एक निदेशक पाँच वर्ष पूर्व लोकसेतुक लघु हिस्सेदार रहल छल, मुदा हिस्सा बेचि देने छल। एहि ऐतिहासिक सम्बन्धकेँ उपन्यास पुनरावर्तनक सङ्केतक रूपमे रखैत अछि। कागज पर पुरान सम्बन्ध समाप्त होयबाक सम्भावना आ इतिहासमे स्मृतिक धागा बचल रहब—दुनू समान रूपसँ विचारणीय अछि।

एहि प्रसङ्गक गोहि-रूपक पानि बदलबाक पूर्व संकेतकेँ नव स्थान दैत अछि। तथापि स्वामित्वक अनेक परत अपने अवैधता नहि, आ पुरान हिस्सेदारी अपने धनशोधन नहि। कृतिगत भविष्यवाणी आ घटनागत प्रमाणकेँ अलग राखल जाए तँ एहि दृश्यसँ जालक संरचनाक नाटकीय सम्भावना उघड़ैत अछि।

अभिषेकक पाँच सय : आशाक क्रमिक पुनरावृत्ति

साठिम दृश्यमे विश्वविद्यालय छात्रावासक अभिषेक झा पाँच सय प्रवेश-राशिसँ खेल आरम्भ करैत अछि। अगिला दिन दू हजार जीतैत, तेसर दिन पाँच हजार हारैत, सप्ताह बाद मित्रसँ ऋण माँगैत अछि। उत्पादक नियम ओकरा ऋण लेबाक निर्देश नहि दैत; तथापि प्रत्येक हारक बाद ‘अगिला अवसर’क प्रस्तुतिकरण ओकरा पुनः खेल दिस खींचैत अछि। एहि दृश्यसँ कथाक अमूर्त निगमित रेखा एक वास्तविक पात्रक इच्छा, आशा, हानि आ पारिवारिक गोपनमे बदलैत अछि। मोबाइलक चमक ‘अदृश्य खर्चा’क पहिल रूपककेँ नव युगक स्वरूप दैत अछि।

माएक ‘पढ़ाई ठीक?’ प्रश्नपर अभिषेकक संक्षिप्त ‘हँ’ सत्यप्रकाशक पहिल ‘गलत नम्बर’ आ मयंकक पत्नी सँ गोपनक दोहराव अछि। ई छोट असत्य

स्वयं अपराध सिद्ध नहि; मुदा जालक प्रभाव घरेलू निर्णयक सूचनाकेँ संकुचित करैत अछि। कथाक अन्तिम वाक्यक कथ्य ई जे खतरा अब देहरीक बाहर नहि, हथेलीक भीतर अछि। गहुमनक प्रत्यक्ष देहसँ चमकैत स्क्रीन धरि रूपकक ई दूरी आधुनिक अपराध-गाथाक समयविस्तारक कलात्मक उपलब्धि अछि।

तेसर अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दृश्य ४१–६० : न्यायिक सफलता आ नव डिजिटल संकट

दू असमान परिणाम

दृश्य ४१–६०क पहिल खण्डमे आर्थिक जालक अनेक अभिलेख क्रमशः पुष्ट होइत अछि आ देवांशु आर्थिक अपराधमे दोषी सिद्ध होइत छथि। मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु अलग जाँचमे अनिर्णीत रहैत अछि। मृणालिनी एहि सीमाकेँ निजी हानि रूपमे अनुभव करैत छथि। यार्डमे मृत मोहनक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटैत अछि, मुदा शोक बचल रहैत अछि। कन्हैयाक लिखित निर्दोषिता समाजमे पुरान अपमान नहि मेटा सकैत। एहि तीन परिणामक पृथक्करण न्यायकेँ एक चमत्कारी समापन बनय सँ रोकैत अछि।

दस्तावेजक वस्तुनिष्ठता आ असुरक्षाक मनुष्य

जनविश्वासक एक-दिनक धन-प्रवाह, जितेन्द्रक सीमित कथन, दिगन्तक वर्गीकरण-सूची, सत्यप्रकाशक रोकल चेक आ राजनक दोहरा साक्ष्य अलग-अलग स्तरक प्रमाण अछि। जितेन्द्रक रोग-मृत्यु हिंसक कृत्य नहि; ‘अलग उपाय’ हत्याक पुष्ट आदेश नहि; राजनक मदिराग्रस्त चालक सम्बन्धी स्मृति स्वतन्त्र संगति बिना अनिर्णीत। एहि भेदकेँ अक्षुण्ण राखबाक कारण उपन्यासक अविश्वसनीय रूपकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

संस्थागत नियमन आ वैयक्तिक हानि

अनिरुद्ध अपन परिवारक फोटो सार्वजनिक भेलाक बाद सेहो बिना प्रमाण देवांशुक नाम नहि जोड़ैत छथि। ओहो निर्णयक भावनात्मक कठिनाइ अनुभव करैत छथि जे पीड़ित परिवार अनेक वर्षसँ सहैत आएल अछि। कन्हैयाक बेटी नेहाक विवाह-वार्ता, सरोजिनीक बेटी पढ़ाइ छोड़ब, आ प्रणवेशक बेटाक पारिवारिक विश्वास भंग होयब एक-दोसरा सँ अलग सामाजिक परिणाम अछि। प्रमाण-जाँचमात्रक विजय पर्याप्त नहि; मानवीय पुनर्निर्माण एखन शेष अछि।

समयक भिन्नता : अदालत, समाज आ डिजिटल पूँजी

अदालतक समय प्रमाण-संग्रह आ निर्णयसँ चलैत अछि; परिवारक समय प्रतीक्षा आ शोकसँ; कम्पनीक समय पुनर्पंजीकरण, निवेश आ उत्पाद-विस्तारसँ। तीनू गति एक समान नहि। देवांशुक गिरफ्तारीक सप्ताह अम्बर इंटरैक्टिवक पंजीकरण, पुरान हिस्सेदारसँ उत्तरायणक दूरस्थ सम्बन्ध आ अभिषेकक नब प्रतियोगिता—ई कालगत तथा आर्थिक संकेत अछि, मुदा समस्त संरचनाक अपराध-संगति एखन प्रमाणित नहि। एहि अन्तरक विवेकक बिना आलोचक भावी प्रसङ्गक जानकारी पहिनुक दृश्यपर थोपि देत।

कलात्मक परिणाम

पहिल बीस दृश्य बिज्जीक पहराक दृश्यमान रूप रखैत छल, दोसर बीस जाँचक विधि आ सम्बन्धक सीमासँ ओकर नैतिक अर्थ बनबैत अछि, आ एखन तेसर बीस ‘हथेलीक भीतर’क जाल धरि प्रतीककेँ परिवर्तनशील बनबैत अछि। कथा साठिम दृश्यपर नहि समाप्त होइत; अनुत्तरित मृत्युक प्रश्न, आर्थिक अपराधक दण्ड, सामाजिक दाग आ डिजिटल आकर्षण चारि चलैत सूत्र अछि। सूत्रात्मक व्याख्यात्मक वाक्यक किछु पुनरावृत्ति आलोचनाक प्रश्न बनि सकैत अछि; मुदा मूल स्थानीय संवाद, सांख्यिक विवरण, परिवारगत क्षति आ काल-विस्तार एहि हिस्साकेँ स्वतन्त्र मौलिक आधार दैत अछि।

अध्ययन-इकाई १६ — नदी पढ़बाक शिक्षा सँ आँकड़ाक नैतिकता धरि (मूल दृश्य ६१–६४)

पहराक रूपान्तर : धनेश्वरी, गोहि आ घाटवला

एकसठिम दृश्य एहन कथात्मक दहलीज अछि जतय पहिल दृश्यक जीव-जगतक रूपक डिजिटल अर्थव्यवस्थाक अदृश्य संसारमे प्रवेश करैत अछि। वृद्ध धनेश्वरीक कमजोर आँखि बिज्जीक उपस्थिति चिन्हि लैत अछि, मुदा एहि बेर ओ रक्षकक सामर्थ्यक सीमा स्वयं बतबैत छथि। बिज्जी घरमे साँपक प्रवेश रोकि सकैत अछि; पानिमे गोहिक पीछा करब ओकर काज नहि। घाटक रक्षा लेल ‘जे पानि पढ़य’ एहन व्यक्ति चाही। एहि संवादमे लोकानुभवक रूपककेँ सर्वशक्तिमान नायकक मिथक बनाओल नहि गेल; सुरक्षा अलग-अलग माध्यमक परिस्थिति-ज्ञान पर निर्भर अछि। नदीक कछेर आ वित्तीय प्रवाहक एकरूपता निश्चय नैसर्गिक तथ्य नहि, एक कलात्मक तुलना अछि—उपन्यास स्वयं दू संसारक बीच एहि पुलकेँ बनबैत अछि।

ईशानकेँ भेटल वित्तीय आँकड़ा-विश्लेषणक नोकरी एहि रूपकक तुरन्त वस्तुगत विस्तार अछि। कथावाचक भविष्यक अनेक सम्भावित सङ्कट एक संग गनबैत अछि—पिताक अधूर मृत्यु-जाँच, अनजान बैंक-खाता, ऑनलाइन जुआ, धनशोधन आ विस्तृत जाँच। ई आगामिक ज्ञान ईशानक वर्तमान ज्ञान नहि। अतएव दृश्यक आरम्भमे ईशानक अनभिज्ञता आ कथावाचकक भविष्यदृष्टिकेँ अलग राखब आवश्यक अछि। धनेश्वरीक ‘किनार छोड़य नहि’ सलाह पेसागत सावधानी मात्र नहि, परिवारक शोकक पृष्ठभूमिमे नैतिक संयमक बोधक रूपमे सुनाइत अछि। ओहि बीच कानक पहुँचसँ शब्द बहि जएबाक अनिश्चितता दृश्यकेँ सहज उपदेश बनबासँ रोकैत अछि।

प्रशिक्षकक दू निषेध आ संख्याक अर्थ-निर्माण

बासठिम दृश्यमे ‘सूत्रलेख वित्तीय विश्लेषण’क प्रशिक्षण-कक्षमे सुमेधा घोषक दू सूत्र उपन्यासक प्रमाण-दर्शनकेँ नवीन भाषा दैत अछि—असामान्य व्यवहार

अपराध सिद्ध नहि करैत, आ सामान्य व्यवहार निर्दोषिता प्रमाणित नहि करैत। ई द्विपक्षीय निषेध महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल भाग जाँचकर्ताकेँ अनावश्यक आरोपसँ बचबैत अछि; दोसर भाग बाहरी व्यवस्थित कागज देखि निश्चिन्त भऽ जाएबाक भूलसँ। उपन्यास एतय न्याय-दर्शनक पुरान प्रश्नकेँ सांख्यिकीय वर्गीकरण आ जोखिम-मूल्याङ्कनक सन्दर्भमे रूपान्तरित करैत अछि, मुदा आँकड़ा अपने अन्तिम प्रमाण नहि बनैत।

ईशानक पिता सम्बन्धी अम्बरक पुरान पर्ची ओकर व्यावसायिक दृष्टिकेँ प्रभावित करबाक सम्भावना रखैत अछि। सुमेधा फाइल छीनि नहि लैत छथि; ओ ईशानसँ पूर्वग्रहक पहिचान माँगैत छथि। ‘प्रयास करब’ पर्याप्त आश्वासन नहि, कारण व्यक्तिक निष्पक्षता ओकर अपन कथनसँ सिद्ध नहि होइत। ईशान एतबा स्वीकार करैत अछि जे संशय अछि, प्रमाण नहि। ओकर ई स्वीकृति पात्रक विकासक निर्णायक आरम्भ अछि। पहिल पीढ़ीक अनिरुद्ध जाँचमे जे सीमा मानैत छलाह, से नव पीढ़ीक विश्लेषकक आत्मनिरीक्षण बनि रहल अछि। मुदा एहि समानतासँ ईशान निष्पक्ष भऽ गेल—एहन परिणाम एखन निकालब उचित नहि।

वैध व्यवसाय आ अविश्वसनीयता : अम्बरक दोसर रूप

तेसठिम दृश्य अम्बरकेँ ओकर सार्वजनिक कारोबारी रूपमे देखबैत अछि—अनेक खेल, प्रतियोगिता, विज्ञापन, कर-भुगतान, ग्राहक-सहायता आ ग्राहकक शिकायत। कथामे कम्पनी स्वयं बाहरी जोखिम-विश्लेषण मँगबैत अछि; अतएव व्यावसायिक कागजक उपस्थिति आ एहन स्वतः माँगल जाँच दुष्कर्मक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। विहान सारंग ‘लोकप्रियता नियन्त्रणसँ तेज बढ़ल’ कहि समस्याक वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। समीक्षक लेल एहि सम्भावनाकेँ पहिनेसँ छल कहि नकारब कथाक ज्ञान-क्रम भङ्ग करब होयत।

सुमेधाक ‘व्यक्ति नहि, प्रवाह’ देखबाक निर्णय निष्पक्षताक पेशागत उपकरण अछि। विहान ईशानकेँ नहि चिन्हैत अछि, मुदा ईशानकेँ अम्बरक नाम पुरान पारिवारिक घाव दिस लऽ जाइत अछि। एके बैठकमे नामक दू अलग अर्थ

उपस्थित अछि—विहान लेल ग्राहक-अभिलेखक पहचान, ईशान लेल पिताक मृत्युसँ जुड़ल अपूर्ण प्रश्न। उपन्यास एहि भेदकेँ संवादक कोलाहलसँ नहि, ईशानक मौन आ पर्दा पर रखल नामसँ उद्घाटित करैत अछि। ओकर आँकड़ा खोलबाक अन्तिम निर्णय आत्म-संयमक प्रथम अभ्यास अछि, शोकक समाधान नहि।

प्रचार-सहयोग खाता : आङ्किक प्रतिरूपक सीमित दृश्य

चौंसठिम दृश्य किछु ‘प्रचार-सहयोग’ भुगतानक विसंगतिक आधार बनबैत अछि। वृद्ध किसान, घरेलू महिला, विद्यार्थी, रिक्शाचालक आ दोकानदार—ई सभ खाताधारीक पेशा प्रचार-कार्यसँ सहज मेल नहि खाइत, मुदा सुमेधाक स्मरण उचित अछि जे लोक अतिरिक्त रोजी सेहो करैत अछि। संदिग्ध सामाजिक श्रेणी बनायब अपने अपराध-प्रमाण नहि; ने निर्धन अथवा वृद्ध होयब दोषक चिह्न। ईशान पहिने समूह बनबैत अछि, निष्कर्ष नहि। एही छोट पद्धतिगत निर्णयसँ दृश्य सामाजिक पूर्वग्रह आ व्यवहारगत जाँचक भेद राखैत अछि।

आगाँ रकमक शीघ्र बहिर्गमन स्पष्ट प्रश्न उत्पन्न करैत अछि, मुदा बैंक-गोपनीयताक कारण सूत्रलेखकेँ गन्तव्यक सम्पूर्ण जानकारी नहि भेटैत। उपलब्ध आँकड़ाक सीमा उपन्यासमे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य-अनुशासन अछि। वित्तीय प्रवाहक एक अंश देखिकऽ समग्र नेटवर्कक दावा करब हेत्वाभास होयत। दृश्य ईशानक अन्तिम प्रश्नपर रुकैत अछि, जे कथाकेँ रहस्यक दिशा दैत अछि, मुदा पाठककेँ तुरन्त अपराधी चिन्हयबाक सरल सुख नहि दैत। एतय नापल भुगतान-सूची कथात्मक आवेगक विपरीत गति उत्पन्न करैत अछि—धीरे-धीरे उभरैत चिन्ता, बिना निर्णायक उद्घोषणा।

चारि दृश्य मध्यक कलात्मक संगति

एहि चारि दृश्य क्रमशः प्राकृतिक पहरा, आत्म-परीक्षण, संस्थागत प्रस्तुति आ सीमित वित्तीय प्रतिरूपक बीच अर्थ विकसित करैत अछि। धनेश्वरीक घाटवला

आ सुमेधाक विश्लेषक एके पात्र नहि, मुदा दुनू बदलैत पानिक पाठक छथि। ईशानक सावधानीक परीक्षण आ कम्पनीक सभ्य बाहरी भाषा कथा कैं निजी प्रतिशोधसँ अलग संस्थागत आलोचना बनबैत अछि। एक सीमासम्बन्धी प्रश्न अवश्य अछि—धनेश्वरीक लोक-कहबी आ प्रशिक्षण-कक्षक दार्शनिक सूत्र अत्यन्त सन्निकट रखल अछि, जाहिसँ अर्थ किछु स्थलपर पहिनेसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। तथापि विसंगतिक ठोस उदाहरण आ बैंक-अभिलेखक अपूर्णता एही स्पष्टताकैं निरी प्रवचन नहि बनय दैत अछि।

अध्ययन-इकाई १७ — ऋणक लोभ, धन-वाहक व्यवहार आ वचनक भार (मूल दृश्य ६५–६८)

अभिषेकक हार आ आत्म-औचित्यक चक्र

पैंसठिम दृश्यमे अभिषेक झाक संकट केवल जुएमे पाइ हारबाक घटनासँ शुरू नहि होइत; ओकर मूल तत्त्व हारक व्याख्याक जाल अछि। जीतकेँ ओ अपन कौशलक प्रमाण आ हारकेँ अगिला बेर सुधारबाक अवसर मानैत अछि। दुनू व्याख्यामे रुकबाक स्थान नहि। एहि मनोवैज्ञानिक द्वारक निर्माण दृश्य कौशल-आधारित प्रतियोगिताक सार्वजनिक कथन आ युवकक निजी आकाङ्क्षाकेँ जोड़ि करैत अछि। पाँच सयसँ आरम्भ भेल खेल छात्रवृत्तिक अधिकांश रकम धरि पहुँचल, मुदा अभिषेकक अपन गणना ओकर सङ्कटकेँ सङ्कट बुझबाक अवसर घटबैत अछि। उपन्यास एतय नवयुवककेँ सहज लोभी खलनायक नहि बनबैत; ओकर निर्णयमे असफलताक लज्जा आ घाटा पुरेबाक व्याकुलता काम करैत अछि।

रितेश दास ‘काज नहि, खाता चाही’ कहि अभिषेककेँ नव प्रवाहमे प्रवेश दैत अछि। ‘प्रचार-भुगतान’क नाम लेनदेनक वास्तविक प्रयोजनकेँ अस्पष्ट रखैत अछि। अभिषेक पहिने अवैधताक प्रश्न करैत अछि, आ उत्तरमे ओकरा ‘व्यापारक व्यवस्था’क अनिर्दिष्ट आश्वासन भेटैत अछि। ओ तुरन्त सहमति नहि दैत—एहि विलम्बक उल्लेख पात्रक नैतिक द्वन्द्वकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। अन्ततः कमीशनक मात्रा पुछनाइ एहन निर्णायक मोड़ अछि जाहिसँ ओकर व्यावहारिक विवेक आर्थिक आवश्यकता आ पूर्व घाटाक दबावमे पाछाँ हटैत अछि। एहि दृश्यसँ ओकर आपराधिक मंशा पूर्ण सिद्ध नहि, मुदा जोखिम बुझबाक अवसर छल, से पाठमे स्पष्ट अछि।

‘म्यूल खाता’क सम्भावना आ नाम-सादृश्यक निषेध

छियासठिम दृश्यमे सुमेधा धन-वाहक खाताक सम्भावना उठबैत छथि, मुदा मूल पाठमे अम्बरक औपचारिक प्रणाली एहि नामसँ कोनो खाता वर्गीकृत नहि करैत।

पद्धतिगत विवेक एहि द्वन्द्वमे अछि: एक बाहरी वित्तीय ढाँचाक व्यवहार शङ्कास्पद भऽ सकैत अछि, जबकि मुख्य कम्पनी अपन लेखामे ओहि कार्यकेँ आन श्रेणीमे रखैत हो। सूत्रलेख पहचानपत्र, अनुबन्ध, कार्य-विवरण आ भुगतानक आधार माँगैत अछि। किछु कागज पूर्ण, किछु अधूर, किछु हस्ताक्षर समान आ किछु सम्पर्क बन्द—ई सभ जाँचक आवश्यकता बढ़बैत अछि, मुदा एकल अंश दोषसिद्धि नहि।

लोकविस्तार डिजिटल सेवाक नाम देखिते ईशानकेँ पुरान लोकसेतु जनसम्पर्क सेवा स्मरण होइत अछि। ‘लोक’क समान उपसर्ग नि:सन्देह कथात्मक पूर्वसङ्केत अछि, मुदा ईशान अपन नोटमे स्वयं नाम-सादृश्यकेँ प्रमाण मानबासँ रोकैत अछि। तत्पश्चात् कम्पनीक निदेशकक पुरान अम्बर क्रीड़ा मीडियासँ अनुबन्धित कार्यक्रम-संयोजनक सम्बन्ध सत्यापित होइत अछि। ई दू स्थिति अलग अछि: नामक मेल अनुमान, पूर्व व्यावसायिक सम्बन्ध वास्तविक अभिलेखीय तथ्य; मुदा वास्तविक पुरान सम्बन्धो आपराधिक सहभागिता अपने नहि सिद्ध करैत। नव्य न्यायसँ पढ़ी तँ पक्षमे उपस्थित हेतुकेँ साध्यसँ प्रमाणित रूपेँ जोड़बाक व्याप्ति एखन उपलब्ध नहि।

अभिषेकक पहिल कमीशनसँ दोसर युवक धरि

सड़सठिम दृश्य अभिषेकक पहिल ठोस धन-वाहक व्यवहार प्रस्तुत करैत अछि—बारह हजारक आगमन, एक हजारक हिस्सा आ बाँकीक निर्दिष्ट व्यापारी खातामे प्रेषण। पाठमे रकम आ लेनदेनक उल्लेख अछि; कोन मूल पीड़ितक पाइ छल, अथवा अभिषेककेँ प्रत्येक स्रोतक वास्तविक जानकारी छल—ई एखन सिद्ध नहि। प्रश्न करिते रितेशक झुँझलाहट आ अभिषेकक चुप्पी, दुनू मिलि शक्ति-संबन्ध देखबैत अछि। अभिषेककेँ छोट कमीशन तत्काल राहत दैत अछि, तेँ अपन गतिविधिक नैतिक मूल्याङ्कन कठिन होइत जाइत अछि। ई दृश्य वित्तीय लेनदेनक संग मानसिक स्वीकृतिक क्रम सेहो लिखैत अछि।

जखन रितेश दोसर खाता माँगैत अछि, अभिषेक पहिने मना करैत अछि। रितेशक प्रत्युत्तर—स्वयं करैत छह तँ दोसर लेल किएक गलत—अपन पूर्व व्यवहारकेँ औचित्यक तर्क बनबैत अछि। अगिला दिन बेरोजगार सहपाठीकेँ ‘प्रचार-काज’क सूचना देबाक घटना ओकर भूमिकामे वास्तविक परिवर्तन अछि। आब ओ केवल खाताक उपयोग स्वीकार करनिहार नहि, दोसराकेँ ओहि संरचनामे अनबाक मध्यस्थ बनैत अछि। समीक्षामे एहि नैतिक परिवर्तनकेँ स्पष्ट स्वीकार करब आवश्यक अछि; अभिषेकक पीड़ा आ अभावक कारण हुनका सभ जोखिमक उत्तरदायित्वसँ पूर्ण मुक्त घोषित करब पाठक संग न्याय नहि करत।

अन्तरिम प्रतिवेदन : शब्दक सूक्ष्म भेद

अठसठिम दृश्य सूत्रलेखक प्रतिवेदन आ विहान सारंगक असहमतिकेँ सोझाँ अनैत अछि। पहिचान-सत्यापन कमजोर, असामान्य शीघ्र बहिर्गमन, बाहरी एजेन्सीक निर्भरता आ भुगतान-अनुबंधक विसंगति—रिपोर्ट व्यवहार पर केन्द्रित अछि। विहान ‘अपराधीकरण’क आरोप करैत अछि, सुमेधा एकरा परिभाषागत रूपसँ खण्डित करैत छथि। ‘म्यूल खाता’क निर्णायक पदक बदला ‘सम्भावित धन-वाहक व्यवहार’ कथबाक पद्धति आरोप आ जोखिम-सङ्केतक बीच दूरी राखैत अछि। शब्दक ई सावधानी साहित्यिक दृष्टिसँ सेहो अर्थवान अछि, कारण कथावस्तुमे गलत नामक सामाजिक दण्ड पहिनेसँ देखल जा चुकल अछि।

ईशानक उत्तर तथ्यतः संतुलित, मुदा सुमेधा ओकर स्वरमे व्यक्तिगत प्रतिक्रिया पकड़ि लैत छथि। अतएव कथामे उचित कथन करब आ निष्पक्ष मनःस्थिति रखब एके बात नहि मानल गेल। विहान बाहरी एजेन्सी हटेबाक सम्भावना बतबैत अछि; एहि वचनक पालनक परिणाम एखन दृश्य नहि कहैत। ईशानक पितृ-स्मृतिकेँ लेखक सत्य-खोजक शक्ति आ पूर्वग्रहक आशङ्का दुनू रूपमे रखैत छथि। पिताक मृत्यु-जाँचक यथार्थ एहि ग्राहक-विवादक कारण पहिले सँ निश्चय करब पाठमे असमर्थित होयत।

व्यक्तिगत संकट आ संस्थागत साक्ष्यक सम्मिलन

पैंसठिसँ अठसठिम दृश्य एकहि वित्तीय प्रवाहक दू भिन्न अनुभव गढ़ैत अछि। अभिषेक खाताक भीतर सीमित कमीशन देखैत अछि; सूत्रलेख खाताक बीच प्रवाहक विसंगति खोजैत अछि। एक दिस व्यक्ति अपन पिछला हारक मूल्य चुकाबय चाहैत अछि, दोसर दिस संस्था जोखिमक भाषा तय करैत अछि। दर्शक दुनू संसार देखैत अछि, मुदा पात्रसभक ज्ञान-सामर्थ्य समान नहि। एहि बहुदृष्टि आख्यान-विधानसँ धन-वाहक व्यवहारक जाल चरित्र-चित्रणमे उतरैत अछि। यद्यपि प्रशिक्षक, विश्लेषक आ कथावाचक सभ प्रमाणक सीमा पर बेराबेरी जोर दैत छथि, अभिषेकक ठोस संवाद आ रितेशक प्रश्न एहि सिद्धान्त-प्रधान आवृत्तिकेँ मानवीय संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

अध्ययन-इकाई १८ — रात्रि कक्षक अर्थतन्त्र आ निर्दोष परिवारक समय (मूल दृश्य ६९–७२)

कम्पनीक भीतरक असमान ज्ञान : ‘रात्रि कक्ष’

उनहत्तरिम दृश्यमे कथावाचक अम्बरक आन्तरिक व्यवस्थाक एक एहन भेद खोलैत अछि जे सूत्रलेखक उपलब्ध आँकड़ासँ एखन पूर्ण रूपेँ सिद्ध नहि। मुख्य अनुप्रयोगक तकनीकी, ग्राहक-सहायता आ विपणन दल अपन-अपन सामान्य व्यावसायिक काज करैत छथि; समानान्तर रूपेँ विश्वस्त एजेन्टक ‘रात्रि कक्ष’मे वास्तविक परिणाम पर दाँव आ तत्काल निपटारा आरम्भ भऽ चुकल अछि। ई अन्तर्विभाजनक कलात्मक महत्त्व अछि जे कम्पनी नामक एक संज्ञाक भीतर सभ कर्मीक एके ज्ञान, उद्देश्य वा दोष नहि अछि। वैध प्रतियोगिताक छवि, निजी एजेन्टक भरोसा आ धन-वाहक संरचना एक-दोसरसँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा कथावस्तुमे सभ लोक एके प्रमाणगत स्थान पर नहि।

विहान सारंग सभ विवरण जनैत अछि कि नहि, कथावाचक स्पष्ट रूपसँ अनिर्णीत रखैत अछि। केशव मेहताक जानकारी आ ओकर ‘मुख्य कम्पनी साफ रहय’ तर्क भने प्रत्यक्ष कथात्मक उद्घाटन अछि। ई अंतर अत्यन्त आवश्यक अछि। पाठक केशवक भाषामे व्यवसायिक ‘जोखिम’ कहि आपराधिक सम्भावनाक सामान्यीकरण देखैत अछि; मुदा एहीसँ विहानक मंशा स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत। ‘जतऽ साफ हो’ कथन धनशोधनक आवरणक रूपक बनैत अछि, किन्तु वास्तविक भुगतानक सम्पूर्ण मार्गक विधिक पुनर्निर्माण एखन जाँचक शेष काज अछि। नव्य न्यायिक दृष्टिमे व्यक्तिक अलग-अलग हेतु, ज्ञान आ कृतिक सम्बन्ध बिना भेद एकहि साध्य स्थापित नहि करैत।

खाता रोकब : प्रशासनिक कार्रवाई आ परिवारक आर्थिक अस्तित्व

सत्तरिम दृश्य बैंकक ‘डेबिट प्रतिबन्धित’ सन्देशसँ प्रशासनिक शक्ति अनुभूतिक रूपमे उपस्थित करैत अछि। खाता केवल सन्दिग्ध लेनदेनक पात्र नहि, माएक पठाओल पाइ, छात्रवृत्ति आ बहिन मंजरीक नर्सिङ्ग प्रवेशक रकम सेहो

एकठाम अछि। एतय नियमक एक सीमा देखाइत अछि: वित्तीय जोखिम रोकबाक उद्देश्य आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा एही रोकक तात्कालिक भार विविध स्रोतक धन पर पड़ैत अछि। शाखा-प्रबन्धक अभिषेककेँ दोषी नहि कहैत, बल्कि जाँच-अधिकारी लग जाएबाक बाट दैत अछि। ओकर कठोर निर्णय व्यक्तिगत वैर नहि, संस्थागत सीमाक अभिव्यक्ति अछि।

अभिषेक स्वयं एक प्रश्नक सोझाँ अटकैत अछि—जे धन अग्रेषित कयलक ओकर वास्तविक स्वामित्व ओ जानैत छल कि नहि। ओ अपन खातामे आनक पैसा आबैत देखलक आ कमीशन लेल अगिला खातामे पठौलक; मुदा मूल पीड़ित अथवा अपराधक पूर्ण रूप ओकरा ज्ञात छल—एहन प्रमाण कथा एखन दैत नहि। एही कारण न ‘हम किछु गलत नहि केने छी’ पूर्ण तथ्य मानल जा सकैत, न तत्काल एक निश्चित अपराधक दोषसिद्धि। दृश्य अन्ततः कानूनक जाँचक समय आ प्रवेशक अन्तिम तिथिक असंगतिकेँ सोझाँ रखैत अछि। न्यायिक विवेक विलम्ब स्वीकार कऽ सकैत अछि; परिवारक शिक्षाक अवसर फेर ओहि रूपमे नहि लौटैत।

मंजरीक प्रवेश छूटब आ अनुपस्थित रितेश

एकहत्तरिम दृश्यमे बड़का घटनाक दृश्य नहि, एकटा अवसरक चुपचाप नाश अछि। कॉलेज प्रवेशक समय नहि बढ़बैत; माए ‘अगिला साल’ कहैत छथि। ई छोट वाक्य अभिषेकक अपराध-बोधपर असाधारण प्रभाव रखैत अछि। परिवार पीड़ाक भार स्वयं सम्हारबाक प्रयत्न करैत अछि, आ युवक बुझैत अछि जे अपन निर्णयक परिणाम एकमात्र ओकर निजी खाता तक सीमित नहि। एहि ठाम ‘आर्थिक क्षति’क तुलनात्मक पैमाना असमर्थ होइत अछि: गुम अवसरक समय रुपैआ गिनि प्रत्यक्ष वापस नहि आनल जा सकैत।

रितेश गायब भऽ जाइत अछि—छात्रावासक कोठली खाली, सम्पर्क बन्द, परिचित लोकक जानकारी अपूर्ण। अभिषेककेँ बुझाइत अछि जे औपचारिक खाता अपन नामसँ खोलनिहार सहज चिन्हाइत अछि, जबकि भुगतानक आदेश देनिहार अदृश्य रहि सकैत अछि। ई दृष्टि वैयक्तिक अनुभूति अछि, सम्पूर्ण

नेटवर्कक सिद्ध पदानुक्रम नहि। अभिषेक छतपर राति बितबैत अछि, मुदा मूल कथामे स्पष्ट अछि जे ओ आत्मघातक निर्णय नहि लेलक। साहित्यिक समीक्षा ओकर मानसिक पीड़ाकेँ नाटकीय मृत्यु अथवा मनगढ़न्त हिंसाक रूपमे नहि बढ़ाओत। भोरमे स्वयं साइबर थाना जेबाक निर्णय एहि दृश्यक नैतिक मोड़ अछि—सङ्कटसँ भागबाक बदला अपूर्ण तथ्यक संग जाँचमे प्रवेश।

रचना सिन्हाक प्रश्न : स्वीकारोक्ति आ भूमिका-विभाजन

बहत्तरिम दृश्य निरीक्षक रचना सिन्हाक साक्षात्कारक संक्षिप्त प्रश्नोत्तर पर रचल अछि। पैसा आगाँ पठाओल, कमीशन लेल, प्रचार कहि बुझल, रितेश मार्फत सम्पर्क भेल—ई सभ उत्तर अभिषेकक अपन मुखसँ अबैत अछि। प्रश्नोत्तरक छोट आकार घटनाक प्रमाणगत भेद स्पष्ट करैत अछि: लेनदेन स्वीकार करब आ समग्र अपराधक जानकारी स्वीकार करब समान नहि। रचना ‘निर्दोष’क प्रमाणपत्र सेहो नहि दैत छथि। ‘चोर’ आ ‘धन-वाहक’ शब्दक भेद करैत ओ अभिषेकक भूमिका जाँचबाक आवश्यकता बतबैत छथि।

माएक ‘मंजरीक प्रवेशक तारीख’ सम्बन्धी सन्देश देखिकऽ रचना स्क्रीन बन्द करैत छथि। ई नाटकीय क्षण विधिक निष्कर्ष बदलैत नहि, मुदा जाँचकर्ताक दृष्टिमे खाता-पाछाँक मनुष्यकेँ प्रवेश करबैत अछि। करुणा निर्णयक स्थान नहि लऽ सकैत—एहि सीमाकेँ कथा स्वीकार करैत अछि; मुदा करुणा बिना जाँच मनुष्यकेँ केवल सङ्ख्याक वस्तु बना सकैत अछि—ई चेतावनी सेहो दैत अछि। भारतीय नाट्य-संवेदनामे करुणरस एतय रोदनक शब्दसँ कम, प्रश्नक स्वर, विलम्ब आ मौनसँ उपजैत अछि। पुलिस-अधिकारीक संयम भावुकताक निषेध नहि, अपितु भाव आ प्रमाणक पृथक्करण अछि।

चारि दृश्यक संयुक्त समीक्षात्मक निर्णय

एहि इकाईमे एकहि समय अपराधी आर्थिक संरचनाक सम्भावित विस्फार आ परिवारक शिक्षागत क्षति चलैत अछि। उनहत्तरिम दृश्यक ‘रात्रि कक्ष’ पाठक लेल अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट, सत्तरिम दृश्यक बैंकक कागज अभिषेक लेल आंशिक, एकहत्तरिम दृश्यक रितेशक अनुपस्थिति अनिश्चित, आ बहत्तरिम

दृश्यक बयान जाँचकर्ताक प्राथमिक सामग्री अछि। ई स्तरभेद आख्यानक बल अछि। उपन्यास अपराध-जालक ज्ञानकेँ पाठक लग आनैत अछि, मुदा अधिकारीक प्रमाण-प्राप्तिक प्रक्रियाकेँ एक छलाङमे समाप्त नहि करैत। भावात्मक दृष्टिसँ मंजरीक प्रवेश छूटबाक प्रभाव सर्वाधिक दीर्घ होइत अछि; वित्तीय व्यवहारक सामाजिक मूल्य मानव-अवसरमे अनुवादित भऽ जाइत अछि।

अध्ययन-इकाई १९ — समानान्तर जाँच आ पारिवारिक स्मृतिक प्रतिरोध (मूल दृश्य ७३–७६)

साइबर शिकायत आ जोखिम-विश्लेषणक दू बाट

तिहत्तरिम दृश्य अभिषेकक फोनक सीमित सामग्री देखबैत अछि—रितेशक बदलैत नम्बर, समूह-सन्देश, सामान्य भुगतान-निर्देश आ अनेक खाता, जाहिमे किछु पुरान साइबर शिकायतसँ चिह्नित अछि। एहि सूचीसँ तुरन्त सर्वोच्च आयोजकक पहचान नहि भेटैत। निरीक्षक रचना राज्य साइबर समन्वय केन्द्र लग सूचना पठबैत छथि। समानान्तर रूपसँ सूत्रलेखक अन्तरिम प्रतिवेदन बैंकसभ धरि पहुँचैत अछि। एहि दू शोध-पथक कथा-पद्धतिगत मूल्य अछि: निजी आँकड़ा-परीक्षण आ औपचारिक शिकायतकेँ एकहि परिणाम दिस बढ़ैत देखाओल गेल अछि, किन्तु एहि क्षण दुनू एक-दोसराक सम्पूर्ण सामग्री नहि जनैत।

दृश्य व्याप्तिक प्रश्नक प्रयोग अपन उपन्यासगत पद्धतिक रूपमे करैत अछि। धुआँ आ आगिक परिचित उदाहरण वित्तीय संसारमे जटिल होइत अछि—शीघ्र भुगतान, नव खाता आ कौशल-जकाँ खेलक सन्दिग्धता अपन आपराधिक कारण स्वयं सिद्ध नहि करैत। ‘कतेक अलग धुआँ एके आगिसँ?’ प्रश्न अनुसंधानक लक्ष्य अछि, निष्कर्ष नहि। एहि रूपमे न्याय-दर्शन केवल सजावट नहि; एतय निरीक्षण-सङ्केत, वैकल्पिक व्याख्या, जाँचक सीमा आ कारण-सिद्धिक क्रम तय करबाक साधन अछि। आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे सिद्धान्तक व्याख्या कुछेक स्थानपर पात्रक घटना सँ पृथक प्रत्यक्ष सूत्र बनि जाइत; मुदा फोनक वास्तविक आंशिक सामग्री ओकर आधार बनाए रखैत अछि।

ईशानक सांख्यिकीय परीक्षा : सहप्रवाहक अपवाद

चौहत्तरिम दृश्य अम्बरक प्रतियोगिता-शुल्क आ लोकविस्तारक प्रचार-भुगतानक सहपरिवर्तन देखबैत अछि। आरम्भिक सम्बन्ध सहज व्यावसायिक व्याख्या स्वीकार करैत अछि—म्याचक दिन उपयोगकर्ता बेसी तँ प्रचार खर्च बेसी।

सुमेधाक सुझाव एहि हेतु आवश्यक अछि जे समीक्षा आन सम्भावना हटाकऽ केवल आशङ्कित अपराध देखबाक प्रलोभनसँ बचे। ईशान लम्बा अवधि, नगर आ एजेन्ट अनुसार समूह पृथक करैत अछि। तीन जिलाक नमूनामे प्रचार-भुगतान उपयोगकर्ता-सङ्ख्यासँ बेसी अनचिन्ह जमा-लहरक पाछाँ बढ़ैत प्रतीत होइत अछि।

इएह सांख्यिकीय सूक्ष्मता दृश्यकेँ सामान्य ‘गुप्त खाता भेटल’ प्रकारक रहस्यसँ ऊपर लऽ जाइत अछि। मुख्य प्रश्न सहपरिवर्तनक सार्वत्रिकता नहि, अलग समूहक अवशिष्ट अन्तर अछि। तथापि ईशान दोसर आय-स्रोतकेँ ‘शायद’ कहैत अछि। लोकविस्तारक स्वतंत्र बजटक व्याख्या व्यवसायिक रूपेँ सम्भव अछि, यद्यपि तीन सप्ताह समय माँगबाक कारण दस्तावेजक सत्यापन शेष रहैत अछि। समय माँगब अपने अपराध नहि—एहि कथा-वाक्यक आदर करब आलोचकक लेल अनिवार्य। एतय प्रौद्योगिकीक कलात्मकता चमत्कारी स्क्रीन नहि, निरन्तर भेद करबाक परिश्रम अछि।

‘सत्य-पुस्तकालय’ आ माएक स्मृतिमे जीवित सङ्कट

पचहत्तरिम दृश्य मृणालिनीक छोट पुस्तक-दोकानमे कथा फेर गढ़ नारिकेलक घरेलू संसार दिस घुरबैत अछि। सत्यप्रकाशक मृत्युक पाछाँ निर्माण-व्यवसाय घटल आ ‘सत्य-पुस्तकालय’ खुलल। नामक दोसर अर्थ—पति सत्यप्रकाश आ व्यापक सत्य—मृणालिनीक उत्तरमे जानि-बुझि कऽ एके साथ जीवित अछि। एहि कृति-संसारमे नाम अभिलेख होइत अछि, मुदा स्मृति आ नैतिक आकाङ्क्षा सेहो। व्यावसायिक प्रगतिक चमकक समानान्तर ई छोट दोकान जीबाक नव आर्थिक आधार आ अधूर शोकक ठाम अछि।

ईशान अम्बरक ग्राहक-संबन्ध बतबैत अछि; मृणालिनी ओकरा दूर रहबाक चेतावनी दैत छथि। पुत्र तर्क करैत अछि जे ओ केस नहि, आँकड़ा-जाँच करैत अछि; माता कहैत छथि जे मृत पति लेल सेहो पहिने काजे छल। ई तुलना कानूनी दावा नहि; परिवारक जीवित भयक रूप अछि। मृणालिनीक ‘सावधानी

सभ समय बचबैत नहि’ पाँति धनेश्वरीक पहरा-रूपकक कठोर पूरक बनैत अछि। एतय रक्षक केवल निर्भीक जाँचकर्ता नहि, ओकर जीवनक भय करनिहार माए सेहो कथा-केंद्रमे अछि। कलात्मक दृष्टिसँ ई दृश्य जोखिम-सूचीक निरन्तर वर्णनमे भावक ताप पुनः अनैत अछि।

पुरान फाइल आ नव जाँचक सम्बन्ध

छिहत्तरिम दृश्यमे राज्य साइबर केन्द्रमे अनेक भिन्न शिकायत मिलाओल जाइत अछि—ककरो जीतल रकम नहि भेटल, कियो नौकरीक नामपर खाता देलक, कियो खाता-भाड़ाक कथा कहैत, कियो एजेन्ट छल। एहिमे भूमिकाक भेद मूल साक्ष्यक पहिचान बनैत अछि। रचना समान भुगतान-मध्यस्थ आ प्रचार-एजेन्सी समूहक सङ्केत आर्थिक-अपराध शाखाकेँ पठबैत छथि; ई अन्तर-विभागीय सूचना, दोषसिद्धि नहि। आदित्य शेखर धरि काज पहुँचलाक पाछाँ ईशानक निजी विश्लेषण आ पुरान पुलिस-जाँचक स्मृति एक महत्त्वपूर्ण सम्भावित सम्पर्कमे आबैत अछि।

सेवानिवृत्त अनिरुद्ध चौधरी ‘अम्बर’ नाम सुनि पुरान फाइल निकालबाक सलाह दैत छथि। ओ स्पष्ट कहैत छथि जे पुरान प्रकरणमे अपराध सिद्ध नहि छल। अतएव इतिहासक उपस्थिति आ दोषक उपलब्ध प्रमाणक बीच सीमा बनी रहैत अछि। हुनकर वाक्य—पुरान संशयकेँ नब प्रमाण नहि बनाउ, मुदा इतिहास बिसरू नहि—एहि बैचक केन्द्रीय न्याय-नीति अछि। अनुसंधानक दृष्टिसँ ई दुविधा वास्तविक अछि: पूरा विस्मरणसँ उपयोगी सूत्र छूटि सकैत, आ पूर्वग्रहक अतिरेकसँ निर्दोषक विरुद्ध मिथ्या संगति बनि सकैत अछि। कथानक दूनू खतरा एक संग रखैत अछि।

बहुदृष्टिक विधागत उपलब्धि

दृश्य ७३–७६मे कथाक दृष्टिबिन्दु रचनाक फोन-साक्ष्य सँ ईशानक आँकड़ा, फेर मृणालिनीक स्मृति आ पुनः राज्य-जाँच धरि घूमैत अछि। ई आवागमन केवल गति बदलबाक प्रयत्न नहि; प्रमाणक अलग-अलग स्थान देखबैत अछि। घरमे जे

भय अछि, से पुलिसक फाइलमे कारण-सिद्धि नहि; बैंकक प्रवाह जे शङ्का जगबैत अछि, से पारिवारिक स्मृतिक विश्वसनीय विकल्प नहि। एही सबकेँ अलग राखि कथा सामूहिक ज्ञानक एक अपूर्ण मानचित्र बनबैत अछि। समीक्षा लेल एतय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात ई जे कोनो एक पात्र एखन समग्र सत्यक स्वामी नहि; अनुसन्धानक अगिला चरण विभिन्न संस्थाक सीमित दृष्टिक संवादपर निर्भर अछि।

अध्ययन-इकाई २० — प्रमाणक सीमापर प्रतिशोध, साझेदारी आ मनोजक चिन्ह (मूल दृश्य ७७–८०)

‘रात्रि कक्ष’क फैलाव आ नाम बदलनिहार अर्थ-व्यवस्था

सतहत्तरिम दृश्य ‘रात्रि कक्ष’क तीव्र प्रसार देखबैत अछि। मुख्य ब्राण्डक प्रतिष्ठा निजी समूह धरि उपयोगकर्ताकेँ अनैत अछि, जतय कौशल-प्रतियोगिता आ सीधा दाँवक सीमा धुँधली बनैत अछि। कथावाचक विभिन्न राज्यक नियमनक भिन्नता सेहो स्वीकार करैत अछि; एहि कारण सम्पूर्ण खेलक गतिविधिक एकहि कानूनी वर्गीकरण करब अनुचित होयत। केशव मेहता मुख्य कम्पनीक खातासँ व्यवहार अलग रखबाक निर्णय करैत अछि। प्रचार, परामर्श आ माल-खरीदक नाम भुगतानक भिन्न बाहरी रूप दैत अछि; कथा स्वयं ई भेद बादक जाँचकेँ जोड़बाक काज बतबैत अछि। एखन एकरा विस्तृत वास्तविक अपराध-प्रमाणक पुनर्निर्माण कहब पाठसँ आगाँ चलब होयत।

ई दृश्य पहिनुक निविदा-जालक ‘स्थानीय सहयोग’ भाषाकेँ याद करबैत अछि। उगाहीक सम्भावित व्यवहार जखन सहयोग कहल जाइत, तखन शब्द सामाजिक विरोध घटेबाक साधन बनैत अछि; डिजिटल युगमे धनशोधनक सम्भावित व्यवहार ‘समायोजन’ बनैत अछि। ई भाषिक पुनरावृत्ति कथाक शीर्षकक ‘गोहि’क नव पर्यावरणमे प्रवेशक सूचक अछि। मुदा तुलना रूपक अछि, न कि एहि आधारपर सभ पुरान आ नव कम्पनिक आपराधिक पहचान स्वतः सिद्ध। सार्वजनिक कारोबारी आवरण आ निजी समानान्तर व्यवहारक विभाजन उपन्यासक सामाजिक आलोचनाकेँ संस्थागत रूप दैत अछि।

ईशान आ अनिरुद्धक भेंट : सत्यक इच्छा बनाम सिद्धि

अठहत्तरिम दृश्य प्रशिक्षण संस्थाक पुस्तकालयमे ईशान आ सेवानिवृत्त अनिरुद्धकेँ आमनेसामने रखैत अछि। ईशान पिताक मृत्यु-जाँच बन्द करबाक प्रश्न सीधा पूछैत अछि। अनिरुद्धक उत्तर ओहि पुराने प्रमाण-सीमापर अडिग

अछि—जे सिद्ध नहि, ओकरा सिद्ध कहल नहि जा सकल। एहि पुनरुक्तिमे चरित्रक जड़ता मात्र नहि, कानून-प्रक्रियाक नैतिक अनुशासन अछि; तखनहुँ ईशानक बीस वर्षक अनुत्तरित अनुभवक भार एतयसँ घटैत नहि। कथा दुनू असुविधाजनक स्थिति साथ रखैत अछि: जाँचकर्ताक सत्यनिष्ठ सीमा आ पीड़ित पुत्रक दीर्घ शोक।

अनिरुद्ध पुरान डिजिटल फाइलमे अम्बर क्रीड़ा मीडिया, दिगन्तक खेल-महोत्सव, उत्तरायणक पुरान निदेशक आ लोकसेतुक लघु हिस्सेदारी देखबैत छथि। ई वास्तविक कागजी सूत्र होइतहुँ केवल सम्बन्धक प्रश्न प्रस्तुत करैत अछि। ईशान पिताक पर्ची जोड़ैत अछि; अनिरुद्ध ‘प्रश्न’ शब्दसँ आगाँ नहि बढ़ैत छथि। नव्य न्यायिक दृष्टिमे आंशिक संगति पर अनुमान करब सम्भव, मुदा हेतु-साध्यक अव्यभिचारी सम्बन्ध बिना निश्चित निर्णय नहि। कथामे प्रतिशोधकेँ केवल दूषित भावना कहि खारिज नहि कएल गेल; अनिरुद्ध कहैत छथि जे ओ बुद्धिकेँ तेज बनबैत अछि आ अन्हार सेहो। एहि द्वैधतासँ पात्रक मानसिक जटिलता बचैत अछि।

अभिषेकक गवाहीक समय आ सामाजिक दण्ड

उनासीम दृश्य कानूनी जाँचमे अभिषेकक सम्भावित सहयोगक संग ओकर सामाजिक जीवनक अधूरापन रखैत अछि। छात्रावासक फुसफुसाहटिमे कियो ओकरा खाता बेचनिहार, कियो जुआरी, कियो पुलिसक आदमी कहैत अछि। ई लेबलसभक कुनै एकटा सम्पूर्ण साक्ष्य नहि, ताहि लेल आलोचकक जिज्ञासा एहि नामसभक सत्यापन नहि, ओकर सामाजिक असर अछि। मित्रक भोजन छोड़ि देनाइ आ शिक्षकक सीमित सान्त्वना युवकक आलगाव बनबैत अछि। दोषसिद्धिक पहिने समाज जे दण्ड दैत अछि, ओकरो अभिलेख अदालतक बाहर निर्मित होइत अछि।

मंजरी पुनः प्रवेशक तैयारी करैत अछि, मुदा भाइक संग सहज गप्प घटि गेल। ओ एक दिन कहैत अछि जे अभिषेककेँ दोष नहि दैत। एहि क्षमाक वाक्यमे दुइ परस्पर-विरोधी अर्थ छथि—सान्त्वना आ दोष देबाक सम्भावनाक मौन

स्वीकृति। उपन्यासक करुणा एतय विशिष्ट अछि: कियो जोर सँ आरोप नहि लगबैत, मुदा अभिषेक कानैत अछि। आर्थिक प्रणालीक प्रभाव मानवीय सम्बन्धक स्वर तक पहुँचल अछि। ई घटना पाठककेँ अभिषेकक सम्पूर्ण निर्दोषिता मानब नहि कहैत; ई एतेक देखबैत अछि जे उत्तरदायित्वक कानूनी वर्गीकरण आ घरक सम्बोधनक पीड़ा अलग मापदण्ड पर चलैत अछि।

फोटो-पहिचानसँ मनोज नायक धरि

अस्सीम दृश्य रचना सिन्हाक फोटो-पहिचानमे अभिषेकक सीमित स्मृतिकेँ साक्ष्यक एक स्रोत बनबैत अछि। पहिल दू फोटो ओ नकारैत अछि; तेसरकेँ एक बेर रितेश संग छात्रावास-बाहर चाह-दोकान पर देखने होयबाक कथन दैत अछि। नाम ‘मन्नू भैया’ अनिश्चित अछि। पुलिसक दस्तावेजमे फोटोवला व्यक्ति मनोज नायक अछि, लोकविस्तार डिजिटल सेवाक क्षेत्रीय समन्वयक। एतय प्रथम बेर साक्षीक कथन, बैंक व्यवहार आ कम्पनी-अनुबंध एक बिन्दुपर मिलैत देखाओल गेल अछि। एहि मेलक आलोचना कर्तव्य अछि, मुदा ओहिसँ मनोजक अपराधक स्वयंसिद्ध निष्कर्ष निकालब नहि।

रचना तुरन्त गिरफ्तारी नहि करैत छथि। मनोजक तीन जिलाक यात्रा, खेल आयोजन, युवकक भर्ती आ यात्राक पाछाँ नब ‘समुदाय सहयोगी’ खाताक प्रविष्टि एक सहसम्बन्ध बनबैत अछि। निर्णय-भाषामे ‘सहसम्बन्ध; कारण-सिद्धि शेष’ लिखब एहि दृश्यक सार-शिल्प अछि। कथाक रहस्य एतय पुलिसक उत्साही घोषणा नहि, उलट जाँचकर्ताक लिखित संयमसँ बनैत अछि। निर्दोषक जीवनक रक्षा कतेको बेर एक निषेधात्मक छोट वाक्यमे बसैत अछि—एहि मान्यताकेँ लेखक प्रारम्भसँ विविध पात्रक माध्यमे जाँचि रहल छथि।

चारि दृश्य मध्यक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

सतहत्तरसँ अस्सीम दृश्य बाहरी रूपसँ चारि अलग कथा-रेखा अछि—समानान्तर व्यवसाय, पितृशोक, सामाजिक दाग आ फोटो-पहिचान। भीतरी सूत्र एके अछि: कथन वा नाम आ प्रमाणक बीच दूरी। ‘रात्रि कक्ष’क लोक अपन

भाषा बदलैत अछि; ईशान आ अनिरुद्ध पुरान नामक अर्थ पर टकराइत छथि; अभिषेक पर समाज अनेक नाम चिपकबैत अछि; रचना ‘मन्नू’क परिचय सत्यापित करैत सेहो कारण-सिद्धिक प्रतीक्षा करैत छथि। ई पुनरावृत्ति उपन्यासक वैचारिक एकता बनबैत अछि। एक कलात्मक जोखिम सेहो अछि: पात्रसभक वाणीमे अनुसंधानक एके दार्शनिक शब्दावली बेराबेरी भेटि सकैत अछि, जाहिसँ स्वभावगत अन्तर मध्यम भऽ जाइत अछि। मुदा ईशानक तीख प्रश्न, मंजरीक सान्त्वना आ रचनाक संक्षिप्त टिप्पणी एहि जोखिमक प्रतिवाद करैत अछि।

चारिम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य ६१–८० : घाटसँ बैंक-खाताक भीतर

सुरक्षा रूपकक बहुविध रूप

पहिल बीस दृश्य परिवारक देहरीपर बिज्जीक पहरासँ आरम्भ भेल छल। दृश्य ६१–८०मे धनेश्वरीक प्रश्न—गोहि पानिमे हो तँ बिज्जी की करत—नव प्रमाण-पद्धतिक प्रश्न बनि रहल अछि। ईशानकेँ ‘पानि पढ़य’ पड़ैत अछि; ओकर साधन बैंक-प्रवाहक आँकड़ा, जबकि रचनाक साधन बयान, फोन, फोटो आ विभागीय सूचनाक मिलान अछि। अनिरुद्ध पुरान पुलिस-अभिलेखक सीमा चिन्हबैत छथि। ई तीनू व्यक्ति एके प्रकारक रक्षक नहि; हुनकर अधिकार, सूचना आ उत्तरदायित्व भिन्न अछि। उपन्यासक रूपकक सफलता एहि भिन्नताक भीतर समान नैतिक आग्रह दिखेबामे अछि, न सभ पात्रकेँ एकटा प्रतीकक अनुचर बनबामे।

दू पीढ़ीक पितृशोक आ नव पीढ़ीक ऋण

ईशानक प्रेरणा पिताक अनिर्णीत मृत्यु-जाँचक दीर्घ शोकसँ जुड़ल अछि; अभिषेकक संकट हरायल छात्रवृत्ति वापस पाबबाक आशामे जन्मैत अछि। दुनूक आर्थिक संसार अम्बर नामक एक सार्वजनिक प्रतिष्ठानसँ जुड़ैत अछि, मुदा दुनूक नैतिक स्थिति समान नहि। ईशान पेशागत गोपनीयता आ पूर्वग्रहक प्रश्न अनुभव करैत अछि; अभिषेक कमीशन स्वीकार करैत आनक पाइ चलबैत अछि आ पछाति दोसर सहपाठीकेँ जोड़ैत अछि। एहि भेदकेँ मेटा देला पर एक पात्रक चेतावनी आ दोसरक उत्तरदायित्व दुनू विकृत होयत। मृणालिनी पुत्रकेँ पुरान पानिसँ बचाबय चाहैत छथि, जबकि अभिषेकक माए बहिनक प्रवेश-हानिक भार चुपचाप सम्हारैत छथि। स्त्री-पात्रसभक ई दू अलग अनुभव वित्तीय अपराधक पारिवारिक आयामकेँ विस्तृत करैत अछि।

प्रमाणक चारि स्तर : सङ्केत, सम्बन्ध, भूमिका आ निर्णय

एहि बीस दृश्यक साक्ष्य-क्रम चारि तहमे देखल जा सकैत अछि। पहिल, असामान्य त्वरित बहिर्गमन आ प्रचार-भुगतानक विसंगति; ई संकेत अछि। दोसर, लोकविस्तारक निदेशकक अम्बर क्रीड़ा मीडियासँ पुरान व्यावसायिक सम्बन्ध आ मनोजक पहचान; ई सम्बन्धक सामग्री अछि। तेसर, अभिषेकक कमीशन-लेनदेन, रितेशक निर्देश आ केशवक ‘रात्रि कक्ष’क जानकारी; ई अलग-अलग पात्रक भूमिका विषयक पाठ-साक्ष्य अछि। चारिम, अदालत-सम्मत दोष-निर्णय—एहि बीस दृश्यक नव साइबर-जाँचमे एखन उपलब्ध नहि। भारतीय प्रमाणपरम्परा आ नव्य न्यायिक विमर्श दुनूमे संकेतकेँ निर्णय बनबासँ पूर्व वैकल्पिक हेतु, अभाव आ अन्वय-व्यातिरेकी परीक्षण आवश्यक होइत अछि। उपन्यासक जाँचकर्ता एहि प्रक्रियाक सीमा स्वीकार करैत छथि, यद्यपि कथावाचक पाठककेँ किछु अतिरिक्त घटनाक ज्ञान दैत अछि।

आलोचकक लेल कथावाचकक अतिरिक्त ज्ञानक अनुशासन

‘रात्रि कक्ष’ आ केशव मेहताक निजी व्यावसायिक तर्क कथावाचक प्रत्यक्ष देखबैत अछि; एहि बातक अर्थ नहि जे रचना, ईशान अथवा अनिरुद्ध ओ सब सिद्ध तथ्यरूपेँ जानि गेल। एहि भेदक बिना समीक्षा रहस्य-उपन्यासक घटनाकेँ पुलिसक निश्चय मानि लेत। विशेषत: विहान सारंगक संपूर्ण जानकारी अनिर्णीत अछि; लोकसेतु आ लोकविस्तारक मिलैत शब्द अपराधक प्रमाण नहि; मनोज नायकक यात्रा आ नव खाताक जुड़ब कारण-सिद्धि नहि। पात्रक निजी कथन, कथावाचकक विशेष ज्ञान, संस्थाक संदेह आ वास्तविक अपराधक न्यायिक निर्णय चारूकेँ समतल नहि करबाक चाही। एहि पृथक्करणे उपन्यासक न्याय-दर्शन साहित्यिक विधि बनैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि : गाम, राजधानी आ डिजिटल भुगतान

गढ़ नारिकेलक नदीक कछेर, राजधानीक काँचवला कार्यालय, विश्वविद्यालय छात्रावास, बैंक-शाखा, साइबर थाना आ राज्यक जाँच-संस्था—एहि सभ स्थानक समय आ सामाजिक दबाव अलग अछि। नदीक नाम आ पुरान अपराधक कथा ग्रामीण स्मृतिमे टिकैत अछि; डिजिटल उद्योग गति आ भुगतानक मात्रा सँ चलैत अछि; बैंक रोक तत्काल लागू करैत अछि; कॉलेजक प्रवेश-सीमा रुकैत नहि; जाँचक प्रमाण-संग्रह विलम्ब लैत अछि। एहिमे मिथिलाक सामाजिक अनुभवक संग आधुनिक महानगरीय अर्थतन्त्र समानान्तर चलैत अछि। ई पाठाधारित साहित्यिक भूगोल अछि, स्वतन्त्र वास्तविक आपराधिक इतिहासक दावा नहि। कालक्रममे सेहो पछिला पीढ़ीक पितृशोक आ नव खेल-जाल एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि, मुदा पिताक पुरान मृत्यु-जाँच नव अपराधक स्वतः सिद्ध कारण नहि बनैत।

भाषा, औचित्य आ करुणाक आलोचना

सुमेधाक ‘असामान्य’ आ ‘अपराध’क भेद, विहानक ‘अपराधीकरण’, केशवक ‘जोखिम-विभाजन’, रितेशक ‘प्रचार-काज’, बैंकक ‘डेबिट प्रतिबन्धित’ आ रचनाक ‘सहसम्बन्ध; कारण-सिद्धि शेष’—ई शब्दसमूह पात्रक नैतिक स्थिति आ संस्थागत अधिकारकेँ उजागर करैत अछि। किछु भाषा उत्तरदायित्व झाँपैत अछि; किछु अनिर्णीत तथ्यकेँ सावधान रखैत अछि। भाषा-विश्लेषणक दृष्टिसँ एकहि ‘व्यावसायिक’ शब्दक वैध आ छद्म प्रयोगमे अन्तर रहल अछि। एही मध्य अभिषेकक ‘अगिला साल’ सुनबाक क्षण, मृणालिनीक डेराओन मातृत्व आ मंजरीक क्षमाक वाक्य करुणरसक धरातल रचैत अछि। पाठ औपचारिक न्यायकेँ नकारैत नहि, बल्कि ओकर समय आ मानवीय क्षतिक समयक असङ्गतिकेँ उजागर करैत अछि।

शिल्पगत उपलब्धि आ परखबाक सीमा

ई बीस दृश्य विस्तृत अपराधक पटकथाक बदला अनेक छोट, दृश्य-विच्छिन्न प्रसङ्गमे गढ़ल गेल अछि। ❖-चिह्नित प्रत्येक खण्ड एक सीमित ज्ञान-स्थिति पर रुकैत अछि, आ अगिला खण्ड आन स्थान अथवा पात्रक जानकारी जोड़ैत अछि। एहि बहुस्वरता सँ अपराध-जाल सामाजिक संरचनाक रूपमे उभरैत अछि। तथापि तात्त्विक सूत्रक उच्च घनत्व—विशेषतः संशय, प्रमाण, पूर्वग्रह, न्याय आ भाषा सम्बन्धी घोषणासभ—किछु स्थानपर पात्रसभक अलग बोलचालकेँ एक प्रकारक विचार-भाषामे मिलबैत अछि। एहि सीमाक आलोचना कएलासँ उपन्यासक उपलब्धि घटैत नहि; ई देखबैत अछि जे कथासूत्रक नैतिक आकाङ्क्षा आ पात्रक स्वायत्त आवाजक बीच तनाव कहाँ उत्पन्न होइत अछि। अभिषेकक घरक क्षति, ईशानक शोक आ रचनाक व्यावहारिक संयम एहि तनावकेँ अनुभवक भिन्न धरातल प्रदान करैत अछि।

अगिला दृश्य-क्रमक प्रमाणगत सीमा

अस्सीम दृश्य धरि अभिषेकक कथन, मनोज नायकक फोटो-पहिचान, लोकविस्तारक सम्बन्ध आ अनेक खाताक गतिविधि जाँचक नव दिशा बनौने अछि। मुदा मनोज पर अपराध सिद्ध नहि, विहानक पूर्ण जानकारी निश्चित नहि, आ ईशानक पिताक पुरान मृत्यु-जाँचक कारण एखनहुँ प्रमाणित नहि। आगाँक दृश्य पढ़ैत एहि अनिर्णीत स्थितिक आरम्भ-बिन्दु रूपमे संरक्षण आवश्यक अछि। एहि बैचक समापन पुलिसक सावधान शब्दावली पर होइत अछि, जे उपन्यासक व्यापक आलोचनात्मक प्रतिज्ञाकेँ पुनः दृढ़ करैत अछि—सत्यक खोज आकाङ्क्षासँ चलि सकैत अछि, किन्तु सत्यक निर्णय परीक्षण-विधि बिना नहि।

अध्ययन-इकाई २१ — छापाक दृश्य, प्रचारक भाषा आ असिद्ध सम्बन्ध (मूल दृश्य ८१–८४)

एके कोठलीमे चारि ज्ञान-स्थिति : एक्यासीम दृश्य

एक्यासीम दृश्य जाँचक दृष्टिक एक निर्णायक परिवर्तन उपस्थित करैत अछि। मनोज नायकक खोज पुलिसकेँ राजधानी नगरक बाहरी औद्योगिक क्षेत्रक ओहि किरायाक कक्षमे अनैत अछि जकर बाहर ‘डिजिटल ग्राहक सहायता प्रशिक्षण’ लिखल अछि। बाहरक संकेत आ भीतरक गतिविधिमे एहन अन्तर नहि जे सभ काज झूठ सिद्ध भऽ जाए। भीतर किछु युवक सचमुच ग्राहकक प्रश्नक उत्तर दैत छथि; किछु निजी खेलक दाँव लिखैत छथि; किछु धन-वाहक खाताधारकसँ सम्पर्क करैत छथि; आ किछु मजदूरीपर आँकड़ा भरबाक काम करैत छथि। लेखक अपराधक सम्भावित स्थलकेँ एकरूप अन्हारक कोठली नहि बनबैत छथि। ओ कार्य, जानकारी, आशय आ लाभक चारि अलग स्तर एके दृश्य-क्षेत्रमे देखबैत छथि।

रचना सिन्हाक निर्देश—जकरा जे बुझल, ओकरा पृथक लिखबाक—एहि दृश्यक नैतिक केन्द्र अछि। एके भवनमे उपस्थिति, एके संस्थाक नामक प्रयोग अथवा एके उपकरण पर काम करब सहभागिताक समान मात्रा नहि ठहरैत। न्यायिक विवेकक लेल शारीरिक निकटता आ आपराधिक ज्ञानक दूरी नापब पड़ैत अछि। पुलिसक जवानक सहज तर्क, ‘सभ एके ठाम छल’, प्रत्यक्षक विवरण थिक; ओकरा स्वतः दोषसिद्धि बनाबब हेत्वाभास होयत। रचनाक बसवला दृष्टान्त सीधा, स्मरणीय आ साहित्यिक रूपेँ काजक अछि, कारण ओ जटिल प्रमाण-सिद्धान्तकेँ एक छोट संवादमे उतारैत अछि।

शिल्पगत रूपेँ बन्दूक, मारपीट अथवा तमाशाक अभाव ध्यानयोग्य अछि। दृश्य अपेक्षित हिंसक छापाक बदला श्रम-विभाजनक सूची प्रस्तुत करैत अछि। कथावाचक ‘मनोज ओतय नहि भेटल’ कहि अभियुक्तक खोज आ गतिविधिक ठोस भेटक बीच दूरी राखैत छथि। एक सीमा सेहो अछि: युवकसभक व्यक्तिगत स्वर एखन अनुपस्थित अछि; हुनकर भिन्न ज्ञान-अवस्था पुलिसक निरीक्षणक

माध्यमसँ खुलैत अछि, स्वतन्त्र आत्मकथनसँ नहि। आगाँक दृश्यसभमे ई अभाव ध्यानमे रखब आवश्यक अछि।

समाचारक संख्या आ माएक चिन्ता : बयासीम दृश्य

बयासीम दृश्यक समाचार-शीर्षक प्रश्नवाचक चिह्नक सहारे अनुमानकेँ जन-स्मृतिमे तथ्य-जकाँ स्थापित करबाक जोखिम देखबैत अछि। ‘हजारों बैंक खाते’ अथवा ‘करोड़ोंक धनशोधन’क भाषा विस्तृत जाँचक प्रतिवेदन नहि, समाचारक अधैर्य अछि। अम्बरक सार्वजनिक अस्वीकारो अपनासँ पूर्ण निर्दोषता सिद्ध नहि करैत। कम्पनीक कथन जे बाहरी प्रतिनिधि ब्राण्डक दुरुपयोग कऽ सकैत छथि, एक वैधानिक सम्भावना अछि; ओ सत्य थिक कि नहि, तकर जाँच अलग रहत। लेखक समाचारक आरोप आ कम्पनीक खण्डन दुनूकेँ दावाक रूपमे रखैत छथि, अन्तिम निर्णयक रूपमे नहि।

ईशानक व्यावसायिक उत्तर ‘हमर ग्राहक’ आ मृणालिनीक आग्रह ‘छोड़ि दिअ’क बीच वैयक्तिक नैतिक संघर्ष फूटि पड़ैत अछि। माए केवल सार्वजनिक अपयशसँ नहि, पतिक पूर्व मृत्यु-पश्चात् बेटाक जोखिमसँ भयभीत छथि। बेटा परियोजना छोड़बकेँ प्रश्न छोड़ब बुझैत अछि; माए प्रश्नक मूल्य मानव जीवनक सुरक्षित सीमासँ तौलैत छथि। फोन काटलाक तुरन्त पछतावा, पुनः फोन करबाक साहस नहि, आ दुनूक रातिक मौन—ई तीन सूक्ष्म चरण कथाक सार्वजनिक छापाकेँ घरक भीतर घुसा दैत अछि।

पूर्व प्रसङ्गमे ईशानक पिता सत्यप्रकाशक सामने अपन काम छोड़बाक प्रश्न ठाढ़ छल। एतय पीढ़ी बदलल अछि, मुदा निर्णयक व्याकरण समान नहि। सत्यप्रकाशक प्रतिरोध ठेकादारीक अनौपचारिक उगाहीक बिरुद्ध छल; ईशानक आग्रह लेखा-परीक्षण आ प्रमाणक अन्वेषणक लेल अछि। समान पारिवारिक भयकेँ समान वस्तुगत परिस्थिति मानि लेब उचित नहि। एहि अन्तरकेँ लेखक दुइटा पीढ़ीक संवादक माध्यमसँ पाठकक स्मृतिमे रखैत छथि।

‘उत्तरायण’ नामक पुनरागमन : तिरासीम दृश्य

तिरासीम दृश्य जब्त कम्प्यूटरक संकेत ‘उत्तरायण’केँ पुरान दिगन्त-अभिलेखक संग जोड़ैत अछि। उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्गक निवेश, अम्बरक पूँजी-संरचना आ लोकसेतुक पूर्व हिस्सेदारीक तथ्य कथानककेँ समयमे पाछाँ अनैत अछि। मुदा पूर्व नामक वर्तमान दस्तावेजमे देखायब पुरान अपराधक अपरिवर्तित निरन्तरता सिद्ध नहि करैत। अनिरुद्धक सावधानी—इतिहास नहि, नाम घुरि रहल अछि—अभिलेखीय पठनक कठोर कसौटी अछि। नामक सततता, संस्था अथवा व्यक्तिक सततता आ उद्देश्यक सततता तीनटा भिन्न दावा अछि।

आदित्यक ‘इतिहास वर्तमानमे लौटि रहल’ कहनाइ एक आकर्षक आख्यानात्मक सूत्र अछि; अनिरुद्ध ओकरा रोकि व्याख्याक गति कम करैत छथि। एहि कारण पात्रसभ पुलिस-नाटकक सामान्य भूमिकामे सीमित नहि रहैत। आदित्य सम्बन्ध पहिचानबाक क्षमता प्रतिनिधित्व करैत छथि, अनिरुद्ध ओहि सम्बन्धपर न्यायिक निष्कर्ष देबाक पहिनुक संकोच। नव्य न्यायमे पक्षधर्मता भेटलासँ व्याप्ति सिद्ध नहि होइत; एहि ठाम पुरान हिस्सेदारक नाम प्रश्नक आधार बनैत अछि, दोषक पर्याप्त हेतु नहि।

अनिरुद्धक सेवानिवृत्तिक छोट टिप्पणी विशेष उल्लेखनीय अछि। विभागीय पद छोड़लाक बादो हुनकर भाषिक उत्तरदायित्व रहि गेल अछि, बल्कि त्रुटि सुधारबाक संस्थागत अवसर घटि गेलाक कारण सावधानी बढ़ल अछि। ई आत्मविवेक कथा-चरित्रकेँ सर्वज्ञ अधिकारी नहि बनबैत; ओ सीमित आ संशोधनशील जाँचकर्ताक रूपमे रहैत छथि।

मनोजक उत्तर, पलक आ कथनक परीक्षा : चौरासीम दृश्य

चौरासीम दृश्यक गिरफ्तारीक दृश्य जानि-बुझि कऽ पीछा करैत पकड़बाक सनसनीसँ रहित अछि। मनोज नायक अपन घरमे भेटैत अछि; रचना सिन्हा अभिषेकक बयान, खाता-सूची आ जब्त कम्प्यूटरक सन्देश रखैत छथि। मनोज

युवककेँ प्रचारक, खाताकेँ भुगतानक साधन आ रितेशकेँ उपठेकेदार कहि वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। एहि उत्तरसभमे सँ किछु सत्य भऽ सकैत अछि—कथावाचक ई सम्भावना स्पष्ट राखैत छथि। पाठमे पूछताछ भयावह मौनक प्रतीक्षा नहि, प्रतिस्पर्धी व्याख्यासभक तुलना बनि जाइत अछि।

केशव मेहताक नाम सुनिते पलकक क्षणिक रुकनाइ जाँचक दिशाक सङ्केत बनैत अछि, ठोस साक्ष्य नहि। आँखिक हलचलकेँ अपराध स्वीकार मानि लेब साहित्यिक चमत्कार तऽ भऽ सकैत अछि, न्यायिक आधार नहि। लेखक एहि प्रचलित रोमाञ्च-विधिक आकर्षणकेँ प्रतिरोध करैत छथि। ‘रात्रि कक्ष’क प्रश्न पर मनोजक हँसी आ रचनाक ‘कागच पढ़ू’ उत्तर दृश्यकेँ नाटकीय रखैत अछि, मुदा निर्णयक अभिलेखीय आधार नहि छोड़ैत।

एहि चारि दृश्यक समेकित प्रभाव ई अछि जे अन्वेषणक स्थान, समाचारक भाषा, पुरान संस्थाक नाम आ अभियुक्तक देहभाषा—चारू सहज भ्रम उत्पन्न करबाक क्षमता रखैत अछि। रचना आ अनिरुद्धक विधि एहि भ्रमकेँ मेटेबाक दावा नहि करैत; ओ सभ मात्र ओकर सत्यापनक क्रम स्पष्ट करैत छथि। शिल्पगत सीमा ई जे एहि समूहमे दार्शनिक सावधानीक स्पष्ट वाक्य बेराबेरी अबैत अछि। मुदा कक्ष, घर, कम्प्यूटरक नाम आ पूछताछक ठोस बदलैत प्रसङ्ग एकरसताकेँ बहुत हद धरि रोकैत अछि।

अध्ययन-इकाई २२ — व्यक्तिगत शोक, संस्थागत जोखिम आ तीन सम्भावना (मूल दृश्य ८५–८८)

सूत्रलेखक प्रतिवेदन : पचासीम दृश्यक द्विस्तरीय सत्य

पचासीम दृश्य ईशानक विश्लेषणक निष्कर्ष अम्बरक निदेशक-मण्डल लग अनैत अछि। प्रतिवेदनक सभसँ महत्त्वपूर्ण रचना ओकर दू अलग पाँति अछि: मुख्य प्रतियोगिता-प्रणालीक अधिकांश भुगतान सामान्य व्यापारिक व्यवहारक अनुरूप; बाहरी प्रचार-संरचना आ अधूर सत्यापनवला किछु प्रवाह ‘उच्च जोखिम’। व्यापारक एक स्तर वैध देखेबाक प्रमाण आन स्तरक प्रश्नकेँ समाप्त नहि करैत, आ आन स्तरक जोखिम वैध गतिविधिक अपराध सिद्ध नहि करैत। ई निष्कर्ष विवेकपूर्ण लेखा-परीक्षणक गद्यकेँ उपन्यासक कथा-वस्तु बनबैत अछि।

विहान लोकविस्तारक अनुबन्ध समाप्त करबाक सम्भावना पुछैत अछि। सुमेधा भूतक लेनदेन आ भविष्यक जोखिममे भेद रखैत छथि: अनुबन्ध समाप्त होयब भविष्यक जोखिम घटा सकैत अछि, मुदा पुरान प्रवाहक उत्तरदायित्व अपनासँ नहि मेटैत। ई समयगत भेद शासकीय अनुपालनक प्रश्नसँ आगाँ साहित्यिक प्रश्न बनैत अछि—मनुष्य अपन कात्हिक निर्णय बदलि सकैत अछि, मुदा कात्हिक तथ्य नष्ट नहि कऽ सकैत। ईशान व्यक्तिगत मत व्यक्त करब अस्वीकार करैत अछि; ओकरा अपन व्यावसायिक भूमिका आ पिताक इतिहासक बीच भेद करबाक चेष्टा करैत देखल जा सकैत अछि।

बैठकक बाद विहानक कथन जे सत्यप्रकाश दू बेर दिगन्तक खेल-महोत्सवक भुगतान विषय पुछने छलाह, ईशानकेँ वैयक्तिक संकटमे दऽ दैत अछि। दुइटा फोनक स्मृति ठोस सम्बन्धक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा मृत्यु-संयोजनक प्रमाण नहि। विहानक ‘कियो पुछलक नहि’ उत्तर नैतिक चुप्पीक प्रश्नकेँ तीक्ष्ण करैत अछि, तथापि ओ कानूनी दोषक स्वीकृति नहि। विहानक प्रश्न—दू फोन आ मृत्युक बीच सम्बन्ध सिद्ध छल कि—ईशानक अपन न्याय-विधिक सीमा

ओकरा सोझाँ रखैत अछि। प्रतिवेदन बनौनिहार विश्लेषक क्षण भरि प्रत्यक्ष पितृशोकमे बदलि जाइत अछि।

आक्रोशक सत्य आ निष्कर्षक अनुशासन : छियासीम दृश्य

छियासीम दृश्य बाह्य अन्वेषणक गति रोकि दू व्यक्तिक दूरभाषीय वार्तालापमे केन्द्रित अछि। ईशान पुरान पुलिस अधिकारी अनिरुद्ध लग तत्काल निष्कर्ष चाहैत अछि; अनिरुद्ध विहानक औपचारिक बयानकेँ अगिला उचित कदम बतबैत छथि। पिताक मृत्यु, पुरान फोन आ अम्बरक वर्तमान सम्बन्ध ईशान लेल एक भावात्मक शृंखला अछि। कानूनक लेल ओ तीन स्वतंत्र परीक्षणीय तथ्य अछि। अनिरुद्ध एहि अन्तरकेँ मानवीय शोक अस्वीकार कऽ नहि, ओकर निष्कर्षक सार्वभौमिकता सीमित कऽ प्रस्तुत करैत छथि।

बीस वर्षक प्रतीक्षाक आक्रोश एतय एक मुख्य काल-रचना अछि। जाँचक फाइल बन्द वा खुलल रहि सकैत अछि, मुदा शोकक समय विभागीय कालक्रमक अधीन नहि। ‘तोहर क्रोध उचित अछि; ओकर निष्कर्ष आवश्यक नहि’—एहि अभिप्रायक संवादमे औचित्य आ प्रमाण एक-दोसरक विरोधी नहि; दुनूक क्षेत्र पृथक अछि। लेखक पाठककेँ ईशानक संग सहानुभूति रखबाक अनुमति दैत छथि, मुदा ताहि सहानुभूतिसँ विहानकेँ दोषी सिद्ध करबाक अनुमति नहि दैत छथि।

एहि दृश्यक कथात्मक कमजोरीक सम्भावना ओहि ठाम अछि जतय सत्य आ दुःखक अन्तर सीधा सूक्तिमे कहल जाइत अछि। तथापि ई वाक्य अमूर्त उपदेश मात्र नहि, सम्बन्धमे तत्काल चोट करैत अछि: ईशान फोन काटैत अछि, आ पहिनुक बेरक विपरीत तुरन्त पछतावा नहि होइत। ओहि सूक्ष्म भिन्नतासँ कथावाचक मानसिक विकासकेँ नापैत छथि।

देहरीपर रक्त-रेखा : सतासीम दृश्यक प्रतीक-विन्यास

सतासीम दृश्य गढ़ नारिकेलक देहरीपर बिज्जीकेँ छोट मरल साँपक संग देखबैत अछि। पहिल उद्घाटन-दृश्यक बिज्जी घरक निरापद बचावक रूपक छल; एतय ओकर मुँहमे मृत साँपक देह आ देहरीपर रक्तक पातर रेखा अछि। लेखक पुरान

प्रतीककेँ केवल विजयक चिह्न बनबैत नहि छथि। रक्षा करबाक प्रक्रिया हिंसा अथवा अशुद्धि निकट जा सकैत अछि; रक्षकक शुद्धता स्वयं समस्याग्रस्त होइत अछि।

धनेश्वरीक कथन जे एक साँप मरलासँ बिल रिक्त नहि होइत, व्यक्ति पकडब आ संस्थागत जाल बुझबाक अन्तर खोलैत अछि। एहि पात्रक पुरान ‘पानि पढ़बाक’ शिक्षा फेर याद अबैत अछि। किनारकेँ मोन रखबक आग्रह जाँचकर्ताकेँ अपन स्थितिक स्मृति राखबाक शिक्षा थिक। ईशानक कानूनी-व्यावसायिक भूमिकामे कोन किनार अछि, ई प्रश्न सतासीम दृश्यक भीतर निरुत्तर रहैत अछि।

एहि घरेलू खण्डमे धनेश्वरीक वृद्ध देह आ मृणालिनीक नोरविहीन व्याकुलता आओर एक अर्थ जोड़ैत अछि। आपराधिक अन्वेषणक सार्वजनिक चित्रक पछाँ मानवीय श्रम—दोकान बन्द करब, अस्वस्थ वृद्धाक देखभाल, बेटाक चिन्ता—रहैत अछि। बिज्जी प्रतीक एहि घरेलू जीवनसँ विच्छिन्न होइत तँ सजावटी बनि जइतय; एहि ठाम ओ घरेलू भारक भीतर अर्थ पबैत अछि।

धनशोधनक दू प्रतिद्वन्द्वी परिकल्पना : अठासीम दृश्य

अठासीम दृश्य राज्य-जाँचक बैठकमे वैध खेल-व्यवसाय, अवैध निजी दाँव आ धन-वाहक अथवा मुखौटा भुगतानक तीन स्तर अलग कऽ रखैत अछि। आदित्य शेखरक प्रश्न ई नहि जे तीनू व्यवहार उपस्थित अछि कि नहि, बल्कि ई जे तीनू एक उद्देश्यक भाग अछि अथवा मात्र समीपवर्ती प्रक्रिया। रचनाक बयान आ ईशान-सुमेधाक वित्तीय परीक्षण समान दिशाक सङ्केत दैत अछि, मुदा संयोजनक अंतिम प्रमाण एखन शेष। लेखक संस्थागत संरचनाक भीतर वैकल्पिक आरोपक निषेधक जगह सुरक्षित रखैत छथि।

अनिरुद्ध दू प्रतिस्पर्धी सम्भावना रखैत छथि। पहिल, अम्बरक वैध प्रतिष्ठाकेँ बाहरी अपराधी दुरुपयोग कऽ रहल। दोसर, अम्बरक भीतरक किछु व्यक्ति जानि-बुझि बाहरी जाल चलबैत छथि। दुनूकेँ एक संग सम्भव मानब निष्क्रियता

नहि; ई परीक्षणक पूर्व अवस्था अछि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ एक सम्भावनाकेँ असम्भव करयवला बाधक तथ्यक प्रतीक्षा ‘बाधित हेतु’क समस्या सँ जुड़ैत अछि। मयंकक हलुक दार्शनिक टिप्पणी आ युवा अधिकारीक असहज हँसी दृश्यक बौद्धिक बोझकेँ मानवीय बनबैत अछि।

चारि दृश्यक बीच लेखक एक कठिन उलटबाँसी गढ़ैत छथि: जतेक प्रमाण संगठित होइत अछि, व्यक्तिगत पीड़ाक निष्कर्ष ओतबे कठोर परीक्षा माँगैत अछि। बोर्डरूमक जोखिम-शब्द, फोनक आक्रोश, देहरीक रक्त आ जाँच-बैठकक तीन वृत्त—चारि भिन्न अभिव्यक्ति एक प्रश्नमे मिलैत अछि: रक्षा करबाक नामपर गलत निर्णयसँ केना बचल जाए। एहि समूहक उपलब्धि समाधान नहि, निर्णयक उचित विरामक नैतिकता अछि।

अध्ययन-इकाई २३ — पुरान धन-प्रवाह, ई-पत्र आ जाँचक सीमाविस्तार (मूल दृश्य ८९-९२)

नीलकण्ठ एग्रीगेट्स : नव प्रवाहक पुरान किनार

उननबेम दृश्य एक बैंक-अधिकारीक सूचनासँ खुलैत अछि। धन-वाहक खाताक किछु रकम ‘नीलकण्ठ एग्रीगेट्स प्राइवेट लिमिटेड’क भुगतानमे पहुँचैत अछि; पुरान दिगन्त फाइलमे इएह नाम निर्माण-सामग्रीक आपूर्तिकर्ता छल। ई मिलान बाढ़िक दू धार मिलबाक सन उपन्यासक भूगोलमे प्रतिध्वनित होइत अछि। मुदा कम्पनीक स्वामित्व आ निदेशक बदलि चुकल छथि, आ वर्तमान व्यापार वैध चलि रहल अछि। इतिहासक नाम वर्तमानक आदमीक अपराध नहि बनैत।

आदित्यक फाइल-खोज आ रचनाक ‘संयोग’क विकल्प एक-दोसराकेँ सन्तुलित करैत अछि। पुरान व्यवसायिक सम्बन्धकेँ अनदेखा कऽ देब जाँचक भूल होइत, मुदा ओकरा अवश्य अपराधक निरन्तरता कहब दोसर भूल। एहि ठाम प्रमाणक समय-मान महत्वपूर्ण अछि: जखन नाम पुरान रहल, मुदा अधिकार, मालिकाना आ निर्णय बदलि गेल, तखन ‘वएह कम्पनी’ कहब आ ‘वएह उद्देश्य’ कहब एक बात नहि।

जलक पुरान घाटक बिम्ब दृश्यकेँ रहस्यपूर्ण बनबैत अछि; ई बिम्ब जँ अकेले पर्याप्त ठहरत तँ व्याख्या प्रतीकवादी नियतिवादमे पड़ि जएत। लेखकक सावधानी एहि कारण आवश्यक अछि जे अनिरुद्ध ओकरा सम्भावित सम्बन्ध कहैत छथि, निर्णायक पुरावा नहि। तकरा लेल पुरान घाट अर्थक आह्वान अछि, अपराधक फैसला नहि।

छत, माएक सन्देश आ भूमिकाक दूरी : नब्बेम दृश्य

नब्बेम दृश्य नव दस्तावेज अथवा छापाक बदला ईशानक अकेलापन रखैत अछि। राजधानीक उजास, माएक अपठित ‘भोजन समय पर करिह’ आ अनिरुद्धक सूचना जे विहानक बयानमे ईशान उपस्थित नहि रहत—ई तीन वस्तु

सार्वजनिक अन्वेषणकेँ वैयक्तिक अनुशासनक भीतर घुरबैत अछि। ईशान पहिने क्रुद्ध होइत अछि, फेर बुझैत अछि जे विश्लेषक, सम्भावित साक्षीक परिवारजन आ शोकसँ प्रभावित बेटाक भूमिका एके कक्षमे गड्डमड्ड करब उचित नहि।

माए-बेटाक छोट प्रश्नोत्तरक महत्त्व कथाक पैघ अपराधजालक तुलनामे अधिक अनुभूत होइत अछि। उपन्यास एतय सामान्य सत्यक विश्वसनीयता देखबैत अछि। ईशानक माएकेँ उत्तर देब संस्थागत जाँच रोकब नहि; ओ अपन भावात्मक जीवनकेँ संदेहक एकमात्र ढाँचामे डूबय सँ बचबैत अछि। धनेश्वरीक ‘पानि पढ़ब’ शिक्षा एतय पुनः अर्थ पबैत अछि: बाहरी प्रवाह पढ़बाक संग अपन क्रोधक प्रवाह सेहो चिन्हब आवश्यक अछि।

रूपकक दृष्टिसँ नदीक जल आ राजधानीक उलट तारा मिलि भूगोलक दू स्तर बनबैत अछि। ईशान नदीक कछेरपर नहि, शहरक छतपर अछि, तैयो स्मृतिक किनार ओकरा न्यायिक सीमाक ज्ञान दैत अछि। ई दृश्य घटनाक गति नहि बढ़बैत, पात्रक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि—एहिमे ओकर शिल्पगत उपयोगिता अछि।

विहानक प्रमाण आ चुप्पीक उत्तरदायित्व : एकानबेम दृश्य

एकानबेम दृश्य विहान सारंगक चारि घण्टाक औपचारिक बयान प्रस्तुत करैत अछि। ओ सत्यप्रकाशक दू फोन स्वीकार करैत अछि आ एक पुरान ई-पत्रक प्रति रखैत अछि, जाहिमे उपलब्ध बिल संलग्न करबाक संग वास्तविक सेवाक पुष्टि नहि कऽ सकबाक बात लिखल अछि। ई पत्र कथामे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तु अछि, कारण पुरान स्मृति एखन तिथि-सहित लिखित पाठक सहारा पबैत अछि। मुदा पत्रक अर्थ सीमित अछि: सत्यप्रकाश मृत्यु पहिने खेल-प्रायोजनक भुगतानक विषय पुछैत छलाह; एहि सँ ओकर मृत्युक कारण, मारनिहार अथवा विहानक अपराध सिद्ध नहि होइत।

विहानक भीति ओहि समयक दिगन्तक प्रभावसँ जुड़ल अछि। ओ अपन चुप रहबाक निर्णय नैतिक रूपेँ अनुचित मानैत अछि; कानूनी स्थिति विषय निश्चित नहि अछि। एहि आत्मस्वीकृतिक मूल्य ओहि भेदमे अछि। आत्मग्लानि,

सहयोग आ दोषसिद्धि तीनूकेँ एक वाक्यमे मिलायब अनुचित। अनिरुद्धक प्रश्न सेहो स्तर-दर-स्तर अछि—पत्र किएक नहि आयल, डर छल कि नहि, चुप्पीक नैतिकता की, आब बयान किएक। रचनाक गति एहि प्रश्न-क्रमसँ संचालित होइत अछि, नाटकीय इकबालिया बयानसँ नहि।

मूल कृतिक महत्त्वपूर्ण सम्भावित सीमा एतय देखल जा सकैत अछि: पुरान ई-पत्रक २० वर्ष धरि उपलब्ध नहि भेलाक कारण ‘कियो पुछलक नहि’ कहल गेल अछि, मुदा पूर्व जाँचक वास्तविक अभिलेखीय कमी एहि दृश्य-सीमामे विस्तारसँ नहि खुलैत। तेँ समीक्षक एहि अभावकेँ प्रमाणित संस्थागत षड्यंत्र घोषित नहि कऽ सकैत। एहि अनुत्तरित रिक्तिकेँ नाटकीय ऊर्जा बनबैत कथा आगाँ बढ़ैत अछि।

अन्तर-एजेन्सी सूचना : बयानक भार बढ़बाक क्षण

बानबेम दृश्य केन्द्रसँ आयल प्रारम्भिक सूचना राज्य-जाँचक परिधि बढ़ा दैत अछि। किछु धन-प्रवाह तीन राज्य पार करैत ओहि खाता-पथसँ सम्बन्धित देखल गेल अछि जकर एक छोर अलग राष्ट्रीय-सुरक्षा जाँचमे जाँचल जा रहल अछि। कथावाचक बारम्बार कहैत छथि जे ई सूचना प्रारम्भिक अछि, निष्कर्ष नहि। एतय संस्थाक नाम अथवा कार्यालयक पैघपन स्वयं अपराधक पैघपनक प्रमाण नहि।

अनिरुद्धक ‘प्रत्येक शब्द दू बेर जाँचू’ चेतावनी जाँचक प्रसारसँग सार्वजनिक हानि बढ़बाक सम्भावनाकेँ सामने अनैत अछि। राज्यक सीमासँ बाहर गेला पर निर्दोष व्यक्ति, कर्मचारी, खाता-धारक अथवा परिवारक परिचय पर पड़निहार चोटक क्षेत्र बढ़ि सकैत अछि। परिणामत: भाषाक औचित्य प्रशासनिक सज्जनता मात्र नहि, न्यायिक संरक्षणक साधन होइत अछि।

दृश्य गढ़ नारिकेलक बिज्जी धरि फेर घुरैत अछि। ई प्रतिगमन आरम्भक घरेलू प्रतिमाकेँ नब डिजिटल भूगोलसँ जोड़ैत अछि। गामक देहरीक पहरा आब वित्तीय लेनदेनक अनेक केंद्रमे बाँटल अछि। तथापि कथावाचक जे ‘पूरा जालक पहरा’क कल्पना करैत छथि, ओकरा प्रत्यक्ष दोषीसभक पूर्ण पहिचान बुझब

उचित नहि। एहि चारि दृश्यक संगति प्रमाण-परिधिक विस्तारमे अछि; निर्णयक विस्तारमे नहि।

अध्ययन-इकाई २४ — साझा मध्यस्थ, जीविका आ मृतकक उत्तरदायित्व (मूल दृश्य १३–१६)

दिल्लीक बैठक : वृत्त तीन, साझा बिन्दु एक

तिरानबेम दृश्य दिल्लीक अन्तर-एजेन्सी बैठककेँ उपन्यासक नब संस्थागत स्तर बनबैत अछि। अपूर्वा कश्यप प्रारम्भमे दू निषेध स्पष्ट करैत छथि: सामान्य ऑनलाइन जुआ हुनकर संस्थाक विषय नहि, आ धन-वाहक खाता अपनासँ राष्ट्रीय-सुरक्षा अपराध नहि। सात खाताक वित्तीय पथ एक पुरान स्वतंत्र जाँचक मध्यस्थ-समूह सँ जुड़ल अछि—ई मात्र बैठकक तात्कालिक आधार। रचना जखन पूछैत छथि जे समान लाभार्थी अथवा समान संस्था अछि कि नहि, दुनू उत्तर नकारात्मक भेटैत अछि। एहि ‘नहि’क पुनरावृत्ति कथा-साक्ष्यक आवश्यक अंग अछि।

तीन वृत्त आ छोट साझा बिन्दुक दृश्यात्मक संरचना विश्लेषणक स्पष्ट रूप अछि: ऑनलाइन जुआ, धन-वाहक खाता आ राष्ट्रीय-जाँच एकहि वित्तीय मध्यस्थकेँ स्पर्श कऽ सकैत अछि; ओहि सँ समान आशयक निष्कर्ष नहि निकलैत। नव्य न्यायमे एहन मध्य-सम्बन्धकेँ अनिवार्य व्याप्ति मानब असिद्ध अनुमान होयत। ‘समान मार्ग, समान उद्देश्य सिद्ध नहि करैत’ एहि दृश्यक केन्द्रीय विधि-वाक्य अछि। मानचित्र वा वृत्त प्रमाणक रचना बुझबैत अछि, प्रमाणक अभाव नहि भरैत।

अपूर्वाक एहि स्वीकारसँ जे संस्था उपस्थित अछि ताहिसँ आरोपक प्रकृति नहि बदलैत, उपन्यास अधिकारक आत्मसीमाकेँ न्यायिक गुण बनबैत अछि। एहि दृश्यमे राष्ट्रीय संस्था नाटकीय सर्वशक्तिमान हस्तक्षेपक भूमिका नहि निभबैत। ओ अपन प्रासंगिकता निश्चित करबाक प्रयत्न करैत अछि। भिन्न संस्थाक अलग अधिकारक्षेत्रक यथार्थपूर्ण रूपांकन एहि बैचक महत्त्वपूर्ण कलात्मक उपलब्धि अछि।

सबीना खातून : पाँच हजारक मासिक मूल्य

चौरानबेम दृश्य साझा खाताक पञ्जीमे सबीना खातूनक सिलाइ-दोकानकेँ मानवीय चेहरा दैत अछि। हुनकर व्यवसाय वास्तविक अछि, मुदा तीन महीनामे बैङ्क खाताक आवागमन सामान्य आयसँ बहुत बेसी। पाँच हजार मासिक भुगतानक आशामे ओ बाहरी रकम अपन खातासँ घुमएबाक अनुमति देने छलीह; आधार छल परिचित परिधिक एक परिचय आ डिजिटल व्यापारक अस्पष्ट आश्वासन। रचना हुनकर जानकारीक स्तर पूछैत छथि, मुदा लेखक हुनका तुरन्त निर्दोष अथवा संगठित अपराधक अधिकारी घोषित नहि करैत छथि।

बेटीक दाँतक इलाजक खर्च एहि दृश्यक असाधारण विवरण अछि। आर्थिक विवशता एक प्रबल कारण प्रस्तुत करैत अछि; मुदा ओ जानि-बुझि कएल कोनो सम्भावित अनुचित कार्यकेँ स्वत: वैध नहि बनबैत। उलट, अनिश्चित डिजिटल-काजक प्रति शङ्का करबाक सामाजिक क्षमता सभ लोकमे समान नहि होइत। न्यायक प्रश्न एतय त्रिस्तरीय अछि: वास्तविक ज्ञान कतेक छल, आशङ्काक उचित आधार छल कि नहि, आ आर्थिक दबाव निर्णयकेँ कोना प्रभावित करैत छल।

वर्णन-शिल्प सबीनाक जीवनकेँ ‘सन्दिग्ध खाता’ नामक निर्जीव प्रविष्टिसँ बचबैत अछि। बैंक पञ्जीमे रकम, भाड़ा आ चिकित्सा पृथक शीर्षक होइए; परिवारमे सभ एके आर्थिक समयक दबाव अछि। एहि विपरीततामे करुणा उत्पन्न होइत अछि। समीक्षाक लेल आवश्यक भेद ई जे उपन्यास न्यायिक निष्कर्ष नहि दैत, मानवीय निर्णयक परिस्थिति खोलैत अछि।

पवनक दुर्घटना आ शब्दक खतरनाक पुनरावृत्ति

पंचानबेम दृश्य सातम खाताक धारक पवन राउतक एक महीना पहिनुक सड़क-दुर्घटनामे मृत्युक सूचना अनैत अछि। आदित्यक ‘फेर दुर्घटना’ प्रतिक्रिया सत्यप्रकाशक मृत्युकेँ अनायास स्मरण करबैत अछि। मुदा अनिरुद्ध तुरन्त स्मृतिजन्य समानता रोकैत छथि। पवनक दुर्घटनामे स्थानीय पुलिसक प्रारम्भिक

निष्कर्ष अछि, परिवारक संदेह नहि, घटनाक प्रत्यक्ष कारण अस्पष्ट अछि। ‘दुर्घटना’ शब्द समान भेला सँ घटना-पद्धति, अपराधी अथवा आर्थिक प्रयोजनक समानता सिद्ध नहि होइत।

एहि दृश्यमे स्मृति उपयोगी सङ्केत आ खतरनाक पक्षपात दुनू बनि सकैत अछि। अनिरुद्ध अपन बीस वर्ष पुरान असफल निश्चितताक इतिहास बिसरैत नहि छथि; तथापि ओ पवनक मृत्यु पर ओ इतिहास आरोपित नहि करैत छथि। ई चरित्रक विश्वसनीय प्रौढ़ता अछि। अपूर्वाक निर्देश जे पहिने खाताक व्यवहार बुझू, मृत्युक अपराधीकरण अनावश्यक रूपेँ नहि करू, जाँचक सीमा निर्धारित करैत अछि।

पवनक मरब कथा-पंक्तिक समानता मात्र नहि। लेखकक दृष्टिमे ओ एक अलग जीवन अछि, जकर आर्थिक जटिलता मृत्यु-पछाति खुलैत अछि। एहि कारण समीक्षामे सत्यप्रकाश आ पवनकेँ ‘दू हत्या’ कहल जाए तँ मूल पाठक स्पष्ट निषेध भङ्ग होयत।

पवनक घर : दोष, उपयोग आ अधूर ऋण

छियानबेम दृश्य घरेलू आँगनमे सुरू होइत अछि जतय पवनक माए अनाज सुखा रहल छथि। पुलिसक आगमनसँ उत्पन्न भय केवल संभावित अपराधक आरोपक भय नहि, गरीब घरमे अनिश्चित संस्थागत शक्तिक भय अछि। ‘नहि जनैत छी’ उत्तर अधिकारी लेल यथार्थपरक, मुदा माएक लेल आश्वासनविहीन अछि। ई भाषाक सामाजिक असमानता अछि—एकहि वाक्यक सत्य-मूल्य समान रहितहुँ भावनात्मक अर्थ अलग भऽ सकैत अछि।

छोट भाइक फोनक सन्देश वित्तीय कथानककेँ ठोस आधार दैत अछि। पवनकेँ मासिक सात हजारक डिजिटल-विपणन ‘भुगतान समन्वय’ काज भेटल छल; ओ मित्रसभसँ खाताक उपयोग माँगने छल; ओ स्वयं काजकेँ असुविधाजनक बुझैत छल, मुदा ऋण चुकएबाक लेल दू महीना आरो चलएबाक बात लिखने छल। पिताक लकवा आ इलाजक अधूर ऋण अर्थव्यवस्थाक नैतिक दबावकेँ स्पष्ट करैत अछि। एहि साक्ष्यसँ पवनक संदेह, संभावित सहभागिता आ उपयोग

कएल जाएबाक सम्भावना एक संग खुलैत अछि; कोनो एक दोसरकेँ पूर्ण रूपेँ नष्ट नहि करैत।

भाइक प्रश्न—मृत आदमीकेँ कोना दण्ड देल जाएत—कानूनी प्रक्रिया आ सामाजिक स्मृतिक अन्तर उजागर करैत अछि। रचना कहैत छथि जे मृत व्यक्ति केँ कारावास नहि, मुदा सत्य लिखल जाएत; जँ ओकरा उपयोग कएल गेल, सेहो लिखल जाएत। एहि ठाम सत्य लिखनाइ मृतकक अपयशक काज नहि, जीवित परिवारक संग न्याय करबाक सम्भावना अछि। न्याय-दर्शनक विमर्श एक पैघ जालसँ छोट घरक चबूतरा धरि उतरि अबैत अछि, आ एहि स्थलान्तरसँ ओ सिद्धान्तक मानवीय मूल्य पबैत अछि।

अध्ययन-इकाई २५ — वास्तविक व्यापार, मुखौटा संस्था आ नकारात्मक प्रमाण (मूल दृश्य ९७–१००)

नीलकण्ठक गोदाम : व्यापारक वास्तविकता सँ उत्पन्न कठिन प्रश्न

सन्तानबेम दृश्य जाँचकर्तासभक अनुमानकेँ उलटैत अछि। नीलकण्ठ एग्रीगेट्सक वास्तविक खदान-अनुज्ञा, ट्रक, मजदूर, बीमा, कर, बिक्री आ माल-प्रेषणक पर्ची उपलब्ध अछि। वर्तमान निदेशक अरविन्द घोष कागज देखएबासँ भागैत नहि छथि। हुनकर उत्तर जे भुगतान दलाल ‘सहस्त्र ट्रेडलिंक’ मार्फत भेल, नव मध्यस्थक परिचय दैत अछि। एतय पूर्ण झूठ व्यवसायक अपेक्षा वास्तविक व्यापारक भीतर धनक स्रोत आ लाभार्थीक जाँच कठिन बनि जाइत अछि।

मयंकक ‘माल गेल?’ प्रश्न अर्थपूर्ण अछि। वास्तविक आपूर्ति भेटिते ‘कागजी कारोबार’क सहज अनुमान बाधित होइत अछि, मुदा धनक प्रवेश-मार्ग स्वतः वैध नहि ठहरैत। वास्तविकता आ वैधता अलग स्तरपर रहि सकैत अछि। सन्दिग्ध स्रोतक धन वास्तविक मालक भुगतानमे सेहो उपयोग भऽ सकैत अछि; मुदा एहि सम्भावनाकेँ एखन एहि कम्पनीक अपराधक प्रमाण बनायब अनुचित। लेखकीय शिल्प एतय अनुज्ञा, चालान, वजन-पर्ची आ खाताक गतिमे क्रमशः घुसि रहस्य-पाठकेँ प्राविधिक गहराइ दैत अछि।

अरविन्द व्यक्तिगत रूपेँ मूल धन-प्रेषक नहि चिन्हबाक बात कहैत अछि आ कर्मचारी प्रदीप महाजनक नाम दैत अछि। एहि उत्तरक सत्यता स्वतंत्र जाँच माँगैत अछि। निदेशकक असावधानी, अज्ञान, संभावित जानबूझि अनदेखी आ अपराधमे संलिप्तता चारि पृथक सम्भावना अछि; दृश्य ओहिमे सँ कोनो एकटा निर्णय नहि करैत।

प्रदीपक अनुपस्थिति : क्रियाक सही नाम

अठानबेम दृश्य प्रदीप महाजनक नौकरी छोड़नाइ, बन्द फोन आ बन्द घरक सूचना दैत अछि। रोहितक पहिल उच्चारण ‘भागल’ अछि; अनिरुद्धक दृष्टिपर ओ तुरन्त ‘बिलायल’क निकट अर्थवला तटस्थ कथन सुधारैत अछि—मूल पाठमे ‘गायब’। एहि लघु सुधारक दार्शनिक महत्त्व अत्यधिक अछि: ‘भागल’ शब्दमे जानि-बुझि पालयनक आशय अन्तर्निहित अछि, मुदा अज्ञात वर्तमान-स्थानसँ एहन आशय सिद्ध नहि।

प्रदीपक व्यक्तिगत बैंक-खातामे साधारण वेतन, ऋण आ विद्यालय-शुल्क भेटैत अछि; असामान्य धन-प्रवाह नहि। मुदा ओकर निजी ई-पत्र पर सहस्त्र ट्रेडलिंकक अनेक बिल आयल छल, जे कम्पनीक सामान्य प्रकियासँ बाहर अछि। एक पक्षमे सामान्य खाते, दोसरमे असामान्य सञ्चार। समीक्षककेँ दुनू साक्ष्य एक संग रखबाक चाही। अपराधक सहज कथा एकटा लक्षण चुनैत अछि; स्रोत-निष्ठ समीक्षा विपरीत लक्षण सेहो बचबैत अछि।

अनिरुद्धक लघु मुस्कान रोहितक भाषिक प्रशिक्षणक सफलताक सङ्केत अछि। पहिल छापाक जवान आ एखनक अनुभवी रोहितमे नब विवेक बनल अछि; ओ चूकैत अछि, मुदा शब्द सुधारैत अछि। एहि सूक्ष्म चरित्र-विकासमे उपन्यासक न्याय-दर्शन केवल वरिष्ठ अधिकारीक कथन नहि रहैत, अधीनस्थक अभ्यास बनैत अछि।

सहस्त्र ट्रेडलिंक : खाली कार्यालय आ भारी व्यवहार

निनानबेम दृश्य सहस्त्र ट्रेडलिंकक संस्थागत ढाँचाकेँ जाँचैत अछि। तीन वर्ष पुरान पञ्जी, कम उपयोगवला कार्यालय, स्थायी कर्मचारीक अभाव, अत्यल्प बिजली-खपत आ भारी बैंक-व्यवहार—ई लक्षण एक मुखौटा संस्थाक सम्भावना मजबूत करैत अछि। एतय नीलकण्ठक वास्तविक गोदाम आ सहस्त्रक लगभग रिक्त दफ्तरक सापेक्ष चित्रण प्रबल अछि। तथापि कम कार्यालय-गतिविधि मात्र

सँ अपराधक सम्पूर्ण उद्देश्य निष्कर्षित नहि कएल जा सकैत; बैंक-पथक जाँच निर्णायक रहैत अछि।

सहस्त्र सँ ‘आरोह परिवहन समाधान’क भुगतान एन.आई.ए.क अलग जाँचक मार्गपर पहुँचैत अछि। आरोहक एक पुरान वाहन राष्ट्रीय-सुरक्षा सम्बन्धी आरोपितक सामान ढोने छल—एहि स्तरक वास्तविक सम्बन्ध आर्थिक जालसभकेँ एक वित्तीय आवरण धरि जोड़ैत अछि। मुदा साझा सेवाक उपस्थिति अलग-अलग ग्राहकक साझा आपराधिक आशय नहि सिद्ध करैत। अपूर्वा कश्यप एहि नव तथ्यक आधारपर पहिनुक भयसूचक अनुमाने बदलैत छथि: जुआक पैसा सम्भवत: हुनकर अलग अपराधकेँ निधि नहि देलक।

ई स्वीकार पुरान जाँचक पराजय नहि। विपरीत, जाँचक दावाक परिधि संशोधित कऽ स्रोत-संगत बनायब सत्यक उन्नति थिक। अनिरुद्धक दृष्टिमे टूटल सम्बन्ध सेहो महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि। न्याय-निरूपणक परम्परामे नकारात्मक साक्ष्यकेँ प्राय: कथा-रोमाञ्च कम देल जाइत अछि; लेखक एकर नैतिक नाटकीयता पहिचानैत छथि। परिणामत: ‘समान नाली, अलग घर’क लघु रूपक जटिल वित्तीय सम्बन्धकेँ नितान्त स्पष्ट करैत अछि, मुदा ओकर सरलताकेँ अन्ध निष्कर्ष नहि मानबाक चाही।

सीमित अधिकार : सएम दृश्यक असामान्य उपसंहार

सएम दृश्य एन.आई.ए.क सीमित भूमिका आ प्रक्रिया-अनुसार भविष्यक अभिलेख-साझेदारीक निर्णय पर रुकैत अछि। नब गिरफ्तारी नहि, प्रेस-वार्ता नहि, विजयोत्सव नहि। अत्यधिक सार्वजनिक आरोपक सामान्य अपराध-कथात्मक गति एतय स्थगित कएल गेल अछि। जाँच एक पैघ संदेह हटबैत अछि आ जुआ-सम्बन्धी वित्तीय अनुसन्धान अपन उपयुक्त संस्थागत क्षेत्रमे रहैत अछि।

अपूर्वाक प्रतिवेदन ‘हमर अलग मामलेमे जे वैधानिक रूपेँ भेटत’ कहि सहयोगक स्पष्ट सीमा बतबैत अछि। एतय निजता, अधिकारक्षेत्र आ प्रमाणक प्रक्रियागत

वैधता कथाक वास्तविक सामग्री अछि। व्यक्ति चाहे अम्बरक कर्मचारी हो, खाताधारक हो, उपयोगकर्ता हो वा अवैध जुआक सम्भावित भागीदार—एक असिद्ध साझा मध्यस्थक कारण ओकरा राष्ट्रीय-सुरक्षा अपराधक श्रेणीमे रखब अनुचित। लेखक सामाजिक दागक परिमाण पर ध्यान देबैत छथि।

एहि समूहक संरचनामे कथानक गहिर पैसैत पुनः बाहर अबैत अछि: वैध माल-प्रेषण, असामान्य निजी ई-पत्र, लगभग रिक्त मध्यस्थ कम्पनी, राष्ट्रीय जाँचसँ अलग होइत वित्तीय मार्ग। उत्सुक पाठक लेल निर्णायक गिरफ्तारीक अभाव अधैर्य उत्पन्न कऽ सकैत अछि; मुदा ई अधैर्य स्वयं कृतिक आलोचनात्मक उपकरण अछि। लेखक न्यायिक अवधानक बदला रहस्यक शीघ्र समाधान देब अस्वीकार करैत छथि।

पाँचम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य ८१–१०० : शङ्काक विस्तार आ ओकर प्रमाणगत संकुचन

छापाक कोठली सँ दिल्लीक बैठक धरि : संस्थागत पैमानाक परिवर्तन

एक्यासीम दृश्य एक औद्योगिक क्षेत्रक साझा कार्यालयमे चारि भिन्न भूमिकाक युवक देखबैत अछि। तिरानबेम दृश्य दिल्लीक एक बैठकमे तीन भिन्न अनुसन्धानीय वृत्त देखबैत अछि। पहिल स्थलमे सह-अवस्थिति एके अपराधक प्रमाण नहि, दोसरमे साझा वित्तीय मध्यस्थ एके उद्देश्यक प्रमाण नहि। दुनू दृश्यक बीचे आकार पैघ भेल अछि—एक भवनसँ तीन राज्य आ राष्ट्रीय संस्थाक सीमा धरि—मुदा निर्णय-पद्धति नहि बदलल। भिन्न स्तरक उपस्थिति, ज्ञान आ उद्देश्यकेँ अलग जाँचब न्यायिक नियम रहैत अछि। एहि ठाम दृश्य-संरचना स्वयं उपन्यासक तर्कक समानान्तर चलैत अछि।

मूल निविदा-जाल आ नब डिजिटल जालक असमानतासहित समानता

पूर्व कथा-भागमे सत्यप्रकाशक ठेकाक भुगतान, ‘स्थानीय समन्वय’ आ परामर्शक अस्पष्ट प्रतिशत छिपल दबावक माध्यम बनल छल। दृश्य ८१–१००मे प्रचार, भुगतान-समन्वय, धन-वाहक खाता आ सेवा-शुल्कक नब नाम भेटैत अछि। भाषा दोन्हू कालमे वैध उपस्थिति आ सम्भावित अवैध प्रयोजनक बीच पर्दा बनि सकैत अछि। मुदा समान भाषिक तकनीकसँ एके अपराधी-संगठनक निरन्तरता सिद्ध नहि होइत। बीस वर्षक अन्तरमे कम्पनीक निदेशक आ मालिक बदलि सकैत छथि; वित्तीय साधन बदलल अछि; अपराधक विधिक स्वरूप अलग भऽ सकैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि भिन्नताकेँ नष्ट नहि, दृश्य करैत अछि।

ईशानक न्याय-विवेक : पिता-पुत्रक अनुभवक असमान दूरी

ईशान मूलतः पिताक असमाप्त मृत्यु-जाँचसँ प्रेरित अछि, मुदा अम्बरक जोखिम-परीक्षणमे ओकरा निजी मतकेँ सीमित रखबाक कर्तव्य अछि। दृश्य

८५क निदेशक-मण्डल आ दृश्य ८६क अनिरुद्ध-संवाद एके व्यक्तिक दू विपरीत समय देखबैत अछि—व्यावसायिक मापनक शान्ति आ शोकक अधैर्य। दृश्य ९०मे ओ औपचारिक बयानसँ अपन अनुपस्थितिक उचितता बुझैत अछि। ई रूपान्तरण पूर्ण नैतिक विजय नहि; तिनु दृश्य मिलि देखबैत अछि जे आत्मनियन्त्रण कौशल धीरे-धीरे अर्जित होइत अछि। उपन्यास ईशानकेँ अखण्ड निष्पक्ष नायक नहि, संघर्षरत पाठकक रूपमे रखैत अछि।

धनेश्वरीक बिज्जी आ अनुसन्धानक नैतिक हिंसा

उद्घाटन-दृश्य मे बिज्जी साँपसँ परिवारक रक्षा करैत छल। दृश्य ८७मे ओहि रक्षकक मुँहमे मृत साँप आ देहरीपर रक्तक पातर चिन्ह अछि। एहि समय अनुसन्धानमे सेहो अनेक लोकक परिचय सार्वजनिक आरोपसँ आहत होयबाक जोखिम अछि। बिज्जीक रूपक जाँचकर्ताकेँ एक चेतावनी दैत अछि: रक्षा आ प्रतिशोधक बीच सीमा, हिंसा आ उत्तरदायित्वक बीच सीमा, आ तत्काल विजय आ दीर्घ सुरक्षित जीवनक बीच सीमा। प्रतीकक सम्पूर्ण अर्थ अपराधीकेँ ‘गहुमन’ आ अधिकारीकेँ ‘बिज्जी’ ठहराएब नहि; एहन स्थिर रूपक स्वत: उपन्यासक बहुवचन सामाजिक चित्रण संकुचित करि देत।

नव्य न्याय : प्रत्यक्ष, अनुमान, हेत्वाभास आ बाधक प्रमाण

छापाक कक्षक प्रत्यक्ष, खाताक लेनदेनक दस्तावेज, विहानक ई-पत्र, मनोजक कथन, आ नीलकण्ठक चालान—ई सभ ज्ञान-स्रोत समान प्रकारक नहि अछि। एके कोठलीमे उपस्थिति प्रत्यक्ष, मुदा साझा अपराध अनुमान अछि; पुरान कम्पनीक नाम अभिलेखीय तथ्य, मुदा वर्तमान अपराधक उद्देश्य पृथक सिद्ध करबाक विषय अछि। सात खाताक मार्गक संयोग व्याप्तिक स्थापना नहि। सहस्त्र सँ आरोह धरि प्रवाहक प्रमाण भेला परो राष्ट्रीय-सुरक्षा अपराधसँ साझा प्रयोजनक अनुमान बाधित भेल। एहि प्रकार नकारात्मक जाँच उपन्यासक न्याय-सिद्धान्तकेँ शुष्क सूत्रमे नहि, घटनाक वास्तविक उलटफेरमे परिणत करैत अछि।

स्त्रीक स्वतन्त्र स्वर : रचना, अपूर्वा, सुमेधा, मृणालिनी आ सबीना

रचना सिन्हा दोषक भेदक जाँच चलबैत छथि; अपूर्वा कश्यप राष्ट्रीय संस्थाक सीमा स्पष्ट करैत छथि; सुमेधा पुरान लेनदेन आ भविष्यक जोखिम पृथक रखैत छथि। एहि तीनू पात्रक विवेक व्यावसायिक संस्थाक भीतर कर्मक रूपमे देखाइत अछि। दोसर दिस मृणालिनीकेँ बेटाक प्राण आ अधूरा शोकक भय अछि, आ सबीना सिलाइ-दोकान तथा बेटीक उपचारक आर्थिक भारक भीतर निर्णय करैत छथि। स्त्रीसभकेँ एके ‘करुणा’ अथवा एके ‘नैतिकता’क प्रतीक कहब हुनकर भिन्न परिस्थिति घटा देत। लेखक एहि पाँचू ठाम अलग संस्थागत शक्ति, जीविका आ सम्बन्धक प्रकृति प्रस्तुत करैत छथि।

अपराध, उपयोग आ उत्तरदायित्वक तिहरा सम्बन्ध

सबीना पाँच हजारक लेल खाता उपयोग देबाक निर्णय लेलीह; पवन सात हजारक ‘भुगतान समन्वय’मे संलग्न छल आ अपन असहजता निजी सन्देशमे लिखने छल। दुनूक आर्थिक विवशता ठोस अछि, मुदा ज्ञानक स्तर एक नहि। पवनक लिखित असहजता ओकरा जोखिमक आभास छल, एहन सम्भावना खोलैत अछि; सबीनाक कथन परिचितक भरोसा आ सीमित सूचना देखबैत अछि। जँ ककरो उपयोग जाल करैत अछि, ताहिसँ ओकर सभ कृत्य निष्कलुष नहि भऽ जाइत; जँ ओ संदिग्ध लेनदेनमे संलग्न अछि, ताहिसँ ओकर दमन आ आर्थिक बाध्यता नगण्य नहि। न्यायिक मूल्याङ्कनक जटिलता एहि द्वन्द्वमे अछि।

भाषाक सामाजिक परिणाम : शीर्षक, ‘भागल’ आ ‘राष्ट्र’-सम्बन्धी सङ्केत

दृश्य ८२क समाचार-शीर्षक बिनु सत्यापित संख्या प्रचारित करबाक खतरा देखबैत अछि। दृश्य ९८मे रोहित ‘भागल’ शब्द सुधारि प्रत्यक्ष रूपेँ अनुपस्थित व्यक्ति लेल तटस्थ शब्द अपनबैत अछि। दृश्य ९३मे अधिकारीसभ स्पष्ट राखैत छथि जे राष्ट्रीय संस्था उपस्थित होयब स्वतः राष्ट्रीय अपराध नहि बनैत। एहि तीन भाषा-स्थितिमे सामाजिक हानि अलग: जन-अपयश, व्यक्तिक

आशयक गलत आरोप, आ असिद्ध राष्ट्रिय षडयंत्रक विशाल दाग। शुद्ध कथन केवल व्याकरणक प्रश्न नहि, प्रमाण आ मानवीय गरिमाक प्रश्न अछि।

आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

❖ चिह्नित छोट दृश्यक गति पहिने सङ्केत खोलैत, फेर ओकर निश्चितता घटबैत अछि। छापा जाल देखबैत अछि, मुदा सभ उपस्थित लोकक भूमिका एक नहि; पुरान नाम पुनः अबैत अछि, मुदा मालिकाना बदलल अछि; राष्ट्रीय सम्बन्ध बनैत अछि, फेर ओकर उद्देश्यगत सम्बन्ध असिद्ध निकलैत अछि। ई क्रम सामान्य रहस्योद्घाटनक रेखीय गति नहि, संशोधनशील जाँचक लय अछि। तथापि किछु दृश्यमे अनिरुद्ध अथवा अपूर्वाक वाणी लगभग सिद्धान्त-वाक्य बनि जाइत अछि, जाहिसँ पात्र-स्वरक स्वाभाविक अंतर कतहु घटि सकैत अछि। लेखक घरेलू चिन्ता, सिलाइ-दोकान, बीमार पिता, बन्द घर आ कानूनी कागजक सूक्ष्म चित्रणसँ एहि खतरा सँ बहुत हद धरि बचैत छथि। आलोचनात्मक मूल्यांकनमे दुनू पक्ष रखबाक चाही।

दृश्य १०० पर अस्थायी निष्कर्ष आ अगिला परीक्षणक प्रश्न

सएम दृश्य धरि वैध-अवैध खेलक सम्बन्ध, अम्बरक भीतरक सम्भावित जानकारी, मनोजक वास्तविक भूमिका, प्रदीप महाजनक वर्तमान स्थिति, सहस्त्रक सम्पूर्ण ग्राहक-पञ्जी आ सत्यप्रकाशक मृत्यु-पहिनुक दिगन्त-प्रश्न—बहुत किछु शेष अछि। तथापि एक महत्त्वपूर्ण गलत जोड़ खुलि गेल: साझा वित्तीय मार्ग स्वतः साझा राष्ट्रीय-सुरक्षा अपराध नहि। ई अस्थायी नकारात्मक निष्कर्ष कथा-प्रगतिक उपलब्धि अछि। अगिला दृश्यसभमे जँ नव प्रमाण आयत, तखन एहि निरूपणक पुनः परीक्षण सम्भव रहत; एखन उपलब्ध प्रमाणसँ ओहि पर आगाँ बढ़ल निर्णय नहि देल जा सकैत।

अध्ययन-इकाई २६ — जानि-बुझि अनभिज्ञ रहबाक मूल्य आ अनुपस्थित रहि गेल अन्तिम क्षण (मूल दृश्य १०१–१०४)

केशवक उत्तर : अज्ञान, मौन आ कारोबारक विस्तार

एक सय एकम दृश्य अम्बरक भीतर विहान सारंग आ केशव मेहताक आमने-सामनेक वार्ताकेँ छोट-छोट प्रश्नोत्तरमे विकसित करैत अछि। केशव ‘रात्रि कक्ष’क अम्बरसँ औपचारिक भिन्नता, ‘लोकविस्तार’क बाहरी स्थिति आ मनोजक बाहरी भूमिकाक उल्लेख करैत अछि; मुदा वित्तीय निपटानक प्रश्न आबिते ओकर उत्तर संकुचित भऽ जाइत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे ओ अपने मुँहसँ सम्पूर्ण जुआ-जालक संचालन स्वीकार कऽ लेलक। पाठ विशेषतः हुनक सीमित सूचना, पुरान शंका आ चुप रहलाक प्रेरणा बीच अन्तर बना रहल अछि। कम्पनीक त्रैमासिक वृद्धि एहि मौनक निजी लाभक मापक बनैत अछि; अर्थोपार्जन आ नैतिक सजगताक बीच जे प्रश्न उठल, ओकर उत्तर केशव टारि देने छल।

विहानक ‘कखन सँ?’ प्रश्नक पुनरावृत्ति आख्यानक लय बदलैत अछि। कोनो पैघ रहस्योद्घाटनक बदला एक अप्राप्त तिथि कथाक नैतिक केन्द्र बनि जाइत अछि। एतय भारतीय औचित्यक दृष्टिसँ ओहि प्रबन्धकक कर्तव्य देखबाक अछि, जकर वित्तीय नियन्त्रण छल; पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ संवादमे क्रमिक मौन स्वयं चरित्र-विकासक साधन अछि। तथापि व्यावसायिक शंका कैँ न्यायालयमे अपराध-ज्ञानक प्रमाण बुझब अनुचित हएत। लेखकक महत्त्वपूर्ण शिल्पगत संयम इएह अछि जे चारित्रिक स्वीकारोक्ति आ दण्डनीय स्वीकारोक्ति पृथक राखल गेल अछि।

निदेशक-मण्डलक निर्णय आ जानबूझि अनभिज्ञताक प्रश्न

एक सय दोसर दृश्य केशवकेँ आन्तरिक अनुपालन समीक्षा धरि अवकाशपर पठेबाक निर्णयसँ आरम्भ होइत अछि। ई दण्डादेश नहि, कम्पनीक सुरक्षात्मक

व्यवस्था अछि। विहानक स्वेच्छासँ राज्य शाखाकेँ सूचना देबो निर्दोषताक अन्तिम प्रमाण नहि; ई एतबे देखबैत अछि जे कम्पनीक भीतर जाँचक आवश्यकता स्वीकारल गेल। रचना सिन्हा हुनकर आत्मप्रश्नक माध्यमसँ वास्तविक अज्ञान आ प्रश्नक उत्तर सुनबाक भयक कारण अज्ञान बनि रहबाक भेद उघारैत छथि।

नव्य न्यायसँ एहि प्रसङ्गक उपयोगी पढ़ाइ प्रमाण-विभागक अछि: वित्तीय व्यवहारक प्रत्यक्ष अभिलेख, प्रबन्धकक कथन, ओकर मनोदशाक अनुमान आ विधिक उत्तरदायित्व अलग-अलग स्तरपर रहत। कुनू लेखा-विवरण तक पहुँच रहनाइ, ओकर प्रत्येक स्रोत-गतिविधिक वास्तविक जानकारी होयबाक समान नहि। तथापि पहुँचक पदपर रहि आवश्यक प्रश्न नहि करब नैतिक मूल्याङ्कनसँ बाहर नहि चलि जाइत अछि। ई दृश्य जाँचक दृष्टि बाहरी गिरोहसँ भीतरक कार्यालय-संस्कृति दिस मोड़ैत अछि।

हित-संघर्षक कारण ईशानकेँ हटाओल जाएब

एक सय तेसर दृश्य ईशानक हटाओल जाएबकेँ साधारण पेशागत अपमानसँ बेसी जटिल बनबैत अछि। सुमेधा घोष साफ करैत छथि जे युवकक गणनात्मक योग्यता पर आपत्ति नहि अछि; समस्या अछि ओकर पिता सत्यप्रकाशक मृत्युसँ जुड़ल इतिहास। ओ जे उचित निष्कर्ष निकालत, ओकरा बदला कहल जा सकैत; जे चूकत, ओकरा पूर्वग्रह कहल जा सकैत। निर्णय एहि अर्थमे केवल निष्पक्ष होयबाक नहि, जाँचक निष्पक्षता सार्वजनिक रूपसँ देखाइत रहबाक प्रश्न सेहो अछि।

लेखक ईशानक कातर प्रतिक्रिया सुनबैत छथि, मुदा ओकर कौशलकेँ अमान्य नहि करैत। न्याय-दर्शनक प्रमाणसिद्धान्त एतय आधुनिक संस्थागत हित-संघर्षक संकल्पनासँ संवाद करैत अछि। सुमेधाक अन्तिम ‘जीउ’ मात्र सांत्वना नहि; प्रमाणक कार्य आ जीवनक कर्तव्य एकहि मनुष्यक समस्त अस्तित्व नहि होइत, एहि सीमाक कठोर स्मरण अछि। मुदा एहि निर्णयमे ईशानक वैकल्पिक

जिम्मेवारी कोना निश्चित भेल, से दृश्य विस्तृत नहि कहैत; एहि नाटकीय संक्षेपसँ व्यक्तिगत पीड़ाक तीव्रता बढ़ैत अछि, संस्थागत प्रक्रियाक सम्पूर्ण विवरण नहि भेटैत।

धनेश्वरीक मृत्यु : निर्दोष प्रक्रियासभक साझा दुःख

एक सय चारिम दृश्यमे बन्द उपकरणवाली गोपनीय प्रस्तुति, सात छुटल फोन आ पचास मिनटक अन्तर एकहि घटना कँ अनेक समय-मानमे विभाजित करैत अछि। ईशान केवळ अपन कार्यालयी गतिविधिक कारण धनेश्वरीक अन्तिम क्षणमे उपस्थित नहि रहि सकैत; किन्तु कथाक तथ्य ई नहि कहैत जे गोपनीय बैठक छोड़िते ओ हुनका बचा लैत। दोष निश्चित करबाक लेल एतय पर्याप्त आधार नहि अछि। उपन्यास एहि असम्भव प्रतिलोम कल्पनाकँ शोकक मनोविज्ञानक विषय बनबैत अछि।

धनेश्वरीक अन्तिम स्मरणमे ‘पानि पढ़ि रहल’ आ ‘किनार मोन रखय’क रूपक पहिले बच्चाकँ बिज्जीक पहरा सिखेबाक प्रसङ्गसँ जुड़ैत अछि। मुदा एहि बेर प्रतीकक मूल्य आरो व्यक्तिगत अछि: नदी पढ़बाक अभिलाषा आ अपन घरक किनार पर लौटबाक आवश्यकता आमने-सामने अछि। करुण रसक आधार अपूर्ण मिलन अछि; ध्वनि ई जे सभ व्यवस्था औपचारिक रूपसँ उचित भऽ सकैत अछि, तैयो ओकर सम्मिलित मानवीय परिणाम असह्य रहि सकैत अछि। पहिल अध्ययन-इकाई एहि ठाम व्यापारिक अनभिज्ञता आ निजी अनुपस्थितिक भिन्न प्रकारक नैतिक कठिनाइकँ जोड़ैत अछि, दुनूकँ एके प्रकारक अपराध नहि बनबैत।

अध्ययन-इकाई २७ — शोकक उत्तराधिकार, सामाजिक बदनामी आ नव डिजिटल सूत्र (मूल दृश्य १०५–१०८)

माएक गोद आ बिज्जीक पदचिह्न

एक सय पाँचम दृश्यमे धनेश्वरीक अन्त्येष्टिक बादक वस्तुसभ—खाट, तकिया आ खाली घर—शोकक स्थूल आलम्बन बनैत अछि। मृणालिनी ईशानकेँ दोष नहि दैत छथि; दोषारोपणक अभाव उलटे ओकर अपराध-बोध बढ़बैत अछि। युवकक ‘हम किछु पढ़ि नहि पबैत छी’ कहब पेशागत विशेषज्ञक शब्द नहि, अपितु अपूर्ण वंशगत दायित्वक स्वीकार अछि। माएक प्रश्न ओकर ऊपर समस्त सत्य पढ़बाक भार किएक अछि, पीढ़ीगत उत्तरदायित्वकेँ पुनः मानवीय आकार दैत अछि।

राति बाद देहरीक कादोमे बिज्जीक पयरक निशान भेटबकेँ कथावाचक हत्या अथवा आपदा-विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्यवाही नहि बनबैत। एतय कोनो साँप नहि; बचल अछि पूर्व स्मृतिक रूपक। धनेश्वरी नहि रहलीह, मुदा ओ सिखौने पहराक मानवीय अनुशासन ईशानक दृष्टिमे बनल अछि। प्रतीकक एहि पुनरागमनमे रचनाक संयम अछि: जीवक वास्तविक उपस्थितिसँ अधिक ओकरा पढ़बाक तरीका पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचैत अछि।

अभिषेक आ मंजरी : कानूनी स्थितिक बादो बचल सामाजिक दण्ड

एक सय छठम दृश्य अम्बर-जालक आर्थिक फन्दामे फँसल अभिषेक झाक घर दिस घुरैत अछि। मंजरीकेँ नर्सिङ्ग प्रवेश भेटैत अछि, मुदा नामाङ्कनक फीस लेल परिवार जमीनक छोट टुकड़ा बेचैत अछि। अभिषेकक कमाइ देबाक प्रस्तावपर पिताक कठोर उत्तर पूर्व व्यवहारक सामाजिक अविश्वासकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। लेखकीय प्रस्तुति न ओहि पिताक कठोरताकेँ पूर्ण अन्याय घोषित करैत अछि, न युवकक सुधारक इच्छाकेँ मात्र धोखा।

अभिषेक सहयोगी गवाहक रूपमे बैंक-जाँचमे सहायता करैत रहैत अछि; ओकर पहिचानक पुनः दुरुपयोगक प्रयास करनिहार समूह पकड़ा जाइत अछि।

न्यायिक अथवा अनुसन्धानगत भूमिका आ लोकसमाजमे भेटल प्रतिष्ठा एक समान नहि। दोकानदारक उधार रोकब एहि अन्तरक मार्मिक प्रमाण अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ वित्तीय अनुप्रयोग, पारिवारिक जमीन, पढ़ाइ आ छोट बाजारक उधार एके समयक चारि असमान अर्थव्यवस्था बनैत अछि। एहि दृश्यसँ अपराधक परिणाम कागजक मामला बन्द भेलाक बादो समाजमे कतेक दूर धरि रहैत अछि, से देखाइत अछि।

‘रात्रि—के.एम.—उत्तरायण’ : चिह्नक सीमित अर्थ

एक सय सातम दृश्य राष्ट्रीय जाँचसँ वैधानिक प्रक्रियामे प्राप्त वित्तीय प्रबन्धकक उपकरणमे भेटल छोट पाँतिक कारण पूर्व प्रसङ्गकेँ नव दिशा दैत अछि। ‘रात्रि’, ‘के.एम.’ आ ‘उत्तरायण’ एकहि स्थानपर देखाइत अछि; रात्रि कक्ष सम्बन्धी पूर्व पूछताछ आ कम्प्यूटरक उत्तरायण सङ्केतक संग राखलापर जाँचक आधार मजबूत होइत अछि। मुदा ‘के.एम.’क विस्तार केशव मेहता होएत—ई अपन आपमे सिद्ध नहि। पाठ स्वयं कृष्ण मोहन, कविता मिश्रा आ कुणाल मेहरा सन अलग सम्भावना देखबैत अछि।

नव्य न्यायमे एकाक्षरक संकेतकेँ साध्यक निर्णायक हेतु मानब अनुचित छल; अनेक सम्भावित व्यक्तिमे एक संकेत व्याप्यता नहि दैत। रचना सिन्हाक केवळ अक्षरक आधारपर प्रश्न करेबाक आरम्भिक सङ्कोच एहि सावधानीक व्यावहारिक रूप अछि। अनिरुद्धक निर्देश प्रश्न पूछबाक आधार आ दोष लिखबाक आधारक भेद स्पष्ट करैत अछि। जाँच-विस्तार एतय कथानकक उपलब्धि अछि, दोषसिद्धिक नव अध्याय नहि।

केशवक पूछताछसँ प्रदीप महाजनक नाम धरि

एक सय आठम दृश्य केशवक वकील सहित उपस्थितिक कारण प्रत्यक्ष संवादक कानूनगत मर्यादा सामने अनैत अछि। ओ ‘के.एम.’ अपन नहि मानैत अछि, पुरान शिकायतक तिथि बतबैत अछि, लोकविस्तारक अनुबन्ध बन्द नहि करबाक कारण पर्याप्त प्रमाणक अभाव कहैत अछि। रचना ई तर्कक व्यवसायिक अनुप्रयोगपर प्रश्न करैत छथि; जाँच-अधिकारी जे वाक्य प्रतिदिन सावधानी

लेल प्रयोग करैत छथि, व्यापारी ओहि वाक्यसँ निष्क्रियताक औचित्य सिद्ध करय चाहैत अछि।

मुख्य वित्तीय प्रणालीक कुल निपटान आ ओकर स्रोत-स्तरक अन्तर पर पूछल गेल प्रश्न अन्ततः बाहरी भुगतान परामर्शक 'प्रदीप महाजन'क नाम धरि जाइत अछि। एहि उत्तरसँ पुरान निर्माण-व्यवसाय आ वर्तमान जुआ-जाल बीच अनुसन्धानयोग्य जीवित सम्पर्क प्राप्त होइत अछि; ई उत्तर सम्पूर्ण आर्थिक मार्गक वैधता अथवा अवैधता सिद्ध नहि करैत। चारि दृश्यक संयोजनमे एक ओर शोक आ सामाजिक अविश्वास अछि, दोसर ओर कम्पनी, पुलिस आ पुरान लेखाक्रमक नव बिन्दु। लेखक एहि भिन्न समयसभकेँ बराबर चलबैत छथि, बिना अपन पात्रकेँ समयक सभ बात पहिनहि जननिहार बनओने।

अध्ययन-इकाई २८ — हेरायल लेखाधिकारी, बिरजूक लिफाफा आ पुरान पैसाक सम्भावित बाट (मूल दृश्य १०९–११२)

प्रदीपक अनुपस्थिति : अपराध-बोध अथवा भयक साक्ष्य?

एक सय नवम दृश्यमे प्रदीप महाजनक पत्नी ओकर भय, बच्चाकेँ अन्तिम बेर चुमबाक प्रसङ्ग आ फोन घरमे छोड़ि जाएबाक बात कहैत छथि। ओ अपन पुरुषक वाक्य स्मरण करैत छथि जे गलत लोकक पैसा सही किताबमे लिखि देल गेल। एकर नैतिक अर्थ गहिर अछि, मुदा ‘गलत लोक’क पहिचान पत्नी नहि जनैत छथि। फोन छोड़ि जाएब अनुभवी पलायनक संकेत सेहो भऽ सकैत, भयभीत कर्मचारीक आत्मरक्षाक उपाय सेहो। लेखक ई दूनू सम्भावना स्वयं खोलैत छथि।

फोनक सामान्य पारिवारिक सामग्रीक बीच ‘नदी पार पुरान कोठी—बिरजू’क संक्षिप्त सूचना भेटैत अछि। एहि नामक पहिल दृश्यमे अनुपस्थित रहब सम्भवतः जाँचक भौगोलिक दिशा बदलैत अछि। मयंक झा नामकेँ अपन पुरान कथा संग तुरन्त मिला देबाक आग्रह रोकैत छथि। प्रमाणक ई नकारात्मक अनुशासन उपन्यासक आवर्ती शिल्प अछि: नब सूचना सम्पूर्ण अर्थ नहि देत; ओ नव जाँच-पथ देत।

बिरजू साह : अफवाह आ प्रत्यक्ष ज्ञानक दूरी

एक सय दसम दृश्य ‘नदी पार’केँ राजधानीसँ तीन जिला दूर पुरान चीनी मिल लगक गाममे स्थापित करैत अछि। स्थानीय हवलदारक ‘हवाला-जइसन’ पुरान चर्चाकेँ रचना तुरन्त प्रत्यक्ष प्रमाणसँ पृथक रखैत छथि। बिरजू साहक वास्तविक उमेर, हुनकर अबाधित संवाद आ वृद्ध देहक भीतर सजग बुद्धि कथाक हतारमे अंकित अफवाहसभकेँ संशोधित करैत अछि।

प्रदीप दू महीना पहिने एक लिफाफा बिरजू लग रखि गेल छल। सात दिनक शर्त, फेर ओकर अपने फोनक कारण लिफाफा नहि खोलबाक सूचना, तीन सप्ताह पहिने मौन रहबाक निर्देश, आ अन्ततः अनजान व्यक्ति द्वारा पुरान

कागज जरा देबाक आदेश—ई क्रम एकर संरक्षणक इतिहास बनैत अछि। एहि ठाम लिफाफाक वास्तविक अस्तित्व प्रत्यक्ष अछि; अनजान फोनक वक्ता कियो, से स्पष्ट नहि; बिरजूक कथन अलग प्रकारक साक्ष्य अछि। घटना-दृश्यक तनाव एहि स्तरसभक मिलानमे अछि, केवल वृद्धक रहस्यमय रूपमे नहि।

जब्ती-प्रक्रिया आ चारि स्तम्भक सारणी

एक सय एगारहम दृश्य लिफाफा तत्काल खोलबाक थ्रिलर-सुलभ आकर्षण छोड़ि सील, जब्ती-पत्र, गवाह आ अधिकृत कक्षक अनुशासन अपनबैत अछि। कागजक सामग्री ओहिपर लागू प्रक्रिया सँ अलग नहि। भीतरक हस्तलिखित सारणीमे खेल, रात्रि, माल आ पुरान नामक चारि स्तम्भ अछि; ‘के.एम.’, ‘पी.एम.’ आ ‘उ.’ संक्षिप्त सङ्केतक विस्तार अनुमानपर निर्भर रहैत अछि।

सारणीक एक विवादित पुरान भुगतान, दिगन्त सम्बन्धी न्यायालयी जब्ती-अभिलेखक रकम आ तिथिसँ निकट मेल खाइत अछि। मयंकक सावधान शर्त—सारणी वास्तविक हो तँ पुरान पूँजीक किछु अंश नब निवेश-पथ धरि पहुँचल हो सकैत अछि—न्याय-दर्शनक महत्त्वपूर्ण प्रयोग अछि। रकमक निकटता, तिथिक निकटता आ स्वतंत्र स्रोतक जाँच भिन्न प्रश्न अछि; मेलक अस्तित्व सम्बन्धक अनुसन्धान करबाक कारण अछि, अन्तिम निष्कर्ष नहि। कथाक पुरान आ नब अपराध-काल एतय पहिल बेर दस्तावेजक एक सम्भावित सेतु पबैत अछि।

अनिरुद्धक रात्रि : अंशतः भेटल सत्य आ अधूर मृत्यु-जाँच

एक सय बारहम दृश्य सेवानिवृत्त अनिरुद्धकेँ पुरान सत्यप्रकाश फाइल खोलैत देखबैत अछि। आधिकारिक शक्ति नहि रहलापर सेहो प्रश्न हुनका पाछाँ चलि रहल अछि। विहानक ई-पत्र, दिगन्तक खेल-महोत्सव आ आरम्भिक अम्बर-उपस्थितिक मेल ई सम्भावना खोलैत अछि जे सत्यप्रकाश कदाचित् पुरान वित्तीय मार्गक किछु संकेत देख लेने छल। मुदा एहि कारणे हुनकर मृत्यु भेल—एहन निष्कर्ष ई दृश्य नहि दैत।

अभिलेखीय समय आ मनोवैज्ञानिक समयक विसंगति एहि प्रसङ्गक कलात्मक उपलब्धि अछि। नव पाँति भेटलाक बादो मृत्युक मूल कारण अनिर्णीत रहि सकैत अछि। लेखक समाधानक लालसा कम नहि करैत, मुदा समाधानक वैधानिक सीमा भङ्ग नहि करैत। एहि चौदृश्य इकाईक अन्त मे पाठक पुरान अपराध-जालक सम्भावित वित्तीय उत्तरजीवन देखैत अछि, तकरा संग सत्यप्रकाशक मृत्युक अपूर्ण न्याय सेहो।

अध्ययन-इकाई २९ — देखाइत पहरा, बूढ़ गवाहक अधिकार आ कथित षडयन्त्रक परीक्षा (मूल दृश्य ११३–११६)

बिज्जीक अहिंसक उपस्थिति आ ईशानक पुनरागमन

एक सय तेरहम दृश्य धनेश्वरीक श्राद्धक बाद ईशानक घुरबाक प्रसङ्गमे घरक दुआर, मृणालिनीक भोजन आ देहरी पार करैत बिज्जीकेँ एकहि रचनात्मक संरचनामे रखैत अछि। पहिल साँप-बिज्जी प्रसङ्गमे टकराव छल; आब साँप घासमे पाछाँ सरकैत अछि, लड़ाइ अथवा रक्तपात नहि होइत। पहराक अर्थ हिंसात्मक विजयक बदला आवश्यक उपस्थिति बनैत अछि। धनेश्वरीक शिक्षा स्मृतिसँ वर्तमान व्यवहारमे रूपान्तरित होइत अछि।

ईशान अपन माएसँ दोसर फाइलपर काज करबाक बात कहैत अछि; ओ झूठ नहि, मुदा सम्पूर्ण अन्तरमन सेहो नहि खोलैत। कथावाचक ओहि युवकक अज्ञान स्पष्ट करैत छथि: प्रदीपक लिफाफा खुलि गेल अछि, मुदा ईशान एखन नहि जनैत। एतय नाटकीय विडम्बना पाठकक ज्ञान आ पात्रक ज्ञानक अन्तरसँ उत्पन्न होइत अछि। गोहि जखन धरि ऊपर नहि आयल, तखन धरि प्रतीकक पूर्ण निष्कर्ष स्थगित अछि।

सुरक्षात्मक पहरा कि अनुभवगत बन्दीकरण

एक सय चौदहम दृश्यमे बिरजू साहक कोठीपर पुलिसक पहरा स्थापित होइत अछि। रचना सिन्हा सुरक्षा बुझबैत छथि, मुदा वृद्धक दृष्टिमे दरबज्जा लग दू सिपाही, फोनक लेखा आ बाहर जाएबाक गाड़ी नियन्त्रणक अनुभव बनैत अछि। वैधानिक उद्देश्य आ मानवीय अनुभूतिक असंगति एतय कलात्मक प्रश्न अछि। दण्ड नहि देल गेल, तैयो स्वतन्त्रताक अनुभूति घटि सकैत अछि।

बिरजू मजिस्ट्रेट समक्ष केवल अपन प्रत्यक्ष अनुभव कहबाक प्रतिबद्धता रखैत अछि। रचनाक सहमति एहि पात्रकेँ रहस्यक मात्र वाहक नहि, साक्ष्यक नियम समझनिहार विचारशील व्यक्ति बनबैत अछि। दृष्टिकोणक ई द्विस्वरता महत्त्वपूर्ण: पुलिसकेँ सुरक्षा आ प्रमाण चाही; गवाहकेँ अपना उपर लागल

आशङ्कासँ अलग निज गरिमा। नव्य न्यायमे प्रत्यक्ष आ परश्रुत कथनक भेद ई संवादमात्रसँ रूप पबैत अछि।

पुरान पाइ-पहुँचाबब आ उत्तरायणक ‘ऊपरक छत’

एक सय पन्द्रहम दृश्यमे बिरजू अपन पुरान धन-पहुँचावनिहार भूमिका स्वीकारैत अछि; ओ कानूनी आ गैरकानूनी दुनू प्रकारक व्यवहार होयबाक बात कहैत अछि। एहि कथनकेँ प्रत्येक पुरान ग्राहकक अपराध-सिद्धि मानब नितान्त अनुचित। बिरजू पुरान मार्गमे एउह रूप बदलैत पैसाक स्मृति रखैत अछि—दान, बिल, माल, चुनावी खर्च। एतय उपन्यास लेन-देनक नाम परिवर्तित होयबाक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया देखबैत अछि, संगहि स्रोतक सत्यापनक आवश्यकता रखैत अछि।

प्रदीप ‘पुरान बाट फेर खुलल’ आ ‘स्क्रीनक खेल’क बात कहने छल—ई बिरजूक कथन अछि, लेखकक प्रमाणित न्यायिक निर्णय नहि। ‘उत्तरायण’क नाम सुनिते वृद्धक ठमकब कथानकमे विशेष मोड़ अछि। ओकर ‘ऊपरक छत’ आ नीचाँक अनेक कोठरीक रूपक वित्तीय संस्थाक बहुस्तरीय संरचनाक कल्पनात्मक प्रतिरूप अछि। तथापि ‘शशि किछु’ सन आधा नामक आधारपर व्यक्ति निश्चित करब हेत्वाभास हएत। रचनाक सूची बनाबय सँ विरत रहब ई खतरा टारैत अछि।

बिरजूक मृत्यु : आकस्मिकता पर षड्यन्त्र आरोपक दबाव

एक सय सोलहम दृश्यमे बिरजू छातीमे पीड़ा अनुभव करैत अछि; चिकित्सकीय परीक्षण आ अस्पताल लऽ जाएबाक प्रयत्नक बीच ओकर मृत्यु होइत अछि। प्रारम्भिक चिकित्सकीय मत हृदयाघातक अछि; पुरान हृदयरोगक सन्दर्भ सेहो अछि। जहर अथवा हत्या विषयक प्रचार आबिते रचना शव-परीक्षण आ भोजन-पानि-दवाक नमूना जाँच करबाक निर्देश दैत छथि। इमानदार समीक्षा एहि घटनाकेँ गवाहक हत्या कहि प्रस्तुत नहि कऽ सकैत अछि।

एकर भयावहता एहि बातमे अछि जे गवाहक मृत्यु अभिलेखीय वाक्यकेँ अधूर छोड़ि दैत अछि, कारण जे किछु ओ कहि सकैत छल से आब स्मृतिक माध्यमसँ

बाँचत। जनसमाज आ अपराधी दुनू अर्थ-सृजन करैत छथि; न्यायिक प्रक्रिया प्रमाणक अनुक्रम सँ चलैत अछि। करुण आ भय रसक संग आख्यानक नैतिक संयम एक दृश्यमें जुड़ैत अछि। एहि चारि दृश्यसँ उपन्यास पहराक अर्थ रक्षा, नियन्त्रण, स्मृति आ परीक्षण—चारि अलग स्तरपर खोलैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३० — मरल गवाहक बही, ‘चन्द्र’क सम्भावना आ दस्तावेजी वित्तीय सेतु (मूल दृश्य ११७–१२०)

शव-परीक्षणक सीमित निष्कर्ष आ मौखिक साक्षीक हानि

एक सय सत्रहम दृश्य बिरजूक शव-परीक्षणमे तत्काल विषाक्तताक सङ्केत नहि भेटबाक बात कहैत अछि; पुरान हृदयरोग स्पष्ट अछि, मुदा अन्तिम चिकित्सकीय मत सुरक्षित राखल गेल। एतयसँ विषाद कम नहि होइत, किएक तँ मजिस्ट्रेटक समक्ष निर्धारित बयान आगाँ नहि भऽ सकल। पुलिसक नोटमे बचल मौखिक कथनक न्यायिक मूल्य सीमित भऽ सकैत अछि—ई आशङ्का पाठमे अछि, मुदा ओकर एकमात्र निश्चित विधिक परिणाम लेखक घोषित नहि करैत छथि।

मयंक झाक शब्द-प्रमाण सम्बन्धी टिप्पणी पर रचनाक क्षणिक रोष, फेर क्षमा, ओकरा यन्त्रवत् विवेकशील अधिकारीक स्थानपर मानवीय जाँचकर्ता बनबैत अछि। ‘कल’क विलम्ब समय-राजनीतिक जिम्मेवारीक प्रश्न खोलैत अछि; प्रत्येक मृत्यु पुलिसक दोष नहि, मुदा साक्ष्य-संग्रहमे समयक जोखि अवश्य अछि। बही रहि गेल, लिफाफा रहि गेल, मुदा जीवित व्याख्याकार चलि गेल। ई दृश्य अभिलेखक बचल सत्य आ मौखिक स्मृतिक लोपक मूल विरोध खोलैत अछि।

अलोक साह : पुत्र-सम्बन्ध आ अनुसन्धानक दबाव

एक सय अठारहम दृश्य बिरजूक पुत्र अलोक साहकेँ बैंक अधिकारीक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि; पितासँ वर्षौं दूरीक कारण ओ हुनक अन्तिम समय आ पुरान वित्तीय जीवनसँ कम परिचित अछि। पुलिसक प्रश्न ओकरा दुःख आ आरोपक बीच घेरैत अछि। ‘हम पिता-पुत्र छलहुँ कि जाँच अधिकारी?’क भावार्थ ई जे कुटुम्ब-सम्बन्धमे अभिलेखीय उत्तरक अनुपस्थिति हरदम अपराधजन्य मौन नहि होइत। रचना एहि उत्तरक नैतिक चोट बुझैत छथि।

अलोकक पुरान लोहेक संदूक खोलब कथाक ठोस साक्ष्य-बिन्दु बनैत अछि। पुत्र अपन पिताकेँ सन्त रूपमे स्थापित करबाक आग्रह नहि करैत, जाँचकर्ता सेहो पूर्वनिर्णय सँ दूर छथि। एहि निर्भीक स्वीकारक फलसँ बहीक असुविधाजनक प्रविष्टिसभ समीक्षा लेल उपलब्ध भऽ सकैत अछि। बीस वर्ष पुरान बही, कीड़ा खायल कागज आ ‘चन्द्र’क पुनरावृत्ति वस्तुगत सामग्रीक अस्थिरता आ स्मृतिक टिकाउपन एक साथ दर्शबैत अछि।

‘शशि’ सँ ‘चन्द्र’ : नाम-व्युत्पत्तिक गलत छलाङ

एक सय उनैसम दृश्य ‘शशि’ आ ‘चन्द्र’क समानार्थकताक आधारपर एक व्यक्तिक अनुमान बनैत देखबैत अछि। रोहित उत्साहित होइत अछि; मयंक आ रचना एकरा सम्भावना धरि सीमित रखैत छथि। एकहि अर्थ देनिहार दू शब्द एकहि व्यक्तिक नाम अथवा कूटनाम हएत—एहि रूपमे व्याप्ति स्थापित नहि। बिरजूक पूर्व कथन आधा सुनल स्मृति सेहो भऽ सकैत अछि, जानि-बुझि छोड़ल सङ्केत सेहो।

बहीमे ‘चन्द्र’ लग तीन पुरान संस्थाक उल्लेख अछि, जाहिमे उदयरेखा लोकन्यास एक अछि। एकर घोषित कार्य शिक्षा, ग्रामीण खेल, छात्रवृत्ति आ जल-संरक्षण अछि। अध्यक्षक नाम शशांक देवव्रत देखिते जाँचकर्ताक मन प्रतीकात्मक समानार्थकता सँ व्यक्तिक पहिचान बना लेबाक उत्साह अनुभव करैत अछि। रचना फाइल बन्द कऽ पहिने न्यासक कागज मँगबैत छथि। न्याय-तर्कक ई सुन्दर कथात्मक क्षण अछि: सुन्दर अनुमान असल अभिलेखक स्थान नहि लेत।

उदयरेखा-उत्तरायण-अम्बर : स्वामित्वक पथ आ अपराधक असिद्धि

एक सय बीसम दृश्य शशांक देवव्रतकेँ प्रभावशाली उद्योग-संसारक व्यक्ति बतबैत अछि, मुदा हुनका विरुद्ध कोनो सार्वजनिक अपराध-अभिलेख एहि स्तरपर नहि अछि। उदयरेखा न्यास अम्बरक आरम्भिक निवेशकक सूचीमे प्रत्यक्ष नहि; किन्तु उत्तरायण सामाजिक निवेश निधिक प्रारम्भिक दानकर्तामे

उदयरेखा अछि, आ उत्तरायण अम्बरक आरम्भिक पूँजीसँ जुड़ैत अछि। एहि तीन अभिलेखीय स्तरक मेल वास्तविक दस्तावेजी मार्ग स्थापित करैत अछि। एहि मार्गक अस्तित्व अपराधक दोषसिद्धि नहि। दान, निवेश आ पूँजीक आवागमन वैध भऽ सकैत अछि; जाँचक प्रश्न प्रारम्भिक स्रोत, लाभग्राही अधिकार, वास्तविक नियन्त्रण आ अलग-अलग व्यवहारक उद्देश्य पर उठत। तीन दशकक पट्टपर पुरान निविदा, न्यास, निवेश, डिजिटल कम्पनी, रात्रि कक्ष आ धन-वाहक खाताक क्रम अंकित करबाक दृश्य कथानककेँ पैघ ऐतिहासिक आयाम दैत अछि। मुदा पट्टपर खींचल तीर प्रत्येक बिन्दुक विधिक सम्बन्ध प्रमाणित नहि करैत; एहि चित्रक उपयोग अनुसन्धानक परिकल्पना बनाबय लेल अछि।

शशांकसँ प्रश्न पूछबाक अधिकारक स्वीकार आ दोष मानबाक निषेधसँ उपन्यास एक जटिल बिन्दुपर पहुँचैत अछि। एतय विवेक, करुणा, वित्तीय भूगोल आ अभिलेखीय कालक्रम एक संग भेटैत अछि। पाठमे पुरान संस्थाक पुनर्प्रयोगक सम्भावना अछि; व्यक्ति-विशेष पर दण्डात्मक निर्णयक प्रमाण एखन नहि। एहि पाँचम इकाईक उपलब्धि एही असमानता स्पष्ट करब अछि।

छठम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य १०१–१२० : मौनक व्यापारसँ वित्तीय इतिहासक साक्ष्य धरि

आत्मस्वीकृति, ज्ञानक अभाव आ संस्थागत दायित्व

एक सय एकम दृश्य केशवक चुप्पीकेँ कारोबारी लाभसँ जोड़ैत अछि; दोसर दृश्य एकर भीतर प्रबन्धकीय उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि; सातम–आठम दृश्य संक्षिप्त ‘के.एम.’ संकेत आ प्रदीप महाजनक नाम धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रममे तीन स्तर अलग होइत अछि—मनुष्यक नैतिक आचरण, संस्थाक अनुपालन-कर्तव्य आ अपराध-सिद्धिक मानक। व्यावसायिक वृद्धिसँ लाभ लेल गेल, ई देखल जाएत; परन्तु कुन विशिष्ट अवैध भुगतानक आदेश वा जानकारी केशवकेँ छल, से स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि। ई सावधानी प्रत्येक समीक्षाक प्रमाणिक आधार अछि।

देह, परिवार आ वित्तीय समयक असमान गति

ईशानक पेशागत हटाव, धनेश्वरीक अन्तिम समयक अनुपस्थिति, मृणालिनीक शोक, अभिषेकक परिवारक जमीन-बिक्री आ मंजरीक पढ़ाइ पाठमे मात्र करुण प्रसङ्ग नहि। ई सभ देखबैत अछि जे वित्तीय खाताक समय, न्याय-प्रक्रियाक समय आ कुटुम्बक जीवनकाल समान वेगसँ नहि चलैत। बैंकक एक संदिग्ध प्रविष्टि महीना धरि जाँचल जा सकैत अछि; मुदा अन्तिम फोनक पचास मिनट वापस नहि भेटत। एही कारण उपन्यासक नैतिक अर्थ कोर्टक परिणामसँ बाहर फैलैत अछि।

रूपकक विकास : साँप-विजय सँ उपस्थित पहरा

मूल कथाक आरम्भमे बिज्जीक आगमन गहुमनसँ प्रत्यक्ष संघर्ष करैत अछि। दृश्य १०५मे छोट पदचिह्न मात्र अछि; ११३मे बिज्जीक उपस्थिति सँ साँप स्वयं पाछाँ सरकैत अछि। ई प्रतीकात्मक परिवर्तन न्यायकेँ केवल दुश्मन मारबाक क्रिया नहि, आवश्यक सजगताक निरन्तर अभ्यास बनबैत अछि। ‘गोहि’क

अदृश्यता एखनहुँ मूल संरचनामे बनल अछि; गोहिक पहिचानकेँ शशांक वा कोनो आन पात्रसँ एखन निश्चित मिलान करब स्रोतक सीमा लाँघब हएत।

कागजक जीवन : लिफाफाक संरक्षण, बहीक अपूर्णता, मरल साक्षीक शब्द

प्रदीपक फोनक एक नोट, बिरजूक सीलबन्द लिफाफा, चारि स्तम्भक हस्तलिखित सारणी, पुरान दिगन्त अभिलेख, मजिस्ट्रेट समक्ष नहि भऽ सकल बयान आ बीस वर्ष पुरान बही—ई सभ सामग्री अपन-अपन प्रमाण-गुण रखैत अछि। लिखल अंकक अस्तित्व, लेखकक पहिचान, तिथिक विश्वसनीयता, कथित व्यवहारक वास्तविकता आ कानूनी स्वीकार्यता एके प्रश्न नहि। समीक्षाक नव्य न्याय पद्धति एहि विभाजन पर टिकैत अछि। प्रस्तुत रचना न्याय-प्रक्रियाकेँ कथा ढील करबाक बहाना नहि, प्रमाणक नाटकीय प्रसङ्ग बनबैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : भूगोल, संस्था आ पीढ़ी

गढ़ नारिकेलक परिवार आ देहरी, राजधानीक अम्बर कार्यालय, अलग राज्यक डिजिटल जाँच, तीन जिला पारक पुरान चीनी मिल, बिरजूक कोठी, जिला अस्पताल, न्यासक शिक्षा-खेल परियोजना आ नब डिजिटल वित्त—ई सभ एकरेखीय कथाक घटना नहि। अलग स्थान आ संस्थामे समय अपन गति बदलैत अछि। पुरान निविदा-संस्कृति आ नव डिजिटल खेलक अर्थव्यवस्थाक बीच सम्भावित धन-प्रवाहक इतिहास अभिलेखीय रूपमे बनि रहल अछि, मुदा अभिलेखक एक-एक कड़ीक विधिक स्वरूप अलग सँ निश्चित करबाक अछि। एहिमे मिथिलाक स्थानीय सामाजिक स्मृति आ विस्तारित वित्तीय भूगोलक समानान्तरता विशेष अर्थवती अछि।

कलात्मक मूल्याङ्कन आ शेष प्रश्न

एहि बीस दृश्यसँ लेखक लघु दृश्य, तीक्ष्ण प्रश्नोत्तर, अन्तरपीढ़ी शोक, वित्तीय सारणी आ नब पात्रक प्रवेशक मिश्रित आख्यान बनबैत छथि। जखन प्रश्नक बौछार होइत अछि तखन किछु पात्र बारम्बार ‘असिद्ध’क एकहि नैतिक सूत्र

दोहरबैत देखाइत छथि; ई पद्धतिक शक्ति सेहो अछि, शैलीगत पुनरुक्तिक सम्भावना सेहो। एहि जोखिमकेँ धनेश्वरीक मृत्यु, मंजरीक फीस आ बिरजूक पुत्रक कटु उत्तर जीवित अनुभवसँ सन्तुलित करैत अछि। शशांक देवव्रतक नाम भेटल अछि, मुदा नहि ओकर दण्डनीय दोष सिद्ध अछि, नहि सत्यप्रकाशक मृत्युक कारणक अन्तिम उत्तर। अगिला दृश्यसभक समीक्षा एही वास्तविक अपूर्णतासँ शुरू होयबाक चाही।

अध्ययन-इकाई ३१ — शशांकक उत्तर, ईशानक नब दायित्व आ प्रदीपक आत्मसमर्पण

शशांक देवव्रतक पूछताछ : व्यवहारक चिह्न आ साक्ष्यक अन्तर

रचना सिन्हाक समक्ष शशांक देवव्रतक स्वेच्छासँ उपस्थित होयब आ वकील बिना प्रश्नक उत्तर देब ओकर निर्दोषता अथवा दोषसिद्धि, दुनूमे सँ ककरो प्रमाण नहि। दृश्य १२१क रचना-व्यवस्था एहि सहज परन्तु महत्त्वपूर्ण बातकेँ संवादसँ स्पष्ट करैत अछि। बिरजू साहक बहीमे उदयरेखाक नाम अछि; शशांक न्यासक आरम्भकालमे नगद आ बैंक, दुनू माध्यमसँ दान आबयबाक बात स्वीकारैत अछि, मुदा बीस वर्ष पहिनुक प्रत्येक स्रोत याद होयबाक दाबी नहि करैत। एतय स्मृतिक सीमा कथाक तथ्यक सीमा बनि जाइत अछि। रचना बहीक प्रति सोझाँ राखैत छलीह; शशांक कागज पढ़िकऽ कहैत अछि जे ई हुनक लिखावट नहि। मुदा जाँचकर्त्री हुनका लिखावट अपन होयबाक आरोप देने नहि छल। पूछल प्रश्न आ स्वतः देल सफाइ बीचक ई दूरी पाठकक मनमे आशङ्का उत्पन्न करैत अछि, सत्यापनक स्थान नहि लैत।

‘चन्द्र’क उच्चारण पर शशांकक तत्काल अनभिज्ञता, आ देवांशु रक्षितक नाम पर क्षणभरि आँखि हटेनाइ, दू भिन्न व्यवहारिक सङ्केत अछि। रचना दोसर सङ्केतकेँ अपराधक निष्कर्ष नहि बनबैत छथि। आँखिक गति भय, थकान, चिन्ता, स्मरण वा केवल ध्यान-बदलावसँ उत्पन्न भऽ सकैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक भाषामे ई एक जानि-बुझि राखल *अर्थगत अन्तराल* अछि: कथन पाठककेँ देखबाक अवसर दैत अछि, मुदा देखल दृश्यक अन्तिम अर्थ निर्धारित नहि करैत। रोहितक नाटकीय पूछताछक अपेक्षा आ रचनाक संयम दुनू पात्रक वैचारिक स्वभावकेँ छोट संवादमे खोलैत अछि। न्यायालयक काम नाटक नहि, ई व्यङ्ग्योक्तिक महत्त्व एतेक नहि जे ओ सुन्दर लगैत अछि; महत्त्व ई जे कथा अपन रहस्य-सृजनक उत्कण्ठापर स्वयं अनुशासन लगबैत अछि।

उत्तरायणक सामाजिक निवेश, अम्बरक आरम्भिक पूँजी, केशवसँ भेंट आ दिगन्तक नाम सुनल होयब—ई चारि सम्बन्ध एक प्रकारक नहि। पूँजीगत लेनदेनक अभिलेख, निजी भेंट, सुनी-सुनायल संस्थानक नाम आ अपराधक प्रत्यक्ष ज्ञानक प्रमाण-मूल्य पृथक अछि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ व्यक्तिक व्यवहारक सङ्केत अनुमानक सम्भावित उपादान मात्र, व्याप्ति सिद्ध नहि। एहि दृश्यक सीमा सेहो देखबाक अछि: तीक्ष्ण प्रश्नोत्तरक क्रम बहुधा जीवित संवादसँ अधिक परिष्कृत विवेचन जकाँ सुनाइत अछि। तथापि शशांकक प्रत्युत्तर आ रोहितक हलुक विडम्बना दृश्यकेँ सजीव राखैत अछि।

ईशानक आँकड़ा-अध्ययन : बदला सँ रोकथाम धरि

दृश्य १२२मे ईशानकेँ अम्बर-जाँचक दलसँ अलग राज्यस्तरीय वित्तीय अपराध-अध्ययनक दायित्व भेटैत अछि। ई विभाजन मात्र विभागीय व्यवस्था नहि, कथानायकक नैतिक परिपक्वताक परीक्षा अछि। पिता सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ उपजल निजी अन्वेषणक उत्कण्ठा ओहि काजमे प्रवेश नहि पबैत अछि जकर उद्देश्य म्यूल खाता भर्ती होयबाक सामाजिक जोखिम बुझब अछि। सुमेधा घोष स्पष्ट करैत छथि जे अम्बरक विशिष्ट आँकड़ा एहिमे नहि; अभिषेक जकाँ व्यक्तिसभक सामाजिक दशा आ सबीना-जकाँ उदाहरणक प्रयोग केवल विधिसम्मत अनाम आँकड़ा-समूहमे हो सकैत अछि। कथानक जोखिम-मानचित्र आ व्यक्ति-विशेषक जाँचकेँ मिलाबय सँ बचैत अछि।

तेसर दृश्य एहि कार्यक नैतिक जटिलता अधिक खोलैत अछि। अनेक खाताधारक पूर्ण निर्दोष नहि, मुदा सभकेँ समान अपराधी कहब सेहो अनुचित। कोनो जानि-बुझि कमीशन लैत अछि, कोनो रोजगारक भ्रममे, कोनो ऋणक दबावमे आ कोनो डिजिटल अनभिज्ञतासँ। बेरोजगारी, प्रवासी परिवार, ऑनलाइन खेलक प्रचार आ खाताक असामान्य सक्रियताक बीच ईशान सहसम्बन्ध देखैत अछि। उपन्यास स्वयं कहैत अछि जे सहसम्बन्ध कारण नहि; तेँ सामाजिक जोखिमक नक्सा विशेष व्यक्तिक आपराधिक आशयक प्रमाण बनबाक अधिकार नहि रखैत। ई सूक्ष्म भेद कथा आ नीति-अध्ययनक महत्त्वपूर्ण

संगम अछि। दोषक प्रकार, विवशताक स्तर आ रोकथामक विकल्प सभ पात्रमे समान रूपसँ लागू नहि होइत।

ईशान अनिरुद्धसँ ‘दादी होइतथि’क काल्पनिक प्रश्न सुनि भावुक होइत अछि, किएक तँ धनेश्वरीक ‘पानि पढ़’बला लोक-उपदेश आधुनिक आँकड़ा-पठनमे रूपान्तरित भऽ गेल अछि। मुदा ओ स्पष्ट कहैत अछि जे बाबूक पानि एखन धरि नहि पढ़ल जा सकल। पिता-केंद्रित शोक संपूर्ण सामाजिक न्यायपर हावी नहि हो, एहि लेल कृति दोसर दिशा खोलैत अछि; सत्यप्रकाशक फोटो आलमारीमे राखब विस्मृति नहि, अपन साँस लेल ठाम बनेबाक प्रयत्न अछि। एहि दृश्यसमूहमे भावुकता आँकड़ाक कठोरताकेँ विस्थापित नहि करैत, बल्कि ओकर सामाजिक प्रयोजन निर्धारित करैत अछि।

प्रदीपक न्यायालय-प्रवेश : आत्मस्वीकृतिक परिमाण

दृश्य १२४मे प्रदीप महाजन वकील मार्फत समर्पणक सन्देश पठबैत अछि। जिलान्यायालय, परिवारक सुरक्षा, प्रसार-माध्यमसँ दूरी आ मजिस्ट्रेटक समक्ष पहिल बयान—ई सभ शर्त कथाक अपराध-रहस्यकेँ विधिसम्मत सार्वजनिक उत्तरदायित्वक क्षेत्रमे अनैत अछि। नाटकीय पीछा, हथियार वा आकस्मिक गिरफ्तारीक स्थानपर साधारण आगमन लेखकक रचनात्मक चयन अछि। प्रदीप स्वीकारैत अछि जे किछु कागज जानि-बुझि गलत बनौलक आ धनक नाम तथा वास्तविक प्रयोजनक अन्तर बुझैत छल। ई स्वीकृति महत्त्वपूर्ण अछि, किन्तु सम्पूर्ण अपराध-जालक दोष, ओकरे प्रत्येक निर्देशदाता आ सत्यप्रकाशक मृत्यु सम्बन्धी कारण-सिद्धिक स्वतः प्रमाण नहि। न्यायिक हिरासतक आदेश आ अन्तिम दोषसिद्धि बीचक विधिक दूरी सम्मानित रहबाक चाही।

भारतीय साहित्यिक दृष्टिसँ एहि चारि दृश्यक मुख्य रस भयक संग करुणाक मिश्रण अछि, मुदा केन्द्रीय ध्वनि जाँचक आत्मसंयम अछि। शशांकक हलुक भावचिह्न नहि तोड़ल जाइत, ईशानक शोककेँ वैयक्तिक प्रतिशोधक साधन नहि बनाओल जाइत, आ प्रदीपक आंशिक स्वीकारोक्तिक आधारपर अनिर्णीत मृत्युकेँ

पूर्ण कथा नहि देल जाइत। एहि क्रमक उपलब्धि ई जे अपराध-कथाक रहस्य घटैत नहि, ओकरा उचित प्रमाणक प्रतीक्षा सँ अधिक गम्भीर बनाओल जाइत अछि।

अध्ययन-इकाई ३२ — काराक समय, पारिवारिक उत्तरदायित्व आ ‘चन्द्र’क द्विअर्थी सङ्केत

विचाराधीन कारा : रकमक चक्कर सँ समयक चक्कर

दृश्य १२५मे प्रदीपक कारा-प्रवेशक वर्णन साधारण प्रशासनिक क्रियाक्रमसँ शुरू होइत अछि: नामक लेखा, देहक जाँच, सामान अलग राखब, बैरकमे पठायब। बाहर परिवार आ दुकानदारक परिचित दुनिया अछि; भीतर समयक अनुभूति बदलैत अछि। वृद्ध बन्दीक ‘पता नहि’ सम्बन्धी कथन एक मौलिक दण्डानुभूति रचैत अछि। प्रदीप पहिने रकम एक खातासँ दोसर खाता घुमाबयमे दक्ष छल; एखन ओ स्वयं तिथिसँ तिथि घूमैत रहबाक स्थितिमे अछि। एहि समरूपतामे कथानक प्रतिशोधात्मक आनन्द नहि, समयक अस्थिरता आ अनिश्चित प्रतीक्षाक करुण विडम्बना देखबैत अछि। विचाराधीन बन्दीक स्थानपर दोषसिद्ध अपराधी लिखब पाठक प्रति अन्याय होयत।

दृश्य १२६मे जेलक भेटक काँच अपराधक सामाजिक व्याप्ति देखबैत अछि। पत्नी नहि आयल छथि; भाई बेटीक विद्यालय आ घरमे देल अस्पष्ट उत्तर बतबैत अछि। ‘बाबू काजक कारण बाहर छथि’—एहि सुविधाजनक पारिवारिक असत्यक बचाव कठिन अछि, मुदा बच्चाकेँ एखन कतेक निश्चित कथा कहल जा सकैत अछि, ई प्रश्न सेहो कठिन अछि। भाई स्वयंकरे कहैत अछि जे निर्दोषता वा अपराधीक अन्तिम निर्णय हुनका ज्ञात नहि। प्रदीप जानि-बुझि कएल गलत कागजक अर्थ बुझैत अछि; तखनहुँ बेटीसमक्ष अपन स्थिति बतयबाक वाक्य नहि भेटैत। एहि उलटावमे आर्थिक दस्तावेजक कृत्रिम स्पष्टता आ नैतिक आत्मवर्णनक विफलता एक-दोसराक प्रतिछाया बनैत अछि।

कथा प्रदीपक मानवीय पीड़ाकेँ ओकर अपराध-सम्बन्धी स्वीकृतिक निस्तारण नहि बनबैत। करुण रसक ई उचित नियन्त्रण अछि। कैदीक भय, पत्नी-बेटीक दूरी आ मुकदमाक अनिश्चितता स्वीकृत असत्य व्यापारक परिणामसँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा कानूनक अन्तिम निर्णयक स्थान नहि लैत। लेखक घर–कारा–

अदालत तीन भिन्न सामाजिक ठामक भाषा-पद्धति रखैत छथि: अदालत प्रश्न माँगैत अछि, कारा तारीख गनैत अछि, घर स्पष्ट उत्तर। समान व्यक्तिक समक्ष ई तीनू माँग एकहि बेर खड़ा होइत अछि।

रात्रि कक्षक बयान आ नामसँ अलग प्रक्रिया

दृश्य १२७मे प्रदीपक बयान कथाक आर्थिक जालक कार्यरूपकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि। ओ ‘रात्रि कक्ष’ केँ निजी ऑनलाइन दाँव बतबैत अछि, मुदा अम्बरक आधिकारिक सेवा कहब अस्वीकार करैत अछि। उत्तरायणकेँ पुरान निवेश आ नव निपटानक बीच छतक रूपमे रखैत अछि; ‘माल’क अर्थ वास्तविक व्यापार-बिलमे समाहित रकम, आ ‘पुरान’क अर्थ दिगन्तकालक बचल धन बतबैत अछि। एहि चारि श्रेणीक कथन स्रोत-गत बयान अछि, समस्त लेनदेनक लेखापरीक्षित सिद्धि नहि। रचनाक प्रश्नक मध्य प्रदीप केशव मेहताक वास्तविक ज्ञान विषय प्रत्यक्ष गवाही देबासँ रुकैत अछि। ई सीमा संरक्षित रहबाक कारण कथा प्रलोभनपूर्ण नाम-जोड़बाक जाल सँ बचैत अछि।

‘चन्द्र’ एतय एक नब अर्थ पबैत अछि। प्रदीपक अनुसार ई केवल व्यक्ति विशेषक नाम नहि, भुगतान अगिला तहमे जायबाक स्वीकृतिक संकेत सेहो हो सकैत अछि। ‘चन्द्र साफ अछि’क कथित प्रयोग व्यक्तिक हस्ताक्षर आ प्रक्रियागत अनुमति बीच रहस्य खोलैत अछि। तथापि एहि बयानसँ कोनो एक व्यक्ति 'चन्द्र' नहि हो सकैत, ई निषेध सेहो अन्तिम नहि। उचित अर्थ ई जे एकहि शब्दक अनेक सम्भावित द्योतक अछि; प्रत्येककेँ पृथक साक्ष्यसँ जाँचबाक होयत। नव्य न्यायक अर्थ-निर्णयक कठोरता एहि स्थलपर अखबार-जेकाँ सरल अपराधी पहिचानसँ मूलतः अलग अछि।

सत्यप्रकाशक पुरान फाइल : सम्बन्धक स्पष्टता, मृत्यु पर अन्धकार

दृश्य १२८मे प्रदीप पुरान स्कैन बहीमे सत्यप्रकाशक नाम देखबाक बात कहैत अछि। दिगन्तक एक खेल-आयोजन, तखन छोट सेवा-दाता अम्बर आ भुगतानक सत्यापन लेल सत्यप्रकाशक दू फोनक कथन ईशानकेँ भेटल पर्चीक दिशामे नव पाठ-सङ्गति दैत अछि। ई कथनक महत्त्व एतय अछि जे कथाक पहिल भागक

‘अम्बर—दू बेर फोन’ एखन एक संभावित वित्तीय सन्दर्भ पबैत अछि। मुदा प्रदीप आदेश देनिहारक नाम नहि जनैत, आ सत्यप्रकाशक मृत्यु विषय कोनो प्रत्यक्ष जानकारी नहि देबैत। जाँचकर्त्री ओकर सन्देहकेँ सन्देहहि रूपेँ लिखैत छथि।

अपराध-कथामे एहन स्थल प्रायः नाटकीय निष्कर्षक अवसर बनैत अछि: भुगतान रोकल गेल, तें हत्या भेल। लेखक ई त्वरित अनुमान रोकैत छथि। भुगतान-विवाद, मृत्यु-सँ सम्बन्धित सम्भावित हेतु, आ कियो वास्तवमे हत्या करौलक—तीनू कथनक प्रमाण पृथक होयबाक चाही। एहि चौकड़ीक कलात्मक बल स्रोत-सम्बन्धक क्रमिक स्पष्टता अछि; सीमा ई जे प्रत्येक मोड़पर प्रमाणक भेद स्पष्ट करनिहार वाक्यक आवर्तन कखनो नाटकीय प्रवाह धीमा करैत अछि। मुदा मृत्यु-जेकाँ उच्च-दाँवक प्रश्नमे ई धीमापन नैतिक शिल्पक अंश सेहो बनि जाइत अछि।

अध्ययन-इकाई ३३ — अम्बरक कर्मी, समृद्धिक परिसमापन आ दू उदयरेखाक भ्रम

उद्योगक छाया आ नियमित श्रमिकक आत्मग्लानि

दृश्य १२९मे अम्बर इंटरैक्टिवक भीतरक सङ्कट जाँचक प्रत्यक्ष कारवाईसँ अलग सामाजिक प्रकोपक रूप धारण करैत अछि। केशव अवकाश पर, विहान जाँचमे सहयोगी, निवेशक चिन्तित आ कर्मचारी अफवाहसँ आक्रान्त छथि। नौकरी बन्द होएत, सभ कर्मचारी गिरफ्तार हेताह अथवा वैध खेल-उद्योगक अन्त—एहन एक-दोसरासँ भिन्न कथन सार्वजनिक माध्यममे एक संग चलैत अछि। विहान नियमित उत्पाद जारी रहबाक आ सिद्ध अवैध सम्बन्धक अलग परीक्षण करबाक बात कहैत अछि। एक कर्मचारी अपन वेतनक नैतिक स्थिति पूछैत अछि; अपराधसँ मिश्रित आमदनीक सम्भावना प्रत्येक वेतनभोगीक अपराध-सिद्धि नहि करैत, मुदा निर्दोष काजक भीतर आत्मग्लानि उत्पन्न करैत अछि।

एहि दृश्यमे युवा डिजाइनरक कनब आ गामक पिता द्वारा नौकरी छोड़बाक दबाव उद्योगक सार्वजनिक बदनामीक मानवीय विस्तार देखबैत अछि। न्याय-प्रक्रियाक गोपनीयता आ पारदर्शिता एक संग चुनौती पबैत अछि: अधिक अस्पष्टता अफवाह बढ़बैत अछि, मुदा प्रत्येक कर्मचारीकेँ आरोपक विशिष्ट विवरण देनाइ जाँचक सीमा भंग करि सकैत अछि। कृति एहि द्वन्द्वकेँ समाप्त नहि करैत; एतय ओकर सामाजिक यथार्थ अछि। श्रमिकक वेतन, मालिकक पूँजी आ निजी जुआ-जालक सम्भावित लेनदेनकेँ एकहि नैतिक टोकरीमे राखब उचित नहि।

समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक वित्तीय मार्ग

दृश्य १३०मे उत्तरायण निधिक लेखापरीक्षणक क्रममे बन्द सहकारी संस्था ‘समृद्धि ग्राम-वित्त मंडल’क नाम आबैत अछि। बिरजूक बहीमे ‘चन्द्र’क लग एही संस्थाक उल्लेख पहिनहि छल; एखन अम्बरक आरम्भिक पूँजीक स्रोत खोजैत ई

नाम फेर भेटैत अछि। परिसमापनक अधूर कागज आ ‘दावा न कएल कोष’क पछिला हस्तान्तरणक अस्पष्ट पाँति अन्वेषणक वास्तविक प्रश्न बनैत अछि। मयंक वित्तीय मार्गकेँ दस्तावेजी मानैत छथि, मुदा ओकर अपराधगत प्रकृति सिद्ध नहि मानैत। ई भेद पुरान अर्थक पुनरावृत्ति नहि, विशिष्ट अवलेखक परीक्षण अछि।

अनिरुद्ध ईशानकेँ एहि नव पथक जानकारी नहि देबाक निर्देश दैत छथि, किएक तँ ईशान औपचारिक जाँच-दलमे नहि। सत्यप्रकाशक पुत्र होयब सूचना-अधिकारक अतिरिक्त आधार नहि। दृश्य १२२क जोखिम-अध्ययन आ १३०क सीमित गोपनीयता एक-दोसराकेँ जाँचैत अछि: ईशान सार्वजनिक हानि घटेबाक सामाजिक अनुसन्धान करि सकैत अछि, मुदा निज पिताक सम्भावित सम्बन्धक कारण जाँचक गोपनीय अभिलेख नहि पाबि सकैत। एहि व्यवधानमे पारिवारिक उत्कण्ठा आ संस्थागत नैतिकता बीच वास्तविक संघर्ष अछि।

नाम-साम्यक न्यायिक जोखिम : लोकन्यास नहि, कल्याण समिति

दृश्य १३१ अपराध-रहस्यक एक महत्त्वपूर्ण प्रतिप्रमाण अनैत अछि। जिला रिकार्ड-कक्षमे तीन दिनक खोजक बाद भेटल परिसमापन-सूची कहैत अछि जे दावा न कएल कोष **‘उदयरेखा लोकन्यास’** कैं नहि, **‘उदयरेखा कल्याण समिति’** कैं हस्तान्तरित भेल छल। नाम मिलैत अछि, संस्था नहि। समिति पाँच बरख बाद बन्द भऽ गेल, ओकर अध्यक्ष शशिभूषण लाल छल, जे दस बरख पहिने मरि चुकल। शशांक देवव्रतक नामक ध्वनि-साम्य आ उदयरेखा लोकन्यासक सार्वजनिक रूप एक वृहत्तर भ्रम रचि सकैत छल। रचना आ रोहित एहि सूचनाकेँ तुरन्त एक व्यक्ति पर आरोप टिकेबाक साधन नहि बनबैत छथि।

दृश्य १३२मे शशिभूषणक बेटी अदिति लाल, विश्वविद्यालयक सेवानिवृत्त प्राध्यापिका, पिता विषय सावधान गवाही दैत छथि। हुनका कारोबार पूर्ण साफ लागैत नहि छल, मुदा अपराधक प्रमाण हुनका ज्ञात नहि। बिरजू साह घर अबैत छल; ‘चन्द्र’ पिता शशिभूषणक घरेलू सम्बोधन छल, जे हुनकर दादी

प्रयोग करैत छलीह। एहि प्रकार बहीक अपूर्ण नामक एक मनुष्यगत सम्भावना प्राप्त होइत अछि। मुदा ‘चन्द्र’क सभ सन्दर्भ शशिभूषण पर लागू अछि, ई निष्कर्ष एखनहुँ असिद्ध। प्रदीपक पिछला बयानमे एही शब्द प्रक्रियागत स्वीकृतिक संकेत सेहो छल; हुनका मिला कऽ एक कृत्रिम सरळ अर्थ बनाओल नहि जा सकैत।

अदिति कल्याण समिति आ शशांकक लोकन्यास अलग संस्था होयबाक बात पुष्ट करैत छथि, ओहि समान नाम पर बादमे विवाद भेल रहबाक उल्लेख सेहो करैत छथि। नामसाम्यक कारण शशांकपर बनैत सम्भावित वित्तीय सेतु एहि साक्ष्यक बाद कमजोर पड़ैत अछि। ई कथा-संरचनामे अत्यन्त उपयोगी ‘अनुमान-भञ्जन’ अछि। पाश्चात्य रहस्यकथाक भ्रामक सुरागक उलट ई दृश्य केवल पाठक चकित करबाक लेल नहि, गलत व्यक्ति पर सामाजिक दोषारोपणक जोखिम देखबैत अछि। नव्य न्यायमे पक्ष, साध्य आ हेतु स्पष्ट राखल जाए; दू संस्थाक एक सन नाम जँ पक्षहि बदलि दे तँ समस्त अनुमानक आधार टूटि जाइत अछि। एतय शोधस्तरीय आलोचना अपन अनिश्चितता स्पष्ट राखैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३४ — अदितिक अनिश्चित पहिचान, घरक भय आ बिज्जीक मेटायल चिह्न

सम्भावित चेहरा आ फोटो-साक्ष्यक मर्यादा

दृश्य १३३मे अदिति बतबैत छथि जे पिता शशिभूषणक मृत्यु उपरान्त किछु कारोबारी खाता एक युवक सँभालने छल, जकर नाम हुनका ‘शायद देवांशु’ मोन अछि। रचना ‘देवांशु रक्षित’क नाम पुछैत छथि; उपनाम अदितिक स्मृतिमे नहि। पुरान फोटो देखिते ओ निश्चित पहिचान नहि, केवल ‘हो सकैत’ कहैत छथि। चित्रक उपस्थिति दृश्यात्मक निश्चिततताक भ्रम बढ़ाबय सकैत अछि, मुदा साक्षीक अपन आत्मविश्वासक सीमा फोटोकेँ अन्तिम पहचान-दस्तावेज बनबाक अनुमति नहि दैत।

रचनाक 'आसान न्याय हमेशा न्याय नहि'क आशय सहमतिक प्रशंसा नहि, असुविधाजनक अस्वीकारक सम्मान अछि। अदिति जँ सहज ‘हँ’ कहि दितथि तँ जाँच एक नाम जल्द हासिल कऽ लैत; मुदा ओहो नाम सत्यक मूल्यपर भेटितय। साहित्यिक दृष्टिसँ एहि दृश्यक एक नन्हि पर प्रभावी उपलब्धि ई जे गवाही देनिहार स्त्री जाँचकर्त्रीक कथाक कठपुतली नहि बनैत; ओ अपन स्मृतिक अविश्वसनीय भाग स्वयं चिह्नित करैत अछि। एहन पात्रचिन्तन अपराध-उपन्यासक नैतिक परिपक्वताकेँ गाढ़ करैत अछि।

मृणालिनीक जीवन-आग्रह आ पिता-पुत्रक पुनरावर्तित भय

दृश्य १३४मे ईशान माएक संग सामान्य हालचालसँ बात शुरू करैत अछि—भोजन, औषधि, काज। मुदा मृणालिनी तुरन्त बुझैत छथि जे ‘ओही मामला’ बेटँक मनमे एखन सक्रिय अछि। ईशान औपचारिक जिम्मेवारी आ निजी आसक्ति बीच भेद करैत कहैत अछि जे ओ जाँच-दलमे नहि; माए ओकर मनक भाग जानय चाहैत छथि। सत्यप्रकाश सेहो घरमे कागज देखबाक ‘एक बेर’क आश्वासन दैत रहैत छल; ओ अन्तहीन जिज्ञासाक स्मृति पुत्रक सुरक्षा लेल चेतावनी बनैत अछि।

मृणालिनीक 'हम चाहैत छी तूँ जीवित रह' कथन उपन्यासक जाँचक उच्च आदर्शकेँ घरेलू यथार्थक कसौटी पर राखैत अछि। पिता-सत्यक खोज ककरा लेल, जँ ताहि खोजमे बेटाक जीवन फेर संकटमे पड़य? एहि प्रश्नक उत्तर कृति एखन देत नहि। धनेश्वरीक पुरान रक्षक-प्रतीक, मृणालिनीक प्रेम आ ईशानक अपराध-निरोधक पेशागत काज बीच विरोध अनिवार्य नहि, मुदा सीमा निर्धारण आवश्यक अछि। ई संवाद आत्मीयता आ सामाजिक कर्तव्यक समन्वयक प्रत्यक्ष परीक्षा थिक।

तृषाक प्रश्न : साक्षीक असत्य आ नैतिक स्वीकार

दृश्य १३५मे प्रदीपक बेटी तृषा, चौदह वर्षक, जेलमे पिता सँ पूछैत अछि—ओ चोर छथि कि नहि। प्रदीप पहिने अपन लेल धन नहि चोरि करबाक उत्तर दैत अछि, जे प्रश्नक ठीक उत्तर नहि। तृषा तत्क्षण गलती पकड़ैत अछि। पिता स्वीकारैत अछि जे गलत धन सही देखाबयवला कागज ओ बनौने छल, आ किछु बेर जानि-बुझि कएल। बच्चीसँ ई नैतिक स्वीकारोक्ति अदालतक अन्तिम निर्णय नहि, मुदा निजी सम्बन्धमे विश्वासक क्षति बुझबाक निर्णायक क्षण अछि। पत्नी स्पष्ट कहैत छथि जे हुनका ‘दर्शन’ नहि, सत्य चाही।

ई संवाद उपन्यासक न्याय-दर्शनक आत्मालोचनात्मक क्षण अछि। पहिल भागसभमे दार्शनिक शब्द बहुत बेर जाँचकर्ताकेँ संयम सिखबैत छल; एतय दार्शनिक व्यवधान निजी उत्तरदायित्व सँ बचबाक बहाना बनि सकैत अछि। प्रदीपक आत्मानुभव काराक पीड़ा मात्र नहि, बेटीकेँ कहल झूठक स्वीकार अछि। ई पाठ अपराधक परिभाषा मात्र कागजी सिद्धान्तमे सीमित नहि करैत, सम्बन्धक भीतरक नैतिक प्रामाणिकता धरि लऽ जाइत अछि।

पदचिह्न मेटल, रक्षकक प्रश्न शेष

दृश्य १३६मे कमला-बलानक पानि चढ़लासँ बिज्जीक पुरान बिलमे जल भरि जाइत अछि आ पदचिह्न मेटि जाइत अछि। ईशान झुकि चिह्न खोजैत अछि;

मृणालिनी स्मरण करबैत छथि जे पदचिह्न मेटनाइ जीव मरनाइक प्रमाण नहि। दूर घासमे सरसराहट सुनाइत अछि, मुदा दृश्य ई सुनिश्चित नहि करैत जे ओ बिज्जी छल कि जल। एहि अनिश्चयमे उपन्यासक केन्द्रीय प्रतीक अपन रूपान्तरक नब चरण पबैत अछि।

नव्य न्यायक अनुपलब्धि-विचार एहि दृश्य संग पाठककेँ जोड़ि सकैत अछि, मुदा प्रतीककेँ न्यायालयक अभाव-प्रमाणक नियमक सटीक प्रतिपादन मानब उचित नहि। जीवनमे अस्तित्वक अनुभव आ अदालतमे प्रमाणक अपेक्षा अलग गोष्ठी अछि; दोसरक कठोरता पहिलक अनुभूतिक उपहास नहि, सामाजिक निर्णयक आवश्यकता अछि। लेखक एहि मूलभूत विषमतालाई जल, मेटायल माटि आ अनिश्चित ध्वनिसँ मूर्त करैत छथि। आरम्भमे बिज्जी दृश्य होइत अछि; एतय ओकर अनुपस्थिति उपस्थित प्रश्न बनैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३५ — सत्यप्रकाशक लिखित आपत्ति, वृद्ध साक्षी आ ‘डी.आर.’क असिद्ध सङ्केत

पुरान भुगतान-सूचीमे सत्यप्रकाशक दस्तावेजी उपस्थिति

दृश्य १३७मे समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक अन्तिम वर्षक भुगतान-सूचीमे ‘विशेष परियोजना—खेल प्रचार—सत्यप्रकाश कर्ण’क पाँति भेटैत अछि। रकम सत्यप्रकाशक कम्पनीकेँ नहि गेल; हुनकर नाम सत्यापनकर्ताक रूपमे अछि। घटनाक तारीख सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ नौ दिन पहिने कहल गेल अछि। एतय आर्थिक अपराधक पुरान मार्ग आ पहिनहि सँ चलैत मृत्यु-अन्वेषण बीच एक सीधा दस्तावेजी समागम देखाइत अछि। कथावाचक एहि सूचनासँ ई स्थापित करैत अछि जे सत्यप्रकाश केवल निविदाक छह प्रतिशतक प्रश्न नहि, खेल-प्रचार भुगतानक पुरान पथ सेहो देखैत छल; तथापि ई कागज हत्या-सिद्धि नहि करैत।

कथात्मक कालक्रमक एक महत्त्वपूर्ण सावधानी एतय आवश्यक अछि। जाँचकर्तासभ बीस वर्ष पुरान समृद्धिक अभिलेख खंगालैत छथि, मुदा सूचीमे सत्यप्रकाशक भूमिका ओकर मृत्यु सँ नौ दिन पूर्वक तिथिसँ चिह्नित अछि। आलोचनामे अभिलेखक उत्पत्ति, अभिलेखमे संचित पुरान लेखा आ नब सत्यापनक तिथिकेँ सहजतः एकहि समय-बिन्दु नहि बनाओल जाए। एहन स्तरित समयक विस्तृत स्पष्टीकरण स्रोतमे एखन उपलब्ध नहि; तें कालक्रमक जटिलताकेँ यथास्थित दर्ज करब, अपन ओरसँ तारिख अथवा पूर्वनिर्धारित अवधि नहि जोड़ब उचित अछि।

हस्ताक्षर, आपत्ति आ विशेष स्वीकृति

दृश्य १३८मे पुरान फाइलक गन्ध, फफूँद आ दस्ताना पहिरि कागज पलटबाक दृश्य प्रामाणिक दस्तावेजक भौतिक अवस्थितिक महत्त्व बढ़बैत अछि। सत्यप्रकाशक हस्ताक्षरयुक्त पत्र फोटो आ स्थल-स्थितिक असङ्गतिसँ

भुगतानक प्रत्यक्ष सत्यापन माँगैत अछि। एतय प्रदीपक पहिनुक वाचिक बयानसँ आगाँ बढ़ि वास्तविक लिखित आपत्तिक अवलम्ब भेटैत अछि। सत्यप्रकाश भुगतान रोकेबाक निर्णय कएलक, एहि कथनक दस्तावेजी आधार मजगूत होइत अछि; मुदा ओहि रोकक कारण हुनकर हत्या कराओल गेल—ई तर्क पुनः अप्रमाणित रहैत अछि।

चारि दिनमे 'विशेष प्रशासनिक स्वीकृति' सँ भुगतान जारी भऽ जाएब काजक नियमित प्रक्रियापर प्रश्न खड़ा करैत अछि। स्वीकृति देनिहार अधिकारी कृपानन्द वर्माक नाम भेटैत अछि, जे सेवानिवृत्त आ जीवित छथि। एतय लेखक नब व्यक्ति-विशेषक अतिरेक आनय सँ बचैत, पुरान अभिलेखमे विशिष्ट हस्ताक्षरक प्रश्न चिन्हित करैत छथि। पाश्चात्य प्रक्रियात्मक अपराध-कथाक एक सफल उपकरण—अभिलेखक उत्पत्ति, अन्तरण आ अनुमोदनक शृंखला—मैथिली परिवेशक भौतिक कागजी संसारमे अपन स्थानीय रूप ग्रहण करैत अछि।

कृपानन्दक वृद्ध स्मृति : भाव सही, शब्द असिद्ध

दृश्य १३९मे रचना कृपानन्द वर्मासँ पहिने कागज सोझाँ नहि करैत छथि। वृद्धक काँपैत हाथ आ बदलैत स्मरणशक्ति जाँचक नैतिक गति निर्धारित करैत अछि। ओ सत्यप्रकाशकेँ कठोर सत्यापनकर्ता रूपमे चिन्हैत छथि, खेल-प्रचारक एक कागजी आयोजन वास्तवमे नहि भेल होयबाक सम्भावना बतबैत छथि आ भुगतान ऊपरसँ कहल जाएब पर स्वीकृत करबाक कथन दैत छथि। मुदा आदेश लिखित छल कि फोनसँ, आ के देलक, से हुनका निश्चित मोन नहि। जाँचकर्त्री एहि अपूर्णताकेँ अपने उत्तरसँ नहि भरैत छथि।

सत्यप्रकाशक विरोध विषय कृपानन्दकेँ एक संवादक भाव मोन अछि; शब्दशः वाक्य ओ स्वयं सत्यापित नहि करैत। रचना एहि भेदकेँ दर्ज करैत छथि। ऐतिहासिक स्रोत-परीक्षणमे ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: घटना विषय दीर्घकालक स्मरण, कथित अभिप्राय आ मूल वाणी तीन समान प्रमाण नहि। कृपानन्दक ‘दिगन्त’ नाम याद पड़बाक सम्भावना तुरन्त 'शायद'मे बदलि

जाइत अछि। लेखक साक्षीक आत्मविश्वास आ साक्ष्यक सत्यापन-शक्ति बीचक भेदक प्रभावी प्रदर्शन करैत छथि।

‘एस.के.’ आ ‘डी.आर.’ : अधूर अक्षरसँ नाम गढ़बाक प्रलोभन

दृश्य १४०मे परिवारक अनुमतिसँ कृपानन्दक निजी दैनिकी देखल जाइत अछि। ओ सरकारी अभिलेख नहि, व्यक्तिगत लिखावट अछि; जाँचकर्त्री जब्ती नहि कऽ विधिसम्मत प्रति लेबैत छथि। एहि स्रोतगत भेदक महत्त्व केवल प्रक्रिया नहि; निजी नोटक कथित आशय, लेखनकाल आ लघुरूपक अर्थ अलग जाँच चाहैत अछि। 'एस.के. फेर झगड़ल'क सम्भावित अर्थ सत्यप्रकाश कर्णक आपत्तिसँ मेल खाइत अछि, मुदा अक्षरक मात्र एक विस्तार स्वयंसिद्ध नहि। 'डी.आर.क लोक नाराज'क ‘डी.आर.’ देवांशु रक्षित, दिगन्त क्षेत्रीय एकाइ, दयानन्द राय वा आन कियो भऽ सकैत अछि। एहि समय निश्चित अपराधी पहिचान लिखब पाठककेँ मोनमाफिक पूरा नाम थमा देब होयत।

अनिरुद्धक चेतावनी—पुरान अक्षरक भीतर मनचाहा नाम नहि घुसाउ—पूरे बैचक दार्शनिक सार अछि। शशांकक आँखिक गति, प्रदीपक आंशिक स्वीकार, अदितिक अनिश्चित फोटो, दोनू उदयरेखाक संस्थागत भेद आ कृपानन्दक निजी दैनिकी—एहि सभमे पाठक एकहि दोषी-नामक खोजमे लगैत अछि। मुदा लेखक निरन्तर देखबैत छथि जे साक्ष्यक सूक्ष्मता न्यायकेँ देरि कऽ सकैत अछि, मिथ्या निर्दोष अथवा मिथ्या दोषी निर्माणसँ बचबैत सेहो अछि। ई खण्ड रहस्यक समाधान नहि, न्यायिक प्रश्नक अधिक सटीक निर्धारण करैत अछि।

सातम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य १२१–१४० : नामक भ्रम, वित्तीय कालक्रम आ परिवारक सत्य

दू जाँच-पथ : ऐतिहासिक धनराशि आ सामाजिक रोकथाम

दृश्य १२१–१४०मे दू अन्वेषण एक संग चलैत अछि। रचना सिन्हा बिरजूक बहीसँ शशांक, समृद्धि, शशिभूषण, प्रदीप आ कृपानन्द धरि पुरान वित्तीय सूत्र खोजैत छथि। दोसर दिशामे ईशान म्यूल खाताक सामाजिक प्रतिरूप देखैत अछि—बेरोजगारी, प्रवास, डिजिटल कमाइक भ्रम आ जोखिमक वितरण। पहिल पथक लक्ष्य विशिष्ट व्यवहारक प्रमाण; दोसर पथक लक्ष्य भविष्यक भर्ती रोकबाक व्यापक सामाजिक ज्ञान अछि। दुनू एक विषयसँ जुड़ल होइतहुँ व्यक्तिगत आपराधिक दायित्वक जाँच आ रोकथामक आँकड़ा अलग अधिकार-क्षेत्रमे रहैत अछि। ई भेदक रक्षा खण्डक बौद्धिक उपलब्धि अछि।

गलत नामक दोहराव : ‘चन्द्र’, ‘उदयरेखा’ आ ‘डी.आर.’

एक सय सत्ताइसम दृश्यमे ‘चन्द्र’ प्रक्रियाक सङ्केत सेहो होयबाक सम्भावना रखैत अछि; एक सय बत्तीसहम दृश्यमे अदिति बतबैत छथि जे शशिभूषणक घरेलू नाम चन्द्र छल। एक सय एकतीसम दृश्यक सूची 'उदयरेखा लोकन्यास'क बदला 'उदयरेखा कल्याण समिति' दिखबैत अछि। अन्तिम एक सय चालीसम दृश्य ‘डी.आर.’क अस्पष्ट अक्षर अनैत अछि। एहि चारि बिन्दुमे ध्वनिगत समानता, संस्थागत समानता, व्यक्तिक उपनाम आ कारोबारी लघुरूप एक समान ज्ञान-वस्तु नहि। कथासूत्र जानि-बुझि पाठकक एक-अर्थीय कथाक अपेक्षाकेँ चुनौती दैत अछि। नव्य न्यायगत पक्ष-भेद आ हेतु-सन्देह यहाँ विवेचनक व्यावहारिक साधन बनैत अछि।

आत्मस्वीकृति : अदालतक शब्द आ घरक प्रश्न

प्रदीप मजिस्ट्रेट समक्ष किछु गलत कागज बनाओल स्वीकारैत अछि; कारामे भाईक ‘बेटाकेँ कोन सत्य कहब’ प्रश्न ओकर निजी दण्ड खोलैत अछि; तृषाक सोझाँ ओ जानि-बुझि एहन कागज बनयबाक बात मानैत अछि जाहिसँ गलत धन सही देखाय। एहि क्रममे एक व्यक्ति प्रति नैतिक करुणा आ कृत्यक उत्तरदायित्वक संतुलन बनैत अछि। बच्ची लेल स्पष्ट उत्तर अदालतक फैसला नहि; अदालत लेल स्वीकारोक्तिक सम्बन्ध पिताक पश्चात्तापक पर्याय नहि। लेखक न्यायिक सत्य, पारिवारिक सत्य आ आत्म-स्वीकृतिक तीन परत राखैत छथि।

स्त्री पात्रक प्रमाण-बोध आ घरक नैतिक आग्रह

रचना अकस्मात् अपराधी पहिचान सँ बचैत छथि; अदिति अपन स्मृतिक अनिश्चितता स्वयं बतबैत छथि; मृणालिनी बेटाक जीवित रहबाक आग्रह करैत छथि; तृषा पिता सँ सीधा सच माँगैत अछि। ई चारि आवाज एकरस नहि। रचनाक सीमा विधिक, अदितिक साक्षीगत, मृणालिनीक अस्तित्वगत आ तृषाक सम्बन्धगत अछि। एकर तुलना सँ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक समुचित प्रयोग सम्भव होइत अछि: घर, कारा, अभिलेखागार आ कार्यालय अपन-अपन शक्ति-संरचना आ ज्ञान-आवश्यकतासँ कथाक विचार रचैत अछि।

प्रकृतिक पुनरावृत्ति आ अभिलेखक क्षरण

बरखा, कमला-बलान आ बिज्जीक मेटायल पदचिह्न दृश्य १३६मे एतय फेर उपस्थित होइत अछि, जखन पुरान कागजमे फफूँद आ धूलि दृश्य १३८मे भेटैत अछि। एक दिस जल जैविक चिह्न मेटबैत अछि, दोसर दिस समय कागजक पठन बाधित करैत अछि। अनुपस्थित चिह्नक अर्थ मूल घटना नहि घटल, ई नहि; मुदा घटनाक वास्तविक प्रमाण जुटेनाइ आवश्यक रहैत अछि। एहि तुलनामे नदी रूपक मात्र सजावट नहि, स्मृति आ प्रमाणक असमान

सहनशीलताक कलात्मक आयोजन अछि। प्राक्कथाक सक्रिय बिज्जी एखन अनिश्चित ध्वनि आ चेतनामे परिवर्तित भेल अछि।

भारतक न्याय-व्यवस्था आ सामाजिक इजोत

जिलान्यायालयक आत्मसमर्पण, विचाराधीन काराक समय, सहकारी संस्थाक परिसमापन, जिला रिकार्ड-कक्ष आ सेवानिवृत्त अधिकारीक डायरी—ई सभ कथा भारतक प्रक्रियात्मक संस्थासभकेँ एक-दोसरासँ जोड़ैत अछि। लेखक कोनो तैयार उपदेशमात्र नहि दैत; वास्तविक आख्यानक भीतर कागजक भार, भिन्न प्रकारक साक्षीक स्मृति आ निजी जीवनक क्षतिक रेखांकन करैत छथि। तथापि अदालतक प्रक्रिया आ जाँचकर्ताक वाक्यसभ किछु स्थानपर अत्यन्त सूत्रबद्ध प्रतीत होइत अछि; विधिक जटिलताक वास्तविक प्रस्तुति हेतु आगाँक दृश्यसभ पर निर्भर रहबाक होयत। ई सीमा स्वीकार करिते खण्डक शोधगत मूल्य घटैत नहि, आलोचनाक संतुलन बढ़ैत अछि।

एहि बैचक आंशिक उपलब्धि आ शेष प्रश्न

दृश्य १२१–१४०क अन्त तक शशांकक उदयरेखा लोकन्यास आ शशिभूषणक कल्याण समिति भिन्न मानल जाएत; अदितिक कथन ‘चन्द्र’क मनुष्यगत सम्भावना खोलैत अछि; प्रदीपक कथन प्रक्रिया-सङ्केतक सम्भावना बचा रखैत अछि; सत्यप्रकाशक भुगतान-आपत्ति लिखित रूपमे भेटैत अछि; कृपानन्दक 'डी.आर.' अस्पष्ट रहल। एहि सबसँ कथा प्रश्नक दायरा संकरा करैत अछि, दोषी व्यक्ति अंतिम रूपसँ निश्चित नहि करैत। ई बीस दृश्य उपन्यासक अन्तिम नैतिक निर्णय नहि, प्रमाणगत प्रगतिक एक चरण अछि। पहिनुक १२० दृश्यक अध्ययन सुरक्षित राखैत आगाँ १४१–१६०क दृश्य-पठनमे एहि असम्पूर्ण सूत्रसभक पुनर्परीक्षण अपेक्षित अछि।

अध्ययन-इकाई ३६ — देवांशुक सीमित स्वीकार, हरिचरणक अपूर्ण सूत्र आ मृणालिनीक प्रश्न (मूल दृश्य १४१–१४४)

देवांशु रक्षित : दोषसिद्ध आर्थिक अपराधसँ अलग मृत्यु-जाँच

दृश्य १४१मे कारावास भोगि चुकल देवांशु रक्षितक पुनर्प्रवेश पुरान अपराध-कथाक सरल खलनायक-कल्पनाकेँ रोकैत अछि। ओ व्यवसाय आ सार्वजनिक जीवन छोड़ि पहाड़ी नगरमे रहैत अछि। रचना सिन्हाक सोझाँ ओ दिगन्तक खेल-महोत्सवमे वास्तविक आ कागजी, दुनू प्रकारक आयोजन भेल स्वीकारैत अछि; मुदा ‘डी.आर.क लोक नाराज’ लिखल कृपानन्दक निजी टिप्पणीकेँ अपन सीधा आदेश मानि लेबाक लेल तैयार नहि। आद्याक्षर ओकर हो सकैत अछि, ई सम्भावना ओ अस्वीकार नहि करैत; मुदा कोनो असन्तोष व्यक्त होयब आ हत्या करबाक आदेश देब एकहि अभिलेखीय बात नहि। एहि उत्तरक भीतर अपराधसँ बचबाक युक्ति होयबाक सम्भावना अछि, मुदा समुचित आलोचना लेल ई सम्भावना आ प्रमाणित तथ्यक बीचक दूरी अक्षुण्ण चाही। उपन्यास देवांशुक पूर्व दण्डकेँ वर्तमान जाँचक बदला-भावनाक अनुमति नहि बनबैत।

देवांशुक ‘जकर दण्ड काटल, ओकरा झूठ किएक लुकाउ’ कथन स्वतः विश्वसनीयता प्रदान नहि करैत; एकर परीक्षण ओकर कथनक बाहर भेटल पत्र, दिगन्तक भुगतान आ जीवित साक्षीसभसँ होयत। मुदा दृश्य ऐतिहासिक दोषसिद्धि आ नब आरोपक अलग-अलग प्रमाण-भार स्पष्ट करैत अछि। भारतीय न्यायपरम्पराक प्रमाण-विवेकमे प्रत्यक्ष अपराधक सम्बन्ध अनुमानित चरित्रसँ सिद्ध नहि होइत। न्याय-दर्शनक दृष्टिसँ पक्ष—सत्यप्रकाशक मृत्यु—आ हेतु—देवांशुक आर्थिक असन्तोष—क बीच अनिवार्य व्याप्ति उपस्थित नहि। ‘ओ आर्थिक लाभ लेल असत्य कागज बनौलक, तेँ ओ हत्या करौलक’ एहि प्रकारक जल्दबाजी कथा स्वयं अस्वीकार करैत अछि।

हरिचरणक इतिहास : अपराध-वृत्तान्त आ साक्षीक अभाव

दृश्य १४२क पुरान फाइलमे हरिचरण मंडलक उगाही, मारपीट, वाहन-सम्बन्धी मामलासभ अछि; दू मामला प्रमाण-अभावमे बन्द आ एक दोषसिद्धि। मुदा सत्यप्रकाशक मृत्युक राति हरिचरण कतय छल, तकर भरोसेमन्द अभिलेख नहि। रचना मूल दुर्घटना-दैनिकीमे ब्रेक-चिह्न, अज्ञात भारी वाहन, दूरक चाय-दोकानदारक बयान आ नम्बर अथवा रङक अस्पष्टता पढ़ैत छथि। ई स्रोत दुराशयपूर्ण ठोकरक सम्भावना खुला रखैत अछि, ओकर कारण अथवा कर्ता निश्चित नहि करैत। मूल जाँचक तकनीकी सीमा आ बीस वर्ष पछाति पुनर्निर्माणक कठिनाइ दू स्वतंत्र बाधा अछि। पहिनुक अधिकारीसभ जे सम्हारि सकैत छलाह, तकर चूक पर प्रश्न उठि सकैत अछि; मुदा आज जे वस्तु नष्ट भऽ गेल, ओकर विवरण कथा अपन इच्छासँ पुनः बना नहि सकैत।

एहि दृश्यसमूहमे ‘शून्यक चारूकात तथ्य’ बढ़ैत अछि—सत्यप्रकाशक रोकल भुगतान, दिगन्तक हित, नाराजगीक निजी टिप्पणी, हरिचरणक कथित स्थानीय भूमिका, आ नौ दिन पछातिक मृत्यु। तथाकथित पक्का रहस्य एतय अधिक सटीक प्रश्नमे परिणत होइत अछि। न्यायिक ज्ञानक लेल समयक निकटता स्वयं कारणसिद्धि नहि। पाश्चात्य अपराध-आख्यानमे सङ्केतसभक क्रमिक सङ्ग्रह पाठककेँ निर्णायक समाधानक प्रत्याशा दैत अछि; एहि उपन्यासमे प्रत्येक नव सूत्रक संग ओकर अप्रमाणित कोन उघारल जाइत अछि। ई शिल्पगत चुनाव जासूसी रोमाञ्चक विरोधमे नहि, ओकर विवेकपूर्ण विस्तारमे अछि।

मृणालिनी आ रचना : ‘शायद’क दू मानवीय अर्थ

दृश्य १४३क मृणालिनी लेल बीस वर्षक प्रतीक्षा एक सरकारी जाँच-संख्या नहि, दैनिक जीवनक अनुभव अछि। रचना जखन कहैत छथि जे हत्या एखनहुँ सिद्ध नहि, तखन मृणालिनी अपन पुरान आशङ्काकेँ निश्चयमे बदलेबाक आग्रह नहि, तकर सामाजिक मान्यताक माँग करैत छथि। हुनकर प्रश्न—नब प्रमाण न्यायकेँ निकट अनलक कि दूर—प्रक्रियाक सफलताकेँ पीड़ितक अनुभवसँ परखैत अछि।

रचनाक ‘शायद नजिक’ सावधानीक शब्द अछि; मृणालिनीक कानमे वैह शब्द वर्षोंवर्षक अपूर्ण आश्वासन सुनबैत अछि। दुइ स्त्रीक संवादमे सहानुभूति आ सत्यापन परस्पर-विरोधी नहि, मुदा बराबर गतिसँ चलबामे असमर्थ अछि।

एहि सम्बन्धक सौन्दर्य अत्यधिक नाटकीय करुणोद्गारमे नहि, छोट प्रश्नक पुनरावृत्तिमे अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ लेखनक सीमा सेहो एतहि अछि—‘सिद्ध नहि’ आ ‘शायद’ बारम्बार दार्शनिक सूत्र बनि सकैत अछि। मुदा मृणालिनीक व्यक्तिगत समयक समक्ष ई वाक्यसभक पुनरावर्तन नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। एक बेर कहीं गेल प्रक्रियागत सावधानी आ बीस वर्ष धरि भोगल अपूर्णता एकहि अनुभव नहि। लेखक एहि फरककेँ हटबैत नहि, कथाक नैतिक दबावक रूपमे रखैत छथि।

केशवक नोटबुक : सामान्य निर्देशसँ ज्ञानक विशेषता धरि

दृश्य १४४ पुरान मृत्युक प्रश्नसँ वर्तमान ऑनलाइन जुआ-जाँच दिस सहसा घुरैत अछि। केशवक घर-कार्यालयक तलाशी न्यायालयी आदेश, स्वतन्त्र साक्षी आ उपकरणक विधिसम्मत जब्तीक उल्लेखसँ आरम्भ होइत अछि। दृश्य पहिनहिसँ पाठककेँ बतबैत अछि जे व्यवस्थित घर आ पुरस्कारक प्रदर्शन निर्दोषता अथवा दोषक वस्तुगत प्रमाण नहि। ‘मुख्य साफ’, ‘रात्रि बाहर’, ‘पी.एम.’ आ ‘उ.’ जकाँ लघु-प्रविष्टि जाँचक दिशा दैत अछि; अक्षर मात्रसँ प्रदीप वा उत्तरायणक पहिचान स्वतः सुनिश्चित नहि। कम्प्यूटरसँ भेटल परस्पर सन्देशसभमे सेहो एक बाहरी माध्यम पर निर्भरता घटेबाक सामान्य वाक्य अपराधक स्वीकृति नहि मानल गेल अछि। मुदा वास्तविक सेवाक भुगतान आ ‘बाकी राशि समायोजन अलग’ रखबाक केशवक लिखित उत्तर जाँचकेँ मात्र मौन-सम्बन्धसँ अधिक निकट अनैत अछि।

एतय साक्ष्यक उन्नति ओकर संख्या बढ़ब नहि, बल्कि लिखित कथनक विशिष्टता बढ़ब अछि। ‘जानैत छल’ आ ‘विभाजनक भाषा लिखलक’क बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि। तथापि कथनक सन्दर्भ, वास्तविक धनक प्रवाह आ अनुबन्धक स्थिति अगिला न्यायिक परीक्षण माँगैत अछि। नव्य न्यायक

पक्षधरता-परखमे समान आद्याक्षर हेत्वाभास बनि सकैत अछि; सन्दर्भयुक्त इलेक्ट्रॉनिक सन्देश अधिक पुष्ट उपादान, मुदा अन्तिम निर्णय नहि। एहि चारि दृश्यकेँ एक संग पढ़लासँ स्पष्ट होइत अछि जे उपन्यास एकटा अपराधीक स्वीकारक लालसाकेँ नियंत्रित करैत करैत दोसर अनुसन्धानमे साक्ष्यक सही विशिष्टता खोजैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३७ — गिरफ्तारीक अर्थ, काराक विधि आ प्रदीपक अधूर परिवर्तन (मूल दृश्य १४५–१४८)

राज्य आर्थिक-अपराध शाखा आ समाचारक मिथ्या विस्तार

दृश्य १४५मे केशवक गिरफ्तारीक आधार अवैध दाँव-व्यवस्था, वित्तीय छल, आर्थिक षड्यन्त्र आ धनक स्रोत छिपेबाक सन्देहसँ बनैत अछि। उपन्यास स्पष्ट करैत अछि जे ई राज्य आर्थिक-अपराध शाखाक जाँच अछि, राष्ट्रीय जाँच-अभिकरणक प्रत्यक्ष अभियोग नहि। अपूर्वा कश्यपकेँ समान वित्तीय मध्यस्थक अभिलेखक कारण सूचना देल गेल, मुदा सूचना-साझेदारीकेँ समान आरोपक घोषणा बुझब असंगत। रचनाक प्रेस-वक्तव्य ‘गिरफ्तारी दोषसिद्धि नहि’ कहैत अछि; पत्रकारक आधा छपल प्रश्न ओकर प्रतिलोम प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। समाचारक सङ्क्षेप विधिक स्पष्टीकरणकेँ अशुद्ध सङ्केतमे बदलि सकैत अछि। पाश्चात्य संचार-विमर्शक दृष्टिसँ ई दृश्य समाचार-निर्माणक चयनात्मकता देखबैत अछि, मुदा सामान्य ‘मीडिया बुरा’ सन सरलीकरण नहि करब चाही। समाचार बनयब आ असिद्ध अपराधक सीमा राखब दुनू सार्वजनिक प्रयोजन अछि। कथाक आलोचनात्मक विषय ओ क्षण अछि जखन जटिल वाक्यक निषेध हटि जाइत अछि आ ‘लिंक’ शब्द सम्बन्धक वास्तविक दर्जा लुकबैत अछि। न्यायिक अभिलेखक पूरा वाक्य जन-चर्चामे आधा बनैत अछि; ओकर सामाजिक दण्ड अदालतक निर्णयसँ पहिनहि लागू भऽ सकैत अछि। ई अनुभव प्रदीपक परिवार आ पूर्वक गलत आरोप-प्रसङ्गसँ जोड़ि पढ़ल जाएबाक चाही।

केशव आ प्रदीप : पदक शक्ति बनाम न्यायिक कथन

दृश्य १४६मे केशव आ प्रदीप एकहि कारा-परिसरक अलग बैरकमे छथि। दुनू सीधे भेटैत नहि; वकीलमार्फत केशव प्रदीपकेँ झूठ बाजनिहार कहैत अछि। प्रदीपक ‘अदालतमे’ उत्तर एकटा छोट शिल्पगत मोड़ अछि। पूर्वमे ओ वित्तीय लेखाक नाम बदलि वस्तुस्थितिक छवि बदलैत छल; एखन ओ कथनक

सार्वजनिक परीक्षण स्वीकारबाक दिस बढ़ैत अछि। मुदा अदालतमे उत्तर देबाक इच्छा चरित्रक समग्र पुनर्वास नहि; आत्मसमर्पणक पुरान तथ्य, वित्तीय अपराधमे भागीदारी आ पीड़ितसभक क्षति अपन जगह अछि।

कारागारक भीतर पूर्व व्यावसायिक शक्ति सम्बन्ध बदलैत अछि। केशव संदेश पठबैत अछि, प्रदीप प्रत्यक्ष उत्तेजनापूर्ण स्पष्टीकरण नहि दैत। ओहि नियन्त्रणमे नैतिक लाभक सम्भावना अछि; तथापि कथानक प्रदीपकेँ तुरन्त निर्दोष आदर्श नायक नहि बनबैत। उपन्यासक आत्मसंयम एहिमे अछि जे कथित प्रायश्चित्तक पहिल लक्षण सार्वजनिक क्षमायाचनाक नाटकीय भाषण नहि, बल्कि उचित मंचपर अपन कथन राखबाक निर्णय अछि।

सौमित्र पासवान : खाता देबाक अर्थ आ विवशताक भेद

दृश्य १४७क सौमित्र पासवान आई.टी.आई.क बीस-वर्षीय विद्यार्थी अछि। ओकर खाता तीन साइबर शिकायतमे उपयोग भेल अछि। मासिक तीन हजार टाका पाबबाक कथन ओकर आर्थिक प्रेरणा देखबैत अछि; ‘डिजिटल व्यापार’क बहाना तथा कागज नहि पढ़बाक उत्तर ज्ञानक सीमा आ सम्भावित लापरवाही दू प्रश्न उठबैत अछि। ‘केवल खाता देलहुँ’ वाक्यकेँ निष्पापता अथवा जानि-बुझि सहभागिताक अन्तिम निष्कर्ष नहि मानल जा सकैत अछि। दृश्य अपराधक क्रियाविधि सिखाबय लेल नहि, गरीबी, संस्थागत अस्पष्टता आ व्यक्तिगत निर्णयक गाँठ देखेबाक लेल रचल अछि।

प्रदीप सौमित्रक प्रश्नमे अपन पुरान कागजी जाल देखैत अछि। ओ जमानतक विधिक सहायता कक्षक रास्ता देखबैत, आवेदनक भाषामे सहायक होइत अछि। कागज बनाबयवला हाथक प्रयोग बदलैत अछि—पहिने असत्य भुगतानक प्रस्तुतिकरण, आब गरीब बन्दीक विधिक पहुँच। ई समानान्तर रचना प्रभावी अछि, मुदा एक व्यक्ति पर करुणा ओकर पुरान कृत्यक क्षतिक प्रतिपूर्ति नहि। प्रायश्चित्त, उत्तरदायित्व आ सुधारक सम्भावना एकहि चरण नहि। लेखक ई भेद स्वयं स्पष्ट करैत छथि; आलोचनामे सेहो बनल रहबाक चाही।

समान नियम, असमान परिणाम

दृश्य १४८मे सौमित्रक जमानत स्वीकृत होयबाक बादो मुचलका, स्थानीय जमानतदार आ घरक आर्थिक साधन जुटय धरि कारामे अधिक समय बितेबाक सामाजिक तथ्य उभरैत अछि। एकर विपरीत जे लोक विधिक सहयोग आ यात्रा-व्यय जुटा सकैत अछि, ओकर प्रक्रिया प्रायः अधिक शीघ्र आगाँ बढ़ैत अछि। प्रदीप जेल-दैनिकीमे लिखैत अछि जे समान नियम समान परिणाम नहि दैत। ई सूत्र स्वतः सार्वभौम विधिक दावा नहि; चरित्रक सन्दर्भगत अनुभूति अछि, जे सामाजिक अनुसन्धानक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

भारतीय सामाजिक साहित्यक दृष्टिसँ ई दृश्य कारागारकेँ केवल अपराधीकेँ दण्ड देबाक भवन नहि, साधनहीनताक एक अतिरिक्त परीक्षा बनबैत अछि। नव्य न्यायक उपकरणसँ ‘समान विधि’ आ ‘समान वास्तविक पहुँच’केँ एकजाति मानलासँ उत्पन्न भ्रम अलग देखल जा सकैत अछि। विधिक समानता आदर्श अछि; ओही तक पहुँचबाक यात्रा जाति, आय, कुटुम्बी सहयोग, कागज आ भौगोलिक दूरीसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि। कथा दोषसिद्धि पर अन्तिम फैसला नहि सुनबैत; न्यायिक समयक असमान वितरणकेँ अपन आलोचनात्मक केन्द्र बनबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ३८ — अम्बरक संस्थागत आत्मालोचना आ सत्यप्रकाशक दस्तावेजी पुनरागमन (मूल दृश्य १४९–१५२)

विहान सारंगक कम्पनी : व्यक्तिगत दोष आ संस्थागत संस्कृति

दृश्य १४९मे अम्बर इंटरैक्टिवक निदेशक-मण्डलक विमर्शमे कम्पनी बेचब, ब्राण्ड बदलनाइ अथवा सभ गन्दगी केशवक निजी काज कहि अलग कऽ देबाक प्रस्ताव अछि। विहान सारंग प्रश्न उठबैत अछि जे अनुपालनक चेतावनी देखियो ओ सभ ‘बाहरी एजेन्सी’ कहि मानि लेलनि। ओ कानूनी उत्तरदायित्वक अन्तिम व्याख्या नहि, निर्णय-संस्कृतिक नैतिक भागीदारीकेँ प्रश्न करैत अछि। संस्थागत दोषक संकल्पना एहि ठाम पर उपयोगी अछि: अपराध-सिद्ध व्यक्तिक व्यवहार अन्य निदेशकक सबटा दायित्व स्वतः सिद्ध नहि करैत; मुदा चेतावनी देखिकऽ प्रश्न रोकब संगठनक नियन्त्रणक विफलता हो सकैत अछि।

उपन्यास विहानकेँ भाषण देलाक कारण संत नहि मानैत। आलोचनामे एहि सूत्रक आदर आवश्यक अछि। पछतावा आ दोषसिद्धि, नियन्त्रणक चूक आ आर्थिक लाभ, बोर्ड-कक्षमे कहल सत्य आ अभिलेखमे भेटल आदेश—ई चारि स्वतन्त्र स्तर अछि। पाश्चात्य संस्थागत अपराध-अध्ययनक सामान्य विमर्शसँ साम्य रखैतहुँ उपन्यास अपन सामग्री स्थानीय हिन्दी-मिथिला समाजक ठोस कागज, श्रम, खेलक प्रचार आ घरक क्षतिसँ अर्जित करैत अछि।

आन्तरिक ई-पत्र आ ‘एस.के.’क सावधान पहिचान

दृश्य १५०मे विहान स्वेच्छासँ पुरान आन्तरिक ई-पत्र-सङ्ग्रह जाँचकर्ताकेँ दैत अछि। ई कागज अम्बर क्रीड़ा मीडियाक पहिल समयक अछि, जाहिमे दिगन्तक विवादित भुगतानक स्रोत उपयोग नहि करबाक चेतावनी आ ‘एस.के. आपत्ति’क स्मरण अछि। रचनाक लेल एस.के. तत्काल अनुमानक विषय बनैत अछि, मुदा घटना कालक बादक ई-पत्र स्वयं ऐतिहासिक मृत्यु-घटनाक प्रत्यक्ष साक्षी नहि।

ओ केवल एतबा प्रमाणित करबाक दिशा खोलैत अछि जे कम्पनीक किछु लोक पुरान आपत्तिक विषय जानैत छल।

एहि ठाम उपन्यास अर्थपूर्ण सूचना-श्रृंखला बनबैत अछि: वर्तमान कम्पनीक स्वैच्छिक कागज पुरान दिगन्तक भुक्तान तक पहुँचबैत अछि; मुदा दस्तावेजक लेखनकाल पुरान घटनासँ वर्षों दूर अछि। स्रोतक समय आ कथित घटनाक समय भिन्न अछि। इतिहास-लेखनमे ई सरल मुदा निर्णायक नियम अछि। एकर तुलना दृश्य १४०क निजी ‘डी.आर.’ आ दृश्य १४४क ‘पी.एम.’ सँ करब उचित: आद्याक्षरक अर्थ सन्दर्भ, लेखक, तिथि आ अन्य स्रोतक मिलानसँ स्थिर होइत अछि, ध्वनिसँ नहि।

नलिन बरुआक बयान : प्रत्यक्ष आ सुनी बात

दृश्य १५१मे नलिन बरुआ स्पष्ट करैत अछि जे ‘एस.के.’ सत्यप्रकाश कर्णक उल्लेख छल। नलिन दिगन्तक बाहरी लेखा-जाँचमे कनिष्ठ कर्मचारी रहल; सत्यप्रकाशक रकमक स्रोत सम्बन्धी प्रश्न ओ प्रत्यक्ष सुनने छल। देवांशु नाराज छल, से एक बैठकक स्मृतिक आधारपर कहैत अछि; मुदा धमकी अथवा हत्या-निर्देश नलिन सुनने नहि छल। नलिनक ‘ओ काज रोकि रहल अछि’ सन स्मरण आर्थिक असन्तोषक साक्षी बनि सकैत, हिंसक प्रयोजनक अन्तिम प्रमाण नहि।

साक्ष्यक वर्गीकरणमे एहि दृश्यक महत्त्व अछि। ई-पत्रक लिखित सङ्केत ‘एस.के.’ नलिनक प्रत्यक्ष पहिचानसँ अधिक स्पष्ट बनैत अछि; बैठकक स्मृति प्रत्यक्ष उपस्थिति पर आधारित होइतहुँ शब्दश: अभिलेख नहि; सत्यप्रकाशक मृत्युपर नलिनक सुनी आशङ्का तेसर प्रकारक सूचना अछि। समीक्षककेँ ई तीनू एकहि ‘गवाही’क नामसँ मिला नहि देबाक चाही। नव्य न्यायक सन्दर्भमे ज्ञानक साधन, जिज्ञासित वस्तु आ निष्कर्षक अधिकार समान नहि। लेखक प्रश्नोत्तर द्वारा एहि भेदकेँ कथात्मक लयमे राखैत छथि।

‘चन्द्र’क नाम आ मृत साक्षीक पाछाँ बचल कागज

दृश्य १५.२मे नलिन समृद्धि ग्राम-वित्तक पुरान रकम आ शशिभूषण लालक ‘चन्द्र’ नामकेँ जोड़ैत अछि। ओ कहैत अछि जे शशिभूषण सीधा मालिक नहि, पाइ जुटेबाक मध्यस्थ छल; सत्यप्रकाश हुनका भेटने होयबाक सूचना ओ सुनने छल, देखल नहि। शशिभूषणक मृत्यु मौखिक साक्षीक एक दिशा बन्द करैत अछि, मुदा बेटी अदिति जीवित छथि आ पिता-पुस्तिक सम्भावना बचल अछि। एहि अन्वेषणमे पुरान घरक अभिलेखागार आधुनिक डिजिटल प्रमाणक समानान्तर स्रोत बनैत अछि।

चारि दृश्यक मूल कलात्मक उपलब्धि ई अछि जे वर्तमान जाँचमे संस्थागत आत्मालोचना एक निजी ई-पत्र सौंपबाक क्रिया बनैत अछि; ओहि कागजसँ पुरान मृत्युक प्रश्न नलिन धरि पहुँचैत अछि; नलिनक सीमित ज्ञान घरक पेटी खोजबाक कारण बनैत अछि। नैतिक भाषणसँ अभिलेखीय क्रियाक्रम धरि ई यात्रा कथा लेल अनिवार्य। तथापि बारम्बार जीवित साक्षी अचानक भेटनाइ आ हर बेर नब कागजक खुलनाइ रहस्य-आख्यानक सुविधा-जकाँ लगि सकैत अछि। ई शिल्पगत सीमा चिन्हनाइ सम्भव अछि, बिनु एहि तथ्यक महत्त्व घटौने जे लेखक प्रत्येक साक्षीकेँ ओकर प्रमाण-सीमा बतबैत रखैत छथि।

अध्ययन-इकाई ३९ — अदितिक पेटी, पुनः खुलल मृत्यु-जाँच आ जीविका पर रोकक दुष्परिणाम (मूल दृश्य १५३–१५६)

शशिभूषणक निजी पन्ना : भाषाक अस्पष्टता आ प्रमाणक नब आधार

दृश्य १५३मे अदिति लाल अपन पिता शशिभूषणक पुरान पेटी स्वयं खोलैत छथि। पहिने जाँचकर्ताक उपस्थिति बेला हुनका जे किछु मोन नहि पड़ल, से पाछाँ विचारक उपरान्त घरक पत्र, निमन्त्रण आ निजी दैनिकी खोजबाक प्रेरणा बनैत अछि। एक पन्नामे सत्यप्रकाश कर्णक आगमन, खेलक रकमपर अनेक प्रश्न, देवांशुक सम्भावित नाराजगी आ ‘दूर रह’ कहबाक अस्पष्ट कथन अछि। तिथि सत्यप्रकाशक मृत्युसँ बारह दिन पहिनुक बताओल गेल अछि। एहि पन्नाक प्रत्यक्ष महत्त्व ई जे नलिनक सीमित मौखिक बयानकेँ स्वतंत्र लिखित स्रोतसँ परखबाक अवसर भेटैत अछि। मुदा ‘दूर रह’क विषय-कर्ता निश्चित नहि: शशिभूषण सत्यप्रकाशकेँ सचेत कयने छलाह, देवांशुकेँ, कि अपनाकेँ दूरीमे रखबाक टिप्पणी लिखने छलाह—व्याकरण खुलल अछि।

एहि अस्पष्टतासँ उपन्यास पाठकक उत्साहकेँ नियंत्रित करैत अछि। कागज पुरान, वस्तुतः मिलल आ तिथि सहित अछि—एहि तीन गुणसँ ओकर परीक्षणक मूल्य बढ़ैत अछि; मुदा अर्थक अस्पष्टता एखनहुँ मिटैत नहि। नव्य न्यायमे शब्द-बोध लेल आकाङ्क्षा, योग्यता आ सन्निधिक विवेचन उपयोगी तुलनात्मक आधार भऽ सकैत अछि: वाक्यक व्याकरण पाठकसँ अधिक स्पष्ट कर्ता माँगैत अछि, मुदा उपलब्ध लेख ओ देबाक स्थिति नहि रखैत। एकहि वाक्यक रिक्तिक भीतर मनचाहा अपराध-निर्देश जोड़ि देब न्यायिक निष्कर्ष नहि, आलोचनाहीन कल्पना होयत।

दृश्य कहैत अछि जे उपन्यासक पाठक अनेक कड़ी जोड़ि अर्थ बना सकैत अछि, किन्तु राज्यकेँ दण्ड देबापूर्वक अधिक विश्वसनीय सेतु चाही। एहिमे साहित्य आ न्यायक भेद नाटकक सजावट नहि, कथाक विचार-केंद्र अछि।

आलोचना लेल एहि स्थितिक दोसर पक्ष सेहो महत्त्वपूर्ण: साहित्यक व्याख्या स्वतः असंयमित होयबाक अधिकार नहि रखैत। उपन्यास पाठकक कल्पनाकेँ निर्देशित करैत अछि, मुदा वास्तविक स्रोत-स्थितिक प्रति उत्तरदायित्वसँ मुक्त नहि। एहि दृश्यपर आधारित टिप्पणीमेसँ हत्या करेनिहारक निश्चित नाम देब मूल पाठक अतिक्रमण होयत।

पुनर्परीक्षणक आदेश : जाँचक पुनरारम्भ आ दोषारोपणक दूरी

दृश्य १५४मे रचना सिन्हा मृत्यु-जाँच फेर खोलबाक औपचारिक सिफारिश करैत छथि। वरिष्ठ अधिकारी हत्या-मामलाक रूपमे प्रश्न उठबैत छथि; रचना ‘सन्दिग्ध मृत्यु—पुनर्परीक्षण’क सीमित आधार चुनैत छथि। ककरो विरुद्ध एखन निश्चित नाम नहि। अधिकारी प्रेसक प्रतिक्रियासँ चिन्तित छथि; रचना समाचारक अपेक्षाकेँ न्यायिक आरम्भक आधार बनयबाक विरोध करैत छथि। अनिरुद्ध ईशानकेँ सेहो मृत्यु हत्या सिद्ध नहि भेल स्पष्ट कहैत छथि। ईशान उत्तर पसिन्न नहि करैत, मुदा एकरा पहिनेसँ बेसी बुझबाक बात मानैत अछि।

एहि दृश्यकेँ ‘बीस वर्षक रहस्य समाधान’ कहब अनुचित। समाधान एखन नहि; अनुसन्धानक वैधानिक पुनरारम्भ अछि। न्यायिक प्रक्रियामे निर्णायक उपलब्धि कखनो-कखनो दण्डादेश नहि, प्रश्नक उचित रूपमे पुनर्स्थापना होइत अछि। ईशानक आन्तरिक परिवर्तनक सूक्ष्मता एहिमे अछि जे ओ शोक नहि बिसरल, मुदा प्रत्येक सावधान उत्तरकेँ तत्क्षण शत्रुताक भाषा नहि मानि रहल अछि। तथापि ओकर अन्तिम स्वीकारोक्तिमे पूर्ण शान्ति नहि; ओ ‘कम घृणा’क बदला ‘बेसी बुझाइत’ कहैत अछि। ई चयन चरित्रक मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

सबीनाक रोकल खाता : अपराध-निरोध आ निर्दोष आश्रितक जीवन

दृश्य १५५ वर्तमान जुआ-जालक वित्तीय जाँचकेँ तात्कालिक मानवीय प्रश्नक रूपमे अनैत अछि। केशवक गिरफ्तार होयबाक बादो नब नामसँ समूह चलैत अछि; बैंकक जोखिम-सूचीक आधारपर अनेक मध्यस्थ खाता रोकल जाइत अछि। मुदा समूचा खाताक रोकमे संदिग्ध रकमक संग व्यक्तिगत वेतन आ

आवश्यक पारिवारिक खर्च सेहो अटकि सकैत अछि। सबीना खातूनक बेटीकेँ दाँतक उपचारक लेल धन चाही, आ खाता रोकला सँ उपचार स्थगित होयबाक जोखिम बनैत अछि। सबीनाक अपन गलती सम्बन्धी कथन ओकर दायित्वक प्रश्नकेँ हटबैत नहि; ओकर बच्चाक अधिकारकेँ सेहो ओहि गलतीक समान अपराध मानि लेब असंगत।

रचना बैंक-समन्वयमे निर्विवाद व्यक्तिगत आयक शीघ्र सत्यापनक प्रश्न उठबैत छथि। ईशान तकर अपराध-निरोधक तर्क सामने अनैत अछि: जँ राज्य निर्दोष अथवा जीवनावश्यक धनकेँ समयपर अलग नहि कऽ सकत, तँ अपराधी सभसँ निर्बल खाताधारककेँ उपयोग करबाक अवसर बढ़त। ई एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक उपलब्धि अछि—मानवीय करुणाकेँ कार्यक्षम संस्थागत सुधारक विपरीत नहि, ओकर अङ्ग मानल गेल अछि। वेतन, छात्रवृत्ति आ चिकित्सकीय आवश्यकताक दावासभ लेल नव परीक्षण-पद्धति बनैत अछि; सबीनाक बच्चाक उपचारक किछु रकम मुक्त होइत अछि। मुदा ई पूर्ण समाधान नहि। कानूनक संतुलनकेँ एक परिवारक सहानुभूतिसँ सम्पूर्ण सामाजिक परिणामक रूपमे सामान्यीकृत करब नहि चाही।

न्याय-दर्शनक सामाजिक अनुप्रयोग एतय प्रत्यक्ष होइत अछि। दोषक अनुमान व्यक्तिक कृत्यसँ जुड़ल होयबाक चाही, प्रत्येक आश्रितक सभ आवश्यकता पर सामूहिक दण्ड-जकाँ नहि उतरबाक चाही। अधिकारक वर्ग—व्यक्तिगत आय, संदिग्ध रकम, लाभार्थीक चिकित्सा, बैंकक रोक—पृथक राखल गेल अछि। पात्रकेँ दोषी अथवा निर्दोषक दू टुकड़ा श्रेणीमे फिट करब कठिन; व्यवहारक विशेषता जाँचबाक आवश्यकता अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे अधिकारीक बैठक आ गरीब घरक चिकित्सा-व्यय एकहि इतिहासक अलग दस्तावेज बनैत अछि।

मृणालिनीक देहरी : बिज्जीक पहरा आ अहिंसक अवरोध

दृश्य १५६मे गढ़ नारिकेलक साँझ, बरखा-पछातिक घास, गहुमनक आगमन आ बिज्जीक सामना प्रारम्भिक उपन्यासक बिम्बकेँ फेर अनैत अछि। मुदा ई

पुनरावृत्ति यथावत् नहि। आरम्भिक दृश्यपद्धतिमे साँप मृत भेटल छल; एतय बिज्जीक उपस्थिति देखिते गहुमन बाट बदलैत अछि, लड़ाइ होइत नहि। मृणालिनी बुझैत छथि जे सभ लड़ाइ जीतब आवश्यक नहि, कखनो घर धरि संकटकेँ नहि पहुँचय देब पर्याप्त। एहि रूपकमे बदलाक स्थानपर रोकथाम, विजयक स्थानपर संरक्षणक नैतिक बल अछि।

मृणालिनी ई दृश्य ईशानकेँ नहि कहैत छथि; भोजन पूछैत छथि आ फेर बाबूक जाँचक बात। घरक छोट संवादमे मृत धनेश्वरीक उत्तराधिकार स्वररूपमे अबैत अछि। ‘किनार नहि छोड़िह’ कहनाइ केवल मृत्युक जाँच जारी रखबाक आग्रह नहि, विवेकक पहरा नहि छोड़बाक संस्कार सेहो अछि। ईशानक ‘दादी जकाँ बाजैत छी’क उत्तर घरमे जीवित परम्पराक सूचक। प्राकृतिक दृश्य आ घरक संवाद एक-दोसराक व्याख्या करैत अछि। तथापि एकर प्रतीकात्मक स्पष्टता किछु पाठककेँ अत्यधिक सुचिन्तित लगि सकैत अछि; ई शैलीगत सीमा मूल रूपकक भावात्मक कार्यकेँ नकारैत नहि।

अध्ययन-इकाई ४० — प्रयोजनक दार्शनिक विवेचन, बदलल भूगोल आ बासुदेवक अनिश्चित साक्ष्य (मूल दृश्य १५७–१६०)

रचनाक दू रेखा : इतिहासक जाल आ नव पूँजीक सन्दर्भ

दृश्य १५७क जाँच-कक्षमे रचना बोर्ड पर दू ऐतिहासिक पथ रखैत छथि। पहिलमे समृद्धि, शशिभूषण, दिगन्त, सत्यप्रकाश आ पुरान दुर्घटना; दोसरमे उत्तरायण, अम्बर, रात्रि कक्ष, मध्यस्थ खाते, प्रदीप आ केशव। किछु सेतु प्रमाणित अछि, किछु सम्भावित, किछु नाम-साम्यक कारण बनल छल आ पछाति टूटि गेल। दृश्यक ई दृश्यात्मक पद्धति महत्त्वपूर्ण अछि: कथा अतीत आ वर्तमानकेँ एकहि सरलक रेखा नहि बनबैत, अलग इतिहाससभक आंशिक जुड़ान देखबैत अछि।

लाल कलम राखि कारी कलमसँ ‘प्रयोजन’ लिखबाक रचनाक निर्णय पाठमे रूपक आ बौद्धिक अनुशासन दुनू अछि। लाल रङ बहुत जल्दी दोषक सार्वजनिक घोषणा बनि सकैत अछि। कारी कलम प्रश्नक स्थिति बचबैत अछि। प्रयोजन न्याय-दर्शनक सोलह पदार्थमे एक अछि; तथापि लाभ, भय, ऋण, परिवार, सम्मान अथवा प्रतिशोधक सम्भावित प्रेरणा अपने हिंसक कृत्यक प्रमाण नहि। रचना ईशानक पिता-शोक, सबीनाक चिकित्सकीय विवशता, प्रदीपक रोजगार-भय आ केशवक सम्भावित लाभ एकहि कसौटीक दोष-सङ्केत नहि बनबैत छथि। ‘प्रयोजन दिशा दैत, प्रमाण दोष सिद्ध करैत’—दृश्य अपन वैचारिक निष्कर्ष एतहि संक्षेप करैत अछि।

नव्य न्यायक पाठमे हेतु आ साध्यक अपरिहार्य सम्बन्ध नापब आवश्यक होइत अछि। ककरो पास लाभक कारण छल, तेँ ओ अपराध कयने होयत—एहि अनुमानमे व्याप्तिक अभाव अछि। प्रतीत-साम्यसँ उपजल हेत्वाभासक सम्भावना नामक भिन्नतामे पूर्व दृश्यसभ देखौने अछि। ई बौद्धिकता क्रियाशील जाँचकर्त्रीक भीतर स्थापित कएल गेल अछि; लेखक विवेचनक अलग ग्रन्थ नहि जोड़ैत, चिन्तनकेँ बोर्ड, पेन आ अभियोगक बीच रखैत छथि। तथापि सूत्रात्मक

वाक्यसभक आवृत्ति उपन्यासक गति रोकबाक खतरा रखैत अछि—ई आगामी दीर्घ कथानकपर लगबाक आलोचनात्मक प्रश्न अछि।

सार्वजनिक समाचार आ मृणालिनीक निजी समय

दृश्य १५८मे समाचारपत्र पुरान फोटो आ ‘बीस वर्षक प्रतीक्षा’क वाक्य बनबैत अछि। मृणालिनी लेल ई शीर्षक अपन जीवनक अधूर विवरण अछि। पहिल पाँच वर्षक फोनसँ भय, दस वर्ष धरि फाइल साफ करब, पन्द्रह वर्षक बाद तस्वीरक ठाम बदलनाइ, आ बीसम वर्षक आसपास प्रश्नक कोठलीसँ जीवनकेँ बाहर अनबाक विचार—ई सभ पंक्ति परिवारक समयकेँ सरकारी समयसँ पृथक देखबैत अछि। न्यायिक पुनरारम्भ हर पीड़ितक लेल निर्बाध उत्सव नहि: जकरा कतेक प्रयत्नसँ दुःखक संग जीबाक रीति बनल छल, ओकरा फेर सार्वजनिक शङ्काक भीतर अनल जाइत अछि।

पत्रकारसभक घर लग पहुँचि मृणालिनीकेँ सिद्ध-असिद्ध व्यक्ति पर तत्काल कथन देबाक आग्रह करैत छथि। हुनकर मौन अपर्याप्त साहस नहि, अपन अस्तित्वक सीमा रखबाक निर्णय बनैत अछि। ईशान राजधानी नगर आबबाक प्रस्ताव करैत अछि; मृणालिनी घर नहि छोड़बाक उत्तर धनेश्वरीक पुरान गहुमन-प्रतीकक भाषामे दैत छथि। एहि प्रसङ्गमे स्त्री-पात्र ‘आदर्श सहिष्णुता’क जड़ बिम्ब नहि; ओ अपन जीवनस्थान चुनैत छथि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे सार्वजनिक शीर्षक, घरक फोटो आ वृद्ध स्त्रीक चुप्पी तीन भिन्न इतिहासक स्रोत अछि।

बदलल दुर्घटनास्थल : पदार्थक जाँच आ उद्देश्यक सीमा

दृश्य १५९क स्थल-पुनर्निरीक्षणमे बीस वर्षक भौतिक परिवर्तनक सूक्ष्म सूची अछि—दू-लेन सड़क चारि-लेन भेल, पुरान चाह-दोकान नहि, खेतक ठाम पम्प, पुलियाक बदला नाला, आ गाड़ी खसेबाक ठाम विज्ञापनक लोहेक खम्भा। स्थान भौतिक रूपेँ पहिनुक घटना जकाँ बचल नहि। अतः वर्तमान विशेषज्ञ पुरान केस-दैनिकी, स्थल-चित्र, वाहन-जाँच आ शव-परीक्षणक आधारपर सशर्त बात कहैत

अछि। भारी वाहनक ठोकर सम्भव; आकस्मिक मोड़ आ ब्रेकक सङ्केत; मुदा जानि-बुझि कएल टक्करक उद्देश्य उपलब्ध सामग्रीसँ निश्चित नहि।

एहि दृश्यसँ ऐतिहासिक प्रमाणक एक महत्त्वपूर्ण भेद उघड़ैत अछि। भौतिक पुनर्निर्माणक सीमा स्थल-बदलाव आ पुरान प्रमाणक गुणवत्ता पर निर्भर अछि; मनुष्यक आशय बुझबाक लेल फेर अलग प्रत्यक्षदर्शी, आदेश, कागज अथवा विश्वसनीय सम्बन्ध चाही। वैज्ञानिक विश्लेषणक महत्त्व घटाए बिना लेखक ओकर प्रश्न-क्षेत्र सीमित करैत छथि। साहित्यिक दृष्टिसँ बदलल भूगोल स्वयं समयक साक्षी बनैत अछि: सड़क, नाला आ विज्ञापनक नब संरचना पुरान मृत्युकेँ स्थानसँ मेटा देलक, मुदा परिजनक स्मृतिसँ नहि। कथाक ‘पानि पढ़ब’ रूपक एतय सड़क आ वाहन-परीक्षणक कागज पढ़बाक साधनामे रूपान्तरित होइत अछि।

बासुदेव मरिक : दबावक स्वीकार आ गलत ‘कौशल’क पुनरावृत्ति

दृश्य १६०मे हरिचरणक पुरान सहायक बासुदेव मरिक बीस वर्ष पहिनुक स्थानीय दबाव-प्रणालीक किछु रूप बतबैत अछि—डराबय, गाड़ी रोकब, मजदूर हटायब। ओ एक मारपीटक घटना देखबाक बात कहैत अछि, हत्या नहि; सत्यप्रकाशक मृत्युक सम्बन्धमे अपन अज्ञान स्पष्ट रखैत अछि। दुर्घटनासँ पहिने हरिचरण भारी वाहन खोजैत छल, ई कथन नब अनुसन्धानक सूत्र अवश्य अछि। मुदा ककरा लेल, कोन वाहन, कतय आ काहि प्रयोजनक, ई अनिर्णीत। बासुदेवक कण्ठसँ निकलल ‘कौशल’ नाम पहिने असिद्ध रहल ‘कौशल महतो’क स्मृति जगबैत अछि; ओ तुरन्त स्पष्ट करैत अछि जे महतो नहि, कोनो वृद्ध परिवहन-व्यवसायी, जकर उपनाम ओकरा मोन नहि।

एहि क्षणक नैतिक उपलब्धि रचनाक उत्तरमे अछि। बासुदेव चेहरा ‘शायद’ पहचानि सकत; जाँचकर्त्री ओकरा जबरदस्ती ‘हँ’ कहबेबाक प्रयास नहि करैत छथि। नामक भूख पहिने कौशल महतो जकाँ व्यक्तिपर सार्वजनिक शङ्का केन्द्रित करि चुकल अछि; आब ओहि दोषक पुनरावृत्ति टारल जा रहल अछि।

साक्षीक भय आ सरकारी प्रश्नक असमान शक्ति-सम्बन्धकेँ नब दृश्य गंभीरतासँ पहचानैत अछि। साक्षी जतेक जानैत अछि ओतबे लिखब, ‘शायद’केँ ‘निश्चित’ नहि बनायब, ई उपन्यासक अभिलेखीय नैतिकताक एक ठोस उपलब्धि अछि।

पाँच अध्ययन-इकाईक समापनमे दृश्य १६० अपराधी उद्घाटन पर नहि, एक विश्वसनीय प्रश्नपर रुकैत अछि। कथानकक गतिशीलता बनल अछि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्युक अन्तिम कारण वा कर्ता एखनहुँ खुलल नहि। सम्भावना, आरोप, साक्षीक सीमित स्मरण आ भौतिक प्रमाणक सीमा सुरक्षित राखलासँ उपन्यासक न्याय-दर्शन मात्र नामक उपशीर्षक नहि रहि जाइत; ओ घटनाक प्रस्तुति आ कथावस्तुक क्रमकेँ नियमित करैत अछि।

आठम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य १४१–१६० : प्रमाणक अनुशासन, सामाजिक न्याय आ बिज्जीक बदलैत रूप

पुरान आ वर्तमान जाँचक समानान्तर रचना

एहि बीस दृश्यमे पुरान मृत्यु-जाँच आ वर्तमान वित्तीय जुआ-जाँचक तार अत्यन्त समीप आबैत अछि। देवांशुक आर्थिक हित आ हरिचरणक कथित दमन-वृत्ति एक दिस; केशवक विधिसम्मत तलाशी आ सन्देशक विभाजन-सूत्र दोसर दिस। नलिनक ई-पत्रक पुष्टिकरण आ अदितिक पुरान दैनिकी दुनू कालखण्डमे एक सम्बन्धक नब आधार देत अछि। मुदा ‘एकहि आर्थिक इतिहाससँ उद्भूत’ आ ‘एकहि अपराधीक निर्देशमे निष्पादित’ दुनू समान अर्थ नहि। कथा स्वयं बोर्ड पर दू पृथक रेखा रखि ई सिद्धान्त दृश्य रूपमे स्थापित करैत अछि। रचनाक आलोचना तखने प्रामाणिक रहत जखन आर्थिक समानुपात, संस्थागत सम्बन्ध, हिंसाक कर्तृत्व आ न्यायालयी दोषसिद्धिक चारु श्रेणी अलग रहत।

चारि प्रमाण-परिसर : लिखित कागज, जीवित साक्षी, भौतिक स्थल आ सार्वजनिक कथन

दृश्य १४१–१६०क तुलना कएलासँ प्रमाणक चारि संसार भेटैत अछि। पहिल—कृपानन्दक निजी डायरी, विहानक ई-पत्र, शशिभूषणक पन्ना, केशवक नोटबुक आ वैधानिक डिजिटल सन्देश। दोसर—देवांशु, नलिन, अदिति, बासुदेव आ मृणालिनीक अनुभव, जाहिमे प्रत्यक्ष देखल, सुनल आ अनुमानित बातक भार बदलैत रहैत अछि। तेसर—मूल दुर्घटना-दैनिकी आ आज बदलि चुकल स्थल पर विशेषज्ञक सीमित पुनर्निर्माण। चारिम—समाचारपत्र, पत्रकारक प्रश्न आ आधा उद्धृत सरकारी वक्तव्य। कागज पुरान होएबाक कारण स्वतः सत्य नहि; जीवित साक्षी भावुक होएबाक कारण स्वतः असत्य नहि; विज्ञान सक्षम होइतहुँ उद्देश्य नहि पढ़ि सकैत; प्रेस सार्वजनिक सूचनाक माध्यम होइतहुँ अनिर्णीत

आरोपकेँ पहिने निर्णय बना सकैत अछि। एक स्रोतकेँ दोसरक स्थान देबासँ उत्पन्न भूल उपन्यासक मूल सावधानी अछि।

न्याय-दर्शनक पदार्थ आ हेतु-परीक्षण

न्याय-दर्शनक सोळह पदार्थमे ‘प्रयोजन’क स्पष्ट चर्चा दृश्य १५७मे आयल अछि। ओकर तुलनामे दृश्य १४१क देवांशुक नाराजगी, १५१क नलिनक बयान, १५३क अस्पष्ट ‘दूर रह’ आ १६०क भारी वाहनक पुरान खोज देखल जाए। आर्थिक हित सम्भावित प्रयोजन अछि; प्रयोजन मानि लेनाइ कार्यकर्ता अथवा कर्तृत्व सिद्ध नहि। नव्य न्यायमे पक्ष, साध्य, हेतु आ व्याप्ति बीच अन्तर रखबाक आवश्यकता एतय सृजनात्मक माध्यम बनि उठैत अछि। ‘डी.आर.’, ‘एस.के.’, ‘पी.एम.’, ‘उ.’ आ ‘कौशल’ नामक विश्लेषण सेहो नाम-समानताकेँ प्रमाण न बना देबाक अनुशासन माँगैत अछि। ई न्याय-विवेक कथा कथक द्वारा ऊपरसँ जोड़ल दर्शन नहि, पात्रक व्यवहार आ अस्वीकार-योग्य अनुमानसभक निरन्तर परीक्षा बनैत अछि।

करुणा आ विधिक समानताक असमान सामाजिक गति

सौमित्रक जमानत-पत्र लेल प्रदीपक सहायता आ सबीनाक बच्चाक उपचारक रकमक आंशिक मुक्ति अलग न्याय-क्षेत्र अछि, मुदा दुनू आर्थिक असमानताक कार्यकारी प्रभाव देखबैत अछि। न्यायिक सहायता, स्थानीय जमानतदार, घरक धन आ यात्रा-व्यय कारागारक समय प्रभावित करैत अछि। वित्तीय रोकमे संदिग्ध रकमक संग जीवनोपयोगी आय फँसि जाइत अछि। एहि दुनू अवस्थामे अपन कृत्यक प्रति व्यक्तिक उत्तरदायित्व समाप्त नहि, मुदा ओकर परिवारक जीवनक समूचा भार अपराधक समान दण्डक विषय सेहो नहि। लेखक करुणाकेँ कानूनक शत्रु नहि, अधिक सटीक परीक्षणक प्रेरणा बनबैत छथि। एहि भेदसँ भारतीय सामाजिक यथार्थ आ विधि-दर्शनक संवाद उपन्यासमे केवल बौद्धिक नहि, व्यावहारिक बनैत अछि।

स्त्री दृष्टि आ परिजनक इतिहास

रचना, मृणालिनी, अदिति आ सबीना चारि स्त्री पात्र अलग-अलग प्रकारक अनिश्चितता जीबैत छथि। रचना अनिर्णीत साक्ष्यक भार लैत छथि; मृणालिनी बीस वर्षक जीवन-स्मृतिसँ बनल प्रश्नक बोझ; अदिति अपन पिता लिखल अस्पष्ट अभिलेखक सीमाक साक्षी छथि; सबीना अपन गलती मानि जीवित बच्चाक उपचारक न्याय माँगैत छथि। एहि पात्रसभकेँ एक सामूहिक ‘स्त्री-सहानुभूति’क सूत्रमे सीमित नहि करब चाही। हुनकर अधिकार-क्षेत्र, ज्ञान, कर्तृत्व आ सामर्थ्य भिन्न अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक अध्ययनमे राज्यक फाइल आ घरक भीजल देहरी, काराक आवेदन आ चिकित्साक व्यय, वृद्धक पेटी आ सार्वजनिक अखबार—सभ सामाजिक इतिहासक अलग दस्तावेज ठहरैत अछि।

बिज्जी–गहुमन–गोहि : रक्षक-प्रतीकक विकास

प्रारम्भिक कथामे बिज्जी साँपसँ भिड़ैत अछि; दृश्य १५६मे लड़ाइ बिना संकट हटबैत अछि; दृश्य १५७मे ‘बिज्जी अकेली नहि’क विचार प्रश्न, आँकड़ा, अभिलेख आ सजग साक्षीक सामूहिक पहरामे बदलैत अछि। ई रूपान्तरण व्यक्तिगत वीरतासँ वितरित उत्तरदायित्व धरि यात्रा अछि। गहुमन प्रत्यक्ष भयक रूपक रहैत अछि; गोहि अदृश्य सत्ता अथवा गहिर षडयन्त्रक आशङ्का बनैत अछि। मुदा उपन्यासक पात्र मात्र जानवरक संकेत पर दोष निश्चित नहि करैत। मृणालिनीक घर नहि छोड़बाक निश्चय आ ईशानक सामाजिक जोखिम-अध्ययन एहि रूपककेँ व्यक्तिगत जीवनसँ सामाजिक जगत धरि विस्तार दैत अछि। रूपकक पुनरावृत्तिमे कलात्मक एकता अछि; अत्यधिक स्पष्ट अर्थ-निर्देशनक कारण रहस्यक सूक्ष्मता किछु ठाम घटि सकैत अछि—ई आलोचनात्मक सीमा सेहो चिन्हबाक चाही।

भाषाशिल्प : प्रश्नोत्तरक तीव्रता, समयक फैलाव आ सम्भावित पुनरुक्ति

दृश्य १४१क देवांशु, १५१क नलिन आ १६०क बासुदेवक संवाद छोट प्रश्नोत्तरक समान लय अपनबैत अछि। एहि शिल्पसँ रहस्यक गति बनैत अछि आ प्रत्येक

उत्तरक प्रमाण-भार तुरन्त जाँचल जा सकैत अछि। मुदा जाँचकर्ताक सतर्क वाक्य, ‘सिद्ध नहि’क पुनरावृत्ति आ दोषारोपणक विरुद्ध सूत्र बारम्बार आबि एकरसता पैदा करबाक जोखिम रखैत अछि। लेखक एहि जोखिमकेँ मृणालिनीक दीर्घ गृहजीवन, सौमित्रक कारागार, सबीनाक उपचार, सड़कक बदलल स्थल आ बिज्जीक निःशब्द उपस्थितिसँ संतुलित करबाक चेष्टा करैत छथि। दृश्य १४१–१६०क उपलब्धि रहस्यक अन्तिम समाधान नहि, प्रमाणक श्रेणीसभ अधिक सटीक होयब अछि; आगामी दृश्यसभमे एहि अनुशासनक कथात्मक फल देखबाक शेष अछि।

एहि बैचक अन्तिम प्रमाण-स्थिति

मूल दृश्य १६० धरि निश्चित रूपसँ एतबा कहल जा सकैत अछि: देवांशु आर्थिक अपराधक पुरान दण्ड भोगि चुकल अछि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु-सम्बन्धी आदेशक स्वीकृति नहि देलक; केशव वर्तमान आर्थिक प्रकरणमे गिरफ्तार भऽ न्यायिक हिरासतमे अछि, दोषसिद्ध नहि; पुरान भुगतान-आपत्तिक सन्दर्भ नलिनक कथन आ शशिभूषणक पन्नासँ पुष्टिकरणक नब अवसर पबैत अछि; मृत्यु-जाँच सन्दिग्ध मृत्यु मानि फेर खुलल अछि; स्थल-जाँच भारी वाहनक सम्भावना देखबैत अछि, जानि-बुझि कएल हत्या नहि; बासुदेवक ‘कौशल’क अधूर नाम ककरो पहिनहि शङ्कित व्यक्तिक पहिचान सिद्ध नहि करैत। एहि निष्कर्षसभक सीमा अपन स्थान पर रखिते कथाक नव बीस दृश्य आलोचनात्मक रूपसँ फलदायी ठहरैत अछि।

अध्ययन-इकाई ४१ — परिवहन-बहीक अधूर सङ्केत, जीवित गवाही आ वित्तीय जालक नव कड़ी (मूल दृश्य १६१–१६४)

पाँच ‘कौशल’क छानबीन : नाम-समानता सँ दस्तावेजी भेद धरि

दृश्य १६१मे बासुदेव मरिकक स्मृतिमे बचल ‘कौशल’ नामक फेर परीक्षण कएल जाइत अछि। परिवहन-अनुज्ञप्तिक पुरान पञ्जीमे पाँच कौशल भेटैत अछि—दू मृत, एक विदेशमे, एक खेतीक काजमे, आ एक कौशल किशोर चौबे, जे ‘चौबे मालवाहक’ चलबैत छल। एहि पाँच सम्भावनाकेँ एक नाममे समेटि नहि देब अनुसन्धानक पहिल नैतिक उपलब्धि अछि। नाम-समानता सँ उत्पन्न अनुमानकेँ अभिलेखीय छानबीन द्वारा सीमित कएल गेल; बासुदेवक आरम्भिक अस्पष्ट स्मृति ककरो दोषसिद्धिक आधार नहि बनल। मृत चौबेक पुत्र रजत राजधानी नगरमे मोटर-पुर्जाक व्यवसाय करैत अछि। पिता विषयक प्रश्नपर ओकर असहजता मानवीय प्रतिक्रिया अछि, अपराधक लक्षण नहि; ओ कॉलेजमे रहबाक कारण दुर्घटनाक रातिक प्रत्यक्ष साक्षी नहि। उपन्यास एहि छोट भेदसभसँ अनुसन्धानक विश्वसनीयता रचैत अछि।

रजतक गोदाममे भेटल पुरान बहीक एक पाँति—‘एच.एम.—राति—भारी’—कथाकेँ नव दिशा दैत अछि। ई कोनो सम्पूर्ण वाहन-पञ्जी नहि: वाहन संख्या अनुपस्थित, किराया नगद, पन्नाक अंश चूहा खा चुकल। ताहिपर स्वतंत्र पन्नासभमे ‘एच.एम.’क संग ‘हरि’ आ एक बिलमे ‘हरिचरण एम.’क मिलान आगामी दृश्यमे सम्भावित पहिचानकेँ अधिक ठोस बनबैत अछि। बहीमे लिखल आद्याक्षर, व्यापारक पुरान परिपाटी आ व्यक्तिगत स्मृति—तीनू स्रोतक अलग मूल्य अछि। बासुदेवकेँ बहीक पाँति देखेबासँ पहिने अलग चित्र-पहिचान कराओल गेल, मुदा कौशल किशोर चौबेक फोटो पर ओकर अनिश्चित ‘हो सकैत’ नहि बदलिएल। पठन-पद्धतिक ई संयम महत्त्वपूर्ण अछि: दस्तावेज गवाहीक पुष्टि करय वा गवाही दस्तावेजक, दुनू एक-दोसराकेँ जबरन ठीक नहि बनबय।

‘आधा डेग’क न्याय-विधि : सङ्केतक पुष्टि आ उपयोगक असिद्धि

दृश्य १६२मे रचना सिन्हा बहीक कागजक उमेर, लिखावट आ आन व्यापारिक पन्नासँ ओकर मिलान करबैत छथि। ई परीक्षणक अर्थ बहीक प्रामाणिकताक पक्षमे आधार बनब अछि, पाँतिक भीतर लिखल कथनक सभ सम्भावित अर्थकेँ सही घोषित करब नहि। ‘हरिचरण एम.’ आ रातिक भारी वाहनक संगति हरिचरण मंडल दिस सङ्केत करैत अछि; मुदा सत्यप्रकाशक दुर्घटनामे वैह वाहन उपयोग भेल कि नहि, ई प्रश्न स्वतंत्र रहल। रचना ताहि लेल अपन बोर्डपर ‘मृत्यु-राति?’क प्रश्नचिह्न नहि हटबैत छथि। भौतिक कागजक अस्तित्व आ कागजमे सूचित घटनाक विशेष उपयोग अलग-अलग प्रतिज्ञा अछि। उपन्यास एतय न्याय-दर्शनक संशयकेँ नकारात्मक निष्क्रियता नहि, जाँचक अगिला आवश्यक क्रम मानैत अछि।

मृणालिनीकेँ तत्काल सूचना नहि देबाक रचनाक निर्णय सेहो एही अन्तरक मानवीय पक्ष अछि। बीस वर्षक प्रतिक्षामे परिवार लेल प्रत्येक नव सूत्र ‘आब सिद्ध’ बनि सकैत अछि। मुदा जाँचकर्ता परिवारक भावनासँ परे कोनो निरपेक्ष यन्त्र नहि; ओकरा समय, आशा आ टूटबाक सम्भावना बुझबाक चाही। रोहितक ‘ई हत्या जकाँ लगैत अछि’ वाक्यक उत्तरमे रचना ‘लगैत अछि’ स्वीकार करैत छथि—ई जड़ निषेध नहि। भेद ई अछि जे हत्या ‘लगब’ आ हत्या सिद्ध होयब एक नहि। ‘न्याय प्रायः आधा डेगमे चलैत अछि’ कथन प्रक्रियाक क्रमबद्ध प्रगतिक रूपक बनैत अछि। एहन सूत्रक बारम्बार उपस्थिति उपन्यासक वैचारिक अनुशासन बढ़बैत अछि, मुदा जँ कथात्मक क्रियामे पर्याप्त विविधता नहि हो तँ उपदेशात्मक पुनरावृत्तिक जोखिम सेहो बनबैत अछि।

रितेश दास : घायल देहसँ सीमित कथन धरि

दृश्य १६३मे वर्तमान जुआ-जालक अनुसन्धान रितेश दासक निजी अस्पताल धरि पहुँचैत अछि। ओकर दू पसली टूटल अछि, चेहरा सूजल अछि, आ चिकित्सक मारपीटक सूचना पुलिसकेँ देने छथि। ई चोटक प्रमाण अछि; ककर आदेशपर कोन आदमी पीटलक, से एहि तथ्यसँ निर्धारित नहि। रचना पहिने

ओकर ‘हम किछु नहि कहब’ स्वीकार करैत छथि, प्रश्न रोकि ओकर हाल सुनबाक अवकाश दैत छथि। परिवारक प्रसङ्ग उठलाक पछाति रितेश स्वयं कहैत अछि जे मनोज ओकरा खोजि रहल छल। ओकर कहब अनुसार दू अनाम लोक ‘मनोज भैया नाराज छथि’ कहि आयल, किएक तँ ओ खाता-भर्ती छोड़ि देने छल। ई कथन दबावक सम्भावित शृंखला बनबैत अछि; मनोजक प्रत्यक्ष मारपीट अथवा स्पष्ट निर्देश एखनहुँ सिद्ध नहि।

एहि दृश्यक शिल्प कक्षाक बाहरी नाटकीय क्रियासँ बेसी विराम आ वाक्य-क्रम पर निर्भर अछि। रचनाक ‘हम एखन प्रश्नो नहि करब’ सुनि रितेशक चकित होयब, माएक नामक प्रसङ्ग आ उठि जाएबाक क्षणमे आयल पहिल स्वीकार—ई सभ अपन भीतर भयक सामाजिक भूगोल रखैत अछि। पाश्चात्य अपराध-आख्यानक तीव्र स्वीकारोक्तिक विपरीत एतय गवाही छोटे-छोट टुकड़ामे उभरैत अछि। मुदा आलोचना लेल ई स्मरण आवश्यक जे घायल व्यक्तिक अनुभवक सम्मान करब आ ओकर कथनक स्वतन्त्र जाँच करब एक-दोसराक विरोधी नहि। कथाकार संवेदनशील साक्षात्कार आ विधिक सत्यापनकेँ संग-संग रखबाक प्रयत्न करैत छथि।

मजिस्ट्रेटक सोझाँ आत्मस्वीकृति : कमीशन, ज्ञान आ ‘उदय’क भ्रम

दृश्य १६४मे रितेशक कथनक अधिक औपचारिक रूप अबैत अछि। ओ अभिषेककेँ खाता देबाक प्रस्ताव देने रहबाक स्वीकार करैत अछि; लोकविस्तारक क्षेत्रीय टोली सक्रिय खातापर कमीशन दैत छल। अवैधताक ज्ञान ओकरा आरम्भमे नहि, मुदा एक खाताधारक पुलिस-शिकायत लऽ एलाक बाद भेल—ई ओकर अपन कथन अछि, स्वतन्त्र रूपेँ सिद्ध मनोस्थितिक पूरा इतिहास नहि। ओ काज छोड़बामे विलम्बक कारण ‘पाइ’ बतबैत अछि। छोट उत्तर आर्थिक प्रलोभन आ ज्ञात जोखिमक बीच ओकर निर्णयक नैतिक भार स्पष्ट करैत अछि। तथापि रितेशकेँ केवल विवश पीड़ित कहि देब ओकर भागीदारी मेटा देत; केवल जानि-बुझि अपराधी कहब भय, कमीशन-आधारित कामक अनौपचारिकता आ शक्ति-सन्तुलनकेँ छिपा देत।

रितेश मनोजक लक्ष्य देबाक बात कहैत अछि, मुदा रात्रि कक्ष ‘सीधा चलबैत’ नहि, जानैत छल—एहन सीमित दावा करैत अछि। केशव वा प्रदीपसँ प्रत्यक्ष भेंट नकारैत अछि। तखन ‘उदय बाबू’ नाम एक बेर सुनबाक प्रसङ्ग अबैत अछि। ई एकटा आधा नाम अछि, जे उत्तरायण, उदयरेखा वा कोनो व्यक्तिक संक्षिप्त नामसँ तत्काल नहि जोड़ल जा सकैत। रचना ठीक ओहिना दर्ज करैत छथि—रितेशक कथन; स्वतन्त्र पुष्टि अपेक्षित। दृश्य १६१क पाँच ‘कौशल’ आ दृश्य १६४क अनिश्चित ‘उदय’ मिलि कथाक नाम-मीमांसा बनबैत अछि। ई नाम-मीमांसा नव्य न्यायक दृष्टिसँ अभिधान आ अभिधेयक भेदसँ जुड़ैत अछि: समान ध्वनि वा आद्याक्षर पर्याप्त पहिचान नहि, आ पहिचान सेहो कार्य-सिद्धि नहि।

अध्ययन-इकाई ४२ — मनोजक कथनक सीमा, वैध परामर्शक आवरण आ शैलेशक गृहत्रासदी (मूल दृश्य १६५–१६८)

मनोज नायक : क्रोध आ आदेशक बीच खाली ठाम

दृश्य १६५मे मनोज वकीलक संग दोसर पूछताछमे अबैत अछि। ओ रितेशपर क्रुद्ध होयबाक सम्भावना नकारैत नहि, मुदा पीटेबाक आदेश नहि स्वीकारैत। ‘नाराज होयब अपराध?’ प्रश्न अपना भीतर सही सामान्य भेद रखैत अछि; किन्तु ओ क्रोधकेँ आशङ्कासँ मुक्त करबाक स्वतः प्रमाण सेहो नहि। रचना जखन ‘उदय बाबू’ पूछैत छथि, मनोज ‘बहुत उदय छथि’ कहैत अस्पष्टता बनबैत अछि; लोकविस्तारक औपचारिक मालिक विराज चौधरीक नाम अलग दैत अछि। ओकर क्षणिक भाव-परिवर्तन अथवा ‘मोन नहि’क उत्तर दोषसिद्धि नहि। एहि ठाम रचनाक व्यंग्य वकीलकेँ अनुचित लगैत अछि आ ओ क्षमा माँगि प्रश्नक शैली ठीक करैत छथि। ई आत्म-संशोधनक क्षण साहित्यिक रूपसँ सूक्ष्म अछि। सत्य खोजनिहार पात्रक क्रोध अथवा बुद्धिमत्ता ओकरा विधिसँ ऊपर नहि उठबैत।

मनोजकेँ एखन बाहर जाए देल गेल, मुदा उपलब्ध वैधानिक फोन-अभिलेख, यात्रा आ वित्तीय व्यवहारक पुनर्जाँच चलैत अछि। एहि निर्णयसँ उपन्यास ‘छोड़ल गेल’ आ ‘निर्दोष सिद्ध भेल’क बीच भेद रखैत अछि। अपराध-आख्यानमे गिरफ्तारीकेँ प्रायः कथाक उपलब्धि मानल जाइत अछि; एहि कृतिमे स्वतंत्रता आ अनुसन्धानक समानान्तरता महत्त्वपूर्ण अछि। व्यक्ति विरुद्ध राज्यक शक्ति समयसँ पहिने लागू नहि हो—ई न्यायिक मर्यादा कथानकमे बारम्बार आगाँ अबैत अछि। मुदा एहि प्रक्रिया लेल घायल रितेशक असुरक्षा समाप्त नहि। एतय साहित्यक प्रश्न विधिक प्रश्नसँ पैघ अछि: राज्यक उचित संयम आ पीड़ितक तात्कालिक सुरक्षाकेँ कथामे कोना एक संग सोचल जाए?

उदयनाथ मिश्रक अनुबन्ध : कागजक वैधता आ व्यवहारक प्रश्न

दृश्य १६६मे लोकविस्तारक औपचारिक निदेशक-पञ्जीमे ‘उदय’ नहि भेटैत, मुदा सलाहकार-अनुबन्धमे उदयनाथ मिश्र भेटैत अछि। ओ व्यवसाय-विस्तारक परामर्शदाता अछि; पहिने विदेशी खेल-सट्टा सम्बन्धी कम्पनीमे विपणन अनुभव रहल। ई जीवनी-सूत्र अनुसन्धान लेल सान्दर्भिक भऽ सकैत अछि, मुदा पूर्व रोजगार अपने दण्डनीय कृत्य नहि। चिकित्सकीय प्रमाणपत्र सहित एक सप्ताहक समय माँगबाक औपचारिक आवेदन सत्य ठहरैत अछि; रचना प्रतीक्षा करैत छथि। एहि ठाम रोहित तुरन्त गिरफ्तारीक आशङ्का प्रकट करैत अछि, रचना अपराधक स्पष्ट आधार पुछैत छथि। स्वास्थ्य-सम्बन्धी तथ्यकेँ छल घोषित नहि करब स्रोत-विवेकक उदाहरण अछि।

एकर पाछाँ संस्थागत संरचनाक प्रश्न अछि। निदेशक, मालिक, सलाहकार, विपणन साझेदार आ वास्तविक भर्ती-कर्ताक भूमिका एकहि नहि। नियम बनबयवला, लाभ पाबयवला, आदेश देनिहार, आ नियमक दुरुपयोग करनिहार—ई सभ श्रेणी पृथक होएबाक सम्भावना अछि। भारतीय न्याय-दर्शनक प्रयोजन-परीक्षणमे परामर्शक लाभक अपेक्षा अपराधक ज्ञानक व्याप्ति प्रमाणित नहि। दृश्य ‘उदय’ नामक नाटकीय प्रस्तुति करैत अछि, मुदा ओहि सङ्केतक आगाँ विधिक मर्यादा राखैत कथाक विश्वसनीयता बचबैत अछि।

शैलेश मंडलक अनुपस्थिति : परिवार सेहो स्वतन्त्र पीड़ित

दृश्य १६७मे सरकारी विद्यालयक सहायक शिक्षक शैलेश मंडलक घर कथा-केन्द्र बनैत अछि। क्रिकेट देखनाइ सँ मोबाइल प्रतियोगिता, निजी दाँव, प्रारम्भिक जीत, पछातिक हार, ऋण, गिरवी पड़ल आभूषण आ पत्नीसँ असत्य—ई क्रम लतक आर्थिक-सामाजिक फैलाव देखबैत अछि। तथापि ई घटना सभ अनिवार्य रूपसँ सभ जुआ-उपयोगकर्ताक सामान्य जीवन-नियम नहि, उपन्यासमे रचल एक विशिष्ट पात्रक पतन अछि। शैलेश तीन दिनसँ अनुपस्थित अछि; मेजक

एक पन्नामे ‘हम सब बिगाड़ि देलहुँ’ लिखल अछि। एहि पाँतिक आधारपर मृत्यु वा आत्महत्याक घोषणा करब असङ्गत। कथा स्वयं खोज-दलक सक्रियता आ अनिर्णीत अवस्थाकेँ सुरक्षित रखैत अछि।

आरतीक ‘ई केवल नहि’ प्रतिवाद एहि भागक नैतिक केन्द्र अछि। रचना जुआ खेलेबाक अवैधानिकता आ घरक आर्थिक विनाशक अन्तर स्पष्ट करबाक प्रयासमे ‘केवल अपना कैं बर्बाद’ कहि बैसैत छथि। आरती अपन बच्चाक रोकल फीस, गिरवी गहना, असत्य आ नष्ट भरोसाक दृष्टिसँ एहि ‘केवल’ शब्दकेँ अस्वीकार करैत छथि। रचना क्षमा माँगैत छथि। ई संवाद दार्शनिक व्याख्यासँ अधिक प्रभावी एहि कारण जे एक अनपेक्षित शब्द पात्रक दृष्टिक अपूर्णता उघारि दैत अछि। शैलेश शोषित उपयोगकर्ता होयबाक संग पत्नी आ बच्चासभक क्षतिक उत्तरदायी सेहो अछि। ‘पीड़ित’ शब्दक एकाधिक सम्बन्ध ई दृश्य नीतिगत विमर्शक लेल खोलैत अछि।

जीवित भेटल मनुष्य : आत्मालोचना आ द्वितीयक भर्ती

दृश्य १६८मे शैलेश दूरक धर्मशालामे जीवित भेटैत अछि। ओ आत्महत्याक लेल नहि, घरक सामना नहि करि सकबाक असमर्थतासँ भागल छल—ई कथित प्रेरणा ओकर स्थिति-साक्ष्यक संग मिलि अन्तिम क्षणमे कथा-निर्णय बदलैत अछि। जे पन्ना दृश्य १६७मे मृत्युक सङ्केत बुझल जा सकैत छल, ओ दृश्य १६८मे अपराधबोधक एक अधूर उच्चारण बनि रहि जाइत अछि। कथाक ई परिवर्तन पाठकक अनुमान-पद्धति पर सेहो प्रश्न अछि: शोकपूर्ण पन्ना, अनुपस्थिति आ भय मिललासँ मृत्यु मानि लेनाइ कोना अनुचित अछि।

शैलेश कहैत अछि जे हार चुकाबय लेल ओकरा बैंक-खाता देबाक प्रस्ताव भेल; सरकारी वेतनक कारण अपन खाता नहि देलक, मुदा दोसर लोक लाबय लेल कमीशनक प्रस्ताव सुनि एक पड़ोसी युवकेँ पुछने छल। पड़ोसीक पिता अस्वीकार कएलनि। एहि घटनासँ पूर्ण आपराधिक भर्ती सफल भेल, एहन कोनो पाठ-साक्ष्य नहि। मुदा प्रयत्नक अस्तित्व नैतिक रूपसँ चिन्ताजनक अछि। शैलेश अपन शिक्षक-परिचय याद करैत कानैत अछि। एहि दृश्यमे मृत्यु नहि,

जीवन बचि रहलाक पछाति अपन कर्मक सामना करबाक कठिनता प्रमुख करुण-प्रसङ्ग अछि। कथा सामाजिक मानहानि, आत्मदोष आ सम्भावित सुधारकेँ एक साथ देखबैत अछि; कोनो एक भाव अपन आप अपराधमुक्ति नहि।

अध्ययन-इकाई ४३ — आँकड़ाक संशोधन, द्वि-परिकल्पना आ प्रमाणक नकारात्मक फल (मूल दृश्य १६९–१७२)

ईशानक प्रतिवेदन : परिकल्पनाक भाषिक अनुशासन

दृश्य १६९मे ईशानक जोखिम-प्रतिवेदनमे ‘ऋणग्रस्त जुआ-उपयोगकर्ता द्वारा द्वितीयक भर्ती’ नामक नव श्रेणी जुड़ैत अछि। पहिने जे उपभोक्ता हारैत अछि, सएह किछु अवस्थामे नुकसान भरबाक आशामे खाता-जुटेबाक कमीशनक दिस बढ़ैत अछि—एहन सम्भावना शैलेशक अनुभवसँ उघड़ैत अछि। ईशान पहिने व्यापक निष्कर्ष लिखैत अछि जे जाल पहिने हरबैत अछि, फेर हार चुकाबय लेल उपयोगकर्ताकेँ सेवा करबैत अछि। सुमेधा घोष नमूनाक आकार पुछैत छथि; नमूना छोट अछि। तखन ईशान भाषाकेँ ‘प्रारम्भिक नमूनामे एहन प्रवृत्ति देखाइत अछि’ रूपमे सीमित करैत अछि। ई परिवर्तन शैली-सुधार मात्र नहि, ज्ञानक उत्तरदायित्व अछि।

एहि दृश्यक शिल्पगत उपलब्धि ई जे उपन्यासक न्यायदर्शन केवळ पुलिस-पूछताछमे नहि, सामाजिक आँकड़ाक व्याख्यामे प्रवेश करैत अछि। एकल कथा-साक्ष्य आ व्यापक जनसंख्याक निष्कर्षक बीचक दूरी स्वीकारल गेल अछि। भारतीय तर्क-विवेकक हेतु पर्याप्त उदाहरण चाहैत अछि; पाश्चात्य अनुभवजन्य अनुसन्धान सेहो नमूना, चयन-पूर्वग्रह आ पुनर्परीक्षणक प्रश्न उठबैत अछि। ईशानक सहमति ओकरा नैतिक रूपसँ अधिक समर्थ देखबैत अछि, मुदा व्यक्तिगत पारिवारिक इतिहास ओकरा निष्पक्षताक पूर्ण प्रमाण नहि बनबैत। माएक अखबारमे उठल ‘हत्या छल?’ प्रश्न आँकड़ाक नमूना-सावधानीकेँ बीस वर्षक व्यक्तिगत पीड़ाक संग जोड़ि दैत अछि।

उदयनाथक प्रस्तुति : शब्दक द्विविध अर्थ

दृश्य १७०मे उदयनाथ मिश्र चिकित्सकीय समय-अवधि पछाति वकीलक संग जाँचमे उपस्थित होइत अछि। रचना ओकर व्यावसायिक सम्पर्क, मनोज, केशव,

उत्तरायण आ रात्रि कक्षक प्रसङ्ग एक-एक करि पुछैत छथि। ‘उपयोगकर्ता मूल्य-पुनर्प्राप्ति’ शीर्षक प्रस्तुतिकरण पर ‘यू.एम.’ आद्याक्षर अछि, आ उदयनाथ ओकर लेखकत्व स्वीकारैत अछि। ई एक दस्तावेजी पहिचान अछि। मुदा प्रस्तुतिकरणमे निष्क्रिय उपयोगकर्ताकेँ सक्रिय करब, सन्दर्भ-व्यवस्था, समुदाय-सहायता आ भुगतान-सुविधा सन वैध विपणन-भाषा अछि। ओहिमे ‘जुआ’, अवैध दाँव अथवा दोसरक बैंक-खाता भर्ती करबाक स्पष्ट निर्देश नहि। एकरा बिना आन प्रमाणक अपराधक लिखित निर्देश मानब पाठसँ बाहर जेबाक दोष होयत।

एतय शब्दक विवेकपर उपन्यासक आलोचना तीक्ष्ण अछि। विधिसम्मत शब्दक व्यावहारिक दुरुपयोग सम्भव अछि; मुदा प्रत्येक सामान्य परामर्श-पद अपराधक छद्मनाम नहि। ‘भुगतान सुविधा’क अर्थ ग्राहक-सहायता सेहो भऽ सकैत अछि, खाता-जालमे परिणत व्यवस्था सेहो—कोन अर्थ सन्दर्भमे कार्यान्वित भेल, तकर जाँच चाही। रचना व्याख्याक एहि संघर्षकेँ खुला रखैत छथि। नव्य न्यायमे विशेष्य, विशेषण आ सम्बन्धक सटीकता महत्त्वपूर्ण; दृश्य एहि शाब्दिक विश्लेषणकेँ उपन्यासक अनुसन्धान-शिल्प बनबैत अछि। मात्र आद्याक्षरक मिलान पर्याप्त नहि, लेखकत्व भेटलाक बादो कार्यान्वयनक स्वतंत्र प्रमाण आवश्यक अछि।

दू सम्भव संसार : न्यायिक अनुमानक कसौटी

दृश्य १७१मे उदयनाथक वित्तीय लेखा सामान्य देखाइत अछि—परामर्श-शुल्क, कर, घर; असामान्य नगदक स्पष्ट प्रविष्टि नहि। रोहित निराश अछि। रचना बौद्धिक रूपरेखा देनिहारक पैसा आन मार्गसँ आबि सकबाक सम्भावना कहैत छथि; मयंक ओकरा साँचो निर्दोष परामर्शदाता होयबाक सम्भावना सोझाँ रखैत अछि। अनिरुद्ध दुनू विकल्पक जाँच करबाक आग्रह करैत अछि। प्रश्न बनैत अछि: जँ उदयनाथ अपराधमे मुख्य भूमिका निभबैत, तँ कुन स्वतंत्र अभिलेख अपेक्षित; जँ वैध विपणन करैत, मुदा अधीनस्थ लोक ओकरा बिगाड़ैत, तँ कुन

तथ्य मेल खायत? एखन जे दस्तावेज उपलब्ध, ओ सभ दुनू परिकल्पनासँ मिलि सकैत अछि।

एहि तर्कक ताकत युक्ति-प्रतियुक्तिक जीतमे नहि, परिकल्पनाक पृथक्करणमे अछि। अनुसन्धान केवल पहिले बनल कथा लेल मेल-खाइत सङ्केत चुनब नहि; वैकल्पिक स्पष्टीकरणकेँ सेहो समुचित स्थान देत। औपचारिक रूपमे कहब तँ समान साक्ष्य जँ दुनू प्रतिद्वन्द्वी दावाक संग संगत हो तँ ओकर विभेदकारी बल सीमित रहैत अछि। ई सामान्य बौद्धिक सूत्र कृतिमे पात्रक जीवित अन्तर्द्वन्द्व बनैत अछि। तथापि बहुते संवाद प्रश्न–निषेध–सावधानीक एकहि लयमे चलबाक कारण भाषिक एकरसता सम्भव अछि। लेखक ई लयकेँ शैलेशक घरेलू आर्तनाद आ ईशान-सुमेधाक अनुसन्धान-कक्षद्वारा बीच-बीचमे तोड़ैत छथि।

सत्यप्रकाशक मृत्युक द्वि-परिकल्पना

दृश्य १७२मे वैह विधि बीस वर्ष पुरान दुर्घटना पर लागू होइत अछि। एक सम्भावना—सत्यप्रकाश भुगतान-जाल देखलक, दिगन्त नाराज भेल, हरिचरण भारी वाहन जुटौलक आ टक्कर योजनाबद्ध छल। दोसर सम्भावना—भुगतान-विवाद वास्तविक छल, हरिचरण वाहन आन काज लेल लऽ गेल, आ मृत्यु स्वतंत्र दुर्घटनामे भेल। पुरान बहीक ‘एच.एम.—राति—भारी’, आर्थिक हित, समयक समीपता—ई सभ दुनू संसारमे सम्भव अछि। वाहन-संख्या, हत्या-निर्देश, विशेष भुगतान आ प्रत्यक्ष गवाह अनुपस्थित अछि। एही कारण दृश्य हत्या सिद्ध करबाक स्थान पर अनुसन्धानक असमाप्ति प्रकट करैत अछि।

अनिरुद्धक ‘इतिहास शायद; अदालत शायद नहि’ भेद इतिहासलेखन आ न्यायिक निर्णयक अलग उत्तरदायित्वकेँ चिन्हैत अछि; मुदा एहि वाक्यकेँ ई निहितार्थ देब उचित नहि जे इतिहास बिना प्रमाणक हत्या स्थापित कऽ सकैत अछि। सामाजिक इतिहास सम्भावना, संरचना आ स्मृतिक विवेचन करैत अछि, जखन कि दण्डात्मक निर्णय लेल व्यक्तिनिष्ठ दोषक उच्च प्रमाण-सीमा आवश्यक अछि। परिवारक भरोसा सेहो अपन नैतिक सत्य रखैत अछि, मुदा

राज्य ओकरा दण्डक पर्याप्त आधार मानि नहि सकैत। उपन्यासक मानवीय त्रासदी एहि तीन धरातलक असमान निष्कर्षमे अछि। एकर आलोचनात्मक उपलब्धि कोनो रहस्यक जबरदस्ती समाधान नहि, वैकल्पिक कथनसभक बीच प्रमाणक रिक्ति देखब अछि।

अध्ययन-इकाई ४४ — मारपीटक आदेश-शृंखला, सौरभक उदय आ चश्माक स्मृति (मूल दृश्य १७३–१७६)

मनोजसँ रघुवीर धरि : फोनक समय आ कारणक परीक्षण

दृश्य १७३मे मनोज नायकक फोन-अभिलेख रितेशपर हमलासँ दू घण्टा पहिने सुरक्षा-सञ्चालक रघुवीर तांतीसँ सम्पर्क देखबैत अछि। तकर बाद रघुवीरक सम्पर्क ओहि दू युवामे एकक फोनसँ भेटैत अछि, जकरा अस्पताल लगक कैमरा हमलाक राति देखौने छल। ई तीन स्रोत—फोनक समय, सम्पर्क-क्रम आ दृश्य-पहिचान—एक संभाव्य क्रिया-शृंखला बनबैत अछि। मुदा फोन-सम्पर्ककेँ स्वतः हिंसाक आदेश नहि कहल जा सकैत। मनोज रघुवीरकेँ रितेशक संग बात करबाक कहने रहबाक स्वीकार करैत अछि, मारबाक आदेश नकारैत अछि। रघुवीर घरसँ अनुपस्थित, फोन बन्द आ वाहन नदारद रहब जाँचक गम्भीरता बढ़बैत अछि, मुदा उद्देश्य निर्धारित नहि करैत।

एहि दृश्यक शक्तिशाली प्रश्न अछि—‘बात कर’ कहबाक बाद हिंसा भेल तँ आदेशक सीमा कतय धरि? इतर व्यक्तिक कृत्यक उत्तरदायित्व निर्धारित करबाक लेल पूर्व-ज्ञान, प्रयोजन, सम्भावित परिणाम आ संवादक वास्तविक अर्थक जाँच आवश्यक अछि। उपन्यास केवल बाहरी शब्द पर भरोसा नहि करैत, मुदा शब्दकेँ बिना सन्दर्भ दोषसिद्धिक आधार सेहो नहि बनबैत। ई अनुसन्धानक ठोस अगिला डेग अछि: रितेशक कथनक बाहर फोन-अभिलेख आ कैमरा स्वतंत्र रूपसँ उपस्थित अछि। तथापि एहि प्रमाणक स्पष्टता वास्तविक आदेश-पाठ उपलब्ध भेला बिना सीमित रहैत अछि।

रघुवीरक ‘समझाबय’ : भाषाक नैतिकता आ विधिक अनुशासन

दृश्य १७४मे रघुवीर सीमा-जाँच चौकीपर वाहन-अभिलेखक मिलानसँ पकड़ल जाइत अछि। कोनो नाटकीय मुठभेड़ नहि; जाँचक साधारण प्रक्रिया अपराध-

कथाक दृश्यात्मक अपेक्षाकेँ बदलैत अछि। रघुवीर कहैत अछि जे मनोज केवल ‘बात’ करबाक कहल, आ दू लोककेँ ओहि कारण पठौल जे रितेश भागि सकैत छल। मारपीटक आदेश देबाक जिम्मा ओ नकारैत अछि। एहि उत्तरक प्रमाणगत मूल्य सीमित अछि, मुदा ‘समझेबाक’ सामाजिक बोलचाल कतेक प्रकारक दबावकेँ लुकाबि सकैत अछि—ई कथाक बौद्धिक केन्द्र बनैत अछि।

रचना प्रश्न उठबैत छथि जे बलवान लोक पठेबाक बाद शब्द बदललासँ काज बदलि जाइत अछि कि नहि। वकील दार्शनिक प्रश्नपर आपत्ति करैत अछि; रचना ओकरा हटाइत छथि। ई दृश्य विधि आ नैतिकताक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि: उपन्यासक पाठक भाषा भीतर लुकल हिंसाक अर्थ पर विचार कऽ सकैत अछि; न्यायिक अभिलेखकेँ विशिष्ट कार्य, निर्देश आ ज्ञानक प्रमाण चाही। जँ रचना वकीलक आपत्ति अनसुना कऽ नैतिक प्रश्नक आधार पर दोष घोषित करितथि तँ उपन्यास अपनहि प्रतिपादित न्याय-विवेक तोड़ि दैत। तकर बदला ओ प्रश्न कथात्मक विवेकमे जीवित रहैत अछि।

‘सौरभ भैया’ : अनेक स्रोतमे एक व्यक्ति, तथापि असिद्ध अपराध

दृश्य १७५मे पहिने अस्पष्ट ‘ऊपर’क संरचना नव साक्ष्य पबैत अछि। मनोजक पुरान सन्देशमे ‘सौरभ भैया’ द्वारा रात्रि लक्ष्य घटेबाक उल्लेख, केशवक नोटमे ‘एस.बी.’, रघुवीरक कथनमे कार्यक्रमक ‘सौरभ बाबू’, आ उदयनाथक वितरण-पञ्जीमे ‘एस. बर्धन’ भेटैत अछि। एहि परस्पर सङ्केतसभसँ सौरभ बर्धनक पहिचान उभरैत अछि—उत्तरायण सामाजिक निवेश निधिक परिचालन प्रमुख, निवेशक-पक्षक प्रतिनिधि; अम्बरक औपचारिक निदेशक नहि आ लोकविस्तारक स्वामी सेहो नहि। स्रोतसभक संगति व्यक्तिक पहिचान आ सम्पर्क-परिसर अधिक स्पष्ट करैत अछि, मुदा जुआ-जालक दण्डनीय निर्देशन स्वतः स्थापित नहि करैत।

रचना तत्काल गिरफ्तारीक स्थान पर यात्रा, ई-पत्र, बैठक आ वित्तीय हित खोजबाक निर्णय करैत छथि। सौरभ वकीलमार्फत सहयोगक बात जनबैत

अछि। ई सहज उपलब्धता निर्दोषताक प्रमाण नहि, ओहि प्रकारेँ ओकर पैघ पद अपराधक प्रमाण नहि। कथा 'गोहि पानिक ऊपर आँखि देखौलक कि दोसर छाया' रूपकसँ अपराध-उपन्यासक अपेक्षित केन्द्रबिन्दु बनबैत अछि, मुदा रूपक स्वयं अनुसन्धानक निष्कर्ष नहि। सामाजिक निवेश, विज्ञापनक प्रसार आ अवैध जुआक वास्तविक नियन्त्रणक बीछक दूरी एहिसँ आगाँक दृश्यक महत्त्व बढ़ैत अछि।

मृणालिनीक चश्मा : दोसराक दृष्टिक असम्भव उत्तराधिकार

दृश्य १७६मे अनुसन्धानक बहुस्तरीय फाइलसँ कथा अचानक सत्यप्रकाशक पुरान चश्मा लग पहुँचैत अछि। मृणालिनी मृत पतिदेवक बीस वर्षसँ राखल चश्मा पहिरैत छथि; दृश्य धुँधला देखाइत अछि, किएक तँ ओकर आँखिक नम्बर अलग छल। दृश्यात्मक स्तरपर ई साधारण भौतिक तथ्य, स्मृतिक दार्शनिक सीमाक रूपक बनैत अछि। मृतकक वस्तु सँ ओकर अन्तिम दृष्टि प्राप्त नहि भऽ सकैत। सत्यप्रकाश की देखलक, ककरा पहचानलक, कतेक जानल —ई प्रश्न चश्मासँ नहि, स्रोतसभक जाँचसँ उत्तरित होयत। वस्तुक अवशेष आ व्यक्तिक अन्तिम ज्ञान समान नहि।

मृणालिनी चश्मा फेर दराजमे नहि राखि फोटो लग रखैत छथि। ई कार्य मृत्यु-रहस्यक समाधान नहि, अपन स्मृतिसँ सार्वजनिक रूपेँ फेर सम्बन्ध जोड़बाक निर्णय अछि। देहरी बाहर बिज्जीक हलुक आवाज सुनाइत अछि, मुदा बिज्जी देखाइत नहि। रक्षक-प्रतीकक अनुपस्थित दृश्य ई घरक निःशब्द धैर्यक संग सुसंगत अछि। साहित्यिक शिल्पक दृष्टिसँ ई प्रसङ्ग चारि दृश्यक भीतर सर्वाधिक संक्षिप्त आ संवेदनशील अछि; न्याय-दर्शनक शाब्दिक सूत्रकेँ पात्रक वस्तु-संसारमे बदलि दैत अछि। एकर तुलना पहिनुक धोती, अलमारी, दैनिकी आ धनेश्वरीक कहबीक रूपकसँ कएल जा सकैत अछि, मुदा मूल उपन्यासमे नहि रहल स्मृतिक किछु नब दृश्य कल्पित करब अनुचित।

अध्ययन-इकाई ४५ — सौरभ बर्धन, समवायक सिद्धान्त आ निजी दाँवक स्वीकृत चर्चा (मूल दृश्य १७७–१८०)

ई-पत्रक अधूर अर्थ : ‘मुख्य ब्राण्डक जोखिम’

दृश्य १७७मे सौरभ बर्धनक फाइल शिक्षा, उत्तरायण निधि, अम्बरक आरम्भिक पूँजी, लोकविस्तारक रणनीतिक अनुबन्ध आ केशवसँ भेटक स्रोतसभ एकत्र करैत अछि। रात्रि कक्षक समयक एक निजी ई-पत्रक विषय ‘मुख्य ब्राण्डक जोखिम’ अछि। ई-पत्र सार्वजनिक रूपेँ नहि राखल जा सकयवला गतिविधिक विस्तार सीमामे रखबाक, लाभ उपयोगी रहबाक आ मूल संस्थाकेँ नहि डुबेबाक बात कहैत अछि। एहि शब्दसभमे नियामकीय अस्पष्टता, निजी वैध प्रयोग अथवा अवैध दाँव—तीनू व्याख्याक सम्भावना अछि; लिखित स्वीकृति मात्रसँ अपराधक पूर्ण स्वीकारोक्ति नहि भेटैत। मुदा स्वामित्व आ संस्थागत जोखिमक ज्ञानक प्रश्न अवश्य उभरैत अछि।

ई-पत्रक ‘पुरान स्रोतक हिसाब पी.एम. सँ अलग रखू’ पाँति वर्तमान आ पुरान वित्तीय इतिहासक सम्भावित सम्पर्क बनबैत अछि। ‘पी.एम.’क अर्थ पहिने अनिश्चित; अगिला दृश्यमे सौरभ प्रदीप महाजनक नाम स्पष्ट करैत अछि। आलोचनामे एहि क्रमक रक्षा महत्त्वपूर्ण अछि—दृश्य १७७मे जे आशङ्का, दृश्य १७८मे ओकर नामक पुष्टि; मुदा नामक पुष्टिक संग अनियमित वित्तीय कार्यक पूरा प्रयोजन सिद्ध नहि होइत। कथानकक निर्माण छोट वाक्यक अर्थ विस्तारक कला अछि। प्रमाणक क्रम भुलिते उपन्यासक रहस्य आ न्यायिक सटीकता दुनू क्षतिग्रस्त होयत।

औपचारिक परिचय आ व्यावहारिक ज्ञानक विरोधाभास

दृश्य १७८मे सौरभ जाँच लेल समयसँ पहिने वकीलक संग उपस्थित होइत अछि। उत्तरायण, अम्बर आ लोकविस्तारसँ सम्बन्ध स्वीकार करैत, रात्रि कक्षक ज्ञानकेँ पछातिक आन्तरिक जोखिम-प्रतिवेदन धरि सीमित कहैत अछि। मुदा

रचनाक सोझाँ राखल पुरान ई-पत्र ओही सन्दर्भक समयगत प्रश्न उठबैत अछि। सौरभ ई-पत्र अपन मानैत अछि, तकर ‘सार्वजनिक मंच’ वाक्यकेँ नियामकीय अस्पष्टतासँ व्याख्या करैत अछि, निजी दाँवक सम्पूर्ण ज्ञान नकारैत अछि, आ ‘पी.एम.’ केँ प्रदीप महाजन बतबैत अछि। एहि स्वीकारसँ प्रदीपक भूमिकाक जानकारीक सटीकता बढ़ैत अछि।

पहिने ‘प्रदीपक नाम मात्र सुनने’ आ पछाति ‘ओकर भूमिका जानैत रही’क बीच एक छोट कथनीय विरोधाभास भेटैत अछि। सौरभ संदर्भ अलग बुझबाक सम्भावना रखैत अछि; रचना ओकरा सम्भावनाक शब्द ओकरहि सोझाँ लौटबैत छथि। ई प्रश्नोत्तरक बल एतय आरम्भिक क्रोध अथवा पैघ रहस्योद्घाटनमे नहि, स्रोत-अनुकूल विरोधाभासक चिह्नीकरणमे अछि। विरोधाभास व्यक्ति-ज्ञानक असङ्गत रूप दिखबैत अछि; ओकरा तत्काल असत्यसाक्ष्य, अपराधक आदेश अथवा वित्तीय षडयन्त्रक अन्तिम प्रमाण मानि नहि सकैत। उपन्यास एहि नैतिक संयमकेँ प्रयोग-योग्य जाँच-शिल्प बनबैत अछि।

‘समवाय’ : संस्थागत संरचना आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

दृश्य १७९मे विभिन्न कार्यक एक संरचना उभरैत अछि—उत्तरायणक निवेश, अम्बरक मुख्य सार्वजनिक ब्राण्ड, लोकविस्तारक उपयोगकर्ता-वृद्धि, रात्रि कक्षक बाहरी निजी दाँव, प्रदीपक वित्तीय समायोजन, केशवक खाता-रूप सँ सम्बन्ध, मनोजक क्षेत्रीय भर्ती आ रघुवीरक दबाव। ई सूची कथाकारक अनुसन्धान-दृष्टिमे सम्भावित कार्य-विभाजनक रूपरेखा अछि; प्रत्येक नामक सम्बन्ध समान कोटिक अपराध-स्वीकृति नहि। रचना पूछैत छथि जे जँ सभ कियो अपन-अपन अंश जानैत छल तँ सम्पूर्ण संरचना ककर ज्ञानमे छल? सौरभ ‘व्यवस्था’क स्वतः चलबाक वाक्य प्रयोग करैत अछि। एहि उत्तरमे संस्थागत व्यवहारक किछु सच्चाइ होयबाक सम्भावना अछि, मुदा व्यक्ति-विशेषक निर्णय लुकाबयवला बचाव सेहो।

‘समवाय’ पद एहि ठाम उपयोगी दार्शनिक सूत्र बनैत अछि। अनेक अलग कार्य एक संस्थागत परिणाममे जुड़ैत अछि; मुदा समवायक अस्तित्व मात्रसँ सभ सहभागी व्यक्तिक समान दण्डनीय अभिप्राय निर्धारित नहि। नव्य न्यायक सम्बन्ध-विचारकेँ कृतिमे प्रत्यक्ष विधिक सिद्धान्त बनाकऽ आरोपित करब आवश्यक नहि; सामाजिक-संरचनात्मक अर्थमे ई रूपक देखबाक पर्याप्त आधार अछि। पाश्चात्य संस्थागत अपराध-विमर्शमे विभाजित उत्तरदायित्वक प्रश्न जेकाँ, एतय सेहो ‘हम केवल अपन अंश जनैत रही’ वाक्य जाँचक बाधा बनैत अछि। लेखकक उपलब्धि व्यक्तिगत नायक–खलनायकक मुकाबले सङ्गठित सामाजिक प्रक्रियाक ज्ञान पर बल देब अछि। सीमा ई जे ‘व्यवस्था’क आलोचनात्मक अमूर्तन विशिष्ट पीड़ितक देह, घर आ धनसँ अलग भऽ सकैत अछि; तेँ शैलेश, आरती, रितेश आ मृणालिनीक प्रसङ्ग एहि सिद्धान्तकेँ धरातल देत।

उत्तरायणक बैठक : अनिश्चिततासँ सन्दर्भयुक्त स्वीकार धरि

दृश्य १८०मे सौरभक फोन आ ई-पत्रक कानूनी परीक्षणसँ उत्तरायणक अतिथि-गृहमे भेल बैठकक अभिलेख भेटैत अछि। उपस्थित व्यक्तिसभक नाम सौरभ, केशव, मनोज, उदयनाथ आ प्रदीप अछि; बैठकक विषय ‘द्वितीयक उपयोगकर्ता परिसंचरण’; समय रात्रि कक्षक वित्तीय गतिविधि तेज होयबासँ लगभग छह महीना पहिने। एकटा बैठक-पञ्जी संस्था-सम्बन्धक नव साक्ष्य अछि, मुदा एतबे देखियै बैठकमे अवैध दाँवक चर्चा स्वयं सिद्ध नहि होइत। एही कारण रचना उदयनाथकेँ पुनः पुछैत छथि। ओ शब्दकेँ ग्राहकक पुनर्संक्रियता कहैत अछि; खाता-भर्ती नकारैत, हारल उपयोगकर्ता आ भुगतान-सुविधाक किछु चर्चा स्वीकारैत अछि। विभिन्न सहभागी व्यक्तिक अलग भूमिका एकहि कोठलीमे उपस्थित रहलाक कारण सामान्य विपणनक व्याख्या अधिक प्रश्नग्रस्त बनैत अछि।

अन्तिम प्रत्यक्ष प्रश्न—बैठकमे निजी दाँवक चर्चा भेल कि नहि—पर उदयनाथ दीर्घ मौनक बाद ‘हाँ’ कहैत अछि। एहि स्वीकारसँ प्रारम्भिक अनुमानक एक

निर्दिष्ट भाग कथनक स्तरपर पुष्ट होइत अछि: निजी दाँवक चर्चा भेल। मुदा चर्चाक पहलकर्ता, सहभागीसभक व्यक्तिगत उद्देश्य, अवैधताक निश्चित ज्ञान, वास्तविक बैंक-खाता भर्ती, धन-परिवहन आ योजनाबद्ध अपराध—एहि सभक पृथक परीक्षण शेष अछि। उदयनाथ ‘म्यूल खाते’ शब्द नकारैत, ‘भुगतान वैकल्पिकता’क चर्चा स्वीकार करैत अछि। शब्दक अस्पष्टता एखनहुँ समाप्त नहि; मुदा सामान्य रूपसँ बनल जोखिम-संबन्धक प्रश्न आब विशिष्ट बैठक आ व्यक्तिक नामक संग जाँचल जा सकैत अछि। कथाक अन्तिम वाक्य अटकलबाजीसँ तथ्य दिश एक डेग बढ़बाक यथार्थ संकेत दैत अछि, अन्तिम दोषसिद्धि नहि।

शिल्पगत उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

दृश्य १७७–१८० एकहि साक्ष्यकेँ चारि रूपमे प्रस्तुत करैत अछि—आन्तरिक ई-पत्र, जाँचक प्रश्नोत्तर, संस्थागत कार्य-विभाजन आ बैठकक पुनर्प्रश्न। एहिसँ रहस्यक समाधान आकस्मिक अद्भुत उद्घाटनक रूपमे नहि, पाँति-पाँति अर्थ बदलैत विकसित होइत अछि। छोट संवाद आ विरामक लय पाठककेँ प्रमाणक सूक्ष्म अन्तर देखने रहबाक बाध्यता दैत अछि। किन्तु ‘एखन सिद्ध नहि’, ‘एक डेग’ आ ‘अन्तिम निर्णय नहि’ सन आवर्ती वाक्य अधिक बार उपयोग भेला पर कथात्मक गति पर दार्शनिक व्याख्याक भार बढ़बाक जोखिम अछि। लेखक एहि सीमाकेँ परिवारक स्मृति, घायल रितेशक देह आ शिक्षक शैलेशक अपराधबोधक प्रसङ्गसँ सन्तुलित करैत छथि। वर्तमान बैचक उपलब्धि कोनो न्यायिक फैसला नहि, संस्थागत सम्पर्कक अधिक विशिष्ट मानचित्र अछि।

नवम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य १६१–१८० : नाम, अभिलेख, सामाजिक क्षति आ समवाय

पुरान मृत्यु-जाँच आ वर्तमान डिजिटल अपराधक भिन्न प्रगति

दृश्य १६१–१६२मे पुरान वाहन-बही आ चित्र-पहिचानसँ हरिचरणक सम्भावित सम्पर्कक एक नव दस्तावेजी आधार बनैत अछि, मुदा दुर्घटनामे ओ वाहन प्रयुक्त भेल कि नहि, ई अनिश्चित रहल। वर्तमान जाँचमे दृश्य १७३क फोन-सम्पर्क, १७५क अनेक स्रोतमे सौरभक नाम आ १८०क बैठक-अभिलेख एक अपेक्षाकृत निकट कालक गतिविधि-संरचना खोलैत अछि। एहि भेदक मूल कारण कथामे उपलब्ध साक्ष्यक प्रकृति अछि—पुरान अभिलेख आ क्षीण स्मृति एक दिस, नव डिजिटल पञ्जी आ जीवित सहभागीसभक बयान दोसर दिस। मुदा आधुनिक डिजिटल दस्तावेज सेहो सन्दर्भसँ परे स्वतः निर्दोष अथवा दोषी निर्धारित नहि करैत। दुई अन्वेषणक तुलना ‘कतेक कागज भेटल’क अपेक्षा ‘कुन दावाक लेल कतेक कागज पर्याप्त’क प्रश्न उठबैत अछि।

अनिश्चित आद्याक्षर, प्रमाणित नाम आ क्रियाक प्रमाण

‘एच.एम.’, ‘उदय बाबू’, ‘यू.एम.’, ‘एस.बी.’ आ ‘पी.एम.’ एहि बीस दृश्येमे भिन्न-भिन्न ज्ञान-स्तर पर अबैत अछि। दृश्य १६२मे ‘एच.एम.’क संग ‘हरिचरण एम.’क व्यापारिक संगति भेटैत अछि; दृश्य १६६ आ १७०मे उदयनाथक परिचय आ प्रस्तुतिकरणक लेखकत्व; दृश्य १७५मे अनेक स्वतंत्र स्रोतसँ सौरभ बर्धन; दृश्य १७८मे ‘पी.एम.’क अर्थ प्रदीप महाजनक रूपमे ओकर प्रत्यक्ष कथन। मुदा नाम-पहिचान, सम्बन्धक अस्तित्व, गतिविधिक ज्ञान, निर्देश, अभिप्राय आ अपराध—छहू एकहि प्रमाण-चरण नहि। नव्य न्यायमे पक्ष–साध्य–हेतु–व्याप्तिक भेद एतय आलोचनात्मक कसौटी अछि। जे व्यक्ति बैठकमे उपस्थित छल, ओ सभा कथित अवैध निर्णयक सह-अपराधी होयत—एहन निष्कर्ष लेल स्वतंत्र आधार चाही।

पीड़ितक अनेकता आ कारणक सामाजिक परत

दृश्य १६३क घायल रितेश खाता-भर्तीक पूर्व सहभागी अछि, संगहि हिंसाक पीड़ित। दृश्य १६७–१६८क शैलेश जुआ-जालसँ आर्थिक रूपेँ टूटल अछि, मुदा आरती आ बच्चासभ ओकर निर्णयक क्षति भोगैत छथि; पड़ोसीक खाता माँगबाक प्रयत्न ओकर अपन उत्तरदायित्वक प्रश्न अछि। दृश्य १६९मे ईशानक प्रारम्भिक प्रतिवेदन एहि द्वितीयक भर्ती-प्रक्रियाकेँ सन्दर्भ सहित देखबैत अछि। एही प्रकार सबीनाक रोकल खाता, सौमित्रक जमानत, मोहन पासवानक परिवार आ मृणालिनीक बीस वर्षक प्रतीक्षा पहिनुक समीक्षा-बैचसभमे पीड़ितक भिन्न रूपक उदाहरण अछि। तुलनामे ई स्पष्ट अछि जे व्यक्ति एक प्रसङ्गमे शोषित आ दोसर प्रसङ्गमे अन्यक क्षतिक सहभागी हो सकैत अछि; एतयसँ ओकर कृत्यक नैतिक लेखा नहि मेटाइत, बल्कि अधिक सटीक बनैत अछि।

प्रमाणगत नकारात्मक फल सेहो उपलब्धि अछि

दृश्य १६१क फोटो-पहिचान अनिर्णीत रहब, १६५मे मनोजकेँ तुरन्त नहि पकड़ल जाएब, १६६मे चिकित्सकीय समय स्वीकृत होयब, १७०क प्रस्तुतिकरणमे अवैधता स्पष्ट नहि भेटब आ १७२मे दुनू मृत्यु-परिकल्पनाक सम्भव रहब—ई सभ ‘जाँच विफल’क नाम पर हटाओल नहि जाएबाक चाही। न्याय-दर्शनक दृष्टिसँ असिद्धता ज्ञानक एक वास्तविक अवस्था अछि; साहित्यिक दृष्टिसँ सएह अवस्था रोमाञ्चक प्रतीक्षा बनबैत अछि। एहि कृतिमे गलत निष्कर्ष न देबाक अनुशासन बारम्बार कथानकक गति धीमा करैत अछि, मुदा न्यायिक विषयक गम्भीरता ताहिमे निहित अछि। सीमित उपलब्धि सीमिते कहल जाए, ई उपन्यासक वाक्य-नैतिकता अछि।

घरक वस्तु आ सरकारी अभिलेख : विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि

रजतक गुमनाम गोदाममे राखल बही, रितेशक अस्पतालक चिकित्सकीय पञ्जी, उदयनाथक कम्पनी-अनुबन्ध, सौरभक ई-पत्र आ मृणालिनीक चश्मा—ई सभ

इतिहासक अलग धारक वस्तु अछि। पहिल चारिमे दिनाङ्क, हस्ताक्षर, औपचारिक अधिकार अथवा वैधानिक प्राप्तिक प्रश्न अछि; चश्मामे व्यक्तिक अनुपस्थितिक अनुभव। घरक वस्तु विधिक प्रमाणक स्थान नहि भरैत, मुदा सरकारी अभिलेख सेहो मृतकक जीवनक सम्पूर्ण अर्थ नहि दैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ राज्य, बाजार, परिवार आ परिधिक लोकक वाचिक कथनसभकेँ साथ रखलासँ सामाजिक घटनाक बहुस्तरीय इतिहास उभरैत अछि। एक पञ्जीमे हरिचरणक नाम देखनाइ आ आरतीक रोकल बच्चाक फीस दू अलग घटनाक विवरण अछि, मुदा वित्तीय जालक ऐतिहासिक प्रभाव बुझबाक लेल दुनू आवश्यक स्रोत-श्रेणी अछि।

रक्षक-प्रतीकक नव अर्थ : आरोपसँ बेसी सजग प्रश्न

‘बिज्जी’क पहिल घरेलू युद्ध प्रत्यक्ष गहुमनसँ छल। मध्यभागमे धनेश्वरीक कहबी आ मृणालिनीक देहरी रक्षक रूपककेँ पुनः खोलैत अछि; दृश्य १७६मे बिज्जीक केवल ध्वनि अछि, प्रत्यक्ष दर्शन नहि। दृश्य १७५मे गोहिक आँखिक सम्भावना अपराध-जालक अपेक्षित केन्द्रक रूपक अछि। मुदा कथा स्वयं कहैत अछि—‘कि ई केवल दोसर छाया’। अतः बिज्जीकेँ रचना वा ईशान मात्रक स्थिर प्रतीक बना देब शिल्पकेँ सीमित करत। ई रूपक एकाधिक कार्य करैत अछि—जागल पहरा, प्रश्न, धैर्य, असत्य निष्कर्षक प्रतिरोध आ घरक असुरक्षित स्मृति। गोहिक पहिचान अपराधी नामक रूपमे निश्चित कऽ देब कथा अभी अनुमति नहि दैत।

प्रश्नोत्तरक लय : नाटकीय लाभ आ पुनरावृत्तिक जोखिम

दृश्य १६१–१८०मे अनेक संवाद लगातार छोट प्रश्न, नाम, प्रतिप्रश्न आ मौनसँ बनल अछि। एकर गुण ई जे दस्तावेजी दावे अनावश्यक भाषणसँ अलग रहैत अछि आ पाठक तुरन्त प्रमाणक अन्तर देखैत अछि। दोष ई सम्भव जे समान प्रश्नोत्तर-रचना दृश्यसभकेँ स्वरमे अत्यधिक एकसमान बना दे। लेखक शैलेशक घरक असफलतासँ, रचनाक ‘केवल’ पर क्षमा माँगबासँ, मृणालिनीक चश्मा

पहिरबासँ आ सुमेधाक नमूना-संशोधनसँ एहि स्वरमे आवश्यकीय विविधता अनैत छथि। एहि विविधताक कारण कथा केवल जाँच-रिपोर्ट नहि रहैत; मानवीय विस्थापनक अनुभव सेहो बनैत अछि। आगामी दृश्यसभक आलोचनामे कथानकक वैधानिक अनुशासनक संग पात्रसभक स्वतन्त्र मनोवैज्ञानिक विस्तारक सेहो परीक्षा अपेक्षित अछि।

नवम बैचक अन्तिम प्रमाण-स्थिति

दृश्य १८० धरि मूल पाठक आधारपर सुरक्षित निष्कर्ष ई अछि: ‘एच.एम.’क पुरान व्यापारिक प्रविष्टि हरिचरण मंडलसँ सम्भावित सम्बन्धक दस्तावेजी समर्थन दैत अछि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु योजनाबद्ध हत्या छल—ई सिद्ध नहि; रितेशक चोट आ खाता-भर्तीक पूर्व भागीदारीक कथन अछि, मारपीटक आदेश-शृंखला एखन जाँचाधीन; उदयनाथ मिश्र प्रस्तुतिकरणक लेखकत्व स्वीकारलक, मुदा ओकर अवैध प्रयोगक ज्ञान अथवा निर्देशन एखन असिद्ध; शैलेश जीवित भेटल, ओकर जुआ-ऋण आ पड़ोसीक खाता माँगबाक प्रयत्नक विवरण भेटल; मनोज–रघुवीर सम्पर्कक समयगत सम्बन्ध स्वतंत्र जाँचक आधार बनल; सौरभक संस्थागत सम्पर्क अधिक स्पष्ट भेल; उत्तरायणक बैठकमे निजी दाँव पर चर्चा भेल, ई उदयनाथ स्वीकार कएलक, मुदा सम्पूर्ण आपराधिक उत्तरदायित्व एखन निर्णयाधीन अछि। एहि सीमा सभकेँ सुरक्षित रखिते बीस दृश्यक आलोचनात्मक प्रगति वास्तविक मानल जा सकैत अछि।

अध्ययन-इकाई ४६ — विधिक सावधानी, कारागारक अपमान आ धनक अदृश्य यात्रा (मूल दृश्य १८१-१८४)

उदयनाथक गिरफ्तारी स्थगित : स्वतन्त्रताक विरुद्ध प्रमाणक भार

दृश्य १८१क आरम्भ कोनो नाटकीय गिरफ्तारीसँ नहि, गिरफ्तारी नहि करबाक निर्णयसँ होइत अछि। उत्तरायणक अतिथि-गृहमे निजी दाँवक चर्चा भेल—ई पूर्व दृश्यसँ प्राप्त कथनक समर्थित अंश अछि; मुदा बैठकमे उपस्थित उदयनाथ मिश्रक अपराधमे सहमति छल कि नहि, एतय निर्णय स्थगित अछि। रोहितक प्रश्न—बादमे वैह घटना भेल तँ आओर कतेक प्रमाण चाही—तत्काल न्याय चाहनिहार पाठकक अधीरताक प्रतिनिधित्व करैत अछि। रचनाक उत्तर एहन नियमक पक्षमे अछि जे आरोपित व्यक्तिक सामाजिक प्रतिष्ठा अथवा पदक अनुसार नहि बदलय। एहि ठाम प्रक्रिया अपराधीक रक्षा करबाक युक्ति नहि, निर्दोषक स्वतन्त्रताक अनिवार्य सुरक्षा अछि। पाठककेँ पहिने परिणाम देखबाक नहि, प्रमाण जुटेबाक मूल्य बुझबाक चुनौती भेटैत अछि।

भारतीय प्रमाण-विचारमे दृष्ट घटना आ ओकर कारण-सम्बन्धक बीच जे दूरी अछि, रचनाक प्रश्न ओहि दूरीक व्यावहारिक रूप अछि। ‘एक बैठक भेल’, ‘ओतय दाँवक चर्चा भेल’ आ ‘बैठकक अमुक व्यक्ति गैरकानूनी कारोबार लेल सम्मति देलक’—ई तीन पृथक प्रतिज्ञा अछि। पहिल दूटा स्वीकार भेला पर तेसर अपने नहि सिद्ध होइत। नव्य न्यायमे सम्बन्धक अवच्छेदक जकाँ तर्कपदक सूक्ष्म भेदक आवश्यकता अछि; मुदा उपन्यासक पुलिस-प्रक्रियाकेँ शास्त्रीय सिद्धान्तक प्रत्यक्ष विधिक विधान कहल नहि जा सकैत अछि। साहित्य ओहिसँ विवेकक तुलनात्मक प्रकाश ग्रहण करैत अछि, कानून अपना निर्धारित प्रमाण-कसौटीसँ चलैत अछि।

प्रदीप आ शैलेश : एकहि कारागारमे दू प्रकारक अपराधबोध

दृश्य १८२मे प्रदीप महाजन विधिक सहायता कक्षमे पत्र लिखबाक आ तिथि बुझबाक काज करैत अछि। ई व्यवस्था ओकर पूर्व कृत्य मेटबैत नहि; बल्कि कारागारक भीतर मनुष्यक कौशलक एक शेष नैतिक उपयोग देखबैत अछि। एहि स्थानपर शैलेश मंडल फेर भेटैत अछि—ओ शिक्षक जकर अनुपस्थितिक जाँच पछाति घर वापसी भेल छल, मुदा ऋणक दबावमे खाता भर्ती करौने ओ फेर आरोपक जालमे पहुँचि गेल। शैलेशक ‘दबाव’ आ पुलिसक ‘जानि-बुझि कमीशन’ दू अलग व्याख्या अछि। ऋणग्रस्त होयब अपराधक स्वतः निष्कृति नहि; तखने दबावक उपस्थिति सेहो इरादा आ विकल्पक जाँचमे अप्रासंगिक नहि। लेखक एकहि व्यक्ति कँ पीड़ित आ सम्भावित सहायक-अपराधी दुनू रूपमे पढ़बाक कठिनाई बनौने रखैत छथि।

दृश्यक सर्वाधिक असहज स्थान ओ अछि जतय शैलेश बाहर निकलनाइ चाहैत नहि। न्यायिक जमानत सम्भावित होइतो बच्चाक आँखिमे अपन पतन देखबाक भय ओकरा बन्द स्थानमे अपेक्षाकृत सुरक्षित अनुभव करबैत अछि। कारागारक शारीरिक बन्धन आ बाहरक सामाजिक लज्जा विरोधी स्थितिमे अछि; परन्तु सामाजिक लज्जाक भयकँ विधिक दोषसिद्धिक पर्याय मानल नहि जाए। उपन्यास समाजक एहन दण्ड-व्यवस्थाकँ अनावृत करैत अछि जकर कोनो औपचारिक आदेश नहि, मुदा जे परिवार, विद्यालय आ पड़ोसक सम्बन्धमे निरन्तर क्रियाशील अछि। ई एक प्रकारक अनौपचारिक सामाजिक न्यायालय अछि जकर अपीलक निश्चित प्रक्रिया नहि।

तृषाक प्रश्न : क्षमाक स्थानपर भरोसाक हानि

दृश्य १८३मे प्रदीपक बेटी तृषा विद्यालयमे पिताक धनशोधन-संबन्धी टिप्पणी सुनबाक अनुभव अनैत अछि। प्रदीप ओहि आघातक लेल क्षमा माँगैत अछि, मुदा बेटी ओकरा निजी क्षमासँ आगाँ सार्वजनिक अपमानक प्रश्नपर घुरबैत अछि। एहि प्रसंगमे लेखक बालिकाकँ केवल करुणाक उपकरण नहि बनबैत छथि; ओकर प्रश्न अपन विवेक राखैत अछि। ‘अहाँ केलहुँ?’क उत्तरमे प्रदीप

पहिने जानि-बुझि गलत कागज, फेर नौकरी, भय आ आदतिक क्रम स्वीकार करैत अछि। ई आत्मविवरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: दुष्कर्मक आरम्भ एक बेरक आकस्मिक भूल नहि रहि, सामान्य कार्यालयी दिनचर्याक रूप धारण करैत अछि। तथापि आत्मविवरण पूर्ण न्यायिक स्वीकारोक्ति बराबर नहि; कथनक प्रमाण-सीमा एतय सेहो रहत।

तृषाक कथन—ओ घृणा नहि करैत, मुदा भरोसा नहि करैत—कथाक नैतिक केन्द्र अछि। क्षमा आ विश्वास अलग-अलग सम्बन्धगत क्रिया अछि। प्रदीपक पश्चात्ताप वांछनीय हो सकैत अछि, मुदा तृषासँ भरोसा तत्काल लौटा देबाक अपेक्षा अनुचित ठहरत। दृश्य काँचक दुनू कातक भिन्न प्रतिक्रिया पर रुकैत अछि: पिता कानैत अछि, बेटी मौन अछि। एहि असममित भाव-सज्जासँ उपन्यास दोषक परिणामकेँ अत्यधिक व्याख्यान बिना मूर्त करैत अछि। पाठकक न्यायबोधकेँ अपराधक आर्थिक क्षति सँ निकलि पीढ़ीक आन्तरिक क्षति धरि बढ़बाक अवसर भेटैत अछि।

क्षितिज सम्पदा : वैध कारोबारमे सन्दिग्ध रकमक प्रवेश

दृश्य १८४मे सौरभ बर्धनक निजी वित्तीय अभिलेख सामान्य देखाइत अछि। अनुसन्धान उत्तरायण निधिक सहायक ‘क्षितिज सम्पदा प्रबन्ध’ धरि पहुँचैत अछि, जतय व्यापारिक ऋणक ब्याज असामान्य रूपेँ कम अछि। तीन व्यवसाय वास्तविक—धान, पैकेजिंग आ छोट परिवहन—अछि; एहि तथ्यक कारण कारोबारकेँ सम्पूर्ण काल्पनिक मुखौटा कहब पाठ-विरुद्ध होयत। समस्या लेनदेनक मार्ग आ स्रोतमे अछि। समयसँ पहिने ऋण वापसी, व्यवसायिक नगदीक तुलनामे कमजोर प्रवाह, आ दू खातामे म्यूल-जालसँ जुड़ल मध्यस्थ रकम—ई साक्ष्य सभ एक सम्भावित धनशोधन-परिकल्पना बनबैत अछि। मयंक ओकरा सम्भावना कहैत अछि; रचना ओकर सिद्धि अलगसँ पुछैत छथि। कथा एही प्रश्नसँ अपन नैतिक सावधानी बचबैत अछि।

एहि ठाम अवैध लाभक केवल रूप बदलब नहि, अभिलेखक नैतिक प्रभाव बदलनाइ सेहो विषय अछि। जे रकम पहिने हार, दबाव आ खाता-भर्तीक अनुभवसँ जुड़ल छल, से व्यापार, ऋणक पूर्व-भुगतान आ निवेश-लाभक परिच्छन्न श्रेणीमे पहुँचैत अछि। अलग-अलग कागज अपन स्तरपर व्यवस्थित देखाइत अछि, मुदा संयुक्त क्रममे नव प्रश्न बनैत अछि। एहि निरीक्षणक कलात्मक बल लेखा-विवरणक विस्तारमे नहि, भिन्न सामाजिक संसारक बीच रकमक यात्रा देखेबामे अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे पाठ प्रस्तुत प्रवाहक सामान्य सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि, मुदा सभ मध्यस्थक प्रत्येक व्यक्तिगत अपराध-बोध अथवा लाभांश निश्चित नहि करैत; समीक्षाकेँ ओहि रिक्त ठाम पर अनुमान नहि भरबाक चाही।

चारि दृश्यकेँ एक संग पढ़बाक शिल्पगत फल

ई चारि दृश्य एकरूप कथानक नहि अछि; पहिलमे स्वतन्त्रताक प्रमाण-सीमा, दोसरमे सामाजिक लज्जाक दण्ड, तेसरमे परिवारक भरोसा, आ चारिममे स्वच्छ देखाइत वित्तीय पाँतिक पीछे निहित सन्दिग्ध स्रोत अछि। ताहिमे केन्द्रीय सम्बन्ध ‘दृश्यमान अवस्था’ आ ‘अप्रत्यक्ष कारण’क भेद अछि। न्यायिक गिरफ्तारी नहि होयब निष्क्रियता नहि; कारामे बैसल व्यक्ति स्वतः सुधरल नहि; बेटी द्वारा पिता सँ बातचीत करब क्षमा नहि; व्यवस्थित वित्तीय फाइल वैध स्रोतक अन्तिम प्रमाण नहि। लेखक प्रश्नोत्तरक बारम्बार प्रयोग करैत छथि—ई गद्यकेँ सजग बनबैत अछि, मुदा कखनो एकरे सूत्रक पुनरावृत्तिसँ पात्रक व्यक्तित्व तर्क-कक्षजकाँ समान सुनाइत अछि। दृश्य १८३क असममित मौन ओहि पुनरावृत्तिक सफल कलात्मक प्रतिकार अछि।

अध्ययन-इकाई ४७ — पूछताछ, ई-पत्र, सार्वजनिक चेहरा आ पुरान वाहन (मूल दृश्य १८५-१८८)

सौरभक उत्तरमे संस्था आ व्यक्तिगत ज्ञानक दूरी

दृश्य १८५मे रचना सिन्हा क्षितिज सम्पदाक ऋण-नीति, सौरभक समिति-सदस्यता, तीन कम्पनीक असामान्य ब्याज आ पूर्व-भुगतानक प्रश्न क्रमशः रखैत छथि। सौरभ सामान्य संस्थागत उत्तर दैत अछि—हजार निर्णयमे तीन ऋण, रणनीतिक निवेश, सफल व्यवसाय—मुदा म्यूल-जालक रकमक प्रश्न पर चुप पड़ैत अछि। वकील स्रोत-साक्ष्य माँगैत छथि; रचना तालिका रखैत छथि। एकरामे चुप्पी अपराध-सिद्धिक स्वतः प्रमाण नहि; उपन्यासक बल अभिलेखक आगाँ अधिकारिक स्पष्टीकरणक कसौटी पर अछि। सौरभ आलोक भसीन नामक पूर्व वित्त प्रमुख दिस उत्तरदायित्वक मार्ग मोड़ैत अछि; ई उत्तर सच अथवा उत्तरदायित्व टारबाक युक्ति—दुनू सम्भावना एहि क्षण खुलल अछि।

‘सिंगापुर, शायद’ पदपर रचनाक प्रतिक्रिया विशेष उल्लेखनीय अछि। उपलब्ध सूचना अनिश्चित रहल तँ विदेशी स्थानक चर्चा अपने सनसनीखेज गिरफ्तारीक रूप नहि लेत। लेखक वैश्विक वित्तक आकर्षक रहस्यक स्थानपर अनुसन्धानक सीमा स्वीकार करैत छथि। ई आत्मसंयम कलात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि: जे कथा दुरूह आर्थिक जाल पर चलि रहल अछि, ओहिमे प्रत्येक नव नामकेँ तत्काल कुटिल नियन्ता बनबैत गेलासँ विश्वसनीयता नष्ट भऽ सकैत छल। रचनाक जाँचपद्धति एहन सम्भावित अतिनाटकीयताक रोक बनैत अछि।

आलोकक ई-पत्र : शब्दक दू विधिसम्मत सम्भावित अर्थ

दृश्य १८६क वैधानिक रूपेँ उपलब्ध कम्पनी-लैपटॉपक पुरान बैकअपसँ एक महत्त्वपूर्ण ई-पत्र भेटैत अछि। आलोक ‘रात्रि प्रवाह’क प्रत्यक्ष सम्बन्ध अलग रखबाक लेल सहायक ऋण-विधिक बात लिखैत अछि; सौरभ मुख्य ब्राण्ड आ निधिक पृथक्करणक उत्तर दैत अछि। ई दू पाँति सौरभक पूर्व ‘एहि स्तरक लेनदेन नहि जनैत रही’क दावापर प्रश्न उठबैत अछि। तथापि कागजक भाषाक

दू व्याख्या मूल पाठ स्वयं राखैत अछि: वैधानिक जोखिम-विभाजन अथवा स्रोत छपेबाक प्रयत्न। तदनुसार ई-पत्रक अस्तित्व, ओकर प्रेषण-पथ, सामयिक सन्दर्भ आ वित्तीय प्रवाहक संगति—सभक समेकित जाँच जरूरी अछि। ई-पत्र एकल रूपमे हत्या अथवा सभ प्रकारक अवैध धनशोधन सिद्ध नहि करैत।

एहि दृश्य मे रचना हिरासत आ पूछताछक प्रारम्भिक आधारकेँ अन्तिम दोषसिद्धिसँ पृथक ठहरबैत छथि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि, कारण उपन्यासक पाठक पहिने सँ सौरभक अनेक वित्तीय सूत्र देखैत आबि रहल अछि आ अतिशीघ्र निर्णय लऽ सकैत अछि। न्यायालयक आदेश पछाति सौरभ गिरफ्तार होइत अछि; तथापि ‘अभियुक्त, दोषी नहि’ कहल जाइत अछि। एके वाक्यक बेराबेरी आबि रहल रूपकेँ शिल्पगत पुनरावृत्तिक दोष मानब सम्भव, मुदा सार्वजनिक आरोप आ विधिक निर्णयक बीच दूरी बचबैत राखबाक कारण एहि पुनरावृत्तिक नैतिक प्रयोजन सेहो अछि।

घरमे गिरफ्तारीक समाचार : एक अपराधी खोजबाक इच्छा

दृश्य १८७ मे ईशान आ मृणालिनी सौरभक गिरफ्तारी सुनैत छथि। मृणालिनी स्वाभाविक रूपेँ प्रश्न उठबैत छथि जे ई व्यक्ति सत्यप्रकाशक मृत्यु लेल उत्तरदायी छल कि नहि। ईशान जानकारीक सीमा स्वीकार करैत अछि; सत्यप्रकाशक मृत्यु समय सौरभ बहुत युवा होयबाक बात जाँचबाक प्रयास होइत अछि। ई काल-साक्ष्य सौरभक वर्तमान अपराध-सन्देहकेँ स्वतः मेटबैत नहि, मुदा पुरान मृत्यु-प्रकरणमे ओकर प्रत्यक्ष भूमिकाक सहज कथानक-कल्पनाकेँ कमजोर करैत अछि। मृणालिनीक ‘गोहि बदलैत गेल’ कथन एहिठाम व्यक्तिक खोजसँ संरचनाक खोज दिस प्रश्न बदलैत अछि।

एक अभियुक्त भेटलासँ परिवारक अधूर शोक भरि नहि जाइत। ईशान संरचनाक न्याय कठिन मानैत अछि; मृणालिनी पूछैत छथि—तँ न्याय ककरा देब? परिवारक ई संवाद राज्यक व्यापक अभियोजनक सफलताक सीमा देखबैत अछि। वित्तीय जालक सम्भावित योजनाकार पकड़ाइत अछि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्युक कारण, चालक, उद्देश्य आ निर्देश-शृंखला एखनहुँ पृथक

प्रमाण चाहैत अछि। लेखक पात्रक शोककेँ अनुसन्धानक प्रमाण बनबैत नहि छथि; शोक ओहि अनुसन्धानक मानवीय प्रयोजन बनेल रखैत अछि। एहि भेदमे उपन्यासक नैतिक विश्वसनीयता अछि।

रजतक दोसर बही : वाहन संख्या भेंटल, वाहन नहि

दृश्य १८८मे रजत चौबेक गोदामक दोसर बही पुरान जाँचमे अधिक ठोस कड़ी जोड़ैत अछि। ‘एच.एम.’क प्रविष्टिक संग एहि बेर वाहन-संख्या अछि; प्रविष्टि दुर्घटनाक दिनक अछि; परिवहन विभागक अभिलेख वाहनकेँ ‘चौबे मालवाहक’सँ जोड़ैत अछि। वाहन सत्यप्रकाशक मृत्युक दू महीना पछाति कबाड़ घोषित कएल गेल, मुदा क्षति-विवरण, बीमा-दावा आ कबाड़क भौतिक जाँचक निरन्तरता उपलब्ध नहि। पुरान गवाहक गाढ़ रङ्गक स्मरण आ हरियर वाहनक अभिलेख मोटा स्तरपर मेल खाइत अछि। तथापि ई मेलनाइ टक्कर देनिहार वाहनक निश्चित पहिचान नहि अछि।

एहि दृश्यकेँ कथानकक निर्णायक उपलब्धि कहल जा सकैत अछि, समाधान नहि। पहिल बेर संख्या-युक्त वाहनक दस्तावेजी सम्भावना भेटल; मुदा वैह वस्तु, जकरा पर भौतिक परीक्षण भऽ सकैत छल, इतिहाससँ हेरायल अछि। बहीमे लिखल वाहन आ दुर्घटनास्थलपर रहल वाहनक बीच जे रिक्ति अछि, ओहिमे बीस वर्षक विलम्ब प्रवेश करैत अछि। न्याय-दर्शनक उपन्यासमे वस्तु अनुपलब्ध होयब केवल कथानकक बाधा नहि, प्रमाणक नश्वरताक आलोचना अछि। अनुमानक श्रृंखला जतेक गहिर हो, हेरायल पुर्जा अपने आप फेर नहि आबैत।

न्यायिक स्वर आ स्मृतिक स्वरक अन्तर

दृश्य १८५–१८८ केँ जोड़ि देखला पर दू समानान्तर शोध-गति चलैत अछि। वर्तमान डिजिटल वित्तीय जाँचमे ई-पत्र आ तालिकाक नकल उपलब्ध अछि, तेँ सौरभक दावाक भीतर विरोधाभास परखल जा सकैत अछि। पुरान हत्या-सन्देहमे दशक पुरान बही भेटल, मुदा वाहन नष्ट अछि। एक दिस व्यक्तिक

गिरफ्तारीक वर्तमान प्रक्रिया, दोसर दिस मृत्यु-जाँचक भौतिक स्रोत क्षय। एहि विपरीत गतिसँ उपन्यास औपचारिक अभिलेखक सामर्थ्य आ ओकर विफलताक भिन्न-भिन्न रूप देखबैत अछि। पश्चिमी अपराध-कथा प्रायः एक अभूतपूर्व वस्तु भेटते अन्तिम रहस्य खोलैत अछि; एतय संख्या भेटलापछि सेहो अपराधक निर्णायक कड़ी बाकी रहैत अछि। ई विलम्ब प्रश्न-केन्द्रित आख्यानक सशक्त चयन अछि।

अध्ययन-इकाई ४८ — स्मृतिक असमर्थ भाषा, हरियर ट्रक आ अभियुक्तक सार्वजनिक प्रतिमा (मूल दृश्य १८९-१९२)

बासुदेवक ‘एहन’ आ ‘इएह’क अन्तर

दृश्य १८९मे बासुदेव मरिक वाहनक पुरान चित्रसभ देखैत एक गाड़ी पर रुकैत अछि, मुदा ओकरा ओही वाहन बतबासँ मना करैत अछि। ‘एहन’ आ ‘इएह’क ई सूक्ष्म भाषिक अन्तर सम्पूर्ण जाँचक नैतिक स्तर निर्धारित करैत अछि। बासुदेव हरिचरण द्वारा एहन भारी वाहन रातिमे शहर बाहर लऽ जाएबाक बात कहैत अछि, मुदा स्वयं ओहि यात्रामे उपस्थित नहि छल। चालकक नाम स्मरणमे ‘मोटका राम’ सँ ‘रामअवतार... शायद’ धरि बढ़ैत अछि। ई स्मरण अनुसन्धानक सूत्र अछि, प्रमाणित व्यक्तिपरिचय नहि। पुरान चालक संघक अभिलेख आ स्थानीय सूचना नया सम्भावित साक्षी धरि जाँचकेँ पहुँचबैत अछि।

एहि अनुक्रमक शिल्पगत विशेषता अछि जे लेखक स्मृतिक अस्पष्टता केँ खोजक असफलता नहि बुझैत छथि। बासुदेव गलत निश्चितता नहि दैत अछि; रचना ओकर एही सावधानीसँ आश्वस्त होइत छथि। कथाक भीतर साक्षीक विश्वसनीयता ओकर तेज कथनसँ नहि, अपन ज्ञानक सीमाक सही स्वीकारसँ बनैत अछि। ई मानदण्ड आलोचकपर सेहो लागू होइत अछि: समीक्षा जँ बासुदेवक ‘एहन’ केँ ‘निश्चित रूपेँ ओही’ लिखि देत, तँ उपन्यासक मूल नैतिक स्थितिक उल्लंघन करत।

रामअवतारक देह : स्मरण अछि, भाषा अवरुद्ध

दृश्य १९०मे रामअवतार यादव जीवित भेटैत अछि, मुदा पाँच वर्ष पहिने भेल आघातक कारण स्पष्ट बजि नहि सकैत अछि। रचना फोटो देखबैत छथि; वृद्ध हरिचरण आ हरियर ट्रकक सङ्केत पर प्रतिक्रिया दैत अछि। स्टीयरिङ्गक इशारा, छाती पर हाथ आ आँखि मूननाइ अनेक अर्थ ग्रहण करि सकैत अछि; ओकरा दुर्घटना अथवा हत्या कहि देने सँ अङ्गभाषाक अस्पष्टता समाप्त नहि

होइत। रचना भाषण-चिकित्सक आ मजिस्ट्रेटक सहायता माँगैत छथि, ताकि पुलिसक पूर्वनिर्मित कथा वृद्धक इशारापर आरोपित नहि भऽ जाए।

व्यवस्थित प्रश्नमे ‘हरिचरण’, ‘हरा ट्रक’ आ ‘राति’ पर सकारात्मक सङ्केत भेटैत अछि, मुदा दुर्घटनाक प्रश्नपर वृद्ध उद्विग्न होइत अछि आ ठोकरक प्रश्नपर कानय लगैत अछि। मजिस्ट्रेट सत्र रोकैत छथि। ई रोकनाइ जाँचक पराजय नहि; साक्षीक देह आ गरिमाक रक्षा अछि। संचार-क्षमताक अभाव कैं निर्दोषताक प्रमाण, अपराधक स्वीकार अथवा साक्ष्यक निश्चित अनदेखी—तीनूमे कोनो एक बनायब उचित नहि। मूल पाठ एहि तीन अतिशय सम्भावनाक बीच अत्यन्त संयमित स्थल निर्मित करैत अछि।

पाश्चात्य साक्ष्यविज्ञानक दृष्टिसँ एहि दृश्य पर स्मृतिक परिवर्तन, संकेत-प्रतिक्रियाक प्रश्नरचना आ पुनरावृत्त पूछताछक दबावक प्रश्न उठैत अछि। उपन्यास एहि विषयसभ पर पूर्ण वैज्ञानिक शोध-पद्धति नहि दैत, मुदा साक्षी-संवेदनशील जाँचक आवश्यकताकैं कलात्मक दृश्य बनबैत अछि। भारतीय विवेकक परिप्रेक्ष्यमे सेहो देखल बात, स्मरणक दावा आ परकीय व्याख्याक अलग ज्ञान-स्तर राखब आवश्यक अछि। वृद्धक मनमे जे स्मरण अछि, पाठक ओकर सम्पूर्ण आशय नहि जानैत; अनभिज्ञता आ नैतिक ध्यान एहि दृश्यकैं मार्मिक बनबैत अछि।

सन्दूकक फोटो : सहसम्बन्धक गाढ़ होइत शृंखला

दृश्य १९१मे रामअवतारक पोता पुरान सन्दूकसँ हरियर ट्रकक फोटो देखबैत अछि। पाछाँ लिखल ‘हरि बाबूक रातिक काज—फेर नहि’ पाँति वाहन, हरिचरण आ चालकक सम्भावित सम्बन्धकैं अधिक समर्थित करैत अछि। तस्वीर विधिसम्मत जब्त कएल जाइत अछि। मुदा ‘फेर नहि’क अर्थ अनेक भऽ सकैत अछि—विपज्जनक यात्रा, अनैतिक आदेश, दुर्घटनाक भय अथवा सामान्य थकान। ओहि पाँतिक लिखनिहार, तिथि, प्रयोजन आ दुर्घटनासँ वास्तविक सम्बन्धक अधूरता नहि मेटल। लेखक स्वयं ई रिक्ति उजागर करैत छथि। एतय

हत्या-परिकल्पना मजबूत कहल जा सकैत अछि, परन्तु दण्डनीय हत्याक घटना आ अमुक आदेशकर्ताक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व अलग प्रश्न रहैत अछि।

एहि प्रसंगमे इतिहासक प्रमाण आ अदालतक आदेशक पृथक गतिक विषय उठैत अछि। इतिहासकार अपूर्ण साक्ष्यसँ सम्भाव्य घटनाक पुनर्निर्माण करि सकैत छथि, जखन कि न्यायालयकेँ आरोपित व्यक्तिक विरुद्ध लागू विधिक प्रमाण-कसौटी पूरा करबाक चाही। एहि अन्तरक अर्थ इतिहासकारकेँ झूठ गढ़बाक छूट नहि, वा न्यायालयक निर्णयकेँ ऐतिहासिक स्मृतिसँ सर्वथा पृथक करब नहि अछि। एकहि फोटो अलग प्रश्नक उत्तरमे अलग महत्त्व ग्रहण करि सकैत अछि। उपन्यासक वैचारिक बल ओतय अछि जतय ई भेद पाठकसँ सहन करबय चाहैत अछि।

सौरभक हिरासत आ ‘जुआ सम्राट’क राजनीतिक भाषा

दृश्य १९२मे कथा वर्तमान वित्तीय अभियुक्त सौरभ बर्धनक न्यायिक हिरासत दिस घुरैत अछि। वकील स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, दस्तावेज-आधारित साक्ष्य आ भागबाक कम आशङ्काक आधारपर जमानतक बात उठबैत अछि; अभियोजन आपत्ति करैत अछि; न्यायालय आदेश सुरक्षित रखैत अछि। एहि विधिक अवस्थाक बीच माध्यम ‘जुआ सम्राट’ शब्द प्रयोग करैत अछि। ई पद जाँचक जटिल जालकेँ एक मानवीय चेहरामे समेटब चाहैत अछि। रचनाक ‘समवाय ≠ एक राजा’ कथन साहित्यिक सूत्र अछि: अपराध-जालक संरचना एक मुखियाक छवि सँ बेसी व्यापक हो सकैत अछि।

कोनो प्रभावशाली व्यक्ति विरुद्ध साक्ष्य भेटब महत्त्वपूर्ण; मुदा समस्त व्यवस्था ओकर एकल इच्छाक प्रतिफल मानि लेने सँ खाता भर्ती, वैध कम्पनीक लेनदेन, प्रबन्धकीय चूक, बाजारक लालच आ सामाजिक मौन बिसरि सकैत अछि। एहि ठाम लेखक अपराधी व्यक्तिक नैतिक आ विधिक उत्तरदायित्वकेँ घटबैत नहि, बल्कि व्यक्तिक उत्तरदायित्वक संग संस्थागत कारणक अन्वेषण बचबैत छथि। समीक्षा लेल सावधानी ई जे ‘समवाय’ केँ आपराधिक षडयन्त्र सिद्ध करबाक

कानून-सम्मत स्वयंसिद्ध सूत्र नहि मानल जाए। ई एक आलोचनात्मक रूपक आ सम्बन्ध-विचारक उपकरण अछि।

दृश्य-क्रमक फल : वृद्ध साक्षीसँ सार्वजनिक मुखौटा धरि

ई चारि दृश्य अपन क्रमसँ महत्त्वपूर्ण अछि। पहिने स्मृतिक अनिश्चित शब्द, तकर पाछाँ बोलबाक असमर्थ देह, फेर सन्दूकक लिखल फोटो, आ अन्तमे माध्यमक अत्यधिक निश्चित उपाधि। ज्ञानक स्तर एक दिशामे क्रमशः निश्चित नहि बढ़ैत; उल्टे जतेक साक्षी सावधान, ओतबे सार्वजनिक भाषा निर्णायक बनबाक प्रयास करैत अछि। एहि विरोधक कारण दृश्य १८९–१९२ उपन्यासक सबसँ तीक्ष्ण ज्ञानमीमांसात्मक समूहमे गनल जा सकैत अछि। दृश्यात्मक सीमा ई जे बारम्बार रचनाक संयमकेँ लेखकक स्पष्ट नैतिक टिप्पणी समर्थन करैत अछि; किछु स्थानपर पाठक स्वयं अन्तर बुझि सकैत छल। मुदा रामअवतारक क्षीण संकेतक अगाँ ई विश्लेषणात्मक शैली भावुकता अथवा मनगढ़न्त उद्घाटनसँ बचबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ४९ — अनुसन्धानक पद्धति, पारिवारिक सत्य आ समयसँ हेरायल साक्षी (मूल दृश्य १९३–१९६)

ईशानक आँकड़ा-प्रतिवेदन : निजी शोक आ सार्वजनिक विधि

दृश्य १९३मे ईशान राज्य बैंक संघक सामने म्यूल खाताक जोखिम-प्रतिरूप प्रस्तुत करैत अछि। प्रस्तुतीकरणमे कोनो अभियुक्तक नाम नहि; अपन कार्यक आधार अनाम आँकड़ा रखैत अछि। एक वरिष्ठ बैंकर पिताक सन्दिग्ध मृत्युकेँ प्रतिवेदनक प्रेरणासँ जोड़ि प्रश्न करैत अछि। ईशान प्रश्नक पूर्ण अस्वीकृति नहि करैत; ओ मानैत अछि जे निज अनुभव ओकरा मानवीय जोखिम जल्दी देखबैत हो, मुदा निष्कर्षक परीक्षण आँकड़ा आ पद्धति पर हो। एहि उत्तरसँ विषय-चयन आ ज्ञानक सत्यापनक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। व्यक्तिगत पीड़ा शोधक प्रेरणा भऽ सकैत अछि; स्वयं निष्कर्षक प्रमाण नहि।

एहि दृश्यकेँ साहित्यिक आलोचना अपन पद्धतिसँ सेहो जोड़ि सकैत अछि। लेखकक जीवन-अनुभव, पात्रक शोक अथवा समीक्षकक सहानुभूति कृतिपर प्रश्न चुनबाक प्रेरणा देबय; मुदा मूल पाठक विपरीत मनचाहा कारण-सम्बन्ध स्थापित नहि कएल जा सकैत अछि। ईशानक ‘हमर परिवार नहि, पद्धति जाँचू’ भाव एहि अनुशासनक स्पष्ट प्रतिरूप अछि। कथामे सुमेधा घोषक शान्त स्वीकृति सेहो अछि, मुदा ईशानक तर्कक प्रमाण ओकर प्रशंसा नहि; प्रस्तुत प्रतिरूपक जाँचयोग्यता अछि।

मृणालिनीक वाक्य : अधूर सत्यकेँ असत्यसँ बचायब

दृश्य १९४मे मृणालिनी आ ईशानक छोट फोन-वार्ता अबैत अछि। मृणालिनी पहिने एक नाम, फेर दण्ड, फेर सत्य चाहबाक अपन बदलैत अपेक्षा स्वीकार करैत छथि। आब हुनकर प्रश्न ई अछि जे सत्य कखनो पूर्ण नहि भेटल तँ की करब? उत्तरमे ओ पुत्रकेँ उपलब्ध ज्ञानक सीमा नहि तोड़बाक आदेश दैत छथि—जतबा भेटय, ओकरा झूठसँ बिगाड़िह नहि। ई वाक्य धनेश्वरीक पहराक शिक्षासँ

सम्बन्ध राखैत अछि, मुदा ओकर रूप बदलिए गेल अछि। पहिने बाहरी संकटसँ देहक रक्षा, आब असत्यसँ स्मृति आ प्रमाणक रक्षा। उपन्यासक पारिवारिक जीवन एहिठाम न्यायिक अन्वेषणसँ अलग नहि, ओकर नैतिक आधार होइत अछि।

ई रूपान्तरण हलुक नहि। मृणालिनीक लेल सत्यप्रकाशक मृत्यु अबो व्यक्तिगत क्षति अछि; किन्तु ओ अपन पीड़ाकेँ अन्य ककरो विरुद्ध अप्रमाणित दण्डादेश बनायब नहि चाहैत छथि। नैतिक दृष्टिसँ ई त्याग नहि, न्यायकेँ टिकाउ बनयबाक आग्रह अछि। कथा शोकक चरम अवस्थामे सेहो विवेकक सम्भावना खोलैत अछि। शिल्पगत रूपमे एक छोट वाक्य अनेक दीर्घ जाँच-प्रसङ्गक सिद्धान्त समेटैत अछि; एहि कारण ई अनुच्छेद अधिक प्रभावी लगैत अछि।

दू फाइल : अपराधक साझा इतिहास, विधिक तत्वक भिन्नता

दृश्य १९५मे रचना सिन्हा अपन टीमक सामने पुरान मृत्यु-प्रकरण आ नब डिजिटल जुआ-जालक फाइल अलग रखैत छथि। रोहित पैसा आ इतिहासक सम्बन्धक आधारपर दुनूकेँ एक कथा बनबय चाहैत अछि। रचना अपराधक विशिष्ट तत्वक भेद करैत छथि। पुरान जाँचमे सत्यप्रकाशक सन्दिग्ध मृत्यु, प्रयोजन आ हरिचरणक सम्भावित वाहन-सम्पर्क; नब जाँचमे ऑनलाइन दाँव, खाता-जाल, वित्तीय परत आ विभिन्न व्यक्तिक पृथक भूमिका अछि। पुरान धन नब जालमे प्रवेश कएल हो—ई वित्तीय इतिहासक साक्ष्य भऽ सकैत अछि; मुदा एहि कारणसँ पुरान मृत्युक हत्या सिद्ध नहि। एतय कथानकक एकता आ अभियोजनक आरोप-विन्यासक बीच अत्यावश्यक सीमा अछि।

नव्य न्यायक तुलनात्मक पद्धतिमे विषय-वस्तुक अनेक अवच्छेदक बिना भेद मानि देनेसँ गलत व्यापक निष्कर्ष अबैत अछि। एतय सामान्य ‘पाइ’ अथवा ‘जाल’ शब्द समान भेला पर ओकर आधार पर ‘एके अपराध’ कहि देब तर्कदोषक जोखिम रखैत अछि। तथापि साहित्यिक दृश्य न्यायालयक प्रक्रिया-विवरणक पूर्ण प्रतिकृति नहि; ई प्रमाण-विषयक विभाजनकेँ नाटकीय संवाद द्वारा

बुझबैत अछि। रचनाक ‘शायद पानि एके अछि’ वाक्य अन्तिम रूपक होइत अछि: लोभ, भय, सामाजिक विवशता आ वैध संस्थामे अवैध लाभक सम्भावना साझा वातावरण रचैत अछि; जालक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व ताहि सँ अलग जाँचल जाएत।

रामअवतारक मृत्यु : समयक कारण क्षतिग्रस्त न्याय

दृश्य १९६मे रामअवतार यादवक मृत्यु भऽ जाइत अछि। ओ व्यक्ति जे संभवतः पुरान चालकक अनुभव कहि सकैत छल, आब नव स्पष्ट बयान नहि दऽ सकत। एक फोटो, कुछ आधा व्यक्त संकेत आ पुरान प्रतिक्रियासभ बचैत अछि। रचना अपन विलम्बक विषय स्वयंकेँ प्रश्न करैत छथि; रोहित स्मरण करबैत अछि जे बीस वर्षक देरि हुनकर एकल दोष नहि। ई परस्पर संवाद संस्था आ व्यक्तिक उत्तरदायित्वक भेद देखबैत अछि। अनुचित विलम्बक सामाजिक लागत यथार्थ अछि, मुदा नव जाँचकर्तापर सभ ऐतिहासिक देरीक व्यक्तिगत अपराध लादब सेहो त्रुटि होयत।

लेखक एहि दृश्यकेँ ‘सम्भावित महत्त्वपूर्ण साक्षी मृत’ सन औपचारिक प्रविष्टि आ पोताक ‘दादा गेल’ सन पारिवारिक अनुभवक भेदसँ समाप्त करैत छथि। दुनू कथन सत्य अछि, परन्तु एकरे मानवीय अर्थ समान नहि। राज्यक फाइलमे साक्षी सूचना-केंद्रक अस्तित्व अछि; परिवारक स्मृतिमे ओ व्यक्ति अपन सम्बन्धक कारण महत्त्वपूर्ण। एहि बिन्दुपर कथा आर्थिक अपराध-गाथासँ आगाँ बढ़ि इतिहास-लेखनक नैतिकताक प्रश्न होइत अछि—कागज जकरा ‘स्रोत’ कहैत अछि, ओ अपने घरक लोक अछि।

चारि दृश्य बीचक अनुषंग : ज्ञानक पद्धति आ देहक अन्तिम सीमा

दृश्य १९३क अनाम आँकड़ा सार्वजनिक परीक्षण लेल अछि; १९४मे शोक अपन अधूरता स्वीकार करैत अछि; १९५मे अपराधक आरोप अलग होइत अछि; १९६मे साक्षी बोलबाक पहिने अन्तिम बेर चलि जाइत अछि। चारू दृश्य ज्ञानक अलग सीमा बनबैत अछि—नमूनाक पद्धति, निजी सत्य, विधिक तत्व आ

समयमे क्षय। लेखक सभ सीमाकेँ एक सूत्रमे समेटैत छथि: सत्य पबाक इच्छा जतेक तीव्र हो, अपन प्रमाणक सामर्थ्य ओतेक सावधानीसँ परखू। एहि सूत्रक दोहराव कथाक नैतिक एकरूपता बनबैत अछि, मुदा कखनो विवेचनात्मक संवाद पात्रक जीवित सामाजिक स्वरकेँ ढाकि सकैत अछि। रामअवतारक पोताक मौन शोक एहि जोखिमकेँ फेर मानवीय स्तरपर लौटा अनैत अछि।

अध्ययन-इकाई ५० — बाढ़ि, इतिहासक छुँटनी आ ‘एस.के. प्रकरण’ (मूल दृश्य १९७–२००)

कमला-बलानक बढ़ल पानि : प्रतीकसँ स्वतन्त्र प्रकृति

दृश्य १९७मे भीषण बरखाक कारण कमला-बलानक जलस्तर खतराक रेखा लग पहुँचैत अछि। मृणालिनी आ ईशान विद्यालयक राहत-शिविर दिस निकलैत छथि। घर छोड़ैत मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो, चश्मा आ धनेश्वरीक ओढ़नी चुनैत छथि। तीन वस्तु क्रमशः मृत पति, निज दृष्टिक स्मृति आ पहराक पुरान पारिवारिक अनुशासनकेँ समेटैत अछि। घरक सम्पूर्ण वस्तु लऽ जाएब असम्भव; संकट स्मृतिक चयन कऽ देत। लेखक बाढ़िक दृश्यकेँ केवल अपराधक प्रतीक नहि बनबैत छथि। मूल पाठ स्पष्ट कहैत अछि जे प्रकृति मनुष्यक रूपक मानि नहि चलैत; जल अपन भौतिक गति सँ बढ़ैत अछि। ई स्वीकृति उपन्यासक गोहि–बिज्जी प्रतीककेँ अतिव्याप्त होयबाक जोखिमसँ बचबैत अछि।

देहरीक कात भीजल बिज्जी सेहो ऊँच ठाम खोजैत अछि। पहिल दृश्यक बिज्जी गहुमनसँ भिड़ि शिशुकेँ बचाबयवला रक्षक छल; आब ओकर अपन जीवन रक्षाक आवश्यकता अछि। एहि रूपान्तरमे उपन्यास रक्षककेँ सर्वशक्तिमान नहि बनबैत। मनुष्य, जानवर आ घर तीनू बाढ़िक भौतिक दवाबमे अछि। ई दृश्य अपराध-गाथाक तकनीकी पञ्जीसँ बाहर सामुदायिक विस्थापनक वास्तविकता अनैत अछि। सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ राहत-शिविर, देहरीक अन्तिम दृष्टि आ तीन वस्तुक चयन औपचारिक प्रशासनिक रिपोर्टमे प्रायः नहि भेटयवला मानवीय साक्ष्यक साहित्यिक रूप अछि।

‘एस.के.’क नव ई-पत्र : संक्षेपसँ इतिहासक प्रश्न धरि

दृश्य १९८मे रचना जब्त ई-पत्रक एक पाँति पर ठमकि जाइत छथि: आलोक भसीनकेँ सौरभक निर्देशमे ‘एस.के. प्रकरण’ निवेशक अभिलेखमे नहि खोलबाक बात अछि। सन्दर्भक मिलानसँ संक्षेप सत्यप्रकाश कर्ण दिस इङ्गित करैत

अछि। ई ई-पत्र सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ बहुत पछातिक अछि। अतएव एकरासँ सौरभक पूर्वहत्या-योजनामे सहभागिता नहि सिद्ध होइत। नव तथ्य एतबे अछि जे निवेश-व्यवस्थामे पुरान प्रकरणक ज्ञान आ ओकर उल्लेख नियन्त्रित करबाक इच्छा मौजूद छल। रचना एहि सीमाक भीतर प्रश्न बनबैत छथि—कतेक जानकारी छल, ककरासँ भेटल, आ किएक छपेबाक चाहल गेल?

एहि दृश्यने ‘इतिहास-शोधन’क नैतिक धारणा उठबैत अछि। आयक स्रोत अनेक वित्तीय खातामे घूमि बदलैत रूप धारण करि सकैत अछि; वैह प्रकार संस्थाक सार्वजनिक कथा सँ असुविधाजनक पुरान घटना हटाओल जा सकैत अछि। मुदा दुनू प्रक्रियाकेँ कानूनी अर्थमे एक अपराध मानि लेब तर्कसम्मत नहि। एक दिस रकमक वास्तविक स्रोत, दोसर दिस पुरान कागजक चयनात्मक प्रस्तुति। एहि अलग-अलग स्तरकेँ लेखक ‘समवाय’ आ ‘स्मृति’क रूपमे एक व्यापक आलोचनात्मक प्रश्नक भीतर रखैत छथि। अतीतक साक्ष्य बाँचल रहय, ताहि लेल लेखा-पञ्जीक कात पहराक आवश्यकता अछि—बिज्जीक प्रतीक आब कागजक किनार धरि पहुँचि जाइत अछि।

पुरान जोखिम-टिप्पणी : कम्पनीक ज्ञान आ विधिक कर्तव्य

दृश्य १९९मे ई-पत्रसभ कालक्रममे सजाओल जाइत अछि। एक पुरान मसौदामे ‘एस.के. प्रकरण’क अस्पष्ट उल्लेख अछि; दोसर जोखिम-टिप्पणी पुरान खेल-प्रचार भुगतान विवाद आ ‘सम्बन्धित ठेकेदारक मृत्यु’ केँ ब्राण्ड-इतिहासक सम्भावित प्रश्न मानैत अछि। एहि स्रोतसँ कम्पनी भीतर मृत्यु-विषयक चर्चा अथवा ज्ञानक समर्थन भेटैत अछि। मुदा ‘कम्पनीमे ककरो ज्ञात छल’ सँ ‘सम्बन्धित व्यक्तिक हत्या कराओल’ धरि छलाँग लगेनाइ निषिद्ध अछि। रचना विधिक दलसँ विशेष प्रश्न पुछैत छथि—ककरा सूचना देबाक कर्तव्य छल, की छपाओल गेल, आ ओहि छपेनाइ सँ कोन विधिक परिणाम उत्पन्न होइत अछि।

ई भेद उपन्यासक आलोचनात्मक परिपक्वता देखबैत अछि। साहित्य ‘इतिहास-शोधन’ नामसँ अनुभवक नैतिक स्वरूप बतबैत अछि; अदालतमे ताहि शब्दक बदला विशिष्ट दस्तावेजी कर्तव्य, कथनक विषय, प्रापक आ परिणाम आवश्यक होयत। रूपक मानवीय कल्पना खोलैत अछि; दोषसिद्धि प्रमाण चाहैत अछि। लेखक यदि केवल रूपकक बल पर अपराध निश्चित करितथि, तँ अपन न्याय-दर्शनक मूल अनुशासनकेँ कमजोर करितथि। दृश्य १९९ एहि फाँककेँ जानी-बुझि खुलल रखैत अछि।

सौरभक ‘साफ कहानी’ : प्रतिष्ठा आ चयनात्मक स्मृतिक राजनीति

दृश्य २००मे सौरभक पूछताछ छोट अछि, मुदा भाषाक अर्थ बेराबेरी बदलैत अछि। ‘निवेश इतिहास साफ’ सँ ‘व्यवस्थित’, फेर ‘विवाद निपटल’, ‘मृत्यु दुर्घटना कहल गेल’, ‘प्रतिष्ठा’, ‘झंझट’ आ ‘जोखिम-प्रबन्ध’—ई क्रम अपराधक स्पष्ट स्वीकार नहि, सार्वजनिक कथा बनयबाक संस्थागत मानसिकताक उद्घाटन अछि। रचना प्रश्नक शब्द बदलैत छथि जखन वकील एक आरोपकेँ पहिनहि स्थापित मानि पूछबाक आपत्ति करैत छथि। एहि संशोधनसँ प्रश्न-प्रक्रिया निष्पक्ष रहैत अछि। सौरभ पुरान विवादित स्रोतक विस्तार निवेशकक सामने नहि रखबाक अपन इच्छा स्वीकार करैत अछि; मुदा एहि स्वीकारसँ हत्या, धनशोधनक सभ अंश अथवा जानि-बुझि विधिक धोखाधड़ीक अन्तिम सिद्धि अलगसँ आवश्यक रहैत अछि।

सौरभक ‘कागच पर’ वैधता आ वास्तविक अस्पष्ट स्रोतक बीच तनाव विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। ई कथन सामाजिक प्रतिष्ठाक निर्माणमे औपचारिक वैधताक उपयोगक प्रश्न उठबैत अछि। ‘साफ कहानी’ कहल गेल तँ कसकर लेल साफ—निवेशक, ब्राण्ड, परिवार, कि अभिलेख? सत्यप्रकाशक परिवार लेल ओहि कथामे मृत्यु आ संघर्षक स्थान अछि; निवेशक-संस्थाक प्रस्तुतिमे ओहि असुविधाजनक भागकेँ हटेबाक आकांक्षा अछि। उपन्यास एकहि घटनाक प्रतिस्पर्धी इतिहास देखबैत अछि। जँ कोनो प्रविष्टि हटाओल गेल अछि तँ तकर वास्तविक कागज,

कर्तव्य आ हानिक जाँच बाकी अछि; नैतिक आलोचनाकेँ विधिक निर्णयक जगह नहि लेबाक चाही।

पाँचम इकाईक कलात्मक प्राप्ति आ विश्लेषणक सीमा

दृश्य १९७ सँ २०० धरि लेखक पानिक वास्तविक भय सँ निवेश-अभिलेखक भौतिक-विरहित भाषा धरि बढ़ैत छथि। ओसारा छोड़ैत मृणालिनीक तीन वस्तु आ सौरभक ‘साफ कहानी’ एक-दोसरक विरोधी चयन अछि। परिवार जीवन बचबैत स्मृतिसँ जुड़ल कम वस्तु राखैत अछि; संस्था अपन प्रतिष्ठा बचेबाक लेल असुविधाजनक इतिहासक उल्लेख घटेबाक प्रयास करैत अछि। ई तुलना सशक्त अछि, मुदा दुनूकेँ समान नैतिक कृत्य कहब उचित नहि; एक विस्थापनक विवशता, दोसर सम्भावित हितरक्षाक संस्थागत निर्णय। एहि असमानता केँ सुरक्षित रखलासँ रूपकक आलोचनात्मक तीक्ष्णता बढ़ैत अछि।

अन्तिम दृश्यक ‘जोखिम-प्रबन्ध’ शब्द एक नव अन्वेषण खोलैत अछि, उपन्यासक पूर्ण समाधान नहि। दृश्य २०० पर कथा एखन समाप्त नहि; तेँ सौरभक नैतिक रूपान्तरण, पुरान मृत्युक अन्तिम न्याय, अथवा कम्पनीक अन्तिम दोषसिद्धिक घोषणा एहि बैचमे जोड़ब स्रोत-विरुद्ध होयत। साहित्यिक उपलब्धि ई जे पाठक प्रश्नक विस्तार अनुभव करैत अछि: सत्यक आर्थिक स्रोतक जाँच पर्याप्त नहि, सार्वजनिक स्मृतिक निर्माणक उत्तरदायित्व सेहो देखब पड़त।

दसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य १८१–२०० : साक्ष्यक अपूर्णता, परिवारक स्मृति आ संस्थागत इतिहास

परस्पर जुड़ल चारि प्रमाण-क्षेत्र

एहि बीस दृश्यक समेकित रचनामे चारि अलग प्रमाण-क्षेत्र अछि। पहिल न्यायिक प्रक्रिया—उदयनाथक तत्काल गिरफ्तारी नहि होयब, सौरभक गिरफ्तारी आ न्यायिक हिरासत। दोसर आर्थिक अभिलेख—क्षितिजक ऋण, तीन वास्तविक व्यवसाय, मध्यस्थ खाता, आलोकक ई-पत्र। तेसर पुरान मृत्यु-जाँच—वाहन-संख्या, बासुदेवक स्मरण, रामअवतारक देह-संकेत आ सन्दूकक फोटो। चारिम सामाजिक स्मृति—शैलेशक लज्जा, तृषाक भरोसा, मृणालिनीक चुनल वस्तु आ ‘एस.के.’क छँटनी। लेखक एहि सभकेँ एक आपराधिक षडयन्त्रक अन्तिम निष्कर्षमे बलपूर्वक नहि घुसबैत छथि; जाँच-पद्धति अलग रहैतो सम्बन्धक मार्ग खोलैत छथि।

ई विभिन्न स्रोत एकरूप भारक नहि। बही दिनाङ्क आ वाहन-संख्या दैत अछि, मुदा टक्करक प्रत्यक्ष दृश्य नहि; फोटो सम्बन्ध दर्शबैत अछि, मुदा वाक्यक निश्चित आशय नहि; ई-पत्र ज्ञानक सम्भावित सन्दर्भ दैत अछि, मुदा व्यक्तिगत अपराध-बोध स्वतः सिद्ध नहि; तृषाक संवाद सामाजिक क्षतिक प्रभाव देखबैत अछि, दोषसिद्धिक स्वतंत्र फौजदारी कागज नहि। ई प्रमाण-पृथक्करण साहित्यिक आलोचनाक सेहो न्यूनतम शर्त अछि। एक नाटकीय दृश्यसँ पूर्ण इतिहासक निर्णायक तत्त्व सिद्ध मानल गेल तँ पाठकक विश्वासक दुरुपयोग होयत।

भारतीय न्यायपरम्पराक दृष्टि : प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द

भारतीय न्यायपरम्परामे प्रत्यक्ष, अनुमान आ विश्वसनीय शब्द-साक्ष्यक पृथक्करण एहि उपन्यासक पठनमे उपयोगी तुलनात्मक आधार दैत अछि। रामअवतारक आँखि आ इशारा प्रत्यक्ष देखल गेल—मुदा ओ इशाराक आशयक

अनुमान स्वतः प्रत्यक्ष नहि। बासुदेवक कथन ओकर अपन सीमित स्मरणक शब्द-साक्ष्य अछि; वाहन अभिलेखसँ ओकर मिलान अनुमानक समर्थक सूत्र। सौरभक ई-पत्रक लिखल रूप उपलब्ध अछि; ओकर उद्देश्यक निर्णय अतिरिक्त सन्दर्भ चाहैत अछि। एहि प्रकार रचनाक अनुसन्धानीय अनुशासनकेँ शास्त्रीय न्यायचिन्तनक संग तुलनीय कहल जा सकैत अछि, मुदा उपन्यासक पात्रसभ शास्त्रक औपचारिक प्रकरणक उदाहरण मात्र नहि।

नव्य न्यायक सूक्ष्म सम्बन्ध-विचार अपन कथनक विषय, सम्बन्ध आ सीमाक पहिचान करबाक प्रेरणा दैत अछि। ‘सौरभ निवेश-समितिमे सदस्य’, ‘सौरभ विशिष्ट ऋणक सम्पूर्ण स्रोत जनैत छल’ आ ‘सौरभ अपराध करबाक आदेश देलक’—ई तीन अलग कथन अछि। पहिल सत्य भेलासँ दोसर स्वतः निश्चय नहि, दोसर समर्थित भेलासँ तेसर स्वतः सिद्ध नहि। एहि क्रमकेँ सुरक्षित रखब नव्य न्यायसँ लेल आलोचनात्मक अनुशासन अछि; कृतिमे आधुनिक फौजदारी साक्ष्य-कानूनक नियमक स्थानापन्न नहि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक अपेक्षा आ प्रमाणक नकारात्मक परिणाम

प्रचलित रहस्य-कथामे वाहन संख्या, अन्तिम वृद्ध चालक अथवा गोपनीय ई-पत्र पाठककेँ तत्काल उद्घाटनक प्रतीक्षा करबैत अछि। एहि बीस दृश्यमे ओहि अपेक्षासँ अलग रचनात्मक गति अछि: वाहनक संख्या भेटल मुदा वाहन हेरायल; चालक भेटल मुदा बोली बाधित; फोटो भेटल मुदा ‘फेर नहि’क आशय अस्पष्ट; सौरभ गिरफ्तार भेल मुदा दोषसिद्धि शेष। एहन नकारात्मक परिणाम कृत्रिम देरी भऽ सकैत छल, जँ लेखक केवल अगिला रोमांच टारबाक लेल एके बाधा दोहरबितथि। एहिठाम अधिकांश बाधा अलग स्रोतगत कारणसँ उत्पन्न अछि—विलम्ब, साक्षीक स्वास्थ्य, दस्तावेजक अधूरापन आ व्याख्याक बहुविकल्प—तेँ ओकर आलोचनात्मक औचित्य बनैत अछि।

तथापि एक सम्भावित कलात्मक सीमा स्वीकारणीय अछि। रचना, मयंक आ ईशानक अनेक संवाद प्रमाणक भेद एकहि नैतिक सूत्रमे घुरबैत अछि। ई

पुनरावृत्ति विधिक विवेकक स्थिरता देखबैत अछि, मुदा पाठकक स्वतन्त्र निष्कर्ष निकालबाक अवकाश कने घटबैत अछि। ओकर तुलनामे तृषाक ‘भरोसा नहि’, रामअवतारक धुँधल इशारा, मृणालिनीक तीन वस्तु आ पोताक शोक अधिक बहुअर्थी कलात्मक उपलब्धि अछि। एहि दृश्यसभमे तर्क कथोपकथनसँ बेसी वस्तु आ मौन द्वारा व्यक्त होइत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठन : प्रशासनिक पञ्जी आ घरक अवशेष

समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ सरकारी परत आ पारिवारिक परत दुनू केन्द्रीय स्रोत अछि। ‘सम्भावित साक्षी मृत’क सरकारी वाक्यक समानान्तर पोताक ‘दादा गेल’ अछि। निवेशक दस्तावेजमे ‘एस.के. प्रकरण’ अनावश्यक विवाद कहल जा सकैत अछि, मुदा मृणालिनीक घरमे ओ पति आ बाबूक जीवनक नाम अछि। एहि समानान्तर कथनसभमे कोनो एककेँ निरपेक्ष रूपेँ पूर्ण इतिहास कहब कठिन। संस्थागत फाइल प्रयोजननिष्ठ रूपमे वर्गीकरण करैत अछि; घर वस्तु, स्मृति आ शोक सँ घटनाकेँ सहेजैत अछि। दुनूक त्रुटि सम्भव, दुनूक आवश्यकता सेहो।

रामअवतारक पुरान फोटो, सत्यप्रकाशक चश्मा, धनेश्वरीक ओढ़नी आ कम्पनीक ई-पत्र चारि अलग सामग्रीक इतिहास बनबैत अछि। पहिल दुइमे व्यक्तिगत स्मृति अछि; तेसर पीढ़ीक निरन्तरता; चारिम प्रतिष्ठा-संचालनक संस्थागत भाषा। कृति इतिहासकेँ केवल ‘आधिकारिक सत्य’ आ ‘लोक-स्मृति’क द्वन्द्वमे बन्द नहि करैत; पाठककेँ पूछब सिखबैत अछि जे कोन वस्तु ककर प्रयोजनसँ बचल, आ कोन वस्तु जानि-बुझि नहि देखाओल गेल।

पीढ़ीक नैतिकता : धनेश्वरी, मृणालिनी, ईशान आ तृषा

धनेश्वरीक पुरान पहरा-शिक्षा परिवारक भीतर दू नव रूप पबैत अछि। मृणालिनी सत्यक अपूर्णता स्वीकारि असत्यक निर्माण रोकब चाहैत छथि। ईशान शोकक ऊर्जा सामाजिक आँकड़ा-जाँचमे लगबैत अछि, मुदा विश्लेषणकेँ

पारिवारिक अनुभवपर नहि, पद्धतिपर खड़ा रखैत अछि। दोसर दिस तृषा अपन पिता प्रदीपक पश्चात्ताप सुनैत अछि, मुदा भरोसा फेर देबाक अधिकार सुरक्षित रखैत अछि। एहि पात्रसभक नैतिक यात्रा एकरूप मेल-मिलापक कथा नहि। एक परिवार मृत्युक सच खोजैत अछि, दोसर परिवार दोषक सामाजिक बोझसँ जूझैत अछि।

दुनू परिवारमे एक साझा प्रश्न अछि—‘विश्वास’क पुनर्निर्माण कोना हो? न्यायिक निर्णय सेहो सम्बन्धक क्षति तुरन्त नहि भरि सकैत अछि। प्रदीपक संभावित आत्म-संशोधन बेटी लेल अनिवार्य क्षमा नहि; सौरभक गिरफ्तारी मृणालिनीक बीस वर्ष पुरान प्रश्नक उत्तर नहि। एहि बहुवचन परिवार-दृष्टिसँ उपन्यासक अपराध-कथा सामाजिक उपन्यास बनैत अछि।

बिज्जी, गोहि आ पानि : रक्षकक सीमित शक्ति

आरम्भमे बिज्जी घरक गहुमनसँ प्रत्यक्ष भिड़ैत छल; वर्तमान बैचमे बिज्जी अपन जीवित बचबाक लेल बाढ़िमे ऊँच ठाम खोजैत अछि। एहि विकाससँ प्रतीकक महत्त्व घटैत नहि, ओकर अति-मानवीकरण रुकैत अछि। गोहि अपराधक सदा एकहि व्यक्ति नहि, बल्कि वैध संस्थाक अवसर, मौन, भय आ लाभक परस्पर सम्बन्धक रूपक होइत अछि। पानि मात्र अपराध-व्यवस्थाक उपमा नहि; दृश्य १९७मे ओकर वास्तविक प्राकृतिक संकट अछि। ई भेद आवश्यक अछि—नदीकेँ अपराधी मानब सामाजिक-पर्यावरणीय कारणक विश्लेषणकेँ बिगाड़ि देत।

‘बिज्जीक पहरा कागचक किनार पर’क भाव एहि बीस दृश्यक दार्शनिक केन्द्र बनि सकैत अछि। पहरा एतय ककरो निजी शत्रुता नहि, अभिलेखक ईमानदार जाँच अछि। रक्षक स्वयं सर्वज्ञ नहि, न्यायाधीश स्वयं इतिहासक प्रत्येक रिक्त स्थान नहि भरि सकैत। एहि विनम्रतामे रक्षक-प्रतीकक वास्तविक नैतिक शक्ति अछि।

वर्तमान बैचक अन्तिम प्रमाण-स्थिति

दृश्य २०० धरि मूल पाठक सीमा ई अछि: उदयनाथक बैठक-सहभागिता आपराधिक आशय सिद्ध नहि करैत; प्रदीप आ शैलेशक अनुभवमे विधिक स्थिति आ सामाजिक दण्ड अलग अछि; क्षितिज सम्पदा आ सम्बद्ध खातासभ धनशोधनक गम्भीर जाँचयोग्य वित्तीय क्रम देखबैत अछि; सौरभक विरुद्ध वैधानिक गिरफ्तारी भेल अछि, अन्तिम दोषसिद्धि नहि; हरियर वाहन, रामअवतारक अधूर संकेत आ फोटो पुरान मृत्यु-जाँचकेँ ठोस दिशा दैत अछि, मुदा सत्यप्रकाशक हत्या आ आदेशकर्ता स्थापित नहि; ‘एस.के. प्रकरण’क प्रसङ्ग संस्थागत स्मृतिक चयनात्मक प्रस्तुति पर प्रश्न उठबैत अछि, जकर सटीक विधिक अर्थ अतिरिक्त स्रोत आ कर्तव्यक परीक्षण माँगैत अछि।

एहि कारण उपन्यासक आलोचना अपन निष्कर्षकेँ ‘कथा खुलि गेल’ पर समाप्त नहि करि सकैत अछि। उपलब्ध स्रोतक सीमा बचबैत आगाँक दृश्य २०१–४१८ धरि समीक्षा जारी राखब आवश्यक अछि। ई दसम तुलनात्मक अध्ययन मूल दृश्य १८१–२००क उपलब्ध तथ्य पर केन्द्रित अछि; मूल उपन्यासक अन्तिम परिणतिक स्थानापन्न नहि।

अध्ययन-इकाई ५१ — राहत-शिविरक बिज्जी, स्मृतिक कागज आ वाहन-साक्ष्य (मूल दृश्य २०१-२०४)

शरणार्थी विद्यालयमे पुरान रक्षक-प्रतीकक नव परीक्षा

मूल दृश्य २०१ विद्यालयक राहत-शिविरमे आरम्भ होइत अछि, जतय तीस परिवार एकहि संस्थागत छत नीचाँ राति काटि रहल अछि। दीवाल पर लिखल पहाड़ा, चारि परिवारक बिछावन, नेनाक कानब आ वृद्धाक खाँसी—ई छोट-छोट वस्तु आ ध्वनि बाढ़िक अमूर्त भयकेँ देखल जा सकयवला मानवीय स्थितिमे बदलैत अछि। पहिने रक्षक बिज्जीक उपस्थिति अपन घरक आँगनमे छल; आब गामक सामूहिक आश्रयमे ओकर परीक्षा होइत अछि। गहुमनक प्रवेश एकटा जीवक स्वाभाविक आश्रय-खोज सेहो भऽ सकैत अछि, तथापि नेना सभक सुरक्षा लेल वास्तविक संकट अछि। लेखक साँपकेँ कोनो दार्शनिक अपराधी बनबैत नहि छथि; मनुष्य आ जीव दुनूक भय एकहि भौतिक दृश्य पर टकराइत अछि।

बिज्जी साँपकेँ धकेलि बाहर करैत अछि, ओकर कान्ह पर घाव आ रक्तक दू बून्द देखाइत अछि। एहि सूक्ष्म विवरणसँ पहराक मूल्य स्पष्ट होइत अछि—बचबेनिहार स्वयं सुरक्षित नहि रहैत। मृणालिनी दूर कटोरी पानि रखैत छथि, मुदा बिज्जी ओकरा पिबैत नहि; उपन्यास मानवक कृतज्ञताकेँ जन्तुक निश्चित अभिप्रायक प्रमाण नहि बनबैत। नेनाक प्रश्न ‘ई जानैत छल?’ पर मृणालिनीक सम्भावनासूचक उत्तर महत्त्वपूर्ण अछि। ‘शायद नहि’ कहि ओ बाहरी क्रियाक निश्चित नैतिक चेतना आरोपित करबासँ बचैत छथि। तकर पछाति सत्यप्रकाशक स्मरण उठैत अछि: गलत बात रोकबाक साहस कखनो पूर्व-गणना नहि, दीर्घकालक स्वभावक फल भऽ सकैत अछि। ई रचनात्मक समानता मनुष्य आ जन्तुक जैविक समानता नहि, व्यवहारक जोखिम पर बनल रूपक अछि।

दोसर दिनक घर : वस्तु बाँचल, घरेलू भूगोल बदलल

दृश्य २०२मे ईशान नावसँ डूबैत घर देखबाक जाइत अछि। मुख्य कोठली एखन बाँचल, मुदा आँगन आ बिज्जीक बिल जलमे समा चुकल। ई क्रम महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ उपन्यास रक्षकक आश्रय स्वयं नष्ट भऽ सकबाक संभावना स्वीकारैत अछि। पुरान टेबुलक निचला भाग भीजल अछि; किछु आवश्यक कागज पहिनहिसँ सुरक्षित ठाम पहुँचाओल गेल छल, किछु नहि। एहि स्थितिमे बचाव आ हानि दुनूक गिनती आवश्यक अछि; समग्र घर बचल वा समग्र घर नष्ट—दुनू अतिसरलीकरण होयत।

भीजल पेटीमे मृणालिनीक विवाह-चित्र, सत्यप्रकाशक रसीद आ धनेश्वरीक पोथी भेटैत अछि। ईशान स्पष्ट बुझैत अछि जे राज्यक जाँच लेल आवश्यक प्रतिलिपि पहिनहिसँ बनि चुकल अछि। एहि बचल सामग्रीकेँ अदालतक प्रमाण कहब वस्तुक गलत वर्गीकरण होयत; मुदा ‘केवल निजी वस्तु’ कहि अवमूल्यन करब सेहो दोषपूर्ण। फोटो पारिवारिक सम्बन्धक चित्रित समय अछि, रसीद घरेलू श्रमक इतिहास, पोथी वृद्धाक अपन स्मृति। नदीक पुरान घाट फोटोमे अचल अछि, वास्तविक धार घर खा रहल अछि—एहि विरोधसँ स्मृति आ बदलैत भूगोलक तनाव बनैत अछि। ‘स्मृति एक तरहक बाँध’क अर्थ प्रकृतिक रोकथामक तकनीक नहि; विलयक विरुद्ध मनुष्यक अस्थायी प्रतिरोध अछि।

बीमा-बही आ मरम्मति-बिल : सम्भावनाक गाढ़ होइत सङ्केत

दृश्य २०३ राज्यक जाँचक स्तर पर फेर घुरैत अछि। हरा मालवाहकक कबाड़-दावाक अनुपस्थिति एक बिन्दु अछि, मुदा सत्यप्रकाशक मृत्युक दू दिन बादक निजी कार्यशालाक बिल दोसर। बायाँ अगिला भाग, लैम्प, धातुक पट्टी आ पहियाक सन्तुलन-सुधार—मरम्मतिक ई ब्यौरा सम्भावित टक्करक दिशासँ मेल खा सकैत अछि। बिलक क्रमाङ्क पुरान बहीसँ मेल करब ओकर लेखा-संगतिक आधार अछि। तथापि कार्यशाला-मालिकक पुत्र प्रत्यक्ष घटना देखनिहार नहि; बाल्यावस्थाक कारण ओ वाहन अननिहारक नामो नहि बता सकैत अछि।

स्रोतक वस्तुगत दृढता आ साक्षीक व्यक्तिगत सीमा लेखक एक संग रखैत छथि।

हरिचरणक रातिक बुकिंग, रामअवतारक फोटो आ नव मरम्मति-बिल सँ सङ्केतक शृंखला पैघ होइत अछि। मुदा ट्रक आन कतहु ठोकर खा सकैत छल; ई अन्य सम्भावना अनुसन्धानमे स्पष्ट रूपेँ बचाओल गेल अछि। अनिरुद्धक प्रश्न—परोक्ष साक्ष्यक शृंखला पूर्ण अछि कि नहि—एहि दृश्यक विधिक केन्द्र अछि। ‘ककर निर्देश?’क खाली स्थान केवल व्यक्ति-नामक अनुपस्थिति नहि, कारणात्मक शृंखलाक एक महत्त्वपूर्ण कड़ीक अभाव अछि। भारतीय न्याय-विचारक दृष्टिसँ अभिलेखक सत्यापन आ अपराध-सिद्धिक अनुमान दू अलग प्रमाण-प्रक्रिया अछि; एकर परस्पर मेल अपेक्षित अछि, समानता नहि।

देवांशुक नव बयान : आदेशक भाषा आ चुप्पीक इतिहास

दृश्य २०४मे रचना सिन्हा देवांशु रक्षितक समक्ष मरम्मति-बिल राखैत छथि। प्रश्नोत्तरक छोट पाँति, ‘हाँ’क पुनरावृत्ति आ लम्बा मौन न्यायिक पूछताछक दबाव व्यक्त करैत अछि। देवांशु स्वीकार करैत अछि जे सत्यप्रकाशकेँ बोली रोकबाक आ भुगतान-आपत्ति घुरेबाक लेल हरिचरणकेँ ‘समझाबय’ कहने छल। ई शब्द पाठमे निर्दोष समझेनाइ नहि रहि जाइत, किएक तँ अगिला प्रश्न पर ओ गैरकानूनी दबाव स्वीकार करैत अछि आ हरिचरणक हिंसक प्रवृत्तिक पूर्वज्ञान सेहो बतबैत अछि। मुदा हिंसक लोककेँ दबाव देबाक आदेश आ स्पष्ट हत्या-आदेश एउटा नहि; एहि अन्तरक रक्षा समीक्षा लेल अनिवार्य अछि।

हरिचरणक कथित पछातिक दू वाक्य—काज बिगड़बाक आ आवश्यकतासँ बेसी भऽ जेबाक—देवांशुक स्मृतिक माध्यमसँ मात्र उपलब्ध अछि। पूछताछक दृश्य स्वयं एकर पुष्टि नहि दैत; हरिचरण मृत अछि, मूल संवादक दोसर प्रत्यक्ष साक्षी एतय नहि देखाओल गेल। रचना आ वकीलक बीच विधिक निष्कर्ष प्रश्नमे नहि घुसय देबाक रोक अभियुक्तक कथनक सीमा निर्धारित करैत अछि। एहन संयम रहस्य-आख्यानमे असाधारण नैतिक उपलब्धि अछि: पाठककेँ एकर भावनात्मक

तीव्रता स्वीकारबाक अवसर अछि, मुदा कथा निर्णायक तथ्यक स्थानपर एकर उपयोग नहि करैत। देवांशु अपन बीस वर्षक चुप्पीक कारण स्वयं फँसबाक भय कहैत अछि। एहि सँ अपराधी लाभ आ संस्थागत मौनक अन्तर्सम्बन्ध खुलैत अछि, परन्तु प्रत्येक विशिष्ट आपराधिक दायित्व न्यायिक निर्णयक अधीन रहैत अछि।

प्रथम अध्ययन-इकाईक कथात्मक गति आ सीमा

दृश्य २०१–२०४क क्रम रक्षक जन्तुक घावसँ शुरू भऽ स्मृतिक भीजल कागज, मरम्मति-बिल आ मानवीय मौन धरि जाइत अछि। ई चारि अलग वस्तु एकहि प्रश्न उठबैत अछि: की बाँचैत अछि, की नष्ट होइत अछि, आ जे बचल अछि ओकरा कोना पढ़ल जाए? बिज्जीक घाव दृश्य-प्रत्यक्ष अछि; विवाह-चित्र स्मृति-स्रोत; मरम्मति-बिल दस्तावेजी सङ्केत; देवांशुक बयान हितसँ प्रभावित स्मृति-साक्ष्य। लेखक सभकेँ एकहि प्रमाण-स्तर पर नहि रखैत छथि।

कलात्मक दृष्टिसँ एही संयमक संग एक सीमा सेहो देखल जा सकैत अछि। रचना आ अनिरुद्धक संवाद बेराबेरी प्रमाणक अपूर्णताक पाठ दुहरबैत अछि; अत्यधिक स्पष्ट विवेचना रहस्यक स्वतन्त्र उद्भासन घटा सकैत अछि। मुदा राहत-शिविरक घाव, भीजल फोटो आ थिर मुँहवला देवांशुक दृश्य अनुभवक संग सिद्धान्त जोड़ैत अछि; एहि कारण पहिल इकाई उपदेशक स्थूल रूप धारण नहि करैत।

अध्ययन-इकाई ५२ — स्वीकारोक्तिक जाँच, वृद्ध विधवा आ न्यायिक स्वतन्त्रता (मूल दृश्य २०५–२०८)

देवांशुक कथनक स्वतन्त्र पुष्टिक आवश्यकता

दृश्य २०५ पहिल दृश्य २०४क भावनात्मक चरम-बिन्दुकेँ तुरन्त नियन्त्रित करैत अछि। देवांशु पुरान आर्थिक अपराधमे दोषसिद्ध छथि; अपन भूमिका सीमित देखेबाक अथवा भार आन पर सरकेबाक स्वार्थ सम्भावित अछि। हरिचरण मृत छथि, तेँ कथित संवादक स्वतन्त्र जाँच कठिन। लेखक एहि सावधानीकेँ आरोपसँ भागनाइ नहि बनबैत, बल्कि परिणामपूर्ण अनुसन्धानक पूर्वशर्त बतबैत छथि। वाहनक बुकिंग, मरम्मति, पुरान फोटो आ आर्थिक हितक परोक्ष कड़ी स्वतंत्र सामग्री अछि; ‘काम बिगड़ि गेल’क शब्दशः कथन देवांशुक अकेल स्मृतिपर निर्भर। एहिमे एक स्रोतक समर्थन दोसर स्रोतक समस्त विषयक प्रमाणीकरण नहि बनबैत।

जाँच-दलक भीतर पर्याप्त आरम्भिक आधार आ अन्तिम दोषसिद्धिक संभावना विषयक मतभेद अछि। ई मतभेद न्यायप्रणालीक कमजोरीक अनिवार्य चिह्न नहि; अलग प्रश्नक लेल अलग मानदण्ड चाही। अभियुक्त बनबैत काल अभियोगक उपयुक्त आधार आ सजा सुनबैत काल अपराध सिद्ध होयबाक कठोर कसौटी पृथक अछि। रचना ‘गिरफ्तारी जाँचक पुरस्कार नहि’ कहि तुरन्त हथकड़ीक सार्वजनिक माँग अस्वीकार करैत छथि। वृद्ध अभियुक्तक भागि जेबाक सम्भावना कम, बहुतेक साक्ष्य दस्तावेजी आ सहयोग उपलब्ध होयबाक कारण समन तथा न्यायालयमे उपस्थिति चुनल जाइत अछि। एकरा कानूनी निर्दोषताक घोषणा मानब गलत, मुदा गिरफ्तारी नहि करबाक निर्णयकेँ माफियाक पक्षपात मानब सेहो असमर्थित अछि।

मृणालिनीक प्रश्न : न्याय पहुँचलासँ पहिने बहल घर

दृश्य २०६मे रचना समाचार ईशानक माध्यमसँ नहि, स्वयं मृणालिनीकेँ दैत छथि। राहत-शिविरक रिक्त कक्ष, उजाड़ घर आ मृत्यु-जाँचक नव सूचना एक

त्रिस्तरीय विस्थापन बनबैत अछि—गृहसँ, समयसँ आ पूर्ण सत्यसँ। मृणालिनी हरिचरणक मृत्यु, दबावक आदेश आ हत्या-आशयक निषेध अलग-अलग गनैत छथि। हुनकर दुःख एहि बातसँ उत्पन्न अछि जे बीस वर्षक प्रतीक्षा पछाति सेहो प्रमाण अनेक रिक्त स्थान छोड़ैत अछि। ‘न्याय सेहो बाढ़ जकाँ’क प्रश्न भावनात्मक अलङ्कारक अतिरिक्त इतिहासक वास्तविक समय-विलम्बक आरोप अछि।

रचना एहि प्रश्नक कानूनी उत्तर देबाक प्रयास नहि करैत छथि। ई मौन हुनकर व्यावसायिक असफलता नहि; विधिक भाषाक सीमाक स्वीकृति अछि। अदालत ककर अपराध सिद्ध भेल से निर्धारित कऽ सकैत अछि, मुदा मृत व्यक्तिक बीस वर्षक अभावक प्रतिपूर्ति पूर्ण रूपसँ नहि करि सकैत। मृणालिनीक विडम्बनापूर्ण हँसी ओहि क्षतिक अंश अछि जे सजा आ मुआवजा दुनू सँ पैघ रहि सकैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक पठनमे राज्यक नब घटना-सार आ विधवाक बीस वर्षक जीवन-रोजनामचा एकहि ऐतिहासिक घटनाक अलग स्रोत-परत अछि।

मनोजक गिरफ्तारी आ पारिवारिक अपमानक अनौपचारिक दण्ड

दृश्य २०७ नब जुआ-जाँच दिस घुरैत अछि। रितेशक बयान, रघुवीरक सम्पर्क, खाता-भर्तीक लक्ष्य, प्रचार-जाल आ लाभक सङ्केतक आधार पर मनोज नायक गिरफ्तार होइत अछि। मुदा वृद्ध पिता पत्रकारक सोझाँ ‘हमर बेटा हत्यारा नहि’ कहि चिचिआइत छथि, जखन कि तत्काल आरोपक स्वरूप हत्या नहि। एहि भाषिक असंगतिसँ आधुनिक दृश्य-माध्यमक प्रभाव खुलैत अछि: कैमरा, पुलिस आ हिरासत मिलिकऽ परिवारक भीतर एक सम्मिलित सामाजिक कलङ्क बना दैत अछि।

मनोजक माता अचेत भऽ जाइत छथि। समीक्षा लेल ई अनुभवक विवरण महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एकरा मनोजक विधिक निर्दोषता सिद्ध करबाक आधार नहि बनाओल जाए। अपराध-आरोपक सामना करैत परिवार सामाजिक त्रासदीक शिकार भऽ सकैत अछि, चाहे अभियुक्तक दोष पछाति सिद्ध हो वा

नहि। रचना गिरफ्तारी-स्थल पर नहि छलीह; ओ वीडियो देखैत छथि। ‘साक्ष्य देखब’ आ ‘घटना अनुभव करब’क बीचक एहि दूरीसँ उपन्यास डिजिटल माध्यमक सीमित संवेदना सेहो उजागर करैत अछि।

सौरभक जमानत : हिरासत आ दोषसिद्धिक दू अलग व्याकरण

दृश्य २०८मे उच्च न्यायालय अभियोजनसँ सौरभ बर्धनकेँ लगातार हिरासतमे रखबाक व्यावहारिक आवश्यकता पूछैत अछि। बचाव दस्तावेजी साक्ष्य, उपलब्ध सहयोग आ फरार नहि होयबाक तथ्य प्रस्तुत करैत अछि। अभियोजन प्रभावशाली अभियुक्त द्वारा साक्षी प्रभावित करबाक सम्भावित जोखिम बतबैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष धमकीक अभिलेख नहि रखि पबैत। अन्ततः पासपोर्ट जमा, साक्षीसँ सम्पर्क पर निषेध आ नियमित उपस्थितिक शर्तसहित जमानत भेटैत अछि। ई प्रक्रिया ‘धनी व्यक्ति बाहर आयल’क सरलीकृत समाचारसँ कहीं बेसी विशिष्ट अछि।

पाठकार जँ एहि दृश्यकेँ रचनाक अपराध-विरोधी नैतिकताक पराजय मानि ली तँ न्यायिक स्वतन्त्रताक केन्द्रीय अर्थ हेरा जाएत। जमानत आपराधिक आरोप नकारैत नहि, जेना हिरासत दोषसिद्धि नहि अछि। उपन्यासक पुनरावृत्त ई भेद सन्दिग्धक अधिकार आ पीड़ितक न्यायक माँग दुनूक रक्षा करैत अछि। पाश्चात्य प्रक्रियाधारित अपराध-उपन्यासक परम्परासँ तुलना करैत कहि सकैत छी जे एतय अन्वेषणक सफलता केवल जालक उघाड़ नहि, अनुचित हिरासतसँ बचनाइ सेहो अछि। ई तुलनात्मक टिप्पणी रचनाक विधिक विन्यासक आलोचनात्मक व्याख्या अछि, कोनो बाहरी उदाहरणक कथानक-साम्यक दावा नहि।

दोसर इकाईक आलोचनात्मक परिणाम

दृश्य २०५–२०८मे लेखक कथात्मक तनावकेँ चारि भागमे बाँटैत छथि: स्वीकारोक्तिक विश्वसनीयता, विधवाक अधूर आश्वासन, गिरफ्तार व्यक्तिक परिवारक अपमान आ जमानतक संवैधानिक प्रश्न। ई विभाग शिल्पगत महत्त्व

रखैत अछि। अपराधकेँ केवल दोषी बनाम निर्दोषक त्वरित विभाजनमे नहि समेटि, कथा प्रत्येक प्रक्रियाक अलग नैतिक लागत गनैत अछि।

साथे इहो देखबाक चाही जे जमानत आ गिरफ्तारी सम्बन्धी संवाद अनेक स्थाने सिद्धान्त-सूचक सूत्रक रूपमे आबैत अछि। पाठकक कल्पनाशील सहभागिता बचय, ताहि लेल अनेक प्रसङ्गमे अधिक मौन आ कार्य-व्यवहारक स्वयं बोलब सम्भव छल। तथापि लेखकक चयन स्पष्ट अछि—प्रक्रियाक अन्तरकेँ दृश्यक विषय बनायब, केवल कथा आगाँ बढ़ेबाक यन्त्र नहि।

अध्ययन-इकाई ५३ — खुलल फाटक, भीजल पोथी आ राज्यक सावधान प्रतिवेदन (मूल दृश्य २०९–२१२)

प्रदीप घर पहुँचल, मुदा विश्वासक दुआर बन्द रहल

दृश्य २०९मे प्रदीप महाजन जमानत पर बाहर अबैत अछि। पत्नी हुनका अनैत छथि, मुदा तृषा नहि आयल अछि। घरमे हुनकर कोठली साफ अछि, किछु सामान पेटीमे पृथक राखल। ई दू वस्तुगत विवरण पात्रक सम्भावित पुनःप्रवेशक सीमा निर्धारित करैत अछि। घर मना नहि कएल गेल; पहिनुक भरोसाक स्थिति सेहो तुरन्त बहाल नहि भेल। पत्नी मुकदमा चलैत रहबाक स्मरण करबैत छथि आ बेटी लेल समय माँगैत छथि। एहिमे क्षमाक अधिकार परिवारक हाथमे सुरक्षित अछि, न्यायालयक जमानत आदेशक हाथमे नहि।

खुलल केवाड़ी आ बन्द विश्वासक विरोध लेखकक सङ्क्षिप्त शिल्प अछि। प्रदीप रोजगारक प्रश्न पर असहाय अछि; पत्नी ओकरा अपने कर्तव्यक उत्तर स्वयं खोजय दैत छथि। कारागारक वास्तुशिल्प समाप्त भेलो सामाजिक दण्डक अनुभूति एखन जीवित अछि। मुदा सामाजिक अस्वीकृतिक अर्थ स्वतः न्यायसङ्गत दण्ड नहि; समीक्षा एहि भेदक प्रश्न उठबैत अछि। प्रदीपक आर्थिक कृत्यक उत्तरदायित्व आ बेटी-स्त्रीक स्वतन्त्र प्रतिक्रिया अलग-अलग परखबाक चाही।

धनेश्वरीक पोथी : गृह-परम्परामे प्रमाणक सहज सिद्धान्त

दृश्य २१०मे बाढ़ि उतरबाक पछाति ईशान धनेश्वरीक भीजल पोथी खोलैत अछि। ओहिमे लिखल अछि जे साँपक भय सँ घर नहि छोड़बाक चाही, मुदा देखल बिना साँपक उपस्थितियो निश्चित नहि मानबाक चाही। ई सन्देश उपन्यासक आरम्भक गहुमन-बिज्जी प्रसङ्गसँ अनुवादित होइत अछि—भीति आ निश्चिन्तता दुनूकेँ प्रत्यक्ष जाँचक अधीन रखब। धनेश्वरी न्याय-दर्शनक औपचारिक पद्धति नहि पढ़ने छलिह, मुदा लोकानुभवक आधार पर प्रमाणक

अनुशासन बुझैत छलीह। ई भेद उच्च शिक्षित अन्वेषक आ ग्रामीण वृद्धाक ज्ञानबीचक कृत्रिम पदानुक्रमकेँ चुनौती दैत अछि।

मृणालिनी कहैत छथि जे गाममे पहिने साँपक अफवाहक कारण आधा टोला राति बाहर सुतल छल। एहि ऐतिहासिक घरेलू सन्दर्भसँ पोथीक वाक्य केवल सार्वकालिक नीति नहि रहैत; एक विशेष सामूहिक भयक प्रतिकृति बनैत अछि। माँ-बेटा एक संग हँसैत छथि आ कानैत सेहो। कथाक सामान्य हत्या-जाँचक भाषासँ ई क्षण अलग अछि; त्रासदीक बीच हास्य मनुष्यक जीवित अनुभवक प्रमाण अछि। मैथिली लोककथाक स्वरतत्त्व आ आधुनिक न्यायिक संशय एहि प्रसङ्गमे मिलैत अछि, बिना लोकवाक्यकेँ विधिक धाराक स्थानपर रखने।

रचनाक अन्तरिम प्रतिवेदन : रूपक-विहीन राज्यभाषाक राजनीति

दृश्य २११ उपन्यासक विधिक विवेकक सर्वाधिक अनुशासित अंशमे सँ एक अछि। रचना सिन्हा प्रतिवेदनमे बिज्जी, गोहि वा पानिक रूपक नहि रखैत छथि; केवल तथ्य, स्रोत आ सीमा लिखैत छथि। सत्यप्रकाशक भुगतान-आपत्ति, दिगन्तक आर्थिक हित, देवांशु द्वारा गैरकानूनी दबावक निर्देश स्वीकार, हरिचरणक हिंसक व्यवहारक अभिलेख, भारी वाहनक बुकिंग, मरम्मति-बिल आ फोटो-टिप्पणी—प्रत्येक अलग कड़ीक रूपमे उपस्थित अछि। लेखक एहि सूचीसँ पाठककेँ न्यायिक तर्कक निर्मिति देखबैत छथि: निष्कर्ष मात्र कहि देल नहि जाइत, ओकर आधारो प्रदर्शित होइत अछि।

प्रतिवेदन अपन सीमासभ सेहो लिखैत अछि—हरिचरण मृत, सम्भावित चालक मृत, मूल वाहन अनुपलब्ध, भौतिक जाँचक नमूना नहि, देवांशुक अन्तिम संवादक स्वतन्त्र पुष्टि नहि, बीस वर्षक स्मृति-क्षय। ई नकारात्मक सूची सकारात्मक सूची जतेक महत्त्वपूर्ण अछि। एहन विवरण राज्यक सर्वज्ञता पर सीमा लगबैत अछि। प्रतिवेदन पूर्व ‘सामान्य सड़क दुर्घटना’ मानि बन्द कएल निर्णयकेँ असन्तोषजनक ठहरबैत अछि आ वाहनसँ जानि-बुझि टक्करक परिकल्पनाकेँ पर्याप्त समर्थन भेटबाक बात कहैत अछि। मुदा जीवित व्यक्तिक

विशिष्ट आपराधिक उत्तरदायित्व न्यायिक परीक्षण लेल छोड़ैत अछि। एहि आंशिक निष्कर्षक सूक्ष्मता बिना कथा गलत रूपसँ ‘हत्या पूर्ण सिद्ध’ कहि समाप्त कएल जा सकैत छल।

मृणालिनीक स्वीकार : जतेक भेटल, ओतबे सुरक्षित राखब

दृश्य २१२ प्रतिवेदनक सार्वजनिक सारक घरेलू पठन अछि। मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो सोझाँ दीप जरेबैत छथि, मुदा लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ई विजय-उत्सव वा पूजा नहि। ‘तूँ झूठ नहि कहैत छलह’क सम्बोधन दू दिशामे खुलैत अछि—मृत पतिक सत्यवादिता आ अपन दीर्घकालक संशयक पुष्टि। ईशान सेहो निश्चित नहि जे वाक्य ककरा लेल छल। एहि अनिश्चिततक कारण पाठककेँ पात्रक निजी अन्तरात्मा पर एकमात्र अर्थ थोपबाक अधिकार नहि भेटैत अछि।

‘पूरा उत्तर एखनहुँ नहि’ स्वीकारबासँ कथाक भावनात्मक ताप कम नहि होइत; उल्टे अपूर्ण न्यायसङ्ग निजी जीवनक अगिला सम्भावना खुलैत अछि। नव झाड़ीमे छोट बिल देखाइत अछि, मुदा ओहि बिज्जीक पहिचान अनिश्चित। रक्षकक जीवशास्त्रीय निरन्तरता असिद्ध रहितो ‘पहरा’क नैतिक निरन्तरता सम्भव अछि। एही ठाम उपन्यास शीर्षक-प्रतीककेँ व्यक्ति-पूजासँ हटाकऽ साझा अनुशासनक रूप दैत अछि।

तेसर इकाईक शिल्पगत फल

चारि दृश्य क्रमशः बाहरी स्वतन्त्रता, पुरान पोथी, राज्यक प्रतिवेदन आ घरेलू स्वीकृति देखबैत अछि। ‘खुलल दरबज्जा’ प्रदीप लेल पूर्ण मुक्ति नहि; ‘भीजल पोथी’ ईशान लेल निरर्थक भौतिक वस्तु नहि; ‘अन्तरिम’ प्रतिवेदन मृणालिनी लेल पूर्ण निर्णय नहि। एकहि शब्दमे ई संरचना ‘अपूर्णता’क अछि; मुदा सभ अपूर्णता असफलता नहि। कतहु ओ अधिकारक रक्षा अछि, कतहु स्मृतिक, कतहु सावधान न्यायिक भाषाक।

एहि अंशक सम्भावित सीमा ई अछि जे कथनकार प्रतिवेदनक अर्थ बारम्बार स्पष्ट करैत अछि; किछु पाठक अधिक अप्रत्यक्ष प्रस्तुति चाहि सकैत छथि।

मुदा ‘राज्य जे कहि रहल अछि’ आ ‘जे नहि कहि रहल’क विपरीत क्रम देवनाइ शिल्पक सजग निर्णय अछि। ओकरा सरलीकरण कहि हटाओल गेल तँ उपन्यासक प्रमाणगत नैतिकता कमजोर पड़त।

अध्ययन-इकाई ५४ — आरोप-पत्रक वर्गीकरण, सामाजिक क्षति आ नकारात्मक निष्कर्ष (मूल दृश्य २१३–२१६)

पुरान मृत्यु-जाँच आ नव जुआ-मुकदमाक सीमारेखा

दृश्य २१३मे रचना सिन्हा स्पष्ट आदेश दैत छथि जे नव जुआ-मामलाक आरोप-पत्र सत्यप्रकाशक पुरान मृत्युकेँ नाटकीय प्रस्तावना बना कऽ आरम्भ नहि करत। पुरान वित्तीय पथक प्रासङ्गिक अंश अवश्य आयत, मुदा ओहिसँ अतिरिक्त भावनात्मक इतिहास नव अभियोगमे नहि घुसाओल जाए। एहि निर्णयक काव्यशास्त्रीय अर्थ सेहो अछि: लेखक अपन उपन्यासमे इतिहासक दुनू सूत्र जोड़ैत छथि, मुदा कथाक भीतर न्यायिक दस्तावेजक भाषा एकरूप बनबय नहि दैत। साहित्यकेँ समग्र सम्बन्धक कल्पना उपलब्ध अछि, अभियोजनकेँ निर्दिष्ट आरोप सिद्ध करबाक कर्तव्य।

रचना खाताधारकसभक ज्ञान, लाभ, पुनरावृत्ति आ भूमिका पृथक करबाक निर्देश दैत छथि। सबीना, अभिषेक, शैलेश, रितेश आ सौमित्रक खाते ‘माध्यम’ बनल, मुदा व्यक्ति-व्यक्ति बीच नैतिक आ विधिक अन्तर अछि। एतय खाता आ खाताधारकक समवाय एक समान आपराधिक आशय सिद्ध नहि करैत। नव्य न्यायक सम्बन्ध-विश्लेषणक उपयुक्त उपमा ई अछि जे ‘खाता संलग्न’ कथनक विषय आ ‘खाताधारक अपराधी’ कथनक विषय, सम्बन्ध आ प्रमाण-सीमा अलग अछि। ई दर्शन-सम्बन्धी तुलनात्मक व्याख्या अछि, कानूनक निर्णायक सूत्र नहि।

सूचीबद्ध पीड़ित आ जे क्षति सूचीमे नहि समाइत

दृश्य २१४मे नब सूची पीड़ितक बनैत अछि। जुआमे हारल परिवार, ठगीक मूल खाताधारक, रोकल गेल वैध आयसँ वञ्चित परिवार, निर्दोष कर्मचारी, रितेशक मारपीटक अनुभव—ई सभ अलग ढङक क्षति अछि। तकर पाछाँ मनोजक परिवारक सामाजिक प्रभावक चर्चा होइत अछि। अधिकारी पुछैत अछि जे

अभियुक्तक परिवार पीड़ित-पञ्जीमे कोना? रचना स्पष्ट करैत छथि—ई वैधानिक प्रतिकरक सूची नहि, सामाजिक प्रभावक अध्ययन अछि। एहि शब्द-भेदसँ रचना हर सामाजिक पीड़ाकेँ विधिक क्षतिपूर्तिक स्वतः दावा नहि बनबैत, मुदा सामाजिक अध्ययनसँ सेहो बाहर नहि करैत।

ईशान कहैत अछि जे अपराधक लागत सरकारी मुकदमा-सारणीसँ पैघ अछि। ओकर योगदान अभियोजक वा न्यायाधीशक स्थान ग्रहण करब नहि; आँकड़ा-सलाहक सीमामे सामाजिक हानिक दृष्टि जोड़ब अछि। एतय उपन्यास अर्थशास्त्रक मापन आ इतिहासक अनुभवबीच पुल बनबैत अछि। जे भार तुरन्त रकममे बदलल नहि जा सकैत—प्रतिष्ठा, भय, उपचार-रुकावट, घरमे भरोसा—ओकर अस्तित्वक निषेध नहि होयबाक चाही। किन्तु सभ क्षतिक एकहि राशिक तर्क लगेनाइ सेहो अनुचित होयत।

साझा मध्यस्थ, पृथक उद्देश्य : राष्ट्रीय-सुरक्षा अनुमानक जाँच

दृश्य २१५मे अपूर्वा कश्यप रचनाकेँ राष्ट्रीय जाँचक साझा वित्तीय कड़ी सम्बन्धी परिणाम बतबैत छथि। उपलब्ध सामग्री साझा मध्यस्थ देखबैत अछि, मुदा जुआ-जाँच आ अलग राष्ट्रीय-सुरक्षा प्रकरणक उद्देश्य एक नहि सिद्ध करैत। एहि कारण एखन राष्ट्रीय-सुरक्षा वित्तपोषणक प्रमाण नहि अछि। ई नकारात्मक निष्कर्ष उपन्यासक नैतिक सफलता अछि, किएक तँ गम्भीर अपराधक एक वित्तीय मार्ग भेटिते अधिक व्यापक षड्यंत्रक सनसनी रचबाक प्रलोभन प्रबल होइत अछि।

अपूर्वाक कथन—सही निष्कर्ष कखनो छोट देखाइत अछि—साहित्यिक आख्यानक रचनात्मक साहस समझबैत अछि। लेखक पाठककेँ सुलभ सनसनी नहि दैत, बल्कि कम आरोप आ अधिक सावधान भेद दैत छथि। तथापि ई देखब आवश्यक अछि जे ‘एखन प्रमाण नहि’क अर्थ ‘सदैव प्रमाण नहि भेटत’क सार्वकालिक घोषणा नहि। दृश्य स्वयं उपलब्ध सामग्रीक समयगत सीमा रखैत अछि। जाँचक नैतिकता प्रमाणक अनुपस्थिति केँ इच्छित दिग्दर्शनक प्रमाणमे नहि बदलैत।

मृणालिनीक शान्त देहरी : अधूर ज्ञानक संग पहरा

दृश्य २१६मे कमला-बलानक जल उतरि गेल अछि। मृणालिनी देहरी पर बैसल छलीह। एक बिज्जी झाड़ी सँ निकलि खेतक किनार जाइत अछि; पानिमे भारी वस्तुक हलचल छैक। की गोहि, माछ कि काठ—निश्चित नहि। दृश्य आरम्भक पशु-प्रतीककेँ फेर लबैत अछि, मुदा एहि बेर कोनो प्रत्यक्ष संघर्ष नहि। मृणालिनी दूरीसँ देखैत छथि, सत्य जानबाक उत्कण्ठाकेँ बलपूर्वक नाम नहि दैत। ‘सभ रहस्य खोलब नहि’क अर्थ प्रश्न छोड़ब नहि; असिद्ध उत्तरक स्थानपर सजगता रखब अछि।

मृणालिनी बीचमे छथि—घरक भीतर सत्यप्रकाशक फोटो, बाहर नदी, आ किनार बिज्जीक पदचिह्न। ई दृश्य एक संग निजी स्मृति, प्रकृति आ जीवित नैतिक अभ्यासक स्थान-विन्यास बनबैत अछि। मूल पाठ अन्तमे स्पष्ट करैत अछि जे नब जुआ-मुकदमा एखन न्यायालय धरि पहुँचब शेष अछि। तेँ एहि शान्त दृश्यकेँ सम्पूर्ण उपन्यासक अन्तिम समाधान कहब असत्य होयत। ई एक मोड़ अछि, समापन नहि।

चारिम इकाईक अर्थगत सम्बन्ध

दृश्य २१३–२१६क साझा सन्देश ई नहि जे सभ अपराध एके जालक अछि, बल्कि इएह जे जे अलग अछि ओकरा अलग बुझबो न्याय अछि। आरोप-पत्रमे व्यक्ति-भूमिका पृथक्करण, सामाजिक प्रभाव-पञ्जीमे विधिक आ सामाजिक श्रेणी पृथक्करण, राष्ट्रीय-सुरक्षा जाँचमे साझा मध्यस्थ आ साझा उद्देश्यक पृथक्करण, आ नदीक दृश्येमे देखल वस्तु आ अनुमानित प्राणीक पृथक्करण—चारू ठाम एकहि विचार अलग माध्यममे अभिव्यक्त अछि।

कला-सीमाक प्रश्न सेहो एतय उठैत अछि: बहुतेक दृश्य अन्तमे व्याख्यात्मक सूत्र पर समाप्त होइत अछि; रूपकक पुनरागमन पाठकक स्वतन्त्र अर्थ-निर्माणकेँ कने सीमित करि सकैत अछि। मुदा एहि दृश्यसमूहमे सूची, फोन-संवाद आ

शान्त प्राकृतिक दृश्यक लयात्मक अन्तर उपन्यासक बोझ घटबैत अछि। एहन संरचना बहु-रेखीय कथाकेँ नब न्यायालयी चरण दिस सहजतासँ बढ़बैत अछि।

अध्ययन-इकाई ५५ — न्यायालयक पहिल साक्षी : वित्तीय असामान्यता आ सबीनाक निर्णय (मूल दृश्य २१७–२२०)

दू कथा एक न्यायालयमे पूर्ण रूपेँ नहि मिलैत

दृश्य २१७मे राजधानी नगरक विशेष न्यायालयक विस्तृत सुनवाई शुरू होइत अछि। बाहर कैमरा, भीतर काठक बेंच; अभियुक्तसभ एक पाँतिमे नाम सहित उपस्थित अछि—केशव मेहता, मनोज नायक, रघुवीर तांती, जमानत पर सौरभ बर्धन आ प्रदीप महाजन। अन्य व्यक्तिक भूमिका एखन विवादित अछि। रचना साक्षी-पाँति कात छथि; ईशान पक्षकार नहि, सार्वजनिक दीर्घामे बैसल अछि। एहि देहगत स्थान-विन्याससँ कानूनक प्रक्रियागत भूमिका स्पष्ट होइत अछि। पाठक जेकरा नायक अथवा प्रतिनायक मानि रहल छल, न्यायालय ओहि साहित्यिक श्रेणीसँ मुक्त विशिष्ट प्रक्रिया माँगैत अछि।

मृणालिनी एहि सुनवाईमे नहि आयलीह। हुनकर कथन जे नव अपराधक न्यायालयमे पतिक उत्तर नहि ताकतीह—ई दुइ कथा बीच सीमारेखा अछि। पुरान मृत्यु-जाँचक प्रमाण नव आरोप-पत्रक कानूनी दायरा नहि बढ़ा सकैत, यद्यपि कथा-वृत्तमे इतिहास परस्पर जुड़ल अछि। लेखक एहि विधिक भेदकेँ पात्रक निजी निर्णयक माध्यमसँ अधिक सशक्त बनबैत छथि। मृणालिनीक अनुपस्थिति निष्क्रियता नहि; अपन प्रश्नक उचित मञ्चक चुनाव अछि।

अभियोजनक आरम्भ : एकल साम्राज्य नहि, परत-दर-परत सङ्गठन

दृश्य २१८मे अभियोजन वैध डिजिटल कम्पनी, बाहरी विपणन-दल, निजी दाँव-वृत्त, खाताधारक भर्तीक मार्ग, वित्तीय समायोजन आ निवेशक संरचनाक अनेक परत प्रस्तुत करैत अछि। ई विवरण जटिलताकेँ एक ‘जुआ-सम्राट’क लक्षणमे नहि समेटैत। अभियोजन स्वयं स्वीकार करैत अछि जे सभ घटकक एकहि अपराधमे सहभागिता मानि नहि चलल जाएत; प्रत्येक अभियुक्तक ज्ञान, भूमिका आ आशय प्रमाणसँ स्थापित करब पड़त। बचाव एहि सावधानीकेँ

केन्द्रीय षडयंत्रक अभावक स्वीकार कहि प्रस्तुत करैत अछि, मुदा अभियोजक दायरा प्रमाण अनुसार सिद्ध करबाक बात दोहरबैत अछि।

‘वाद, जल्प, वितण्डा’क क्रम लेखकक न्याय-दर्शनक उपशीर्षकसँ सोझाँ सम्बन्ध रखैत अछि। न्यायालयमे तर्कक प्रस्तुतिक संग प्रमाणक भार ककर ऊपर अछि, से प्रश्न निर्णायक बनैत अछि। भारतीय वादपरम्पराक ई शब्द न्यायालयक आधुनिक विधिक क्रियाक प्रत्यक्ष ऐतिहासिक उत्पत्ति घोषित करैत नहि; लेखक वैचारिक उपमा दैत छथि। काव्यगत उपलब्धि ई जे बहसक भाषिक चातुर्य स्वयं सत्यमान नहि ठहरैत। बचावक तेज प्रश्न आ अभियोजनक संयम दुनूकेँ मूल विषय—साक्ष्यक परिधि—तक लौटाओल जाइत अछि।

बैंक-अनुपालन अधिकारीक बयान : असामान्य खाता अपराध नहि

दृश्य २१९मे पहिल साक्षी बैंकक अनुपालन अधिकारी अछि। हजार पृष्ठ टेबुल पर जमा करबाक बदला ओ प्रमाणित सारणी, मूल अभिलेखक संदर्भ, खाता-श्रृंखला आ रोक-आदेशक प्रक्रिया प्रस्तुत करैत अछि। ई प्रस्तुति प्रमाणक परिमाणसँ अधिक ओकर सत्यापन-योग्यता पर बल दैत अछि। अभियोजन पहिनहि पूछैत अछि जे सभ खाताधारक अपराधी छल कि नहि; साक्षी ‘नहि’ कहैत अछि। असामान्य लेनदेन अपने अपराध-सिद्धि नहि, मुदा जाँचक आधार भऽ सकैत अछि।

बचाव एहि सीमाकेँ तत्काल जीत मानय चाहैत अछि। न्यायाधीश स्पष्ट प्रश्न राखैत छथि—बैंकक चेतावनी एक जाँच-सूचक संकेत अछि कि अपराधक निर्णय? उत्तर पहिल अछि। एहि सूक्ष्म भेदसँ ‘असामान्य = अपराधी’क हेत्वाभास टूटैत अछि। नव्य न्यायक अर्थमे असामान्य व्यवहार आ आपराधिक आशयक सम्बन्ध सार्वत्रिक निश्चित नहि; ताहि आधारपर निष्कर्षमे अवैध छलाँग होइत अछि। बैंकक सङ्केत अनुसन्धानमे महत्त्वपूर्ण हो सकैत अछि; न्यायालयी दोषनिर्णयमे ओकर मूल्य आन साक्ष्यसँ मिलान पर निर्भर रहत।

सबीना खातूनक गवाही : विपन्नता, ज्ञानक वृद्धि आ विकल्पक मूल्य

दृश्य २२० दोसर साक्षी सबीना खातूनक अछि। ओ अभियुक्त-पाँतिमे नहि, साक्षी रूपमे अबैत छथि। खाता उपयोग देबाक बदलामे महिनाक पाँच हजार प्राप्त करबाक बात स्वीकार करैत छथि। आरम्भमे पैसाक स्रोत नहि बुझबाक कथनक संग ओ बादमे अत्यधिक रकम घूमब देखिकऽ शंका भेल से सेहो कहैत छथि। रोकबाक प्रश्न पर ‘नहि’ उत्तर दैत छथि, आ कारणमे बेटीक इलाज कहैत छथि। एहि अनुक्रमसँ समयक संग ज्ञान बदलैत देखाइत अछि; ‘पहिने नहि जनैत छलहुँ’क अर्थ ‘अन्त धरि किछु नहि बुझलहुँ’ नहि बनैत।

बचाव सबीनाक बादक शंका, जारी लाभ आ अपन निर्णयक स्वीकार पर प्रश्न करैत अछि। अदालत गवाहक विधिक स्थिति स्वयं तय करबाक अधिकार राखैत अछि; बचावक ‘तँ अहाँ निर्दोष पीड़ित नहि’ सन निष्कर्षकेँ तत्काल मान्यता नहि दैत। एहि दृश्यकेँ केवळ ‘गरीबी कारण सब किछु क्षम्य’ अथवा ‘लाभ भेटल तेँ सम्पूर्ण अपराधी’क द्वन्द्वमे पढ़ब अनुचित अछि। उपचारक आर्थिक विवशता, प्रारम्भिक अनभिज्ञता, बादक शंका आ जारी सहभागिता—चारू तथ्य एकहि मनुष्यमे सम्भव अछि। न्यायिक निर्धारणमे कर्तव्य, ज्ञान, विकल्पक वास्तविक उपलब्धता आ विशिष्ट अपराधक तत्वसभक जाँच अपेक्षित रहत।

सबीना अपन निर्णय स्वीकार करैत छथि। ई स्वीकारोक्ति नैतिक जटिलता घटबैत नहि; ओकरा सच्चा बनबैत अछि। ईशानक भीतर एहि उत्तरक ध्वनि गूँजैत अछि, किएक तँ आँकड़ा-श्रृंखलाक प्रत्येक खाता पाछाँ मानवीय परिस्थिति अछि। लेखक सबीनाकेँ निष्क्रिय करुणा-वस्तु नहि बनबैत छथि। हुनकर भय, प्रश्नक उत्तर, लाभक स्वीकार आ बेटी लेल चिन्ता मिलिकऽ स्त्रीक कठिन चयन देखबैत अछि। ई दृष्टि सामाजिक करुणा आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व दुनूकेँ साथ रखबाक प्रयास अछि।

पाँचम इकाईक अन्तर्वस्तु : संस्था न्याय करैत अछि कि वर्गीकरण?

दृश्य २१७–२२०क क्रम न्यायालयक स्थान-विन्याससँ आरम्भ भऽ अभियोजनक बहुपरतीय प्रस्तुति, बैंकक तकनीकी गवाही आ सबीनाक देहधारी अनुभव धरि

पहुँचैत अछि। एतय सार्वजनिक आरोपक ऊँच भाषा क्रमशः विशिष्ट तथ्य आ विशिष्ट व्यक्तिक जीवनमे उतरैत अछि। मुकदमाक नाटकीयता ककरो नाम केन्द्रीकृत अपराधी घोषित करबामे नहि, सर्वनाम ‘सभ’क स्थानपर प्रत्येक व्यक्तिक अलग क्रिया राखबामे अछि।

एहि प्रक्रिया-केंद्रित कथनक कमजोरी ई भऽ सकैत अछि जे पात्र बेसी सुस्पष्ट प्रमाण-पाठ करैत देखाइत छथि, जखन कि वास्तविक जीवनक गवाही प्रायः टुटल, अस्पष्ट आ अटकैत होइत अछि। सबीनाक रुकल उत्तर आ ईशानक निजी प्रतिक्रिया एहि सम्भावित कृत्रिम सुव्यवस्थाकेँ मानवीय अनुभवसँ सन्तुलित करैत अछि। अदालतक बहु-रेखीय दृश्य उपन्यासक नव चरण खोलैत अछि; दृश्य २२० पर न्यायिक निर्णय एखन नहि आयल अछि, तेँ एकर परवर्ती निष्कर्ष आगाँक दृश्यक मूल पाठ बिना लिखब नहि चाही।

एगारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य २०१–२२० : बचल कागज, अपूर्ण प्रमाण आ बहुस्तरीय न्याय

बीस दृश्यक चारि समानान्तर कथात्मक गति

एहि समूहमे चारि प्रमुख गति अछि। पहिल बाढ़िक सामाजिक विस्थापन—विद्यालयक सामूहिक आश्रय, भीजल पारिवारिक पोथी आ घरक पुनःप्रवेश। दोसर पुरान मृत्यु-जाँचक नव मोड़—मरम्मति-बिल, देवांशुक बयान, अन्तरिम प्रतिवेदन आ मृणालिनीक सीमित न्याय-बोध। तेसर वर्तमान डिजिटल जुआ-जालक अभियोग-प्रक्रिया—गिरफ्तारी, जमानत, आरोप-पत्र आ पीड़ितक सूची। चारिम न्यायालयमे साक्ष्य प्रस्तुतिक आरम्भ—अभियोजनक भूमिका-विभाजन, बैंकक अनुपालन-विवरण आ सबीनाक जीवन-स्थितिजन्य गवाही। लेखक एहि चारूकेँ एक ‘बड़ा रहस्य’क समाधानमे मिला नहि दैत छथि; एकर समय, प्रमाण आ सामाजिक असर पृथक अछि।

पारिवारिक छवि, सरकारी प्रतिवेदन, बैंक-सारणी आ साक्षीक मौखिक उत्तर ज्ञानक भिन्न माध्यम अछि। भीजल विवाह-चित्र परिवार लेल महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा अभियोग सिद्ध करबाक अभिलेख नहि। मरम्मति-बिल दस्तावेज होइतो वाहनक विशिष्ट दुर्घटनाक स्वतः प्रमाण नहि। बैंकक असामान्य लेनदेन जाँचक संकेत अछि, खाताधारकक दोष नहि। सबीनाक स्वीकार व्यक्तिगत ज्ञानक बदलैत अवस्थाक मौखिक प्रमाण अछि, मुदा ओकर संपूर्ण विधिक मूल्य न्यायालय निर्धारित करत। एहि भेदक बारम्बार रक्षा रचनाक संरचनागत विशेषता अछि।

भारतीय न्याय-विचार : प्रत्यक्ष, अनुमान आ विश्वसनीय कथन

भारतीय न्यायपरम्पराक प्रत्यक्ष आ अनुमानबीचक भेद अध्ययन लेल उपयोगी अछि। राहत-शिविरमे बिज्जीक घाव आ गहुमनक पाछाँ हटब प्रत्यक्ष अनुभूत दृश्य अछि। पुरान वाहनक मरम्मति सँ मृत्यु-दिनक टक्कर धरि पहुँचनाइ परोक्ष

अनुमान अछि। देवांशुक बीस वर्ष पछातिक कथन मौखिक स्रोत अछि, जकर हित, स्मृति आ स्वतंत्र पुष्टि जाँचब आवश्यक अछि। एहिसँ न्याय-दर्शनक प्रयोग रचनापर बाहरसँ आरोपित नहि लगैत; उपन्यास स्वयं ‘जे देखल’ आ ‘जे बुझल’क बीच दूरी दर्शबैत अछि।

मात्र प्रत्यक्ष-साक्ष्य नहि होयब कारण परोक्ष शृंखलाक सर्वथा अवमूल्यन सेहो अनुचित अछि। एकटा मरम्मति-बिल हत्या नहि सिद्ध करैत, मुदा अनेक स्वतंत्र कड़ी सहमति दैत अछि तँ अनुमान मजबूत होइत अछि। लेखक अनिरुद्धक माध्यमसँ एही बात बतबैत छथि। तदपि ‘मजबूत’क अर्थ ‘अन्तिम’ नहि। न्याय-परम्पराक उपमासँ एहि अनुशासनकेँ विस्तृत करब सम्भव अछि, मुदा अदालतक वास्तविक प्रमाण-मानदण्ड साहित्यिक दार्शनिक रूपक मात्रसँ निर्धारित नहि होइत।

नव्य न्याय : विषय, सम्बन्ध आ निष्कर्षक सीमा

नव्य न्यायक सूक्ष्म विचारक अनुरूप तीन स्तर पृथक करब उपयुक्त अछि—कथनक विषय की अछि, सम्बन्ध कोन प्रमाणेँ स्थापित अछि, आ ओहि सम्बन्धसँ निष्कर्ष कतेक दूर जा सकैत अछि। ‘देवांशु दबाव देबाक कहने छल’, ‘हरिचरण हिंसक उपाय करैत छल’ आ ‘देवांशु हत्या-आदेश देने छल’ तीन अलग कथन अछि। पहिल दुइक समर्थन उपलब्ध होयबाक अर्थ तेसरक स्वतः पुष्टि नहि। ‘एक खाता असामान्य लेनदेनमे प्रयोग भेल’ आ ‘खाताधारक जानि-बुझि अपराधमे सहभागी छल’ सेहो अलग कथन अछि।

सबीना बतबैत छथि जे आरम्भमे जानकारी नहि छल, बादमे शंका भेल आ निर्णय जारी रहल। समयगत अवस्थाक भेद हटाओल गेल तँ नैतिक निर्णय विकृत होयत। नव्य न्यायसँ प्रेरित ई सावधानी साहित्यक पाठमे कर्ता, क्रिया, ज्ञान आ समयक सम्बन्ध पहिचानैत अछि। एकर उपयोग खास कऽ ओतय महत्त्वपूर्ण अछि जतय उपन्यास अनेक आरोपी, अनेक निजी कम्पनी आ अनेक प्रकारक वित्तीय मध्यस्थ एक संग देखबैत अछि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक प्रक्रिया-केन्द्रित पाठ

पाश्चात्य अपराध-साहित्यक अनुसन्धान-केंद्रित परम्परामे प्रायः अन्तिम उद्घाटन कथा-ऊर्जाक केन्द्र बनैत अछि। ‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क एहि बैचमे उद्घाटनक संग प्रक्रियागत असमाप्ति सह-अस्तित्व रखैत अछि। देवांशुक बयान पुरान घटनाकेँ नव दिशा दैत अछि; अन्तरिम प्रतिवेदन निर्णायक सरकारी पुनर्विचार अछि; मुदा विशिष्ट अपराधक पूर्ण दोषसिद्धि नहि। दोसर दिस, जमानत देनाइ अभियोगक समाप्ति नहि; बैंकक गवाही अभियुक्तक सर्वसम्पूर्ण अपराध नहि; सबीनाक संवेदनशील उत्तर न्यायक अन्तिम फैसला नहि।

एहि विश्लेषणमे लेखकक चरित्रनिर्माणक एक सीमा देखल जा सकैत अछि: प्रमाणक सूत्र अनेक पात्रक मुँहसँ पुनरुक्त होइत अछि। अनिरुद्ध, रचना, मयंक आ ईशानक ज्ञान-भाषा किछु ठाम एक-दोसरासँ मिलैत अछि। मुदा ओहि पुनरावृत्तिक प्रतिपक्षमे धनेश्वरीक भीजल पोथी, प्रदीपक खुलल घर, मृणालिनीक दीप आ सबीनाक बेटी-उपचारक आवश्यकता आबैत अछि; ई अनुभव न्यायिक सूक्तिक निराकारताकेँ तोड़ैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास : सरकारी अभिलेखक कात घरेलू समय

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ एहि खण्डक महत्त्व ई अछि जे संस्थागत इतिहासक कात घर, महिला, बच्चा आ श्रमक लेखा स्वतंत्र रहैत अछि। राज्यक प्रतिवेदनमे सत्यप्रकाशक वाहनक क्षति, सम्भावित षडयंत्र आ बीस वर्षक स्मृति-क्षरण लिखल अछि; मृणालिनीक जीवनमे वएह बीस वर्ष पतिक अभाव, घरक बदलैत भौतिकता आ नेनाक बढ़ैत उमेरक रूपमे दर्ज अछि। एहि दुनू इतिहासकेँ एक-दोसरक पुष्टि अथवा खण्डनक सरल यन्त्र बनायब गलत होयत। ओ सभ एके घटनाक अलग परिणाम-स्रोत अछि।

अपराधक सामाजिक प्रभावक सूची एहि समानान्तर इतिहासकेँ वर्तमान समय धरि बढ़बैत अछि। रोकल गेल वैध आयवला परिवार, चिह्नित अभियुक्तक वृद्ध माता-पिता, जुआमे हारल लोक आ कर्मचारीक रोजगार-संकट सरकारी अभियोगक ठोस वर्गीकरणसँ बाहर जा सकैत अछि। ई अतिरिक्त सामाजिक परत दिखबेनाइ अभियुक्तक विधिक दोषसिद्धिक विकल्प नहि, ओकर कारणसँ उत्पन्न व्यापक प्रभावक स्वायत्त लेखा अछि।

बिज्जीक पहरा : आदर्श नायकसँ साझा अनुशासन धरि

मूल दृश्य २०१मे बिज्जीक कान्ह पर घाव अछि; दृश्य २०२मे ओकर पुरान बिल बहि जाइत अछि; दृश्य २१२मे नब बिल भेटैत अछि, मुदा रक्षकक पहिचान निश्चित नहि; दृश्य २१६मे नदीक भीतरक भारी आकृतिक नाम सेहो असिद्ध अछि। ई चारि विवरण एक संग देखबैत अछि जे ‘बिज्जी’ एकल सदैव विजयी नायकक प्रतीक नहि। ओकर जीवन जोखिमग्रस्त अछि, स्थान बदलैत अछि, पहिचानक निरन्तरता प्रमाणित नहि। तथापि सामाजिक सतर्कताक प्रतीक जारि रहैत अछि।

पहरा एखन ककरो हत्या करबाक प्रतिशोध नहि, बल्कि गलत निष्कर्ष रोकबाक अनुशासन अछि। बैंक अधिकारी असामान्य कैं अपराध नहि कहैत; रचना अति-विस्तृत आरोप अस्वीकार करैत; अपूर्वा साझा मध्यस्थक आधारपर राष्ट्रिय षड्यंत्र नहि गढ़ैत; मृणालिनी अधूर प्रतिवेदनकेँ पूरा विजय घोषित नहि करैत। ई सभ ‘बिज्जीक पहरा’क प्रतीकक अलग मानवीय रूप अछि। एहि रूपमे शीर्षक जीवक जीवनसँ उठि बहु-पात्रीय नैतिक क्रियामे परिवर्तित होइत अछि।

स्त्रीपात्रक स्वायत्त अनुभव : मृणालिनी, रचना आ सबीना

मृणालिनी विधवा होयबाक कारण मात्र करुणाक पात्र नहि। ओ जाँचक दीर्घ यात्रा अपन प्रश्नसँ जाँचैत छथि, प्रतिवेदनक सीमा स्वयं स्वीकारैत छथि आ नव जुआ-मुकदमामे पतिक उत्तर ताकबाक अवैध अपेक्षा अस्वीकार करैत छथि। रचना अपराध-जाँचक नेतृत्व करैत छथि, मुदा गिरफ्तार करब, अभियोग

बनायब आ साक्ष्यक मूल्य तय करैत काल अपन निर्णयपर संयम रखैत छथि। सबीना आर्थिक विवशताक साक्षी छथि, मुदा प्रश्नक उत्तरमे अपन बादक शंका आ निर्णयक भाग सेहो स्वीकारैत छथि।

तीनू स्त्रीपात्रक एहन भिन्न स्थिति पितृकेन्द्रित न्यायक एकरेखीय कथासँ बाहर निकलैत अछि। मृणालिनी निजी समयक नैतिक साक्षी, रचना संस्थागत प्रमाणक अनुशासक, सबीना आर्थिक जालक भीतर सीमित विकल्पवाली कर्ता। ‘स्त्री’क एकमात्र रूपमे एहि तीनूकेँ समेटब लेखकक रचनात्मक प्रयासकेँ कमजोर करयत। तथापि सबीनाक न्यायालयी दृश्येमे इलाजक खर्च आ लाभक ठोस विवरणक विस्तार आगाँक दृश्यसभमे जाँचल जाए, तखन ओकर सामाजिक चित्र पूर्णतर होयत; एखन तक जे स्रोत अछि, ओहि धरि सीमा राखल जाए।

एगारहम बैचक अन्तिम प्रमाण-स्थिति

मूल दृश्य २२० धरि पुरान सत्यप्रकाश-जाँचक सरकारी निष्कर्ष ‘सामान्य दुर्घटना’क पूर्व धारणा पर पुनर्विचार करैत अछि, मगर देवांशु अथवा अन्य जीवित व्यक्तिक विशिष्ट दोषसिद्धि न्यायिक प्रक्रियामे शेष अछि। वर्तमान जुआ-मुकदमामे अनेक अभियुक्त जमानत पर अथवा हिरासतमे छथि, मगर आरोप-पत्र आ प्रारम्भिक गवाही स्वयं अन्तिम निर्णय नहि। वित्तीय असामान्यता, खाता-भर्तीक भूमिका, राष्ट्रीय-सुरक्षा जाँचसँ पृथक उद्देश्य आ सबीनाक बदलैत ज्ञान—प्रत्येक क्षेत्रमे प्रमाणक स्तर अलग अछि।

एहि आधारपर बीस दृश्यक शिल्पगत उपलब्धि ‘समाधान’ नहि, **सम्बन्धसभकेँ विवेकपूर्वक अलग राखि समाधानक सम्भावना सुरक्षित रखब** अछि। एही कारण अगिला दृश्य २२१–२४० बिना पढ़ने उपन्यासक अन्तिम न्यायिक परिणाम, सबीनाक कानूनी स्थिति अथवा पहिनुक मृत्यु-जाँचक फैसला लिखल नहि जा सकैत। ई सीमा आलोचनाक कमजोरी नहि, मूल पाठमे निहित प्रमाणक अनुशासनक प्रतिफल अछि।

अध्ययन-इकाई ५६ — खाताधारकक गवाही, प्रत्यक्ष कथन आ हिंसाक अनुमान (मूल दृश्य २२१–२२४)

अभिषेकक स्वीकार : समयक भीतर बदलैत ज्ञान

दृश्य २२१मे अभिषेकक गवाही ओकरा एकसमान निर्दोष वा समान रूपसँ दोषी मानबाक सुविधा समाप्त करैत अछि। रितेशसँ कमीशनक प्रस्ताव भेटलाक समय ओ कामकेँ वैध भुगतान-सहायता बुझलक; पछाति शङ्का भेल, तैयो ऋणक दबावमे किछु समय सहभागिता जारी रखलक। एहि क्रममे ‘जानब’ एक बेरमे पूर्ण भऽ गेल अवस्था नहि, कालक्रमे बदलैत चेतना अछि। अपन एक मित्रक नाम सुझेनाइ आ ओ मित्रक खाताक वास्तवमे उपयोग नहि होयब—दुनू बात अलग लिखब आवश्यक अछि। नाम सुझेनाइमे प्रश्न अछि, मुदा उपयोग नहि भेलाक घटना सेहो ओकर दायित्व आ वास्तविक परिणामक मूल्याङ्कनमे महत्त्वपूर्ण अछि। लेखक प्रत्यक्ष कर्म आ सम्भावित परिणामकेँ एक नहि करैत छथि।

बचाव पक्ष सरकारी गवाह बनबाक लाभक प्रश्न उठबैत अछि। न्यायाधीश एहि प्रश्नक उत्तर भावनात्मक अविश्वाससँ नहि, औपचारिक कागजसँ माँगैत छथि। दस्तावेजमे अभिषेकक सीमित भूमिका आ पर्याप्त आपराधिक आशयक प्रमाण नहि भेटबाक आधार दर्ज अछि। एहि दृश्यसँ दू स्तरक आलोचना खुलैत अछि। प्रथम, राज्यक अभियोजन-निर्णय सेहो परीक्षणक विषय बनि सकैत अछि; दोसर, एहन निर्णय अनिवार्यतः मनमाना अछि, ई बचावक दावा प्रमाण बिना स्वीकार्य नहि। न्यायालय एखन तथ्य सुनबाक अवस्था आ अन्तिम बहसक अवस्थाकेँ अलग करैत अछि। ई प्रक्रियागत रोक कथाक नाटकीय गति कने घटबैत अछि, मुदा तुरन्त फैसला देबयवला अपराध-आख्यानक प्रचलित प्रवृत्तिक विपरीत ठाढ़ होइत अछि।

रितेशक दू स्तरक कथन : स्वयं सुनल आ दोसरक मुँहसँ सुनल

दृश्य २२२मे रितेश दास खाता जुटेबाक काज आ कमीशनक विषयमे अपन भूमिका नकारैत नहि। ओ मनोज नायक द्वारा लक्ष्य देबाक बात कहैत अछि।

मुदा मारपीटक समय दू व्यक्तिक मुँहसँ ‘मनोज भैया नाराज छथि’ सुनब आ स्वयं मनोजक आदेश सुनब एक प्रमाण नहि। रघुवीरक नाम बादमे जानब, ‘उदय बाबू’क अधूर उल्लेख आ पूरा नामक अभाव गवाहीक तीन पृथक दुर्बलता अछि। लेखक रितेशकेँ एक्के संग दोषस्वीकारी व्यक्ति आ सम्भावित पीड़ितक रूपमे रखैत छथि, मुदा एहि द्वैतसँ ओकर कथन स्वतः सम्पूर्ण विश्वसनीय नहि बनि जाइत अछि।

न्यायाधीशक ‘जे स्वयं सुनल वैह कहू’ निर्देश न्याय-दर्शनक भाषा मात्र नहि; एतय कथनक स्रोत बदलिते ओकर अर्थ बदलैत अछि। प्रत्यक्ष श्रवणसँ स्थापित तथ्य अछि जे अमुक व्यक्तिसभ एक वाक्य कहलनि; ओहि वाक्यसँ मनोज द्वारा आदेश देबाक निष्कर्ष अतिरिक्त साक्ष्य माँगैत अछि। भारतीय प्रमाण-चिन्तनक दृष्टिसँ ई शब्द-प्रमाणक आप्तता, संदर्भ आ प्रमाण-सीमाक प्रश्न अछि। नव्य न्यायक विश्लेषणमे कथनक विषय, विशेषण आ सम्बन्ध अलग राखब जेना आवश्यक, तेना एहि गवाहीमे ‘नाम सुनल’ आ ‘आदेश देखल अथवा सुनल’क सम्बन्ध अलग अछि। ई दार्शनिक तुलना अछि, आधुनिक न्यायालयी प्रमाण-विधिक प्रत्यक्ष समतुल्य विधान नहि।

रघुवीरक प्रकरण : समग्र परिस्थितिक अर्थ

दृश्य २२३मे फोनक सम्पर्क, दू युवकक कथन, रितेशक चिकित्सकीय अभिलेख आ रघुवीर द्वारा लोक पठेनाइ स्वीकार करब उपलब्ध आधार अछि। विवाद बचल अछि—बातचीत लेल पठाओल गेल कि मारपीट लेल? लेखक एकल शब्दक शाब्दिक बचाव आ परिस्थितिक अन्वेषणक अन्तर रेखाङ्कित करैत छथि। ‘लोक पठेलहुँ’ कथन एतबे सिद्ध करैत अछि जे ककरो पठाओल गेल। ओकर प्रयोजन, पूर्व धमकीक संदर्भ, घटनाक तुरन्त पछातिक व्यवहार आ वास्तविक चोटक बीच सम्बन्ध जाँचब आवश्यक अछि। एहि दृश्यमे चिकित्सकीय प्रमाण चोटक स्तर स्थापित करबामे सहायक भऽ सकैत अछि; ओ अकेले आदेश देनिहारक मनोभाव नहि देखबैत।

पाँच-अवयवी तर्कक उल्लेख एतय एक साहित्यिक उपमा अछि। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आ निगमनक शास्त्रीय पद्धति न्यायालयक आधुनिक प्रक्रिया पर प्रत्यक्ष आरोपित नहि करबाक चाही। उपन्यास स्वयं बीचमे सावधान करैत अछि जे न्यायाधीश संस्कृत सूत्र पाठ नहि करैत, तर्कक अनुशासन व्यवहारमे राखैत छथि। रचनाकारक उपलब्धि एहि आत्मसचेत सीमामे अछि। तथापि दू-तीन पाँतिमे दार्शनिक पदक एहन सोझ उच्चारण कतेको पाठक लेल दृश्यसँ विचार-दिशा दिस अचानक घुमाव बनि सकैत अछि। ई शिल्पगत तनाव, विचारक असत्यता नहि।

प्रदीपक साक्षी-पद : अभियुक्त आ गवाहक दोहरा भार

दृश्य २२४मे प्रदीप महाजन साक्षी होइतहुँ अपन गलत कागज, झूठ लेखा आ अवैधता बुझलाक बाद काज नहि छोड़बाक बात स्वीकारैत अछि। बचाव पक्ष ‘धनशोधन करबाक लिखित आदेश’ सन सोझ शब्द नहि भेटबाक तथ्य पर बल दैत अछि। अभियोजन तकर बदला रात्रि-कक्षक निपटान, मुख्य खातासँ अलग समायोजन, वास्तविक सेवाक बिल आ स्रोत पृथक रखबाक व्यवहारिक निर्देश जाँचैत अछि। एतय शाब्दिक अनुपस्थिति अपराधक अनुपस्थिति नहि सिद्ध करैत, मुदा संकेतक भाषासँ आपराधिक आशय स्वतः सिद्ध सेहो नहि होइत। संदर्भ, जानबूझि कएल कर्म आ विशिष्ट व्यक्ति द्वारा देल निर्देश—तीनूक प्रमाण जरूरी अछि।

प्रदीप अपन निर्णयक मानसिक इतिहास ‘पहिने नौकरी, फेर डर, फेर आदत’क क्रममे रखैत अछि। ई कथन क्षमादानक याचना नहि; ओहि आर्थिक संस्थामे नैतिक संवेदनाक क्रमिक क्षरणक मानवीय व्याख्या अछि। तृषा आ पत्नी गवाहीक समय उपस्थित नहि छथि। अनुपस्थित परिवार न्यायालयक कठोर प्रश्नक बीच दोसर, अनकहल न्यायालय रचैत अछि। कर्मचारी मात्र ‘आदेश पालन’क अमूर्त रूप नहि रहैत; ओ सम्बन्ध बिगाड़निहार आ बिगड़ल सम्बन्ध भोगनिहार व्यक्ति अछि। पाठक सहानुभूति अनुभव करि सकैत अछि, मुदा प्रदीपक आत्मस्वीकृत कर्म मेटाइत नहि।

पहिल इकाईक साहित्यिक परीक्षण

एहि चारि दृश्यक क्रम कथक-स्वरकेँ एकतरफा अभियोजन अथवा बचावमे बदलय नहि दैत। अभिषेकक सीमित आशय, रितेशक सुनी-सुनाओल वाक्य, रघुवीरक विवादित आदेश आ प्रदीपक वास्तविक सहभागिता—चारू अलग प्रकारक ज्ञान दैत अछि। सामाजिक दबाव, व्यक्तिगत भय आ कानूनी दायित्वक तन्तु परस्पर जुड़ल अछि, मुदा परस्पर विनिमेय नहि। न्यायाधीशक बारम्बार सीमा-निर्धारण न्यायालयक चरित्र बनबैत अछि, केवल कथाकारक उपदेश नहि।

एहि अंशक कलात्मक सीमा सेहो देखाइत अछि। लगभग प्रत्येक साक्षीक बाद एक छोट सूत्र कथाक आशय स्पष्ट करैत अछि। निरन्तर प्रश्नोत्तरक बीच एहन सूत्र लय बनबैत अछि, मुदा पाठकक अपन अनुमान लेल ठाम कने घटा सकैत अछि। प्रदीपक घरक अनुपस्थिति आ छोट चुप्पी स्वयं गहिर अर्थ उपजबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ५७ — डायरीक बहिष्कार, कार्यकारी ज्ञान आ प्रचारित दोष (मूल दृश्य २२५–२२८)

प्रदीपक जेल-दैनिकी : व्यक्ति आ अभियोगक सीमारेखा

दृश्य २२५मे बचाव पक्ष प्रदीपक जेल-दैनिकीसँ एक वैचारिक वाक्य न्यायालयमे प्रस्तुत करय चाहैत अछि; न्यायाधीश ओकरा आरोपसँ अप्रासङ्गिक मानि स्वीकार नहि करैत छथि। एकर साहित्यिक परिणाम साधारण नहि। पाठकक लग प्रदीपक जेल, परिवार आ आत्मपरीक्षणक दीर्घ इतिहास अछि; अदालतक लग विशिष्ट आरोप, प्रमाण आ प्रक्रिया। लेखक देखबैत छथि जे व्यक्ति अपन कथासँ पैघ अछि, मुदा विशिष्ट अपराधक निर्णय लेल सम्पूर्ण जीवनक दर्शन स्वतः प्रमाण नहि। दैनिकी मानसिक परिवर्तनक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज भऽ सकैत अछि; तथापि विशिष्ट घटना, अवधि आ आरोपमे ओकरे आधारपर दायित्व सिद्ध अथवा निरस्त नहि कएल जा सकैत।

एहि बहिष्कारकेँ दैनिकी असत्य ठहराबय नहि बुझबाक चाही। वस्तुक साहित्यिक सत्य, व्यक्तिक आत्मकथात्मक सत्य आ न्यायालयक प्रासङ्गिक साक्ष्य—तीनू पृथक मानदण्ड पर चलैत अछि। इएह कारण एहि छोट दृश्यक लम्बाइ कम रहितो ओ समग्र उपन्यासक रूप-विधान बुझबामे महत्त्वपूर्ण अछि। कृति कथा बनि अदालत सँ बेसी देखबैत अछि, मुदा कृति अपन कथामे अदालतक सीमाकेँ स्वीकार करैत अछि। एहन आत्मसंयम अपराध-प्रधान उपन्यास लेल उल्लेखनीय कलात्मक निर्णय अछि।

केशव मेहताक प्रतिरक्षा : पद, मौन आ आशय

दृश्य २२६मे केशव मुख्य कम्पनी आ बाहरी रात्रि-कक्षक विधिक-व्यावसायिक पृथक्करणकेँ अपन बचाव बनबैत अछि। अभियोजनक प्रस्तुत सन्देशमे रात्रिक निपटान मुख्य अनुप्रयोगबाहिर राखब, वास्तविक सेवाक बिल पृथक करब आ बाँकी समायोजन अलग करबाक निर्देश अछि। ई बात सँ स्थापित होइत अछि

जे केशव वित्तीय प्रवाहक पृथक्करण पर बोलैत छल; मुदा ओ अवैध निजी दाँव, खाताधारकक उपयोग आ छद्म स्रोतक वास्तविक चरित्र जानैत छल कि नहि, से न्यायिक प्रश्न बनल रहैत अछि।

लेखक ‘पद’ आ ‘ज्ञान’क बीच सूक्ष्म भेद रखैत छथि। उच्च अधिकारी होयब देखरेखक नैतिक कर्तव्य बढ़बैत अछि, मुदा ओ अपने प्रत्येक अधीनस्थक विशिष्ट अपराधक प्रत्यक्ष ज्ञान सिद्ध नहि करैत। एहि भेदक कारण कंपनीक ब्राण्ड-सुरक्षा सम्बन्धी वैध निर्देश आ गैरकानूनी लेनदेन छिपेबाक निर्देश परस्पर भ्रमित नहि भऽ सकैत। वित्तीय भाषा कतेक बेर दुटा अर्थ सहैत अछि—ई दृश्य ओकर साहित्यिक उपयोग अछि। ‘जानैत छल?’ प्रश्नक तीक्ष्णता केवल कानूनक कठिनाइ नहि, संस्थागत प्रशासनक नैतिक विवेकक परीक्षा सेहो अछि।

सौरभ बर्धन : निवेशकक दूरी आ दस्तावेजी निकटता

दृश्य २२७मे सौरभ प्रत्यक्ष परिचालनसँ दूर अछि, मुदा उत्तरायणक धन, जोखिम-सम्बन्धी ई-पत्र, क्षितिज सम्पदा आ आलोक भसीनक योजना ओकर नाम लग अबैत अछि। बचावक ‘व्यावसायिक पृथक्करण सामान्य अछि’ कथनकेँ अभियोजन सेहो नकारैत नहि। ई स्वीकृति विवादक दार्शनिक केन्द्र अछि। कोनो वित्तीय ढाँचा वैध रूपमे प्रयुक्त भऽ सकैत अछि; वही ढाँचाक अपराधमे प्रयोगक सम्भावना ओहि ढाँचाकेँ स्थायी अपराधी स्वभाव नहि दैत। घटना-विशेषमे वास्तविक उद्देश्य, गतिविधि आ ज्ञान स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

तथ्यसभकेँ एकठाम देखलासँ अर्थ बदलि सकैत अछि—ई अनुमानक शक्ति। मुदा स्वभावतः निर्दोष भऽ सकयवला अनेक तथ्य जोड़ि मनपसन्द अपराधी कथा बना देब—ई अनुमानक दोष। लेखक इएह जोखिम देखबैत छथि। नव्य न्यायक विशिष्ट सम्बन्ध-विवेचनक उपमा एतय उपयोगी अछि: ‘उत्तरायणक धन उपस्थित’क अर्थ ‘सौरभ निजी दाँवक प्रत्येक विवरण जानैत छल’ नहि। दू कथनक हेतु, आधार आ व्याप्ति अलग अछि। एहि तर्कक प्रदर्शनमे लेखक निवेशककेँ न एकान्त पापी कहैत छथि, न प्रतिष्ठित पदक कारण प्रश्नसँ मुक्त।

उदयनाथ मिश्र : प्रस्तुति बनब आ ओकर उपयोग

दृश्य २२८मे उदयनाथ अभियुक्त नहि, साक्षी अछि। ओ ‘द्वितीयक उपयोगकर्ता परिसंचरण’ विषयक प्रस्तुति, हारल उपयोगकर्ताक पुनर्सक्रियता, रेफरल आ भुगतान-सुविधाक अंश बनौने स्वीकार करैत अछि। ओकर दावा अछि जे उद्देश्य वैध ग्राहक-वृद्धि छल; बादमे आन लोक द्वारा सम्भावित गैरकानूनी उपयोगक दायित्व ओ स्वतः नहि लऽ सकैत। एहि प्रतिरक्षामे किछु वास्तविक अन्तर अछि—रचनाक निर्माणकर्ता आ ओकर उपयोगकर्ता हर प्रसङ्गमे समान आशयवला नहि होइत। मुदा प्रस्तुतिक बाद ओकरा निजी दाँवक चर्चाक ज्ञान छल आ प्रस्तुति अद्यतन भेल, ई तथ्य ओकर स्वघोषित अनभिज्ञता पर उचित प्रश्न उठबैत अछि।

‘कम्पनी लेल कानूनी सलाह भेल होयत’ कहब आ स्वयं सलाह नहि लेब स्वीकार करब, व्यावसायिक विवेकक कमी देखबैत अछि। लेखक ई नैतिक दुर्बलताकेँ तत्काल आपराधिक दोषसिद्धि नहि बनबैत छथि। परिणामतः उदयनाथक चरित्र किएक असहज अछि से स्पष्ट होइत अछि—ओ सरल निर्दोष आविष्कारक नहि, किन्तु प्रत्यक्ष रूपसँ सिद्ध अपराधी सेहो नहि। बाजारक भाषामे ‘पुनर्सक्रियता’ सन निष्पक्ष देखाइत शब्द जखन हारल मनुष्यक निर्भरता संग जुड़ैत अछि, तखन नैतिक अर्थ बदलि जाइत अछि। आर्थिक परिमाणक पाछाँ मनुष्यक वेदना लेखक फेर उपस्थित करैत छथि।

दोसर इकाईक रचनात्मक उपलब्धि आ बाधा

दृश्य २२५–२२८मे चारि प्रकारक ‘सीमा’ समानान्तर चलैत अछि—अप्रासङ्गिक निजी विचारक न्यायिक बहिष्कार, उच्च पदधारकक ज्ञानक परीक्षा, निवेशकक संस्थागत दूरी, आ प्रस्तुति-निर्माताक उत्तरदायित्व। ‘समवाय’क बहुस्तरीय सम्बन्ध उठैत अछि, मुदा लेखक कोनो अमूर्त संस्था-सञ्जालकेँ आपराधिक आशयक सरल पर्याय नहि बनबैत छथि। एहि भागक शिल्प चरित्र-विशेषक भिन्न प्रतिरक्षा-पद्धति दर्शेबामे सक्षम अछि।

ओही संग लगातार विचारसूचक अन्तिम वाक्य—‘ज्ञान’, ‘आशय’, ‘सम्बन्ध’—कथनक लयकेँ प्रायः न्यायशास्त्रीय निबन्धदिस मोड़ैत अछि। उपन्यासक उपशीर्षक एहि प्रयोगकेँ औचित्य दैत अछि, मुदा दृश्यात्मक कथा आ सिद्धान्तक अनुपात प्रत्येक पाठक एक समान पसिन्न नहि पड़त। प्रदीपक दैनिकी बाहर करबाक दृश्य एतय सर्वाधिक संयत अछि, किएक तँ छोट न्यायिक क्रिया सम्पूर्ण व्यक्तिक जटिलता स्वयं उद्घाटित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ५८ — सार्वजनिक सनसनी, बाढ़-दाग आ सीमित आरोप-विचार (मूल दृश्य २२९–२३२)

समाचारक बाजारी गति आ न्यायालयक समय

दृश्य २२९मे अलग-अलग समाचार-माध्यम जुआ-मुकदमाकेँ दार्शनिक बहानाबाजी, अत्यधिक राशिक लेनदेन आ राष्ट्रीय-सुरक्षा जाँचक सनसनीपूर्ण रूप देबैत अछि। अपूर्वा कश्यप स्पष्ट करैत छथि जे वर्तमान मुकदमा राज्यक एजेन्सीक अभियोजन अछि; आन राष्ट्रीय जाँचसँ वित्तीय मध्यस्थक सीमित सूचना-सहयोग भेल छल, मुदा एहि कारण वर्तमान मुकदमा राष्ट्रीय-सुरक्षा प्रकरण नहि भऽ जाइत। कथक एक छोट स्पष्टीकरण आ पैघ समाचारक असमान पहुँच देखबैत छथि। ई मात्र पत्रकारक नैतिक दोषक सामान्य घोषणा नहि, सूचनाक गतिक आर्थिक बनावट पर संकेत अछि।

न्यायालय साक्ष्यक स्रोत, अर्थ आ प्रतिवादक अवसर अनुसार चलैत अछि; समाचार तुरन्त नाम, रकम आ निर्णायक कथन चाहैत अछि। एहि दुनू गति बीच जे अन्तर अछि, ओ पात्रसभक प्रतिष्ठा, रोजगार आ पारिवारिक सम्मानकेँ प्रभावित करैत अछि। अभियुक्तक पक्षमे समयसँ पहिने दोषनिर्णय अन्याय अछि; समस्त जाँचकेँ षड्यंत्र कहि तुरन्त दोषमुक्ति देब सेहो सत्यसँ पलायन अछि। लेखक दुनू असावधानीक आलोचना करैत छथि। एहि दृश्यसँ अपराध-आख्यानमे पाठकक अपन शीघ्र निर्णायक अपेक्षा सेहो जाँचक विषय बनि जाइत अछि।

मृणालिनीक देबाल : स्मृतिक वस्तुगत रचना

दृश्य २३०मे गढ़ नारिकेलक घरमे बाढ़िक दाग पर नव चूना लगैत अछि। सत्यप्रकाशक फोटो देबालसँ हटि मेज पर पड़ल अछि। एक मजदूर पुरान मामला पुनः खुलबाक प्रसङ्ग उठबैत अछि आ सहज प्रश्न करैत अछि—जँ अपराधी पकड़ा नहि गेल तँ मामला फेर खोलल किएक? मृणालिनीक उत्तर प्रक्रियागत अछि: दुर्घटनाक पहिल व्याख्या आब ओतेक सरल नहि बुझाइत।

न्यायिक भाषा अपन समूचा सूक्ष्म अर्थ सहित गामक दैनिक वार्तामे प्रवेश करैत अछि, मुदा मजदूर ओकर सभ स्तर नहि बुझैत। ई संप्रेषणक असमानता जीवनसँ उठल दृश्य बनैत अछि।

देबाल पर नब चूनाक संग जानि-बुझि पुरान दागक स्थान चिन्हित राखब इतिहास-लेखनक एक परिपक्व रूपक अछि। स्मृति बचेनाइ सभ घाव खुलल रखब नहि; फेर नव चमक लगाकऽ पूर्व क्षति बिलकुल मेटि देब सेहो नहि। मृणालिनी अपन पतिक फोटो फेरे उठबैत छथि। भौतिक वस्तु आ शब्दहीन सम्बोधन अदालतक पत्रसभसँ भिन्न एक निजी अभिलेख रचैत अछि। ‘पूरा उत्तर’क अभाव घरक दैनिक काज रोकैत नहि; घर मरम्मति पबैत अछि, जबकि इतिहास खुलल रहैत अछि। ई शिल्पगत संयोजन भावुक पुनरुक्तिसँ बेसी प्रभावकारी अछि।

सत्यप्रकाशक मामला : आरोप-परीक्षण, न कि दोषसिद्धि

दृश्य २३१मे देवांशु विरुद्ध पुरान मामलाक न्यायिक आरोप-विचार होइत अछि। अभियोजन गैरकानूनी दबावक स्वीकार, हरिचरणक हिंसक पृष्ठभूमि, सत्यप्रकाशक आर्थिक आपत्ति, भारी वाहनक उपलब्ध अभिलेख, मृत्यु-दिवसक संगति आ मरम्मतिक उल्लेख प्रस्तुत करैत अछि। बचाव हत्याक प्रत्यक्ष आदेशक अभाव, मूल वाहनक पहचानक कठिनाइ, मुख्य व्यक्तिक मृत्यु, बीस वर्षक स्मृति-अन्तराल आ कथित बादक संवादक अपुष्टता उठबैत अछि। ई दू पक्ष पाठमे समान प्रमाणित तथ्य नहि, बल्कि अदालत सोझाँ उपस्थित भिन्न दावासभ अछि।

न्यायालयक उत्तर निर्णायक सीमा स्पष्ट करैत अछि: एतय अपराध सिद्ध करबाक अन्तिम निर्णय नहि, परीक्षण योग्य आधारक प्रश्न अछि। देवांशु विरुद्ध गैरकानूनी दबाव आ सम्भावित आपराधिक षडयंत्रक सीमित आरोप विचार लेल स्वीकार होइत अछि; सत्यप्रकाशक मृत्यु हेतु अन्तिम आपराधिक दायित्व खुलल रहैत अछि। समाचारक ‘हत्या का केस चलेगा’ सन शीर्षक एहि अन्तरकेँ छोट कऽ दैत अछि। मृणालिनीक ‘दरबज्जा बन्द नहि भेल’ कथन न्यायिक

उपलब्धिक छोट, मुदा सटीक वर्णन अछि। लेखक विजयक उत्सवक बदला प्रक्रिया पुनः खुलबाक अस्तित्वगत मूल्य देखबैत छथि।

देवांशुक सार्वजनिक वाक्य : नैतिक भार आ विधिक अर्थ

दृश्य २३२मे देवांशु पत्रकारसभक प्रश्नक बीच स्वीकारैत अछि जे दबाव देबाक निर्देश ओ देने छल, आ बादक घटनाक भारसँ स्वयंकेँ अलग नहि बुझैत। ई कथनक पहिल भाग स्वयं व्यक्त कएल कर्मक स्वीकार अछि; दोसर भाग व्यापक नैतिक भार ग्रहण करबाक भाषा अछि। एतेकसँ ओकर द्वारा हत्या करबाक आदेश अथवा विशिष्ट अपराधमे दोषसिद्धि स्वतः स्थापित नहि होइत। उपन्यास साफ कहैत अछि जे सार्वजनिक वाक्यक न्यायिक मूल्य अदालत तय करत।

मृणालिनीक उत्तर केवल ‘बीस वर्ष’ अछि। एक संक्षिप्त समय-सूचक अभिव्यक्तिमे विवाहक संग, प्रतीक्षा, सामाजिक सन्देह, घरक उपेक्षित प्रश्न आ दीर्घ न्यायिक विलम्ब सिमटि जाइत अछि। लेखक पाठकपर कानूनी परिणाम थोपबाक बदला समयक नैतिक बोझ अनुभव करबैत छथि। एहि दृश्यकेँ अध्ययनमे विशेष महत्त्व देबाक कारण ई अछि जे एतय वर्षोंक कथा एक वाक्यमे उतरि अबैत अछि, बिना पूर्व सन्दर्भ दोहरौने।

तेसर इकाईक आलोचनात्मक निष्कर्ष

समाचारक सनसनी आ चूनासँ ढकल देबाल, आरोप-विचारक सावधानी आ देवांशुक सार्वजनिक कथन—चारू घटना ‘नाम देबाक’ भिन्न प्रक्रिया अछि। सार्वजनिक मञ्च पूर्ण अपराधी अथवा पूर्ण निर्दोषक नाम माँगैत अछि; न्यायालय परीक्षण योग्य आरोपक नाम तय करैत अछि; मृणालिनी अतीतक क्षतिक नाम बचा कऽ रखैत छथि। कथक एहि स्तरसभकेँ यथास्थान रखबामे सफल छथि। एहि बैचक सर्वाधिक प्रभावशाली दृश्य अदालतबाहिरक घरेलू वस्तु-व्यवस्था अछि, कारण एतय नैतिक दर्शन दृश्यात्मक बनल अछि।

कथा जखन न्यायालयक आदेशक जटिलता स्वयं बुझबैत अछि, तखन उपन्यासक व्याख्यात्मक स्वर बढ़ैत अछि। एक सम्भावित सम्पादकीय प्रश्न

उठैत अछि—की आदेशक संक्षिप्त भाषा आ मृणालिनीक प्रतिक्रियासँ पाठक स्वयं एहि सूक्ष्मता तक पहुँचि सकैत छल? तथापि एहन भाषिक सावधानीक बिना लेखकक मूल प्रतिज्ञा—अनुमानकेँ सिद्ध तथ्य नहि बनायब—कमजोर पड़ि सकैत छल। एहि कारण ई उपदेशात्मकता कथाक विधानसँ असम्बद्ध नहि, ओकर आन्तरिक तनाव अछि।

अध्ययन-इकाई ५१ — डिजिटल प्रमाणक सीमा, वित्तीय विश्लेषण आ घरेलू विश्वास (मूल दृश्य २३३–२३६)

तकनीकी विशेषज्ञ : स्रोतक प्रामाणिकता, अर्थक अधिकार नहि

दृश्य २३३मे डिजिटल विशेषज्ञ अपन काजक सीमा स्वयं बतबैत अछि। उपकरणसँ कखन संदेश वा फाइल प्राप्त भेल, छेड़छाड़क संकेत अछि कि नहि, आ प्रमाण-श्रृंखला केहन अछि—ई ओकर विशिष्ट क्षेत्र अछि। ‘रात्रि बाहर’क शब्द अपराधक गोपनीय सङ्केत अछि कि नहि, ओ स्वयं निर्णय नहि करैत। बचाव एहि असमर्थताकेँ अभियोजनक अर्थ-कल्पना प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत अछि; विशेषज्ञ स्पष्ट करैत अछि जे ओकर काज वास्तविक अभिलेख स्थापित करब अछि, पाठक अर्थ तय करब नहि।

ई दृश्य डिजिटल युगक साक्ष्य-चिन्तनमे एक महत्त्वपूर्ण व्यवधान हटबैत अछि। तकनीकी रूपसँ असंशोधित फाइलक भीतर गलत कथन रहि सकैत अछि; प्रामाणिक संदेशक अर्थ अनेक भऽ सकैत अछि; संचारक अस्तित्व मात्र आपराधिक आशय नहि। एहि त्रिभाजनकेँ लेखक श्रम-विभाजनक माध्यमसँ रखैत छथि—तकनीकी विशेषज्ञ अभिलेखक प्रामाणिकता, गवाह प्रसङ्ग, वित्तीय विशेषज्ञ प्रवाह, न्यायालय समेकित निर्णय। ‘समवाय’ शब्द एतय सर्वज्ञ संयुक्त संस्थाक नाम नहि; अलग-अलग सीमित ज्ञान मिलाबयवाली प्रक्रिया अछि।

मयंक झाक वित्तीय गवाही : वैध संरचनाक अवैध उपयोगक प्रश्न

दृश्य २३४मे मयंक अपना केँ अपराध-विज्ञान विशेषज्ञ अथवा न्यायाधीश नहि कहैत, वित्तीय प्रवाहक विश्लेषक मानैत छथि। वास्तविक व्यापार, ऋण, पूर्व-भुगतान आ निवेशक आयसँ धनक आवागमन वैध सेहो भऽ सकैत अछि। बचाव ई सामान्य सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि; मयंक नकारैत नहि। मुदा विशिष्ट

मामलामे स्रोत-जुड़ाव, सन्देश, बैठक आ खाताधारकक कथन अन्य साक्ष्य रूपमे उपस्थित अछि, जेकर समेकित परीक्षण न्यायालय करब। ई भेद वित्तीय लेखा आ विधिक निष्कर्षक सीमा निर्धारित करैत अछि।

ईशानकेँ पिताक भानसघरक धुँआ-आगिक उदाहरण मोन पड़ैत अछि। इन्द्रियगोचर धुँआ आगिक अनुमान दऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष जाँच बिना निष्कर्ष निश्चित नहि; एहि उपमाक संग न्यायालयकेँ भानसघर कहब प्राचीन ज्ञान-प्रक्रिया आ वर्तमान संस्थागत परीक्षणक सर्जनात्मक संगम अछि। तथापि हर वित्तीय अनियमितताकेँ आगिक धुँआ बुझब सेहो उचित नहि; मूल दृश्य एहि सम्भावित अतिव्याप्ति सँ बचेबाक प्रयत्न करैत अछि। स्रोतक वास्तविकता आ आशयक स्वतन्त्र जाँच न्यायसङ्गत समीक्षाक मूल अधार बनैत अछि।

आरतीक प्रश्न : जमानत घरक विश्वास नहि

दृश्य २३५मे शैलेश मंडल जमानत पर बाहर अछि, मुदा निलम्बित। आरती बच्चासँ भेटबाक अवसर आ घरमे स्थायी घुरबाक निर्णयकेँ अलग रखैत छथि। शैलेश परिवर्तनक दावा करैत अछि; आरतीक भय ई जे जेलसँ बाहर आयल पुरुषमे घरक पुरान विश्वासघात फेर उपस्थित होयत कि नहि। एतय बचाव अथवा अभियोजनक पदावलीकोनहुँ उपयोग नहि। स्त्रीक अनुभव अपने निर्णयक आधार दैत अछि। आरती पति बदलि गेलाह की नहि, तकर अन्तिम न्यायाधीश बनबाक दावा नहि करैत छथि; ओ समयक भीतर कर्मक पुनरावृत्ति देखबाक अधिकार सुरक्षित रखैत छथि।

‘जमानत’ विधिक प्रक्रिया अछि; ‘भरोसा’ पारिवारिक सम्बन्धमे दीर्घ व्यवहारक फल। दुनूकेँ एकहि सफलता-चिह्नमे बदलल गेल तँ आरतीक स्वायत्तता मिटि जाएत। एहि छोट दृश्यसँ उपन्यास पुरुष पात्रक आत्मसुधारक घोषित नाटककेँ प्रश्न करैत अछि। आरतीक चुप्पी कथाक आरम्भमे मृणालिनीक चुप्पीसँ अलग अछि—एक ठाम दीर्घ न्यायिक प्रतीक्षा, दोसर ठाम सहवासक शर्त। तथापि दुनू स्त्री अपने निर्णयक समय स्वयं निर्धारित करैत छथि।

रितेश आ अभिषेक : क्षमा पीड़ितक अधिकार

दृश्य २३६मे रितेश सरकारी संरक्षणमे गवाह बनलाक बाद गाम घुरैत अछि, मुदा ‘पुलिसक आदमी’ अथवा ‘गद्दार’ सन सामाजिक नाम ओकर रोजगारकेँ बाधित करैत अछि। ओ मोबाइल-मरम्मतिक छोट दोकान खोलैत अछि। अभिषेकसँ सामना होइत अछि; रितेश क्षमा माँगैत अछि। अभिषेक ओकरा बहिनक बितल वर्ष आ बैंकक कलङ्क वापसीक प्रश्न करैत अछि। ई प्रश्न क्षति ‘मेटाएल’ नहि जा सकबाक स्पष्ट प्रतिवाद अछि। अन्तमे अभिषेक तुरन्त क्षमा देबाक बदला भविष्यक काजक शर्त रखैत अछि—फेर ककरो खाता नहि बेचब।

एहि दृश्यक अर्थ दुइ दिशामे अछि। रितेशक सुधार सम्भव अछि, मुदा सुधार घोषणा करिते पीड़ितक नैतिक दावा समाप्त नहि। अभिषेकक क्षमा स्थगित राखबाक अधिकार कानूनक गवाह-सुरक्षा योजनासँ स्वतन्त्र अछि। पहिलक दृश्य २२१मे अभिषेक अपन सहभागिताक सीमा देखबैत छल; एतय ओ केवल साक्षी नहि, क्षति भोगने मनुष्य अछि। लेखक एकहि पात्रकेँ बदलैत प्रसङ्गमे देखबैत छथि; ई चरित्रक यथार्थता बढ़बैत अछि। रितेशक नव जीविका सम्पूर्ण प्रायश्चित्तक प्रमाण नहि, किन्तु भविष्यक सम्भावनाक ठोस सामाजिक आधार अछि।

चारिम इकाईक विधागत तुलना

दृश्य २३३–२३६ चारि भिन्न ‘सत्यापन’ रचैत अछि—डिजिटल वस्तुक प्रामाणिकता, रकमक स्रोत, पारिवारिक विश्वास आ सुधारक व्यवहार। कागजक स्वीकृति सभ क्षेत्रमे समान विधिसँ नहि होइत। न्यायालयक तकनीकी परीक्षण घरक क्षमा उत्पन्न नहि करैत; घरक भरोसा घुरबाक अनुभव अवैध धनक आरोप निरस्त नहि करैत। लेखक एहि असमापनकेँ नकारात्मक अन्त नहि, जीवनक बहुल अवस्थाक रूपमे स्वीकार करैत छथि।

एक सावधानीक बिन्दु ई अछि जे गवाहीक क्रमान्तर कतेको बेर नियमित पाठ्य-पद्धतिक रूप धारण करैत अछि—प्रश्न, सीमित उत्तर, तात्त्विक निष्कर्ष। आरती आ अभिषेकक दृश्य एहि एकरसताकेँ तोड़ैत अछि। कहुना दार्शनिक

सूत्रक ठाम चाय-दोकान आ मोबाइल-मरम्मतिक दोकानक भौतिकता आबैत अछि; एहि ठोस घरेलू-सामाजिक स्थानसभमे उपन्यासक भावात्मक बल अधिक प्रकट होइत अछि।

अध्ययन-इकाई ६० — सार्वजनिक अभिलेखमे नामक पुनरागमन आ पहराक उत्तराधिकार (मूल दृश्य २३७–२४०)

उत्तरायणक बाहरी समीक्षा : प्रतिष्ठा-सुरक्षा अथवा सुधार?

दृश्य २३७मे उत्तरायण निधि स्वतंत्र बाहरी समीक्षा, निवेश-स्रोतक सार्वजनिक सार, अम्बरक निवेश-इतिहासक संशोधन आ पहिने हटाओल जोखिम-नोट अभिलेखीय परिशिष्टमे रखबाक घोषणा करैत अछि। किछु लोक एकरा संस्था बचेबाक युक्ति कहैत, किछु सुधार। रचना सिन्हा दुनू सम्भावना खुलल रखैत छथि। संस्थाक भीतरी मनोभाव बाहरी घोषणासँ एकसरि निर्धारित नहि होइत; तथापि सार्वजनिक अभिलेख सुधरल, ई वस्तुगत परिवर्तन अछि। उपन्यास निश्चयात्मक मानसिक निर्णयक बदला जाँच योग्य संस्थागत फल पर जोर दैत अछि।

सत्यप्रकाशक आपत्ति नब पीढ़ीक फाइलमे फेर दर्ज होयब मृणालिनी लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर छोट प्रश्न ‘ओकर नाम?’ अछि; उत्तर सकारात्मक भेटिते ओ ‘ठीक’ कहैत छथि। एहि छोट संवादमे बीस वर्षक सामाजिक विस्मृतिक एक अंश सुधारल जाइत अछि। अभिलेख-निर्माण कखनो मृत व्यक्तिक आवाजकेँ फेर श्रव्य बना सकैत अछि; मुदा एकर अर्थ अपराधक अन्तिम दण्ड अथवा सम्पूर्ण क्षतिपूर्ति नहि। सार्वजनिक स्मृतिक पुनर्स्थापन आ आपराधिक दायित्वक निर्णय फेर अलग प्रक्रिया अछि।

समवाय आ व्यक्ति : न्यायाधीशक केन्द्रीय प्रतिरोध

दृश्य २३८मे न्यायाधीश ‘पूरा जाल’ शब्दक अतिशय प्रयोग पर रोक लगबैत छथि। संस्था अथवा प्रणाली अमूर्त भऽ सकैत अछि, मुदा विशिष्ट दायित्व व्यक्ति अथवा विधिक संस्थाक उपलब्ध प्रमाण अनुसार निर्धारित होयत। व्यापक आपराधिक वातावरण व्यक्तिगत अपराधक स्वतन्त्र विकल्प नहि; फेर प्रत्येक व्यक्तिक निर्णयक परीक्षण करैत समय व्यवस्था-जन्य दबाव आ

संस्थागत लाभ-प्रवाह सेहो नहि बिसरबाक चाही। एहि विरोधक बीच लेखक ‘समवाय’क विचारकेँ एक अनुशासन बनबैत छथि, सर्वग्रासी उपमान नहि।

नव्य न्यायमे समवायक पारिभाषिक उपयोग अत्यन्त विशिष्ट सम्बन्ध लेल अछि। एहि उपन्यासमे शब्दक प्रयोग व्यापक संस्थागत परस्परता पर विचार करेबाक साहित्यिक विस्तार मानबाक चाही; शास्त्रीय सम्बन्ध-सिद्धान्त आ वर्तमान दण्डनिर्णयक विधिक आधारकेँ एकरूप मानब त्रुटि होयत। रचना द्वारा न्यायाधीशक एहि वाक्यक प्रति माँगब बतबैत अछि जे ओ अपन जाँचक आधारभूत धारणाकेँ फेर जाँचय चाहैत छथि। पात्रक सीखब लेखकक शिक्षाप्रद कथासँ अलग एक जीबैत प्रक्रिया बनि उठैत अछि।

ईशान आ अनिरुद्ध : न्याय सर्वज्ञता नहि

दृश्य २३९मे ईशान वृद्ध अनिरुद्ध चौधरीसँ भेटैत अछि। टेबुल पर पुरान फाइल नहि, चाह अछि। ई भौतिक सादगी दृश्यकेँ संस्थागत पूछताछसँ नितान्त पृथक करैत अछि। ईशान बतबैत अछि जे देवांशु पर परीक्षण चलत, मुदा ओकरा पूर्ण सन्तोष नहि, क्रोध पहिनेक अपेक्षा कम अछि। ‘न्याय हर प्रश्नक उत्तर नहि’ बुझेबाक दुखसँ ओ जूझैत अछि। अनिरुद्धक उत्तर अछि जे न्याय सत्यक अनुशासन अछि, सर्वज्ञता नहि। एतय न्यायकेँ परिणामक अनन्त उपलब्धिसँ सीमित, ईमानदार पद्धतिमे परिवर्तित कएल गेल अछि।

धनेश्वरीक ‘किनार’ आ अनिरुद्धक ज्ञान-सीमाक विचार नजिक अबैत अछि। नदीक किनार बहैत जलकेँ पूरा रोकैत नहि, मुदा ओकर संग रहबाक व्यवहारिक मर्यादा ठाढ़ करैत अछि। न्यायालय सत्यक सभ अंशक मालिक नहि, मुदा उपलब्ध कथनकेँ प्रमाण आ अप्रमाणक आधार पर विभाजित कऽ सकैत अछि। ई वैचारिक समानता प्रमाणित सिद्धान्तक ऐतिहासिक एकता नहि, उपन्यासक रूपकात्मक सम्बन्ध अछि। दृश्य पाठककेँ अधूर समाधानक बीच नैतिक श्रम जारी रखबाक प्रेरणा दैत अछि, बिना प्रतिशोधक उपदेश बनौने।

दू बिज्जीक पदचिह्न : एकल नायकसँ सीखनिहार पहरा

दृश्य २४०मे मृणालिनी दू बिज्जी देखैत छथि—एक पैघ, एक छोट। नदीक कात गोहिक एक लम्बा निशान अछि, मुदा मृणालिनी नजिक जा निर्णायक पहचान करबाक जिद नहि करैत छथि। छोट बिज्जी पैघक पाछाँ-पाछाँ चलैत अछि। एहि दृश्यसँ पहरा व्यक्तिगत वीरताक स्थिर उपाधि नहि रहैत; सीखनिहार आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित व्यवहार बनैत अछि। उपन्यासक आरम्भमे धनेश्वरी जे बिज्जीक छोट पदचिह्न ईशानकेँ देखौने छलीह, ओकर नवीन प्रतिध्वनि एहि दू जीवक पदचिह्नमे उपस्थित अछि।

‘थिर पानि निर्दोष’ अथवा ‘हिलैत पानि अपराधी’ सन द्वैत एहि दृश्यमेंविघटित होइत अछि। जलक दृश्यगत अवस्था पर अपराधक नैतिक श्रेणी चिपकाबय नहि सकैत छी। एतय प्रकृति मनुष्यक संस्थागत हिंसाक सोझ प्रतिरूप नहि, ज्ञानक सीमा पर विचार करबाक अवसर अछि। लेखक दृश्य अन्तमे ‘देखू, ताकू, जाँचू’क लघु सूत्र रखैत छथि। एक दिस एहि वाक्यसभसँ सौन्दर्य-बिम्बक स्वतन्त्रता कने घटैत अछि; दोसर दिस ई उपन्यासक शिक्षणात्मक न्याय-दर्शनक चरितार्थ अन्तर्ध्वनि अछि।

पाँचम इकाईक कलात्मक स्थिति

दृश्य २३७–२४०मे संस्थाक सार्वजनिक अभिलेख, न्यायाधीशक आदेश, वृद्ध अनिरुद्धक चाहक टेबुल आ नदीक कात दू जीवक पदचिह्न—चारि परिवेशक माध्यमसँ उत्तरदायित्वक बृहत्तर रूप देखाओल गेल अछि। सत्यप्रकाशक नाम फेर अभिलेखमे आएब विशिष्ट ऐतिहासिक न्याय अछि; पूरा जालक आरोपकेँ सीमित करब प्रक्रियागत न्याय अछि; ईशानक क्रोध घटब निजी नैतिक परिवर्तन अछि; बिज्जीक नव पीढ़ी रक्षा करबाक अर्जित अभ्यासक प्रतीक अछि। चारूकेँ ‘न्याय भऽ गेल’ कहि एकरेखीय निष्कर्षमे समेटब उपन्यासक मूल आशयक विरुद्ध होयत।

एहि बैचक सबसे प्रभावशाली कलात्मक निर्णय अन्तिम प्राकृतिक दृश्यकेँ पूर्ण विजयक रूप नहि बनायब अछि। गोहि उपस्थित रहि सकैत अछि; पहरा सेहो। कथाक लय अछिन्न अछि। मुदा दृश्य २४० एखन उपन्यासक अन्तिम दृश्य नहि, एतय केवल मध्यवर्ती प्रतीक-परिवर्तन अछि। एहि कारण समापनक घोषणाक बदला कथा न्यायालयमे जारी रहबाक संकेत राखैत अछि।

बारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य २२१–२४० : साक्ष्यक श्रम-विभाजन, न्यायिक सीमा आ सामाजिक पुनर्स्थापन

एक्के न्याय नहि : अदालत, अभिलेख, परिवार आ स्मृति

बीस दृश्यक अध्ययन पाँच प्रकारक न्याय-बोध अलग करैत अछि। अभिषेक आ रितेशक गवाहीमे ककरो ज्ञान कतय धरि छल, से प्रश्न प्रमुख; प्रदीप, केशव, सौरभ आ उदयनाथक गवाहीमे संस्थागत दायित्वक प्रश्न; देवांशुक प्रकरणमे पुरान मृत्युजाँचक पुनर्विचार; आरती आ अभिषेकक गृह-सम्बन्धमे विश्वास आ क्षमाक समय; उत्तरायणक घोषणा आ मृणालिनीक स्मृतिमे नामक पुनर्स्थापन। ई भिन्न लक्ष्य आपसमे संघर्ष नहि, बल्कि जीवनक अपर्याप्त एकल श्रेणीक सूचक अछि। अदालत दण्डक विशिष्ट आधार खोजैत अछि, परिवार देहगत आ मानसिक पुनरावृत्ति देखैत अछि, अभिलेख पाछाँ छुटल आवाजकेँ प्रतिलिपित करैत अछि।

एहि बहुलताक कारण उपन्यास अपराधक कथाकेँ अपराधी पकड़ेबाक सरल कथा नहि बनबैत। विशेषतः दृश्य २२५मे जेल-दैनिकी न्यायालयी साक्ष्यक बाहर जाइत अछि, मुदा कथा ओकर मानवीय अर्थ बचा राखैत अछि। दृश्य २३७मे कम्पनीक अभिलेख सुधारल जाइत अछि, मुदा एहन सुधारसँ दण्डक प्रश्न समाप्त नहि। दृश्य २३५मे जमानत भेटैत अछि, किन्तु आरतीक घरक केवाड़ी स्वतः नहि खुलैत। ई तीन दृष्टान्त एक गहिर विचार तक पहुँचबैत अछि—प्रत्येक संस्थाक ज्ञान-सीमा अछि, आ समाजक सत्य ओहि सीमासभक परस्पर सहवासमे बनैत अछि।

भारतीय प्रमाण-परम्परा आ उपन्यासक पद्धति

प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक भेद दृश्य २२२–२२४मे विशेष सशक्त अछि। रितेश जे वाक्य स्वयं सुनलक, ताहिसँ ओकर कथित आदेशक मूल कर्ता स्थापित नहि। प्रदीप लिखित ‘अवैध’ शब्द नहि देखलाक बावजूद व्यवहारक सूचक भाषा बुझैत

छल; तथापि ओकर अनुमान केहन आधार पर बनेल, ई जाँच आवश्यक। रघुवीर द्वारा व्यक्ति पठेनाइ आ मारबाक आदेश एकरूप नहि। एहि तथ्यसभकेँ भिन्न पदमे व्यक्त करब भारतीय प्रमाण-चिन्तनक विवेकसँ संवाद करैत अछि।

नव्य न्यायमे प्रतियोगिता, अवच्छेदक, सम्बन्ध आ विशेष्य-विशेषणक सूक्ष्म विवेचनक जे महत्त्व अछि, ओकर साहित्यिक प्रतिध्वनि एहि प्रश्नमे भेटैत अछि: ‘खाता उपयोग भेल’ आ ‘खाताधारक आपराधिक प्रयोजन जानैत छल’ दू अलग कथन किएक? ‘सौरभ निवेशक’ आ ‘सौरभ प्रत्येक अवैध भुगतानक निर्देशक’क बीच प्रमाणक छलाँग कतय अछि? ‘वित्तीय संरचना उपस्थित’क अर्थ ‘अपराध सम्पन्न’ कोना नहि? एहि तुलनाक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही—साहित्यक न्याय-दर्शन शास्त्रक विशिष्ट तकनीकी प्रमाण-सिद्धान्तक प्रत्यक्ष अथवा आधुनिक कानूनक स्वतः स्रोत नहि अछि। लेखक तर्कक अनुशासनकेँ कथा-निर्माणक साधन बनबैत छथि।

पाश्चात्य आलोचनाक समक्ष : प्रक्रिया-प्रधान आख्यान

पाश्चात्य अपराध-उपन्यासक लोकप्रिय रूपमे अन्तिम उद्घाटन, अपराधीक असाधारण प्रतिभा वा जाँचकर्ताक एकल विजय पर बल रहैत अछि। एहि बैचमे तकर उलट न्यायाधीश, गवाह, विशेषज्ञ, कर्मचारी, अभियुक्त आ परिवारक भूमिकासभ अलग-अलग बचैत अछि। डिजिटल विशेषज्ञ संदेशक अर्थ नहि बतबैत; वित्तीय विशेषज्ञ कानूनक अन्तिम परिणाम नहि दैत; न्यायाधीश खबरिया सनसनीक अनुसार निर्णय नहि दैत। एहि विभाजित ज्ञानक कारण कथानकक तनाव ‘के अपराधी?’क संग ‘की सिद्ध भऽ सकैत अछि?’क प्रश्नमे स्थानान्तरित होइत अछि।

एकर सौन्दर्यगत मूल्य आ सीमा दुनू अछि। पाठक तत्काल रहस्योद्घाटनक लय नहि पबैत; बदला दस्तावेजक जटिलता आ निर्णयक विलम्ब पढ़ैत अछि। कतहु लगातार विचारात्मक वाक्य दृश्यगत क्रियाकेँ रोकैत अछि, विशेषतः गवाही समाप्त होइतहि तर्क-निष्कर्ष रखबाक प्रवृत्तिमे। तथापि प्रदीपक परिवारक

अनुपस्थिति, चूनावला देबाल, आरतीक अनुत्तरित प्रश्न आ दू बिज्जीक पदचिह्न एहि शाब्दिक विस्तारकेँ संवेदनात्मक विराम दैत अछि। एहि दृश्यसभमे दार्शनिक कथन घटना बनैत अछि, न पाठ मात्र।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि : नदी, व्यवसाय आ मेटल नाम

कमला-बलानक नदी उपन्यासमे प्राकृतिक भूगोल मात्र नहि। गढ़ नारिकेलक घरक बाढ़-दाग, सत्यप्रकाशक तटबन्ध-ठेका, वित्तीय निवेशक विस्तार, गामक सामाजिक प्रतिष्ठा आ पीढ़ीक पदचिह्न एहि एक स्थानिक जगतक भिन्न इतिहास अछि। दृश्य २३०मे चूनाक नीचाँ जानि-बुझि दागक ठाम राखब, दृश्य २३७मे कॉर्पोरेट अभिलेखमे सत्यप्रकाशक आपत्ति फेर रखब, आ दृश्य २४०मे नब बिज्जीक पदचिह्न—तीनू इतिहास लिखबाक भिन्न अभ्यास अछि। पहिल निजी घर, दोसर संस्थागत फाइल, तेसर जीवित सीख।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक साहित्यिक प्रयोग एतय एकटा आधिकारिक इतिहासक बदला अनेक प्रमाण-धाराक सहअस्तित्व पढ़बाक रूपमे सम्भव अछि। ठेकाक सार्वजनिक लेखा, पारिवारिक दैनिकी, देबालक घाव, निवेशक जोखिम-नोट, न्यायालयक आदेश आ साक्षीक मौन—सभक स्रोत, प्रयोजन आ शेष रिक्ति अलग अछि। एहि दृष्टिसँ ‘बिज्जी’क पहरा इतिहास मिटा देबाक विपरीत अछि। मुदा प्रत्येक रिक्त स्थानमे इच्छित राजनीतिक-अपराधी अर्थ भरनाइ सेहो ओहि इतिहासक विरुद्ध अछि। स्रोत स्वयं जतेक कहैत अछि, आलोचना ओतबे निश्चित कहय।

स्त्रीक निर्णयक भाषा : आरती आ मृणालिनी

मृणालिनी आ आरती दुनू दीर्घ अनिश्चितताक भीतर निर्णय करैत छथि। मृणालिनी दशको पहिनुक मृत पतिक मामलामे एक सीमित आरोप-परीक्षणकेँ पूर्ण जीत नहि मानैत छथि, किन्तु बन्द दरबज्जा फेर खुलबाक अर्थ बूझैत छथि। आरती जमानत पर आएल पतिक घर घुरबाक प्रश्न स्थगित रखैत छथि,

कारण विश्वास फेर स्थापित हेबाक व्यवहारिक परीक्षण शेष अछि। एहिमे स्त्री-पात्रसभक निर्णय पुरुषक न्याय-अनुभवक सहायक टिप्पणी नहि रहैत; स्त्री अपन समय, शब्द आ शर्त चुनैत छथि।

एहि समांतरताकेँ सामाजिक रूपसँ पढ़िते देखाइत अछि जे नारीक स्वायत्तता केवल सार्वजनिक न्यायालयमे बोलबाक अवसर नहि; घरक भीतर ‘एखन नहि’ कहबाक अधिकार सेहो अछि। मृणालिनीक ‘ओकर नाम?’ अथवा ‘बीस वर्ष’ सन अल्प भाषिक उत्तर आ आरतीक ‘बच्चासँ भेटू, घरक निर्णय बादमे’क भेद दमनकारी मौन नहि, कर्तृत्वक संयत अभिव्यक्ति बनि उठैत अछि। लेखकक अभिव्यक्तिमे एहन क्षण स्त्रीक स्थिर ‘त्यागमूर्ति’ छविक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि।

दसम बैचक पछाति आ बारहम अध्ययनक निष्कर्ष

दृश्य २२१–२४०क प्रमुख कलात्मक उपलब्धि ई अछि जे अपराधक नाम, अपराधीक नाम, गवाहक शब्द, बैंकक चेतावनी, डिजिटल फाइलक सत्यापन आ पारिवारिक क्षमाकेँ एकहि ज्ञान-पद्धतिक अन्तर्गत नहि धकेलल गेल। न्याय केवल अपराधक अन्तिम फैसला नहि, बल्कि अनपेक्षित नुकसानक बीच गलत निर्णयसँ बचबाक साझा श्रम अछि। एहि अर्थमे बिज्जी एक साहसी अद्भुत प्राणी मात्र नहि, सावधानी सीखयवाली सामाजिक पीढ़ीक छवि अछि।

मुदा उपन्यासक दार्शनिक निष्कर्ष प्रत्येक दृश्यपर अन्तिम टिप्पणी बनि जाए तँ पाठकक विचार-स्वातन्त्र्य सीमित होयबाक जोखिम रहैत अछि। एहि बैचमे लेखक एहि जोखिमक प्रतिकार चारि प्रकारक दृश्यसँ करैत छथि—प्रदीपक अनुपस्थित परिवार, घरक चूना आ दाग, अभिषेकक क्षमा स्थगित रखब, आ दू बिज्जीक बिना संघर्षक सहयात्रा। ई दृश्य पाठककेँ सिद्धान्तसँ पहिले मनुष्य आ ठाम अनुभव करबैत अछि। मूल दृश्य २४० धरि न्यायालयक अन्तिम निर्णय शेष अछि; ताहि कारण एहि अध्ययनक आलोचनात्मक सीमा सेहो एतबे अछि।

अगिला दृश्यसभ देखब आवश्यक, जे एहि वितरित पहराक प्रयोग कथाक आगू केहन रूपमे होइत अछि।

अध्ययन-इकाई ६१ — सामूहिक जालक भीतर व्यक्तिगत दोषक पृथक्करण (मूल दृश्य २४१-२४४)

मुकदमा एक घटना नहि, अनेक प्रमाण-प्रश्न

दृश्य २४१मे विशेष न्यायालयक निरन्तर चलैत मुकदमा बाहरक एकरूप समाचारसँ पृथक होइत अछि। खाताक उद्घाटन-तिथि, मोबाइल-सन्देशक स्रोत, लेनदेनक प्रयोजन, खाताधारकक ज्ञान आ धोकाक अवस्था—सभकेँ अलग प्रश्न बनाओल जाइत अछि। ई क्रम केवल अपराधक विस्तार नहि देखबैत; एकर माध्यमसँ उपन्यास अपन मूल नैतिक प्रस्तावकेँ न्यायालयक व्यवहारमे उतारैत अछि। जालक सम्बन्ध वास्तविक भऽ सकैत अछि, मुदा एहि सम्बन्धमे प्रवेश करनिहार सभ व्यक्तिक इच्छाशक्ति, ज्ञान आ कृत्य एक सन नहि। घटनाक सामूहिक परिणामसँ व्यक्तिक निश्चित दोष धरि पहुँचनाइ बीचमे अनेक प्रमाणित कड़ी चाहैत अछि।

न्यायाधीशक टिप्पणी अभियोजन आ बचाव दुनूकेँ समान अनुशासनमे रखैत अछि। अभियोजन सम्पूर्ण नेटवर्कक भयावहता देखाकऽ व्यक्तिक अपराध सिद्ध नहि कऽ सकैत; बचाव सेहो ‘हम एकटा पुर्जा रही’ कहिकऽ अपन सक्रिय निर्णयक प्रश्नसँ बचि नहि सकैत। लेखक एहि द्विपक्षीय रोकक माध्यमसँ एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर उघारैत छथि—समवेत क्रिया आ समवेत दोष एक वस्तु नहि। तथापि एहि स्थानपर प्रयुक्त ‘समवाय’ केँ नव्य न्यायक तकनीकी पारिभाषिक समवाय-सम्बन्धक पूर्ण समानार्थी बुझब अनुचित होयत; कथा एकरा संस्थागत परस्पराश्रिततताक दार्शनिक रूपक बनबैत अछि।

मनोजक प्रतिपरीक्षण : शब्दक अर्थक लेल प्रसङ्ग चाही

दृश्य २४२मे मनोज नायक स्वयं साक्षी नहि बनैत अछि; ओकर पूर्व कथन, दूरभाष-अभिलेख, रितेशक गवाही, रघुवीरक बयान आ लोकविस्तारक कागज अदालतक परीक्षणक सामग्री बनैत अछि। बचाव रितेशक कमीशन लेबाक पृष्ठभूमि उठाकऽ ओकर विश्वसनीयता पर प्रश्न करैत अछि। एहि आक्षेपक

कानूनी मूल्य विचारणीय अछि, मुदा ई अपने रितेशक कथनकेँ असत्य साबित नहि करैत। अभियोजन हमला, फोनक समय आ ‘सुरक्षा-काज’ नामक सफाईक बीच सम्बन्ध देखबैत अछि। अदालतक मुख्य प्रश्न एकल शब्द ‘बात’ नहि, ओकर प्रयोजन आ तत्क्षणक परिस्थितिक अर्थ अछि।

एहि दृश्यक कलात्मक विशेषता ई जे एक साधारण शब्द व्यवहारिक परिप्रेक्ष्यमे भयक उपकरण बनि सकैत अछि। ‘बात करब’ सामान्य सम्पर्क सेहो भऽ सकैत अछि; रितेश पर हमला भेला सँ पहिने रघुवीरकेँ फोन करब, काजक दबाव आ अन्य साक्ष्य एहि सामान्य अर्थक विरुद्ध प्रश्न उठा सकैत अछि। मुदा पाठककेँ तात्कालिक क्रोधसँ सीधा हत्या वा मारपीटक आदेशक निष्कर्ष पर नहि पहुँचेबाक चाही। लेखक शब्दक अर्थक जाँच करैत असल प्रश्न ‘के कहल?’ सँ ‘कोन सन्दर्भमे कहल?’ धरि बढ़बैत छथि।

सहयोगीक स्वीकार आ सुनी-सुनायल कथनक सीमा

दृश्य २४३मे रघुवीरक दू सहयोगी अपन अलग मामलामे हलुक दण्डक अपेक्षा सहित बयान दैत छथि। एहि स्वार्थक सम्भावना हुनकर कथनकेँ स्वतः शून्य नहि बनबैत, मुदा स्वतन्त्र मिलानक आवश्यकता बढ़बैत अछि। एक सहयोगी रघुवीरक मुँहसँ ‘ऊपरवला’क अप्रसन्नता आ मनोजक नाम सुनबाक बात कहैत अछि। तकरा भय देखायब बुझायल छल, मुदा ओ स्वयं स्वीकारैत अछि जे मनोजसँ सीधी बात नहि कयने छल। ई स्वीकार गवाहीक कमजोरी मात्र नहि, ओहि गवाहक अपन जानकारीक सही सीमा देखेबाक माध्यम सेहो अछि।

न्यायालयक लिखल ‘आदेश’ आ ‘प्रेरित दबाव’क भेद लेखकक सजग शब्द-चयन अछि। व्यक्तिक सम्भावित परोक्ष भूमिका आ प्रत्यक्ष हिंसाक आदेशक दायित्व अलग सिद्ध करब पड़ैत अछि। एहि ठाम नव्य न्यायसँ एक पद्धतिगत सादृश्य भेटैत अछि: एक विशिष्ट कथनक अवच्छेद, सम्बन्ध आ सीमित विशेषण बदलिए ओकर प्रमाणगत अर्थ बदलैत अछि। मुदा अदालतमे ई विवेचन साहित्यिक अनुरूपता अछि, ककरो प्राचीन सिद्धान्तसँ आधुनिक अपराध स्वतः सिद्ध करबाक उपाय नहि।

सौरभक वित्तीय भूमिका : पदसँ बेसी ज्ञानक परीक्षा

दृश्य २४४मे सौरभ बर्धनक बचाव निवेशक जोखिम-प्रबन्ध, वैध व्यापार आ कम्पनीक अलग विधिक व्यक्तित्वक पक्ष रखैत अछि। अभियोजन पहिने ई स्वीकारैत अछि जे शीर्ष निवेशकक पद अपनहि अपराधक प्रमाण नहि। एतय विरोधी पक्षक सही सामान्य सिद्धान्त मानि लेलाक बाद विशिष्ट कागज रखबाक रीति आकर्षक अछि। बैठकक प्रसङ्ग, रातिक गतिविधिक जानकारी, मुख्य ब्राण्ड बचाबयवला निर्देश, पुराने स्रोतक अलग प्रस्तुति, सहायक ऋण-विधि आ म्यूल-सम्बद्ध धनसँ पूर्वभुगतान—ई सभ सौरभक ‘ज्ञान’ आ ‘तकर पछातिक आचरण’क प्रश्न बनबैत अछि।

बचावक ‘पारदर्शी लेखांकन’ वा ‘व्यापारिक गोपनीयता’क सम्भावना नकारि देब पर्याप्त नहि। यदि पृथक्करण वैध छल तँ वास्तविक स्रोत किएक नहि देखाओल गेल—ई अभियोजनक उचित प्रश्न अछि। तथापि प्रश्न अपनहि निर्णय नहि, ताहि लेल न्यायाधीशक हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण अछि। अदालत दस्तावेजी सम्बन्धक भार स्वयं तौलत; अभियोजनक आक्रामक प्रश्नोत्तर मात्रसँ आपराधिक मनसाय सिद्ध नहि होयत। लेखक दार्शनिकता कँ संवादमे ठोस आर्थिक तत्त्वसँ जोड़ैत छथि, आ पाठककेँ अधिकार-पदक बाहरी चकमकसँ निकसि वास्तविक ज्ञानक स्तर जाँचय कहैत छथि।

एहि पहिल इकाईक शिल्प आ सीमा

चारि दृश्य निरन्तर न्यायिक प्रश्नोत्तर पर आधारित अछि। अनेक शब्द—खाता, सन्देश, निर्देश, स्रोत, ज्ञान, दबाव—अर्थ बदलैत-बदलैत लौटैत अछि। एहि पुनरावर्तनमे विधिगत दृढ़ता अछि, मुदा कथा जँ केवल सही सिद्धान्तक पुनर्पाठ बनि जाए तँ व्यक्तिक शरीर आ अनुभूतिक उपस्थिति कम होयबाक जोखिम सेहो अछि। रितेशक चोट, सहयोगीक स्वार्थ आ अदालतक भरल परिसर एहि अमूर्त तर्ककेँ मनुष्यसँ पुनः जोड़बाक अवसर दैत अछि। पाठक लेल प्रसङ्ग-विशिष्ट गवाहीक नाजुकता मात्र विचार नहि, सामाजिक जोखिम सेहो अछि।

प्रथम इकाईक मूल उपलब्धि कोनो एक अभियुक्तक परिणामक भविष्यवाणी नहि; निर्णयसँ पहिने ज्ञानक अनुशासन स्थापब अछि। न्यायालय एखन कागज सुनि रहल अछि, आ लेखकक लेखनी जालक सम्पूर्ण चित्र देखबाक पाठकीय इच्छाकेँ अस्थायी रूपसँ रोकैत अछि। ई विलम्ब उपन्यासक गति धीमी करैत अछि, मुदा विधिक न्याय आ लोकप्रिय रहस्योद्घाटनक दूरीकेँ ईमानदारीसँ उद्घाटित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६२ — बचावक अधिकार, दण्डक सीमा आ साक्षी-स्मृतिक शुद्धता (मूल दृश्य २४५–२४८)

केशवक अन्तिम बहस : विरोध न्यायकेँ कमजोर नहि करैत

दृश्य २४५मे केशव मेहताक बचाव एहि आधार पर चलैत अछि जे ओ स्वयं निजी दाँव चलबैत, खाता भरती करैत अथवा हिंसामे भाग नहि लेने छल। ई भेद आवश्यक अछि: संचालन, लेखांकन, नियोजन, प्रोत्साहन आ प्रत्यक्ष हिंसा अलग-अलग क्रिया अछि। अभियोजन वित्तीय निपटानक विभाजन, ‘वास्तविक सेवा’क बाहरी विवरण आ अन्य समायोजनक संदेश प्रस्तुत करैत अछि। बचाव प्रत्येक कड़ी लेल वैकल्पिक वैध अर्थ देबाक चेष्टा करैत अछि—ब्राण्डक जोखिम, सामान्य लेखा, अस्पष्ट प्रसङ्ग आ सहयोगी अभियुक्तक आत्मरक्षात्मक कथन।

लेखक एतय ‘वितण्डा?’ प्रश्न उठा तत्क्षण एकर सरल निषेध करैत छथि। ई रचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। यदि पाठक अभियोजनक लक्ष्यसँ सहमत अछि तइयो बचावक प्रश्न पूछबाक अधिकार समाप्त नहि होइत। नव्य न्यायक वाद-जल्प-वितण्डा सम्बन्धी पारम्परिक चर्चासँ एतय सादृश्य ताकल जा सकैत अछि, मुदा न्यायालयी प्रतिपरीक्षणकेँ मात्र शास्त्रीय ‘वितण्डा’ कहब तकर संस्थागत आवश्यकताकेँ नष्ट करत। अनेक उत्तर सम्भव रखनाइ न्यायमे बाधा नहि, संदेहक मानक पालन करबाक पद्धति अछि।

प्रदीप : दोष-निर्णय आ दण्ड-निर्धारणक दू काल

दृश्य २४६मे प्रदीप महाजनक वकील स्वीकार, आत्मसमर्पण, दस्तावेज उपलब्ध करायब, सहयोग आ गरीब अभियुक्तक विधिक सहायता उल्लेख करैत अछि। अभियोजन एहि व्यवहारकेँ मानैत अछि, मुदा पूर्व अपराध मेटा देबाक अधिकार नहि दैत। न्यायाधीशक दृष्टि दोष आ दण्डक पृथक चरण पर अछि। दोषक स्तर पर कृत्यक स्वरूप, जानकारी आ साक्ष्य देखल जाएत; दण्डमे हानि, भूमिका,

अवधि, सुधार आ आन उपयुक्त परिस्थिति विचारणीय होइत अछि। एहि पृथक्करणक साहित्यिक महत्त्व ई जे पछतावा ‘हम निर्दोष’क दावा नहि, सिद्ध दोषक पश्चात जीवनक प्रश्न बनैत अछि।

प्रदीपक बेटी तृषाक अविश्वास एकटा समानान्तर किन्तु अलग न्याय-क्षेत्र बनबैत अछि। अदालत राज्यक दण्डक रूपमे वर्ष, आर्थिक दण्ड, प्रतिपूर्ति आ शर्त देत; बेटी फेर विश्वास करतिह कि नहि, से राज्य तय नहि कऽ सकैत। कथा एहि दोसर कालकेँ पहिल काल पर निर्भर जरूर देखबैत अछि, मुदा पूर्णतः ओहिमे समाहित नहि करैत। व्यक्तिगत सम्बन्धक पुनर्निर्माण दोष कम होयबाक पुरस्कार नहि; दीर्घ व्यवहारमे पुनः अर्जित करबाक प्रक्रिया अछि।

मृणालिनीक प्रथम गवाही : जे सुनल, ओकर स्रोत

दृश्य २४७मे पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक अलग न्यायालयी परीक्षण देखाइत अछि। मृणालिनी पति सँ घरेलू स्तर पर दबाव, छह प्रतिशत आ खेल-प्रचार भुगतानक बात सुनबाक स्वीकार करैत छथि। मुदा बीस वर्ष बाद कोन विशिष्ट नाम ओहि समय सुनने छलीह आ कोन नाम पछातिक समाचार वा कागजसँ जोड़ने छथि—ई विभाजन निश्चित नहि कऽ पबैत छथि। अभियोजनक ‘देवांशु?’ प्रश्न हुनका अपेक्षित स्मृति दिस धकेलि सकैत छल; मृणालिनी एहि सम्मोहनसँ बाँचि जायत छथि। एकरा दुर्बलता नहि, गवाहीक स्वतन्त्रता मानबाक चाही।

ई दृश्य ‘जल-पाँजि’मे रामानुग्रहक साक्ष्य-संरक्षणवला सावधानीसँ एक व्यापक साहित्यिक सादृश्य बनबैत अछि, मुदा दुनू उपन्यासक घटनाक्रम एक नहि। एतय मृणालिनी स्वयं अपनी अनुभव-प्रविष्टिक सम्पादक बनैत छथि: जे तत्काल सुनल छल, तकरा पछातिक सूचनासँ अनुपयुक्त ढङ्गे नहि जोड़ैत छथि। गवाहीक श्रेणी बदलिते अर्थ बदलैत अछि। व्यक्तिक भोगल पीड़ा सत्य अछि; ओकर द्वारा बादमे सुनल नामक विशिष्ट घटनाक संग सम्बन्ध अलग

प्रमाण माँगैत अछि। ई दार्शनिक विवेक पात्रक जीवनमे उतरब लेखकक उपलब्धि अछि।

प्रतिपरीक्षणमे ‘हाँ’ : आत्मविश्वास नहि, सत्यक निष्ठा

दृश्य २४८मे बचाव पूछैत अछि जे बादक सार्वजनिक समाचार आ जाँचक चर्चा मृणालिनीक वर्तमान स्मृतिकेँ प्रभावित कऽ सकैत अछि कि नहि। ओ ‘हाँ’ कहैत छथि। एहि स्वीकारसँ हुनकर गवाहीक एक सम्भावित कमजोरी खुलैत अछि; तथापि गलत निश्चितता देखाकऽ अभियोजनक सहायता करब ओ स्वीकार नहि करैत छथि। अदालत बाहर ईशान प्रश्न करैत अछि—एहन उत्तर बचाव पक्ष उपयोग करत। माँक प्रतिक्रिया ई जे मृत पतिक नाम पर असत्य बाजि कऽ न्याय नहि माँगल जा सकैत अछि।

एहि ठाम चरित्र-चित्रणक शक्ति विशेष रूपसँ उभरैत अछि। मृणालिनी पहिने दुःखसँ आक्रान्त परिवारक सदस्य छलीह; आब ओ स्वतंत्र ज्ञान-कर्ता छथि। अभियोजनक पक्षमे भावनात्मक निष्ठा राखनाइ आ सत्य-विधानमे निष्पक्ष रहनाइ एके नहि। मृणालिनी अपन पतिक न्याय चाहैत छथि, मुदा न्याय प्राप्त करबाक लेल सत्यक सीमा कम नहि करैत छथि। अपन परिवारक विरुद्ध लगैत उत्तर देबाक साहस एतय नीतिकथाक सूत्रसँ बेसी दैहिक-मानसिक श्रम अछि।

कालान्तरित स्मृति आ विधिक विश्वसनीयता

बीस वर्षक अन्तरालमे स्मृति केवल पुरान रिकॉर्ड नहि रहैत; ओ अनेक नव समाचार, आरोप, सम्बन्धी-चर्चा आ निजी दुःखसँ पुनर्गठित होइत अछि। उपन्यास एहि तथ्यकेँ मृणालिनीक प्रतिपरीक्षणमे रचनात्मक ढङ्गसँ राखैत अछि। भारतीय प्रमाण-परम्परामे साक्षीक प्रत्यक्ष ज्ञान, सुनी बात आ अनुमित सम्बन्धक भेदक उपयोग एतय उचित आलोचनात्मक तुलना अछि; मुदा स्मृतिक मनोविज्ञान पर पात्रक सम्भावना कैं निश्चित वैज्ञानिक निदान बनायब अनुचित होयत। पाठ जतेक देखबैत अछि, ओतबे निष्कर्ष जायज अछि।

एहि चारि दृश्यक पाछाँ दुइ न्यायालयक परस्पर सम्पर्क स्पष्ट रहैत अछि, मुदा एकर पृथक अस्तित्व सेहो। नब वित्तीय मुकदमा केशव आ प्रदीपक अलग

भूमिका तौलैत अछि; पुरान मृत्युक मुकदमा देवांशुक अपेक्षित सम्बन्ध देखैत अछि। एकमे कहल बात दोसरमे स्वतः निर्णायक प्रमाण नहि बनैत। एहि अध्यायांशक प्रमुख कलात्मक सीमा लगातार न्यायिक प्रश्नोत्तरक शुष्कता अछि; मुदा मृणालिनी-ईशानक छोट घरेलू संवाद एहि शुष्कताकेँ संवेदनाक सघन रूप दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६३ — निर्णय पढ़बाक नैतिकता आ वैयक्तिक दण्डक सीमा

(मूल दृश्य २४९–२५२)

परिणामसँ पहिने कारण : गढ़ नारिकेलक तुलसी

दृश्य २४९मे नव जुआ-मामलाक निर्णयक तिथि घोषित होइत अछि। ईशान निर्णय सँ पहिने गढ़ नारिकेल घुरैत अछि, जतय मृणालिनी नव तुलसी रोपने छथि आ बाढ़िक पुरान दाग आधा मेटायल अछि। एहि दृश्यात्मक विवरणक अर्थ न्यायालयक बाहरी लय आ घरक भीतरक समयक अन्तर अछि। अदालतक एक आदेश वर्षसभक काजक वर्गीकरण करि देत, मुदा गामक माटि आ परिवारक प्रतीक्षा ओहि आदेशमे सिमटि नहि सकैत। ईशानकेँ डर अछि जे जटिल जाँचक परिणाम किछु पाँतिमे छोट भऽ जाएत।

मृणालिनीक उत्तर—निष्कर्ष नहि, ओकर आधार देखबाक शिक्षा—उपन्यासक विचारगत मोड़ अछि। एहि पद्धतिमे निर्णयक पक्षधरता मात्र पर्याप्त नहि; निर्णय तक पहुँचेबाक तर्कक उचितता पढ़ल जाए। ईशानक जाँचकरीय परिश्रम आ माएक बीस वर्षक प्रतीक्षा दुनू एकहि प्रश्न पर अबैत अछि: जँ अदालत अपेक्षासँ अलग निर्णय देत, तँ ओकर प्रमाणगत कारण बुझबाक क्षमता अछि कि नहि? लेखक तुलसी रोपबाक साधारण क्रिया सँ एहि ज्ञानात्मक परिपक्वताकेँ भौतिक आधार दैत छथि।

दृश्य २५० : एक आदेशमे अनेक पृथक परिणाम

दृश्य २५०क आदेश समूचा बैचक केन्द्रीय न्यायिक घटना अछि। रघुवीर तांतीक विरुद्ध रितेशपर दबावक सीमित साक्ष्य दोषसिद्धि देत अछि। मनोज नायकक म्यूल-खाता भर्ती, लक्ष्य आ दबावसँ सम्बन्धित किछु आरोप सिद्ध होइत अछि; मुदा सम्पूर्ण वित्तीय परतक ज्ञान साबित नहि होइत। केशव मेहताक वित्तीय समायोजन, रातिक निपटानक पृथक्करण आ गलत स्रोतक लेखांकन सहायताक किछु दायित्व सिद्ध; व्यापक षड्यंत्रक सभ आरोप नहि। प्रदीपक स्वीकार आ

दस्तावेजी प्रमाण दोषक निर्णयमे महत्त्वपूर्ण, मुदा सहयोगक प्रभाव दण्ड चरणक प्रश्न अछि।

सौरभ बर्धनक विषयमे न्यायालय निवेशकक पद कैं अपने पर्याप्त नहि मानैत अछि। बैठक, ई-पत्र, सहायक ऋण-व्यवस्था आ स्रोत-गोपन सम्बन्धी सामग्री विशिष्ट आर्थिक अपराधमे ज्ञान आ सहायता सिद्ध करैत अछि; पूर्ण निजी जुआ संचालनक प्रत्यक्ष नियन्त्रणक आरोप सिद्ध नहि। उदयनाथ मिश्र एहि मुकदमे अभियुक्त नहि; नैतिक लापरवाहीक सम्भावना पर टिप्पणी अछि, किन्तु आपराधिक दोष घोषित नहि। किछु छोट खाताधारक मुक्त, जखनकि जानि-बुझि बेराबेरी खाता बेचनिहार किछु लोक दोषी ठहरैत अछि। सबीना खातूनक स्थिति अलग प्रशासनिक अथवा बैंक-कार्रवाईसँ जुड़ल, आपराधिक षड्यंत्रक दोषसिद्धिसँ नहि; अभिषेकक दोषमुक्त स्थिति यथावत् रहैत अछि। एहि विशिष्ट भेदसभकैं एक साधारण शीर्षकमे लोप करब मूल पाठक विपरीत होयत।

अभियुक्तक पद, अपराधक स्तर आ दण्ड

एहि फैसालाक साहित्यिक विशेषता ‘एक जाल—एक अपराधी’क आकर्षण तोड़ब अछि। प्रत्यक्ष हिंसा, वित्तीय सहायता, स्रोत-लुकायब, भर्ती आ सीमित अनभिज्ञ सहभागिता अलग श्रेणीमे देखल गेल अछि। तथापि ‘दोष सिद्ध’ शब्द प्रत्येक पात्र लेल एक सन व्यापक अपराध-प्रतिष्ठा नहि। ककर विरुद्ध कोन आरोप सिद्ध, कोन असिद्ध, तकर क्रमिक विवेचनक कारण कथा लोकप्रिय उद्घाटनसँ बेसी न्यायालयी विश्लेषण बनैत अछि। लेखक न्यायिक आदेशकैं एक नायकक विजय नहि बनबैत; न्यायाधीशक व्यवस्थित पृथक्करणकैं सामूहिक जाँचक उपलब्धि मानैत छथि।

ई शिल्पक मूल्य एहि बातमे अछि जे पाठक पर अपने जाँचक जिम्मेदारी राखल जाइत अछि। जरुरी कागज, कथित ज्ञान आ व्यक्तिक निर्णयक सीमाक बिना सम्पूर्ण गोहि मारि देबाक प्रतीकात्मक इच्छा अपराधक समग्र इतिहास समझाओत नहि। मुदा न्यायालयक आदेश समाजक सभ हानिक निदान सेहो

नहि। मुकदमाक दायराक बाहरी आर्थिक असुरक्षा, उपभोक्ताक लत, परिवारक टूटन आ भविष्यक जोखिम अलग संस्थागत काजक माँग करैत अछि।

समाचारक संक्षेप बनाम अनिरुद्धक चायक टेबुल

दृश्य २५१मे मीडिया तुरन्त ‘सौरभ-केशव दोषी’ आ ‘कतेको बरी’ सन शीर्षक बनबैत अछि। ई शीर्षक पूर्ण असत्य हो, एहन आवश्यक नहि; मुदा निर्दिष्ट आरोप आ प्रमाणक अनुपात हटिते पाठक निर्णयक वास्तविक सीमा नहि बूझि सकैत अछि। ईशान भीड़सँ निकलि वृद्ध अनिरुद्ध चौधरीक घर जाएत अछि। रेडियो बन्द होइत अछि, चाह ढारल जाइत अछि, आ बातचीत संस्थागत कार्य-विभाजन दिस मुड़ैत अछि। अपराधीक दोष निर्धारण अदालतक काज; सामाजिक संरचना सुधारब समाज आ प्रशासनक वृहत्तर काज।

अनिरुद्धक बातचीत पूर्वक दृश्यमे प्रमाण-सीमाक शिक्षा देनिहार अधिकारीक निरन्तरता अछि। पहिने ओ दुर्घटना बनाम हत्या प्रश्न खुलल रखने छलाह; आब ओ न्यायालयक निर्णयसँ सर्वसमाधान माँगबाक अधीरता रोकैत छथि। एकेटा पात्रक माध्यमसँ उपन्यासक दीर्घ समय आ चारित्रिक एकरूपता निर्मित होइत अछि। एहि दृश्यकेँ मात्र घोषणात्मक दर्शन मानि देब तकर दृश्यगत सूक्ष्मता छुपाओत—रेडियो बन्द करब, चाहक साधारण आतिथ्य आ प्रश्न करैत ईशानक थकान संस्थागत भाषाक बाहरक मानवीय अवकाश खोलैत अछि।

तृषा-प्रदीप : दण्ड सुनबाक पछातिक चुप्पी

दृश्य २५२मे प्रदीपक दण्ड-निर्धारण अलग चरणमे होइत अछि। न्यायालय सहयोग, आत्मसमर्पण, हानि आ अपराधक अवधि विचारैत अछि; पहिने बिताओल न्यायिक हिरासतक समायोजन, आर्थिक दण्ड आ प्रतिपूर्तिक निर्देश सेहो अछि। मूल पाठ वर्षक निश्चित संख्या नहि दैत; अतः आलोचनामे कोनो कालावधि अनुमानसँ लिखब अनुचित होयत। प्रदीपक बेटी तृषा पाछाँ बैसैत छथि। अदालतक बाहर दुनूक संक्षिप्त संवादमे बेटी ‘प्रतीक्षा’ कहैत छथि; पिता ओकर हाथ पकड़बाक अधिकार स्वतः नहि मानैत।

एहि संक्षिप्त दृश्यसँ दण्डक संख्यात्मक रूप आ भरोसाक अर्जित रूपक अन्तर खुलैत अछि। प्रदीपक कानूनी स्थिति बदलबाक संग बेटी लग आत्मीय सम्बन्ध अपने पुनर्जीवित नहि होइत। तृषाक प्रतीक्षा शर्तरहित क्षमा नहि; ओ भविष्यक व्यवहार देखबाक सम्भावना अछि। उपन्यास एतय कारागार-सुधारक सरल विजयगाथा नहि गढ़ैत। अपन अपराध स्वीकारनिहार पात्रक अपराध वास्तविक अछि, आ अपन पिता लेल प्रेम रखनिहार बेटीक संकोच सेहो वास्तविक।

तेसर इकाईक मूल्याङ्कन

दृश्य २४९–२५२क लय अदालत–घर–अदालत–घरक गतिमे बनल अछि। निर्णयक औपचारिक भाषा बीचमे, दुनू कात मृणालिनी, ईशान, अनिरुद्ध आ तृषाक छोट व्यवहार। एहि लयक कारण न्यायालयक आदेश मानव-अवस्थाक अन्तिम समापन नहि बनि पबैत। कलात्मक सीमा ई जे न्यायिक परिणाम बहुत सघन साररूपमे प्रस्तुत अछि; प्रत्येक अभियुक्तक विस्तृत आरोप-सूची पाठककेँ नहि भेटैत। मुदा कृति अपन उद्देश्यमे एकरूप अछि: जतेक प्रमाणित, ओतबे कहब; जे नहि सिद्ध, तकरा उत्साहमे जोड़ि नहि देब।

अध्ययन-इकाई ६४ — संस्थागत सुधार आ पुरान मृत्यु-मामलाक अन्तिम प्रमाण-शृंखला (मूल दृश्य २५३–२५६)

विहानक सुधार-योजना : उद्देश्य आ परिणामक दू परीक्षा

दृश्य २५३मे केशवक दण्ड घोषित होइत समय विहान सारंग अदालतमे नहि, अम्बरक कार्यालयमे छथि। ओ निजी दाँवसँ जुड़ल बाहरी अनुबन्ध समाप्त करब, स्वतन्त्र अनुपालन समिति बनायब, म्यूल-खाता सम्बन्धी जोखिमक प्रशिक्षण, उपयोगकर्ताक हानिक सीमा आ सहायता-व्यवस्था सार्वजनिक करैत छथि। ई काजसभ संस्थागत आत्म-सुधारक सम्भावित सूचक अछि। मुदा मूल पाठ एकरा स्वतः सफल सुधार घोषित नहि करैत; कर्मचारीक प्रतिक्रियामे विलम्ब, नाटक, भय आ अपराध-बोधक परस्पर भिन्न अनुमान उपस्थित अछि।

एहि दृश्यक आलोचनामे दुइ प्रश्न राखब आवश्यक अछि। पहिल—सुधारक आरम्भिक प्रेरणा की छल? दोसर—वास्तवमे व्यवस्था बदलत कि नहि? निजी प्रतिष्ठा बचेबाक इच्छा होइतहुँ कर्मचारीक प्रशिक्षण, उपयोगकर्ता-सुरक्षा आ बहिर्गत अनुबन्धपर रोक वास्तविक प्रभाव दऽ सकैत अछि। फेर नैतिक घोषणाक शब्द साँच होइतहुँ व्यवहार नहि बदलल तँ सुधार अपूर्ण रहत। कृति जे ‘समय परिणाम जाँचत’ कहबाक भाव रखैत अछि, से न्याय-दर्शनक प्रमाण-विषयक अनुशासनकेँ संस्थागत शासनक क्षेत्र धरि पसारैत अछि।

वित्तीय न्यायसँ नागरिक-सुरक्षा धरि

अम्बरक सुधार-योजनामे म्यूल-खाताक जोखिम-प्रशिक्षण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पूर्व दृश्यमे अभिषेक, सबीना आ आन कमजोर खाताधारकसभक अनुभव दिखा चुकल अछि जे पैसा प्रवाहक कड़ी बनायल जाएबमे धोखा, लोभ, अनभिज्ञता आ दबाव अलग-अलग भूमिका खेलैत अछि। केवल आर्थिक अपराधीकेँ दण्ड देने भविष्यक कमजोर खाताधारक अपने सुरक्षित नहि होइत। प्रशिक्षण आ मददक घोषित व्यवस्था एहि अभावकेँ सम्बोधित करबाक सम्भावना दैत अछि,

मुदा कागजमे योजना होयब आ प्रभावित लोक धरि सहायता पहुँचनाइ अलग प्रमाण चाहैत अछि।

एतय विदेह समानान्तर ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति उपयोगी तुलना दैत अछि: सरकारी आदेश, कम्पनीक सार्वजनिक प्रतिवेदन आ नागरिकक भोगल अनुभव तीन अलग स्रोत अछि। कोनो एकरा सम्पूर्ण इतिहासक बराबर मानि नहि सकैत छी। विहानक सुधारक घोषणा एक अभिलेखीय घटना अछि; ओकर स्थायी प्रभावक जाँच भविष्यक व्यवहारमे होयत। उपन्यासक समीक्षा एतय काल्पनिक संस्थागत घोषणाकेँ वास्तविक नीति-सफलताक प्रमाण बनायबासँ बचबाक चाही।

मनोजक माए : ‘खराब संगत’क व्याख्यात्मक सीमा

दृश्य २५४मे मनोजक माए दण्डक समाचार सुनि बेटाकेँ खराब संगतक शिकार कहैत छथि। माएक वाक्यमे करुणा आ अपन लोकक गलत कृत्य बुझबाक असमर्थता दुनू अछि। रचना सिन्हा एहि व्याख्याकेँ ‘लोभ’, ‘संरचना’, ‘निर्णय’ आ ‘मौन’ सन अलग शब्दसभक संग विचारैत छथि। जाल अवसर आ प्रलोभन बनबैत अछि; ऊपरक लोक चुप रहि सकैत अछि; निचलका लोक पर दबाव पड़ि सकैत अछि। मुदा मनोज वयस्क निर्णय लेने अछि। सामूहिक वातावरण व्यक्तिगत चयनक अस्तित्व मेटा नहि सकैत।

ई दृश्य रचनाक प्रमुख नैतिक संतुलन केँ पुनः स्थापित करैत अछि। अपराधकेँ मात्र ‘खराब संगत’ कहला सँ मनोजक सक्रिय सहभागिता गौण भऽ जाएत; मात्र ‘दुष्ट व्यक्ति’ कहला सँ अन्य कमजोर लोककेँ फँसेबाक प्रणाली अदृश्य रहत। अदालत मनोजक विशिष्ट दायित्व पर निर्णय दैत अछि, जखनकि समाजकेँ वैह्न रोजगार, लाभ-संरचना, भय, मौन आ सामाजिक असुरक्षाक अध्ययन करब शेष अछि। एतय उपन्यास न्यायशास्त्रक आत्मनिर्भर सीमाक स्वीकार करैत सामाजिक आलोचनाक क्षेत्र खोलैत अछि।

दृश्य २५५ : धनक इतिहास आ दुःखक इतिहास

दृश्य २५५मे सत्यप्रकाशक अलग मुकदमा एखन विचाराधीन अछि। ईशान नव डिजिटल जुआ-जालक दोषनिर्णय आ पिताक मृत्युकेँ मनमे जोड़ैत अछि। मृणालिनी ओकरा रोकैत छथि: आर्थिक प्रवाह जुड़ल भऽ सकैत अछि, मुदा परिवारक दुःखक इतिहास ओहि निष्कर्षसँ समाप्त नहि होइत। ई छोट बातचीत दीर्घ औपन्यासिक रचनाक आत्म-समीक्षा जकाँ अछि। पाठक सेहो दू मुकदमा सँगहि चलल देखैत एकमे भेटल दोषसिद्धिक बल पर दोसरमे हत्या निश्चित मानि सकैत छल; लेखक एहि सम्भावित सरलीकरण पर परिवारक भीतरसँ रोक लगबैत छथि।

एतय कथा घटनासम्बन्ध आ प्रमाणसम्बन्धक सूक्ष्म भेद करैत अछि। देवांशु, दिगन्त, वित्तीय दबाव आ पछातिक डिजिटल अपराध-जालक बीच ऐतिहासिक निरन्तरता पाठमे संकेतित अछि; मुदा निरन्तरता सभ विशेष अपराधक स्वतः समान दोषक सम्बन्ध नहि। व्यक्तिक मृत्यु लेल ककरो निर्देश, प्रेरणा अथवा सहयोग निर्धारित करबाक लेल पृथक प्रमाण-परीक्षण आवश्यक अछि। ईशानक अपन शोकक विषयमे अधीरता सुसंगत मानवीय प्रतिक्रिया अछि; मृणालिनीक उत्तर ओकरा नकारैत नहि, केवल ओकरा प्रमाणक मानकसँ बाँधैत अछि।

देवांशु-मामलाक अन्तिम बहस : परिस्थितिक कड़ीसभ

दृश्य २५६मे अभियोजन प्रत्यक्ष लिखित हत्या-आदेश उपस्थित नहि करैत, बल्कि परिस्थितिजन्य शृंखला राखैत अछि: सत्यप्रकाशक भुगतान-आपत्ति; दिगन्तक आर्थिक हित; देवांशुक अवैध दबाव सम्बन्धी स्वीकार; हरिचरणक हिंसक पृष्ठभूमि; भारी वाहनक बुकिंग; मृत्युक रातिक समय; शीघ्र मरम्मति; रामअवतारक फोटो-टिप्पणी; आ हरिचरणक ‘काम बिगड़ि गेल’ कहने होयबाक देवांशुक स्मृति। एहि प्रत्येक अंशक प्रमाण-भार अलग अछि। एकाकी देखला

पर किछु कड़ी सम्भावना दैत अछि; मिलानसँ ओ अधिक अर्थवान भऽ सकैत अछि।

बचाव ओही कारण प्रत्येक कड़ी पर अलग प्रश्न उठबैत अछि। सम्बद्ध वाहनक प्रत्यक्ष पहिचान नहि; चालकक पूर्ण बयान उपलब्ध नहि; हरिचरण मृत अछि; देवांशुक स्मृति बीस वर्ष पछातिक; हत्या करबाक आदेशक प्रत्यक्ष स्वीकार नहि; दबावक उद्देश्य आ मृत्यु भेलाक तथ्य अनिवार्य रूपसँ समान नहि। एहि आपत्तिसभकेँ केवल अपराधी बचयबाक तरकीब कहि हटेनाइ समीक्षा लेल त्रुटिपूर्ण होयत। परिस्थितिजन्य प्रमाणक निष्कर्ष तखन दृढ मानल जाएत जखन प्रतिस्पर्धी सम्भावना न्यायिक मानक अनुसार परखल जाए। साहित्यिक विश्लेषणमे एहि मानकक सूक्ष्म अर्थ देखाओल जा सकैत अछि, मुदा मूल उपन्यासमे जे विशिष्ट विधि अथवा धाराक नाम नहि अछि से अनुमानसँ जोड़बाक नहि।

अनुमान आ संदेहातीत सिद्धि : नव्य न्यायसँ सादृश्य

नव्य न्यायमे अनुमानक साधन, व्याप्ति आ सम्बन्धक सावधानी आधुनिक अदालतक परिस्थितिजन्य विवेचनसँ पद्धतिगत तुलना योग्य अछि। मुदा शास्त्रीय ज्ञानमीमांसाक अनुमित सिद्धान्त स्वयं आधुनिक दण्ड-विधिक संदेहातीत प्रमाण-मानक नहि। पहिल तथ्यसँ दोसर निष्कर्षक वैधता, विरोधी सम्भावनाक उपस्थिति आ अंतिम दोषसिद्धिक संस्थागत सीमा तीन भिन्न परीक्षणक विषय अछि। उपन्यास एहि तीनू स्तरकेँ एक-दोसराक सोझाँ रखैत अछि, विशेषतः जखन अभियोजन स्वीकारैत अछि जे लिखित हत्या-निर्देश नहि भेटल।

एहि चौठ इकाईक कलात्मक मूल्य औपन्यासिक संयम अछि। वित्तीय अपराधक बहुस्तरीय नाटकक बाद लेखक पुरान मृत्युकेँ तात्कालिक सनसनीसँ समाधान नहि करैत। देवांशुक कथनक अपूर्णता, हरिचरणक अनुपस्थिति आ वाहनक अस्पष्ट पहिचान रहस्यक अवसर दैत अछि, मुदा रहस्यक अवसरकेँ तथ्य नहि कहैत। एहि संयमक कारण पात्रक नैतिक आ कानूनी दायित्वक पृथक्करण विश्वसनीय बनैत अछि। तथापि क्रमशः अनेक न्यायिक बहसक

पुनरावृत्ति पाठकीय गति रोकैत अछि; मृणालिनीक छोट हस्तक्षेप आ सामाजिक परिणाम एहि भारकेँ सन्तुलित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६५ — सीमित न्यायिक निष्कर्ष, शोकक स्वायत्तता आ प्रतीक्षाक अन्त (मूल दृश्य २५७–२६०)

दृश्य २५७ : पुरान दुर्घटना-विवरणक विघटन

दृश्य २५७मे देवांशुक अलग मुकदमे न्यायालय दीर्घ आदेश सुनबैत अछि। पहिल महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ई अछि जे सत्यप्रकाशक मृत्युकेँ साधारण आकस्मिक सड़क-दुर्घटना मानि लेने पुरान विवरण आब विश्वसनीय नहि। हरिचरणक हिंसक दबाव-अभियानक पर्याप्त आधार, सम्भावित वाहन-उपयोगक मजबूत शृंखला, देवांशुक अवैध दबाव शुरू करबाक स्वीकार आ हरिचरणक हिंसक प्रवृत्तिक ओकर जानकारी न्यायालयक विवेचनमे उपस्थित अछि। एहि सँ पूर्वक आसान ‘दुर्घटना’क कथा टूटैत अछि। मुदा नकारात्मक निष्कर्ष—पुरान विवरण अस्वीकार्य—आ सकारात्मक निष्कर्ष—विशिष्ट हत्या-आदेश देनिहार कर्ता निश्चित—एक वस्तु नहि।

आदेश देवांशुक विशिष्ट मृत्यु-कामना वा वाहन-टक्कर निर्देश संदेहातीत प्रमाणित नहि मानैत अछि। तेँ उच्चतम प्रत्यक्ष हत्या-दायित्व सिद्ध नहि, किन्तु गैरकानूनी दबावक षडयंत्र आ गंभीर परिणाम पूर्वानुमेय रहल जोखिमपूर्ण कृत्य प्रेरित करबाक सीमित दायित्व सिद्ध होइत अछि। ई फैसला उपन्यासक दीर्घ प्रमाण-अनुशासनक अनुरूप अछि। न पूर्ण निर्दोषता, न बिना प्रमाण पूर्ण हत्या-दोष। आलोचककेँ एहि त्रिभाजनक रक्षा करबाक चाही: पुरान ‘दुर्घटना’क व्याख्याक विश्वसनीयता टूटल; आपराधिक दबावक दायित्व सिद्ध; विशिष्ट हत्या-आदेशक उच्चतम दोष सिद्ध नहि।

मृणालिनीक अधूर उत्तर : न्यायिक लेखन आ जीवन-इतिहास

एहि आदेशक आधिकारिक भाषामे अनेक सावधानीक सीमा अछि; मृणालिनी लेल ओकर प्राथमिक अर्थ ई जे राज्य आब पतिक मृत्युकेँ सहज दुर्घटना कहि अनसुना नहि करैत। मुदा ओ राज्य एतेक नहि कहि सकैत जे देवांशुए निश्चित हत्या करओने छल। बीस वर्षक प्रश्नक उत्तर आधा भेटैत अछि। ‘आधा उत्तर’

कैं न्यायिक असफलताक पूर्ण पर्याय मानब उचित नहि; बिना प्रमाण सम्पूर्ण उत्तर गढ़ि देनाइ आंशिक सत्यसँ घातक होयत। संगहि ‘आधा उत्तर’कैं परिवारक क्षतिक पूर्ण उपचार सेहो नहि कहि सकैत छी।

ई अनुभव उपन्यासक आरम्भक सत्यप्रकाशक मृत्यु-दृश्यक संग दूरस्थ संरचनात्मक संवाद करैत अछि। आरम्भमे एक मृत देह, अज्ञात ट्रक-चालक, भीजल घर आ कारी डायरीक अनुपस्थिति छल; आब अनेक वर्षक कागज, बयान, न्यायिक परिणाम अछि। मुदा समयक विस्तारक बावजूद हर प्रश्नक निर्विवाद उत्तर नहि भेटल। एतय कथाक दीर्घता प्रमाणक असमान विकास देखबैत अछि—किछु कड़ी स्पष्ट, किछु अनिश्चित, किछु अन्ततः अपूर्ण।

दृश्य २५८ : दुःखक अलग व्याकरण

अदालत बाहर पत्रकार मृणालिनीसँ न्याय भेटबाक प्रश्न करैत छथि। मृणालिनी सिद्ध भऽ सकल निष्कर्ष स्वीकारैत छथि, मुदा जे सिद्ध नहि भेल ओकरा अपन दुःखक आधारपर सिद्ध घोषित करबाक अधिकार अपने कैं नहि दैत छथि। एकर बाद हुनकर छोट उत्तर—दुःखक सन्तोष न होयब—कथाक अदालत-भाषा सँ बाहरक क्षेत्र खोलैत अछि। दोषनिर्णय एक विधिक अवस्था अछि; अपन लोक हेरायलाक पीड़ा एक जीवित अनुभव। दुनू परस्पर संवाद करैत अछि, मुदा एक दोसरकैं समाप्त नहि करैत।

इएह जगह उपन्यासक स्त्री-चरित्रक सर्वाधिक सशक्त प्रतिरोध देखाइत अछि। मृणालिनी न अभियोजनक भावनात्मक प्रतीक मात्र, न पत्रकारक विजय-शीर्षकक सामग्री। ओ अपन कथनक अनुपात स्वयं निर्धारित करैत छथि। हुनकर न कहब न्यायालयक विरोध नहि; न्यायालयक उपलब्ध निष्कर्षकैं जतेक प्रमाण-सत्य अछि, ओतबे स्वीकार करबाक स्वाधीनता अछि। एहि संयममे दुःखक गरिमा अछि। एखन मैथिली साहित्यिक आलोचनामे एहि दृश्यक मूल्य केवल न्यायशास्त्रक उदाहरण नहि, स्त्री-वक्तृत्वक स्वतन्त्र प्रतिमानमे राखब चाही।

दृश्य २५९ : क्षमा न देबाक अधिकार, घृणा न राखबाक अधिकार

दृश्य २५९ जानि-बुझि अत्यन्त छोट अछि। दण्ड सुनल देवांशु मृणालिनी दिस मुड़ि किछु कहबाक प्रयास करैत अछि; ओ रुकैत नहि छथि। एकर नैतिक अर्थ सरल प्रतिशोध नहि। हुनका क्षमा करबाक बाध्यता नहि; सदिखन घृणा करबाक बाध्यता सेहो नहि। एहि द्वि-निषेधसँ पीड़िताकेँ दण्डित अपराधीक आत्मशुद्धिक सहायक पात्र बनायबाक परम्परा प्रश्नाङ्कित होइत अछि। देवांशु चाहय तँ पश्चात्तापक भाषा खोजय, मुदा मृणालिनीक समय, श्रवण आ भावनापर ओकर अधिकार स्वतः स्थापित नहि।

एहि दृश्यकेँ दृश्य २५२क प्रदीप–तृषा सम्बन्धसँ तुलना कयला पर एक महत्त्वपूर्ण भेद देखाइत अछि। तृषा प्रतीक्षाक सम्भावना खोलैत छथि; मृणालिनी देवांशुसँ सम्बन्धक अन्त स्वीकारैत छथि। दुनू निर्णय वैध, कारण अलग इतिहास आ स्वायत्तता अछि। न्यायालय एतय सम्बन्ध पुनर्स्थापनक आदेश नहि दैत। एहि दृष्टिसँ ‘अपराधीक सुधार’क सामाजिक कथा पीड़ितक स्वीकृतिक प्रतिरूप नहि बनि सकैत।

दृश्य २६० : फोटो, दीप आ खुलल खिड़की

दृश्य २६०मे गढ़ नारिकेल घुरल मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो आगाँ दीप नहि जरबैत छथि। फोटो फेर देवालपर टाँगि दैत छथि। ईशान प्रश्न करैत अछि; मृणालिनी बुझबैत छथि जे दीप पूजा नहि, प्रतीक्षाक संकेत छल। आब अपेक्षित समस्त उत्तर भेटल नहि, मुदा राज्य द्वारा हुनकर पुरान संशयकेँ निरर्थक उन्माद नहि मानल जाएब पुष्टि भऽ गेल। ओहि मान्यताक कारण प्रतीक्षा बदलि गेल अछि। मृणालिनी खिड़की खोलैत छथि। बन्द सँ खुलल दिस ई साधारण क्रिया कथाक व्यक्तिगत समयक रूपान्तर अछि।

फोटोकेँ पूजा-पात्र बनायब आ फोटोकेँ घरक जीवित स्मृतिमे पुनः स्थान देब अलग प्रक्रिया अछि। मृणालिनी मृत पतिक नामकेँ न्यायिक दस्तावेजमे पुनर्स्थापित देखैत छथि, मुदा तकरा हुनका निजी जीवनक पूर्ण अधिकार बना नहि दैत। खिड़कीक उद्घाटन कियो बाह्य विजय-ध्वनि नहि, थाकल किन्तु

वास्तविक मुस्कानक संग घटित होइत अछि। आरम्भमे जे परिवार अदृश्य शत्रुक भयमे छल, ओहि परिवारमे एखन एक स्त्री अपन प्रतीक्षाक अन्तक निर्णय स्वयं करैत छथि। एकर सूक्ष्मता उपन्यासक विचारात्मक पाँतिसभसँ कतेको ठाम अधिक प्रभावकारी अछि।

ई अन्त उपन्यासक अन्त नहि

दृश्य २६०क घरेलू लय समापन-जेकाँ अछि, मुदा मूल उपन्यासक सम्पूर्ण अन्तिम दृश्य एतय नहि। तकर बादो ईशानक नदी-तटपर गमन, सामाजिक जाँचक पुनर्विचार आ बिज्जीक प्रतीकात्मक निरन्तरता मूल रचनामे चलैत अछि। तँ एहि इकाईक अन्तकेँ ‘उपन्यास समाप्त’ घोषित करब मूल संरचनाक विरुद्ध होयत। एतय समाप्त होइत अछि मुख्य परिवारक न्यायिक प्रतीक्षाक एक निर्णायक चरण, सम्पूर्ण सामाजिक जोखिमक इतिहास नहि। एहि भेदक कारण खण्ड-रचना आ समेकित मूल्याङ्कन सँ पहिने शेष दृश्य पढ़ब आवश्यक अछि।

पाँचम इकाईक सौन्दर्य सामाजिक-न्यायिक महाव्यवस्थाक बाद चारि निजी क्रियामे केन्द्रित अछि—निर्णय सुनब, पत्रकारक प्रश्नक सीमा रखब, संभावित क्षमा-संवादसँ निकसि जाएब, आ फोटो देवालपर टाँगि खिड़की खोलब। एहि अवरोहमे विशाल डिजिटल अपराधक कथा घरक मनुष्य धरि घुरि अबैत अछि। लेखकक आवर्ती दार्शनिक निष्कर्षक जोखिम एतय दैनिक जीवनक न्यूनतम इशारासँ सन्तुलित होइत अछि।

तेरहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य २४१–२६० : अपराधक विशिष्टता, कारणक मर्यादा आ प्रतीक्षाक उत्तर

दू न्यायालय, दूटा जाँच-विषय, एकटा साझा अनुशासन

बीस दृश्यक समेकित संरचनामे नब डिजिटल जुआ-मुकदमा आ पुरान सत्यप्रकाश मृत्यु-मुकदमा क्रमशः एक-दोसराक समानान्तर चलैत अछि। पहिलमे अनेक अभियुक्त, बैंक-खाता, दूरभाष-सन्देश, निजी दाँव, सहायक ऋण, वित्तीय पृथक्करण आ म्यूल-भर्ती अलग-अलग उत्तरदायित्वक आधार बनैत अछि। दोसरमे मृत ठेकेदारक भुगतान-आपत्ति, हिंसक दबाव, वाहनक सम्भावित प्रयोग आ अनेक वर्ष पुरान सुनी बातक प्रमाणजाँच अछि। आधारभूत प्रश्न दुनूमे समान—कोन व्यक्ति की जानैत छल, की कयलक, ओकर कृत्यक कोन परिणाम उपलब्ध साक्ष्यसँ स्थापित होइत अछि? मुदा एहि समान प्रश्नक कारण दुनू मुकदमे एकहि अपराधमे विलीन नहि होइत।

मृणालिनी दृश्य २५५मे धनक सम्बन्ध आ दुःखक सम्बन्ध अलग रखैत छथि। ई एक वाक्य उपन्यासक इतिहासबोधक महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि। वित्तीय संस्थासभक निरन्तरता सामाजिक शक्ति चिन्हेबामे सहायक अछि, मुदा अतीतक विशिष्ट मृत्यु लेल ककरो हत्या-दायित्व तय करबाक अलग न्यायिक आधार चाही। तेरहम अध्ययनक निष्कर्ष एकरे रक्षा करैत अछि: इतिहासक व्यापक रेखा व्यक्तिगत न्यायिक निष्कर्षक स्थान नहि लऽ सकैत।

भारतीय प्रमाण-विवेचन आ सीमित कथनक नैतिकता

भारतीय प्रमाण-विचारमे प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक स्वभाव पर जे सूक्ष्म विचार उपलब्ध अछि, उपन्यासक दृश्य २४१–२४८ ओहि भेदसँ आलोचनात्मक तुलना करबाक अवसर दैत अछि। रघुवीरक सहयोगी जे स्वयं मनोजसँ नहि सुनलक, ओकर कथन ककरो मुँहसँ सुनल बात अछि। मृणालिनी जे बीस वर्ष पहिने पतिसँ सुनलीह, से पछातिक समाचारसँ बनल स्मृतिसँ पृथक जाँचना चाही। विशेष

न्यायालयक डिजिटल अभिलेख लिखल शब्दक वास्तविक स्रोतक खोज करैत अछि, जबकि बचाव संदर्भक प्रश्न उठबैत अछि। सभ सामग्रीकेँ ‘प्रमाण’ एक शब्द कहला सँ तकर प्रकृति एक नहि भऽ जाइत।

एहि तुलनामे साहित्यिक रचनाक एक महत्त्वपूर्ण नैतिक निष्कर्ष अछि—आत्मीय पीड़ा अधिक होइतहुँ साक्षीक स्मृति स्वयंमे सर्वज्ञता नहि। मृणालिनीक स्वीकार एहि अनुशासनक जटिलतम उदाहरण अछि। ओ प्रिय मृत व्यक्तिक नाम पर असत्य निश्चितता नहि बनबैत छथि। एहि प्रकार पात्रक ज्ञानात्मक ईमानदारी ओकर भावनात्मक निष्ठाक प्रतिपक्ष नहि, ओकर सर्वोच्च रूप बनि जाइत अछि।

नव्य न्याय : विशिष्ट आरोपक अवच्छेद आ समवाय-रूपकक सावधानी

नव्य न्यायक सूक्ष्म विश्लेषणसँ एतय दू सर्जनात्मक अनुरूपता बनैत अछि। पहिल, ‘मनोजक निर्देश’, ‘रघुवीरक बुझाइ’, ‘रितेशपर हमला’ आ ‘विशिष्ट हिंसाक आदेश’ चारि भिन्न कथ्य अछि। एक कथनसँ दोसर कथनक अनिवार्य सम्बन्ध सिद्ध नहि। दोसर, ‘सौरभ निवेशक’, ‘सौरभकेँ स्रोतक ज्ञान’ आ ‘सौरभद्वारा पूरा दाँव संचालन’ अलग आरोप-विषय अछि। एतय विशेषण, सम्बन्ध आ ज्ञानक सीमित आश्रय बुझब मूल पाठक तर्क-विकास खोलैत अछि।

मुदा उपन्यासक सामूहिक जालकेँ ‘समवाय’ कहलाक कारण शास्त्रीय नव्य न्यायमे समवायक अपरिवर्तनीय द्रव्य-गुण सम्बन्धक समतुल्य कानूनी धारणा नहि बनि जाइत। आलोचनाक उत्तरदायित्व शब्दक विचारात्मक आकर्षण आ ओकर पारिभाषिक सीमा दुनू देखेनाइ अछि। लेखक एहन दार्शनिक रूपकक माध्यमसँ संस्थागत नेटवर्कक पारस्परिकता सोझाँ अनैत छथि; न्यायालय तइयो व्यक्तिक पृथक अपराध निर्धारित करैत अछि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक प्रतिमान : सर्वसमाधानक अस्वीकार

लोकप्रिय रहस्यकथा प्रायः अन्तिम पृष्ठ पर एक मुख्य कर्ताक उद्घाटन आ सब गाँठ खुलबाक अपेक्षा जगबैत अछि। एहि बीस दृश्यमे तकर उलट अनेक स्तरक निर्णय भेटैत अछि। रघुवीर, मनोज, केशव, सौरभ आ प्रदीपक भूमिका बराबर

नहि; उदयनाथ पर एहि मुकदमे आरोप सिद्ध नहि; सबीना आ अभिषेकक स्थिति अलग; पुरान मृत्यु-मामलामे अवैध दबाव सिद्ध मुदा विशिष्ट हत्या-आदेश नहि। ई जटिलता कथाक दोष नहि, ओकर चयनित न्यायिक यथार्थबोध अछि। शास्त्रीय अपराध-आख्यानसँ अन्तर एहि अर्थमे अछि जे नैतिक संतोषकेँ विधिक प्रमाण पर बलपूर्वक आरोपित नहि कएल जाइत।

एहि पद्धतिक सौन्दर्यगत मूल्य संग सीमा सेहो अछि। बारम्बार न्यायालयक प्रश्न, वैकल्पिक सफाई, न्यायाधीशक सीमा-निर्धारण आ पात्रक दार्शनिक टिप्पणीसँ गति संकुचित भऽ सकैत अछि। दृश्य २५७–२६० एहि संकुचनकेँ घरेलू नाटकीय न्यूनता सँ तोड़ैत अछि। मृणालिनीक पत्रकारकेँ उत्तर, देवांशुसँ चुपचाप हटि जाएब, फोटो टाँगब आ खिड़की खोलब, एक शब्दक दीर्घ तर्ककेँ दृश्यगत ऊर्जा दैत अछि। एहि कारण उपन्यास केवल न्यायालयी प्रकरणक पुनर्संरचना बनि नहि रहैत।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : अभिलेख आ मेटल जीवन

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ एहि बैचक पाठमे पाँच अलग इतिहास-धारा देखाइत अछि: कम्पनिक वित्तीय दस्तावेज, न्यायालयक आदेश, पत्रकारिताक सार्वजनिक संक्षेप, गढ़ नारिकेलक पारिवारिक स्मृति आ डिजिटल उपयोगकर्ताक सामाजिक अनुभव। प्रत्येक धारा अपन स्रोत, उद्देश्य, भाषिक रूप आ अपूर्णताक संग उपस्थित अछि। मीडिया ‘सौरभ–केशव दोषी’क छोट शीर्षक दैत अछि; अदालत विस्तृत साक्ष्यक भेद करैत अछि; मृणालिनी अपन उत्तराधिकारक दुःखक कथन करैत छथि। एक धारा दोसरकेँ पूर्णतः प्रतिस्थापित नहि कऽ सकैत।

कमला-बलानक कातक बाढ़-दाग, नव तुलसी, सत्यप्रकाशक फोटो आ खुलल खिड़की सामाजिक इतिहासक एहन भौतिक चिह्न अछि जे न्यायालयक फाइलसँ बाहर जीवित रहैत अछि। मुदा एहि चिह्नक निजी अर्थकेँ अभिलेखीय तथ्य घोषित करब सेहो उचित नहि। आलोचक एकर प्रतीकात्मक अर्थ प्रस्तावित करैत अछि; पाठक तकर प्रमाणगत प्रकृति बुझैत अछि। एहि दोहर दृष्टिसँ

उपन्यासक स्थानीय मिथिला-जीवन आधुनिक वित्तीय अपराधक अन्तःसम्बन्धमे स्वाभाविक रूपसँ उपस्थित होइत अछि।

स्त्रीक आत्मनिर्णय : तृषा, मृणालिनी आ न्याय-प्रतीक्षा

तृषा पिताक लेल प्रतीक्षा करबाक सम्भावना राखैत छथि; मृणालिनी देवांशुसँ सम्भावित क्षमा-संवाद अस्वीकारैत छथि। दुनूक निर्णय उलट होइतहुँ स्वायत्त अछि। परिवारक सम्बन्ध पुनर्निर्माण न्यायालयक दण्डमात्रसँ नहि होइत, न दोषी व्यक्तिक पश्चात्तापमात्रसँ। समाज यदि पीड़ित स्त्रीक मौन अथवा प्रतीक्षाकेँ अपन अपेक्षा अनुरूप अर्थ देबाक कोशिश करत तँ फेर एक बेर ओकर निर्णयक अधिकार छीनत। एहि कारण दृश्य २५८–२५९क मौन आ अस्वीकार एतय सामाजिक आलोचनाक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

मृणालिनीक ‘प्रतीक्षा समाप्त’ कहब अपराधक इतिहास पूर्णतः जानि लेबाक दावा नहि। राज्य द्वारा परिवारक संशयकेँ वैधानिक श्रवण भेटल आ पुरान दुर्घटना-विवरणक असंगति स्वीकारल गेल—एहि विशिष्ट उपलब्धिसँ निजी प्रतीक्षाक अर्थ बदलैत अछि। स्त्रीक जीवन अदालतक अनन्त अगिला सुनवाईक पाछाँ अटकल रहबाक बाध्य नहि। एतय आलोचनाक केन्द्रीय प्रतिपादन ई अछि जे न्यायिक प्रक्रियाक अपूर्णताक भीतर सेहो जीवनक अपन निर्णय वैध भऽ सकैत अछि।

तेरहम बैचक निष्कर्ष आ अगिला पाठक सीमा

मूल दृश्य २४१–२६०क संगत मूल्याङ्कन एहन अछि: उपन्यास सभसँ प्रभावशाली तखन अछि जखन ओ आरोपक अतिविस्तार रोकैत, साक्षीक अपन ज्ञान-सीमा मानैत, आ परिणामसँ अधिक निर्णयक कारण देखबैत अछि। कथाक दृश्यगत शिखर न्यायालयक व्यापक नामावलि नहि, मृणालिनीक अपूर्ण उत्तर स्वीकार करबाक निर्भीकता अछि। एहि अंशमे अपराधक दायित्वक विशिष्टता आ पीड़ितक जीवनक स्वायत्तता परस्पर पूरक बनैत अछि।

एहि दृश्य २६०क घरेलू विरामकेँ सम्पूर्ण उपन्यासक निर्विवाद अन्त नहि मानल जाए। मूल आख्यान आगाँ सेहो चलैत अछि; बाँचल सामाजिक प्रश्न आ

बिज्जी–गोहि रूपकक अन्तिम विकास पढ़बाक शेष अछि। आगामी दृश्य २६१–२८०क समीक्षा पूर्ण होयबाक पहिने उपन्यासक समग्र अन्तिम मूल्याङ्कन करब प्रमाणक अनुपातक विरुद्ध होयत। एहि कारण वर्तमान तेरहम अध्ययन एक निर्णायक न्यायिक चरणक आलोचना अछि, समस्त कृतिक अन्तिम समापन नहि।

अध्ययन-इकाई ६६ — पहराक उत्तराधिकार आ प्रमाणक घरेलू परम्परा (मूल दृश्य २६१–२६४)

दृश्य २६१ : नदीक किनारपर अनिवार्य विजयक अस्वीकार

दृश्य २६०मे मृणालिनी फोटो, दीप आ खुलल खिड़कीक माध्यमसँ अपन दीर्घ प्रतीक्षाक एक चरण समाप्त करैत छथि। तकर ठीक पछाति दृश्य २६१मे ईशान कमला-बलानक किनार पर असगर पहुँचैत अछि। ई क्रम महत्त्वपूर्ण अछि: अदालतक निर्णय अथवा पारिवारिक राहतक पछाति कथा कोनो विजयोत्सव आयोजित नहि करैत; ओ नदीक पुरान, बदलैत आ अनियन्त्रित परिवेशमे घुरि जाइत अछि। कादोमे गोहिक लम्बा निशान, पानिक भीतर भारी शरीरक सम्भावना, आ झाड़ीमेसँ निकलल पैघ-छोट दू बिज्जी—ई सभ दृश्य पाठककेँ जीव-जगतक स्वतन्त्र अस्तित्वक स्मरण करबैत अछि। एहि जीवसभक क्रियाकेँ अदालतक अभियुक्त-चरित्रक शाब्दिक प्रतिनिधि बुझब अनुचित होयत। एकर रूपकात्मक अर्थ ईशानक बुझाइमे विकसित होइत अछि।

पैघ बिज्जी पहिने किनार सूँघैत अछि; छोट ओकर चाल दोहरबैत अछि। पानि हिलैत अछि, छोट कनेक पाछाँ हटैत अछि, मुदा पैघ स्थिर रहैत अछि। दुनू अन्ततः संघर्षक बदला दिशा बदलैत अछि। लेखक एतय आरम्भक साँप-बिज्जीक प्रत्यक्ष भिड़न्तक प्रतिलोम रचैत छथि। पहिने बचावक अर्थ शत्रुकेँ रोकबाक जोखिमपूर्ण भिड़न्त छल; आब पहिचान, दूरीक बोध आ चेतावनीक उत्तराधिकार बनैत अछि। दृश्य विशेष रूपसँ कहैत अछि जे न लड़ाइ भेल, न विजय, न जलसमाधि। ई निषेध कथाक शीर्षक-प्रतीकसँ निकसल सम्भावित हिंसात्मक अपेक्षाकेँ नियन्त्रित करैत अछि। रक्षकक सफलता गोहि सभकेँ संसारसँ समाप्त करब नहि, तकर उपस्थितिमे जीवित रहबाक कला अगिला पीढ़ीकेँ सिखेबाक अछि।

एहि अनुभवक सामाजिक समानान्तर ईशानक दीर्घ अपराध-अन्वेषण अछि। वित्तीय जाल भङ्ग भेला पर नव तकनीक, नव नाम आ नव लोभ फेर सम्भव अछि। पहरा एक बेरक गिरफ्तारीसँ पूर्ण नहि होइत। तथापि ई तुलना सावधानी माँगैत अछि। जीव-जगतमे गोहि प्राकृतिक अस्तित्व अछि, मुदा आपराधिक जाल मनुष्यक निर्णय आ संस्थागत संरचनासँ बनैत अछि। गोहिक अस्तित्वक स्वाभाविकता ककरो अपराधक नैतिक अनिवार्यता सिद्ध नहि करैत। लेखकक रूपक प्रभावशाली तखन अछि जखन एकरा सतर्कताक दीर्घ परम्परा बुझल जाए, अपराधकेँ प्रकृतिक अपरिहार्य नियम नहि।

दृश्य २६२ : कार्यालयक बोर्ड मेटनाइ आ जाँच-पद्धतिक स्थायित्व

रचना सिन्हा संयुक्त समीक्षा-बैठकमे बोर्ड पर लिखल ‘प्रमाण’, ‘संशय’, ‘प्रयोजन’, ‘तर्क’, ‘समवाय’ आ ‘स्मृति’ एक-एक कऽ मेटैत छथि। ई रूपात्मक दृश्य कथामे प्रयुक्त दार्शनिक शब्दावलीक दृश्यात्मक समापन अछि। अदालतक फैसला आ अनुसन्धानक फाइल समाप्त भऽ सकैत अछि, मुदा जाँचक बौद्धिक अनुशासन तकर बादो आवश्यक रहैत अछि। रचनाक उत्तर—मुकदमा समाप्त भऽ सकैत अछि, पद्धति नहि—एहि अन्तरकेँ एक वाक्यमे समेटैत अछि। मयंक एकरा न्याय-दर्शनक जीवित रहब कहैत छथि; रचना ‘आदत’ शब्द पसिन्न करैत छथि। ई छोट शब्द-परिवर्तन विशेष आलोचनात्मक ध्यान योग्य अछि।

दर्शनकेँ केवल उच्च सिद्धान्त मानि लेल जाए तँ ओ विशिष्ट विद्वानक ग्रन्थ अथवा संस्थागत पद धरि सीमित रहि सकैत अछि। ‘आदत’ कहला सँ ज्ञानक काज दैनिक परीक्षण, बोलबाक सीमा आ रिक्ति स्वीकारबाक अभ्यास बनि जाइत अछि। रचना जे देखल, जे अनुमानित, आ जे नहि ज्ञात—तीनूकेँ अलग रखबाक बात कहैत छथि। एकर आरम्भिक समानान्तर अनिरुद्धक पहिल दुर्घटना-जाँचमे छल, जतय प्रत्यक्ष आ अनुमान अलग रखबाक निर्देश भेटैत छल। एतय कथा अपन पहिल सिद्धान्तक केवल पुनरुक्ति नहि, प्रशासनिक कार्यप्रणालीमे ओकर

पुनःस्थापन करैत अछि। तथापि पात्रसभक मुखसँ बेर-बेर सूक्तिपरक वाक्य अबैत रहला सँ वास्तविक दफ्तरक अव्यवस्था किछु संयत देखाय देबाक जोखिम उपस्थित अछि।

दृश्य २६३ : प्रतिवेदनमे पैतृक नामक नव अर्थ

ईशान अपन जोखिम-परियोजनाक सार्वजनिक प्रतिवेदनमे अपराध-निरोधकेँ केवल अभियुक्त पकड़बाक कार्यसँ व्यापक बनबैत अछि। ओकर कथनक मूल उद्देश्य जोखिमग्रस्त मनुष्यकेँ जालक उपयोगी साधन बनबासँ पहिने सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध करेनाइ अछि। एतय पीड़ित, सम्भावित सहभागी आ अपराधक योजनाकारक भूमिका एकहि नाम ‘खाताधारक’मे विलीन नहि होइत। सुमेधा प्रतिवेदनक निष्कर्षक पर्याप्त आधारपर प्रश्न करैत छथि। ईशान एहि बेर ‘प्रारम्भिक नमूना’क सावधानीक स्वचालित आवर्तन नहि करैत, बल्कि उपलब्ध जाँचक आधार पर्याप्त भेलाक दावा करैत अछि।

एहि परिवर्तनकेँ प्रमाणक मर्यादा त्यागि देब बुझब ठीक नहि। पहिने ईशान सीमित आँकड़ाक सीमा मानैत छल; आब जे प्रस्ताव विस्तृत परीक्षणसँ समर्थित अछि, ताहि पर निश्चय करैत अछि। संशय केवल संशय बनेबाक लक्ष्य नहि। उपयुक्त साक्ष्यक बाद योग्य निष्कर्ष धरि पहुँचनाइ सेहो बौद्धिक ईमानदारी अछि। प्रतिवेदन पर ‘ईशान कर्ण’ हस्ताक्षर होइत ओकरा पिता सत्यप्रकाशक नामक संग अपन स्वतन्त्र श्रमक आवाज सुनाइत अछि। वंशगत स्मृति आ अर्जित नागरिक उत्तरदायित्वक एहि मिलनकेँ लेखक बिनु वंश-महिमाक भाषण कयने व्यक्त करैत छथि।

दृश्य २६४ : धनेश्वरीक धुँधल पाँति आ मृणालिनीक नव लेख

मृणालिनी धनेश्वरीक भीजल पोथी सुखबैत छथि। पुरान पाँति सँ ज्ञात होइत अछि जे भयक आधारपर घर छोड़ब आवश्यक नहि, मुदा साँप घरमे अछि—एहन निष्कर्ष देखलाक बिना नहि निकालब चाही। मृणालिनी एहि अधमेटल उपदेशक नीचाँ नव पाँति जोड़ैत छथि: खतरा देखला पर भय नहि, बुद्धिसँ पहरा देबाक। एहि लेखनमे दू पीढ़ीक ज्ञानक सक्रिय सम्बन्ध स्थापित होइत अछि।

धनेश्वरीक शब्द परम्परागत विवेकक स्रोत अछि; मृणालिनीक नब लेख ओहि परम्पराक निष्क्रिय प्रतिलिपि नहि, अनुभवसँ कएल परिशोधन अछि।

भीजल स्याहीक भौतिक स्थितिक उल्लेख विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। स्मृति अटल पाथर नहि; कागज भीजैत अछि, अक्षर धुँधल होइत अछि, मुदा उपलब्ध अंशसँ उत्तराधिकार सम्भव बनैत अछि। ‘जल-पाँजि’क भीजल वंश-अभिलेखसँ एतय सीमित अन्तर्पाठीय समानान्तर देखल जा सकैत अछि, यद्यपि दुनू कृतिक परिवार, अभिलेखक प्रयोजन आ घटनाक्रम अलग अछि। एहि दृश्यकेँ घरेलू न्याय-पद्धतिक छोट इतिहास मानब अधिक यथार्थ अछि: अनुभव लिखल जाइत अछि, अगिला व्यक्ति ओकर सीमित अर्थ बुझैत अछि, आ नव परिस्थिति अनुरूप प्रश्न जोड़ैत अछि। उपन्यासक दार्शनिक बोध एहि घरेलू श्रममे सभसँ सघन रूप धारण करैत अछि।

चारि दृश्यक संयुक्त शिल्पगत मूल्य

एहि इकाईमे गति जानि-बुझि घटाओल गेल अछि। एकटा नदी-तट, एकटा मेटल बोर्ड, प्रतिवेदनक एक हस्ताक्षर आ घरक भीजल पोथी—चारि न्यून वस्तु कथाक बहुत पैघ अनुसन्धानकेँ स्मृतिक नव रूप दैत अछि। लेखक विजयी अभियुक्त-पकड़ अथवा अपराधी-जालक अन्तिम इतिहास पुनः नहि सुनबैत छथि। ओ जाँचक विधि बाँचि रहल कि नहि, से प्रश्न करैत छथि। दृश्य २६१–२६४क मूल्य एहि कारण उपन्यासक नीतिशास्त्रीय विस्तारमे अछि। एकर सीमा सेहो अछि: चारू दृश्य अपन निष्कर्ष स्पष्ट शब्दमे कहि दैत अछि, जाहिसँ पाठककेँ स्वतः प्रतीक खोलबाक अवकाश कनेक घटैत अछि। तथापि पैघ-छोट बिज्जीक भिन्न चाल, बोर्डक मेटल शब्द आ भीजल पोथीक लिखावट एहि उपदेशात्मक जोखिमकेँ ठोस प्रतिमामे रूपान्तरित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६७ — निर्णयक पछाति अपील, क्षमाक सम्भावना आ सावधान रक्षक (मूल दृश्य २६५–२६८)

दृश्य २६५ : लड़ाइ नहि करबो पहराक एक रूप

एक राति मृणालिनी देहरी पर छोट बिज्जी देखैत छथि। पैघ बिज्जी एहि बेर उपस्थित नहि। घासमे गहुमनक छाया सरकैत अछि; छोट बिज्जी साँपक पाछाँ दौड़ि संघर्ष नहि करैत, बीचमे ठाढ़ रहैत अछि। साँप दिशा बदलैत अछि। दृश्य २६१मे पहराक उत्तराधिकार सिखेबाक कल्पना छल; दृश्य २६५मे नव रक्षकक अपना निर्णयक चित्र अछि। छोट बिज्जीक स्वतन्त्र ठाढ़ रहब प्राकृतिक दृश्य रूपमे पढ़ल जाए, ओकरा मानव-सरीखा जानि-बुझि नैतिक निर्णय देब अनुचित होयत। लेखक स्वयं जीव द्वारा दर्शन न बजल जाएबाक संकेत दैत छथि। ताहि कारण ई दृश्य प्रतीक आ जीवक वास्तविक क्रिया बीच एक आवश्यक दूरी बनबैत अछि।

मृणालिनीक मुस्की, देहरी बन्द करब, कुंडी लगेनाइ आ दीप बुझेनाइक क्रम देखब योग्य अछि। घर अन्हार भेलाक अर्थ पहरा समाप्त नहि। पहरा सम्पूर्ण समय आँखि खोलि ठाढ़ रहनाइ मात्र नहि; आवश्यकता अनुसार सीमा सुरक्षित राखि सामान्य जीवन जीबाक सम्भावना अछि। एहि ठाम दृश्य २६०क खुलल खिड़की आ दृश्य २६५क बन्द केवाड़ीमे कोनो सरल अन्तर्विरोध नहि। एकमे लम्बा प्रतीक्षाक मानसिक बंदिश खुलैत अछि, दोसरमे रातिक वास्तविक सुरक्षा-संयम पूरा होइत अछि। मनुष्य अपन जीवन फेर आरम्भ करबाक लेल भयक शासनसँ मुक्त होइत अछि, मुदा विवेकहीन निश्चिन्तता अपनबैत नहि।

दृश्य २६६ : अदालतक अन्तिम निर्णय आ समाजक अगिला प्रश्न

निर्णयक बाद शहर शान्त नहि होइत; समाचारक दिशा बदलैत अछि। अपील, दण्डक अवधि, प्रतिफल-वापसी, अम्बरक भविष्य, खाता-उपयोगकर्ताक स्थिति आ सत्यप्रकाशक परिवारक प्रतिकर—प्रश्नसभ फेर उठैत अछि। लेखक एतय न्यायिक समय आ सामाजिक समयक अन्तर एक सूचीसँ व्यक्त करैत छथि।

अदालत दोष, प्रमाण आ दण्ड पर आदेश दऽ सकैत अछि; ओहि आदेशक आर्थिक, पारिवारिक आ संस्थागत असर अन्य प्रक्रियामे खुलैत अछि। प्रत्येक प्रश्नकेँ न्यायालय तत्काल हल नहि करैत, आ सभ उत्तर एक आदेशमे सम्भव सेहो नहि।

‘जीवन निर्णयक बाद शुरू होइत’ सन सूत्र कथाक संक्रमण स्पष्ट करैत अछि। एहि पाँतिक रूपात्मक उपयोग एहन अछि जे पाठक जेकरा आख्यानक अन्त मानबाक चाहैत छल, ओकरा लेखक नव प्रशासनिक आ मानवीय आरम्भ बनबैत छथि। तथापि परिणामोत्तर प्रश्नसभ लगातार संक्षिप्त सूचीमे आबैत रहला सँ पात्रक अनुभूत समय न्यून होयबाक सम्भावना अछि। अगिला दृश्यसभ एहि सूचीकेँ विशिष्ट जीवन-दृष्टान्तमे बदलबाक प्रयत्न करैत अछि।

दृश्य २६७ : प्रदीपक अपील-अधिकार आ तथ्यक प्रति उत्तरदायित्व

सौरभ, केशव आ मनोज अपील दायर करैत छथि। ई तथ्यकेँ दोष अस्वीकारक सार्वभौम प्रमाण नहि मानल जा सकैत; अपील न्यायिक प्रक्रियाक स्थापित अधिकार अछि। प्रदीप महाजन सेहो अधिकारसँ वञ्चित नहि, मुदा अपन भागीदारीकेँ फेर पूर्ण शून्य घोषित कऽ बचाव करबाक इच्छाकेँ रोकैत अछि। ओ दण्डक सम्भावित न्यायिक त्रुटिक विरुद्ध सीमित निवेदन स्वीकार करबाक बात कहैत अछि, तथापि जे कृत्य स्वयं कयलक, तकर उपेक्षा नहि करय चाहैत। एहि भेदमे आत्मसमर्पणक नैतिक प्रश्न आ विधिक बचावक अधिकार परस्पर विरोधी नहि रहैत।

लेखक प्रदीपक सम्पूर्ण रूपान्तरण सिद्ध भेलाक घोषणा नहि करैत। ओ स्पष्ट करैत छथि जे परिवर्तनक अन्तिम प्रमाण भविष्यक आचरण होयत। एहि आत्मसंयमक साहित्यिक मूल्य अछि। पछतावा कथाक एक लय बनि सकैत अछि; दीर्घ नैतिक परिवर्तन तकरो बड़ परीक्षा अछि। दृश्य २६७ एकटा सुखद अन्तक लोभक विरोध करैत अछि। तइयो पात्रक आन्तरिक विचार पाठक लग कथाकारक निश्चित व्याख्यासँ पहुँचैत अछि; अलग स्वतन्त्र कर्मक परीक्षा एखन आगाँ बचल अछि।

दृश्य २६८ : तृषाक कानून पढ़बाक निर्णय आ पिता-पुत्रीक सीमित पुनर्संवाद

जेलक पारिवारिक मुलाकातमे तृषा अपन आगाँक पढ़ाइ लेल कानून चुनबाक बात कहैत छथि। पिता प्रदीप सम्भावित भावनात्मक व्याख्या—हुनका बचायब —प्रस्तुत करैत छथि, मुदा तृषा तुरन्त ‘नहि’ कहैत छथि। ओ बुझय चाहैत छथि जे एके मनुष्य गलत कृत्य करि सकैत अछि, तथापि ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ राक्षसक एक श्रेणीमे नहि समेटल जा सकैत। एहि ठाम नव्य न्यायसँ भिन्न प्रसङ्गमे ‘व्यक्तिक विशिष्ट कृत्य’ आ ‘सम्पूर्ण व्यक्तित्व’क अवच्छेदक सादृश्य उपयोगी अछि। ई दार्शनिक अनुरूपता अछि, शास्त्रक शब्दसँ मानवीय दोष मेटेबाक विधि नहि।

तृषाक निर्णय पिता केँ निर्दोष ठहरायबाक घोषणा नहि, स्वतन्त्र शिक्षात्मक जिज्ञासा अछि। कानून पढ़बाक अर्थ दुनू पक्षक कथनक सीमा बुझब, भूमिका आ दण्डक सम्बन्ध पर विचार करब, तथा आपराधिक लेबलक अतिसरलीकरणसँ लड़ब भऽ सकैत अछि। दृश्य ‘ई क्षमा नहि छल’ कहिकऽ पिता-पुत्रीक संवादक पुनर्जन्मकेँ क्षमादानक प्रकरण बनबाक जोखिमसँ बचबैत अछि। छोट घरेलू हास्य, चुप्पी आ आँखिमे नोर मानवीय निकटताकेँ अमूर्त सिद्धान्तसँ बेसी प्रभावी बनबैत अछि।

इकाईक अन्तःसम्बन्ध आ कलात्मक निर्णय

दृश्य २६५क बिज्जी अनावश्यक लड़ाइ नहि करैत अछि; दृश्य २६७क प्रदीप अनावश्यक असत्य विवाद नहि बनबैत; दृश्य २६८क तृषा अनावश्यक सम्पूर्ण चरित्र-दोष अथवा सम्पूर्ण निर्दोषताक दोहरा डिब्बा अस्वीकारैत छथि। ई तीन प्रसङ्गक बीच विवेकपूर्ण सीमा-निर्धारणक रचनात्मक साम्यता अछि। न्यायिक निर्णयक बादो संघर्षक सम्भावना रहैत अछि, मुदा प्रत्येक स्थिति पूर्ण युद्ध माँगैत नहि। लेखकक भाषा कतेको ठाम नैतिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल सूत्रात्मक बनैत अछि, तथापि देहरी पर छोट बिज्जीक ठाढ़ रहब आ जेलमे बेटी-पिताक अपूर्ण संवाद एहि सूत्रसभकेँ अनुभवात्मक आकार दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६८ — संस्थागत आत्मपरीक्षण, शिक्षण आ रोजीरोटीक पुनर्प्राप्ति (मूल दृश्य २६९–२७२)

दृश्य २६९ : अम्बरक जीवित रहब दोषमुक्तिक समतुल्य नहि

अम्बर इंटरैक्टिव बन्द नहि होइत, मुदा ओकर व्यवसाय सिकुड़ि जाइत अछि। निवेशक हटैत छथि, कर्मचारी घटैत छथि, किछु उत्पाद बन्द होइत अछि, आ बचल खेल-प्रणाली नियामकीय जाँचक बाद सीमित रूपमे जारी रहैत अछि। लेखक एहि परिणतिकेँ संस्थागत मुक्ति अथवा पूर्ण विनाशक दू विकल्पमे नहि रखैत छथि। कम्पनीक वैधानिक रूपमे टिकि रहल मात्रसँ पुरान संस्कृतिक दोष समाप्त नहि होइत; दोसर दिस संस्थाक अस्तित्व अपने सभ कर्मचारीकेँ समान दोषी मानबाक कारण सेहो नहि। एहि असमानताकेँ समझब डिजिटल उद्यमक आलोचनाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

विहान सारंग सार्वजनिक सभामे व्यक्तिगत आपराधिक दायित्वक सीमाक संग संस्थागत विफलताक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत अछि। पत्रकार ‘पी.आर. बयान’क सम्भावना उठबैत अछि; विहान शब्दक बदला आगाँक कार्यक परीक्षण करबाक बात कहैत अछि। एतय प्रचार आ सुधारक भेद घोषणासँ नहि, स्वतन्त्र अनुपालन समितिक प्रतिवेदनसँ उभरैत अछि। समिति पुरान वृद्धि-केन्द्रित संस्कार, चेतावनीक न्यून मूल्याङ्कन, बाहरी साझेदारक अस्पष्ट जिम्मेदारी आ निदेशक-मण्डलक लाभाभिमुख निर्णयक आलोचना करैत अछि। ई निष्कर्ष केवल व्यक्तिक दोषक विस्तार नहि, संस्थाक पद्धति पर प्रश्न अछि।

प्रतिवेदन सार्वजनिक होइत कम्पनीक निजी मूल्याङ्कन घटैत अछि। विहानक अकेले कागज पढ़ब एहि आर्थिक मूल्यक विरुद्ध सत्यक मूल्य तोलबाक दृश्य अछि। उपन्यास सुधारकेँ तत्काल व्यावसायिक सफलता नहि बनबैत। तथापि पाठककेँ समिति कतेक स्वतन्त्र छल, ओकर निर्देश लागू भेल कि नहि—एहि विषयक विस्तृत प्रक्रियागत प्रमाण दृश्य २६९ मात्रसँ नहि भेटैत। तकरा ‘पूर्ण

संस्थागत सुधार’ घोषित करबाक बदला सार्वजनिक आत्मपरीक्षणक महत्त्वपूर्ण आरम्भ मानब अधिक उचित अछि।

दृश्य २७० : रचनाक स्थानान्तरण आ कारण-विवेचनक अनुशासन

रचना सिन्हाक दूरक पद पर स्थानान्तरणक विषयमे तीन चर्चा उठैत अछि—पुरस्कार, दण्डात्मक हटाओल जाएब, अथवा सामान्य सेवा-परिवर्तन। मूल पाठ तीनूमे सँ ककरो सत्य घोषित नहि करैत। रचना औपचारिक स्थानान्तरण-आदेशकेँ प्रत्यक्ष तथ्य मानैत छथि; बाकी कथ्य अनुमानक क्षेत्रमे छोड़ैत छथि। ई प्रसङ्ग कथाक आरम्भसँ चलि रहल प्रमाण-नीतिक कठिन उदाहरण अछि। रचना अपनहि जीवनक घटनापर संशयक नियम लागू करैत छथि, जखन ओहि नियमक छूट हुनक व्यक्तिगत गौरव वा दुःखकेँ साहित्यिक तीव्रता दऽ सकैत छल।

पुरान बोर्डक फोटो व्यक्तिगत फोनमे राखनाइ दृश्य २६२क बोर्ड मेटेबाक क्रियाक स्मृतिगत पूरक अछि। पद आ कार्यालय बदलैत अछि, मुदा घटना–सम्बन्ध–हेतु–प्रमाण–निर्णयक क्रमक उपयोग बनि रहैत अछि। स्थानान्तरणक संस्थागत कारण अनिश्चित होइतहुँ पद्धतिक उत्तराधिकार स्पष्ट अछि। उपन्यास एतय सिद्धान्तकेँ व्यक्ति-पूजा बनबासँ बचबैत अछि। रचना जँ महान अधिकारी छथि तइयो हुनक स्थानान्तरणक कारणबारे निष्कर्षक लेल स्वतंत्र कागज चाही। आलोचक सेहो अनुमानित दण्डात्मक प्रतिशोधक कथा गढ़ि एहि पाठगत मर्यादा भङ्ग नहि करय।

दृश्य २७१ : ‘खाता ककर?’ — स्वामित्व, उपयोग आ दायित्वक शैक्षणिक पृथक्करण

ईशानक म्यूल-खाता जोखिम परियोजना दू विश्वविद्यालयक प्रशिक्षण-पाठ्यक्रममे पहुँचैत अछि। ओ विद्यार्थीसँ पहिने ‘खाता ककर?’ प्रश्न पूछैत अछि, तत्पश्चात् ‘पाइ ककर?’। पहिल प्रश्नक उत्तर बैंक-अभिलेखक नाम दिस जाइत अछि; दोसरमे आयक स्रोत, अधिकार, प्रेषक आ प्राप्तिक भेद खुलैत अछि। ई शिक्षण-विधि उपन्यासक मूल न्याय-दर्शनक व्यावहारिक रूप अछि:

एक वस्तुक वैधानिक नाम आ आर्थिक प्रयोजन अलग-अलग जाँचना चाही। खाता पर नाम लिखल भेलाक कारण ओहिमे आयल प्रत्येक रकमक लाभार्थी, स्रोत आ आपराधिक प्रयोजन एक व्यक्तिक हाथमे छल—एहन अनुमान उचित नहि।

ईशान अपराध करबाक तकनीकी निर्देश नहि, सामाजिक चेतावनीक लक्षण पढ़बैत अछि। असामान्य कमीशन, अस्पष्ट रोजगार, अनजान कारोबारक पाइ अपन खातामे घुमेबाक आग्रह आ ऋणग्रस्त अवस्थाक लाभ उठायब—ई सभ जोखिमक सन्दर्भ बनैत अछि। विद्यार्थी गरीब लोकक दोषमुक्ति सम्बन्धी प्रश्न उठबैत अछि। ईशान गरीबीकेँ अपराध करबाक छूट नहि कहैत, मुदा परिस्थितिक ज्ञानकेँ दायित्वक उपयुक्त परीक्षणक अंश मानैत अछि। एहि उत्तरमे पात्रक पारिवारिक दुःख संस्थागत शिक्षामे बदलैत अछि; धनेश्वरीक पहराक भाषा विश्वविद्यालयमे नव रूप प्राप्त करैत अछि।

एकर आलोचनात्मक सीमा सेहो स्पष्ट करबाक चाही। जोखिमक सामाजिक संकेत देखि प्रत्येक अभावग्रस्त व्यक्ति पर संदेह करब उत्तरदायी रोकथाम नहि। एकहि रूपक आय, रोजगारक अनौपचारिकता आ धोखाधड़ीक अलग परिस्थितिमे भेटि सकैत अछि। ईशानक शिक्षणक आधार विवेक आ सत्यापन अछि, अनुमानक आधार पर व्यापक निगरानी नहि। मूल पाठक निर्दोष खाताधारकक संरक्षण सम्बन्धी आग्रह एहि सीमाकेँ पुष्ट करैत अछि।

दृश्य २७२ : सबीनाक मशीन फेर चलब आ समाजक धीमा विश्वास

सबीना खातूनक सिलाइ-दोकान पुनः चलैत अछि, मुदा बैंकक निगरानी हटेबामे समय लागैत अछि, समाजक अविश्वास आरो देर धरि। एक ग्राहक पुरान पुलिस-मामलावला खाताक प्रश्न पूछैत छथि। सबीना पाँच हजारक प्रलोभनमे खाता उपयोग देबाक गलती आ जाँचमे सत्य कहलाक बात स्वीकार करैत छथि। ग्राहक तत्काल सार्वजनिक क्षमादानक घोषणा नहि करैत; ओ शुक्रबार धरि ब्लाउज तैयार करबाक साधारण अनुरोध करैत छथि। एहि सामान्य लेनदेनमे उपन्यास पुनर्वासक असाधारण सूक्ष्म दृश्य रचैत अछि।

आजीविकाक नियमित भरोसा लौटब विधिक आदेशक तुरन्त परिणाम नहि। न्यायालय ककरो स्थिति स्पष्ट करि सकैत अछि, मुदा ग्राहक, पड़ोसी आ बाजारक सामाजिक व्यवहार धीरे बदलैत अछि। सबीना अपन गलती छुपबैत नहि, मुदा ओहि गलतीकेँ जीवनभरक सम्पूर्ण परिचय सेहो नहि स्वीकारैत छथि। ग्राहकक वापसी ‘समाज माफ कऽ देलक’क प्रमाण नहि, बल्कि अपन जीवनक काजक विश्वसनीयता धीरे पुनः अर्जित करबाक पहिल साक्ष्य अछि। ई दृश्य कथाक विस्तृत न्यायिक प्रक्रियासँ उलट अत्यन्त छोट, देहगत आ श्रम-केन्द्रित अछि—मशीन रुकैत अछि, ग्राहक सोचैत छथि, फेर कपड़ा दैत छथि। एकर सौन्दर्य एहि साधारणतामे अछि।

तीसरी इकाईक आलोचनात्मक परिणाम

अम्बर, रचना, ईशान आ सबीना—चारू प्रसङ्गमे ‘निर्णयक बाद’क अर्थ एक समान नहि। कम्पनी लेल सार्वजनिक अनुपालन; अधिकारी लेल नब पद पर पद्धति; शोधकर्ता लेल शिक्षण; श्रमिक स्त्री लेल ग्राहकक पुनरागमन। एहि विषमता कारण उपन्यास संस्थागत सुधारक एक घोषणापत्र बनि नहि रहैत। एकर अन्तर्मुखी एकता ‘शब्दक बाद काज’ अछि। एतय सहमति शब्द पर्याप्त नहि; साक्ष्य, प्रशिक्षण, नीति आ रोजीरोटीक पुनर्स्थापन वास्तविक कसौटी अछि। लेखक ई विचार केतेको बेर स्पष्ट कहलाक कारण गद्य सूत्रात्मक भऽ सकैत अछि, मुदा दृश्य २७२क न्यून संवाद एहि भारकेँ सौन्दर्यपूर्ण ढङ्गे सन्तुलित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ६९ — कलङ्कक प्रतिवाद, पुनर्स्थापनक श्रम आ अपीलक स्वाधीनता (मूल दृश्य २७३–२७६)

दृश्य २७३ : मंजरीक प्रश्न आ ‘लाल नाम’क सामाजिक दीर्घता

अभिषेकक बहिन मंजरी नर्सिङ्ग प्रशिक्षणक अन्तिम चरणमे छथि। अस्पतालक बैंक-जागरूकता शिविरमे वक्ता खाताक दुरुपयोगसँ बचबाक सामान्य निर्देश दैत अछि। मंजरी एहि निर्देशकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ तकरा समयक दोसर प्रश्न जोड़ैत छथि—जे व्यक्ति पहिने गलती कऽ चुकल, ओकरा बैंक सदिखन संदिग्ध मानत कि ओकर लेल सुधरबाक स्पष्ट बाट रहत? ई प्रश्न अपराधक रोकथामक क्षेत्रसँ सामाजिक पुनर्स्थापनक क्षेत्रमे विचारकेँ बढ़बैत अछि। सन्देहक कारण चिन्ह बनब आवश्यक भऽ सकैत अछि; मुदा ओ चिन्ह जीवनक अन्तिम आ अपरिवर्तनीय पहिचान बनि जाए तँ न्यायिक दण्डक सीमा पार कऽ संस्थागत कलङ्क बनि सकैत अछि।

मंजरीक अनुभव केवल बैंकक सूचना नहि। अभिषेकक पुरान संकटसँ घरक जमीन, पढ़ाइमे एक वर्षक देरी, परिवारक चिन्ता आ सामाजिक शङ्का जुड़ल अछि। एहि कारण ओ सार्वजनिक भाषणकेँ जीवित उदाहरणसँ परखैत छथि। वक्ता ‘परिस्थिति अनुसार’ सन साधारण उत्तर दैत अछि; मंजरी स्पष्ट सुधार-पथ माँगैत छथि। अधिकारी ओकर नाम आ मुकदमा नहि, सुझाव लेबाक बात कहैत अछि। ई विवरण महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ उपन्यास सुधारक पक्षधर व्यक्तिगत पीड़ाकेँ सार्वजनिक जिज्ञासाक वस्तु बनबासँ रोकैत अछि।

मंजरीक वाक्य—एक बेर ‘लाल’ नाम भेलाक कारण जीवन सदिखन लाल नहि रहबाक चाही—बैंकक जोखिम-चिह्न आ मनुष्यक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक बीच दूरी स्थापित करैत अछि। तथापि मूल पाठ स्पष्ट कहैत अछि जे सुझाव नीति-नोटमे पहुँचल कि नहि, से मंजरी नहि जनैत छथि। आलोचक एकरा तत्क्षण कानूनी सुधारक कारण घोषित नहि कऽ सकैत। दृश्य २८०मे भिन्नतामूलक दिशानिर्देश अबैत अछि; ओकरा मंजरीक एकहि हस्तक्षेपक प्रत्यक्ष फल कहब

पाठक तथ्यक बाहर जाएब होयत। ई मर्यादा एहि दृश्यक वास्तविक शक्ति नहि घटबैत; नीतिगत भाषा बनबाक पहिने एक साधारण प्रश्न कहबाक साहस अपने एक सामाजिक कृत्य अछि।

दृश्य २७४ : शैलेशक परामर्श आ आत्मदण्डक अतिनाटचसँ दूरी

शैलेश मंडल तुरन्त विद्यालयक सेवा पर नहि घुरैत अछि। विभागीय जाँच, निलम्बन, व्यवहारिक परामर्श आ परिवारसँ दूरी—ई सभ स्थिति एक सङ्ग विद्यमान अछि। ओ जुआ-लतसँ पीड़ित व्यक्तिसभक समूह-बैठकीमे अपन अनुभव कहैत अछि। पहिल दिन पाँच सहभागी, दोसर दिन तीन—एहि घटैत संख्यासँ लेखक परामर्शकेँ जादुई सफल अभियान बनबैत नहि छथि। उपस्थितिक अनियमितता, भरोसाक कठिनाई आ स्वीकृतिक आरम्भिक पीड़ा सामाजिक सुधारक वास्तविक लयक रूपमे देखाओल गेल अछि।

एक सहभागी हारल पाइ फेर जीतबाक आशामे खेलैत रहबाक बात कहैत अछि। शैलेश अपन जीवनक जवाबमे घर हेरायलाक स्वीकार करैत अछि। ई स्वीकार शिक्षण-प्रवचन नहि, अपन अनुभवक मूल्य जाननिहार व्यक्तिक सीमित गवाही अछि। ओकर कृत्यक सामाजिक असर आरती आ नेनासभक जीवनमे जारी अछि। एहि कारण बैठक शुरू करबक आधार पर परिवार फेर जोड़ि गेल, नौकरी वापस भेटि गेल अथवा लत समाप्त भेल—एहन दावा अनधिकृत होयत। परामर्शक उपस्थिति एक सम्भावना अछि, अंतिम स्वास्थ्य-निर्णय नहि।

एहि दृश्यसँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि: अपराध-समीक्षामे व्यक्ति केवल दण्डक विषय होयत कि सुधारक सम्भावित सहभागी सेहो? लेखक दोसर उत्तरक बाट खोलैत छथि, मुदा सुधारक कामक मूल्य पीड़ित परिवारक अनिवार्य क्षमा पर निर्भर नहि रखैत। ई न्यायिक उत्तरदायित्व आ नैतिक पुनर्निर्माणक उपयोगी पृथक्करण अछि।

दृश्य २७५ : ‘नव बाट’ दोकान आ साधारण लेनदेनक मर्यादा

रितेश दास मोबाइल-मरम्मतिक दोकानक नाम ‘नव बाट’ रखैत अछि। किछु लोक हँसैत अछि, ओ सहैत अछि। अभिषेक महीना बाद फोनक स्क्रीन बदलबय अबैत अछि। रितेश काज करैत अछि; अभिषेक पूरा मूल्य दैत अछि। रितेश सम्भवतः मूल्य छोड़बाक प्रयास करैत, मुदा अभिषेक स्पष्ट करैत अछि जे काजक पाइ काजक अछि। दुनू पात्रक बीच एहि लघु लेनदेनक अर्थ पैघ भाषणसँ अधिक अछि। पुरान सम्बन्ध जँ अवैध कमीशन, भय अथवा अपराधक सुविधासँ निर्धारित छल, तँ आब सामान्य सेवा आ उचित मूल्यक आधार पर सम्पर्क बनैत अछि।

एकरा तत्काल मित्रताक पुनर्जीवन कहब असत्य होयत। मूल पाठ जानि-बुझि क्षमा-पत्र, गले मिलब अथवा सार्वजनिक मिलन नहि रखैत अछि। सामान्य व्यापारक गरिमा अपने नव सम्बन्धक सम्भावना अछि। दाम नहि छोड़बाक अभिषेकक आग्रहक अर्थ रितेशकेँ अनन्त अपराध-बोधमे रखबाक मंशा नहि; हुनकर काजक श्रमक मूल्य स्वीकार करब अछि। एहने छोट क्रियासँ दैहिक-सामाजिक दूरी घटि सकैत अछि, बिना अतीत मेटने।

शिल्पक दृष्टिसँ ई प्रसङ्ग उपन्यासक आर्थिक प्रतीकमे परिपक्व परिवर्तन अनैत अछि। आरम्भमे छह प्रतिशतक अदृश्य माँग, दो प्रतिशतक असामान्य भुगतान, म्यूल-खाताक कमीशन आ अभिलेखीय छल छल। एतय सामान्य श्रमक पारदर्शी मूल्य अछि। लेखक शब्द-संख्या घटा कऽ अर्थ बढ़बैत छथि। पारदर्शिता एतय नीति-पत्रक अनुच्छेद नहि, स्क्रीन बदलबाक रकम अछि।

दृश्य २७६ : देवांशुक अपील आ मृणालिनीक थाकल किन्तु स्वतन्त्र प्रतिक्रिया

देवांशु रक्षित स्वास्थ्य, उमेर आ विधिक प्रश्न सहित दण्डक विरुद्ध अपील करैत अछि। एहि अधिकारक प्रयोगकेँ स्वतः अपराधक नव प्रमाण अथवा पश्चात्तापहीनताक अंतिम साक्ष्य मानब गलत होयत। मृणालिनी समाचार सुनि चिन्ता नहि होयबाक उत्तर दैत छथि। ईशान दण्ड घटबाक सम्भावना उठबैत

अछि; ओ कहैत छथि जे अदालत कारण देखत। एहि उत्तरमे मृणालिनी अपन व्यक्तिगत अनुभवकेँ न्यायालयक उत्तरदायित्वसँ पृथक करैत छथि। ओ दण्डक वर्ष गनि सत्यप्रकाशकेँ फेर नहि आनि सकैत छथि।

ईशान ‘अहाँ बदलि गेलहुँ’ कहैत अछि, मुदा मृणालिनी ‘थाकि गेलहुँ’क सम्भावना सामने रखैत छथि। लेखक दुनू अवस्थाकेँ एक सङ्ग सम्भव मानैत छथि। ई सूक्ष्मता महत्त्वपूर्ण अछि: दीर्घ न्याय-संघर्षक बाद शान्ति सदिखन आध्यात्मिक उदात्तता नहि; थकान, घात-प्रतिक्रिया आ व्यावहारिक अवकाश सेहो भऽ सकैत अछि। पीड़िताक प्रत्येक संयत उत्तरकेँ उपदेशात्मक क्षमाक श्रेष्ठ प्रतिमा बना देब तकर वास्तविक जीवनकेँ मिथ्याभाषी करब होयत।

मृणालिनी दण्डक अवधि पर एकाधिकार नहि चाहैत छथि। जे आंशिक न्याय हुनका भेटल, से निर्णयमे लिखल अछि; मृत पतिक पुनरागमन असम्भव अछि। ई पुनरावर्तन नहि, पूर्व दृश्य २५८–२६०क प्रतीक्षा-परिवर्तनक नव परीक्षण अछि। निर्णय भेला पछातियो अपीलक समाचार हुनका अपन स्वाधीन संयम पुनः आजमायबाक अवसर दैत अछि। दृश्य समाप्तिते प्रतिशोध आ न्याय भिन्न शब्द बनैत अछि। तकर नैतिक शक्ति एहि ठाम अछि जे मृणालिनी प्रतिशोध छोड़ि देबाक घोषणा ककरो दोषमुक्त करबाक लेल नहि करैत छथि, अपन जीवनकेँ दण्ड-वर्षक गणनासँ मुक्त करबाक लेल करैत छथि।

चौठ इकाईक उपलब्धि आ सीमा

मंजरीक नीति-प्रश्न, शैलेशक छोट समूह, रितेश–अभिषेकक मूल्य-भुगतान आ मृणालिनीक संयम चारि भिन्न सामाजिक पुनर्स्थापन अछि। पहिलमे संस्थाक नियम, दोसरमे आत्मस्वीकार, तेसरमे श्रमक मूल्य आ चौठमे पीड़िताक मनक स्वतन्त्रता मुख्य अछि। सभकेँ ‘क्षमा’ एक शब्दमे समेटब मूल पाठक विविधताकेँ नष्ट करब होयत। चारू दृश्य संक्षिप्त आ स्पष्ट नीतिगत निष्कर्षसँ युक्त अछि; एहि कारण पात्रक दीर्घ अन्तर्विरोध देखेबाक अवसर सीमित अछि। तथापि सामान्य जीवनक वस्तुसभ—अस्पतालक शिविर, समूहक खाली कुर्सी, मरम्मतिक स्क्रीन आ घरक समाचार—एहि विचारकेँ ठोस सामाजिक भूगोल दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ७० — उत्तराधिकारविहीन न्याय नहि : अनिरुद्धक विदाइ आ नव नीति (मूल दृश्य २७७–२८०)

दृश्य २७७ : अनिरुद्धक अन्तिम शिक्षामे व्यक्तिपूजाक निषेध

अनिरुद्ध चौधरीक स्वास्थ्य बिगड़ैत अछि। ईशान अस्पतालमे हुनकासँ भेटैत अछि। पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक सम्बन्धमे कृतज्ञता प्रकट करबाक चेष्टापर अनिरुद्ध एक व्यक्तिक महिमाक आख्यान अस्वीकार करैत छथि। कियो असगर जाँच नहि करैत—ई विचार संस्थागत न्यायबोधक मूल वाक्य अछि। पहिल दिनक प्रत्यक्ष आ अनुमानक भेदक चर्चा अबैत अछि, मुदा अनिरुद्ध ओकर श्रेय अपन मौलिक आविष्कार नहि मानैत छथि; ओ पुरान ज्ञान आ कामक आदतिक बात करैत छथि। ईशान धनेश्वरीकेँ सेहो शिक्षकक रूपमे चिन्हैत अछि।

एहि संवादमे उपन्यास अपन ज्ञानक वंशावलि रचैत अछि। धनेश्वरीक घरेलू अनुभव, अनिरुद्धक जाँच-अनुशासन, रचनाक प्रशासनिक पद्धति आ ईशानक सार्वजनिक शिक्षण—सभ एकरे विस्तार अछि, मुदा एक शाब्दिक गुरु-शिष्य क्रम नहि। प्रत्येक व्यक्ति अलग परिस्थिति पर अपन निर्णय करैत अछि। अनिरुद्ध कहैत छथि जे सही निष्कर्षसँ अधिक महत्त्वपूर्ण सही तरीका अछि, कारण निष्कर्ष बदलि सकैत अछि। एतय आलोचक सावधान रहत: सही निष्कर्ष अप्रासङ्गिक नहि; ओ लक्ष्य अछि, मुदा विश्वसनीय तरीका बिना आजक सही निष्कर्षक आकस्मिकता काल्हि निर्दोषपर अन्याय बनि सकैत अछि।

गलत पद्धतिसँ सही अभियुक्त पकड़ल जाएबाक सम्भावनाक उत्तरमे अगिला बेर निर्दोष पकड़ि जेबाक जोखिम रेखाङ्कित कएल जाइत अछि। एहि तर्कमे विधिक प्रमाण-मानकक व्यापक सार्वजनिक महत्त्व अछि। एक प्रकरणक तत्काल सफलता पुरान गलत जाँचक पद्धतिक स्थायी वैधता नहि देबय। संवाद अत्यन्त दार्शनिक अछि; रुग्ण शरीरक थाकल आवाज, ऑक्सीजन आ ठण्ढ हाथक उल्लेख एकरा चिकित्सालयक वास्तविक अनुभूतिमे टिकबैत अछि। ताहि कारण उपदेश निजी विदाइक श्रमसँ पूर्णत: पृथक नहि रहैत।

दृश्य २७८ : अन्त्येष्टि, नोटबुक आ ‘सही गवाह’क मानवीय सीमा

दू सप्ताह बाद अनिरुद्धक मृत्यु होइत अछि। परिवार निजी अन्त्येष्टि चाहैत अछि, सरकारी सम्मान सीमित रहैत अछि। रचना, मयंक, रोहित, ईशान आ किछु अधिकारी उपस्थित छथि; मृणालिनी स्वास्थ्यक कारण नहि पहुँचि पबैत छथि। एहि विवरणमे लेखक मृत अधिकारीक आदर्शीकरण लेल जनसमूहक उन्माद नहि रचैत छथि। शोक संयत अछि, आ पारिवारिक इच्छाक सम्मान भेटैत अछि। ईशान परिवारक अनुमति लऽ अनिरुद्धक नोटबुकक प्रति देखैत अछि—ई अनुमति उल्लेख अपने अभिलेखीय नैतिकताक छोट अभ्यास अछि।

नोटबुकक तीन विचारमे संशयक सम्मान, गवाहीक कमजोरी आ गवाहक चरित्रक भिन्नता, तथा गलत आरोपी हटेबाक आवश्यकता शामिल अछि। एहि तेसर विचारक महत्त्व उपन्यासक आरम्भक गलत सङ्केतसभ याद कयला पर अधिक स्पष्ट होइत अछि। कौशल महतोसँ जुड़ल तुरन्त अनुमान, नकली वाहनक भ्रम, समान वित्तीय मार्गक अति-व्याख्या आ कमजोर खाताधारकसभक एकरसि कलङ्क—एहि सभसँ जाँचक सफलता कखनहुँ कोनो गलत सम्बन्ध तोड़ब सेहो रहल अछि। अपराधी भेटलाक कथासँ अलग न्याय-व्यवस्थाक आत्मसंयमक इतिहास एतय दृश्यमान अछि।

ईशान नोटबुक वापस करैत अछि। ओ पाठककेँ बुझबैत अछि जे न्याय-पद्धति किनार-जेकाँ एक व्यक्तिसँ बान्हल नहि रहबाक चाही। धनेश्वरीक मृत्यु आ अनिरुद्धक मृत्यु दुनू शोक बनैत अछि; मुदा हुनका सभक काजक अवशेष जीवित व्यक्तिक अभ्यासमे रहैत अछि। रूपक एतय पैघ-छोट बिज्जीक उत्तराधिकारसँ जुड़ैत अछि। तथापि मृत्युकेँ केवल नव पीढ़ीक प्रशिक्षणक उपकरण बनबैत पढ़ब संवेदनाक हानि होयत। अनिरुद्धक व्यक्तिगत अनुपस्थिति अपन दुःखक वास्तविकता रखैत अछि, जकरा कथा छोट किन्तु सघन रूपमे स्वीकारैत अछि।

दृश्य २७९ : रचनाक नव फाइल आ अनन्त आपराधिक कथाक यथार्थ

रचना ट्रेनमे घुरैत छथि। नव जिलासँ सन्देश अबैत अछि—ठगी-जाल, अनेक बैंक-खाता आ एक निर्दोष वृद्धक रोकल पेंशन। ओ फोन बन्द नहि करैत छथि; फाइल माँगैत छथि। एहि दृश्यकेँ ‘नव महाअपराधक पूरा उद्घाटन’ बनायब मूल पाठसँ बाहर जाएब अछि। एतय केवल एक नब अनुसन्धानक प्रारम्भ अछि, जकरा कर्ता, कारण आ परिणाम एखन अज्ञात अछि। साहित्यिक रूपमे एकर काज ई देखेनाइ अछि जे आपराधिक अर्थव्यवस्था आ गलत प्रशासनिक वर्गीकरणक सम्भावना फैसला भेला पछाति समाप्त नहि होइत।

पूर्व दृश्य २७०मे रचनाक स्थानान्तरण पर सभ अनुमान अनिश्चित छल; एतय नब जिलाक वास्तविक काज शुरु होइत अछि। अनुमानक विषयसँ कर्तव्यक व्यवहार दिस संक्रमण उपन्यासक मूल तर्कक सान्द्र उदाहरण अछि। पेंशन रोकल निर्दोष वृद्धक उल्लेख पाठककेँ अभियुक्तक खोजसँ पूर्व नागरिकक सम्भावित हानि पर ध्यान देबबैत अछि। ई एक नैतिक दिशा अछि, अन्तिम प्रमाणित निर्णय नहि। रचनाक फाइल मँगेनाइ एहि कारण अनुसन्धानक उचित पहिल चरण अछि।

दृश्य २८० : नब त्रिस्तरीय वर्गीकरण आ सीमासभक स्वीकृति

किछु मास बाद राज्य सरकार खाताधारकसभक पीड़ित/सहभागी वर्गीकरण सम्बन्धी नव दिशा-निर्देश जारी करैत अछि। मोट रूपमे जानि-बुझि सङ्गठित सहभागिता, संशयक बादो लाभ लेल निरन्तर सहभागिता, आ धोखा अथवा अज्ञानक संग सीमित लापरवाहीक स्थिति—तीन श्रेणी प्रस्तावित अछि। ई प्रशासनिक परिशोधनक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि, मुदा मूल पाठ स्पष्ट स्वीकारैत अछि जे कठिन प्रकरणसभ श्रेणीक सीमापर रहत। वर्गीकरणक उद्देश्य सभ व्यक्तिक जीवन तीन डिब्बामे स्थायी रूपसँ बन्द करब नहि; ‘सभ खाताधारक अपराधी’क पुरान अधैर्य छोड़ब अछि।

ईशान सरकारी मसौदा-समितिक प्रत्यक्ष सदस्य नहि छल। ओकर सार्वजनिक प्रतिवेदन उद्धृत भेल। एहि स्पष्ट स्रोतगत भेदसँ उपन्यास नीति-परिवर्तनक

कथाकेँ नायकक एकल विजय बनबाक अवसर रोकैत अछि। प्रतिवेदन सामाजिक बौद्धिक योगदानक स्रोत भऽ सकैत अछि, मुदा सरकारी प्रक्रिया, अनेक अधिकारी आ अन्य सामग्रीक सहभागिता मूल पाठमे पूर्ण रूपसँ देल नहि गेल अछि। तेँ ईशानकेँ नीतिक एकमात्र रचयिता कहब स्रोतक अतिक्रमण होयत।

ईशान घर पहुँचि मृणालिनीकेँ किछु बदललाक बात कहैत अछि। मृणालिनी परिवर्तनक परिमाण पूछैत छथि; उत्तर भेटैत अछि—कनेक नीक। ओ फेर सब्जी काटब शुरू करैत छथि। अदालतक भारी निर्णय, संस्थागत प्रतिवेदन आ नीति-पत्रक बाद ई घरेलू क्रिया कथाकेँ पैघ विजयोत्सवसँ बचबैत अछि। छोट सुधारक स्वीकृति, जीवनक निरन्तर श्रम आ अपूर्ण अपेक्षा एक सङ्ग विद्यमान अछि। दृश्य २८० उपन्यासक अन्त नहि, निर्धारित बैचक अस्थायी समापन अछि; मूल पाण्डुलिपिमे एकर बादो दृश्य उपस्थित अछि।

पाँचम इकाईक कलात्मक मूल्य आ अनिश्चित अगिला पृष्ठ

अनिरुद्धक मृत्युसँ रचनाक नव जाँच धरि, आ तकरा बाद ईशानक प्रतिवेदनसँ सरकारी दिशानिर्देश धरि एकटा सूक्ष्म कथात्मक गति अछि: व्यक्ति चलि जाइत अछि, जाँच जारी रहैत अछि; एक मामलाक फाइल बन्द होइत अछि, अन्यायसँ बचबाक पद्धति समाजमे घूमैत रहैत अछि। मूलतः बन्धु-परिवारक संकटसँ आरम्भ कथा एखन लोकनीति आ नागरिक संरक्षणक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। एकर सीमा दृश्यसभक लघुता आ पात्रसभक बारम्बार स्पष्ट नैतिक व्याख्यामे अछि; एहि कारण वास्तविक संस्था परिवर्तनक जटिलता आ नब नियमक अनुपालन पर अधिक पाठ नहि भेटैत। तथापि नोटबुक वापस देबाक क्रिया, ट्रेनमे फाइल मँगेनाइ आ घरमे सब्जी काटनाइ सामाजिक अर्थक दूधार बनबैत अछि—विचारक निरन्तरता, मुदा जीवनक अपूर्णता।

चौदहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य २६१–२८० : निर्णयक पछाति न्याय, पहराक परम्परा आ सामाजिक पुनर्निर्माण

न्यायिक निर्णयक अन्त नहि, तकर सामाजिक अनुवर्तन

मूल दृश्य २४१–२६०मे दू मुकदमे सम्बन्धी निर्णय आ मृणालिनीक न्याय-प्रतीक्षाक परिवर्तन कथा-गतिक निर्णायक बिन्दु छल। दृश्य २६१–२८० एहि बिन्दुकेँ उपन्यासक पूर्ण समापन मानबाक बदला ओकर सामाजिक परिणाम परीक्षण करैत अछि। अपील चलैत अछि; कम्पनीक आन्तरिक अनुशासन प्रश्नाधीन अछि; सुधारक दावा व्यवहारक प्रतीक्षा करैत अछि; खाताक निगरानी हटैत-हटैत सामाजिक अविश्वास टिकि रहैत अछि; जाँचकर्ता दोसर जिलामे नव अन्यायक सम्भावना देखैत छथि। ई विस्तार साहित्यिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ अपराध-गाथाक लोकप्रिय समापन सामान्यतः मुख्य अभियुक्तक गिरफ्तारी वा दोषनिर्णयक संग पाठकीय प्रश्न बन्द करबाक अपेक्षा करैत अछि। लेखक ओकरा खोलि रखैत छथि।

एतय ‘न्याय’ एकल परिणाम नहि, अनेक कालक संयुक्त पर असमान प्रक्रिया अछि। न्यायालयक काल अपील आ दण्डक निर्धारित अवधि सँ बनैत अछि; संस्थाक काल चेतावनी आ सुधारक प्रतिवेदनसँ; परिवारक काल खोआइल विश्वासक स्थानपर व्यवहारक धीमा परीक्षा सँ; पीड़ितक काल स्मृतिक असम्भव प्रतिपूर्ति सँ; राज्यक काल नब वर्गीकरण आ नव जाँचसँ। एहि कालसभकेँ परस्पर सम्पर्कमे पढ़ब चाही, मुदा एक दोसरक समतुल्य मानब उचित नहि।

भारतीय प्रमाण-विवेचन : प्रमाणित, अनुमानित आ अज्ञातक व्यवहारिक रूप

भारतीय प्रमाण-विचारसँ एहि बीस दृश्यक संगत तुलना तीन बिन्दु पर सम्भव अछि। पहिल, प्रत्यक्ष अनुभव अथवा अधिकृत लिखित दस्तावेजक सीमा बुझब; दोसर, अनुमानक हेतु आ प्रतिविकल्पक जाँच; तेसर, कथनक स्रोतक

विश्वसनीयता अलग राखब। दृश्य २७०मे रचनाक स्थानान्तरण-आदेश उपलब्ध अछि, मुदा पुरस्कार अथवा दण्डात्मक हटाओलक कारण प्रमाणित नहि। दृश्य २७८मे नोटबुक पर लिखल सिद्धान्त उपलब्ध अछि; ओकरा जीवित संस्था लागू करत कि नहि, ई अलग भविष्यमुखी प्रश्न अछि। दृश्य २८०मे सरकारी निर्देश जारी भेल, मुदा ईशान समितिक सदस्य छल—एहन दावा नहि। एहि भेदसभसँ कथा प्रमाण-श्रेणीक वास्तविक कठिनाई देखबैत अछि।

एहि तुलनामे परम्परागत प्रमाणक शब्द स्वतः न्यायालयी साक्ष्यक वैधानिक श्रेणी बनि नहि जाइत। साहित्यिक आलोचना अवधारणात्मक सादृश्य प्रस्तुत करैत अछि; संवैधानिक प्रक्रिया अथवा आधुनिक विधिक प्रमाणक विशिष्ट नियम ताहि सँ प्रतिस्थापित नहि होइत। कथा जखन ‘जे नहि जनैत छी, खाली छोड़ू’ कहैत अछि, तखन ओ किसी शास्त्रक सम्पूर्ण अनुवाद नहि, स्रोतपर निर्भर ज्ञानक नैतिक अनुशासन दिखबैत अछि।

नव्य न्याय : व्यक्तिदोष, परिस्थितिक विशिष्टता आ वर्गीकरणक सीमा

नव्य न्यायक विश्लेषणात्मक दृष्टिसँ ‘खाताक मालिक’, ‘खातामे पाइ अननिहार’, ‘खाताक लाभार्थी’, ‘आपराधिक प्रयोजनक ज्ञाता’ आ ‘जानि-बुझि सहभागी’ पाँच अलग विधेय अथवा सम्बन्ध-विषय बुझल जा सकैत अछि। दृश्य २७१क शिक्षण एहि भेदकेँ प्रश्नोत्तरमे सामने रखैत अछि। दृश्य २८०क तीन श्रेणी प्रशासनिक कार्य लेल उपयोगी मोट वर्ग अछि, मुदा प्रत्येक प्रकरणक विशिष्ट ज्ञान, स्वीकृति, दबाव आ लाभक स्तर तकर भीतर अलग निरीक्षण माँगैत अछि। एहि सम्बन्धमे विशेषण आ सम्बन्धक संकीर्ण परिभाषा करबाक नव्य न्यायोचित प्रवृत्तिसँ तुलनात्मक बोध प्राप्त होइत अछि।

मुदा तकनीकी नव्य-न्यायिक पदावली सभ परिस्थिति पर यथावत् नहि बिठाओल जा सकैत। वर्गीकरणक सीमापर कठिन प्रकरण रहलाक पाठकीय स्वीकृति अपने महत्त्वपूर्ण अछि। तर्कशास्त्रक उद्देश्य मनुष्यकेँ शुद्ध प्रतीक बनायब नहि, बल्कि जल्दबाजीमे गलत व्यक्ति पर निर्णय देबाक त्रुटि रोकब

अछि। ई आलोचनात्मक सम्बन्ध उचित, परन्तु एकर आधुनिक विधिक अनुप्रयोगक अंतिम प्रमाण कथामे उपलब्ध नहि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यान आ निर्णय-पश्चात् उपसंहारक लय

पाश्चात्य अपराध-कथाक अनेक प्रसिद्ध प्रतिमानमे चरम उद्घाटनक पछाति छोट उपसंहार अबैत अछि। ‘बिज्जी’ एहि उपसंहारकेँ अनेक स्वतन्त्र दृश्य-समष्टिमे विस्तृत करैत अछि। अपराधीक पकड़ा जाएब कथाक अन्तिम ऊर्जा नहि रहैत; कम्पनीक आत्मपरीक्षण, परिवारक सशर्त सम्बन्ध, पीड़ितक रोजीरोटी आ नब नीति एकहि अन्तिम कालमे जगह पबैत अछि। एहि दृष्टिसँ पाठ सामाजिक अपराध-आख्यानक रूप धारण करैत अछि, जतय ‘अपराध के कयलक?’क प्रश्नसँ आगाँ ‘तकर परिणामकेँ समाज कोना सँभालत?’ प्रमुख बनैत अछि।

एहि रूपान्तरक लाभ अछि जे व्यक्ति-केन्द्रित रहस्योद्घाटन संस्थागत जटिलताकेँ ग्रसि नहि पबैत। सीमा ई जे बहुसंख्यक संक्षिप्त उपसंहार-दृश्य पाठककेँ कथा समाप्त होयबाक बारम्बार अनुभूति दऽ सकैत अछि, जबकि मूल ग्रन्थ आगाँ चलैत अछि। दार्शनिक निष्कर्षक घनत्व बढ़ि जाइत अछि आ नाटकीय अनिश्चितता घटैत अछि। मुदा लेखक जाहि ठाम संक्षिप्त, वस्तुगत क्रिया रखैत छथि—सबीना लग ग्राहकक वापसी, रितेशक श्रमक पूरा मूल्य, अनिरुद्धक नोटबुक फिर्ता करब—ओतय विचार दृश्य-नाटक बनि जाइत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि : चारि पञ्जी, चारि प्रकारक स्मृति

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक सन्दर्भमे एहि बैचसँ चारि परस्पर सम्बद्ध किन्तु अलग स्रोत-रेखा चिन्हित कएल जा सकैत अछि। **घरेलू स्मृति**क स्रोत धनेश्वरीक भीजल पोथी आ मृणालिनीक नव लिखावट अछि। **जाँच-स्मृति** अनिरुद्धक नोटबुक, रचनाक बोर्डक फोटो आ नव फाइलमे अछि। **आर्थिक-संस्थागत स्मृति** अम्बरक अनुपालन-प्रतिवेदन, खाताक पुरान

चिह्न आ रितेशक सामान्य सेवा-लेनदेनमे अलग-अलग रूपमे भेटैत अछि। **नीतिगत स्मृति** ईशानक सार्वजनिक प्रतिवेदन आ राज्यक नव वर्गीकरणमे व्यक्त होइत अछि। प्रत्येक अभिलेखक उद्देश्य, अधिकार आ अपूर्णता पृथक अछि।

घरेलू पोथी विधिक अभिलेख नहि, मुदा जीवनक नैतिक बोधक स्रोत भऽ सकैत अछि। न्यायालयक आदेश सामाजिक पुनर्वासक सम्पूर्ण सूचक नहि। कम्पनीक सार्वजनिक प्रतिवेदन अपराधक हर कड़ीक अन्तिम निष्कर्ष नहि। प्रशिक्षणक वाक्य तत्काल कानूनक संशोधन नहि। एहि स्रोतगत भेद बिना इतिहासक एक आकर्षक, किन्तु झूठा निरन्तर सूत्र बनि सकैत छल। उपन्यासक पर्याप्त दृश्यमे ई सम्भावना स्वयं नियंत्रित कएल गेल अछि।

स्त्रीक कर्तृत्व आ पुनर्निर्माणक अनेक आवाज

दृश्य २६१–२८० मे मृणालिनी, तृषा, सबीना, मंजरी आ रचना न्यायक अलग अवस्थामे स्वायत्त निर्णय करैत छथि। मृणालिनी पूर्व शोककेँ दण्डक वर्षक सङ्ख्यासँ मुक्त करैत छथि; तृषा पिताक निर्दोषता घोषित कयने बिना कानून पढ़य चाहैत छथि; सबीना अपन गलतीक सार्वजनिक सत्य स्वीकारि श्रम जारी रखैत छथि; मंजरी कलङ्कक दीर्घता पर नीति-प्रश्न उठबैत छथि; रचना संस्थागत अनुमान पर नियन्त्रण रखि नव प्रकरण लैत छथि। ई पाँच आवाजकेँ ‘नारीक क्षमा’क एक आदर्श प्रतिमान बनायब गलत होयत। स्त्री-पात्रसभक स्वतन्त्रता अपन परिस्थितिसँ उपजैत अछि आ अनेक बेर परस्पर असमान निर्णयक रूपमे देखाइत अछि।

एहि चरित्रांकनमे एक सम्भावित सीमा सेहो अछि। कतहु स्त्रीक आन्तरिक संशय छोट नीतिवाक्यमे शीघ्र बदलि जाइत अछि; पाठक हुनकर दीर्घ रोजमर्रा संघर्षक असम्पूर्ण विवरण पबैत अछि। मुदा सबीनाक सिलाइ-मशीन, मंजरीक प्रशिक्षण आ मृणालिनीक भानसघरक साधारण क्रिया ई अमूर्तन कम करैत अछि।

बिज्जी–गोहि रूपकक पुनर्पाठ : निर्मूलन नहि, जोखिम-ज्ञानक उत्तराधिकार

आरम्भक बिज्जी गहुमनसँ भिड़ैत अछि आ घर बचबैत अछि। दृश्य २६१मे पैघ बिज्जी छोट बिज्जीकेँ किनारक व्यवहार सिखबैत जकाँ देखाइत अछि; दृश्य २६५मे छोट बिज्जी स्वयं सीमा पर ठाढ़ होइत अछि। एहि चित्रक्रमक तुलनासँ स्पष्ट होइत अछि जे पहरा निरन्तर सावधानीक व्यवहार अछि, हिंसक विजयक अनन्त पुनरावर्तन नहि। लेखक गोहिक पूर्ण अन्तक असम्भवता स्वीकारैत छथि। अपराधक नब तकनीक, नब नाम आ सामाजिक कमजोरीक नब दुरुपयोगक सम्भावना सेहो बचल अछि। एहि अर्थमे शीर्षक-प्रतीक घरेलू जीवन, आर्थिक अपराध आ न्यायिक पद्धतिक बीच आलोचनात्मक सेतु बनैत अछि।

तथापि गोहि अथवा गहुमनकेँ अपराधीक जैविक स्वभावक रूपमे पढ़नाइ नैतिक भ्रम पैदा करत। मानवक अपराध प्राकृतिक प्रजाति नहि; ओकर संस्थागत कारण, व्यक्तिगत चुनाव आ सामाजिक परिस्थिति अछि। रूपकक उचित क्षेत्र जोखिमक अनुभूति आ रोकथामक अभ्यासनिष्ठा अछि। आलोचनात्मक पाठ एही सीमा मानैत अछि।

चौदहम बैचक निष्कर्ष आ अगिला समीक्षा-सीमा

दृश्य २६१–२८०क केन्द्रीय उपलब्धि अछि न्यायिक समापनसँ सामाजिक निरन्तरता दिस गति। लेखक नायककेँ सर्वसमाधानक दाता नहि बनबैत छथि: ईशानक प्रतिवेदन उद्धृत होइत अछि, मुदा ओ सरकारी समिति सदस्य नहि; रचनाक स्थानान्तरणक कारण अस्पष्ट अछि; अम्बरक सुधारक सफलता एखन परखनिहार अछि; प्रदीपक परिवर्तन भविष्यक काजमे जाँचल जाएत; सबीनाक भरोसा धीरे लौटैत अछि। एहि सीमाक कारण कथाक नैतिक आशा साक्ष्यहीन आदर्शवाद बनबाक खतरा सँ बाँचैत अछि।

रचनात्मक सीमा एकर स्पष्ट उपदेशात्मकता आ क्रमागत लघु दृश्यसभमे किछु एकरस लय अछि। मुदा लेखकक श्रेष्ठ उपलब्धि सँचित कथनक बदला लघु व्यवहारक सहायता सँ प्रकट होइत अछि। पोथी सुखेबाक हाथ, कारी देहरी पर

बिज्जी, आधिकारिक बोर्डक मेटल अक्षर, मशीन पर ग्राहकक कपड़ा, पुरान नोटबुक फिर्ता देब आ सब्जी काटैत माँ—ई प्रतिमासभ दीर्घ अपराध-गाथाकेँ मनुष्यक साधारण जीवनमे पुनर्स्थापित करैत अछि। **ई विश्लेषण केवल मूल दृश्य २६१–२८० धरि सीमित अछि।** मूल ‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क कथानक एतय समाप्त नहि होइत; आगाँक दृश्य पढ़लाक बिना समग्र उपन्यासक अन्तिम निर्णायक मूल्याङ्कन उचित नहि।

अध्ययन-इकाई ७१ — सार्वजनिक अभिलेख, निजी दुःख आ स्मृतिलिखनक नैतिकता (मूल दृश्य २८१–२८४)

दृश्य २८१ : सत्यप्रकाशक नामक सार्वजनिक पुनःप्रवेश आ परिवारक अभिलेखीय स्वत्व

उदयरेखा लोकन्यास आ उत्तरायणक नव सार्वजनिक अभिलेखमे सत्यप्रकाश कर्णक आपत्ति आब पूरा नामसँ दर्ज अछि। उपन्यासक पहिल भागमे एक ठेकेदारक आवाज दबाव, अस्पष्ट भुगतान आ रहस्यमय मृत्युक बीच सँ सुनाइत छल। एतय ओकर नाम व्यक्तिगत दैनिकी अथवा अस्थायी समाचारक सीमा पार कऽ संस्थागत अभिलेखमे पहुँचैत अछि। ई परिवर्तन केवल सम्मान-वापसी नहि; भविष्यमे जाँच, शोध आ सार्वजनिक प्रश्नक लेल सन्दर्भ उपलब्ध होयबाक परिवर्तन अछि। लेकिन अभिलेखमे नाम छपि गेलाक बाद सत्यप्रकाशक मृत्युक समस्त प्रश्न समाप्त भऽ गेल, से निष्कर्ष मूल पाठ नहि दैत अछि। पूर्व न्यायिक निर्णयक प्रमाण-सीमा एखनहुँ लागू अछि।

शोधार्थीक ई-पत्र लेखककेँ एक नब नैतिक परिस्थिति दैत अछि। ईशानसँ सार्वजनिक अभिलेख उपयोग करबाक अनुमति पुछल जाइत अछि। ईशान पिता केँ पारिवारिक मृतकसँ सार्वजनिक अध्ययनक उदाहरण बनैत देखैत अछि। मृणालिनीक उत्तर स्पष्ट विभाजन करैत अछि: सार्वजनिक तथ्य शोधमे प्रयुक्त भऽ सकैत अछि, मुदा घरक निजी दुःख स्वतः सार्वजनिक स्वामित्वक वस्तु नहि। न्यायिक कागज सार्वजनिक भेलाक अर्थ निजी पत्र, घरक संवाद वा व्यक्तिगत शोक पर सर्वसाधारणक पूर्ण अधिकार नहि। एहि अन्तरमे व्यक्ति-अधिकार आ सार्वजनिक हितक टकराव अछि, मुदा उपन्यास एक पक्षकेँ पूर्ण रूपसँ नकारैत नहि। ओ प्रमाणित लोक-सूचनाक उपयोग स्वीकारैत अछि आ अनुभवक निजी सीमाकेँ मान्यता दैत अछि।

दृश्यक लघु पाँतिसभ—‘सार्वजनिक सत्य’, ‘निजी दुख’ आ दुनूक स्वत्व अलग—दार्शनिक सूत्रक जकाँ लगैत अछि। एकर लाभ वैचारिक तीक्ष्णता अछि;

सीमा ई जे निजी अभिलेख उपयोगक विवादक जटिलता तुरन्त समाधान पाबि लेने प्रतीत होइत अछि। तथापि ई दृश्य आरम्भिक गोपित भुगतानक विपरीत एक पारदर्शी अभिलेखक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि। पुरान जालमे सार्वजनिक परियोजनाक पाइ निजी गुप्त सम्बन्धमे ढँकायल छल; एखन सत्यप्रकाशक सार्वजनिक आपत्ति सार्वजनिकसँ लुकायल नहि अछि, मुदा परिवारक निजी जीवनक मान सेहो बचल अछि।

दृश्य २८२ : कमला-बलानक तटबन्ध आ प्रश्न पूछनिहार नागरिक

नव तटबन्ध-मरम्मतिक निविदा-पट्ट कथाकेँ ओकर आरम्भिक भूगोलमे घुरबैत अछि। सत्यप्रकाशक जीवनक निर्णायक विवाद सेहो तटबन्ध, ठेकेदारी आ अनुपातक दबावसँ शुरू भेल छल। एकर पुनरागमन भाग्यक अभेद्य चक्र नहि; लेखक बदलल संस्थागत परिस्थिति जाँचबाक अवसर बनबैत छथि। ईशान पट्ट पर ठेकेदारक नाम, मूल्य, कार्य-अवधि, शिकायत-संख्या आ सार्वजनिक सूचना-पोर्टल पढ़ैत अछि। पिता जखन संविदा पेलनि तखन नियमक बाहर एक अदृश्य ‘हिस्सा’ माँगल गेल छल; पुत्र आब नियमक भीतर उपलब्ध सूचनाकेँ नागरिक जाँचक आरम्भ बनबैत अछि।

मृणालिनीक ‘फेर जाँच?’ प्रश्नक उत्तर ‘नहि। नागरिक।’ अछि। एहि छोट संवादमे पुलिस-अनुसन्धान आ सार्वजनिक निगरानीक विधिक सीमा उद्घाटित होइत अछि। ईशान कोनो आरोपी चिन्हित नहि करैत अछि, न ठेकेदारक नाम देखिते अपराधक अनुमान लगबैत अछि। ओ पूर्व-सूचना संरक्षित करैत अछि, जाहिसँ भविष्यक काम आ सार्वजनिक व्यय पर प्रश्न सम्भव रहय। एहि व्यवहारक आलोचनात्मक मूल्य अछि जे पहराक अर्थ सत्ता अथवा बल-प्रयोग नहि, जनसूचना-सम्मत सजगता होइत अछि।

तथापि सूचना-पट्ट उपलब्ध रहब अपने सार्वजनिक पारदर्शिताक सफलता नहि। उपन्यासक पुरान प्रकरण सिखबैत अछि जे कागज पर सही शब्द लिखल रहितो अनधिकृत लेनदेन चलि सकैत अछि। तेँ ईशानक फोटो काजक अन्तिम प्रमाण नहि; अगिला मिलानक सम्भावित स्रोत अछि। दृश्य एही प्रारम्भिक सावधानी

पर रुकैत अछि। नदी एखनहुँ पुरान सीमा बदलैत रहत; प्रशासनक कागज सेहो समय-समय पर जाँच माँगत। लेखक एहि वस्तुगत पुनरागमनसँ पीढ़ीक नैतिक परिवर्तनकेँ विश्वसनीय बनबैत छथि।

दृश्य २८३ : जीवक अपनी सत्ता आ प्रतीकक मानवीय आरोपण

छोट बिज्जी आब पैघ भेल अछि। ओ सूखल बिल दिस घुरि ओकर निरीक्षण करैत, भीतर जाइत आ बाहर अबैत अछि। मृणालिनी ओकर पहिचान निश्चित नहि कहि सकैत छथि, किएक तँ पशुकेँ कखनो व्यक्ति-जकाँ नाम देल नहि गेल। ई अनिश्चय महत्त्वपूर्ण अछि। दीर्घ उपन्यास भरि बिज्जी रक्षकक रूपक बनल; मुदा एहि दृश्य मे कथाकार वस्तुगत जीव-जगतकेँ मनुष्यक अर्थ-आरोपणसँ कनेक मुक्त करैत छथि। बिज्जी पूर्ववत् वैह जीव अछि अथवा ओकर दोसर पीढ़ी, प्रमाण नहि। रक्षकक नैतिक प्रतिमा जीवक जैविक पहिचान प्रमाणित नहि करैत।

मृणालिनी ‘घर चुनलह?’ पुछैत छथि; बिज्जीक मौनक दू सम्भावना कहि तुरन्त पाठ मनुष्यक अर्थ-निर्माण आ पशुक जीवन-प्रक्रिया अलग करैत अछि। ई उपन्यासक आत्मपरक रूपक-समालोचना अछि। आलोचक लेल एतय अतिपाठक खतरा बचब आवश्यक: बिलमे प्रवेशकेँ जेल, अदालत अथवा भ्रष्टाचारक निश्चित एक-एक संकेत मानल जाए तँ वस्तुक स्वतन्त्र दृश्यात्मकता नष्ट होयत। लेखक पहराक अर्थ खोलैत-खोलैत ओकर पूर्ण बन्धन स्वीकार नहि करैत छथि।

बाढ़िक बाद सूखल बिलक छोट उल्लेखो महत्त्वपूर्ण अछि। प्राकृतिक परिवर्तने केवल प्रतीक नहि, जीवक रहनेबाक वास्तविक सम्भावना बदलैत अछि। एहि भौतिक संकेतक कारण दृश्य नितान्त आदर्शवादी रूपक बनबाक बदला प्रकृति आ गृहस्थीक सम्मिलित परिसर बनैत अछि।

दृश्य २८४ : ‘नायिका नहि’, ‘शहीद नहि’ — भावी उपन्यासक आत्मालोचना

ईशान जखन सभ घटनापर पोथी लिखबाक सम्भावना उठबैत अछि, मृणालिनी ओकरा दुइ प्रकारक महिमामण्डनसँ रोकैत छथि। ओ स्वयं कँ निर्भीक नायिका रूपमे प्रस्तुत नहि करय चाहैत छथि, किएक तँ अपन भय, रोदन, थाकल अवस्था आ छोड़ि देबाक इच्छा स्वीकार करैत छथि। सत्यप्रकाशकँ शहीद बनब सेहो हुनका स्वीकार नहि। ओ सत्यप्रकाशक जिद, घरक बात नहि सुनब आ व्यक्तिगत त्रुटिक उल्लेख करैत छथि। एहि तरह शोकसँ जन्मल स्मृतिलेखन त्रुटिरहित प्रतिमाक निर्माण नहि, अपूर्ण मनुष्यक न्यायसंगत चित्र होयबाक चाही।

कथामे एतय लिखबाक प्रक्रिया स्वयं कथ्य बनि जाइत अछि। ईशान सम्भावित लेखक, मृणालिनी सम्भावित स्रोत आ एक प्रकारक नैतिक सम्पादक बनैत छथि। हुनकर आग्रह एकरा निषिद्ध नहि करैत जे सत्यप्रकाश किछु अनुचित माँग अस्वीकार कयलनि; बल्कि सत्यक एहि अंशसँ सम्पूर्ण व्यक्तित्वक अखण्ड महिमा नहि बनयबाक चेतावनी दैत अछि। सामाजिक आन्दोलन अथवा अपराधक पीड़ित परिवार विषय लिखैत एकटा लोकप्रिय प्रवृत्ति पवित्र नायक आ शुद्ध खलनायक बनबैत अछि। ई संवाद ताहि प्रवृत्तिक प्रतिरोध अछि।

शिल्पगत रूपेँ लेखक हास्यकँ एहि गम्भीर संवादमे प्रवेश करबैत छथि। माए-पुत्र दुनू हँसैत छथि, मुदा हँसी सत्यक कठिनाई समाप्त नहि करैत। ‘स्मृति-शोधन’क सम्भावित खतरा स्पष्ट भेल अछि—प्रेमक नाम पर दोष मेटेनाइ सेहो अभिलेख-बिगाड़ होइत अछि। तथापि लेखक एतय नीतिक सार स्वयं कहि दैत छथि, जाहिसँ पाठकक स्वतन्त्र विवेचनक कनेक अवसर घटैत अछि। ई सीमा स्वीकार करितो दृश्यकँ समग्र उपन्यासक आत्म-प्रश्न करबाक क्षण मानब चाही।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

चारि दृश्य सार्वजनिक अभिलेख, नागरिक प्रमाण-संग्रह, पशुक वास्तविक जीवन आ भावी पोथी-लेखनक अलग-अलग सीमा बनबैत अछि। सत्यप्रकाशक नाम

सार्वजनिक छपैत अछि, मुदा निजी शोक सार्वजनिक संपत्ति नहि; ईशान सूचना देखैत अछि, मुदा स्वयं सरकारी अन्वेषक नहि; बिज्जी प्रतीक बनैत अछि, मुदा वस्तुतः नामहीन जीव अछि; स्मृति लिखल जाएत, मुदा ओ नायक-पूजाक प्रमाणपत्र नहि। एहि संयोजनसँ उपन्यास अपन ही पूर्व आख्यानक अतिसरलीकरण पर नियन्त्रण लगबैत अछि। ई आत्मानुशासन एकर विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धि अछि।

अध्ययन-इकाई ७२ — भयमुक्त पहरा आ जाँच-पद्धतिक पीढ़ीगत हस्तान्तरण (मूल दृश्य २८५–२८८)

दृश्य २८५ : देहरीक पहरा आ भयक अनुशासन

राति मृणालिनी आ ईशानक संवादमे झाड़ीक सामान्य आवाज पहिने अनिश्चित रहैत अछि। मृणालिनी कहैत छथि जे सभ आवाजकेँ साँप नहि बुझबाक चाही। ई बात केवल रक्षकक प्रतीक पर टिप्पणी नहि; सम्पूर्ण अपराध-अन्वेषणक मूल अनुशासनक घरेलू रूप अछि। पुरान जाँचमे एक जारल वाहनकेँ सत्यप्रकाशक ठोकर देनिहार ट्रक मानि लेबाक सम्भावना छल; एतय आवाजक मात्र आधारपर खतराक निश्चित नाम देनाइ समान अनुमान-दोष होइत। माँ अनिरुद्ध आ धनेश्वरीक पद्धतिसँ प्राप्त आलोचनात्मक विवेककेँ रात्रिक साधारण व्यवहारमे वापिस अनैत छथि।

किछु देर बाद बिज्जी सचमुच अबैत अछि, मुदा ओ देहरी पार नहि करैत। ईशान ओकरा ‘पहरा’ कहैत अछि; मृणालिनी आग्रह करैत छथि जे पहरा देबाक अर्थ निरन्तर डरमे जीब नहि। वस्तुतः सुरक्षा-संवेदना आ भय-शासनक बीच अन्तर एतय प्रमुख अछि। जँ सभ क्षणमे अदृश्य दुश्मन मानि लेल जाए तँ जीवन स्वयं कारागार बनि जाएत; जँ खतरा असम्भव मानि लेल जाए तँ सावधानी समाप्त होयत। ई उपन्यासक बरखो चलल तनावक अपेक्षाकृत संयत निष्कर्ष अछि।

तथापि रातिक जीवक क्रियाक मनोवैज्ञानिक अर्थ मनुष्य लग सँ आयल अछि; बिज्जीक वास्तविक आशयक ज्ञान पात्रसभकेँ नहि। एहि सीमाकेँ मानलासँ दृश्य प्रतीकक रूपमे अधिक प्रभावी होइत अछि, प्रमाणित पशु-व्यवहारक दार्शनिक दावा नहि बनैत।

दृश्य २८६ : प्रशिक्षणक पाँच शब्द आ असिद्धकेँ असिद्ध राखबाक साहस

रचना सिन्हा नव कार्यालयमे प्रशिक्षण-सत्रक बोर्ड पर देखल, सुनल, अनुमान, सिद्ध आ असिद्ध लिखैत छथि। ई पाँच श्रेणी केवल शब्द-सूची नहि; अनुसन्धानक कथन पर आत्म-नियन्त्रणक व्यावहारिक पद्धति अछि। देखल वस्तु प्रत्यक्षक विषय होयत; सुनल कथनक स्रोत जाँचब पड़त; अनुमानकेँ हेतुक समर्थन चाही; सिद्ध कहल निष्कर्षक प्रक्रिया स्पष्ट होयत; आ असिद्धकेँ प्रतिष्ठाक भय सँ सिद्ध घोषित करब अनुचित। न्यायिक प्रक्रिया आ तत्त्वमीमांसाक कोनो एक-एक शब्द-समता बनबैत नहि, मुदा ई क्रम ज्ञानक स्थिति पर लेखा राखबाक आवश्यकता दिखबैत अछि।

युवा अधिकारीक प्रश्न संस्थागत दबावकेँ सोझाँ अनैत अछि। लोक पुलिससँ शीघ्र निश्चित उत्तर चाहैत अछि; कखनो अधिकारीक प्रतिष्ठा सेहो स्पष्ट अपराधी-नाम कहबासँ जुड़ि जाइत अछि। रचनाक उत्तर ई नहि जे अनुसन्धान सदा असम्भव अछि; ओ कहैत छथि जे झूठ निश्चितता बनौलाक पछाति निष्पक्ष जाँचक प्रकृति नष्ट होइत अछि। एहि रूपमे संशय कमजोरी नहि, दायित्वपूर्ण निष्कर्षक पूर्वशर्त अछि।

शिल्पमे प्रशिक्षण-दृश्य लेखकक विचारक प्रत्यक्ष रूप अछि; पात्र संवादक माध्यम बनि जाइत छथि। एकर सीमा उपदेशात्मक संक्षिप्तता अछि। प्रशिक्षणार्थीक वास्तविक प्रकरण, जाँचक असफल अभिलेख वा विरोधी मतक विस्तृत परिस्थिति भेटितय तँ जटिलता आर बढ़ितय। तथापि बीस वर्ष पुरान अनिरुद्धक ‘प्रत्यक्ष अलग, अनुमान अलग’ शिक्षाक नव पीढ़ीमे सक्रिय प्रवाह रूपेँ दृश्य महत्त्वपूर्ण अछि।

दृश्य २८७ : मेटि गेल पदचिह्न आ प्रमाण न बनबाक स्वतन्त्रता

भोरमे मृणालिनी आँगनमे पैघ आ छोट पदचिह्न देखैत छथि। ओ किछु नापि रहल नहि, न फोटो लैत छथि; सामान्य बुहारिमे किछु निशान मेटि जाइत अछि। ई क्रिया पहिलक अपराध-जाँचक सन्दर्भमे आश्चर्यजनक लगि सकैत

अछि, किएक तँ पूरा उपन्यासक पद्धति प्रमाण बचेबाक आग्रही रहल अछि। मुदा एतय कोनो सन्दिग्ध अपराध-स्थल नहि, आँगनमे जीवक रोजमर्रा चलन अछि। जे सभ वस्तु आँखिक सोझाँ पड़य, सभकेँ कानूनी साक्ष्य बनबैत रहब जीवनकेँ अविराम अनुसन्धान बना देत।

मृणालिनीक बुहारब प्रमाणक अवहेलना नहि, साक्ष्यक प्रयोजनक भेद अछि। एतय जीवन-चिह्नक स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार कएल गेल अछि। दूर नदीक पानि, नब निविदा, बैंक, अदालत, मोबाइल-खेल, लोभ, प्रश्न आ प्रतिरोधक सम्भावना एक शृंखलामे अबैत अछि। ई शृंखला अपराध समाप्त भेलाक कोनो असम्भव घोषणा नहि, समाजक बहुविध निरन्तरता प्रकट करैत अछि। रक्षकक उपस्थिति सामान्य जीवनक एक घटक अछि, सम्पूर्ण जीवनक पर्याय नहि।

दृश्यक एक कलात्मक सीमा अछि—अन्तमे भविष्यक सम्भावनासभ बहुत संक्षिप्त वाक्यसूचीमे कहि देल गेल अछि। ठोस आँगन-बुहारिक प्रतिमा एहि सूचीसँ अधिक स्वतन्त्र अर्थ उपजाबैत अछि। तथापि ई दृश्य शीर्षक-प्रतीकक एक सम्भावित अन्त होइतहुँ कथाकेँ आगाँ खोलि दैत अछि।

दृश्य २८८ : समाचारक समय आ दण्डक निजी काल

समयक प्रवाहमे सार्वजनिक समाचारक प्राथमिकता बदलैत अछि। नव घोटाला, चुनाव, बाढ़ि आ खेल मंच पर अबैत अछि; पुरान मुकदमा न्यायालयक दैनिक सूचीमे एक प्रविष्टि बनि जाइत अछि। मुदा न्यायालयी आदेशसँ प्रभावित लोकसभक अनुभव अखबारक ‘पुरान समाचार’ श्रेणीमे नहि समेटाइत। प्रदीपक कारावास, मनोजक अपील, केशवक दस्तावेज, सौरभक प्रतिष्ठा, सबीनाक ग्राहकक भरोसा, अभिषेकक बैंक-प्रविष्टि, मृणालिनीक फोटो आ ईशानक शिक्षण —ई अलग-अलग समयरेखा अछि।

ई दृष्टि विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ आलोचनात्मक संवाद स्थापित करबाक अवसर दैत अछि। सार्वजनिक घटना-क्रमक एक कालक्रम लिखल जा

सकैत अछि, मुदा परिवार, न्यायालय, कारागार, बैंक आ समाचार-माध्यमक अभिलेखसभ समान समयमे समान अर्थ नहि दैत। घटना घटलाक वर्ष आ ओकर सामाजिक असर समाप्त भेलाक समय अलग भऽ सकैत अछि। लेखक समयकेँ एक मात्र मुकदमा-सूचीक नियन्त्रणसँ मुक्त करैत छथि।

दृश्य व्यक्ति-नामक लघु सूचीक सहारे व्याप्त सामाजिक मानचित्र रचैत अछि, मुदा कतिपय पात्रक अनुभव बहुत छोट सङ्केतमे रहि जाइत अछि। ई संक्षेप पाठककेँ पहिनेक विस्तृत कथाक स्मरण करबैत अछि; नव पाठक लेल स्वतंत्र भावनात्मक विस्तार कम उपलब्ध होयत। एहि सीमा सहित ई दृश्य निर्णय-पश्चात् उपन्यासक समय-संरचनाक महत्त्वपूर्ण व्याख्या अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

एहि चारि दृश्यमे पहराक अर्थ बदलैत अछि। ओ पहिने प्राण-रक्षा छल, फेर अपराध-जाँच, आब भयमुक्त नागरिक जीवन आ पद्धतिक प्रशिक्षणक रूप लैत अछि। रचना जे विषयमे प्रमाण चाहैत छथि, मृणालिनी जीवनक सभ चिह्नमे प्रमाण नहि ताकैत छथि; ई विरोधाभास नहि, प्रयोजनगत मर्यादा अछि। अनावश्यक संशय आ आवश्यक परीक्षणक अन्तर लेखक वस्तु आ कार्यक सहायता सँ स्थापित करैत छथि।

अध्ययन-इकाई ७३ — अपीलक आधा-सत्य, वित्तीय अपराधक देहधारी पीड़ा आ कारागारक प्रश्न (मूल दृश्य २८९–२९२)

दृश्य २८९ : दू अपील, दू निर्णय आ समाचारक अधूर व्याकरण

सौरभ आ केशवक अपील अलग-अलग सुनल गेल, ई आरम्भिक सूचना स्वयं साहित्यिक महत्त्व रखैत अछि। संगठित आर्थिक जालमे अनेक व्यक्ति एकठाम देखाइतो हुनकर दायित्व, ज्ञान आ कर्म एक नहि। सौरभक बचाव निवेशक-पक्षक जोखिम-पृथक्करण पर केन्द्रित अछि; अभियोजन एक वाक्यक बदला बैठक, वित्तीय पथ, आलोक भसीनक ई-पत्र आ ‘पुरान स्रोत’ सम्बन्धी निर्देशसभ मिलाकऽ ज्ञानक समर्थन प्रस्तुत करैत अछि। एहि संरचनामे अलग-अलग स्रोतक अभिसरणक महत्त्व अछि। एक प्रासंगिक ई-पत्र अपने अभियोगक सम्पूर्ण प्रमाण नहि; ओकर स्थान अन्य अभिलेख आ प्रसङ्गक संग जाँचब पड़त।

न्यायालय निचली आदेशक सभ निष्कर्ष यथावत् नहि रखैत: किछु आरोप हटैत, किछु कायम रहैत, दण्डक अवधि घटैत, मुदा प्रमुख वित्तीय सहायता सम्बन्धी दोष टिकल रहैत अछि। बाहर पत्रकारक दू शीर्षक—राहत भेटल आ दोष बरकरार—दुनू अधूर सत्य अछि। ‘राहत’ सुनिते पूर्ण निर्दोषता आ ‘दोष’ सुनिते सभ अपील असफल बुझब सरलीकरण होयत। अदालतक बहुआयामी आदेश समाचारक द्विपदी वाक्यमे समा नहि सकैत।

एहि दृश्य सँ सूचना-माध्यमक आलोचना निकलैत अछि: न्यायिक अर्थकेँ स्रोत-सन्दर्भसँ काटि शीर्षक बनाओल जाए तँ आधा-सत्य वस्तुत: भ्रमक साधन बनि सकैत अछि। दृश्य स्वयं आदेशक पूर्ण पाठ नहि दैत, तेँ आलोचक न्यायालयक अनुल्लिखित धारासभ कल्पना नहि करय। लेखक जे कहैत छथि, ओतबे पर निर्णय सीमित रहब चाही।

दृश्य २९० : केशवक अपील आ रकमक पाछाँ देखल मनुष्य

केशवक अपीलमे अदालत ‘अलग लेखा’क अस्तित्वकेँ स्वतः अपराध नहि मानैत अछि; मुदा चेतावनी रहलाक बाद संदिग्ध प्रवाहकेँ बेर-बेर मुख्य लेखासँ बाहर रखबाक ज्ञानसापेक्ष कार्यकेँ मात्र अनुपालन-असफलता कहि मुक्त नहि करैत। ई भेद आवश्यक अछि। कागजक असामान्य संरचना एक शुरुआती निरीक्षण होइत अछि; अपराधसिद्धिक लेल ओकर ज्ञान, पुनरावृत्ति आ सम्बन्धित प्रयोजनक समुचित परीक्षण चाही। लेखक न्यायिक निर्णयकेँ केवल नैतिक निरूपण नहि बनबैत छथि।

कारागारमे पुस्तकालय आ आर्थिक अपराधक मानवीय प्रभाव विषयक पुस्तिका कथाक गहिर मोड़ अछि। एतय केशवकेँ वास्तविक पीड़ितक प्रत्यक्ष सामना करा कऽ भावुक पश्चात्तापक सरल दृश्य नहि बनाओल गेल; अनाम कथासभ पढ़ाओल गेल अछि। नर्सिङ्गक छात्राक अटकल फीस, इलाजक रोकल पाइ, जुआ-ऋणसँ टूटल परिवार, वृद्ध पिता आ वैध व्यापारक अवरुद्ध रकम—ई सभ ‘चार लाख’, ‘अस्सी हजार’ वा ‘मासिक पाँच हजार’केँ पुनः सामाजिक परिमाण दैत अछि। आर्थिक अपराधक अमूर्त संख्या देह, समय आ अवसरक वास्तविक क्षतिमे रूपान्तरित होइत अछि।

केशवक नींद नहि अबनाइ पूर्ण सुधारक प्रमाण नहि। लेखकीय वाक्य अति शीघ्र पवित्रीकरण करबाक बदला प्रश्न उत्पन्न करैत अछि: ओ नव अनुभूति अगिला कार्यमे कतेक बदलाव अनत? दृश्य एही खुलल सम्भावना पर टिकैत अछि। तथापि अनाम पुस्तिकाक किछु कथा नैतिक दृष्टान्त-जकाँ अत्यन्त सुगठित अछि; ककरो पीड़ितक जटिल जीवन आरो बहुआयामी होइतय। तइयो रुपैयाक अमूर्ततासँ मनुष्यक विशेष पीड़ा धरि पहुँचनाइ एहि भागक विशेष कलात्मक उपलब्धि अछि।

दृश्य २९१ : वैधानिक पुनर्वास-सत्र आ आदतक निर्मिति

कारामे आयोजित सत्रमे पीड़ित प्रत्यक्ष उपस्थित नहि छथि। अनामकृत बयान पढ़ल जाइत अछि। ई दृश्य पीड़ितक निजी अनुभवक संरक्षण आ अपराधीक

उत्तरदायित्वपर विचारक बीच एक नियन्त्रित माध्यम उपलब्ध करबैत अछि। सभ बयान समान अवस्था नहि जनबैत: ककरो लग खाता देबाक परिणामक ज्ञान नहि छल; कियो किछु गलत बुझितो लाभ लेल चुप रहल। एहि भेदकेँ मिलाकऽ एकहि ‘निर्दोष पीड़ित’ अथवा ‘जागरूक दोषी’क श्रेणीमे राखब पाठमे जे जटिलता अछि, तकर विरुद्ध होयत।

केशव प्रदीपक पुरान वाक्य याद करैत अछि: पहिने नौकरी, फेर भय, फेर आदत। अपन जीवन लेल ओ भिन्न क्रम सोचैत अछि—वृद्धि, जोखिम, अलग लेखा, मौन, आदत। ई समानान्तर अपराधक विकासक सहज सूत्र नहि, आत्म-निरीक्षणक अलग इतिहास अछि। प्रदीप आ केशव दुनूक प्रेरणा आ दायित्व समान घोषित नहि कएल जा सकैत। तथापि ‘आदत’ शब्द एक महत्त्वपूर्ण नैतिक बिन्दु बनैत अछि: पहिल अपवाद पुनरावृत्तिसँ स्वीकृत कार्य-पद्धति बनि सकैत अछि।

नव्य न्यायसँ वैचारिक तुलना करैत प्रवृत्तिक क्रम आ ज्ञानक अवस्था पृथक करबाक लाभ अछि, मुदा एही साहित्यिक आत्मकथनसँ विधिक आशयक नव अन्तिम निष्कर्ष गढ़ब उचित नहि। अदालतक दोषसिद्धि अपन अभिलेख पर स्थापित अछि; कारागारक नव आत्मवर्णन पात्रक नैतिक परिवर्तनक आरम्भिक स्रोत अछि। उपन्यास एही दू समयक अन्तरकेँ प्रभावी बनबैत अछि।

दृश्य २९२ : सौरभ आ केशवक मौन, अपील-अधिकार आ कठिन आत्मप्रश्न

सौरभ उच्चतर अपीलक सम्भावना छोड़ैत नहि। ई तथ्यकेँ पश्चात्तापक अभाव अथवा कानून-विरोधी जिदक निश्चित प्रमाण बनाओल नहि जा सकैत; न्यायिक उपचार खोजब ओकर अधिकार अछि। मुदा लेखक ओकर स्वरमे पहिनेक अटल निश्चय कम भेलाक संकेत दैत छथि। कारा-पुस्तकालयमे सौरभ आ केशव अलग मेज पर बैसल छथि। दुनू पहिने निवेश, विस्तार आ जोखिमक साझा कारोबारी भाषा बोलैत छल; एखन संवाद छोट अछि, मौन पैघ।

‘अम्बर बचल’ पर ‘हम सभ की बचेलहुँ?’ प्रश्न व्यवसायिक अस्तित्व आ नैतिक क्षतिक दोसर-दोसर माप खोलैत अछि। कम्पनीक कुछ संरचना बचि रहलाक अर्थ व्यक्ति सभक भरोसा, परिवारक समय, प्रतिष्ठा, वैध बचत अथवा पीड़ितक अवसर लौटि आयब नहि। प्रश्नक ‘महँग’ उत्तर आर्थिक उपमाक आत्म-प्रतिवर्तन अछि: जे भाषा पहिने लाभ आ जोखिमक मात्रामे मनुष्यकेँ छिपौने छल, ओ भाषा आब जीवनक कठिन मूल्य स्वीकार करबाक लेल बाध्य अछि।

लेखक स्पष्ट करैत छथि जे अपराधी एकाएक संत नहि बनल। ई अस्वीकृति शिल्पक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। कारावासमे पुस्तक पढ़ल अथवा प्रश्न पूछलामात्रसँ पूर्व अन्याय समाप्त होइत नहि। एहि दृश्यकेँ नैतिक प्रक्रियाक सम्भावना मानब चाही, सम्पन्न मोक्षक प्रमाण नहि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य २८९–२९२मे न्यायालयक साक्ष्यगत निर्णयसँ कारागारक अन्तर्मुखी प्रक्रियाधरि गति बदलैत अछि। अपीलक आधा समाचार आ वित्तीय क्षतिक अज्ञात घरसभ, दुनू कथनक सीमा पर प्रश्न करैत अछि। केशव जखन रकमक पाछाँ घर देखैत अछि, आ सौरभ जखन बचल कम्पनीक बदला हेरायल मानवीय सम्बन्ध सोचैत अछि, उपन्यास अपराध-विवेचनकेँ नीतिवचनसँ बेसी अनुभवक धरातल पर अनैत अछि। लेकिन ई मनोवैज्ञानिक परिवर्तन भविष्यक कार्यसँ जाँचबाक शेष अछि, से बात आलोचना स्पष्ट रखैत अछि।

अध्ययन-इकाई ७४ — दण्डक बाद पुनर्वास, बेटीक न्यायबोध आ लेखकीय प्रमाणशास्त्र (मूल दृश्य २९३-२९६)

दृश्य २९३ : प्रदीपक रिहाइ आ कलङ्कक साथ श्रम

प्रदीपक कारावास पूरा होइत पत्नी आ तृषा फाटक लग उपस्थित छथि। पारिवारिक स्वागत प्रेमक पूर्ण वापसी नहि; मूल पाठ स्पष्ट करैत अछि जे घर पहिनेक घर नहि। ओकरा पुरान लेखा-व्यवसायमे नौकरी नहि भेटैत। गैर-लाभकारी संस्थामे सीमित अनुबन्ध प्राप्त करबाक पूर्व ओकर अपराधक इतिहास प्रकट करब आ दू सप्ताहक जाँच सहब पड़ैत अछि। ई विशेष विवरण पुनर्वासकेँ भावनात्मक क्षमा-मात्रसँ अलग प्रशासनिक आ श्रमिक प्रक्रिया बनबैत अछि।

पहिल प्रशिक्षणमे दुकानदारक ‘गलत हिसाबक विशेषज्ञ’ सम्बन्धी व्यङ्ग्य सार्वजनिक स्मृतिक कठोर उपस्थिति देखबैत अछि। प्रदीप अपन इतिहास छिपबैत नहि; गलत लेखाक सामाजिक दाम चिन्हबाक अनुभवक रूपमे ओकर उत्तर दैत अछि। ई आत्मस्वीकार ज्ञानक अधिकारक पूर्ण प्रमाण नहि—ओ शिक्षक रूपमे कतेक उपयोगी अछि, तकर परीक्षण ओकर वास्तविक प्रशिक्षण आ आचरणसँ होयत। मुदा लज्जाकेँ एकान्त कारावास न बनाकऽ, तकर संग उत्तरदायी श्रम करबाक सम्भावना दृश्य खोलैत अछि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक कतिपय प्रतिमानमे दण्डक बाद कथाक समाप्ति होइत अछि; एतय रोजगारमे कलङ्क, कार्यस्थलक अविश्वास आ अधूर पुनर्स्वीकृति नब कथा बनैत अछि। ई निर्णय उत्तरकथाक सामाजिक महत्त्व बढ़बैत अछि।

दृश्य २९४ : तृषाक ‘दोसर बेर’ प्रश्न आ आशयक नैतिक कालक्रम

कानून महाविद्यालयसँ पढ़ि घुरल तृषा पितासँ पूछैत छथि—अपराध कखन शुरू भेल? पहिल गलत हस्ताक्षर, ओकर गलत होयबाक ज्ञान, अथवा दोसर बेर जानि-बुझि कएल पुनरावृत्ति? प्रदीप अन्ततः दोसर बेर कहैत अछि। एहि

संवादमे विधिक ‘आपराधिक आशय’ आ आत्मनिरीक्षणक नैतिक अनुभूति अलग-अलग रहैत अछि। पात्रक ‘दोसर बेर’ उत्तर ओकर अपन दोषबोधक क्षण अछि; एकरे सभ प्रकरणमे विधिक अपराध आरम्भ होयबाक सार्वभौम नियम मानल नहि जा सकैत। कखनो प्रथम कृत्ये पर्याप्त ज्ञानपूर्वक होइत अछि, कखनो दोसर बेरहुँ परिस्थितिक विवरण आवश्यक होइत अछि।

तृषा नोट नहि लिखैत छथि; ओ ओहि समय विद्यार्थी नहि, बेटी छथि। ई सूक्ष्म क्रिया महत्त्वपूर्ण अछि। परिवारक निजी संवादकेँ तत्काल विश्वविद्यालयी साक्ष्य बनबैत नहि, आ ईशानक दृश्य २८१क सार्वजनिक-निजी सीमा एतय फेर प्रकट होइत अछि। तृषा अपराधक अनुभूतिकेँ ‘आदत आ आपराधिक आशय’ विषयक लेखमे बदलब चाहैत छथि, मुदा पिताक नाम बिना। निजी दुःख ज्ञानक विषय भऽ सकैत अछि, मुदा शिक्षात्मक लाभ स्वयं पीड़ित अथवा परिवारक भोगल क्षतिक क्षतिपूर्ति नहि।

एहि दृश्य मे कानूनक प्रारम्भिक बोध, स्मृतिक गोपनीयता आ सम्बन्धक लज्जा तीनू एक संग अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे प्रदीपक उत्तर बहुत सुगठित नैतिक उदाहरण बनि जाइत अछि; वास्तविक स्मृतिमे अपराधक एक निश्चित आरम्भ-बिन्दु चिन्हब कठिन भऽ सकैत अछि। तथापि लेखक एहि कठिनाईक प्रश्न स्वयं बेटीकेँ दैत छथि, जे स्वायत्त चिन्तकक रूपमे उभरैत छथि।

दृश्य २९५ : अनिरुद्धक कलम आ अपराधीकेँ ‘राक्षस’ नहि बनयबाक निर्देश

अनिरुद्ध चौधरीक पत्नी ईशानकेँ पुरान नीली स्याहीक कलम दैत छथि। ओ एहि लेल पहिनेसँ राखल वसीयती वस्तु नहि छल; पत्नी अपन निर्णयसँ ओकरा स्मारक बनबैत छथि। एहि विशिष्टताक मूल्य अछि—लेखक मृत अधिकारीक चारूकात पूर्वनिर्धारित भाग्यक कथा नहि बनबैत छथि। कलमक महँग मूल्य नहि, सत्यप्रकाशक फाइलमे ओहिसँ लिखल कथनक स्मृति महत्त्वपूर्ण अछि। राज्यक जाँच-पद्धति एक घरक निजी वस्तु भऽ पहुँचैत अछि, मुदा अधिकारिक फाइलक सम्पूर्ण स्वामित्व ईशानकेँ नहि दैत।

मृणालिनी फेर स्मृतिलिखनक चेतावनी दोहरबैत छथि: न ओ स्वयं नायिका, न सत्यप्रकाश शहीद। तखन तेसर शर्त जोड़ैत छथि—देवांशुकेँ राक्षस मात्र नहि बनाउ। ई वाक्य अपराधक क्षमादान नहि। ओ मानैत छथि जे देवांशु गलत काज केलक; मुदा कृत्य बुझबाक लेल व्यक्तिक मानवीय रूपक पूर्ण नाश उचित नहि। नायकक देवत्व आ अपराधीक अमानवीकरण दुनू इतिहासक द्विपक्षीय विकृति बनि सकैत अछि।

एहि संवादसँ पाठककेँ लेखकक अपन नैतिक दृष्टि स्पष्ट भऽ जाइत अछि। अपराधक कानूनी वर्गीकरण आवश्यक अछि; तथापि व्यक्ति केवल अपराध-लेबलमे समाप्त नहि। अनिरुद्धक कलम हाथमे रखल ईशान एहि जटिल लेखनक सम्भावित उत्तराधिकारी बनैत अछि। प्रतीकक सीमा याद रहबाक चाही: कलमक हस्तान्तरण सत्य-सिद्धिक गारण्टी नहि, ईमानदार पद्धतिक दायित्व अछि।

दृश्य २९६ : ईशानक पाँच पृष्ठ आ ‘कथा खाली ठाम भरि देत’ चेतावनी

ईशान तुरन्त उपन्यास नहि लिखैत अछि। पहिने पाँच पृष्ठ बनबैत अछि—प्रत्यक्ष, दस्तावेज, पारिवारिक स्मृति, अदालतक सिद्ध बात, सम्भावना आ रूपक। मूल पाठ पाँच पृष्ठ कहैत अछि, मुदा सूचीमे अर्थगत छह श्रेणी देखाइत अछि; एहि लेखकीय सङ्कोचनकेँ आलोचक स्वयं ठीक कऽ नव संख्या लागू नहि करय, बल्कि पाठक भीतरक लघु असङ्गतिक रूपमे चिन्हब उचित। सम्भव अछि एक पृष्ठमे निकट श्रेणीसभ राखल हो; से मूल पाठ स्पष्ट नहि करैत। एहि अनिश्चिततासँ मान्यता देब स्रोत-पठनक निष्ठा अछि।

पाँच पृष्ठक योजना स्वयं ‘बिज्जी’क कथन-विधि पर आलोचनात्मक प्रकाश दैत अछि। मूल उपन्यास घटना-वर्णनक संग जाँच-प्रतिवेदन, स्मृति, अनुमान, दार्शनिक संवाद आ जीव-जगतक प्रतीक मिलाबैत अछि। ईशान एखन एहि प्रकारक सामग्रीकेँ यथास्थान रखबाक विधि खोजैत अछि। मृणालिनी चेतबैत छथि जे कथा रिक्त स्थान भरि सकैत अछि। ई साहित्यिक स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध नहि, स्रोतक निश्चितता छद्म रूपेँ बढ़ा देबाक जोखिमक पहिचान

अछि। कथा पूर्ण तथ्य-पञ्जी नहि; तथापि कल्पनाकेँ प्रमाणित दस्तावेज घोषित कएल जाए तँ असत्य सम्भव।

एहि ठाम उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण आत्म-सन्देह व्यक्त करैत अछि: लेखकक रचनात्मक शक्ति ओही अभिलेखीय रिक्ति भरि देबाक लेल आकर्षित होइत अछि जकरा जाँचकर्ताक जिम्मेदारी सुरक्षित राखब अछि। ई तनाव उपन्यासक विशिष्ट रचनात्मक स्वरूपकेँ अर्थ दैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

चारि दृश्य दण्डभोगी, बेटी, जाँचक स्मृति आ सम्भावित लेखककेँ एकत्र करैत अछि। प्रदीपक वापसी अपराधकेँ नकारबाक अधिकार नहि दैत, तृषाक अध्ययन पिता केँ पूर्ण मुक्त नहि करैत, अनिरुद्धक कलम ईशानकेँ स्वत: विश्वसनीय लेखक नहि बनबैत, आ ईशानक पृष्ठ-विभाजन कथाक भावनात्मक सत्यकेँ स्वत: प्रमाणित नहि करैत। एहि शिल्पगत निषेधसँ दायित्वक एक परिपक्व अवधारणा निकलैत अछि: मनुष्यक असम्पूर्णता स्वीकारि कऽ स्रोत आ कृत्यक भेद सुरक्षित रखब।

अध्ययन-इकाई ७५ — गलत गिरफ्तारी रोकनाइ, आँकड़ाक अर्थ आ अनुभवसँ जन्मल पहरा (मूल दृश्य २९७–३००)

दृश्य २९७ : गिरफ्तारी रोकबाक निर्णय आ गलत सकारात्मक अनुमान

रचना सिन्हा नव जिलामे एक युवकक गिरफ्तारी रोकैत छथि। फोन युवकक नाम पर दर्ज, पैसा परिवारक संयुक्त खातामे पहुँचल; बाहरी मिलानसँ संदेहक दिशा बनैत अछि। मुदा फोन महीना पहिने चोरी भेलाक रिपोर्ट अछि, आ खाता युवकक एकल नियन्त्रणमे नहि। एहि तथ्यसभक कारण पहिल अनुमान अपर्याप्त रहैत अछि। रचना निगरानी जारी रखैत छथि, मुदा गिरफ्तारीकेँ प्रमाणक स्थानापन्न नहि बनबैत। दू दिनक बाद वास्तविक उपयोगकर्ता दोसर व्यक्ति निकलैत अछि।

ई दृश्य अनुसन्धानक सफलताको एक अलग माप दैत अछि: ककरो असमय पकड़बासँ बचेनाइ। अधिकांश अपराध-आख्यान गिरफ्तारीक नाटकीय प्रभाव पर केन्द्रित होइत अछि; एतय ओहि क्रियाकेँ रोकबाक जाँच-विवेक नायकत्वक वस्तु बनैत अछि। तथापि दू दिन पछाति सही व्यक्ति भेटलासँ रचनाक सभ भविष्यक निर्णय अचूक भऽ गेल नहि। स्वयं रचना कहैत छथि जे अगिला बेर ओ गलत भऽ सकैत छथि। निष्कर्ष पर नहि, परीक्षण-पद्धति पर भरोसा—ई उत्तर अनिरुद्धक आरम्भिक शिक्षाक व्यावहारिक उत्तराधिकार अछि।

नव्य न्याय आ तर्कशास्त्रक भेददर्शी दृष्टिसँ फोनक पंजीकृत स्वामी, वास्तविक उपयोगकर्ता, खाताक नामित धारक, लेनदेनक नियंत्रक आ आपराधिक प्रयोजनक ज्ञाता—ई पाँच सम्बन्ध एक विषय नहि। मुदा एही शास्त्रीय अनुरूपतासँ विधिक गिरफ्तारीक नियम सम्पूर्ण पुनर्लेखित नहि होइत; ई साहित्यिक विचारक सहायक विश्लेषण मात्र अछि।

दृश्य २९८ : शिकायत बढ़नाइ बनाम अपराध बढ़नाइ

बैंक-दिशानिर्देश लागू भेला पर गलत पूर्ण-रोकल खाता घटैत अछि, मुदा संदिग्ध भर्ती-शिकायत बढ़ैत अछि। अधिकारीक एक वर्ग बढ़ल शिकायतकेँ बढ़ल अपराध मानैत अछि; ईशान सावधान करैत अछि जे रिपोर्ट होयबाक दर आ वास्तविक अपराधक दर अलग माप अछि। पहिनेसँ चुप रहल लोक रिपोर्ट करय लगल तँ दर्ज शिकायत बढ़ि सकैत अछि, भले वास्तविक घटना-प्रवृत्ति एकहि रूपमे नहि बढ़ल हो। ई संख्याक अर्थ-सन्दर्भ सँ सम्बन्धित मूलभूत प्रश्न अछि।

ईशान सफलताक अनेक सूचक प्रस्ताव करैत अछि—पहिने चुप लोकक आवाज, वैध पाइ अटकलाक शीघ्र समीक्षा, आ जानि-बुझि खाता देनिहारक विशिष्ट प्रतिरूपक पहिचान। ई बहु-सूचक दृष्टि महत्त्वपूर्ण अछि; एक संख्यासँ प्रशासनिक सफलताक निर्णय नहि होइत। ‘आँकड़ा सेहो हेत्वाभास जन्मबैत’ विचार नव्य न्याय अथवा तर्कशास्त्रक तकनीकी निबन्ध नहि, संख्याक गलत कारणात्मक व्याख्याक साहित्यिक चेतावनी अछि।

दृश्य एतय पूर्ण सांख्यिकीय प्रतिवेदन प्रस्तुत नहि करैत, न अपराधक वास्तविक दरक संख्यात्मक परिणाम दैत अछि। तेँ समीक्षा वास्तविक गिरावट-बढ़ोतरीक परिमाण कल्पना नहि करत। साहित्यिक उपलब्धि एहि प्रश्नमे अछि जे परिणामक व्याख्या सामाजिक व्यवहार आ प्रशासनिक परिवर्तनक सन्दर्भमे होयबाक चाही।

दृश्य २९९ : शैलेशक शर्तसहित सेवा-वापसी आ पारिवारिक भरोसाक पुनःनिर्माण

शैलेश मंडलक विभागीय मामला समाप्त भेल, मुदा सेवा तुरन्त पूरा रूपेँ वापस नहि भेटैत। शर्तसहित वापसी, परामर्श, वित्तीय निगरानी आ अनुशासन—ई सभ पुनर्वासक संस्थागत सीमा अछि। आरती बच्चासभक कारण घर लौटैत छथि, मुदा ई वापसीकेँ क्षमा नहि, अवसर कहैत छथि। हुनकर एहि शब्दक अर्थ

भावनात्मक दूरीक रक्षा अछि। परिवारक संग रहबाक निर्णय अपराधक इतिहासक पूर्ण माफी नहि होइत।

पहिल वेतन पर शैलेश नगद निकालि गुप्त उपयोग करबाक बदला आरतीक संग बजट बनबैत अछि—ऋण चुकौती, घरक खर्च, छोट बचत। ई छोट कृत्य विश्वसनीयता पुनर्निर्माणक वास्तविक आधार अछि। मोबाइलसँ खेल हटाओल गेल अछि, मुदा लालसा फेर उठैत अछि। शैलेश समूह-सत्रमे स्वीकार करैत अछि जे लत समाप्त नहि भेल; ओकरा पहिचानब सीखल अछि। एतय लेखक नव जीवनक पूर्ण चमत्कारी उपचार नहि दिखबैत। व्यक्ति अपन जोखिमक सतत ज्ञानसँ सामान्य दिनचर्या बनबैत अछि।

शिल्पक दृष्टिसँ ई दृश्य नीतिवचनक बदला बजट-बही, वेतन आ परिवारक बातचीतमे जमैत अछि। पहराक बाहरी जीव-रूपक आब भीतरक आवेग पर लागू होइत अछि, मुदा लत आ नैतिक अपराधकेँ एकहि कारणक रूपमे गड्डमड्ड करब अनुचित। शैलेशक उपचार सम्बन्धी संकेत स्वयं पात्रक अनुभव अछि; सम्पूर्ण चिकित्सकीय निष्कर्ष नहि।

दृश्य ३०० : सबीनाक सिलाइ-दोकान आ अनुभवजन्य सार्वजनिक चेतावनी

सबीना खातूनक बेटी इलाज पूरा करैत हँसैत फोटो खिंचबैत अछि। फोटो सिलाइ-दोकानक देबाल पर लगैत अछि; पाछाँ मशीन अछि; नीचाँ छोट चेतावनी—अपन बैंक खाता ककरो किरायापर नहि दिअ। एहि तीन वस्तुक क्रम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। इलाज पूरा भेला सँ परिवारक निजी जीवनक एक संकटक राहत, सिलाइ-मशीन सँ रोजी-रोटीक श्रम, आ चेतावनी सँ अपन अनुभवकेँ दोसर लोकक सार्वजनिक सुरक्षामे बदलबाक प्रयत्न प्रकट होइत अछि।

ग्राहक पुछैत अछि जे एहन घटना सेहो होइत अछि; सबीना कहैत छथि—हमरा संग भेल। एतय सरकारी पोस्टर, पुलिसक भाषण अथवा अदालतक तकनीकी व्याख्या नहि। व्यक्तिगत कथनक प्रामाणिकता ओकर अनुभवक प्रमाण-सीमा धरि अछि। सबीना अपन संग घटल बात जनबैत छथि; एकर

आधार पर सभ खाताधारकक दोष-अदोष अथवा सारा देशक अपराध-दर तय नहि कएल जा सकैत। मुदा सामाजिक चेतना कतिपय बेर औपचारिक नीति सँ पहिने विश्वासयोग्य प्रत्यक्ष अनुभवक मार्फत फैलैत अछि।

पहिल भागमे सबीना लेल बैंक-खाताक अर्थ आर्थिक विपत्ति आ सम्भावित आपराधिक संदेह छल। आब ओही विषय पर ओकर स्वतंत्र चेतावनी अछि। एकर अर्थ पीड़ा सफलतापूर्वक मिटि गेल नहि; बल्कि ओ पीड़ा उपेक्षित निजी दुर्घटनाक रूपमे बन्द नहि रहल। स्त्री अपन अनुभवक सार्वजनिक भाषा स्वयं गढ़ैत छथि। एहि दृश्यसँ उपन्यासक परिपक्व मानवीय आशा प्रकट होइत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

रचनाक जाँच, ईशानक आँकड़ा, शैलेशक बजट आ सबीनाक चेतावनी चारि अलग संस्थागत स्तरक पहरा अछि। पहिला निर्दोषक गलत गिरफ्तारी रोकैत, दोसर नीतिक अधूर परिणामक व्याख्या सुधारैत, तेसर अपन रोजमर्रा व्यवहारकेँ नियन्त्रित करैत, चौठम अनुभूतिकेँ लोक-सूचनामे बदलबैत अछि। एहि रूपमे ‘पहरा’ शब्द पुलिसक बलाधिकारसँ बहुगुणा व्यापक बनैत अछि। मुख्य कलात्मक उपलब्धि ई अछि जे सुधार बड़ घोषणा नहि, छोटे-छोटे जिम्मेवार व्यवहारमे देखाओल गेल अछि। सीमा ई जे बीस छोट दृश्य तुरन्त नैतिक सूत्र कहि दैत अछि; किछु निर्णायक संघर्षक दीर्घ नाटकीय अवधि संक्षिप्त रहल अछि।

पन्द्रहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मूल दृश्य २८१–३०० : अभिलेखक सीमा, न्यायोत्तर समय आ पहराक सामाजिक व्याकरण

कथात्मक गति : दण्ड-निर्णयसँ इतिहास-लेखन आ पुनर्वास धरि

दृश्य २४१–२६०मे मुख्य न्यायिक निर्णय, व्यक्तिगत गवाही आ भावनात्मक प्रतीक्षाक अन्त विकसित भेल; दृश्य २६१–२८०मे पद्धतिक उत्तराधिकार आ सामाजिक पुनर्स्थापनक आरम्भ भेल। दृश्य २८१–३०० एहि उत्तरकथाक तेसर चरण अछि। एतय उपन्यास अदालतक बाहर नब संस्थागत जीवनकेँ पकड़ैत अछि—सार्वजनिक शोध, निविदा-पट्ट, प्रशिक्षण, अपील, कारा-पुस्तकालय, कानून महाविद्यालय, रोजगार, बैंक-दिशानिर्देश आ सिलाइ-दोकान। एके केन्द्रीय अपराध-कथाक अलग-अलग सामाजिक प्रतिध्वनि एतय देखाइत अछि। एहि संरचनाक लाभ न्यायिक निर्णयकेँ आख्यानक कृत्रिम पूर्णविराम नहि बनेनाइ अछि।

तथापि ई सभ घटना एकरूप नवउपसंहारक गति सेहो अनैत अछि। अनेक दृश्य पाँच-सात लघु संवाद आ छोट नैतिक निष्कर्षसँ समाप्त होइत अछि। लेखकक सूत्रात्मक भाषा वैचारिक निरन्तरता दैत अछि, मुदा जीवनक अव्यवस्थित समय, विफलता, एकरस श्रम आ दुर्बोध निर्णयक जटिलताकेँ शीघ्र अर्थ देबाक जोखिम राखैत अछि। एहि सीमा केँ चिन्हनाइ कृतिक उपलब्धिक विरोध नहि; ओकर कलात्मक संरचनाक यथार्थ मूल्याङ्कन अछि।

भारतीय प्रमाण-विवेचन : प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान आ प्रयोजनक अनुशासन

दृश्य २८६क पाँच ज्ञानगत शब्द आ दृश्य २९६क अभिलेख-विभाजन भारतीय प्रमाण-विचारसँ तुलनात्मक चर्चा सम्भव करैत अछि। रचनाक बोर्ड पर देखल, सुनल, अनुमान, सिद्ध आ असिद्ध अलग श्रेणी अछि। ईशान फेर प्रत्यक्ष स्रोत, दस्तावेज, परिवारक स्मृति, न्यायालयी निष्कर्ष, सम्भावना आ रूपकमे भेद करय चाहैत अछि। प्रत्यक्ष कथनक विषय, प्राप्त शब्दक विश्वसनीयता, अनुमानक

आधार आ अन्तिम निर्णयक अवस्था एक नहि। प्रत्येक स्रोतक समुचित प्रयोजन आ सीमा अछि।

मुदा प्राचीन भारतीय दर्शनक प्रमाण-श्रेणी आ आधुनिक न्यायालयक साक्ष्य-नियम एकहि सूत्रक शाब्दिक पर्याय नहि। एहि अध्ययनक उद्देश्य दार्शनिक अवधारणाकेँ आधुनिक मुकदमाक धारा बना देब नहि, जाँचक बौद्धिक नैतिकता स्पष्ट करब अछि। दृश्य २८७मे जीवनक सामान्य पदचिह्न मेटि जाएब सेहो बतबैत अछि जे सभ प्रत्यक्ष अनुभवकेँ अभिलेख बनाओल आवश्यक नहि; साक्ष्य-संग्रहक कारण, प्रयोजन आ सामाजिक अधिकार सेहो जाँचबाक अछि।

नव्य न्याय : व्यक्तिक भूमिका आ निर्णयक अवच्छेदक भेद

दृश्य २८९मे सौरभ आ केशवक अलग अपील, दृश्य २९७मे फोनक स्वामी आ वास्तविक उपयोगकर्ता, आ दृश्य २९८मे दर्ज शिकायत तथा वास्तविक अपराध-दर—ई सभ भिन्न विषयकेँ एक नामक भीतर दबा देबाक खतरा देखबैत अछि। नव्य न्यायक विश्लेषणात्मक अभ्याससँ प्रेरित भेददृष्टि ककरा, कोन सम्बन्धमे, कोन कालमे, कोन शर्तपर उत्तरदायी कहल जा रहल अछि—ई प्रश्नकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि। फोन नामपर होयब, फोन उपयोग करब, लेनदेनक नियन्त्रण रखब आ अवैध प्रयोजनक ज्ञान रखब अलग सम्बन्ध अछि। ओहि तरह अदालतक किछु आरोप हटेनाइ आ मुख्य दोष बरकरार रहनाइ एक-दोसराक विरोधाभास नहि।

तथापि ई दार्शनिक समानान्तर कानूनी दोष-सिद्धिक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। न्यायालयी निष्कर्ष मूल कथामे जे रूपेँ उपलब्ध अछि, तकरो सीमा मानब पड़त। नव्य न्यायक शब्दावलीक उद्देश्य पाठकेँ अधिक स्पष्ट करब अछि, पाठमे अनुपस्थित आधिकारिक निर्णय कल्पना नहि।

पाश्चात्य अपराध-कथा आ उत्तरकथाक पुनरावर्तन

परम्परागत रहस्योद्घाटनक किछु संरचनामे अपराधी चिन्हलाक पछाति कथा लगभग समाप्त भऽ जाइत अछि। ‘बिज्जी’क एहि हिस्सामे अलग कलात्मक

निर्णय अछि: दोषी पात्रक कारावास, अपीलक आंशिक फेरबदल, प्रतिष्ठाक हानि, समाजक संशय आ पीड़ितक पुनर्स्थापन पर कथाकार पर्याप्त समय दैत छथि। प्रदीपक नौकरी-खोज, केशवक कारा-पुस्तिका, सौरभक प्रश्न, तृषाक अध्ययन, शैलेशक शर्तसहित सेवा-वापसी आ सबीनाक दुकान एहि विस्तारकेँ मूर्त बनबैत अछि।

ई नव-उत्तरकथा अपराधकेँ अवसानी मनोरञ्जन नहि बनबैत। मुदा बेर-बेर नैतिक निष्कर्षक स्पष्ट घोषणा एकर सौन्दर्यशास्त्रीय सीमा अछि। कथित परिवर्तनक वास्तविक आचरणक परीक्षा पाठक जतेक देखैत अछि, ओतबा तर्कपूर्ण आत्मकथनसँ बेसी प्रभावशाली होइत अछि। प्रदीपक अस्थायी नियुक्ति आ शैलेशक बजट एही कारण कारागारक सामान्य पश्चात्ताप-भाषणसँ अधिक विश्वसनीय अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : पाँच पञ्जीक परस्पर असमान काल

एहि बीस दृश्यक अध्ययन पाँच अलग स्रोत-रेखा चिन्हबैत अछि। पहिल, उदयरेखा–उत्तरायणक सार्वजनिक अभिलेख आ शोधार्थीक ई-पत्र। दोसर, न्यायालयी अपील-आदेश आ कारा-पुनर्वासक संस्थागत समय। तेसर, परिवारक कलम, फोटो, घरेलू संवाद आ निजी स्मृति। चौठम, बैंकक प्रतिवेदन, शिकायत आ वित्तीय व्यवहारक आर्थिक पञ्जी। पाँचम, नागरिक निविदा-पट्ट, प्रशिक्षणक बोर्ड आ सबीनाक छोट चेतावनीक लोक-ज्ञान। ई पाँचू समान युगक अंश अछि, मुदा एकहि सत्यक समान प्रतिलिपि नहि।

सत्यप्रकाशक नाम सार्वजनिक अभिलेखमे स्थिर होइत अछि, मुदा पत्नी आ पुत्रक अनुभव अलग रूपमे जीवित अछि। अदालतक दोषनिर्णय दस्तावेज बनैत अछि, मुदा प्रदीपक रिहाइ आ रोजगारक प्रत्यक्ष सामाजिक समय ओकर बाद आरम्भ होइत अछि। बैंकमे बढ़ल शिकायत नीतिक विफलता प्रमाणित करय, ई निश्चित नहि; नागरिकक बढ़ल बोलबाक क्षमता सेहो सम्भव कारण

अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे इतिहासक अनेक स्रोत एक-दोसरकेँ प्रश्न करैत अछि; कोनो एक स्रोत सभ जीवनक पूरा अर्थ नहि कहि सकैत।

स्त्री-पात्रक स्वायत्त व्याख्या : मृणालिनी, तृषा, आरती, सबीना आ रचना

मृणालिनी कथाक भविष्यमे अपन नायकत्व बनबाक अनुमति नहि दैत छथि। तृषा पिता सँ अपराधक आरम्भ-क्षण पुछैत छथि, मुदा निजी संवाद तत्काल अध्ययनक नोट नहि बनबैत। आरती सेवामे वापसीक अवसरकेँ क्षमादान नहि कहैत छथि। सबीना अपन अनुभवक सार्वजनिक चेतावनी स्वयं लिखैत छथि। रचना गलत गिरफ्तारी रोकबाक जोखिम लैत छथि। एहि पाँचू क्रियामे स्त्री केवल पीड़ित अथवा नायकक सहायक नहि; कथनक सीमा, सम्बन्धक नियम आ सार्वजनिक व्यवहार निर्धारित करनिहार स्वतंत्र व्यक्ति छथि।

तथापि समीक्षाकेँ ईहो मानब पड़त जे किछु स्त्री-पात्रक संकट छोट नीतिवाक्यक अन्तमे समाप्त होयबाक भास दैत अछि। आरतीक दीर्घ अविश्वास, सबीनाक ग्राहकक भरोसा पुनः जीतबाक श्रम आ मृणालिनीक शोकक अनेक तह आर विस्तृत चित्रणक सम्भावना रखैत छल। तथापि ठोस घरेलू क्रिया—फोटो टाँगब, बजट बनब, पन्ना नहि लिखब आ कलम देब—हुनक स्वायत्तता केवला आदर्शरूपमे नहि रहय दैत।

शीर्षक-प्रतीकक पुनरावलोकन आ साहित्यिक लेखनक अधिकार

दृश्य २८३ मे बिज्जीकेँ जीवक स्वतंत्र अस्तित्व देल गेल अछि; दृश्य २८५ मे पहरा आ भयक भेद; दृश्य २८७ मे प्रत्येक पदचिह्न केँ प्रमाण बनब आवश्यक नहि; दृश्य २९९ मे भीतरक जोखिम पहिचान; दृश्य ३०० मे सबीनाक अनुभव लोकक चेतावनी बनैत अछि। एहि समग्र क्रममे बिज्जी ककरो सर्वशक्तिमान रक्षकक उपाधि नहि, सावधान व्यवहारक बदलैत अभ्यासक रूपमे पढ़ल जाइत अछि। प्राकृतिक जीवक रूपकेँ आपराधिक व्यक्तिक स्थिर जैविक पहिचान बना देब भ्रम होयत; ओकर सौन्दर्य सतर्कता, दूरी आ जोखिम-बोधक अनुभवमे अछि।

ईशानक भावी पोथीक प्रश्न एहि सम्पूर्ण व्याख्याकेँ एक स्तर आर दैत अछि। जखन कियो कथा लिखत, ओ सार्वजनिक दस्तावेज, पारिवारिक स्मृति, न्यायालयक सिद्ध तथ्य, सम्भावना आ रूपकमे भेद कोना राखत? मूल उपन्यास एही प्रश्नक उत्तर पूर्णतया नहि दैत; ओ प्रश्नक रचनात्मक जोखिम देखाबैत अछि। एहि आत्मसमीक्षात्मक क्षणमे ‘बिज्जी’क कथाकार अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन पाठक आ आलोचक दुनूकेँ अभिलेखक सीमाक प्रति उत्तरदायी बनबैत छथि।

पन्द्रहम बैचक समेकित निष्कर्ष आ समीक्षा-सीमा

दृश्य २८१–३००क मुख्य उपलब्धि अछि न्यायिक कार्यवाहीक पछाति सार्वजनिक ज्ञान, निजी दुःख, पुनर्वास आ नागरिक सतर्कताक असमान समयसभकेँ एक उपन्यासमे साथ रखब। सौरभक अपीलमे आंशिक बदलाव, केशवक प्रश्न, प्रदीपक अस्थायी रोजगार, ईशानक अनलिखल पोथी आ सबीनाक सरल चेतावनी—ई सभ अपन-अपन सीमा सहित समर्थित दृश्य अछि। एहि आधार पर समग्र कृतिक अन्तिम निर्णय एखन देब उचित नहि, किएक तँ मूल पाठमे दृश्य ३०१ सँ आगाँ आरो ११८ दृश्य शेष अछि। अगिला पाठ-परीक्षण दृश्य ३०१–३२० सँ जारी रहत।

अध्ययन-इकाई ७६ — अपराधक अनुभवसँ सार्वजनिक चेतावनी धरि : प्रतिपूर्ति, शिक्षण आ साक्षात्कार (मूल दृश्य ३०१–३०४)

दृश्य ३०१ : अभिषेकक सार्वजनिक स्वीकार आ नागरिक शिक्षाक विश्वसनीयता

बैंकक स्थानीय जागरूकता-शिविरमे अभिषेक स्वयंसेवकक रूपमे ठाढ़ होइत अछि। ओकर पहिल वाक्य ओकर अधिकारक सीमा घोषित करैत अछि—ओ ने पुलिस अधिकारी अछि, ने बैंकक पदाधिकारी; ओ अपन पूर्व गलती स्वीकार करनिहार व्यक्ति अछि। एहि आत्मपरिचयक शिल्पगत महत्त्व अछि। उपन्यासक आरम्भक वित्तीय जालमे परिचय बहुधा गुप्त अथवा भ्रामक छल; वित्तीय लाभक आश्वासन देनिहार लोक अपन वास्तविक उद्देश्य छिपबैत छल। एतय मंचसँ बोलनिहार अपन त्रुटिक परिचय नहि नुकबैत अछि। मुदा आत्मस्वीकार अपने ओकर सभ पूर्व कथनक सत्यता प्रमाणित नहि करैत; ई मात्र श्रोतासभकेँ बुझबैत अछि जे ओ कोन अनुभवसँ बजैत अछि।

अभिषेकक चेतावनीक मूल लक्ष्य ‘खाता दिअ, मासिक पाइ भेटत’ सन प्रलोभन अछि। ओ बैंकसँ पुछबाक, कागज माँगबाक आ प्रश्न उठेबाक बात कहैत अछि। स्रोत स्पष्ट उल्लेख करैत अछि जे ओ परिचालनक किछुओ नहि बतबैत अछि। एहि चयनसँ लेखक अपराधक प्रविधिक विवरणक बदला जोखिम पहिचानबाक नागरिक क्षमता पर ध्यान रखैत छथि। भयक प्रचार मात्र कएल जाइत तँ आर्थिक विवशतामे पड़ल श्रोता ओकरा दूरक उपदेश बुझितथि; अपन चूकक स्वीकार चेतावनीकेँ मानवीय बनबैत अछि। तथापि मंचीय वक्तव्य सुनि श्रोता व्यवहार बदललनि कि नहि, तकर प्रमाण एहि दृश्यमे नहि। जागरूकता-शिविरक प्रभावकेँ सिद्ध सामाजिक परिवर्तन कहब जल्दबाजी होयत।

मंजरीक पाछाँ बैसल रहब एहि लघु दृश्यक मार्मिक केन्द्र अछि। भाई सार्वजनिक रूपसँ बजि सकैत अछि, मुदा बहिनक छूटल प्रवेशक एक वर्ष तत्काल घुरि नहि अबैत। लेखक क्षतिक अपरिवर्तनीय अंशकेँ मानि कऽ अभिषेकक उपयोगी परिवर्तन देखबैत छथि। ई मेल सरल प्रायश्चित्तक कथा नहि: पूर्व हानिक गणना आ भविष्यक सावधानी एकहि खातामे शून्य नहि भऽ

सकैत। अभिषेकक काँपैत हाथ, चुप श्रोता आ मंजरीक मौनक कारण उपदेश केवल सूत्र नहि रहैत, श्रमपूर्वक प्राप्त नैतिक आवाज बनैत अछि।

दृश्य ३०२ : उत्तरायणक पुनर्गठन आ संस्था द्वारा अतीतक भार स्वीकार करब

उत्तरायण निधिक संचालक-मण्डलसँ सौरभक नाम हटैत अछि। नव अध्यक्षक ‘संस्था व्यक्ति सँ पैघ’ कथन पढ़िते रचना सिन्हा पुरान ‘व्यवस्था व्यक्ति सँ पैघ’ तर्क स्मरण करैत छथि। ई समान वाक्य-दुनूक आलोचना नितान्त आवश्यक अछि। शब्दक व्याकरण बदलल नहि; ओकर प्रयोजन बदलल अछि कि नहि, ओ सार्वजनिक कर्मसँ बुझल जाएत। पहिने संस्थागत निरन्तरताक नाम पर व्यक्तिक उत्तरदायित्व अस्पष्ट कएल जा सकैत छल; एखन नब मण्डल यदि पुरान पीड़ितक प्रति दायित्व मानय तँ वैह वाक्य सुधारक आधार बनि सकैत अछि। मात्र नाम बदलि लेलासँ अतीतक दायित्व समाप्त भेल, ई मान्यता लेखक स्वीकार नहि करैत छथि।

नब बोर्डक पीड़ित-सहायता कोषमे राशि देब दू प्रकारक अछि—किछु विधिक बाध्यता आ किछु स्वैच्छिक। ई द्विभाजन समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि। जँ सब किछु ‘दान’ कहल जाए तँ पीड़ितक अधिकार निजी उदारताक दया बनि जाएत; जँ सभ भुगतानकेँ मात्र दण्ड मानि लेल जाए तँ संस्थागत नैतिक पहलक सम्भावना अनदेखल रहत। पाठ ई भेद स्पष्ट राखैत अछि, मुदा रकमक गणना, लाभार्थीक सूची वा पूर्ण पुनर्वासक परिणाम नहि दैत। तँ समीक्षक प्रतिपूर्ति पूर्ण भेल कहि नहि सकैत।

मृणालिनीक प्राप्त पत्रमे ‘विशेष प्रतिपूर्ति’ अछि। हुनकर प्रश्न—ककर बदला?—पाइक व्यवहारिक भूमिका आ मृत व्यक्तिक अपूरणीय अनुपस्थितिक बीच सीमा खींचैत अछि। ओ विधिसम्मत अधिकार लेब स्वीकार करैत छथि, मुदा ओकरा सत्यप्रकाशक जीवनक मूल्य अथवा अपना दिससँ क्षमा नहि मानैत छथि। एहि उत्तरमे पीड़ितक स्वायत्तता सुरक्षित अछि: अधिकार उपयोग करब आ अपराधक नैतिक अर्थ निर्धारित करब अलग निर्णय अछि। लेखक जीवनक

असमान अर्थ-प्रणाली सामने अनैत छथि—कागजमे प्रतिपूर्ति निर्धारित भऽ सकैत अछि, गृहस्थीमे अनुपस्थित व्यक्तिक मूल्य नापल नहि जा सकैत।

दृश्य ३०३ : धनेश्वरीक नामपर पुस्तक-कोष आ स्मृतिक अवैयक्तिक उपयोग

मृणालिनी प्राप्त रकमक एक अंश धनेश्वरीक नामपर गामक विद्यालयमे पुस्तक-कोष लेल दैत छथि। ई निर्णय प्रतिपूर्तिक दोसर जीवन अछि। मुद्रित प्रतिकरक रकम उपयोगी सामग्रीमे बदलैत अछि, मुदा दानक माध्यम चुनब सामाजिक अर्थनिर्माणक स्वतंत्र क्रिया अछि। ईशान सत्यप्रकाशक नामक प्रश्न उठबैत अछि; मृणालिनी धनेश्वरीकेँ स्मरण करैत छथि, कारण दादी ‘पहरा’ सिखौने छलीह। पूर्व उपन्यासक आरम्भमे बच्चाक जीवन बचेनिहार बिज्जी देखबैत धनेश्वरी सजगताक शिक्षा देने छलीह; अन्तक उत्तरकथामे एहि शिक्षाक भौतिक स्वरूप पोथी अछि। प्रतीक एतय जीवक निशानसँ पुस्तकक पन्ना धरि बढ़ैत अछि।

प्रधानाध्यापक सार्वजनिक पट्ट बनबय चाहैत छथि, मुदा मृणालिनी पुस्तक किनबाक आग्रह करैत छथि आ नाम पुस्तकक भीतरक छोट मुहरमे सीमित रखैत छथि। एतय स्मारक-संस्कृति आ उपयोगी शिक्षाक बीच भेद अछि। फोटो, भाषण आ माला नहि; पुस्तकक पहुँच महत्त्वपूर्ण। दानक दृश्य-अदृश्यता एक नैतिक प्रश्न सेहो उठबैत अछि: दाताक नाम कतेक पैघ हो? लेखकीय दृष्टि कहैत अछि जे शिक्षा स्वयं लक्ष्य हो, प्रतिष्ठाक प्रदर्शन नहि। मुदा विद्यालयक पुस्तक-कोष दीर्घकाल सुरक्षित रहल कि नहि, पाठ नहि कहैत। ई संक्षिप्त दृश्य संस्थागत परिणामक समग्र सर्वेक्षण नहि, प्राथमिक मूल्य-निर्णयक कलात्मक दृश्य अछि।

धनेश्वरीक स्मृति मात्र भावुक आदर नहि। हुनकर ‘पहरा’क शिक्षा नव पाठकसभकेँ उपलब्ध पुस्तकक सम्भावनासँ जुड़ैत अछि। एहि प्रसङ्गमे पीढ़ीक उत्तराधिकार रक्त अथवा उपनाम नहि, ज्ञान साझा करबाक कर्म अछि। जँ पैसा अपराधक इतिहाससँ निकलल प्रतिपूर्तिक अंश अछि, तँ ओकर नव उपयोग

अतीतक अपराध मेटब नहि; भविष्यक अभ्यासमे सीमित सकारात्मक हस्तक्षेप अछि। उपन्यासक सामाजिक दृष्टि एही मितव्ययी परिवर्तनमे रहैत अछि।

दृश्य ३०४ : वैदेही झाक प्रवेश आ त्रासदीक दीर्घ समय

ईशानक प्रशिक्षणक पूर्व छात्रा वैदेही झा आर्थिक अपराधक सामाजिक जोखिम विषय शोध करैत गढ़ नारिकेल अबैत छथि। ओ साक्षात्कारक अनुमति माँगैत छथि; मृणालिनी पहिने पुछैत छथि—की जानब चाहैत छी? ई आरम्भे स्रोत आ शोधार्थीक अधिकार-सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। शोकग्रस्त परिवारक अनुभव पर शोध करबाक इच्छा स्वयं साक्षात्कार लेल असीम अधिकार नहि दैत। वैदेही अनुमति स्वीकार करैत छथि; मृणालिनीक अपन चित्रण पर शर्त—‘वीरांगना नहि लिखब’—कथाक पहिनुक स्मृति-आत्मालोचनाकेँ नव अकादमिक प्रसङ्गमे लौटबैत अछि।

‘सभसँ कठिन दिन’क प्रश्न पर ‘कोन उम्रक?’ उत्तर दृश्यकेँ अकस्मात् गहिरा बना दैत अछि। शोध-पद्धति एक निर्णायक दिन चिन्हि अनुभव संग्रह करय चाहैत अछि; मृणालिनी दीर्घ जीवनक बदलैत दुःख देखबैत छथि। दुर्घटनाक दिन, अनिर्णीत जाँचक वर्ष, अदालतक आदेश आ वृद्धावस्थाक स्मृति एकहि ‘सबसे कठिन दिन’मे समेटल नहि जा सकैत। ई प्रश्नोत्तर उपन्यासक समय-विन्यासक आलोचना सेहो अछि—नाटकीय घटनाक दिन आ त्रासदी जिबैत रहबाक अवधि अलग-अलग अछि। वैदेहीक मौन एतय विफलता नहि; पूर्वनिर्धारित शोध-श्रेणी पर पुनर्विचार करबाक आरम्भ अछि।

स्रोतक सावधानी एहि दृश्यपर लागू होयबाक चाही: वैदेहीक शोधक निष्कर्ष, नैतिक समीक्षा अथवा प्रतिलेखनक विस्तृत विधि एखन नहि देल गेल अछि। समीक्षक केवल एतेक कहि सकैत अछि जे मुलाकातमे अनुमति आ आत्मप्रतिनिधित्वक सीमा स्पष्ट होइत अछि। ईशानक ओसारासँ हँसब तनाव हलुक करैत अछि, मुदा मृणालिनीक आग्रहकेँ परिहास नहि बनबैत। स्रोत व्यक्तिक अधिकारक रक्षा आ शोधक आवश्यकता, दुनूकेँ स्थान दैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३०१–३०४मे अपराध-इतिहासक तीन पश्चात्जीवन अछि—जिनकर गलती छल, ओ सार्वजनिक चेतावनी दैत अछि; जे संस्था प्रभावित छल, ओ प्रतिपूर्तिक दायित्व मानैत अछि; जिनकर घर पर क्षति भेल, ओ स्मृति आ अध्ययनक सीमा अपने निर्धारित करैत छथि। अभिषेकक स्वीकार मंजरीक छूटल समय नहि घुरबैत; उत्तरायणक रकम सत्यप्रकाशकेँ नहि घुरा सकैत; पुस्तक-कोष संस्थागत भ्रष्टाचारक सम्पूर्ण प्रतिकार नहि; वैदेहीक शोध परिवारक अनुभवक सम्पूर्ण विकल्प नहि। एहि अपूर्णताकेँ स्वीकार कऽ लेखक सुधारक सम्भावना देखबैत छथि। शिल्पगत सीमा सेहो अछि: किछु दृश्यक अन्तमे अर्थ स्पष्ट नीतिवाक्यरूपेँ कहल जाइत अछि; मुदा मंच पर काँपैत हाथ, पुस्तकक भीतरक मुहर आ ‘कोन उम्रक?’ जकाँ ठोस सूक्ष्मता स्वतंत्र साहित्यिक असर उत्पन्न करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ७७ — बिज्जी-रूपकक सीमा आ ईशानक लेखकीय आरम्भ (मूल दृश्य ३०५–३०८)

दृश्य ३०५ : नदीक कादोमे निशान आ फोटो नहि लेबाक निर्णय

वैदेही आ ईशान कमला-बलानक किनार पर गोहिक निशान देखैत छथि। वैदेही एहि दृश्यसँ शोध अथवा लेखनक शीर्षक बनबाक सम्भावना कहैत छथि; ईशान ‘रूपक प्रमाण नहि’ स्मरण करबैत अछि। ई छोट संवाद उपन्यासक शीर्षकक अपन आलोचना अछि। गोहिक निशान भयावह सामाजिक शक्तिक प्रतीक बनि सकैत अछि, मुदा कादोमे वास्तविक पशुक निशानसँ ककरो आपराधिक कर्म वा संस्था विशेषक दोष सिद्ध नहि। प्रतीकक कलात्मक उपयोग आ विधिक ज्ञानक आवश्यकता दू अलग व्यवहार अछि।

झाड़ीसँ बिज्जी बाहर अबैत अछि। वैदेही फोटो लेल फोन उठबैत छथि, ईशान मना करैत अछि; कारण सभ संकेत सहेजब जरूरी नहि। एहि रोकक अर्थ अनुसन्धान-विरोध नहि, प्रयोजनक अन्तर अछि। यदि अपराधक शङ्कास्पद सामग्री होइत, तखन सुरक्षित अभिलेखन आवश्यक भऽ सकैत छल; एतय प्राकृतिक जीवक छोट दृश्य अछि। देखल सभ वस्तु प्रमाण बनेबाक आग्रह मनुष्यक जीवनकेँ कागजमे बन्द कऽ सकैत अछि। तदपि स्मृति स्थायी रहत, एकर कोनो वचन नहि; दृश्य एतबे कहैत अछि जे कोनो क्षण बिना फोटो देखल जा सकैत अछि।

वैदेहीक फोन वापस रखब कथानकक लघु परिवर्तन अछि। शोधार्थी अपन दृष्टि आ उपकरणक स्वाभाविक अधिकार पर कनेक नियन्त्रण करैत छथि। ईशानक शिक्षा एतय ऊँच नैतिक घोषणा नहि, व्यवहारिक रोक अछि। आर्द्र माटि, जीवक सूँघब, पानिक कातक गति आ घासमे विलयन पाठककेँ पुनः जैविक जगतमे लौटबैत अछि। आरम्भक गहुमन–बिज्जी संघर्षसँ तुलना करब पर स्पष्ट होइत अछि जे एखन जीव तत्काल प्राणरक्षक मिथक नहि, अपन स्वतंत्र जीवकीय आचरणमे उपस्थित अछि।

दृश्य ३०६ : घरक पोथीमे तेसर पाँति आ सूत्र-लेखनक स्वैच्छिक विराम

रातिमे मृणालिनी धनेश्वरीक धुँधल पाँति आ अपन पहिने जोड़ल पाँति देखैत छथि। ओ तेसर पाँति लिखैत छथि—‘पहरा भय नहि; जागरूकता अछि।’ एहि क्रियाक साहित्यिक अर्थ केवल उपन्यासक शिक्षा सार-रूपमे दोहरायब नहि। पोथीक पन्ना पीढ़ीगत संवादक ठाम अछि: पहिल लोकक वाक्य, दोसरक अनुभव आ एखन वृद्ध मृणालिनीक स्वनिर्णीत कथन एकहि कागज पर रहैत अछि। खाली ठाम रहल अछि, अर्थात् ज्ञान अन्तिम नियमावली बनि बन्द नहि भेल।

ईशान पुछैत अछि जे आरो लिखब कि नहि; मृणालिनी आवश्यकता पर लेखन करबाक बात कहैत छथि। ईशान ‘व्याकरण’ बनि जाएबाक आशङ्का व्यक्त करैत अछि, माए ‘घरक बात’ कहि सीमा तय करैत छथि। उपन्यासक न्याय-दर्शन अनेक स्थान पर सूत्रात्मक अछि; एतय स्वयं पाठ ओहि सूत्रकेँ सर्वव्यापी आदेश बनबाक खतरा चिन्हैत अछि। अनुभवक एक उचित सीख सभ परिस्थिति लेल अपरिवर्तनीय नियम नहि। निजी पोथीक स्वतन्त्रता आ सार्वजनिक न्याय-पद्धतिक व्यवस्थितता दुनूकेँ परस्पर भ्रमित नहि करब चाही।

लेखक एहि पन्नाकेँ कानूनक दस्तावेज नहि कहैत छथि। धनेश्वरीक वाक्यक वंशानुक्रम सेहो अभिलेखीय अधिकार-पत्र नहि। ई घरक आत्मचिन्तनक दस्तावेज अछि, जकर सत्यता जीवन-अनुभवक क्षेत्रमे परखल जा सकैत अछि। मृणालिनीक कलमक ठहराव एतय महत्त्वपूर्ण अछि: सभ रिक्त स्थान भरि देब ज्ञानक वृद्धि नहि; कखनो नब अनुभव लेल ठाम बचाएब बुद्धि अछि।

दृश्य ३०७ : गोहि अनुपस्थित, मनुष्यक पदचिह्न उपस्थित

भोरमे मृणालिनी नदीक कात एकसरि चलि जाइत छथि। गोहि आ बिज्जी दुनू अनुपस्थित; देखाइत अछि धूप, मछुआ, विद्यालय जाइत बच्चा आ घड़ा भरनिहार स्त्री। ई दृश्य नाटकीय अपराध-रूपकक विराम अछि। ओ जीवसभक अनुपस्थिति पर प्रसन्न छथि, किएक तँ जीवन अपराधक प्रतीक पर निर्भर नहि।

उपन्यासक अनेक दृश्यमे नदी आ जीव विरोधी तत्त्वक दार्शनिक प्रतिरूप बनल छल; आब साधारण जीविकाक उपस्थिति स्वयंसिद्ध महत्त्व पबैत अछि।

मृणालिनी दू चरम स्थितिक अन्तर चिन्हैत छथि। प्रत्येक पानिमे गोहि देखब भयसँ सञ्चालित कल्पना अछि; कखनहुँ खतरा सम्भव नहि मानब विवेकहीनता। बीचक बुद्धि केवल समन्वयक आकर्षक वाक्य नहि; दीर्घकालीन अपराध-जाँच, परिवारक शोक आ सार्वजनिक सावधानीक बीच जीबैत रहल व्यक्तिक व्यावहारिक नाप अछि। एहि कथनकेँ वैज्ञानिक जोखिम-मापन अथवा विशिष्ट अपराध-निरोधक उपाय मत मानू; ई अनुभवी पात्रक नैतिक स्थिति अछि।

अन्तमे कादोमे बिज्जीक नहि, मृणालिनीक अपन पदचिह्न रहि जाइत अछि। ई छोट परिवर्तन शीर्षक-प्रतीकक अत्यधिक वर्चस्व घटबैत अछि। मनुष्यक नब पदचिह्न स्वयं निर्णय, अपन गति आ वैयक्तिक अस्तित्वक चिन्ह अछि। वृद्ध स्त्रीकेँ केवल शहीदक पत्नी वा रक्षकक भक्त नहि, नदीक तट पर स्वतंत्र चलनिहार मनुष्यक रूपमे रखल गेल अछि। दृश्य कथाक अगिला चरण लेल नब केन्द्र प्रस्तावित करैत अछि: अपराधक स्मृति रहत, मुदा व्यक्तिक जीवन ओकरा सँ बेसी व्यापक अछि।

दृश्य ३०८ : फाड़ल पहिल पन्ना, अनिरुद्धक कलम आ लेखनक प्रमाणगत सीमा

ईशान अनिरुद्ध चौधरीक पुरान कलमसँ पोथी लिखब शुरू करैत अछि। पहिल वाक्य अपराधक सामान्य विवेचना अछि; ओ फाड़ि दैत अछि। दोसर प्रयास रातिक गहुमनवला दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। एहि फेरबदलमे आख्यानक दृष्टि पर जटिल प्रश्न अछि: कोन वस्तु पहिने आए—सामान्य सिद्धान्त कि मनुष्यक अनुभव? कथाकारक उत्तर शब्दश: अनिवार्य नियम नहि; ईशान एक दृश्यसँ प्रवेश करबाक रचनात्मक निर्णय लैत अछि।

माए, दादी, अनिरुद्ध आ रचनाक आवाज ईशानक भीतर एक संग गूँजैत अछि। ‘मनुष्य जकाँ लिखिह’, ‘किनार’, ‘प्रत्यक्ष अलग, अनुमान अलग’, आ ‘असिद्धकेँ

असिद्ध छोड़ू’—ई चारि स्मरण चारि भिन्न अनुशासन खोलैत अछि। माए व्यक्तिचित्रणक जटिलता माँगैत छथि; दादी खतरा आ जीवनक स्थानगत विवेक; अनिरुद्ध ज्ञानक स्तर; रचना निष्कर्षक सीमा। एहि सभक संग साहित्यिक निर्णयक स्वतन्त्रता सेहो चाही। लेखक ईशानकेँ न्यायालयक प्रतिलिपिकार नहि बनबैत छथि; ओ लिखबाक स्वर आ क्रम स्वयं तय करैत अछि।

माटिमे बिज्जीक निशान सुखैत अछि, पछाति हवा ओकरा मेटा सकैत अछि। ई अस्थायी चिह्नक प्रतिमा अभिलेख आ स्मृतिक विवादकेँ दृष्टिगोचर करैत अछि। लिखल दस्तावेज टिकबाक सम्भावना बढ़बैत अछि, मुदा देखल अनुभवक सभ अर्थ सुरक्षित नहि कऽ सकैत। एतय मूल उपन्यास अपन आरम्भिक साँप-बिज्जी दृश्य दिस लौटैत अछि, मुदा हूबहू पुनरुत्पादनक प्रस्ताव नहि दैत। ईशानक लेखन एक स्वतंत्र उपन्यास होएबाक सम्भावना खोलैत अछि। समीक्षक लेल एहि दृश्यकेँ मूल लेखकक वास्तविक लेखन-प्रक्रियाक आत्मजीवनी मानबाक आधार नहि; ई कथाक भीतर पात्रक कथा-लेखन अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

एहि चारि दृश्यमे प्रतीक आ ज्ञानक बीच सीमारेखा एक बेर फेर बनैत अछि। गोहिक निशान शीर्षक बनि सकैत अछि, लेकिन अपराध-साक्ष्य नहि; बिज्जीक फोटो नहि खिंचलहुँ तऽ सेहो स्मृति सम्भव; पोथीक वाक्य घरेलू अनुभव अछि, सार्वभौम कानून नहि; मृणालिनीक पदचिह्न अनिवार्य रूपसँ प्रतीक बनबाक जरूरत नहि; आ ईशानक कथालेखन प्रमाणनिष्ठ रहितो न्यायालयी प्रतिलिपि नहि। लेखक द्वारा अतिव्याख्याक जोखिम स्पष्ट करब एहि खण्डक बड़ी उपलब्धि अछि। शिल्पगत प्रश्न ई रहैत अछि जे कतिपय संवाद व्याख्याक अर्थ अत्यन्त प्रत्यक्ष कहि दैत अछि; मुदा नदीतटक सूक्ष्म भौतिक दृश्य आ फाड़ल पन्नाक क्रिया ओहि स्पष्टताक बीच कलात्मक अवकाश बनबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ७८ — स्मृतिक अनिश्चितता, तथ्यगत भूल आ जाँचक अनुपात (मूल दृश्य ३०९–३१२)

दृश्य ३०९ : कथाक स्वर खोजब आ तीन प्रकारक अतिव्याख्यासँ बचाव

ईशानक लेखन धीरे-धीरे बढ़ैत अछि; ओ प्रतिदिन लिखबाक अनुशासनक यान्त्रिक प्रदर्शन नहि करैत। किछु दिन पुरान फाइल, किछु दिन माएक संग बातचीत, किछु दिन काटल पाँति। ई विभाजित श्रम कथाकेँ केवल घटनाक स्मरण नहि, दृष्टि चुनबाक प्रक्रिया बनबैत अछि। आरम्भसँ उपन्यासमे संख्या, रसीद, फोनक विवरण, न्यायालयी आदेश आ साक्षीक कथन चलैत आएल; एखन ईशान बुझैत अछि जे एहन सभ स्रोत एकठाम रखिते साहित्यिक रचना अपने नहि बनि जाइत। जखन ओ ‘स्वर’केँ पहिल कठिनाई मानैत अछि, लेखक घटनाक ढेर आ आख्यानक समग्र अर्थक अन्तर प्रत्यक्ष करैत छथि।

ईशान चारि जोखिम पर विचार करैत अछि। पुलिसक भाषा अत्यधिक भेल तँ मनुष्य ओझराएत; शोकक भाषा बेसी भेल तँ प्रमाणक सीमा नष्ट होयत; दर्शनक बोझ बाढ़ल तँ कथा उपदेश बनि जाएत; अपराधक रोमान्च केन्द्रमे रहल तँ पीड़ितक अनुभव पाछाँ छूटत। एहि आत्मविश्लेषणकेँ खण्ड १६क पूर्व समीक्षा पर सेहो लागू करब उचित अछि। साहित्यिक आलोचक जँ केवल अपराधसिद्धि गनैत जाए, तँ कथा पढ़बाक बदला आरोप-पत्रक अनुक्रम लिखत। जँ केवल नैतिक प्रशंसा करय, तँ पात्रक चूक आ सामाजिक संरचना दूनू लुप्त भऽ जाएत। ईशानक समस्या समीक्षकक शिल्पगत दायित्व सेहो चिन्हबैत अछि।

‘कथा न्यायालय नहि; मुदा न्यायालयक विपरीत सेहो नहि’—ई वाक्यक महत्त्व एतय अछि जे साहित्यक स्वतन्त्र कल्पना आ सार्वजनिक तथ्य-विषयक असत्य-निर्माणक बीच तनाब स्वीकारल गेल अछि। साहित्य पाठमे अनुभवक संश्लेषण, चयन, समय-संकुचन आ काल्पनिक स्वर सम्भव अछि; मुदा किसी पात्रक असिद्ध दोषकेँ प्रमाणित रूपमे नैतिक सजावट देब रचनात्मक स्वतन्त्रता नहि

कहल जा सकैत। स्रोत एखन ईशानक लिखल पूरा उपन्यास नहि देखबैत; अतः ओकर भावी पोथी सफल भेल अथवा कथाक भीतरक लेखक उपन्यासकार रूपमे प्रसिद्ध भेल, एहन दावा अनुचित अछि।

दृश्य ३१० : ‘पहिने जानैत रही कि कागज पढ़ि जानलहुँ?’ — स्मृतिक स्रोत-अनिश्चितता

वैदेही झा फेर शोध लेल अबैत छथि, मुदा एहि बेर विस्तृत प्रश्नावली नहि, केवल दू प्रश्न लैत छथि। पहिल प्रश्न दीर्घ जाँचक स्मृति पर प्रभावसँ जुड़ल अछि। मृणालिनी कहैत छथि जे पहिने स्पष्ट बुझायल बातकेँ पछाति कागज पुष्टि करैत अछि; दीर्घ काल बीतलापर ई अलग करब कठिन भऽ जाइत अछि जे जानकारी मूल अनुभवसँ छल कि पछाति पढ़ल अभिलेखसँ। ई अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञानगत संकट अछि: स्मृतिक विषय मात्र ‘की मोन अछि’ नहि, ‘एहि ज्ञानक मूल स्रोत की अछि’ सेहो।

पुलिस-जाँचमे प्रत्यक्षदर्शी, सुनी बात आ दस्तावेजक पुनर्पठन अलग-अलग स्थिति अछि। मृणालिनीक स्वीकार एहि भेदकेँ मानवीय जटिलता दैत अछि; स्मृति व्यक्तिगत विश्वासक अनुभव होइतहुँ स्रोत-मिलानमे सीमित भऽ सकैत अछि। वैदेहीक ‘तखन साक्षात्कारमे हम की करी?’क उत्तर—जे पक्का नहि, से पक्का नहि लिखू—अनुसन्धानक अभिलेखी अनुशासनक सरल रूप अछि। मुदा ई केवल भाषिक सावधानी नहि: अस्थिर स्रोत-स्थितिकेँ यथावत् प्रकाशित कएल जाए तँ शोधक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि। निश्चितता गढ़ने सङ्ख्या आ उद्धरण आकर्षक होयत, मुदा ज्ञानक हानि करैत।

दोसर प्रश्न ‘न्याय भेटल?’क उत्तरमे मृणालिनी एकवचन समाधान अस्वीकार करैत छथि। न्याय विभिन्न रूपमे उपस्थित अछि—किछु निर्णय, किछु सत्य, किछु प्रतिकर, किछु स्मृति—आ शेषमे दुःख। ई सूची पर विशेष सावधानी जरूरी अछि। निर्णय आ दण्डको न्याय कहि सकैत छी; प्रतिकरक व्यवहारिक महत्त्व अछि; सार्वजनिक अभिलेख अधूर ऐतिहासिक सत्य सुरक्षित कऽ सकैत अछि;

मुदा ई चारूक जोड़ दुःख समाप्त नहि करैत। एहि उत्तरकेँ न्यायपालिका असफल भेल, अथवा पूर्ण न्याय भेटि गेल, दुनूमे सँ कोनो एक सरल निर्णयमे समेटल नहि जा सकैत। वैदेहीक धीरे नोट लिखब अनुभवक प्रति स्रोत-सम्मानक संकेत अछि, शोध-विधिक अन्तिम पूर्णता नहि।

दृश्य ३११ : छोट जाल, पैघ समाचारक भूख आ अपराधक अनुपात

रचना सिन्हाक नव जिलाक प्रकरण अपेक्षाकृत छोट निकलैत अछि—पाँच खाता, दू आरोपी, एक कर्मचारी। माध्यमक प्रतिनिधि ‘बस एतबे?’ कहि निराश होइत अछि, किएक तँ ओकरा ‘सम्राट’ सन पैघ अपराधी चाही। रचनाक उत्तर प्रश्नक नैतिक उलटफेर करैत अछि: जँ अपराध सचमुच कम हो तँ अधिकारीकेँ प्रसन्न रहबाक चाही, निराश नहि। समाचारक प्रदर्शन-आवश्यकता आ अपराध-निरोधक सार्वजनिक हित एक नहि। पत्रकारिता नाटकीय आकार खोजि सकैत अछि; जाँच प्रामाणिक आकार नापय चाहैत अछि।

रचनाक व्यंग्य पछाति हुनका स्वयं खटैत अछि। ई आत्मसमीक्षा महत्त्वपूर्ण अछि; लेखक रचनाकेँ निर्भूल नैतिक वाचक नहि बनबैत छथि। जाँचक दबावमे तीक्ष्ण उत्तर देब सहजे सम्भव अछि, मुदा सार्वजनिक अधिकारीक भाषिक दायित्व ताहिसँ समाप्त नहि। रचना अपन स्वर पर शंका करैत छथि, मुद्दाक तथ्यपर नहि। एहिसँ चरित्रमे जीवन-अनुभवक विश्वसनीयता अबैत अछि।

दृश्यक अन्तमे छोट-छोट लोक, राशि आ झूठक योगसँ पैघ हानि बनेबाक विचार अछि। एकरा ‘समवाय’क दार्शनिक शब्दसँ जोड़बाक प्रयत्न लेखक करैत छथि। तथापि एहन सामाजिक संकलन आ नव्य न्यायक समवाय-पदार्थ पूर्णतः समान नहि। आलोचनामे एहि शब्दकेँ शिल्पगत रूपान्तरण रूपेँ पढ़ल जाए, दार्शनिक परिभाषाक एक-एक समानार्थी रूपमे नहि। दृश्य सार्वजनिक अपराध-बोधक पैमाना पुनर्निर्धारित करैत अछि: पीड़ितक क्षति ओकर समाचार-मूल्यक अनुपातमे नापल नहि जा सकैत।

दृश्य ३१२ : वृद्ध शिक्षकक पेंशन-खाता आ ‘डेटा-त्रुटि’क अलग श्रेणी

ईशानक प्रशिक्षणमे एक वृद्ध शिक्षकक पेंशन-खाता गलतीसँ रोकल गेल अछि। एक सन्दिग्ध डिजिटल व्यवहारसँ खाता जोड़ल देखाइत अछि, मुदा जाँचमे बैंक-शाखाक पुरान मोबाइल नम्बर गलत अद्यतन भेटैत अछि। मूल पाठ स्पष्ट कहैत अछि: नहि खाता भर्ती, नहि कमीशन, नहि अपराध। एहि निष्कर्षक महत्त्व बहुतेक पूर्व वित्तीय जालक आरोपक बाद बुझाइत अछि। जँ मात्र ‘सम्बन्धित नम्बर’ देखकर अपराध मानि लेल जाए तँ प्रशासनिक त्रुटि निर्दोष व्यक्तिक जीविकाक बाधा बनि सकैत अछि।

विद्यार्थीक ‘मशीन दोषी?’ प्रश्न पर ईशान मनुष्य द्वारा निर्मित आँकड़ा, नियम आ जाँचक भूमिका स्मरण करबैत अछि। एतय तकनीकी यन्त्रक स्वतन्त्र नैतिक दोषी होयबाक निर्णय नहि देल गेल अछि; गलतीक उत्तरदायित्वक जाँच आवश्यक अछि। एक व्यक्ति द्वारा गलत प्रविष्टि, संस्थागत प्रशिक्षणक अभाव, त्रुटिपूर्ण मिलान-नियम अथवा अनेक स्तरक चूक—सभ सम्भावना सैद्धान्तिक रूपसँ अलग अछि। मुदा मूल दृश्यमे विशिष्ट दोषी कर्मचारीक मनःस्थिति अथवा बैंकक वास्तविक सुधार-प्रक्रिया नहि अछि। अतः एकरा प्रमाणित संस्थागत षड्यन्त्र अथवा निजी लाभक जाल कहब असंगत होयत।

‘भूल, लापरवाही, धोखा, अपराध’क चारि श्रेणी एकहि वस्तु नहि। ईशान विद्यार्थीसँ ई निर्णय तैयार नहि करबबैत जे हर भूल माफ, अथवा हर लापरवाही दण्डनीय अपराध। ओ पहिने भेद चाहैत अछि। नव्य न्यायक अवच्छेदक-स्मरणक प्रसङ्गमे ई महत्त्वपूर्ण अछि: आरोपक विषय, कर्ता, कार्य, ज्ञान आ परिणाम जाँचने बिना दोषक सार्वत्रिक श्रेणी नहि तय होइत। शिल्पगत रूपेँ ई शिक्षण-दृश्य किछु प्रत्यक्ष उपदेशात्मक अछि; तथापि वृद्धक पेंशनक ठोस कष्ट अभिधारणा कैँ मानवीय दाँव दैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३०९–३१२क साझा प्रश्न अछि—कहाँ वस्तुकेँ लिखल जाए आ कोन ज्ञानक स्थिति कहल जाए? ईशान साहित्यक स्वर चुनैत अछि; वैदेही साक्षात्कारक स्रोत-अनिश्चितता स्वीकारैत छथि; रचना अपराधक वास्तविक आकार नापैत छथि; बैंकक उदाहरणमे निर्दोष वृद्ध पर आरोप लगबाक पहिले गलत अंकन चिन्हित कएल जाइत अछि। चारू ठाम संस्थागत अथवा कथात्मक बढ़ा-चढ़ाक ऽ कहबाक खतरा उपस्थित अछि। लेखक एतेक प्रश्न एकठाम राखि अपन उपन्यासक आत्मपरीक्षण गहिरा करैत छथि। तथापि दार्शनिक निष्कर्षक किछु स्पष्ट वाक्य पाठककेँ घटना सँ स्वतन्त्र अर्थ निकालबाक अवकाश घटबैत अछि; सामाजिक क्रिया आ सांकेतिक वाक्यक अनुपात आर समतुल्य होइतय तँ कथा अधिक बहुस्तरीय बनितय।

अध्ययन-इकाई ७९ — पुस्तकक सार्वजनिक उपयोग, अपीलक विभाजित अर्थ आ दोषस्वीकारक व्यवहार (मूल दृश्य ३१३–३१६)

दृश्य ३१३ : पुस्तक-कोषक वास्तविक पाठक आ रूपकसँ वस्तुक मुक्ति

मृणालिनी धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक पुस्तक देखय विद्यालय पहुँचैत छथि। विद्यार्थी पोथी उलटैत छथि, नाम अथवा मुहर प्रायः नहि देखैत। मृणालिनी एहि बातसँ प्रसन्न छथि। एतय दानक उद्देश्यक जाँच समारोहसँ नहि, पुस्तकक वास्तविक उपयोगसँ होइत अछि। पुरान संस्थागत परामर्शपत्रक प्रसङ्गमे ‘सेवा’क नाम पर पाइ जा सकैत छल, मुदा वास्तविक सेवा अस्पष्ट रहल; एतय प्राप्त पोथीक उपयोग दृश्य रूपमे सामने अछि। एहि तुलनामे वस्तुक अस्तित्व आ उपयोगक सत्यापन संस्थाक घोषणासँ अधिक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

विज्ञानक पुस्तक लऽ दौड़ैत बच्चा ठोकर खाइत अछि, मृणालिनी ओकरा उठबैत छथि। पुस्तकक पन्नामे शिकारी आ शिकारक जैविक संतुलनक उल्लेख अछि। एहि आकस्मिक संयोगसँ बिज्जी, साँप आ गोहिक रूपक पर एक आवश्यक सीमा अबैत अछि। प्रकृतिमे ई जीव मनुष्यक नैतिक श्रेणीमे ‘रक्षक’, ‘अपराधी’ अथवा ‘पीड़ित’ नहि। जीवकीय आचरणकेँ नैतिक कथा मनुष्य बनबैत अछि। रूपक उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ओ तथ्यक स्थान नहि लऽ सकैत।

एहि दृश्यकेँ उपन्यासक आत्मालोचनात्मक शिखर कहब सम्भव अछि—जे शीर्षक पूरे आख्यानमे नैतिक विभाजन सूचित करैत रहल, ओहि रूपकक निर्माण-पद्धति पर उपन्यास स्वयं प्रश्न उठबैत अछि। मुदा एकर मतलब पहिनुक रक्षक-प्रतीक निरर्थक भऽ गेल, से नहि। साहित्यिक प्रतीक वस्तुक वैज्ञानिक परिभाषा नहि, अनुभव सम्हारबाक भाषा होइत अछि। बच्चाक किताब एहि दूनू क्षेत्रक भेद सहज वस्तुगत संयोगसँ उजागर करैत अछि।

दृश्य ३१४ : प्रदीपक कक्षा आ भरोसाक एक ईंटा

प्रदीप वित्तीय-साक्षरता कक्षामे कागज बुझने बिना हस्ताक्षर नहि करबाक, वास्तविक सेवा नबतौनिहार भुगतानकेँ ‘समायोजन’ कहि छोट नहि मानबाक, आ अपन खातासँ गेल पराई रकमक अर्थ पुछबाक शिक्षा दैत अछि। ई उपदेशक स्रोत पाठक जानैत अछि—प्रदीप स्वयं पूर्व गलत व्यवहारमे सम्मिलित रहल अछि। जखन एक युवक ज्ञानक स्रोत पुछैत अछि, ओ ‘गलत काज कऽ’ कहि स्वीकार करैत अछि। कक्षामे हँसी नहि उठब, एहि स्वीकारक नैतिक भारकेँ स्पष्ट करैत अछि।

ओ गलतीकेँ शिक्षाक प्रमाणपत्र बना कऽ गौरव नहि करैत। ओकर तर्क अधिक कठिन अछि: गलत अनुभवसँ प्राप्त चेतावनी यदि सामाजिक रूपसँ उपयोगी हो, तँ ओकरा नुकाएब दोसर चूक भऽ सकैत अछि। तथापि सार्वजनिक शिक्षण दण्डक निरसन नहि, आ अभ्यासमे परिवर्तनक एक उदाहरण सम्पूर्ण आचरण-परिवर्तन सिद्ध नहि करैत। लेखक ई सीमाकेँ पार नहि करैत छथि। पुनर्वासक कथा विश्वसनीय तखन बनैत अछि जखन पछिलाक वास्तविक दायित्वक नाम ओझरायल नहि रहय।

तृषा पाछिला बेंचपर उपस्थित छथि। पिता केँ अपराध नहि नुकबैत सार्वजनिक रूपसँ देखब हुनकर लेल विश्वासक पहिल ईंटा अछि, सम्पूर्ण महल नहि। उपन्यास एहि रूपकसँ परिवारिक पुनर्स्थापनक धीरे गति स्वीकार करैत अछि। पहिनुक पिता-पुत्री संवादमे अपमान आ असमंजस छल; एखन प्रत्यक्ष रूपसँ देखल एक छोट आचरण अछि। एकर महत्त्व एतेक अछि जे स्मृति केवल भाषण नहि, नव व्यवहारक लगातार परीक्षा माँगैत अछि।

दृश्य ३१५ : मनोजक अपील आ ‘आंशिक’ शब्दक न्यायिक भार

मनोज नायकक अपीलमे मारपीटक उच्च स्तरक प्रत्यक्ष दायित्व सम्बन्धी एक आरोप घटैत अछि; मुदा खाता भर्ती आ दबाव सम्बन्धी मुख्य दोष कायम रहैत अछि। पिता समाचार सुनि सम्पूर्ण निर्दोषता घोषित करैत छथि, वकील सुधार करैत छथि। ई लघु संवाद पूर्व सौरभ–केशवक अपील-प्रसङ्गक पुनरागमन

अछि, मुदा नव पारिवारिक मनोविज्ञानसँ। अपना लोकक प्रति प्रेम समाचारक जटिल आदेशकेँ दू श्रेणीमे तोड़य चाहैत अछि—दोषी अथवा निर्दोष। न्यायिक आदेश वैह द्वैतक सरलता अस्वीकार करैत अछि।

एहि दृश्यसँ न्यायिक आदेशक विशिष्ट धारासभ अनुमानित करब उचित नहि। मूल पाठ केवल आरोपक आंशिक परिवर्तन आ मुख्य दोष टिकबाक सूचना दैत अछि। आलोचक ई सीमा मानिकऽ विचार करि सकैत अछि जे दायित्व आरोप-विशेष आ भूमिका-विशेष पर निर्भर करैत अछि। एक आरोप हटब व्यक्तिक सभ व्यवहारक नैतिक प्रशस्ति नहि। फेर सभ आरोप कायम नहि रहलाक अर्थ ईहो जे प्रारम्भिक अभियोगक प्रत्येक अंश समान रूपेँ सिद्ध नहि भेल।

शिल्पमे मनोजक पिता एक कथात्मक प्रतिपक्ष बनैत छथि। हुनकर आहत प्रतिक्रिया मानवीय अछि, मुदा निष्कर्ष अपूर्ण। वकीलक ‘पूरा नहि’ छोट वाक्य भावनात्मक आश्वासन रोकैत अछि। लेखक कानूनक जटिलता केँ त्रुटि नहि, सम्भावित ईमानदारी बतबैत छथि। ई वाक्य थोड़ स्पष्ट नीतिकथन अछि; तथापि ओकर पहिने घरेलू गलतपढ़ाइ रखबाक कारण परिणाम नाटकीय उपस्थिति पबैत अछि।

दृश्य ३१६ : रितेशक स्वीकार आ अपमानक बीच दायित्वक अपना हिस्सा

बजारमे मनोजक पिता रितेशक अपमान करैत छथि। रितेश पाछिल हिंसा आ आपराधिक दबावक पूरा ब्योरा प्रतिवादमे रखि सकैत छल; मुदा ओ पहिने अपन गलत काज मानैत अछि। वृद्ध पूछैत छथि जे हुनकर बेटाक की, तखन रितेश अदालतक निर्णयक दिशा देखबैत अछि। अपन सम्बन्धमे ‘हम अपन हिस्सा मानैत छी’ कहब एतय अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। ओ न सब अपराध अपन माथ लैत अछि, न दोसरा पर सम्पूर्ण दोष डालि बचि जाइत अछि। उत्तरदायित्वक परिमाण निर्वाहक केन्द्र अछि।

ई स्वीकारक परिणाम नाटकीय मिलन नहि। वृद्ध पिता क्षमा नहि माँगैत, रितेशकेँ प्रेमपूर्वक ग्रहण नहि करैत; झगड़ाक स्वर कनेक बदलैत अछि। लेखक सामाजिक पुनर्स्थापनक ई लघु अंश विश्वसनीय बनबैत छथि। अदालत पर

दोष निर्धारित करबाक काम रहल; बजारमे सामान्य मनुष्य आपसी आरोप आ सामाजिक स्मृतिसँ जूझैत अछि। ई दुनू स्थल पर कथनक नियम एक नहि। रितेश अनुभवल दण्ड आ अपन भूमिका लेल भाषिक उत्तरदायित्व लैत अछि, मुदा न्यायालयक आदेशक बदला एक निजी कथनक दावा नहि करैत।

एहि प्रसङ्गमे रितेशक मौन कमजोरी नहि, एक निर्णय अछि। तथापि अत्याचार सहने व्यक्तिक चुप्पीकेँ सार्वभौम आदर्श बनब उचित नहि; प्रत्येक परिस्थिति भिन्न। मूल दृश्य केवल रितेशक विशेष भेटक व्यवहार कहैत अछि। आलोचना यदि एहि एक निर्णयसँ सभ पीड़ितकेँ मौन रहबाक आज्ञा बनबय तँ उपन्यासक प्रमाण-सीमाक उल्लङ्घन होयत।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

एहि चारि दृश्य मे ‘नाम’ आ ‘दोष’ दुनूक सार्वजनिक अर्थ बदलैत अछि। विद्यालयमे नाम गौण रहितो पुस्तक उपयोगी अछि; प्रदीप अपन गलत काजक नाम लैत अछि, मुदा ताहिसँ दण्ड नष्ट नहि होइत; मनोजक पिता अदालतक आंशिक निर्णयकेँ सम्पूर्ण विमुक्ति पढ़ैत छथि; रितेश अपन हिस्सा स्वीकार करैत अछि, मुदा दोसरा व्यक्तिक दायित्व अपन निर्णयसँ तय नहि करैत। विद्यालयक बच्चा, तृषा, वृद्ध पिता आ बजारक भेट—ई सभ अलग पीढ़ीक दृष्टि जोड़ैत अछि। पुस्तकक पन्ना आ कक्षाक व्यवहार जीवंत दृश्य छथि; न्यायिक आदेशक व्याख्या अपेक्षाकृत सूत्रात्मक अछि। एहि असमानतामे उपन्यासक अन्तिम उत्तरकथाक उपलब्धि आ शिल्पगत सीमा दुनू देखाइत अछि।

अध्ययन-इकाई ८० — आत्मबोध, काल्पनिक रूपान्तरण आ साझा प्रमाण-पद्धति (मूल दृश्य ३१७–३२०)

दृश्य ३१७ : सौरभक बचाव-भाषा आ स्वयं कँ बुझबाक भाषा

सौरभ बर्धन उच्चतर अपीलक तैयारीमे उत्तरायणक पुरान अभिलेख मँगबैत अछि। ओकर वकील ‘पुरान स्रोत’क अर्थ निवेश-इतिहास बतबैत बचाव तर्क तैयार करय चाहैत अछि, अवैध धन नहि। ई विधिक विवादक भाषा अछि; स्रोत ककरो एक शब्दक निष्कर्ष नहि दैत, केवल बचावक प्रस्ताव कहैत अछि। सौरभ जखन फाइलमे सत्यप्रकाशक नाम देखैत अछि, वकील बतबैत अछि जे ओ समय सौरभ छात्र छल आ हत्या सम्बन्धी आरोप ओकरा पर नहि। ई बात दोसर दोषसँ सम्बन्ध मुक्त करब नहि; मात्र खास घटनामे सीधा आरोप नहि होयबाक सीमा अछि।

सौरभ अपन पछिला व्यवहार—सत्यप्रकाशक आपत्ति लुकाबय चाहनाइ—मोन करैत अछि। वकील ‘लुकाबय’ शब्द नहि कहबाक सावधानी करैत अछि। एहि ठाम कानूनक भाषा आ आत्मबोधक भाषा आमने-सामने अछि। न्यायालयमे पक्षकार अपने विरुद्ध अप्रमाणित निष्कर्ष नहि बनयबाक प्रयास करैत अछि; मुदा व्यक्तिगत अनुभूति कखनो ओहि सुनियोजित शब्दचयनसँ भिन्न स्पष्टता चाहैत अछि। सौरभक उत्तर ई नहि जे अभियोजनक सभ आरोप ओ स्वीकार करैत अछि; ओ कहैत अछि जे शब्द एतेक सँवारि गेल छल जे अपन कामक अर्थ स्वयं अस्पष्ट भऽ गेल।

एहि दृश्यकँ आत्मस्वीकारक साहित्यिक क्षण कहि सकैत छी, मुदा अंतिम न्यायिक दोष-स्वीकार नहि। सौरभक मनक परिवर्तन वास्तविक आचरणमे की रूप लैत अछि, एतय नहि भेटैत। लेखक ओकरा एकरूप दुष्ट व्यक्ति नहि रखैत छथि; सँवारल भाषा आ अतिक्रमित नैतिक स्मृतिक बीच तनावमे राखैत छथि। ई पात्र-चित्रणक सूक्ष्म उपलब्धि अछि। मुदा दृश्य पर्याप्त विरोधी संवाद बिनु

छोट अछि, तँ पाठक ओकर अतीतक अन्य स्रोतक मिलान केलक बिना निर्णायक परिवर्तन मानि नहि लेथि।

दृश्य ३१८ : वास्तविक फाइलसँ काल्पनिक आख्यानक दूरी

ईशान लेखनमे ‘सौरभ’ नाम काटैत अछि, कारण अनेक लोक जीवित छथि आ अपील जारी अछि। मृणालिनी पुछैत छथि जे कथा काल्पनिक बनल तँ पिता सेहो? ईशान कहैत अछि जे नाम आ रूप बदलत; उद्देश्य घटना नकल करब नहि, अनुभवक अर्थ सुरक्षित करब। ई कथाक भीतर साहित्यक आत्मस्वातन्त्र्यक विचार अछि। वास्तविक जाँच-पत्र आ स्वतंत्र उपन्यासक दायित्व एक समान नहि; दू स्रोतक पात्र-जैसँ नाम मिलब वा कालक्रम समरूप रहब स्वयं साहित्यिक सत्यक प्रमाण नहि।

मृणालिनी अपन शब्दक रूप बदलल स्वीकार करैत छथि, मुदा पहिनेक आग्रह दोहरबैत छथि—हुनका ‘नायिका’ नहि बनाओल जाए। ई सहमति सर्वसाधारणक सब अनुभवक स्वतः अनुमति नहि। स्रोत केवल माँ आ पुत्रक एहि संवादक अनुमति देखबैत अछि; अन्य जीवित पात्रक निजी लेखापत्रक अधिकार अथवा अपील-दस्तावेजक प्रकाशनक औपचारिक अनुमति ई पाठ नहि दैत। तँ एहि प्रसङ्गकेँ पूर्ण वैधानिक समाधानक रूपमे पढ़ब अनुचित।

लेखक एहि प्रश्नकेँ महत्त्वपूर्ण शिल्पगत जटिलता दैत छथि: घटना नकल नहि करब चाहनिहार लेखक तैयो पद्धतिक विरासत राखि सकैत अछि। सत्य जाँचबाक अनुशासन, विवेकशील संशय आ मनुष्यक अपूर्णता काल्पनिक संरचनामे नब रूप लैत अछि। ई दूरी कथाक विस्मरण नहि, पुनर्रचना होयबाक सम्भावना अछि। मुदा काल्पनिक घोषित कएलाक आधारपर वास्तविक व्यक्ति पर अनुदित आरोप अथवा निजता-संवेदनशील संकेत सर्वथा निष्प्रभावी भऽ जाइत, एहन विधिक निष्कर्ष मूल पाठ नहि दैत; आलोचना साहित्यक प्रस्ताव आ वास्तविक कानूनक बीच सीमा राखत।

दृश्य ३१९ : वैदेहीक शोधमे अनाम विधवा आ उद्धरणक सीमित सत्य

वैदेहीक शोधप्रबन्धक ‘दीर्घकालीन न्यायिक अनिश्चितता’ अध्यायमे मृणालिनीक एक वाक्य उपयोग करबाक प्रस्ताव अछि। ओ अनुमति माँगैत छथि। मृणालिनी नाम नछपबाक शर्त रखैत छथि, कारण हुनकर अनुसार वाक्य अपन व्यक्तिक परिचयसँ पैघ अछि। वैदेही एहि शर्तक पालन करैत छथि: उद्धरण ‘एक अनाम विधवा’क रूपमे, सन्दर्भसहित राखल जाइत अछि। एहिमे साक्षात्कार-स्रोतक स्वत्व, शोधकर्ताक दायित्व आ सार्वजनिक ज्ञानक उपयोगक त्रिपक्षीय सम्बन्ध अछि।

‘दुख संतुष्ट नहि होइत’क कथन शोधमे उद्धृत भेलाक पछाति कागज एक अनुभवक साक्ष्य सुरक्षित करैत अछि; मुदा ओ दुःखक पूर्ण भार नहि उठबैत। ई भेद स्वयं दृश्य स्पष्ट करैत अछि। एक वाक्य भावनात्मक सार देब सकैत अछि, परन्तु सम्पूर्ण जीवन, आर्थिक निर्णय, बचल सन्देह आ परिवारक बदलैत सम्बन्धक विकल्प नहि। अकादमिक प्रस्तुति अनिवार्य रूपसँ चयनात्मक अछि; चयनक मर्यादा स्रोतक सहमति आ उद्धरणक प्रसङ्ग पर निर्भर अछि।

एतय एक आलोचनात्मक प्रश्न खुलल रहैत अछि: ‘अनाम विधवा’ कहने पहचान सुरक्षित भेलाक पूर्ण निश्चय भऽ गेल कि नहि? मूल कथामे व्यक्तिगत पहचान पुनः पहिचानल जा सकबाक अनुसन्धान नहि देल गेल अछि। तेँ समीक्षक गोपनीयता पूर्णतः सिद्ध भेल नहि कहत; केवल उपयोगकर्ताक नाम नहि देबाक शर्त स्वीकार होयबाक तथ्य कहि सकैत अछि। लेखकक हेतु अधिक व्यापक अछि—पीड़ितक वाक्य ज्ञान बनि सकैत अछि, मुदा पीड़ितक पूरा जीवन ओकर एक उद्धरणमे कत्तहु नहि समाएत।

दृश्य ३२० : रचना आ ईशानक संवादमे पद्धतिक साझा उत्तराधिकार

राजधानी नगरक चाह-दोकानमे रचना सिन्हा ईशानसँ लेखन विषय पुछैत छथि। रचना ‘हमरा पात्र बनायब?’ कहैत छथि; ईशान मना करैत अछि आ कथा काल्पनिक होयबाक बात कहैत अछि। रचना एकर स्वागत करैत छथि। मुदा

ईशान पद्धति विषय उठबैत अछि—प्रत्यक्ष, अनुमान, समवाय, आ असिद्धकेँ असिद्ध छोड़ब। रचना बतबैत छथि जे पद्धति ककरो निजी सम्पत्ति नहि; किछु विचार पुरान दार्शनिक स्रोतसँ अबैत अछि, आ जाँचक सामान्य अनुशासन साझा रहैत अछि।

ई संवाद पात्र-विशेषक बौद्धिक स्वामित्वक मिथककेँ तोड़ैत अछि। अनिरुद्धक आरम्भिक विवेक, मयंकक लेखा-जाँच, रचनाक साक्ष्य-परीक्षण आ ईशानक शिक्षण एकहि व्यक्तिक रचनात्मक आविष्कार नहि। ज्ञान संस्थागत आ सामाजिक उत्तराधिकारसँ विकसित होइत अछि। एहि दृष्टिसँ उपन्यासक न्याय-दर्शन व्यक्तिगत चमत्कार नहि, पीढ़ीगत अभ्यास अछि। मुदा ‘समवाय’क दार्शनिक प्राविधिक अर्थ आ डिजिटल वित्तीय जालक सामाजिक संयुक्ततामे भेद सुरक्षित राखब आवश्यक अछि; सन्दर्भक अनुसार शब्दक उपयोग बदलैत अछि।

ईशानक भावी साहित्यिक रचनाक औपचारिक अधिकार आ सामान्य पद्धतिक सार्वजनिक उपयोग अलग प्रश्न अछि। मूल पाठ सामान्य स्तर पर भाषा अथवा लेखकीय अभिव्यक्तिक अधिकार आ प्रमाण-पद्धतिक अनन्य स्वामित्वक अभावक भेद सुझबैत अछि; एहि छोट संवादसँ वास्तविक अधिकार-संबंधी कानूनक पूर्ण विवेचन प्राप्त नहि होइत। तकरा ठोस कानूनी परामर्श घोषित करब अनुचित। साहित्यिक रूपमे चाहक कप, छोट हँसी आ पारस्परिक स्वीकार एहि लम्बा उपन्यासक कटु संघर्षक बाद एक संयत समापन-बिन्दु बनैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३१७–३२०मे चारि अलग भाषा भेटैत अछि—वकीलक बचाव-भाषा, सौरभक आत्मस्वीकृतिक भाषा, ईशानक कल्पित आख्यानक भाषा, वैदेहीक शोधक भाषा आ रचनाक अनुसन्धानक भाषा। एकहि घटनाक अर्थ सभ भाषामे समान नहि, मुदा कोनो भाषाकेँ प्रमाणक मर्यादा भुलबाक छूट सेहो नहि। सौरभ अपन शब्दक सजावट पर शंका करैत अछि; ईशान नाम आ रूप बदलि

रचनात्मक दूरी बनबैत अछि; वैदेही अनुमति आ अनामिताक सीमा मानैत छथि; रचना साझा परीक्षण-पद्धति पर जोर दैत छथि। एहि प्रकार उपन्यास स्वयं अपन बनबाक शर्तसभ जाँचैत अछि। एकर सीमा ई जे नैतिक स्पष्टीकरण कखनो घटनाक दृश्यात्मक स्वायत्तता सँ बेसी ठाढ़ भऽ जाइत अछि; ओकर उपलब्धि ई जे अनेक संवादमे अपूर्ण मनुष्य, अपूर्ण प्रमाण आ अपूर्ण न्यायकेँ लुकाओल नहि जाइत।

सोलहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दृश्य ३०१–३२० : न्यायिक परिणामसँ नागरिक शिक्षण, अनुसन्धान आ साहित्यक स्वतन्त्रता धरि

तुलनाक आधार : पाँच सम्पादकीय अध्ययन-इकाईक अलग साक्ष्य-क्षेत्र

दृश्य ३०१–३०४मे सार्वजनिक चेतावनी, संस्थागत प्रतिपूर्ति, पुस्तक-कोष आ शोध-साक्षात्कारक आरम्भ अछि। दृश्य ३०५–३०८मे जीव-जगतक वास्तविकता, पोथीमे पीढ़ीगत लेखन आ ईशानक कथाकार बनबाक प्रक्रिया अछि। दृश्य ३०९–३१२मे आवाजक चयन, स्मृतिक स्रोत-अनिश्चितता, अपराधक वास्तविक आकार आ बैंकक डेटा-त्रुटि अछि। दृश्य ३१३–३१६मे पुस्तकक उपयोग, प्रदीपक सार्वजनिक स्वीकार, मनोजक आंशिक अपील आ रितेशक सीमित दोषस्वीकार अछि। दृश्य ३१७–३२०मे सौरभक भाषिक आत्मचिन्तन, काल्पनिक लेखनक निर्णय, शोध-स्रोतक नामहीनता आ पद्धतिक साझा अधिकार अछि। एहि पाँचू क्रमक रूपक समान होएबाक कारण ओकर प्रमाणगत भेद मेटाओल नहि जा सकैत।

भारतीय प्रमाण-विचार : प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान आ स्रोतक ज्ञान

गोहिक निशान देखब प्रत्यक्ष उपलब्ध घटना अछि, मुदा ओहि निशानसँ अमुक आपराधिक जालक सम्बन्ध अनुमान करब लेल हेतु नहि। वैदेहीक शोधमे मृणालिनीक कथन शब्द-साक्ष्यक विषय अछि; जखन कथनकर्त्री स्वयं स्मृतिक स्रोत निश्चित नहि बुझैत छथि, तखन कथनक अवस्थाकेँ यथावत् अभिलिखित करब चाही। बैंकक वृद्ध शिक्षकक उदाहरणमे डिजिटल सङ्केत देखल गेल, मुदा वास्तविक अपराधक अनुमान गलत डेटा-अद्यतनक जाँचमे हटि गेल। एहि तीन प्रसङ्गमे ज्ञानक साधन आ निष्कर्षक सीमा पर आलोचना सम्भव अछि। भारतीय प्रमाण-परम्पराक प्रत्यक्ष–शब्द–अनुमान सम्बन्धी विमर्श एहि पाठमे तुलनात्मक आलोक दैत अछि; मुदा न्यायालयक आधुनिक साक्ष्य-विधि ओही

प्राचीन शब्दसभक हूबहू पर्याय नहि। एकर दार्शनिक सार्थकता स्रोत-अनुशासन बुझब अछि, कानूनी धाराक स्थानापन्न बनब नहि।

नव्य न्याय : अवच्छेदक-भेद, दायित्वक विषय आ ‘आंशिक’क तात्पर्य

मनोजक अपील विशेष आरोपमे राहत दैत अछि, मुदा मुख्य भर्ती आ दबाव-संबंधी दोष कायम रखैत अछि। सौरभ अपन पूर्व निर्णयक एक नैतिक पक्ष अलगसँ स्मरण करैत अछि, जकर स्वतः अर्थ मृत्यु-मामलामे दोषी होयब नहि। रितेश अपन हिस्सा स्वीकार करैत अछि; मनोजक परिवार पर नैतिक निर्णय देबाक अधिकार ओकर स्वीकारसँ पैदा नहि होइत। एहि प्रसङ्गसभमे ‘के’, ‘ककर कर्म’, ‘कोन समय’, ‘कोन आरोप’ आ ‘कतेक प्रमाण’ जकाँ निर्धारक सीमा दायित्वक अर्थ बदलैत अछि। नव्य न्यायक अवच्छेदक-विचारक सहायता सँ एहन सीमा-जाँच पर तुलनात्मक चर्चा कएल जा सकैत अछि। मुदा दार्शनिक उपमा अपनासँ वास्तविक दण्डनिर्णय उत्पन्न नहि करैत; मूल उपन्यासक न्यायिक निष्कर्षक जे सीमा अछि, विश्लेषण ओही धरि रहत।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक अपेक्षा आ उपन्यासक आत्मपरक उत्तरकथा

पारम्परिक रहस्य-आख्यानक एक परिचित आकर्षण अपराधी चिन्हलाक समय उत्पन्न होइत अछि। एहि बीस दृश्यमे तकर बदला पुनर्वासक कार्य, शोध-प्रश्न, सार्वजनिक प्रतिपूर्ति, अपीलक आंशिक परिणाम आ कथाक सम्भावित पुनर्लेखन अछि। कथा स्वयं अपराध-जाँचक कथा लिखबाक कठिनाई पर विचार करैत अछि। ईशान जखन पुलिस, दर्शन, शोक आ अपराधक अत्यधिक भाषिक प्रभुत्वसँ बचबाक बात सोचैत अछि, तखन रचना स्वयंकथात्मक प्रश्न उठबैत अछि: ककर आवाजकेँ प्रमुख बनाओल जाए? एहिमे आत्मपरक आख्यानक सम्भावना अछि; मुदा ईशानक काल्पनिक पुस्तककेँ लेखकक वास्तविक जीवन अथवा मूल उपन्यासक प्रमाणित रचनात्मक इतिहास कहब निराधार होयत। शिल्पगत सीमा ई जे अनेक लघु दृश्य निष्कर्षक स्पष्ट नीतिवाक्य पर समाप्त

होइत अछि; व्यावहारिक जीवनक दीर्घ असमञ्जस आर स्थान पाबि सकैत छल।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : न्यायालय, परिवार, विद्यालय, बैंक आ शोधक अलग काल

एहि खण्डमे एकहि अपराध-इतिहासक पाँच अलग समय देखल जाइत अछि। न्यायालयमे अपील चलैत अछि; परिवारमे दशकों पुरान दुःख; विद्यालयमे नब पुस्तक पढ़ल जा रहल अछि; बैंकक गलत अंकन तुरन्त पेंशन रोकि सकैत अछि; आ शोधार्थी वर्षक बाद ककरो अनुभवकेँ उद्धरण रूपेँ प्रकाशित करैत छथि। सार्वजनिक घटना एकटा तिथि पाबि सकैत अछि, मुदा सामाजिक परिणामक समयरेखा अनेक अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ एकरे एकरे जाँचब महत्त्वपूर्ण अछि—कौन स्रोत कोन उद्देश्यसँ बनल, कोन असमर्थता रहल, आ केकरा अपन कथन पर नियन्त्रण छल। उपन्यास पाठसभ एहि तुलनाक आन्तरिक आधार दैत अछि; बाह्य ऐतिहासिक घटनाक सन्दर्भ एतय नब तथ्य रूपमे आरोपित नहि कएल जाए।

स्त्रीक स्वत्व, सामाजिक कार्य आ ‘ज्ञान बनल दुःख’क मर्यादा

मृणालिनी प्रतिपूर्ति स्वीकार करैत छथि, मुदा ओकरा क्षमा नहि कहैत छथि। धनेश्वरीक नाम सँ पुस्तक-कोष बनबैत छथि, मुदा दिखावाक पट्ट अस्वीकार करैत छथि। शोधार्थीकेँ साक्षात्कार दैत छथि, मुदा अपन वीरांगना-चित्रण रोकैत छथि। वैदेही अनुमति माँगैत छथि आ उद्धरणमे नाम नहि देबाक शर्त मानैत छथि। मंजरी भाईक मंचीय स्वीकार देखैत छथि, मुदा अपन छूटल वर्ष स्वतः वापस नहि पबैत छथि; तृषा पिता केँ नव व्यवहार करैत देखैत छथि, मुदा विश्वास पूर्ण भेल नहि। एहि स्त्री-अनुभवसभकेँ पुरुष अपराधीसभक नैतिक उद्धारक सजावट बनबैत नहि पढ़ब चाही। अलग-अलग स्त्रीक अपन दायित्व, समय आ सीमा अछि।

शीर्षकक पुनर्विचार : रक्षक-जीव, सामान्य जीव आ मनुष्यक पदचिह्न

उपन्यासक आरम्भमे बिज्जी साँपसँ बालककेँ बचबैत अछि। अन्तक समीक्षाधीन खण्डमे बिज्जी आ गोहि प्राकृतिक जीव सेहो छथि, जकरा मानवीय अपराधक निश्चित प्रतीक मानब गलत होयत। वैदेही फोटो नहि लैत छथि; मृणालिनी गोहि अनुपस्थित रहलाक बादो नदी देखैत छथि; विद्यालयक विज्ञान-पुस्तक शिकारी-शिकारक जैविक सन्दर्भ कहैत अछि; कादोमे स्त्रीक अपन पदचिह्न बनैत अछि। एहि दृश्यसभकेँ एकठाम पढ़िते स्पष्ट होइत अछि जे सजग नागरिकता सर्वत्र अपराधी खोजबाक मानसिकता नहि। पहराक आवश्यकता अछि, लेकिन जीवनकेँ भयक स्थायी कारागार बनायब उपन्यासक उद्देश्य नहि। ई रूपक पर लेखकीय आत्म-नियन्त्रणक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

सोलहम बैचक समेकित आलोचनात्मक निर्णय

दृश्य ३०१–३२०क विशिष्ट साहित्यिक योगदान अपराधक समाधानक ‘बाद’क नैतिक जीवन देखेनाइ अछि। दोसर व्यक्तिक अनुभवसँ जागरूकता, संस्थागत धनसँ सीमित प्रतिपूर्ति, पोथी द्वारा स्मृति, जाँच द्वारा निरपराधक संरक्षण आ लेखन द्वारा जटिलताक कलात्मक पुनर्संरचना—ई सभ एकर अलग-अलग विषय अछि। किछु दृश्य अत्यन्त लघु आ नीतिवाक्य-प्रधान छथि, जाहिसँ पात्रक असहमतिक स्वतंत्र विस्तार कम भेटैत अछि; तथापि काँपैत हाथ, किताबक भीतरक मुहर, फाड़ल पन्ना, स्कूलक ठोकर खाइत बच्चा, चाह-दोकानक कप आ पानिक कात मनुष्यक पदचिह्न सन वस्तुगत बिम्ब लेखकक कथनकेँ जमीन दैत अछि। न्यायिक दोष-सिद्धि, व्यक्तिगत स्वीकार, अनुसन्धानक साक्ष्य आ साहित्यक कल्पनाकेँ गड्मड नहि करब एहि बैचक मूल आलोचनात्मक निष्कर्ष अछि।

अध्ययन-इकाई ८१ — जीव आ रूपकक पृथक अधिकार : बिज्जीक परिवारसँ सार्वजनिक जीवन धरि (मूल दृश्य ३२१–३२४)

दृश्य ३२१ : रक्षककेँ आश्रित नहि बनायब आ दृश्य पर लेखकीय अधिकारक सीमा

उपन्यासक आरम्भमे बिज्जी धनेश्वरीक घरमे गहुमनसँ बचेनिहार जीवक रूपमे प्रवेश करैत अछि; अनेक वर्षक आपराधिक, सामाजिक आ विधिक प्रसङ्गक पछाति आँगनमे ओकर नव परिवार देखाइत अछि। दृश्य ३२१ एहि प्रतीकक अर्थक महत्त्वपूर्ण विस्तार करैत अछि। एक बिज्जी, दू बिज्जी, फेर तीन बच्चाक उपस्थिति संकटपूर्ण युद्ध नहि, स्वतन्त्र प्राणी-जीवनक क्रम अछि। साँप वा गोहि अनुपस्थित अछि। एहि अनुपस्थितिक कारण दृश्य अलंकारक पहिने जकाँ युद्धनिष्ठ अर्थ कैँ स्वतः दोहरबैत नहि; ओ अपन जीवकीय अस्तित्वमे रहैत अछि। लेखक प्रतीककेँ सजीव राखैत ओकर उपयोगितावादी बन्धन ढील करैत छथि।

मृणालिनी भोजन नहि रखैत छथि आ जीवकेँ पालतू बनायब नहि चाहैत छथि। हुनकर ‘रक्षककेँ आश्रित मत बनाउ’ कथन केवल पशु-व्यवहारक व्यावहारिक नियम नहि; संरक्षण आ नियन्त्रणक भेद पर टिप्पणी सेहो अछि। जे जीव कखनो घर बचौलनि, तकरा बदला घरक स्वामित्वक अधीन करब कृतज्ञताक एक उलट रूप भऽ सकैत छल। मृणालिनी एहि उलटावकेँ रोकैत छथि। एकरा मनुष्यक सम्पूर्ण राजनीतिक नैतिकताक सिद्धान्त बना देब पाठसँ बेसी कहल होयत; मुदा घरक एक विशिष्ट निर्णयमे परोपकार आ अधिग्रहणक अन्तर खुलैत अछि।

ईशान एहि सुन्दर दृश्यकेँ लिखबाक सामग्री मानैत अछि, फेर अपने कैँ रोकैत अछि। एहि आत्म-प्रतिबन्धमे लेखकक आत्मालोचना निहित अछि। घटनाक साक्षी होयब ओकरा घटना पर साहित्यिक अधिकार नहि देइत। पहिने जे परिवारक प्रत्येक छोट संकेत अपराध-इतिहासक अर्थमे पढ़ल जाइत छल, एखन ओ किछु वस्तुकेँ निरर्थक नहि, स्वतन्त्र अर्थवला मानब सीखैत अछि। शिल्पगत

उपलब्धि दृश्यकेँ बहुत छोट रखबाक अछि: कोनो नव षडयन्त्र, न समाधान, केवल जीवक खेल। सीमासँ रहल ई छोटपन पाठककेँ सतत आपराधिक सन्देहसँ बाहरक जीवन देखेबाक अवकाश दैत अछि।

दृश्य ३२२ : सजीव गोहि आ अपराधक अमानवीय रूपक पर पुनर्विचार

कमला-बलानक किनार एक वास्तविक गोहि देखिते गामक बच्चासभमे भय आ हिंसाक सम्भावना जागैत अछि। कियो पाथर उठबैत अछि; ईशान रोकैत अछि। ई लघु घटना उपन्यासक शीर्षक पर स्वयं उपन्यासक प्रश्न अछि। ‘गोहि सभक बीच’ अपराधक गुप्त जालक अलंकार छल, मुदा अलंकारक शब्द सचमुच जीव पर आरोप बनि सकैत अछि। बच्चाक ‘गोहि खराब’ उत्तर देखबैत अछि जे साहित्यिक समानता सामाजिक व्यवहारमे गलत वर्गीकरणक साधन बनि सकैत अछि। ईशानक सुधार—गोहि जीव अछि, अपराधी नहि—रूपकक उपयोगक सीमा निर्धारित करैत अछि।

दृश्य खास कऽ ताहि लेल विश्वसनीय अछि जे ईशान पहिने ठिठकैत अछि। ओ कथा लिखनिहार अपन भाषा आ ओकर प्रभावक सम्बन्ध तत्काल नहि बुझैत; बच्चाक प्रश्न ओकरा पुनर्विचार लेल विवश करैत अछि। साँप आ बिज्जी सम्बन्धमे सेहो एकहि उत्तर देब प्रतीक-व्यवस्थाक नैतिक सममिति बनबैत अछि। एक जीव नैसर्गिक रूपसँ अपराधी, दोसर नैसर्गिक रूपसँ न्यायाधीश नहि। मनुष्यक गलत काजक मूल्याङ्कन कर्म पर होएत, प्रजातिक नाम पर नहि। बच्चा पूर्ण सन्तुष्ट नहि होइत अछि; सीखबाक प्रक्रिया नाटकीय भाषणसँ समाप्त नहि होइत। मुदा पाथर नहि फेकल जाएब तत्काल बचावक दृश्यगत प्रमाण अछि।

ईशान पाण्डुलिपिमे स्पष्टीकरणक एक पाँति जोड़ैत अछि आ फेर सोचैत अछि जे ई अत्यन्त स्पष्ट तँ नहि। एहि आत्मसंशयमे शिल्पगत कठिनाइ अछि। रूपकक सजीवता कखनो अस्पष्टतासँ बढ़ैत अछि, मुदा अस्पष्टता यदि निर्दोष जीव पर हिंसाक कारण बनय तँ लेखककेँ व्याख्याक दायित्व स्वीकार करय पड़ैत अछि। उपन्यास एहि संघर्षकेँ पूरी तरह समाधान नहि करैत; स्वतन्त्र

साहित्यिक प्रभाव आ सार्वजनिक व्यवहारक बीच तनाव खुलल रहैत अछि। ‘गोहि’क नैतिक निरपराधिता कहैत लेखक आपराधिक पात्रसभक दायित्व नहि मेटबैत छथि; ओ केवल प्रतीकक स्रोत-वस्तु आ मनुष्यक नैतिक कर्म अलग करैत छथि।

दृश्य ३२३ : मृणालिनीक छोट सम्पादकीय निर्णय आ नैतिक स्पष्टताक मूल्य

मृणालिनी ईशानक जोड़ल पाँति पढ़ि स्वीकार करैत छथि। ईशान पूछैत अछि—स्पष्ट कथनसँ साहित्यक प्रभाव कम तँ नहि भेल? हुनकर प्रतिप्रश्न बच्चाक गोहि पर हिंसाक सम्भावना दिस ध्यान दैत अछि। एहि आदान-प्रदानमे आलोचना पाठक-विमुख कलात्मक नियम नहि रहि, जीवनक उत्तरदायित्व बनैत अछि। मृणालिनी छन्द, कथानक अथवा काव्यशास्त्रक व्याख्या नहि करैत छथि; ओ पाठकक गलत अर्थ ग्रहणक परिणामकेँ सोझाँ रखैत छथि।

एतय एक सीमा मानब चाही। हरदम स्पष्ट नैतिक अर्थक आग्रह साहित्यकेँ उपदेशमे बदलि सकैत अछि; उपन्यासक दीर्घ उत्तरकथामे एहन जोखिम अछि। मुदा एहि विशेष दृश्यमे लेखक एक घटना देखेने छथि—बच्चाक उठाओल पाथर—जाहिसँ स्पष्टीकरणक कारण ठोस बनैत अछि। तेँ ई संवाद केवल सिद्धान्तक घोषणापत्र नहि। मृणालिनीक स्वीकृति ईशानक सम्पूर्ण भविष्यक लेखन लेल सार्वभौम अनुमति सेहो नहि; ई एक पाँतिक समुचित प्रयोग पर विशिष्ट सहमति अछि।

दृश्य ३२१ मे ईशान किछु सुन्दर चीज लिखबाक बदला देखब चुनने छल; ३२२–३२३ मे एक सुन्दर रूपकक खतरनाक अर्थ लिखि स्पष्ट करब चुनैत अछि। दुनू चयन परस्पर विपरीत नहि। पहिल चयन जीवनकेँ साहित्यक कच्चा माल नहि मानबाक अछि; दोसर साहित्यक अपन सम्भावित परिणामक प्रति सजग रहबाक। एहि द्विधाक बीच उपन्यासक परिपक्व लेखकीय चेतना उभरैत अछि। छोट संवादक लय आलोचनाक एहि परिवर्तनकेँ सहज करैत अछि, यद्यपि कथा एकर बदला आणविक प्रमाण वा विस्तृत पाठक-अनुसन्धान प्रस्तुत नहि करैत।

दृश्य ३२४ : पात्रसभक संक्षिप्त पुनरागमन आ दायित्वक दीर्घकाल

दृश्य ३२४ अनेक पात्रक छोट-छोट स्थितिसभ एक क्रममे रखैत अछि—धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषमे पुस्तक बढ़ैत अछि; मंजरी अस्पतालमे काज पबैत छथि; अभिषेकक बैंक-अभिलेख सामान्य होइत अछि; सबीना सिलाइ-मशीन किनैत छथि; शैलेशक परिवारक संवाद पूर्ण ठीक नहि, मुदा चलैत अछि। एकहि समय रितेशक दोकान, प्रदीपक प्रशिक्षण, तृषाक विधि-अध्ययन, विहानक संस्थागत संघर्ष, केशवक दण्ड, सौरभक अपील, रचनाक नव जाँच आ ईशानक लेखनक उल्लेख अछि। ई सूची केवल सुखान्तिक गणना नहि; सभ पात्र एकहि प्रकारक अन्त पाबि गेल, एहन निष्कर्षक स्पष्ट निषेध एहि क्रममे अछि।

प्रत्येक छोट वाक्य एकरूप परिणामक अपेक्षा काटैत अछि। जँ शैलेशक घर पूर्ण ठीक नहि भेल तँ संवाद जारी रहब उपलब्धि अछि, सम्पूर्ण समाधान नहि। केशव दण्ड भोगैत अछि, तँ ओकरा पश्चात्जीवनक अवसरक उल्लेख दण्डक समाप्ति नहि। अभिषेकक सामान्य बैंक-अभिलेख ओकरा द्वारा परिवारकेँ भेल पुरान क्षति स्वतः समाप्त नहि करैत। ई भिन्न गति सामाजिक परिवर्तनक वास्तविक जटिलता देखबैत अछि। तथापि एतय घटनासभ विवरण बिनु छोट सूचीमे दऽ देल गेल अछि; ई दृश्यगत नाटकीयता अपेक्षा प्रतिवेदनात्मक कड़ी बेसी अछि। समीक्षा एहि शिल्पगत सीमाकेँ नजरिअन्दाज नहि करत।

अन्तिम प्रतिपादन जे व्यक्ति केवल अपराधी वा केवल पीड़ित नहि—एहि पात्रसभक दीर्घ यात्रा पढ़बाक एक उपयुक्त दिशा अछि; मुदा एकर अर्थ दायित्वक विलयन नहि। मूल पाठ स्वयं भूमिका बदलि सकबाक संग दायित्व नहि मेटबाक बात जोड़ैत अछि। एहि संयोजनमे उपन्यासक नैतिक उपलब्धि अछि: मनुष्यक परिवर्तनक सम्भावना स्वीकार करब आ न्यायिक तथ्यक हिसाब एक्के बेर सुरक्षित रखब। दृश्य ३२१क जीवकीय स्वातन्त्र्यसँ ३२४क बहुस्वरी सामाजिक जीवन धरि ई खण्ड एकरे विस्तार अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

एहि चारि दृश्यमे जीव, रूपक, लेखन आ सार्वजनिक मूल्याङ्कनक सीमा अलग-अलग बनैत अछि। बिज्जी अपन स्वतन्त्र जीवन जीबैत अछि; वास्तविक गोहि आपराधिक प्रतीकक दोष नहि भोगय; ईशान पाण्डुलिपिक प्रभाव सुधारैत अछि; पात्रसभक जीवन एकरूप उपसंहार बनि नहि जाइत। भारतीय साहित्यिक परम्पराक ध्वनि आ व्यञ्जनाक उपयोग रूपककेँ अर्थ-विस्तार दैत अछि, मुदा उपन्यास एतय एहि विस्तारक सामाजिक उत्तरदायित्व सेहो मानैत अछि। पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्तमे पाठकक सम्भावित अर्थग्रहणक प्रश्न एहि दृश्यसँ मिलैत अछि, मुदा ई तुलना कृति-विशेषक प्रत्यक्ष ऋण-दावा नहि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ मानवेतर प्रकृति, पारिवारिक स्मृति आ आर्थिक न्याय तीनूकेँ एकरूप इतिहासमे घुलाबयब उचित नहि; एकर समकालिक उपस्थिति स्वयं कथाक सौन्दर्य अछि। उपलब्धिक संग जोखिम सेहो अछि—स्पष्ट नीतिवचन आ पात्र-पञ्जीक सूची उपन्यासक उत्तरकथाकेँ कतहु अत्यधिक व्याख्यात्मक बनबैत अछि। छोट जीवन्त दृश्यसभ एहि शिथिलताक प्रतिकार करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८२ — परिवारक पाँच पाँति, बदलैत संसार आ लेखकीय प्रमाण-अनुशासन (मूल दृश्य ३२५–३२८)

दृश्य ३२५ : धनेश्वरीक पोथीमे पाँच पाँतिक न्याय

मृणालिनी रातिमे ईशानकेँ धनेश्वरीक पोथी अनबाक लेल कहैत छथि। पहिनुक तीन पाँतिमे खतरा बिना देखल मानि नहि लेबाक, देखलाक पछाति भयक बदला बुद्धिसँ पहरा देबाक, आ पहराकेँ जागरूकतासँ जोड़बाक शिक्षा अछि। एहि निजी लघु अभिलेखक सन्दर्भमे एक उल्लेखनीय अन्तर अछि: सरकारी फाइल सभमे दोष, अभिलेख आ निर्णय विशिष्ट प्रमाणसँ जाँचल जाइत अछि; घरेलू पोथी जीवन जीबाक व्यावहारिक नियम सहेजैत अछि। दुनू मूल्यवान अछि, मुदा एकक नियम दोसरक विधिक अधिकारक विकल्प नहि बनि सकैत।

मृणालिनी चौठी पाँति जोड़ैत छथि—ककरो दोषी कहबाक पहिने ओकर नाम नहि, काज देखबाक चाही। ई उपन्यासक पुरान अभिलेखीय संकट आ जाति, पद, पारिवारिक सम्बन्धक पूर्वग्रहक विरुद्ध एक नैतिक नियम बनैत अछि। मुदा ‘काज देखू’क अर्थ केवल अपन आँखिसँ देखल दृश्य नहि; उपन्यासक जाँच-पद्धतिमे दस्तावेज, विश्वसनीय कथन आ परस्पर परीक्षण सेहो आवश्यक छल। तेँ घरेलू सूत्रकेँ पाठक एहि व्यापक प्रमाण-पद्धतिक प्रतीकक रूपमे पढ़ि सकैत छथि; एकरे शाब्दिक रूपसँ पूर्ण विधिक प्रक्रिया कहब अनुचित।

ईशान पाँचम पाँतिमे अपन अनभिज्ञता स्वीकार करबाक अनुशासन लिखैत अछि। एतय नव्य न्यायसँ एक रचनात्मक तुलना सम्भव अछि: जे वस्तु ज्ञात नहि, तकरा ज्ञात कहि प्रस्तुत करब प्रमाण-व्यवस्थामे दोष अछि। यद्यपि ई घरेलू पोथी नव्य न्याय पर विधिवत् ग्रन्थ नहि, तकर वाक्य प्रमाण-असिद्धताक स्वीकारक महत्त्व सहज भाषामे रखैत अछि। मृणालिनी आ ईशान दुनू एहि सूत्रकेँ ‘घरक बात’ कहैत छथि; ई विनम्रता ओकर ताकत अछि। न्यायिक ज्ञानक उच्चासनसँ हटि जीवनक साधारण व्यवहारमे सावधानी उतरल अछि। पाँच

पाँतिक गठन शिल्पमे अत्यन्त संयत अछि; भाषिक प्रवचनक बदला विरासत बनबाक प्रक्रिया देखाइत अछि।

दृश्य ३२६ : कमला-बलानक बिहान आ संस्थागत संसारक सहअस्तित्व

भोरक कुहेस, बिज्जी, पानिक भीतर गोहि आ घासमे सम्भावित साँप—ई आरम्भ एक बेर फेर मानवेतर संसारकेँ अपराध-जाँचक बाहरी भूगोलमे रखैत अछि। एकर ठीक पाछाँ चूल्हि, विद्यालय, बैंक, अदालत, मोबाइल, निविदा, रेल, सिलाइ-मशीन, अस्पताल, कारा आ किताबक एक लम्बा क्रम अबैत अछि। ई सूची उपन्यासक बहुधा अलग-अलग चलल जगतसभकेँ एक भोरमे संग देखबैत अछि। कमला-बलानक प्राकृतिक समय आ मनुष्यक संस्थागत समय समकालिक अछि, परस्पर पर्याय नहि।

ईशान अपन पाण्डुलिपि बन्द कऽ फेर लिखय लगैत अछि। ई क्रिया अन्तिमता आ निरन्तरताक तनावक संकेत अछि। लेखन एक बेर समाप्त मानि बंद भऽ सकैत अछि, मुदा जीवनक नव सन्दर्भ ओकर प्रश्न फेर खोलि दैत अछि। ‘कियो जागल अछि कि नहि’ आ ‘भयसँ देखैत अछि कि बुद्धिसँ’—एहि दू प्रश्नसँ पुरान धनेश्वरी-सूत्र समग्र आख्यानक पुनर्पाठ बनैत अछि। ई प्रश्न आचरण-सापेक्ष अछि; जागरूकता एक निश्चित निर्णय नहि, नव परिस्थिति पर पुनः अभ्यास अछि।

दृश्य ३२१ मे ईशान बिज्जीक खेल लिखबाक बदला देखैत छल; एतय ओ पदचिह्नक फोटो नहि लैत। दुनू अवसर दृश्य पर कब्जा करबाक प्रवृत्ति सँ दूरी देखबैत अछि। मुदा एतय एहि चयनकेँ फोटोग्राफीक सामान्य निषेध नहि मानब चाही; मूल पात्रक एक निजी क्षणमे स्मरणक माध्यम चुनबाक प्रसङ्ग अछि। शिल्पगत सीमा ई जे संस्थासभक सूची विस्तृत जीवनक झलक देइत अछि, किन्तु अपन आपमे प्रत्येकक ठोस आर्थिक-सामाजिक अवस्था नहि खोलैत। काव्यात्मक समाहारक रूपमे ई कारगर अछि; ऐतिहासिक प्रतिवेदनक रूपमे अपूर्ण रहत।

दृश्य ३२७ : सुमेधाक मार्जिन-टिप्पणी आ सर्वज्ञ कथनक संकट

ईशानक गोपनीय पाण्डुलिपि पहिल बेर सुमेधा घोषक आलोचनात्मक पठन लेल बाहर जाइत अछि। ओ भाषाक परीक्षण चाहैत अछि, कथानकक सुधार नहि; मुदा सुमेधाक दू टिप्पणी कथाक ज्ञान-स्रोत पर प्रश्न उठबैत अछि। ‘हम सभ जानैत छी’क सर्वनामक सामान्यीकरण आ ‘एहि पात्रक मनक बात लेखक कोना जानैत’क सवाल एकहि अनुशासनक दू पक्ष अछि: सामूहिक ज्ञानक दावा आ व्यक्तिक अन्तःकरण पर कथनाधिकार दुनूकेँ आधार चाही।

ई प्रश्न उपन्यासक पहिनुक सार्वजनिक दोषारोपणक कथासँ घनिष्ठ अछि। जखन समाचारक शीर्षक न्यायालयक सीमित निर्णयकेँ सम्पूर्ण मुक्ति बनबैत छल, तखन ‘सभ’ जानैत छियैए कहबाक भ्रामक अधिकार सेहो निर्मित होइत छल। सुमेधाक सम्पादकीय सुधार ओही प्रवृत्तिक साहित्यिक रूप पर रोक अछि। ईशान अपन लेल एक निजी नियम रखैत अछि—ककरो अन्तर्मनक स्वतन्त्र कल्पना हो तँ पात्र पूर्ण काल्पनिक होअय; वास्तविक अनुभवक छाया हो तँ अनुमानक सीमा स्पष्ट रहय। ई नियम आत्म-संयमक अभ्यास अछि, सम्पूर्ण साहित्यशास्त्रक सार्वभौम सिद्धान्त नहि।

सुमेधाक अन्तिम परिहास—लेखकजकाँ बाजू, नोटिसजकाँ नहि—आलोचनाक संतुलन बनबैत अछि। जँ पाण्डुलिपि मात्र विधिक सावधानीक सूची बनि जाए तँ अनुभवक सौन्दर्य आ कल्पनाक स्वायत्तता सिकुड़त। जँ कल्पनाक नाम पर व्यक्तिक अप्रमाणित मनोदशा निश्चित इतिहास बनि जाए तँ सत्यक प्रति उत्तरदायित्व घटत। एहि दोहाक बीच ईशानक लेखन विकसित होइत अछि। सुमेधा पूर्ण कृति सम्पादित कयने छथि, एहन प्रमाण नहि; केवल देल गेल अंशपर लिखल प्रतिक्रिया अछि। एहि सीमाक भीतर ई दृश्य उपन्यासक आत्मप्रतिबिम्बी आलोचनामे विशेष सार्थक अछि।

दृश्य ३२८ : तृषाक विधि-प्रस्तुति आ आदेश-पालनक सीमित बचाव

तृषा कानून महाविद्यालयमे आर्थिक अपराधक नैतिक उत्तरदायित्व आ विधिक दोषक अन्तर पर प्रस्तुति दैत छथि। प्रश्न उठैत अछि: कर्मचारी मालिकक

आदेशक पालन कऽ अपराधक हिस्सा बनल तँ दोष ककर? हुनकर उत्तर एक-व्यक्ति केन्द्रित नैतिक नारा नहि, भूमिका-विशेषक जाँच अछि। भय, नौकरी हेरायबाक आशंका आ आदेशक दबाव प्रसङ्ग होइत अछि, मुदा स्वतः निर्दोषता नहि। मालिक सेहो पदक कारण प्रत्येक काजक सम्पूर्ण दोषी मानल नहि जा सकैत। एहि व्यवहारिक संतुलनमे उपन्यासक लम्बा न्यायिक यात्रा अकादमिक संवाद बनि रहल अछि।

तृषा अपन पिताक नाम प्रस्तुति मे नहि अनैत छथि। विद्यार्थीकेँ व्याख्या देबाक लेल ओ निजी परिवारक इतिहासक अनिवार्य प्रदर्शन नहि चाहैत। किन्तु घर घुरि पिताकेँ कहैत छथि जे हुनक अनुभवक कारण प्रश्न बुझि सकलीह। ई निजी स्वीकार सार्वजनिक तर्कक उलट नहि; ज्ञान-निर्माणमे निजी अनुभवक भूमिका आ ओकर सार्वजनिक सत्यापनक भेद अछि। पिता राहत अनुभव करैत अछि, बादमे बेटीक उत्तर सुनि चुप रहैत अछि। एहि मौनमे पारिवारिक लज्जा, राहत आ बदलबाक सम्भावनाक अनिश्चित भाव अछि; समीक्षक एकटा निश्चित मनःस्थिति आरोपित नहि कऽ सकैत।

कक्षाक हँसी—सरल उत्तर लेल नारा देखबाक टिप्पणी आ अध्यापकक परीक्षासम्बन्धी परिहास—गम्भीर विधिक विमर्शमे सहजता अनैत अछि। तथापि परीक्षा-शिल्पक व्यङ्ग्यसँ कानूनक समस्त जटिलता समाप्त नहि होइत। भारतीय न्याय-मीमांसाक हेतु कारण, कर्ता, प्रसङ्ग आ प्रमाण अलग जाँचल जाइत अछि; तृषाक संवाद एहि भेदक साहित्यिक अभ्यास अछि, विशिष्ट अधिनियमक आधिकारिक व्याख्या नहि। उपन्यासक सफलता ई जे दायित्वक विभाजन एक अकादमिक सूत्र मात्र नहि, पीढ़ीगत सम्बन्धक माध्यम बनैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३२५–३२८ चारि प्रकारक ज्ञान-स्रोत अलग करैत अछि—घरक पाँच पाँति, भोरक प्रत्यक्ष प्रकृति, पाण्डुलिपिपर सम्पादकीय टिप्पणी आ कानूनक सार्वजनिक बहस। पहिल अनुभवक अनुशासन, दोसर संसारक बहुलता, तेसर कथनक वैधता

आ चारिम दायित्वक भूमिका-जाँच देखबैत अछि। नव्य न्यायमे अनिश्चित ज्ञानक सीमा स्वीकार करब, पाश्चात्य अपराध-आख्यानमे सर्वज्ञ वक्ताक विश्वसनीयता जाँचब, आ विदेहक समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे घर–अदालत–विद्यालयक ज्ञानक सम्बन्ध देखब—ई सभ तुलनाक उपयोगी स्तर अछि। मुदा एहि कृतिसँ कोनो विशिष्ट दार्शनिक सूत्रक प्रत्यक्ष उधार स्वतः प्रमाणित नहि होइत। साहित्यिक उपलब्धि निजी आ सार्वजनिक प्रश्नक स्वाभाविक आवागमनमे अछि। शिल्पगत जोखिम बारम्बार स्पष्ट नैतिक सूत्र रखबाक अछि; एहि बैचमे सुमेधाक हलुक व्यङ्ग्य आ तृषाक कक्षाक हँसी एहि जोखिमकेँ पर्याप्त हद तक संतुलित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८३ — नकारात्मक न्याय, स्मृतिक उपयोग आ सार्वजनिक संस्थाक आत्मस्वीकार (मूल दृश्य ३२९–३३२)

दृश्य ३२९ : गलत पहिचान रोकब स्वयं न्यायिक उपलब्धि

रचना सिन्हाक नव मामला अदालत पहुँचलासँ पहिने बन्द होइत अछि। शिकायतकर्ताक गलत पहिचान आ समान नामवला दोसर बैंक-खाताक अभिलेखीय मेल गड़बड़ीक कारण छल। युवा अधिकारी तीन सप्ताहक मेहनत व्यर्थ मानैत अछि; रचना उत्तर दैत छथि जे गलत व्यक्ति पर अभियोग नहि बनल। एहि असहमतिक आधार अपराध-जाँचक सफलताक परिभाषा अछि। जाँचक लक्ष्य ककरो अपराधी घोषित करब नहि, उपलब्ध तथ्यक आधारपर वैध निष्कर्ष पर पहुँचना अछि; वैध निष्कर्ष अपराधक आधार नहि होएबाक सेहो भऽ सकैत अछि।

रचना फाइलमे अभिलेखीय त्रुटि लिखैत छथि। लिखित कारणक महत्त्व अछि, कारण मौखिक ‘मामला बन्द’ सुनब मात्र निर्दोष व्यक्तिक भविष्यक रक्षा लेल पर्याप्त नहि होयत। तथापि मूल पाठ पूर्ण बैंक-सुधार, क्षतिपूर्ति वा खाताधारकक व्यक्तिगत पुनर्वासक जानकारी नहि दैत। समीक्षक एतेक कहि सकैत अछि जे अनुचित आपराधिक कार्यवाही रोकल गेल। अहाँ सभटा नकारात्मक प्रमाणक न्यायशास्त्रीय अर्थ एही सीमित उपलब्धिमे देखू।

एहि दृश्यसँ उपन्यासक आरम्भक गलत दोषारोपणक अनुभव फेर स्मरण होइत अछि। पुलिसक अनावश्यक गिरफ्तारीक जोखिम, समाचारक शीर्षक आ परिवारक लज्जा—पछिला प्रसङ्गसभ एकटा सरल डेटा-मेल त्रुटिक सम्भावित परिणामक पाछाँ उपस्थित अछि। रचनाक प्रशंसा पुरस्कार अथवा समाचारक आधारपर नहि; जे अन्याय नहि घटल ताहि पर अछि। कथा अप्रमाणित अपराधसँ अधिक निर्दोष व्यक्तिक जोखिम देखबैत, प्रक्रियात्मक न्यायकेँ मानवीय बनबैत अछि। ई सूक्ष्म दृश्यक संयम उपन्यासक अधिक घोषणात्मक उत्तरकथाक बीच एक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

दृश्य ३३० : धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोष आ पेशासँ परे जीवनक मूल्य

धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक पहिल वर्ष पूरा होइत अछि। प्रधानाध्यापक छोट सार्वजनिक कार्यक्रम चाहैत छथि; मृणालिनी व्यक्तिक फोटो नहि, पुस्तकक फोटो चाहैत छथि। पहिनुक दान-दृश्यकेँ ई प्रसङ्ग केवल दोहरबैत नहि; स्मारक-प्रक्रियाक निरन्तर जाँच देखबैत अछि। विद्यालयक संस्था समारोहसँ मान देब चाहैत अछि; दानकर्ता पाठकक उपयोगिता आगे रखैत छथि। दुनू लक्ष्य आवश्यक रूपेँ शत्रु नहि, मुदा एहि विशिष्ट सन्दर्भमे मंचीय सम्मान स्मृतिक मुख्य प्रयोजनकेँ पाछाँ धकेलि सकैत अछि।

एक बालक धनेश्वरीक परिचय पुछैत अछि—लेखिका? अध्यापिका? उत्तर दुनूमे नहि। तखन नामक औचित्यक प्रश्न सामाजिक प्रतिष्ठाक रूढ़ मापक पर चोट अछि। मृणालिनी बतबैत छथि जे वृद्धा बच्चासभक सीखब चाहैत छलीह। एहि संक्षिप्त उत्तरमे जीवनक योगदान पेशागत उपाधि अथवा प्रकाशित कृतिक संख्यासँ अलग मानल गेल अछि। घरेलू देखभाल, सजगता आ शिक्षाक इच्छा सार्वजनिक ग्रन्थालयक नामकरणमे स्थान पबैत अछि।

एतय एक आलोचनात्मक सावधानी राखब आवश्यक अछि: धनेश्वरीक स्मृति स्वयं लिखित जीवनी-इतिहास नहि; मृणालिनीक कथन परिवारक स्मृतिस्रोत अछि। विद्यालयक बालकक प्रश्न ओहि स्मृतिक सार्वजनिक स्वीकारक दृश्य अछि, सत्यापनयोग्य सम्पूर्ण जीवनचरित नहि। पोथी-कोषमे पुस्तक बढ़ल आ बच्चासभ सूची बनबैत छथि—एहि दृश्यगत संकेतसँ प्राथमिक उपयोगिता सिद्ध होइत अछि, किन्तु दीर्घकालीन अध्ययन-फल नहि। शिल्पगत सफलता एहि पाबन्दीमे अछि जे स्मृति मंचपर नायकत्वक बदला पाठकीय व्यवहारमे रूप पबैत अछि।

दृश्य ३३१ : अम्बरक संगोष्ठी आ संस्थागत अपराधबोधक सार्वजनिक भाषा

विहान सारंग अम्बरक नव कार्यालयमे ईशानकेँ डिजिटल मनोरञ्जन आ उपयोगकर्ता-सुरक्षाक संगोष्ठी लेल आमन्त्रित करैत अछि। ईशान मृणालिनीसँ

सलाह करैत अछि, कारण ‘अम्बर’ नाममे पुरान संकटक स्मृति सुरक्षित अछि। हुनकर उत्तर—आब ओ कर्मचारी नहि, प्रश्न पूछनिहार बनि जा—आश्रित सम्बन्धसँ आलोचनात्मक दूरीक दिशा देखबैत अछि। निमन्त्रण स्वीकार करब संस्था द्वारा पूर्व अन्यायकेँ क्षमा देब नहि; स्वतंत्र प्रश्न करबाक अवसरक प्रयोग अछि।

मंचपर विहान वृद्धि-आँकड़ाकेँ सफलता मानबाक अपन पुरान मान्यता पर प्रश्न करैत अछि। श्रोता पुछैत अछि जे ई बात न्यायालयक बाद बुझायल। विहान स्वीकार करैत अछि जे किछु पहिने बुझि सकैत छल। ई स्वीकार आत्मरक्षाक सुविधाजनक भाषा नहि, कारण एहि मे विलम्ब मानल गेल अछि। तथापि ई कथन संस्थागत सुधारक स्वतः प्रमाण नहि; व्यावहारिक सुरक्षा-नियम, शिकायत-निराकरण वा पुनरावृत्तिक नियन्त्रणक परिणामक कागज एहि दृश्य मे नहि देखाओल गेल अछि। ईशान स्वयं एहि भेदकेँ महसूस करैत अछि।

उपन्यासक आरम्भमे सत्यप्रकाशक विरोधक सामने संस्थागत भाषामे ‘व्यवस्था’क बहाना छल; एतय संस्थागत प्रमुख अपन पहिनुक चूकक सार्वजनिक स्वीकार करैत अछि। दुनू घटना समरूप नहि, मुदा भाषिक नैतिकताक विपरीत दिशा देखबैत अछि। लेखक एहि संक्रमणकेँ सहज सुखान्ति नहि बनबैत छथि—एक खुला प्रश्न राखैत छथि: सार्वजनिक कथन भविष्यमे उत्तरदायी व्यवहारमे बदलत कि नहि? एही अपूर्णताक कारण दृश्य आलोचनात्मक अर्थ पबैत अछि।

दृश्य ३३२ : मनोरञ्जनसँ वित्तीय दुरुपयोग धरि पाँच वृत्त आ कारण-सम्बन्धक मर्यादा

ईशान संगोष्ठीमे पाँच वृत्त बनबैत अछि—मनोरञ्जन, लत, ऋण, भर्ती आ वित्तीय दुरुपयोग। ई क्रम पाठकक लेल खतराक सम्भावित प्रसारक दृश्य-मानचित्र अछि, अनिवार्य कारण-सूत्र नहि। ओ स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे सभ उपयोगकर्ता एहि क्रममे नहि जाइत; सभ खेल अपराध नहि, सभ आर्थिक हार

लत नहि। एहि निषेधसभक कारण वैज्ञानिक-प्रतीत योजनामे नैतिक सावधानी अबैत अछि। एक त्रासद अनुभवसँ सभ मनोरञ्जनक सार्वत्रिक निन्दा करब तथ्यक उल्लङ्घन होयत।

युवा उद्यमीक प्रश्न उपयोगकर्ताक निजी उत्तरदायित्व दिस अछि। ईशान एकरा नकारैत नहि, मुदा संस्थागत उत्तरदायित्व सेहो जोड़ैत अछि। वैध मनोरञ्जन, जोखिमयुक्त डिज़ाइन, ग्राहकक निर्णय आ वित्तीय मध्यस्थताक दायित्व अलग-अलग स्तरक अछि। मूल पाठ ककरो विशिष्ट डिजिटल उत्पादक तकनीकी कार्य-पद्धति नहि खोलैत; तेँ समीक्षामे ई वृत्त वास्तविक सर्वेक्षण-सिद्ध अनुपातक नक्शा नहि मानल जायत। ई उपन्यासक घटनासभ सँ प्राप्त रूपकात्मक शिक्षण-साधन अछि।

एहि दृश्य मे आरम्भक छह प्रतिशतक दबावक कथासँ दूर आब डिजिटल मनोरञ्जनक सामाजिक जिम्मेदारीक चर्चा अछि। नव विषयक भौतिकता बदलल—निविदा, ट्रक आ अभिलेखसँ स्क्रीन, खाता आ मनोवैज्ञानिक जोखिम धरि—मुदा प्रमाणक नियम यथावत्: दायित्व निर्धारित करब भूमिका, जानकारी आ क्रियाक सम्बन्ध देखिकऽ। पाँच वृत्त मंचीय दृश्य बनेबाक कारण याद रहैत अछि, मुदा कथा यदि सभ चरित्रक अनुभवकेँ एक सार्वभौम चक्रमे खोंसय तेँ जटिलता घटि सकैत अछि। लेखकक स्पष्ट अपवाद एहि जोखिमसँ बचबाक आवश्यक औजार अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

एहि चारि दृश्य एकहि नैतिक लक्ष्यक चारि भिन्न अभ्यास प्रस्तुत करैत अछि: रचना अनुचित अभियोग रोकैत छथि; विद्यालय प्रतिष्ठाक समारोहसँ पुस्तक-उपयोग दिस ध्यान दैत अछि; विहान सार्वजनिक रूपसँ अपन विलम्ब स्वीकार करैत अछि; ईशान जोखिमक शिक्षणमे सार्वत्रिक दोषारोपण रोकैत अछि। नव्य न्यायसँ सम्बन्धित प्रमाणक अभाव आ खण्डित अनुमानक चेतना दृश्य ३२१ आ ३३२ मे विशेष स्पष्ट अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ गामक पुस्तक-कोष, कम्पनीक मंच आ राज्यक जाँच तीनू सार्वजनिक स्मृति

बनबैत अछि, मुदा तिनकर अभिलेखक भार समान नहि। पाश्चात्य अपराध-आख्यानक परम्परागत दोषी-पहिचानक उत्कर्षक बदला एतय अन्याय रोकबाक मौन सफलता देखाओल गेल अछि। कथा-शिल्पमे रचनाक लघु दृश्य अधिक ठोस; संगोष्ठीक भाषण अपेक्षाकृत उपदेशप्रधान। एहि असमानताकेँ माननें बिनु उत्तरकथाक समुचित आलोचना सम्भव नहि।

अध्ययन-इकाई ८४ — स्मृतिक प्रशिक्षण, अपीलक सीमित अर्थ आ पुनर्वासक व्यावहारिक परीक्षा (मूल दृश्य ३३३–३३६)

दृश्य ३३३ : विहानक प्रस्तावित प्रशिक्षण-कक्ष आ मृतकक नामक अनधिकृत उपयोग

संगोष्ठीक पाछाँ विहान ईशानसँ सत्यप्रकाशक पुरान ई-पत्र फेर पढ़बाक बात करैत अछि। ‘सेवा सत्यापन’ पर सत्यप्रकाशक आग्रह कँ स्मरण करब घटनाक इतिहासमे एक महत्त्वपूर्ण वापसी अछि। पहिने एहि प्रश्नकँ सार्वजनिक व्यवहारमे केहन ठाम देल गेल छल, तकर परिणाम पहिनुक दीर्घ अपराधगाथामे देखल गेल अछि। विहान अपन युवक होयबाक कारण डरि जेबाक बात कहैत अछि; ईशान उत्तर दैत अछि जे कम उमेरसँ दायित्व घटि सकैत अछि, शून्य नहि होइत। एतय नैतिक दोषक स्तरनिर्धारण अछि, सम्पूर्ण पीढ़ीकँ दोषमुक्त करब अथवा स्वतः अपराधी घोषित करबाक प्रयास नहि।

विहान अम्बरक पुरान भवनमे अभिलेख, गलत निर्णय, चेतावनी आ सुधारक प्रशिक्षण-कक्ष बनएबाक कल्पना करैत अछि। ई प्रस्ताव केवल ‘स्मारक’ नहि, संस्था द्वारा अपन गलतीक इतिहास कर्मीसभ समक्ष रखबाक इच्छाक रूपमे प्रस्तुत अछि। ईशानक तत्काल आग्रह—मृतकक नाम सजावट नहि बनय, पुरान गलतीक पूरा सन्दर्भ रहय—स्मृतिक नैतिक मर्यादा तय करैत अछि। जँ संस्था मृतकक प्रतिष्ठासँ अपन सार्वजनिक छवि चमकाबय आ कारण-सम्बन्ध लुकाबय, तँ ई स्मृतिक उपयोग नहि, स्मृति-शोधन होयत। इतिहासक प्रशिक्षणार्थ उपयोग तखन सार्थक होयत जखन गलती अप्रिय प्रश्नक रूपमे उपलब्ध रहय।

तथापि मूल दृश्य केवल कक्ष बनएबाक प्रस्ताव आ ईशानक शर्त दैत अछि। निर्माण भेल, सामग्री सत्यापित भेल, कर्मचारिसभ ओतय शिक्षित भेलाह अथवा संस्थागत निर्णय बदलल—एहि परिणामक प्रमाण नहि अछि। तँ आलोचना विहानक इच्छाकँ स्थापित सुधार-केंद्रक उपलब्धि नहि मानत। एहि सीमाक

स्वीकार स्वयं उपन्यासक प्रमाण-विवेकसँ सामञ्जस्य रखैत अछि। शिल्पक रूपमे ई संवाद अपराध-इतिहासकेँ एक नब संस्थागत प्रसङ्गमे घुरबैत अछि; मुदा प्रशिक्षण-कक्षक पूरा सम्भावना भावी कथाविकासक लेल खुलल छोड़ैत अछि।

दृश्य ३३४ : सौरभक उच्चतर अपीलमे तकनीकी राहत आ समाचारक भाषा

सौरभक उच्चतर अपील आंशिक स्वीकार भेलाक समाचार अबैत अछि। एक तकनीकी दोष हटैत अछि, मुख्य आर्थिक-सहयोग सम्बन्धी निष्कर्ष टिकैत अछि आ शेष दण्ड-अवधि घटैत अछि। एहि त्रिस्तरी परिणाममे न्यायिक निर्णयक खण्ड-विशेष प्रकृति अछि। आरोपक एक अंश हटब शेष आरोपक सिद्धताकेँ स्वतः असत्य नहि बनबैत; दण्डक अवधि घटब पूर्ण निर्दोषताक समतुल्य नहि। उपन्यासक पहिनुक मनोज, केशव आ सौरभक अलग अपील-प्रसङ्गसभ एहि महत्त्वपूर्ण भेदकेँ बारम्बार दृढ़ करैत अछि।

अखबार ‘बड़ी राहत’क भाषा चुनैत अछि; मूल आदेशक अर्थ सीमित अछि। मृणालिनी आब शीर्षक पढ़ि अंतिम निर्णय बुझब छोड़ि देलनि। हुनकर हँसी आ ईशानक ‘प्रगति’क उत्तरक पाछाँ ‘थाकान’क जोड़ देब महत्त्वपूर्ण अछि। विधिक सावधानी सीखबाक परिणाम केवल बौद्धिक उन्नति नहि; निरन्तर सार्वजनिक अतिरञ्जना जाँचैत थाकल परिवारक अनुभव सेहो अछि। संवादक छोट लय न्यायिक प्रक्रियाक लम्बा भारकेँ घरक साधारण क्षणमे समेटैत अछि।

एहि दृश्यमे अपीलक आदेशक सम्पूर्ण पाठ नहि अछि, केवल ओकर परिणामक कथात्मक सूचना अछि। समीक्षक एकर आधारपर हटाओल गेल तकनीकी दोषक अधिनियम, न्यायाधीशक तर्क वा आदेशक तारीख अनुमानित नहि करत। पाश्चात्य विधिक आख्यानमे नाटकीय बरी होयब एक उपलब्ध क्लाइमैक्स भऽ सकैत अछि; एतय खबरक अतिरञ्जनाक प्रतिपक्षमे सीमित राहतक संयत अर्थ प्रमुख अछि। कथा ई सिखबैत अछि जे न्यायालयक भाषा आ समाचारक भाषा अलग विधि सँ चलैत अछि, आ पाठककेँ दुनूक तुलना करबाक प्रशिक्षण चाही।

दृश्य ३३५ : कारा-पुस्तकालयक प्रश्नसभ आ आत्मचिन्तनक अप्रमाणित परिणाम

केशव जेल-पुस्तकालयमे डायरीक बदला प्रश्न लिखैत अछि। चेतावनीक कतेक बेर पुनरावृत्ति बाद अज्ञान बहाना नहि रहैत; संस्था द्वारा निर्धारित लक्ष्य कर्मचारीक नैतिकता कोना बदलैत; अनेक लाभार्थी रहिते दायित्व ककर; साफ कागजक भीतर दूषित धनक सम्भावना—एहि सभ प्रश्नमे अपराध-जालक पहिनुक अनुभवक सार उभरैत अछि। मुदा प्रश्न लिखब उपन्यासक भीतर एक नव नैतिक अभ्यास अछि, अपराधिक दण्डक बदला निजी साहित्य-रचनाक माध्यमसँ मुक्ति नहि।

कारा-शिक्षक लिखल पाँतिसभ लेख बनि सकबाक बात कहैत छथि। केशव अपनाकेँ लेखक नहि, देरिसँ प्रश्न पुछनिहार व्यक्ति कहैत अछि। एहि आत्मपरिचयमे अतीतक निष्क्रियता स्वीकारक एक संकेत अछि। शिक्षा-पद्धतिक अर्थ एतय समय काटबाक बदला विचारक अभ्यास बनैत अछि। भारतीय आ पाश्चात्य दण्ड-विमर्शक तुलना करैत ई कहि सकैत छी जे राज्यक दण्ड-व्यवस्था केवल अवधि पूरा करएबाक गणना हो, तँ सामाजिक पुनरागमनक सम्भावना कम भऽ सकैत अछि। मुदा एहि कथासँ कुनै विशिष्ट सुधारगृह-नीतिक परिणाम सिद्ध नहि होइत।

आवश्यक सावधानी ई अछि जे केशवक प्रश्नसभ ई कहि नहि सकैत जे ओ भविष्यक प्रत्येक परिस्थितिमे नैतिक आचरण करत। शंका आ प्रश्न सँ आत्मसमीक्षाक आरम्भ होइत अछि, विश्वसनीय व्यवहार-परिवर्तनक प्रमाण समयमे बारम्बार कर्म देखिकऽ भेटत। लेखकक महत्त्वपूर्ण संयम एहि भेदमे अछि; यद्यपि कारा-शिक्षकक अन्तिम सूत्र स्पष्ट नैतिक व्याख्या जकाँ सुनाइत अछि। दृश्य अपन सर्वोत्तम क्षणमे प्रश्नसभकेँ खुलल छोड़ैत अछि।

दृश्य ३३६ : रितेशक डिजिटल लेनदेनक अस्वीकार आ प्रमाणक छोट स्वरूप

रितेशक फोन-मरम्मतिक दोकानमे एक किशोर नेटवर्क समस्याक बहाना देइत दोसरा व्यक्तिक पाइ ओकर खातामे मँगाकऽ नगद देबाक आग्रह करैत अछि। कहल गेल रकम छोट अछि; किशोर जल्दीक तर्क दैत अछि। एहि शब्दसभमे रितेश अपन पहिनुक आर्थिक जालक परिचित रूप सुनैत अछि। ओकर तत्काल ‘नहि’ आ अपन रकम अपन खातामे रखबाक नियम एहि दृश्यकेँ जटिल आपराधिक अनुसन्धानसँ अलग एक व्यवहारिक परीक्षा बनबैत अछि। पुरान अपराध-इतिहासक स्मृति आब नव प्रस्तावक मूल्याङ्कन बदलैत अछि।

तथापि किशोर एहि दृश्य मे निश्चित अपराधी सिद्ध नहि। ओकर प्रस्ताव जोखिमयुक्त अछि, मुदा ओकर उद्देश्यक पूर्ण जाँच नहि भेल अछि। रितेशक अस्वीकारक विवेक एहि पर निर्भर नहि जे ओ किशोरक अन्तर्मन जानैत छल; ओ सामान्य जाँच-बिनु पराई रकमक मध्यस्थता स्वीकार नहि करबाक निर्णय करैत अछि। ई नकारात्मक सावधानी नव्य न्यायक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण: असिद्ध अपराधक निष्कर्ष निकालने बिनु जोखिमपूर्ण काजसँ बाँचल जा सकैत अछि। एहि प्रकार प्रमाण-अनिश्चितता कखनहुँ निष्क्रियता नहि, मर्यादित व्यवहारक आधार होइत अछि।

रितेशक हाथ काँपब आ अभिषेककेँ फोन करब देखबैत अछि जे भेद बुझब भावनात्मक भय मिटेबाक बराबर नहि। अभिषेकक छोट स्वीकृति ‘ठीक केलह’ अनौपचारिक सामाजिक समर्थन अछि; ई कोनो विधिक प्रमाणपत्र नहि। दुबिधाक ई क्षण उपन्यासक प्रशिक्षण, अदालत आ सार्वजनिक सुधारक लम्बा कथासँ अधिक तत्काल विश्वसनीय लगैत अछि, कारण पात्रक चुनाव बिना मंच आ भाषणक घटैत अछि। एक बेरक अस्वीकार पूर्ण नैतिक पुनर्जन्म सिद्ध नहि करैत; मुदा व्यवहारक प्रत्यक्ष, स्रोतस्थित परिवर्तनक मूल्य अवश्य देखबैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३३३–३३६मे स्मृतिक प्रशिक्षण-कक्षक प्रस्ताव, अपीलक सीमित निर्णय, काराक प्रश्न-पञ्जी आ रितेशक अस्वीकार चारि अलग कालक्रमक गतिविधि अछि। एकटा भावी संस्थागत संकल्प, दोसर वर्तमान न्यायिक परिणाम, तेसर व्यक्तिगत आत्मपरीक्षण आ चारिम प्रत्यक्ष व्यवहारक निर्णय। एहि चारूकेँ ‘सुधार’क एक शब्दमे समेटल गेल तँ तिनकर प्रमाण-स्थिति हराएत। भारतीय न्याय-विचारमे कर्तव्य, करणीय कर्म आ प्रमाण एक-दोसरासँ पृथक जाँचल जाइत अछि; नव्य न्याय एहि भेदक विश्लेषण लेल उपयोगी भाषा दैत अछि। पाश्चात्य अपराध-कथाक स्थिर सुखान्तिसँ हटि एहि खण्डमे अतीतक भार आ भविष्यक सम्भावना सहवर्ती अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिकेँ लागू करैत घरक स्मृति, न्यायालयक आदेश, कारागारक शिक्षा आ दोकानक आर्थिक विकल्प चारि समान्तर अभिलेख बनैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे विहानक प्रशिक्षण-योजना आ केशवक प्रश्नक प्रभाव भावी अछि; रितेशक छोट व्यवहार अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष अछि। कृतिक सर्वोत्तम आत्मानुशासन ई विषमता पहचानब अछि।

अध्ययन-इकाई ८५ — पुनर्वास, संस्थागत जागरूकता आ भयक साम्राज्यक सीमित पराजय (मूल दृश्य ३३७–३४०)

दृश्य ३३७ : शैलेशक शैक्षणिक पुनरागमन आ लतक निरन्तर निगरानी

शैलेशक विद्यालयमे वित्तीय जागरूकता सप्ताह अछि, मुदा प्रधानाध्यापक हुनका मंच पर बजबाक अनुमति नहि दैत छथि। पुरान मामलाक सामाजिक छाया एखनहुँ रहैत अछि। शैलेश तत्काल अस्वीकार स्वीकार करैत छथि; ई स्वीकारक अर्थ ई नहि जे संस्थागत व्यवहार अनिवार्य रूपसँ न्यायोचित छल। मूल पाठ केवल निर्णय आ प्रतिक्रिया देखबैत अछि, तकर औपचारिक नियम अथवा प्रधानाध्यापकक पूरा कारण नहि। समारोहक बाद दू वरिष्ठ छात्र हुनका निजी रूपसँ प्रश्न पुछैत अछि। सार्वजनिक मंचसँ हटल व्यक्ति अनौपचारिक शिक्षाक स्रोत बनैत अछि।

शैलेश अपन ऑनलाइन जुआमे फँसबाक अनुभव नहि नुकबैत, मुदा रकमक विवरण देबाक बदला हेरायल भरोसाक महत्त्व बतबैत अछि। एहि चयनमे सामाजिक क्षतिक मापन एक वित्तीय अंकसँ बाहर जाइत अछि। छात्र पुछैत अछि जे ओ फेर खेलताह कि नहि; शैलेश लालसा कखनो उठबाक सम्भावना स्वीकार करैत छथि आ अपन सहायताक व्यवहार कहैत छथि—ककरो बतायब, फोन दूर रखब, समूह-बैठकमे जाएब। ई सूची स्वतः प्रमाणित चिकित्सकीय उपचार-विधि नहि, पात्र द्वारा कहलगेल वर्तमान सामना करबाक उपायसभ अछि।

दृश्य लतकेँ एक स्थायी ‘खराब चरित्र’क ठप्पा बना देबाक विरोध करैत अछि, मुदा जिम्मेदारीक प्रश्न सेहो नहि मेटैत। पुनर्वास एतय एक बेरक पश्चात्तापक बदला लगातार विकल्प चुनबाक काम अछि। विद्यार्थीक मनपर तत्काल की प्रभाव पड़ल, तकर विस्तृत प्रमाण नहि; मूल पाठ केवल पहिल बेर निरन्तर निगरानीक महत्त्व सुनबाक बात कहैत अछि। शिल्पगत रूपमे औपचारिक भाषणक बदला छोट निजी बातचीत अधिक जीवंत अछि। तहिना विद्यालयक

निषेध आ वास्तविक संवादक अन्तर संस्थाक नियम आ मानवीय समझक बीच तनाव देखबैत अछि।

दृश्य ३३८ : मंजरीक अस्पतालमे निजी क्षतिसँ सार्वजनिक जाँच धरि

मंजरी अस्पतालमे एक रोगीक परिवारक बैंक-खाता ठगीक कारण रोकल गेल, एहन सूचना सुनैत छथि। अपन प्रवेश-विलम्ब आ पारिवारिक आर्थिक संकटक पुरान अनुभव ओकरा तत्काल विरोध लेल प्रेरित कऽ सकैत छल। मुदा ओ वैध चिकित्सा-पाइ अलग जाँचि मुक्त करबाक सम्भावना पूछबाक सलाह दैत छथि। एहि प्रश्नमे हुनकर व्यक्तिक दुःख सामाजिक उपयोगिता पबैत अछि, बिना बैंकक सम्पूर्ण निर्णय असत्य घोषित कएने।

‘खाता खोलू’क अटल आज्ञाक बदला ‘वैध रकम सत्यापित हो सकैत अछि कि नहि’क प्रश्न एक गम्भीर न्यायिक-व्यवहारिक अन्तर अछि। जँ खाता अपराधजाँचक कारण रोकल अछि तँ सभ लेनदेन एकही स्थिति मे नहि होइत; रोगीक वैध खर्चक परीक्षण करबाक आग्रह अलग श्रेणीक नागरिक हित देखबैत अछि। मुदा मूल दृश्य बैंक अथवा अस्पतालक अन्तिम निर्णय, रकमक मुक्तिक प्रक्रिया वा रोगीक उपचारक वास्तविक परिणाम नहि बतबैत। तेँ मंजरीक प्रश्नकेँ सफल पुनर्भुगतानक प्रमाण बनायब अनुचित।

एतय विधिक ज्ञानक प्रयोग राज्यक अधिकारी नहि, अस्पतालमे काज करनिहार स्त्री द्वारा कएल जाइत अछि। उपन्यासक अपराध-इतिहासमे स्त्रीपात्रसभ अनेक बेर क्षतिक वहनकर्ता छलीह; उत्तरकथामे मंजरी अपन विशिष्ट अनुभवसँ सावधान प्रश्नक भाषा तैयार करैत छथि। ई परिवर्तन मौन सहनशीलताक महिमामण्डन नहि, व्यावहारिक ज्ञानक सक्रिय रूप अछि। एहन लघु दृश्य समाजसँ न्यायिक प्रक्रियाक दूरी घटबैत अछि, बिना अदालतकेँ कथासँ हटौने।

दृश्य ३३९ : मृणालिनीक पाण्डुलिपि-पठन आ अतिनाटकीयताक प्रतिरोध

ईशानक पाण्डुलिपि पचास हजार शब्द धरि पहुँचबाक पहिने मृणालिनी किछु पन्ना पढ़ैत छथि। हुनकर पहिल सुझाव दुखक दृश्यसँ अत्यधिक रोदन घटेबाक

अछि, कारण सभ दुख आँखिक नोर रूपमे व्यक्त नहि होइत। दोसर सुझाव गलती माननिहार पात्रकेँ तत्काल अत्यधिक भलमानुष बना देबाक विरुद्ध अछि। एहि दुनू सुधारमे वास्तविक जीवनक दीर्घ अनुभव आ साहित्यिक प्रतिनिधित्वक भिन्न लक्ष्य भेटैत अछि। पाठककेँ भावुक करबाक चाहना कई बेर पात्रक जटिलता घटा दैत अछि; स्वीकृतिमात्रसँ चरित्र-परिवर्तन पूर्ण करब ताहिसँ विपरीत झूठी सांत्वना अछि।

मृणालिनी अपनाकेँ सम्पादक नहि कहैत छथि; ओ जीवन देखलाक आधार पर प्रतिक्रिया दैत छथि। एतय अनुभवजन्य ज्ञानक महत्त्व अछि, मुदा एकर अर्थ ओ साहित्यिक शिल्पक सर्वमान्य निर्णायक बनि गेलीह नहि। हुनकर टिप्पणी सभ मूल कृतिसँ सम्बद्ध विशिष्ट नाटकीयकरण पर अछि। ईशान प्रत्येक पर नोट करैत अछि; पाण्डुलिपि अन्तिम रूपमे केहन बनल, सेहो एतय स्पष्ट नहि। समीक्षक केवल संशोधनक प्रक्रिया देखबाक दावा करि सकैत अछि।

उपन्यास आरम्भसँ अनेक त्रासदी, न्यायिक निष्कर्ष आ संस्थागत पुनर्वासक जटिल मार्ग देखौने अछि। अन्तिम उत्तरकथामे यदि सभ अपराधी पश्चात्तापसँ तुरन्त सज्जन बनि जाएताह आ सभ पीड़ितक जीवन सुगम भऽ जाएत, तँ पहिनुक प्रमाण-सीमा विफल भऽ जाएत। मृणालिनीक आलोचना एहि असफलताकेँ रोकबाक आन्तरिक औजार अछि। कथाक भीतरक लेखक पर ओकर पात्रक आपत्ति एक आत्मसमीक्षात्मक शिल्प अछि: जीवनक अपूर्णता साहित्यक आसान निष्कर्षक प्रतिपक्ष बनैत अछि। छोट घरेलू संवाद एही कारण दीर्घ सिद्धान्त-पाठसँ बेसी प्रभावी अछि।

दृश्य ३४० : रातिक आवाज, स्मृतिक देह आ भयक घटैत शासन

एक राति बाहर कुकुर भौंकैत अछि आ मृणालिनी नींदसँ उठैत छथि। घटना साधारण अछि, मुदा बीस वर्षक स्मृति ओकरा सम्भावित आक्रमण, चोर, साँप अथवा पत्रकारक प्रश्न बना दैत अछि। एहि झटपट प्रतिक्रिया सँ दीर्घकालीन असुरक्षाक देहगत रूप देखाइत अछि। न्यायालयक निर्णय, प्रतिपूर्ति आ परिवारक नव जीवनक बादो स्मृति शरीरमे रहि सकैत अछि; कागजक निष्कर्ष

ओकर पूर्ण उपचार नहि। उपन्यास घटना लेल कोनो नव अपराध-सूत्र गढ़ैत नहि; साधारण बाहरी आवाज आ भीतरक स्मृति बीच भेद करब मुख्य प्रसङ्ग अछि।

मृणालिनी तत्काल केवाड़ी नहि खोलैत छथि, पहिने खिड़कीसँ देखैत छथि। किछु नहि भेटलाक पछाति ओ मानैत छथि जे कुकुर आन गामक आवाज पर भौंकल छल। ई छोट प्रत्यक्ष जाँचक अर्थ अछि: मनमे जागल सम्भावना कैं वास्तविक तथ्य बनायब नहि। धनेश्वरीक पहरासम्बन्धी पुरान पाँति एतय सम्पूर्ण उपन्यासक भावार्थ बनैत अछि—पहरा भयक अनवरत शासन नहि, सावधानीपूर्वक जानबाक अभ्यास अछि।

हुनकर फेर सुतब एहि दृश्यक असाधारण सफलता अछि। कोनो गिरफ्तार व्यक्ति नहि, कोनो नव प्रतिवेदन नहि, कोनो नाटकीय क्षमादान नहि; केवल भय एक राति कने कम अधिकार पबैत अछि। लेखक एहि परिवर्तनकैं सम्पूर्ण स्वास्थ्य अथवा स्थायी निर्भयताक प्रमाण नहि कहैत छथि। एहने संयमक कारण ई लघु दृश्य पूर्वक विशद अपराधकथाक मानवीय मूल्याङ्कन बनैत अछि। जीवन आ साहित्यक दूरी एतय घटैत अछि: जे स्त्री उपन्यास भरि अपराधक इतिहास लऽ चललीह, हुनकर उपलब्धि कोनो पैघ भाषण नहि, एक सुरक्षित निद्राक सम्भावना अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

अन्तिम चारि दृश्य पुनर्वासक चारि असमान रूप रखैत अछि—शैलेशक निरन्तर सहायता-अभ्यास, मंजरीक जाँच-आधारित नागरिक प्रश्न, मृणालिनीक पाण्डुलिपि-संपादन आ हुनकर आफ्न रात्रिक अनुभव। पहिलमे इच्छा आ आचरणक लगातार परीक्षा, दोसरमे वैध रकमक अधिकार, तेसरमे दुखक साहित्यिक प्रतिनिधित्व आ चारिममे भयक घटैत प्रभाव अछि। ई सभ एकहि नैतिक शब्द ‘पहरा’सँ जुड़ैत अछि, मुदा एकहि प्रमाणक श्रेणी नहि। मनोवैज्ञानिक अनुभवक साहित्यिक चित्रण चिकित्सकीय निदान नहि; वैध चिकित्सकीय धनक प्रश्न बैंकक निर्णय नहि; पाण्डुलिपि-टिप्पणी पूर्ण शोध-

समीक्षा नहि। एहि सीमासभक स्वीकार कृतिक ताकत अछि। नव्य न्यायमे तथ्यक निश्चितता आ सम्भावनाक अन्तर, भारतीय काव्यशास्त्रमे अनुभाव-व्यञ्जनाक मर्यादा, आ पाश्चात्य साहित्यक उत्तरकथामे त्रासदी-पश्चात जीवनक अपूर्णता—तीनू दृष्टि उपयोगी तुलना दैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे गाम, विद्यालय, अस्पताल आ घरक लघु इतिहास राज्यक न्यायिक इतिहाससँ भिन्न रहितो ओकर संग चलैत अछि। ई चारि दृश्यक सर्वोत्तम उपलब्धि ई जे सुधार विजयी घोषणासँ नहि, छोट व्यवहारक सत्यापित परिवर्तनसँ देखाओल गेल अछि।

सत्रहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — जीवकीय स्वतन्त्रता, अभिलेखीय विवेक आ उत्तरकथाक नैतिक शिल्प (मूल दृश्य ३२१–३४०)

रूपकक सीमा आ मानवेतर जीवन। उपन्यासक पहिल प्रकरणमे बिज्जी आ गहुमनक संघर्ष पारिवारिक सुरक्षा आ दुष्ट शक्तिक स्मृतिक भाषा बनेने छल। दृश्य ३२१–३२३ ओकर आत्मालोचनात्मक पुनरावलोकन करैत अछि: बिज्जीक स्वतन्त्र प्राणी-जीवन आ वास्तविक गोहिक निर्दोषता मनुष्यक नैतिक भाषा पर सीमा लगबैत अछि। प्रतीकक काम जीवक वास्तविक स्वरूपक वैज्ञानिक अथवा नैतिक वर्गीकरण नहि। ईशानक रचनामे स्पष्ट पाँति जोड़नाइ साहित्यक आवेग आ सामाजिक परिणामक बीच वार्ता अछि। भारतीय ध्वनि-परम्पराक दृष्टिसँ शब्दक व्यञ्जना आवश्यक अछि, मुदा असावधान लोकव्यवहारक जिम्मेदारी लेखकक विमर्शसँ बाहर नहि। एहि प्रसङ्गसँ कृतिमे बिसरल प्रश्न फेर उठैत अछि—ककरा अपराधी कहब, कोन प्रमाण पर, आ ककरा कष्ट पहुँचि सकैत अछि?

ज्ञानक चारि स्रोत। दृश्य ३२५क पारिवारिक पोथी, ३२७क सुमेधाक मार्जिन, ३२८क तृषाक विधिक प्रस्तुति आ ३२९क रचनाक अभिलेखीय निर्णय समान ज्ञान नहि देइत। पोथी आचरणक सूत्रक अभिलेख अछि; सम्पादकीय टिप्पणी कथावाचकक अधिकारकेँ प्रश्न करैत अछि; कक्षा भूमिका-विशेष दायित्व तौलैत अछि; पुलिस-जाँच नामक गलत मेल हटबैत अछि। नव्य न्यायक विश्लेषणात्मक उपयोग एहि स्पष्ट विभागमे अछि। सत्यक दावा करएवला वक्ताक स्थान, ज्ञानक साधन, प्रमाणक सीमा आ सम्भावित भ्रम जाँचब आवश्यक अछि। एहि चारू स्रोतकेँ एक पैघ ‘सत्य’ घोषित करब कृतिमे बारम्बार रोकोल गेल भूलकेँ दोहरायब होयत।

न्यायक नकारात्मक सफलता। दृश्य ३२९ आ ३३६क मुख्य क्रिया ‘नहि’ अछि—एक निर्दोष व्यक्ति पर मामला नहि बनल; रितेश पराई रकम अपन खातामे लेब अस्वीकार कएलक। दुनू घटनामे हानि घटबाक सम्भावना कम भेल, मुदा दूनूक

विधिक भार समान नहि। रचनाक निष्कर्ष संस्थागत अभिलेखमे दर्ज अछि; रितेशक निर्णय निजी आर्थिक सावधानी अछि। पाश्चात्य रहस्य-आख्यानमे अपराधी भेटब समाधानक प्रमुख दृश्य होइत अछि; एतय समाधानक किछु अंश अनुचित अभियोग रोकब आ जोखिमयुक्त अवसर छोड़बमे अछि। एहि उलटावसँ विधिक प्रक्रिया सामान्य जीवनक भीतर उपयोगी बनैत अछि।

स्मृतिक सार्वजनिक उपयोग। धनेश्वरीक नामपर पुस्तक-कोष, विहानक प्रस्तावित प्रशिक्षण-कक्ष, वैदेहीक शोध-संवाद आ ईशानक पाण्डुलिपि चारि तरहक स्मृति-निर्माण अछि। पुस्तक-कोषक पहिल वर्षक गतिविधि दृश्यगत अछि; प्रशिक्षण-कक्ष प्रस्तावक अवस्थामे; शोध-पाण्डुलिपिक अन्तिम रूप अलग स्रोत चाही; ईशानक लेखन फेर सुधारल जा रहल अछि। एहि चारूकेँ सम्पन्न ऐतिहासिक स्मारक मानल नहि जा सकैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि एतय महत्त्वपूर्ण: जन-स्मृति, शिक्षाक अभिलेख, संस्थागत आत्मसमीक्षा आ काल्पनिक साहित्य एक-दोसराकेँ प्रश्न करैत अछि, मुदा कोनो एक प्रणाली सभ सामग्री समेटबाक अन्तिम अधिकार नहि पबैत।

अभिलेख आ अधिकारक छायामे स्त्री-पात्रक व्यवहार। मृणालिनी प्रारम्भमे मृत पतिक न्याय लेल प्रमाण जोगेबाक संघर्ष करैत छलीह; उत्तरकथामे ओ जीवक स्वतन्त्रता, पुस्तकक उपयोग, पाण्डुलिपिक विश्वसनीयता आ रातिक भयक जाँचमे सक्रिय छथि। मंजरी बैंकक बन्द खाताक प्रसङ्गमे न्यायिक निर्णयक अनुमान नहि करैत, वैध चिकित्सा-पाइक जाँच पुछैत छथि। तृषा परिवारक अनुभवसँ प्रश्न सीखि विधिक तर्कमे ओकरा निजी नामबिनु उपयोग करैत छथि। एहि क्रियासभमे स्त्रीपात्र नैतिक सत्यक मात्र प्रतिमा नहि, विशिष्ट निर्णय लेनिहार व्यक्ति छथि। तथापि सभ स्त्रीक एक सन सामाजिक स्थिति छनि, एहन सर्वसाधारण दावा मूल पाठसँ सिद्ध नहि।

दोषक स्थिरता आ व्यक्तिक परिवर्तन। दृश्य ३२४क पात्र-पञ्जी, ३३४क सौरभक सीमित अपील, ३३५क केशवक कारा-प्रश्न आ ३३७क शैलेशक निरन्तर सहायता

एकहि निष्कर्षक भिन्न सन्दर्भ अछि: भूमिका बदलि सकैत अछि, दायित्व स्वत: नष्ट नहि होइत। उपन्यास हर सुधारक एकहि परिणाम नहि बतबैत; कियो दण्ड भोगैत अछि, कियो प्रशिक्षणमे अछि, कियो आर्थिक व्यवहार बदलैत अछि, कियो आंशिक राहत पबैत अछि। एहि भिन्नतासँ दीर्घ उपन्यासक उत्तरकथा नीतिकथाक एकरूप समाधान बनबाक खतरा सँ बाँचैत अछि। जखन एतय उपदेशात्मक सूत्र अधिक होइत अछि, तखन रितेशक काँपैत हाथ आ मृणालिनीक फेर सुतबाक दृश्य अनुभवक पुन: स्थापना करैत अछि।

लेखनक भीतर लेखन। ईशानक कथाकार बनबाक यात्रा एहि बीस दृश्यक स्वतन्त्र शिल्पगत धुरी अछि। सुमेधा ‘सभ’ सन सर्वव्यापी कथन आ पात्रक अन्तर्मनक ज्ञान पर प्रश्न उठबैत छथि। मृणालिनी अत्यधिक रोदन आ तत्काल सद्गुण-प्राप्तिक दृश्य घटेबाक कहलनि। ई दुनू सम्पादकीय आपत्ति साहित्यक नैतिकता आ कलात्मकता परस्पर निर्भर, मुदा समान नहि होयबाक बतबैत अछि। लेखकीय कल्पनाक स्वतन्त्रता रहत, तथापि वास्तविक लोकक अनुभवक छायाकेँ निश्चित इतिहास बनायब अनुचित। एहि कारण कथा अपन भीतर प्रमाण आ कल्पनाक सम्बन्धक निरन्तर विवाद रखैत अछि—ई आत्मप्रतिबिम्बी रचना-पद्धतिक बलवान उदाहरण अछि।

समेकित कलात्मक मूल्याङ्कन। दृश्य ३२१–३४० नव रोमाञ्चक अपराध-जाल खोलबाक बदला न्यायिक निर्णयक बादक समाज पढ़ैत अछि। एकर सर्वोत्तम दृश्यसभ बहुत छोट अछि—गोहि पर नहि पड़ल पाथर, पाँचम पाँतिक लेखन, गलतीसँ बचल युवकक फाइल, रितेशक अस्वीकार आ मृणालिनीक दोबारा निद्रा। एतय वाक्यक संयम संवेदनात्मक असर बढ़बैत अछि। दोसर दिस, संस्थागत घोषणासभ आ पात्रक संक्षिप्त अवस्थापञ्जी कतहु समाचार-प्रतिवेदनक समीप पहुँचैत अछि; एहन ठाम पाठकक कल्पना लेल अवकाश कम भऽ सकैत अछि। ई शिल्पगत सीमा स्वीकार कएलाक पछाति उपन्यासक उपलब्धि अधिक सटीक देखाइत अछि: अपराधक खुलासा कथा समाप्त नहि

करैत; प्रमाणक अनुशासन, स्मृतिक उपयोग, नागरिक दायित्व आ भय बिना जिअबाक क्षमता न्याय-पश्चात जीवनक कठिन निरन्तरता बनैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८६ — पोथीक छठम पाँति आ नव युगक आवाज : जीवनक अधिकारसँ तकनीकी साक्ष्य धरि (मूल दृश्य ३४१-३४४)

दृश्य ३४१ : पहराक पछाति जीवनक स्वतन्त्रता आ अपूर्ण ज्ञानक स्वीकार

दृश्य ३४०मे मृणालिनीक रात्रिक भय घटबाक अनुभवक तुरन्त पाछाँ ३४१मे ईशान भोरक पोथी खोलैत अछि। पोथीमे पाँच पाँति अछि; छैठम खाली। ईशान माएक ओहि रातिक अनुभव नहि जानैत, तैयो अपनहि चिन्तनसँ लिखैत अछि—“पहरा देबाक बादो जीवन जीब जरूरी अछि।” एहि अन्तरमे कथा एक महत्त्वपूर्ण कलात्मक संयोग रखैत अछि। ईशानकेँ माएक निजी घटनाक सर्वज्ञाता नहि बनाओल गेल; ओ व्यक्तिगत अनुभवक संपूर्ण पहुँच बिना ओहि जीवनदृष्टिक समीप पहुँचैत अछि, जे पाठक पिछला दृश्यसँ बुझैत अछि। कथा ओकरा बुझाइ आ ओकर जानकारीक सीमा एकहि संग रखैत अछि।

एहि छठम पाँतिकेँ केवल आशावादी नारा मानब ओकर प्रसङ्ग घटायब होयत। पूरा उपन्यासमे धमकी, प्रमाणक जाँच, वित्तीय सावधानी, न्यायिक प्रतिक्षा आ स्मृतिक सुरक्षा आवश्यक रहल; मुदा यदि पहरा अपने जीवनक एकमात्र उद्देश्य बनि जाए तँ अपराधक भय बिना अपराधीक उपस्थिति सेहो जीवन पर शासन करैत रहत। नव पाँति ‘पहरा छोड़ब’ नहि कहैत; ‘पहराक बादो’ कहैत अछि। पूर्व सावधानीक उपयोग नष्ट कएने बिना सामान्य जीवनक अवकाशक आग्रह एतय अछि। मृणालिनीक संक्षिप्त स्वीकृति एहि समझकेँ पारिवारिक व्यवहारमे स्थान दैत अछि, मुदा ओ कोनो विधिक प्रमाणपत्र अथवा सम्पूर्ण जीवन-सूत्रक अन्तिम रूप नहि।

‘छह पाँति’ लिखलाक तुरन्त पाछाँ कथावाचक घरक न्याय-दर्शनकेँ अपूर्ण मानैत अछि। ‘पूर्णता’क नामपर एक अनुशासनक अन्तिम सूची बना देब, कृतिक प्रमाण-विवेकक विरुद्ध रहितय। जीवन नव परिस्थिति अनैत अछि; तँ नियम बदलत, बढ़त, परीक्षा देत। भारतीय न्याय-परम्पराक संशय आ पुनःपरीक्षणक सन्दर्भमे ई खुलापन उपयोगी बौद्धिक समानता अछि, यद्यपि निजी पारिवारिक

पोथीकेँ विधिवत् दार्शनिक सूत्रग्रन्थ मानब उचित नहि। रचनाक सीमा सेहो अछि: वाक्य प्रत्यक्ष नाटकीय क्रियाक बदला स्पष्ट निष्कर्षक रूपमे देल गेल; मुदा पिछला रातिक सूक्ष्म दृश्य एहि सूत्रकेँ अनुभवजन्य आधार प्रदान करैत अछि।

दृश्य ३४२ : नदी किनार वास्तविक जीव आ रूपकक युद्धसँ विमुखता

कमला-बलानक एक कात बालू पर गोहि आ दोसर ठाम खेतक मेड़ पर बिज्जी अछि। लेखक जँ चाहितथि तँ दुनूकेँ आमने-सामने भिड़बा सकैत छलाह; मूल पाठ साफ कहैत अछि जे जीवनकेँ एहन टकरावक आवश्यकता नहि। ई प्रतिवाक्य उपन्यासक आरम्भिक साँप-बिज्जी संघर्षक पुनर्मूल्याङ्कन अछि। प्रथम दृश्यमे जीव-रक्षाक आकस्मिक लड़ाइ मनुष्यक भयक संग जुड़ल छल; आब कथानक सजावटी संघर्षक आग्रह छोड़ि रहल अछि। जीवसभक स्वतन्त्र अस्तित्वक सम्मान साहित्यिक प्रतीककेँ अपने स्रोत पर बलपूर्वक लागू करबासँ रोकैत अछि।

ईशान नोटबुक नहि खोलैत। पूर्व दृश्य ३२१मे सेहो सुन्दर चीज तुरन्त लिखबाक बदला देखबाक विकल्प छल। एहि पुनरावृत्तिक आलोचनात्मक अर्थ अछि—कथाकारक योग्यता केवल सभ अनुभवकेँ कथामे समेटब नहि, किछु अनुभवकेँ ओकर अपन जीवनमे छोड़ब सेहो अछि। ‘प्रतीक बनबाक पहिने साधारण’ रहबाक आग्रह साहित्यिक अभिव्यक्तिक सीमाबोध बनैत अछि। तथापि कथा एहि चिन्तनकेँ स्वयं शब्दमे कहि दैत अछि; पाठक पर पूर्ण भरोसा नहि करबाक एहन व्याख्यात्मक रूझान उत्तरकथाक कतिपय अंशमे शिल्पगत संकोच उत्पन्न करैत अछि।

मृणालिनी भोजन ठंढा होयबाक बात कहैत छथि। नदी, गोहि आ बिज्जीक सम्भावित महाकाव्यात्मक दृश्य एक घरक आवश्यकतामे सहजतासँ भंग होइत अछि। ई भंग कथा-विरोधी नहि, कथा-संशोधक अछि। ‘पाछाँ नदी, आगाँ घर’क स्थानिक विन्यास इतिहास आ वर्तमानकेँ एक दोसराक शत्रु नहि बनबैत। पहरा दुनू बीच अछि, मुदा जीवन सेहो। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ नदीक पर्यावरण, परिवारक स्मृति आ साहित्यिक भाषा अलग प्रवाह

होइतहुँ एक ठाम भेटैत अछि; एतय कोनो सजीव जीवकेँ मनुष्यक दोषक प्रमाण बनबैत नहि। दृश्य छोट होइतहुँ एहि कारण महत्त्वपूर्ण शिल्पगत विराम अछि।

दृश्य ३४३ : मृणालिनीक तीन प्रश्न आ लेखकीय श्रमक अनिश्चितता

ईशानक लेखन आब विशेष घटना नहि, घरक दिनचर्याक अंश बनैत अछि। मृणालिनी लिखल पन्ना माँगि पढ़बाक अधिकार जतबैत नहि छथि; ओ पुछैत छथि—आइ लिखलह, कतेक, नीक? ‘नीक?’क उत्तर ‘पता नहि’ पबिते काल्हि पढ़बाक सलाह दैत छथि। एहि छोट संवादमे लेखनक मेहनत, विलम्बित निर्णय आ लेखकक आत्मसंशय सहज रीति सँ आबि जाइत अछि। दिनक तीन पन्ना लिखनाइ उपलब्ध क्रिया अछि; ओ नीक लिखल गेल कि नहि, तकर निर्णय अलग समय आ पाठकक पुनर्पाठ माँगैत अछि। परिश्रम आ गुणवत्ता एकही अभिलेख नहि।

पूर्व उत्तरकथामे सुमेधा ईशानक कथन-अधिकार आ सर्वज्ञताक उपयोग पर प्रश्न उठौने छलीह; मृणालिनी अतिनाटकीय रोदन आ तत्काल सद्गुणक दृश्य घटेबाक कहलनि। एतय ओ दीर्घ व्याख्याक बदला ‘काल्हि पढ़’ कहैत छथि। एहि सलाहक सामर्थ्य समय देबाक अछि। तत्काल प्राप्त भावुक सन्तोषसँ अलग भऽ रचना पढ़ल जाए तँ अतिशयोक्ति, असत्य सामान्यीकरण अथवा अपूर्ण दृश्यक दोष स्पष्ट भऽ सकैत अछि। मुदा एहि कथनकेँ आधुनिक सम्पादनक पूर्ण प्रणालीक समकक्ष मानब नहि चाही; ओ निजी गृह-व्यवहारसँ निकलल एक सीमित उपयोगी उपाय अछि।

अन्तिम वाक्य जे ई सलाह लेखक लेल छल कि जीवन लेल, ईशान नहि बुझैत —उपन्यासक जानबाक अनिश्चितता सुदृढ़ करैत अछि। प्रत्येक संवादसँ एक सार्वभौम नैतिक उपदेश निकालबाक दबाव एतय शिथिल अछि। मृणालिनीक सामान्य प्रश्नक लय समयक परिवर्तन सेहो जनबैत अछि: पूर्व शोकक केन्द्र पर रहल घरमे आब लेखन पर छोट हँसी अथवा संकोच सम्भव अछि। एहि परिवर्तनक विश्वसनीयता कृति द्वारा सम्पूर्ण निरामयताक घोषणा नहि करबामे अछि।

दृश्य ३४४ : परिचित आवाजक कृत्रिमता, पुष्ट आरोपक सीमा आ शब्द-प्रमाण

बैंक संघसँ आयल फोनक मुख्य सूचना अछि जे शिकायतक नव ढेरमे परिचित परिजनक आवाजक अनुकरण कऽ आपातकालक नामपर तत्काल पाइ माँगल जाइत अछि। ई अपराध-पद्धतिक तकनीकी विवेचन नहि; कथानक पीड़ितक निर्णय-क्षण पर केन्द्रित अछि। ईशान पहिल प्रश्न पुछैत अछि—कतेक मामला पुष्ट? उत्तर अछि ‘एखन कम, अफवाह बेसी’। तँ ओ पुष्ट, संदिग्ध आ अपुष्टक अलग श्रेणी बनबाक आग्रह करैत अछि। एहि वर्गीकरणमे अपराध-विरुद्ध सतर्कताक संग झूठा सार्वजनिक भय रोकबाक नैतिकता सेहो अछि। केवल अनेक शिकायत आयब तथ्य; सभ शिकायतक एकहि अपराधसँ सम्बन्धित होयब अलग दावा।

तत्काल सलाहमे परिचित नम्बर, परिवारक दोसर माध्यम आ बैंकसँ पुष्टि कएने बिना आवाज पर भरोसा नहि करबाक बात अछि। मूल कथामे ईशान अपन सीमा सेहो निर्धारित करैत अछि—तकनीकी अपराधीक खोज पुलिसक काज; ओ पीड़ित-सुरक्षा देखत। ई भूमिका-विभाग महत्त्वपूर्ण अछि। जानकार व्यक्ति अपन अनुभवक कारण सम्पूर्ण अन्वेषणक अधिकारी नहि बनि जाइत। आधुनिक संचारमे कानसँ सुनल ध्वनि सचमुच कियो परिचित लोकक होएत, एकर स्वतः प्रमाण नहि। तथापि एहि कथनक अर्थ इन्द्रिय-ज्ञान निरर्थक बनि गेल, एहन नहि; आवाजक स्रोत-प्रामाणिकता पर पृथक जाँच चाही।

नव्य न्यायक दृष्टिसँ विषय, ज्ञाताक माध्यम, भ्रम-संभावना आ पुष्टि-प्रक्रियाकेँ अलग करबाक समानता उपयोगी अछि। पारम्परिक ‘शब्द’ आ डिजिटल ध्वनि-नकल एकरूप वस्तु नहि; एतय तुलना वैचारिक अछि, ऐतिहासिक समता नहि। दृश्य पुरान म्यूल-खाता-जालसँ भिन्न धोखाक उल्लेख कऽ बतबैत अछि जे अपराधक साधन बदलैत अछि, मुदा संकटग्रस्त लोकक भरोसाक दोहनक संरचना पुनः देखाइत अछि। शिल्पगत दृष्टिसँ बैंक-अधिकारीक संक्षिप्त संवाद

तीक्ष्ण अछि; यद्यपि पुष्टि-श्रेणीक वास्तविक परिणाम कथामे एखन दर्शाओल नहि गेल।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३४१–३४४ एक क्रममे पहराक उद्देश्य बदलैत अछि। पोथीक छठम पाँति सतर्कताक बाद सामान्य जीवनक अधिकार घोषित करैत अछि; नदी किनार जीवसभकेँ आरोपक रूपकसँ मुक्त करैत अछि; मृणालिनी लेखनक निर्णयमे समयक दूरी राखय सिखबैत छथि; बैंक संघक फोन नब डिजिटल भ्रममे पुष्ट आ अपुष्टक अलग चिन्हब माँगैत अछि। ई सभ भिन्न घटनाक एक सार्वभौम सूत्र बना देब तर्कत: ढील होयत। पारिवारिक ज्ञान, कलात्मक निर्णय आ वित्तीय शिकायत तीन अलग प्रमाण-क्षेत्र अछि। मुदा तीनू ठाम मूल नीतिक समरूपता भेटैत अछि—तत्काल आशङ्का अथवा आकर्षणकेँ अन्तिम सत्य नहि मानू। भारतीय न्याय-दृष्टिक संशय, पाश्चात्य अपराध-आख्यानक गलत संकेत, आ विदेहक जन-इतिहास–संस्थानक समानान्तरता एहि क्रमक व्याख्यात्मक आधार दैत अछि। सर्वोत्तम क्षण ईशानक बन्द नोटबुक आ माएक ‘काल्हि पढ़’ अछि; सीमित उपलब्धि ई जे किछु विचार पात्रक अनुभवक बदला स्पष्ट सूत्रमे आबैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८७ — विश्वसनीय ध्वनि आ सामाजिक भरोसा : पीड़ितक अपमानसँ रोकथामक लोकभाषा धरि (मूल दृश्य ३४५–३४८)

दृश्य ३४५ : वृद्धाक आवाज-साक्ष्य, लज्जा आ अनुसन्धानक सहानुभूतिपूर्ण मर्यादा

रचना सिन्हाक सोझाँ एक वृद्धा अपन विदेशमे रहनिहार बेटाक आवाज सुनबाक बात कहैत छथि। अपरिचित नम्बर पर दुर्घटनाक सूचना आ तुरन्त पाइ माँगबाक कथन सुनि ओ रकम भेजलनि; दू घंटा बाद बेटाक फोनसँ घटना असत्य बुझाइ पड़ल। ई क्रममे ओ वृद्धा जे सुनलनि से मिथ्या अनुभूति नहि; आवाजक समानता वास्तविक सुनाइत छल। भ्रम आवाजक स्रोत पहिचानबाक स्तर पर छल। एहि सूक्ष्म भेदसँ उपन्यास पीड़ितकेँ ‘देखल-बुझल नहि’ कहि तिरस्कृत करबासँ बचैत अछि।

रचना वृद्धाक मुख पर अपराधीक पछाड़ि जाएबाक भय नहि, पहिने लज्जा देखैत छथि। वृद्धाक ‘हम मूर्ख छी’ कथनक उत्तरमे रचना तुरन्त निषेध करैत छथि, फेर अपन शब्द रोकि तथ्यात्मक व्याख्या दैत छथि—परिचित आवाज पर भरोसा कएल गेल, भरोसाक दुरुपयोग भेल। एहि संशोधनमे सांत्वना आ जाँचक विवेक एक-दोसराकेँ रोकैत नहि; निराधार प्रशंसा अथवा पीड़ित पर दोषारोपणक बदला नुकसानक पद्धतिक निश्चित बयान देल जाइत अछि। वृद्धाक स्वनिर्णय-क्षमता भविष्यक सत्यापनक रूपमे सुरक्षित रखल जाइत अछि।

आर्थिक क्षतिक प्रश्नपर रचना ‘जाँच चलत’ कहैत छथि, मुदा रकम वापस भेटबाक आश्वासन नहि दैत। ई कथानकक दीर्घ सूत्र अछि—गलत आशाकेँ करुणाक स्थानापन्न नहि बनाउ। अपराध-आख्यानमे अन्वेषकक नैतिकता केवल अपराधी पकड़ब नहि, पीड़ितकेँ सत्यक उचित मात्रा दऽ सकबाक क्षमता सेहो अछि। तथापि पाठ वृद्धाक बैंक-लेनदेनक अन्तिम परिणाम, तकनीकी नमूनाक फॉरेन्सिक परीक्षण अथवा अपराधीक पहचान नहि दैत; समीक्षा केवल अपन

पाठ-सीमा धरि कथन करि सकैत अछि। एहि दृश्य मे मानवीय दायित्वक संक्षिप्त परिपक्वता अछि, तकनीकी भयक सनसनी नहि।

दृश्य ३४६ : ‘आवाज सुनू, मुदा पुष्टि करू’—भरोसा नष्ट कएने बिना जागरूकता

ईशानक प्रशिक्षण अपन शीर्षकसँ महत्त्वपूर्ण भेद स्पष्ट करैत अछि—आवाज सुनू, मुदा पुष्टि करू। कथामे ओ ध्वनिक कृत्रिम नकलक प्राविधिक निर्माण-पद्धति नहि पढ़बैत; परिवार, आपातकाल, समयक दबाव, भय आ गोपनीयताक माध्यमसँ धोखाक सामाजिक परिस्थिति बुझबैत अछि। एहि चयनसँ विधि-अनुकरणक आकर्षण घटैत अछि, आ पीड़ितक वास्तविक निर्णय-स्थितिक विश्लेषण बढ़ैत अछि। आर्थिक अपराधक रूप बदलय, तथापि स्नेह आ भयक संगम पर मनुष्यक असुरक्षा पुरान अछि—ई ओकर व्यावहारिक निष्कर्ष।

एक छात्रक प्रश्न—आब ककरो आवाज पर भरोसा नहि?—एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक आपत्ति अछि। यदि डिजिटल जोखिमक उत्तर सभ पर सार्वभौम अविश्वास हो, तँ सामान्य संवाद, परिवार आ सहायता-प्रक्रिया ठप्प पड़त। ईशान एहि विकल्पकेँ अस्वीकार कऽ भरोसाक संग पुष्टिक प्रक्रिया जोड़बाक बात कहैत अछि। ई जागरूकता भय पर आधारित पहरा नहि। अप्रमाणित शंका सार्वजनिक अपवाद बनि जाएबासँ बचब सेहो एहि प्रशिक्षणक अप्रत्यक्ष उपयोग अछि।

यद्यपि प्रशिक्षणमे ककरो ठगी रोकल गेल, एहन तत्काल परिणाम प्रस्तुत नहि; एकर प्रभावक प्रमाण सीमा दृश्यक संवाद धरि अछि। साहित्यिक मूल्य कथावस्तुक भिन्न स्तर पर अछि—एक पीढ़ीक आपराधिक इतिहास दोसर पीढ़ीक नागरिक शिक्षा बनैत अछि। रचनाक निश्चयपरक जाँच आ ईशानक साधारण भाषाक प्रशिक्षण अलग क्रिया अछि। भारतीय प्रमाणविचारक ज्ञान-पद्धति आ आधुनिक संचार-सुरक्षाक संगति देखल जा सकैत अछि, मुदा शिक्षण-विषयकेँ विधिक आदेश अथवा वैज्ञानिक प्रभाव-अध्ययन मानबाक कारण नहि।

दृश्य ३४७ : माएक हलुक व्यङ्ग्य, कथनक स्वामित्व आ असहमतिक अधिकार

मृणालिनी ईशानक प्रशिक्षण सुनि ‘आब आवाजो साँप?’ कहि हँसैत छथि। एही प्रश्नक पाछाँ उपन्यासक अनेक पूर्व प्रसङ्ग अछि जाहिमे ईशान अपराधक घटना, जीवक रूपक आ निजी अनुभवक बीच मेल खोजैत रहल। माएक व्यङ्ग्य एहि स्वभावक आलोचना अछि, अपमान नहि। ईशान एहि बेर आवाजकेँ साँपक संग नहि मिलायब कहैत अछि; ओ रूपकक सीमाक अभ्यास करैत अछि। लेखकक आत्मनिरीक्षण आब विद्वत् भाषण नहि, घरक हलुक ठिठोली बनि गेल अछि।

मृणालिनी एहन स्थिति पर एक मूल वाक्य कहैत छथि—भरोसा समाप्त कऽ देल जाए तँ अपराधी जीतत। ओहि कथनकेँ ईशान लिखि लेइत अछि, मुदा माए स्पष्ट शर्त रखैत छथि: हुनकर नाम नहि आ हुनका विदुषी बनाकऽ नहि देखाओल जाए। ई दुनू आदेश कथनक उपयोग पर स्रोत-व्यक्तिक अधिकारक प्रश्न खोलैत अछि। एक व्यक्ति विवेकपूर्ण बात कहि सकैत अछि, बिना सार्वजनिक प्रतिष्ठा अथवा औपचारिक विशेषज्ञक भूमिका स्वीकार कएने। ईशानक ‘ठीक’ केवल पुत्रक आज्ञाकारिता नहि, लेखकीय उपयोगक अनुमति-सीमाक स्वीकृति सेहो अछि।

अन्तिम हँसी दीर्घ तनावसँ उबरैत सम्बन्धक कलात्मक उपलब्धि अछि। मुदा नाम नहि देबाक इच्छाकेँ समस्त शोध-सन्दर्भमे नामगोपनक सार्वभौम कानून बनायब अनुचित; ई एक विशिष्ट निजी संवादक शर्त अछि। उत्तरकथा एतय बौद्धिक कथनक मालिकानाकेँ सामाजिक सम्मानसँ जोड़ैत अछि, आ कथाकारक स्वेच्छाधिकार पर एक मानवीय सीमा रखैत अछि।

दृश्य ३४८ : तृषाक विधिक लेख आ पिता-पुत्रीक बीच सुधरल संवाद

तृषा अपन विधि-अध्ययनक लेख ‘प्रमाणक नब रूप आ पुरान सावधानी’ प्रकाशित भेलाक बाद पिता प्रदीपकेँ प्रति दैत छथि; मसौदा पहिनहि देखौने नहि छलीह। ई छोट क्रम हुनकर बौद्धिक स्वतन्त्रताक संकेत अछि। प्रदीप लेखमे

तकनीकी विश्वसनीयता बढ़ला पर न्यायिक सावधानी आरो बढ़बाक विचारकेँ स्वीकार करैत अछि। ओ अपन अनुभवसँ कहैत अछि जे साफ कागज, साफ आवाज आ साफ चित्र अपन-आप सत्य नहि। कथा एतय अपराधक पुरान सम्बन्धक कारण पात्रक हर वाक्यकेँ अप्रामाणिक घोषित नहि करैत; मुदा ओकर वर्तमान समझ पुरान दायित्व समाप्त करैत सेहो नहि।

तृषाक लेखक कथन एक विधिक तर्क अछि, स्वयं परीक्षण-कृत कृत्रिम ध्वनिक प्रामाणिकता-रिपोर्ट नहि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। स्रोत स्पष्ट देखाइत अछि कि नहि, कथित सामग्रीक उत्पत्ति की अछि, आ तकर अर्थ कथनानुसार अछि कि नहि—प्रश्नसभ अलग। प्रदीपक ‘गलत लेखा छोड़लहुँ’ एहि बौद्धिक भेदक संग नैतिक आत्मव्याख्या जोड़ैत अछि। ओकरा पूर्ण सुधारक प्रमाण मानल नहि जाए; कारागार-पश्चात परिवारक संवादमे ओकर एक कथन भेटैत अछि।

‘घाव दाग बनि रहल, मेटल नहि’क बिम्ब पारिवारिक पुनर्स्थापनक संयत मूल्याङ्कन अछि। पिता-पुत्री आब अपराधक चर्चा सहि सकैत छथि; एहि सँ विश्वस्त सम्बन्धक नव अवकाश देखाइत अछि, मुदा पुरान चोटिक इतिहास समाप्त नहि। शिल्पगत रूपमे लेखकीय सूत्र कने प्रत्यक्ष अछि, परन्तु तृषा–प्रदीपक छोट संवाद ओकरा शरीर आ समय दैत अछि। विगत अपराधक आ वर्तमान विचारक सम्बन्ध एतय दण्डात्मक सरलतासँ बेसी जटिल बनैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३४५–३४८मे एकहि प्रश्नक चारि परिस्थिति अछि—जाँचक सोझाँ वृद्धा, विद्यार्थीक सोझाँ ईशान, घरमे मृणालिनीक विरोध-हँसी आ विधि-अध्ययनमे तृषाक लेख। आवाजक विश्वसनीयता, व्यक्तिगत भरोसा, स्रोतक अनुमति आ तकनीकी प्रमाण चारि अलग मामला अछि। वृद्धा धन वापस पाबैत छथि कि नहि, पाठ नहि बतबैत; प्रशिक्षणक असरक आँकड़ा नहि; मृणालिनीक नाम-गोपन एक खास शर्त; तृषाक लेख दार्शनिक मत, न्यायिक फैसला नहि। एहि सीमासभकेँ बचौने आलोचना करब उपन्यासक अपन कथित प्रमाण-अनुशासनक

अनुकूल अछि। भारतीय साक्ष्य-विचारमे स्रोत-जाँच, नव्य न्यायक भेद-विश्लेषणमे ज्ञाता आ ज्ञानक उपकरण, पाश्चात्य अपराधसाहित्यमे पीड़ितक लज्जाक प्रतिरोध, आ विदेह समानान्तर इतिहासमे घर–विद्यालय–पुलिस–विश्वविद्यालयक स्वतंत्र अभिलेख एक-दोसरासँ वार्ता करैत अछि। एहि खण्डक श्रेष्ठ शिल्प वृद्धाक ‘पैसा?’ प्रश्नपर देल सीमित उत्तर आ माएक हलुक व्यङ्ग्यमे अछि।

अध्ययन-इकाई ८८ — सामाजिक अनुभवक पुनर्वितरण : सबीनाक दोकानसँ संस्थाक स्वीकार-दीवाल धरि (मूल दृश्य ३४९–३५२)

दृश्य ३४९ : सबीना खातूनक छोट प्रश्न आ दोसरक धनक जोखिम

सबीना खातूनक दोकानमे ग्राहक अपन खातासँ बहिनक मित्रकेँ दू दिन लेल पैसा लेब देबाक प्रस्ताव कहैत छथि। ई प्रसङ्ग कथाक प्रारम्भिक धन-वाहक खाता-जालक छोट व्यवहारिक पुनरागमन अछि। सबीना मशीन रोकि ‘किएक?’ पुछैत छथि; उत्तरमे ‘लिमिट’क अस्पष्टता सुनिते बैंक जाएबाक सलाह दैत छथि। ओ ग्राहकक अनुरोधकेँ तुरन्त अपराध घोषित नहि करैत छथि; मुदा एकर वैधता बिना जाँच स्वयं भाग नहि लैत छथि। असल विश्लेषण ग्राहकक अधिकार अथवा अपराधक अन्तिम सिद्धि नहि, आर्थिक लेनदेनमे निजी खाता आ पराई रकमक सीमाक सतर्कता अछि।

‘छोट बात’ सुनिते सबीनाकेँ अपन पाँच हजारक पुरान अनुभव मोन पड़ैत अछि। कथामे रकमक संख्यात्मक छोटपन व्यक्तिगत क्षतिक महत्त्व कम नहि करैत। एहन जोखिमक सामाजिक पद्धति दोसर व्यक्तिक सूझबूझ पबैत अछि, कारण पहिल पीड़िता ओकर वास्तविक मूल्य भोगि चुकलीह। ‘डर’ कहलाक पछाति ‘सावधानी’ सँ स्वयं सुधार करब महत्त्वपूर्ण अछि। डर यदि सामान्य सामाजिक सम्बन्ध रोकि दैत अछि तँ अपराधीक अप्रत्यक्ष शासन बनि सकैत अछि; सावधानी विशिष्ट लेनदेनकेँ प्रश्न करैत अछि। सबीना अपन पुरान घटनाकेँ अभिमानपूर्ण उपदेश नहि बनबैत छथि, बल्कि बैंकक औपचारिक मार्गक विकल्प सुझबैत छथि।

अन्तिम वाक्यमे स्पष्ट अछि जे सबीना धनेश्वरीक पोथी नहि पढ़ने छलीह। एतय कृतिकार अपन पारिवारिक सूत्रकेँ सम्पूर्ण समाजक एकमात्र स्रोत मानबाक भूलसँ बचैत छथि। अलग घरक अनुभव स्वतन्त्र रूपमे समान नैतिक विवेक तक पहुँचि सकैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे ई स्थानीय ज्ञान-प्रवाहक महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि—पुस्तकमे अंकित सूत्र आ दुकानमे अर्जित सावधानी एक-दोसराक नकल नहि। दृश्य केवल सलाहक क्षण देखबैत अछि;

ग्राहक वास्तवमे बैंक गेलीह कि नहि, जाँचल नहि गेल। ताहि सीमा पर ई सुन्दर लघु सामाजिक दृश्य स्थिर अछि।

दृश्य ३५० : शैलेशक विद्यालय, विद्यार्थीपर अपमानक भय आ दायित्वक पुनःप्रयोग

विद्यालयमे जुआ-जेकाँ खेल खेलैत भेटल छात्रक फोन जब्त कएल जाइत अछि आ अभिभावक बजाओल जाइत छथि। आरम्भमे शैलेश बैठकमे उपस्थित नहि; पछाति प्रधानाध्यापक हुनक ‘अनुभव’क कारण सलाह माँगैत छथि। एकहि अतीत पहिने मंचसँ दूर रखबाक कारण छल, एखन सहायता देबाक कारण बनैत अछि। एहि उलटावमे समाज अपराधसँ जुड़ल अनुभवकेँ कोना पढ़ैत अछि, से प्रश्न उठैत अछि। अनुभव पापमोचन नहि, मुदा सीखब अथवा दोसराक हानि घटेबाक साधन बनि सकैत अछि।

शैलेश छात्रसँ पहिने समय आ रकम नहि, घरमे झूठ बोलबाक प्रसङ्ग तक पहुँचैत अछि। ई प्रश्न वित्तीय हानिक आकलनक विकल्प नहि, मुदा प्रारम्भिक हस्तक्षेपमे भरोसा टूटबाक पहिचान अछि। छात्र पुलिसक भय व्यक्त करैत अछि; शैलेश एखन विद्यालय-परिवारक स्तरपर काज करबाक, मुदा वास्तविक वित्तीय अपराध भेटला पर नियमानुसार प्रक्रिया अपनायबाक बात कहैत अछि। ई कथन गैरकानूनी व्यवहारकेँ क्षमा-प्रणालीक भीतर लुकायब नहि; कक्षागत अनुशासन आ आपराधिक प्रमाणक अधिकार-सीमा पृथक रखब अछि। छात्रकेँ ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वसँ एक गलत काजक समान नहि मानल जाए, से एहि दृश्य केन्द्रीय शिक्षा अछि।

शैलेशक भीतर प्रश्न उठैत अछि—ओकरो पहिने कियो ई कहने रहितय तँ किछु बदलितय? पाठ एतय ‘शायद’ पर ठहरैत अछि। वास्तविक वैकल्पिक इतिहास सिद्ध नहि कएल जा सकैत। एहि असिद्ध सम्भावनाक स्वीकारक कारण पुनर्वासक नैतिक आग्रह अधिक विश्वसनीय अछि। पुरान अपराध वा व्यक्तिगत दायित्व ओहि सँ धुलि नहि जाइत, मुदा वर्तमानमे हानि कम करबाक काज सम्भव अछि। दृश्य एक सूक्ष्म खतरा सेहो रखैत अछि—छात्रक

समस्याकेँ शैलेशक आत्ममोचनक मंच बनाबि देबाक; मुदा छात्रक प्रश्न आ विद्यालयक प्रक्रियाक उपस्थिति ओकर व्यक्तिगत भावनाकेँ नियंत्रित रखैत अछि।

दृश्य ३५१ : रितेशक दोकानक खाता-नियम आ बिना आत्मकथाक सीख

रितेशक दोकान स्थिर आय देब लागल अछि; ओ मोनू नामक अठारह बरखक सहायक राखैत अछि। पहिल दिन वित्तीय व्यवहारक एक साफ विभाजन निर्धारित करैत अछि—दोकानक पाइ दोकानक खातामे, ग्राहकक निजी पाइ ओकर खातामे नहि। एहि नियमक मूल्य कृतिक पहिनुक धन-वाहक खाता, पराई रकम आ सीमित आर्थिक अवसरक कथा पढ़लाक बाद स्पष्ट होइत अछि। दुकानक साधारण व्यवहार आपराधिक इतिहासक एक व्यावहारिक उत्तर बनैत अछि।

मोनू नियमक कारण पुछैत अछि। रितेश केवल कहैत अछि जे ई शिक्षा महँग पड़ल। ओ अपने भोगल संकटक सम्पूर्ण कथा नब सहायक पर लादैत नहि, ने अपनी छवि एक परिवर्तित महापुरुषक रूपमे देखबैत अछि। एहि चुप्पीकेँ प्रमाण लुकायबाक दोष मानब नहि; वर्तमान दृश्य प्रशिक्षणक अछि, न्यायालयक बयानक नहि। एकर विपरीत, कोनो औपचारिक अन्वेषणमे यदि पुरान घटना महत्त्वपूर्ण होइत तँ असल तथ्यक अवरोध समस्याजनक भऽ सकैत छल। प्रसङ्गक वर्गीकरण आवश्यक अछि।

ई लघु दृश्य उपन्यासक विशाल वित्तीय जालकेँ घर-दुकानक दैनिक नियममे उतरैत देखबैत अछि। संस्थागत वित्तीय नीति आ खुदरा दोकानक बही एक समान परिमाणक दस्तावेज नहि; मुदा अनुचित वित्तीय मिश्रणसँ बचबाक सावधानी दुनूमे भेटि सकैत अछि। शिल्पगत सामर्थ्य वाक्यक कटुता मे अछि—‘महँग सीखने छी’क पाछाँ सभ अतीत अनकहल रहैत अछि। पाठक पहिनुक दृश्यसभक आधार पर ओकर भार बुझैत अछि; लेखकीय पुनर्कथन आवश्यक नहि।

दृश्य ३५२ : विहानक प्रशिक्षण-कक्षमे असफलताक चारि अभिलेख आ खाली ठाम

विहान सारंग अम्बरक नव प्रशिक्षण-कक्षमे सफलता-पदकक बदला चारि असफल निर्णय दीवाल पर रखैत अछि। चेतावनीकेँ वृद्धि-विरोधी बुझब, बाहरी साझेदारक भूमिका अस्पष्ट छोड़ब, उपयोगकर्ता-हानि देरिसँ देखब, आ वित्तीय विभाजनक अर्थ पर पर्याप्त प्रश्न नहि करब—ई चारि विवरण संस्थागत इतिहासकेँ विजयक विवरणक बदला त्रुटिक लिखित अभिलेख बनबैत अछि। संस्थाक सुधार केवल सार्वजनिक क्षमायाचनामे सीमित नहि रहय, ताहि लेल पुरान चूकक विशिष्ट प्रकार चिन्हनाइ महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि कक्षमे एक खाली कोन सेहो अछि, जकर शीर्षक ‘जे एखन नहि देखैत छी’। ई मूल उपन्यासक प्रमाण-संयमक संस्थागत रूप अछि। जुनि ज्ञात नहि, ओकरा स्वीकृत सूचीक बाहिर छिपाउ नहि; ओकर उल्लेख करु। ईशान खाली कोनकेँ विशेष महत्त्व दैत अछि। विहानक उत्तर जे प्रबन्धन खाली स्थान पसिन्न नहि करैत, आर्थिक संस्थाक नियंत्रण-इच्छा पर हलुक व्यङ्ग्य अछि। ईशान जोड़ैत अछि जे जाँच सेहो अनिश्चितता सहजतासँ नहि सहैत। दुनूकेँ अपन-अपन क्षेत्रक प्रलोभन पहिचानए पड़ैत अछि।

दृश्यक आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे कक्ष बनल अछि, मुदा कर्मचारी वास्तवमे पाठ पढ़ि व्यवहार बदललक कि नहि, तकर स्वतंत्र परिणाम नहि देल गेल। चिन्हित असफलता अपने प्रभावी जोखिम-नियन्त्रणक प्रमाणपत्र नहि। शिल्पमे ‘खाली दीवाल’ एक तीक्ष्ण दृश्य प्रतीक बनैत अछि—नाटकीय खलनायकक बदला संस्थागत अज्ञान पर प्रकाश। नव्य न्यायक असिद्धक असिद्धता पर आग्रह, आधुनिक संगठनीय आत्मपरीक्षण आ विदेह समानान्तर इतिहासक त्रुटि-अभिलेख एतय तुलना लेल उपयुक्त अछि, मुदा एहि साधारण कक्षकेँ औपचारिक नियन्त्रण-परीक्षणक पूर्ण विकल्प मानब अनुचित।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३४९–३५२क चारि स्थान अछि—सिलाइ-दोकान, विद्यालय, खुदरा दोकान आ कॉर्पोरेट प्रशिक्षण-कक्ष। कोनो एक स्थानक निर्णय दोसरक विधिक अधिकार नहि बनैत। सबीना ग्राहककेँ बैंक दिस पठबैत छथि, शैलेश विद्यालयक छात्रक सन्दर्भमे अपराधक शंका विधिसँ अलग करैत अछि, रितेश दोकानक वित्तीय सीमा तय करैत अछि, विहान संस्थाक त्रुटि देखेबाक ठाम बनबैत अछि। एहि चारू दृश्यकेँ जोड़निहार तत्त्व अपराध-पश्चात अनुभवक उपयोग अछि, मुदा पूर्व अपराधक स्वतः क्षमा नहि। भारतीय सामाजिक नीतिमे अनुभवजन्य सावधानी, नव्य न्यायक श्रेणीभेद, पाश्चात्य उपन्यासमे पुनर्वासक अस्पष्ट परिणाम आ विदेहक घर–विद्यालय–व्यवसाय–संस्थानक समानान्तर विवरण एक साथ विश्लेषण दैत अछि। सभसँ सफल लघु क्रिया सबीनाक ‘डर’सँ ‘सावधानी’ दिस संशोधन आ अम्बरक खाली दीवाल अछि। सीमित पक्ष एहन अनेक संस्थागत सुधार-विवरणक कम नाटकीय विस्तार; पाठ परिणामक दीर्घ परीक्षणक बदला निर्णायक छोट प्रतीक पर भरोसा करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ८९ — दण्डपश्चात व्यक्तित्व, वृद्धावस्था आ पोथीक सातम पाँति (मूल दृश्य ३५३–३५६)

दृश्य ३५३ : सौरभक सार्वजनिक संवादमे विधिक आदेश आ नैतिक विचारक भेद

सौरभ बर्धन अपन दण्डक शेष अवधि समाप्त कऽ बाहर अबैत अछि। पूर्वक मीडिया-उत्साह घटि गेल अछि; ओ बिना प्रचार घर घुरैत अछि। किछु समयक पछाति उत्तरायणक नव बोर्ड ओकरा ‘पुरान शासन-त्रुटिसँ सीख’ विषयक सीमित संवादमे बजबैत अछि। एहि आमन्त्रण पर संस्थाक भीतर विरोध उठैत अछि—दोषसिद्ध पूर्व अधिकारी सार्वजनिक मंच पर किएक? कथा एहि विरोधकेँ खलनायकीय अज्ञान कहि समाप्त नहि करैत; ओकर उपस्थितिसँ संस्था आ व्यक्तिक दायित्वक तनाव देखाओल जाइत अछि।

सौरभ अपन उपस्थिति सुधारक प्रमाणपत्र मानबासँ पहिने अस्वीकार करैत अछि। ओ कम्पनीक भाषामे ‘जोखिम अलग’ कहबाक अर्थ कखनो असुविधाजनक तथ्यकेँ नजरिसँ दूर राखब छल, ई स्वीकार करैत अछि। एकर मूल साहित्यिक महत्त्व अस्पष्ट प्रबन्धकीय भाषाकेँ नैतिक जिम्मेदारीसँ काटि देखेबाक अछि। ‘वित्तीय पृथक्करण’ सन सुनबामे वैध वाक्य एक सन्दर्भमे वास्तविक सूचना नदेखबाक औजार भऽ सकैत अछि। कथामे ई आलोचना विशिष्ट व्यक्तिगत अनुभवरूपेँ अछि; सभ संस्थागत जोखिम-विभाजन स्वभावतः अनैतिक अछि, एहन सार्वभौम निष्कर्ष नहि।

जब ओकरा ‘अपराध स्वीकार?’ पुछल जाइत अछि, ओ न्यायालयक सिद्ध निष्कर्षकेँ आदेशमे रखैत, अपन एखनक कथनकेँ नैतिक भाषा कहैत अछि। ई उत्तर एक सूक्ष्म भेद स्थापित करैत अछि। कानूनी निर्णयक अपील, संशोधन अथवा दोषसिद्धि विशेष औपचारिक प्रक्रियाक विषय अछि; मंच पर आत्मबोध ओकर स्थान नहि लैत। एकर विपरीत, नैतिक आत्मपरीक्षण करब न्यायिक आदेशसँ निषिद्ध नहि। आलोचनात्मक सावधानी ई रखबाक जे मंचक एक

वक्तव्य सँ सौरभक दीर्घकालीन परिवर्तन पूर्ण सिद्ध नहि। उत्तरकथाक उपलब्धि एतबे जे ओ अपन दायित्वकेँ चमत्कारिक पवित्रतामे परिणत नहि करैत।

दृश्य ३५४ : मृणालिनीक देहक समय आ निरीक्षक-पुत्रक सीमित अधिकार

मृणालिनी वृद्ध भऽ रहल छथि, हुनकर ठेहुन दुखैत अछि आ सीढ़ी चढ़ब कठिन होइत अछि। ईशान राजधानी नगरक काज कम आ गामक उपस्थिति बेसी करैत अछि; ओ अस्पतालक निकट रहबाक लेल शहर जाएबाक सुझाव दैत अछि। मृणालिनी एखन गामक घर छोड़बाक इच्छा व्यक्त नहि करैत छथि। एहि विवादमे जीवन-रक्षाक व्यावहारिक चिन्ता आ व्यक्तिक अपन घरमे रहबाक चाहना दूनू अछि। ईशानक वाक्य ‘घर अस्पताल नहि’ तथ्यात्मक रूपमे एक भेद देखबैत अछि, मुदा ताहिसँ घर छोड़बाक निर्णय स्वतः निकलि नहि सकैत।

मृणालिनीक उत्तर जे ओ एखन रोगी नहि छथि, एक विशिष्ट आत्मस्थिति अछि; ई चिकित्सकीय निदान नहि। ईशान जाँचक अभ्यास घरक बातचीतमे लागू करैत अछि। माए ओकरा रचना सिन्हाक नामक ओट नहि लेबाक कहि रोकैत छथि। एहि हँसीक अर्थ पद्धतिक अनुपयुक्त विस्तार अछि: पुलिसक जाँचक प्रश्न पात्रक स्वतन्त्र इच्छाक ठाम बिना बदले लागू होइत तँ सम्बन्ध पूछताछ बनि जाइत। पुत्रक देखभालकर्ताक भूमिका महत्त्वपूर्ण, मुदा ओकरा माएक अनुभव पर पूर्ण निर्णयाधिकार नहि।

पाश्चात्य यथार्थवादी उपन्यासमे वृद्धावस्थाक सामान्य असुविधा त्रासदीसँ अलग जीवनक सूक्ष्म रेखा बनबैत अछि। एतय सेहो विवाह, अपराध, न्यायिक सुनवाईक दीर्घ विस्तारक बीच एक सामान्य झुँझलाहटक दृश्य सजीव अछि। तथापि अभी चिकित्सकीय जाँच वा रोगक विस्तृत परिणाम दृश्य ३५४मे नहि; तकर बादक प्रसङ्ग समीक्षा लेल पृथक राखब आवश्यक अछि। एहि छोट लघुकथात्मक क्षणमे सम्बन्धक समानता पूर्ण नहि, मुदा असहमतिक अवकाश सुरक्षित अछि।

दृश्य ३५५ : सातम पाँतिक निर्माण आ अनुभवसँ संशोधित भरोसा

धनेश्वरीक पोथी आब मृणालिनीक सिरहाना लग अछि। ओ ईशानकेँ सातम पाँति लिखबाक कहैत छथि। पोथीमे पहिनुक छह पाँति—साँपक भय, बुद्धिसँ पहरा, जागरूकता, नामक बदला काज, असिद्धकेँ असिद्ध राखब, पहराक बाद जीवन—एक घरक दीर्घ अनुभवक सूत्र रूपेँ उपस्थित अछि। ईशान लिखैत अछि—‘भरोसा छोड़ू नहि; भरोसाकेँ आँखि दिअ।’ एहि नव पाँतिक निर्माणक विशेष अर्थ कथाक नव कृत्रिम आवाजक प्रसङ्गसँ जुड़ल अछि। सत्यापनक अभ्यास भरोसा नष्ट करबाक समान नहि; ओ भरोसाक ज्ञानात्मक देखभाल अछि।

मृणालिनी सातम पाँतिक प्रशंसा करैत छथि, फेर जोड़ैत छथि जे ई घरमे सेहो लागू होइत अछि। ईशान ओकरा आवाजवला प्रकरणसँ निकालने अछि; माए ओकर सीमित प्रशिक्षण-प्रसङ्गकेँ पारिवारिक सम्बन्ध दिस घुरबैत छथि। एतय घरक विचारक सरल राजनीतिकरण नहि, निजी जीवनक सहज लागूकरण अछि। पाठक पहिल दृश्य ३४७क माएक कहबाक शर्त सेहो मोन पाड़ि सकैत अछि—नाम नहि, महिमामण्डन नहि। सातम पाँति मृणालिनी द्वारा बनायल दार्शनिक उपदेश नहि; दू पीढ़ीक बातचीतक परिणाम अछि।

शिल्पगत सीमा ई अछि जे बहुल पात्रक विस्तृत कथा बारम्बार एहन सूक्ति-सूचीमे समेटल जाए तँ कथाक बहुअर्थिता घटि सकैत अछि। मुदा मूल पाठ स्वयं पोथीकेँ विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम नहि कहैत। ई व्यक्तिक स्थान, सीमा आ पीढ़ीक सतत संशोधनक अभिलेख अछि। भारतीय नीतिपरम्परा सँ तुलना सम्भव अछि, परन्तु एहि निजी पोथीक प्रत्येक वाक्यकेँ प्राचीन ग्रन्थक प्रमाणित उद्धरण मानब नहि। कथा वास्तविक स्रोतक भेद अपनहि रेखांकित करैत अछि।

दृश्य ३५६ : वैदेहीक शोधप्रबन्ध आ नाम देबाक सीमित अनुमति

वैदेही झा शोधप्रबन्धक अन्तिम प्रति लऽ मृणालिनीक लग अबैत छथि। आभार-पृष्ठमे हुनकर नाम देबाक पहिने अनुमति माँगैत छथि। मृणालिनी ‘केवल नाम, कथा नहि’ कहैत छथि। एहि संवादमे शोधकर्ता आ अनुभव-

देवनिहारक सम्बन्धक नैतिकता स्पष्ट अछि: साक्षात्कार होयब शोधक सभ निजी विवरण पर अनियन्त्रित अधिकार नहि। नामक मान्यता आ व्यक्तिक निजी जीवनक कथात्मक उपयोग दुनू अलग निर्णय अछि।

वैदेहीक शीर्षक—‘दीर्घ न्याय, सामाजिक स्मृति आ आर्थिक अपराध’—एकर अकादमिक क्षेत्र निर्दिष्ट करैत अछि। ईशानक बिज्जी-प्रतीकयुक्त साहित्यिक पाण्डुलिपि आ वैदेहीक शोधप्रबन्धक ज्ञान-नियम भिन्न अछि। मृणालिनीक ‘बिज्जी नहि?’ प्रश्न आ वैदेहीक उत्तर जे ओ शोध नहि, सम्भवत: साहित्य—ई भेद एक हलुक पारिवारिक हँसीमे आबि जाइत अछि। जीवक प्रतीक शोधक विषय होबासँ सर्वथा निषिद्ध नहि, मुदा एहि शोधक घोषित शीर्षक ओकरा अलग रचनात्मक केन्द्र दैत अछि। शोधप्रबन्ध पूर्ण प्रति रूपमे आएल अछि, मुदा ओकर विश्वविद्यालयीय स्वीकृति, प्रकाशन अथवा सामाजिक प्रभावक विवरण एतय नहि। आलोचना एतेक सीमामे रहबाक चाही।

मृणालिनीक ‘आभारमे नाम’ स्वीकार करब दृश्य ३४७क ‘नाम नहि’सँ ऊपर-ऊपर विपरीत लगि सकैत अछि। मुदा पहिल प्रसङ्ग ईशान द्वारा निजी वाक्यक सार्वजनिक साहित्यिक उपयोगक छल; दोसर शोधकर्ताक औपचारिक आभारक। अलग उद्देश्य, अलग अनुमति, अलग प्रकाशन-परिस्थिति अछि। नव्य न्यायक प्रसङ्ग-विभागक दृष्टिसँ एहि भेदक परीक्षा उचित अछि; ‘एक बेर नाम मना कएलनि’ कहि सभ भविष्यक सन्दर्भकेँ अस्वीकार मानब तर्क-दोष होयत। एहि लघु दृश्यक उपलब्धि अनुभव-जन्य स्रोतक सहमति आ पद्धतिक सीमा केँ हास्यसँ व्यक्त करब अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३५३–३५६मे सार्वजनिक दोषसिद्ध व्यक्ति, वृद्ध स्त्रीक निवास-अधिकार, पारिवारिक पोथी आ शोधप्रबन्ध चारि अलग अभिलेख-संस्कृति अछि। सौरभक नैतिक वक्तव्य न्यायिक आदेश नहि बदलैत; मृणालिनीक इच्छाकेँ अस्पतालक निकटतासँ पूरी तरह निरस्त नहि कएल जा सकैत; पोथीक सात पाँति निजी

संशोधनशील ज्ञान अछि; वैदेहीक आभार-नामक अनुमति निजी कथा उपयोगक अनुमति नहि। एहि अलग-अलग निषेधक बीच एक रचनात्मक समानता अछि —कियो व्यक्ति अथवा संस्था अपन उपलब्ध श्रेणीसँ अधिक अधिकार नहि पाबय। भारतीय न्यायविचारक अधिकार-विवेचना, पाश्चात्य यथार्थवादक वृद्ध-जीवन, नव्य न्यायक प्रसङ्ग-भेद आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक घर–संस्थान–शोधक अलग स्रोत एहि इकाईक उपयुक्त आलोक अछि। भावनात्मक गाम्भीर्य माएक शहर जाएबाक असहमति आ वैदेहीक ‘केवल नाम’क स्वीकृतिमे विशेष ठोस अछि। एतय सिद्धान्तक प्रत्यक्ष वाक्यसभक बीच छोट हँसी पात्रसभकेँ पुनः जीवन्त बनबैत अछि।

अध्ययन-इकाई १० — जाँचक पाँच नियम, अपूर्ण उपन्यास आ जीवनक अन्तिम विकल्प (मूल दृश्य ३५७–३६०)

दृश्य ३५७ : रचनाक प्रशिक्षण-पुस्तिका आ असिद्धक रक्षा

रचना सिन्हा ‘प्रारम्भिक डिजिटल वित्तीय जाँचमे प्रमाण-अनुशासन’ शीर्षक पुस्तिका बनबैत छथि। पहिल पृष्ठक पाँच नियम उपन्यासभरि विकसित जाँच-पद्धतिक संक्षिप्त रूप अछि। असामान्य लेनदेन अपराधक पर्याय नहि; नामधारी खाताधारक वास्तविक नियंत्रक होइए, ई पहिने नहि मानू; तकनीकी सामग्रीक प्रामाणिकता आ ओकर अर्थ अलग प्रश्न अछि; साक्षीक अपूर्ण स्मृतिकेँ जबरन पूर्ण नहि कराउ; गलत परिकल्पना हटेनाइ सेहो अनुसन्धानक प्रगति। एहि नियमसभमे अनिरुद्धक प्रारम्भिक दुर्घटना-जाँचक बौद्धिक अनुशासन नव डिजिटल प्रकरण धरि पहुँचैत अछि।

कृतिक गम्भीर उपलब्धि एहि बातमे अछि जे जाँचक सफलता केवल अभियुक्तक संख्या बढ़ब नहि। पुरान कथामे नकली ट्रक, अधूर वाहन-संख्या आ संयुक्त बैंक-मार्ग अनेक गलत निष्कर्षक सम्भावना पैदा केने छल; रचनाक पाँच नियम ओहि अनुभवक संस्थागत स्मृति बनैत अछि। अपराधक दबावमे निर्दोष पर गलत अभियोग रोकब सेहो सार्वजनिक न्याय अछि। तेसर नियम विशेष मूल्यवान—कोनो डिजिटल अभिलेख वास्तविक स्रोतसँ आयल हो, तैयो ओकर सन्दर्भ आ अर्थक सम्बन्ध अलग जाँचबाक होइत अछि। प्रामाणिक सामग्रीक गलत व्याख्या न्यायकेँ विकृत करि सकैत अछि।

रोहित पुस्तिकामे दर्शनक नाम नहि देखि प्रश्न करैत अछि; रचना उपयोगिताक आधार पर जवाब दैत छथि, फेर स्रोत विसरबाक जोखिम स्वीकार कऽ अन्तमे भारतीय साक्ष्य-विचार, तर्कशास्त्र, न्याय-दर्शन आ डिजिटल फॉरेन्सिक पद्धतिक संक्षिप्त सन्दर्भ जोड़ैत छथि। व्यवहारिक ज्ञान आ स्रोत-अनुशासनक एहि संयोजनमे कृति ‘न्याय-दर्शन’क उपशीर्षककेँ तर्कसंगत बनबैत अछि। मुदा

पुस्तिका प्रकाशित भऽ प्रशिक्षणमे लागू भेल कि नहि, एहि दृश्यसँ प्रत्यक्ष सिद्ध नहि। शिल्पगत सीमा पाँच नियमक घोषणात्मक शैली अछि; तकर बल ओ सभक पिछला विस्तृत घटनासँ स्थापित सम्बन्धमे अछि।

दृश्य ३५८ : ईशानक उपन्यासक अन्तक समस्या आ कथाक आत्मसन्दर्भ

ईशान अपन पाण्डुलिपिक अन्त लिखय चाहैत अछि, मुदा रुकि जाइत अछि। मृणालिनीक प्रश्न, उपन्यास सभक मृत्यु अथवा विवाह पर किएक समाप्त होए, हास्यक रूपमे दू रूढ़ साहित्यिक समाधानकेँ उजागर करैत अछि। ईशान एहि सहज समाधानसँ असहमत अछि। माए हँसैत छथि; खाँसी उठैत अछि; बेटा पानि दैत अछि। संवादक एहि टूटल लयमे दृश्य जीवनक अनुभव बनैत अछि, खाली कथन-सूत्र नहि। मृणालिनीक शारीरिक थकानक संकेत सेहो उपस्थित अछि, मुदा एतय कोनो निश्चित रोगक निदान नहि।

‘अन्त जीवन जकाँ कर—किछु पूरा, किछु बाकी’क सलाह कृतिक लम्बा न्याय-इतिहासक फल अछि। अपराधकेँ सजा भेटब एक परिणाम अछि, मुदा परिवारक स्मृति, दण्डपश्चात सम्बन्ध, संस्थाक सुधार आ जीवित मनुष्यक इच्छा एकसाथ निर्णीत नहि होइत। एहन उत्तरकथामे ‘सभ समाप्त’क आश्वासन काल्पनिक सान्त्वना बनि सकैत। मृणालिनी अपूर्णताकेँ शिल्पगत दोष नहि, जीवनक कालानुक्रमिक अवस्था मानबाक रास्ता दैत छथि।

एतय महत्त्वपूर्ण आत्मसन्दर्भ अछि—कथाक भीतर ईशान एक उपन्यास लिखैत अछि, आ ओहि उपन्यासक समाप्तिक समस्या पाठक पढ़ि रहल मूल उपन्यासक समापन-प्रक्रियासँ संवाद करैत अछि। तथापि ईशानक काल्पनिक पाण्डुलिपि आ गजेन्द्र ठाकुरक वास्तविक कृति एक वस्तु नहि। कथानकक भीतरक लेखककेँ मूल लेखकक प्रत्यक्ष आत्मकथात्मक मुखपत्र मानब पाठ-विवेचनक सीमा तोड़ब होयत। संवादक सर्वोत्तम अंश माएक हँसी–खाँसी आ बेटाक पानि देनाइ अछि; ई शारीरिक वास्तविकता सूक्तिक अमूर्ततासँ रोकैत अछि।

दृश्य ३५९ : कमला-बलानक मौन, जीवसभक दूरी आ अपूर्ण समापन

साँझक दृश्य कमला-बलानक कात अछि। बिज्जीक बच्चा सभ फैलि रहल अछि, गोहि नदीक दोसर कात अछि; कोनो संघर्ष नहि। पूर्वक जीव-रूपकक आत्मालोचना एतय नव भावचित्र पबैत अछि। न्यायिक अपराधक कथानक अपन दुष्टता–रक्षकताक स्थिर द्वन्द्वकेँ प्रत्येक प्राकृतिक दृश्य पर आरोपित करब छोड़ैत अछि। ईशान माएक संग चलैत अछि; मृणालिनी लाठी टेकैत छथि। ‘थाकलहुँ?’ आ ‘कने आगाँ’क आदान-प्रदान एक वृद्ध व्यक्तिक गति आ इच्छाक सूक्ष्म स्वीकृति अछि।

दुनू नदी लग रुकि किछु नहि बाजैत छथि। मूल कथा स्वयं मौनक दू अर्थ अलग करैत अछि—भयसँ उपजल मौन, आ सम्पूर्ण निष्कर्षक आग्रह त्यागलाक पछाति सम्भव मौन। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ उपन्यासक प्रारम्भिक भागमे चुप्पी कखनो अपराधक दमन, कखनो साक्षीक अपूर्णता छल। एतय मौनकेँ स्वतः छलक लक्षण नहि मानल गेल अछि। अपन समय पर घर घुरबाक निर्णय मृणालिनी लैत छथि; ईशान सहयोग दैत अछि। परिवारक नब सन्तुलनकेँ कोनो नाटकीय घोषणा नहि चाही।

दीपकक हलुक इजोत, नदीक पानि आ पदचिह्न कृतिक आरम्भक संवेदनात्मक तत्वसभक बदलेल रूप अछि। पहिने पदचिह्न संकटसँ बचावक साक्षी छल; आब जीवनक निरन्तरता आ जीवसभक स्वतन्त्र उपस्थितिक संकेत अछि। तथापि ई दृश्यक तुरन्त पाछाँ दृश्य ३६०मे स्वास्थ्यक चिन्ता बढ़ैत अछि। तेँ ३५९ केँ उपन्यासक अन्तिम सम्पूर्ण समापन घोषित करब मूल क्रमसँ असंगत होयत। एकर श्रेष्ठता अस्थायी पूर्णताक क्षण उपलब्ध करबमे अछि, स्थायी सुखान्तिक घोषणा करबमे नहि।

दृश्य ३६० : वृद्धावस्थाक चिकित्सा-जाँच आ अपन घरमे रहबाक निर्णय

मृणालिनीक ठेहुनक दुखाइ, थकान, भोजन घटब आ कखनो साँस चढ़ब बढ़ैत अछि। ईशान हुनका शहरक अस्पताल लऽ जाइत अछि, जतय रक्त, हृदय, फेफड़ा आ उमेर सम्बन्धी अनेक जाँचक उल्लेख अछि। कथामे एक नाटकीय

रोगक नाम नहि, अनेक छोट कमजोरी बताओल गेल अछि। चिकित्सक नियमित दवा, देखभाल आ संक्रमणसँ बचावक सलाह दैत छथि, संगहि अचानक दशा बिगड़बाक सम्भावना बतबैत छथि। एहि कथनकेँ कियो निश्चित रोगक घोषणा अथवा तात्कालिक मृत्यु-सूचना बनायब स्रोतक अतिक्रमण होयत।

मृणालिनी सीधा पुछैत छथि—घर जा सकैत छी? चिकित्सक अनुमति दैत छथि, यदि घरमे देखभाल सम्भव हो। ईशान शहरमे किछु दिन रखबाक आग्रह करैत अछि, मुदा मृणालिनी ‘घर’ चुनैत छथि। फैसला न तऽ अन्ध चिकित्साविरोध अछि, न बेटाक स्नेहक अवज्ञा। चिकित्सकीय सुरक्षा आ व्यक्तिक आत्मनिर्णयक वास्तविक शर्त—घरमे देखभाल सम्भव होयब—एकहि संवादमे उपस्थित अछि। वृद्ध व्यक्तिक निवास-निर्णयक अधिकारकेँ उपन्यास एहि ठाम अत्यन्त ठोस रूपमे देखबैत अछि।

मृणालिनीक एहि अधिकारकेँ पूर्ण अप्रतिबन्धित इच्छा नहि मानबाक चाही: जँ घरमे आवश्यक देखभाल सम्भव नहि रहितय तँ परिस्थितिक विचार अलग होइत। मुदा कथामे चिकित्सक स्वयं सम्भावना स्वीकार करैत छथि। एहि कारण कथा मृणालिनीक निर्णयकेँ असमर्थ वृद्धाक जिदक रूपमे नहि लिखैत। चारि दृश्य पहिने ईशान अस्पताल-निकटताक तर्क राखने छल; एतय चिकित्सकीय परीक्षणक पछाति ओहि विवादक विशिष्ट समाधान भेटैत अछि। दीर्घ उपन्यासक हिसाबेँ ई छोट निर्णय—कतय रहब—बैंक खाता, अदालत आ अपराध-जालसँ भिन्न मानवीय अधिकारक शिखर अछि। शिल्पक प्रभाव एकर संयममे अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३५।७–३६० प्रमाण-अनुशासनक सबसँ महत्त्वपूर्ण अन्तिम परीक्षा दैत अछि। रचनाक पुस्तिका असिद्धक रक्षा करैत अछि; ईशानक पाण्डुलिपि अपूर्ण अन्त स्वीकार करैत अछि; नदीक मौन जीवसभपर थोपल युद्ध हटबैत अछि; चिकित्सकीय निर्णय वृद्ध व्यक्तिक इच्छाकेँ व्यवहार्य देखभालक शर्तसँ जोड़ैत

अछि। एहि चारूकेँ एकरे तरहक प्रमाण मानब उचित नहि। पुलिस-पुस्तिकाक नियम औपचारिक जाँचक मार्गदर्शक अछि, साहित्यिक अपूर्णता कलात्मक विकल्प अछि, नदीक दृश्य रूपकीय अनुभव अछि, आ अस्पतालक संवाद जीवन-निर्णयक वैद्यकीय शर्त राखैत अछि। नव्य न्यायक विभाग-पद्धति एही सीमा-संरक्षणमे उपयोगी अछि। भारतीय साहित्यिक अनुभवमे मौन आ अपूर्णता, पाश्चात्य उत्तरकथामे जीवनक शेष रहनिहारता, आ विदेह समानान्तर इतिहासमे संस्थाक कागजसँ परे वृद्धावस्थाक निजी निर्णय—ई सभ कृतिक अन्तिम प्रवाह पर अलग प्रकाश दैत अछि। उत्कृष्टता मृणालिनीक ‘घर’ कहबाक संक्षिप्त अधिकारमे अछि; सम्भावित सीमा पुस्तिकाक पाँच सूत्रक स्पष्ट उपदेशात्मक विन्यासमे।

अठारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — भरोसाक पुनर्परीक्षण, सामाजिक पुनर्वास आ वृद्ध व्यक्तिक स्वातन्त्र्य (मूल दृश्य ३४१–३६०)

पहरा आ सामान्य जीवन। छठम पाँति जीवनक अधिकारक सूत्र अछि; सातम पाँति भरोसाकेँ आँखि देबाक। ई दू चरण परस्पर पूरा करैत अछि: सतत भयक शासन समाप्त हो, मुदा सत्यापनक अभ्यास बन्न नहि। मूल कृतिक प्रारम्भमे बिज्जी भौतिक संकटसँ परिवारक रक्षा करैत अछि; दीर्घ अपराध-जाँचक कालमे पहरा अभिलेखक श्रेणीभेद बनैत अछि; उत्तरकथामे ओ दैनिक भरोसाक अनुशासन आ सामान्य जीवनक संभावना बनैत अछि। एहि रूपान्तरणक बीच गोहिक वास्तविक जीवकीय स्वतन्त्रता सेहो मानल गेल, जे रूपककेँ मनुष्यक हिंसाक बहाना बनबासँ रोकैत अछि। प्रतीकक एहि आत्मालोचनाकेँ कृतिक उपलब्धि मानल जा सकैत अछि।

ध्वनिक नव भ्रम आ प्राचीन प्रमाण-चिन्ता। दृश्य ३४४–३४८मे परिचित आवाजक नकल देखबैत अछि जे प्रौद्योगिकी मात्र संचारक गति नहि, प्रमाणक स्रोत-पहिचान सेहो कठिन बनबैत अछि। सुनल शब्द, स्रोतक प्रामाणिकता, कथनक अर्थ आ बादक सत्यापन चारि स्वतंत्र कड़ी अछि। रचनाक वृद्धा-साक्षात्कार, ईशानक जन-प्रशिक्षण आ तृषाक विधिक लेख एहि कड़ीकेँ अलग-अलग रूपमे पढ़ैत अछि। भारतीय प्रमाणशास्त्रक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द सम्बन्धी विवेचन एतय एक आलोचनात्मक दृष्टान्त दैत अछि; तथापि कृत्रिम आवाजक डिजिटल परीक्षण आधुनिक विशिष्ट विषय अछि, जकरा प्राचीन श्रेणीमे पूर्ण विलीन कएल नहि जा सकैत। समकालीन प्रौद्योगिकी विषयक उपन्यासक विश्वसनीयता एही सीमाबोध पर निर्भर अछि।

व्यक्तिक मर्यादा आ संस्थाक दायित्व। रचनाक वृद्धा प्रति व्यवहार, सबीनाक दोकानक रोकथाम, शैलेशक विद्यार्थी सम्बन्धी वार्ता, रितेशक रोजगार-नियम आ विहानक खाली दीवाल—ई पाँच प्रसङ्ग अपराधपश्चात सामाजिक दायित्वक

बहुल रूप देखबैत अछि। अज्ञात खाता-लेनदेन रोकनाइ बैंकक न्यायिक निर्णय नहि; विद्यालयक सहायता दोषसिद्धिक प्रतिवेदन नहि; प्रशिक्षण-कक्ष सुधारक दीर्घ प्रभावक स्वतः प्रमाण नहि। मुदा प्रत्येक ठाम सावधानीक व्यावहारिक उपयोग देखाओल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे ई सार्वजनिक जीवनक सूक्ष्म स्तर—घर, दोकान, विद्यालय, उद्यम आ अन्वेषक कार्यालय—बृहद् आर्थिक अपराधक कथासँ एक साथ चलैत अछि, बिना ओकरा एकहि प्रशासनिक केन्द्रमे सीमित कएने।

दोषसिद्धि आ आत्मबोधक अलग काल। सौरभ दण्ड पूरा कऽ बाहर आएलाक पछाति संस्थागत भाषाक नैतिक परिणाम पर विचार करैत अछि। प्रदीप अपन पुत्रीक विधिक लेख पढ़ि तकनीकी सामग्रीक दृश्य स्पष्टतासँ सच्चाइ स्वतः सिद्ध नहि होयबाक मानैत अछि। दुनू पात्रक आत्मचिन्तन साहित्यिक महत्त्व राखैत अछि, मुदा पहिनुक दोषक न्यायिक स्थिति नहि बदलैत। कारागारसँ निकसल व्यक्तिक पुनर्वास आ ओकरा प्रभावित लोकक स्मृति अलग कालचक्र अछि। पाश्चात्य अपराध-आख्यानक सरल ‘खलनायक पकड़ा गेल’ अन्त एहि उपन्यासमे बारम्बार खण्डित होइत अछि। तथापि सुधारक लघु दृश्यसभक संख्या अधिक होइत कथा कतहु दीर्घ घटनामूलक विस्तारक बदला नीति-वर्णनक नजिक पहुँचैत अछि; एहि सीमा पर आलोचकक नजरि रहबाक चाही।

लेखन, शोध आ कथनक अनुमति। ईशानक उपन्यास लिखब, वैदेहीक शोधप्रबन्ध तैयार करब, तृषाक विधिक लेख आ रचनाक प्रशिक्षण-पुस्तिका—चारि लेखकीय क्रिया अछि, मुदा सभकेँ एकटा सत्य-उत्पादनक मापसँ नहि तौलल जा सकैत। ईशान कल्पनात्मक रूपकक सम्भावना आ सीमाक प्रश्न पुछैत अछि; वैदेही अनुसन्धानमे प्रतिभागीक अनुमति जाँचैत छथि; तृषा विधिक तर्कक सामान्यीकरण करैत छथि; रचना प्रारम्भिक जाँचक प्रशिक्षण-सूत्र बनबैत छथि। मृणालिनी साहित्यिक उपयोगमे नाम नहि चाहैत छथि, आ शोधक आभारमे सीमित नाम स्वीकार करैत छथि—प्रसङ्ग बदलला पर सहमतिक विषय बदलैत अछि। एहि भेदसँ कथा कथनक अधिकार सम्बन्धी गहन, यद्यपि संक्षिप्त, आत्मालोचनात्मक आलोचना बनैत अछि।

मृणालिनीकेँ केन्द्र बनाकऽ मानवीय समयक पुनर्स्थापना। मूल कथाक आरम्भमे मृणालिनी ठेकेदार पति सत्यप्रकाशक मृत्यु आ धमकीक पृष्ठभूमिमे न्याय खोजैत छलीह। एखन हुनकर जीवनकेँ केवल ओहि दुर्घटनाक अनन्त परिशिष्ट बनाकऽ नहि रखल गेल अछि। ओ घरक पोथी सुधारैत छथि, पुत्रक लेखनपर अपना ढङ्गसँ टिप्पणी करैत छथि, रूपक पर हँसैत छथि, गोहिक बारेमे सोचैत छथि, आ अन्ततः इलाजक सलाहक संग अपन घर चुनैत छथि। ई परिवर्तन न्याय-इतिहासक समापन नहि, व्यक्तिगत जीवनक नव स्वायत्त स्तर अछि। ‘कहाँ रहब’ प्रश्नक छोटपनमे वृद्ध व्यक्तिक सम्मान स्पष्ट रूपसँ उभरैत अछि। एकरा वास्तविक चिकित्सकीय परामर्शक स्थानापन्न नहि मानब चाही; मूल आख्यानमे चिकित्सक आवश्यक देखभाल सम्भव होयबाक शर्त रखैत छथि।

पाठक लेल कलात्मक निष्कर्ष। दृश्य ३४१–३६०मे अपराध-उद्घाटनक तीव्र गति कने थामि सामाजिक पुनर्निर्माणक सूक्ष्म तन्तु देखाइत अछि। सबसँ सजीव प्रसङ्गसभ वैह अछि जतय क्रिया सिद्धान्तसँ पैघ बनैत अछि—ईशानक बन्द नोटबुक, वृद्धाक ‘पैसा?’ प्रश्न, सबीनाक रुकल मशीन, शैलेशक विद्यार्थीपर भरोसा, विहानक खाली दीवाल, माएक हँसी-खाँसी, आ अस्पतालमे ‘घर’ कहबाक निर्णय। दोसर दिस, कतिपय दृश्य स्वयं अपन अर्थ कहि देबाक कारण व्यञ्जनाक खुलापन घटबैत अछि। एहि दुई प्रवृत्तिक तनावक बीच कृतिक वास्तविक उपलब्धि अछि: अपराधक कथाकेँ केवल दण्ड वा विजयक अन्त नहि देल गेल, बल्कि ज्ञानक अनिश्चितता, लोकक स्वतन्त्र इच्छा, संस्थागत भूलक स्मृति आ भविष्यक अपूर्ण जीवनक संग जोड़ल गेल अछि। उपन्यासक शीर्षकक मूल संघर्ष-रूपक एखन सहअस्तित्व आ सावधान भरोसाक अधिक व्यापक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

अध्ययन-इकाई ९१ — औषधिक समयसँ आठम पाँति धरि : पहराक उद्देश्य आ प्रियजनक स्वातन्त्र्य (मूल दृश्य ३६१–३६४)

दृश्य ३६१ : दवाक समय, प्रमाणक प्रश्न आ सामान्य दिनक पुनरागमन

गढ़ नारिकेल घुरलाक पाछाँ मृणालिनी धनेश्वरीक पोथी सिरहाना लग रखैत छथि। ओहिमे एखन सात पाँति अछि। ईशान दवाक समय अलग कागज पर लिखि दैत अछि—बिहान, दुपहर, राति। मृणालिनी पुछैत छथि जे ई सेहो प्रमाण अछि कि नहि; ईशान एकरा ‘याद’ कहैत अछि। एहि छोट भेदक साहित्यिक अर्थ गहिर अछि। दवाक समय-लेखा व्यावहारिक स्मरणक साधन अछि, न रोगक कारण, असर वा चिकित्सकीय परिणामक स्वतन्त्र प्रमाण। पहिनुक जाँच-अभिलेखक प्रशिक्षण पुत्रक घरेलू व्यवहारमे पहुँचल अछि, मुदा ओ घरक सभ लिखल वस्तुकेँ अदालतक साक्ष्य बनाबैत नहि। कृतिक अन्तिम भागमे वैज्ञानिकता-बोधक परिपक्वता एही आत्म-सीमामे देखाइत अछि।

दृश्यक लघु वस्तु-सूची—ओसारा, धूप, पुस्तक, पड़ोसिन, वैदेहीक आगमन, तृषाक फोन—जीवनक पुनर्संयोजनक रूप बनैत अछि। ई उपचारक सफलताक चिकित्सा-प्रतिवेदन नहि, बीमारीक बीच सामान्य दिन बचा रखबाक परिवारक प्रयास अछि। रचना सिन्हाक छोट संदेश आ मृणालिनीक हलुक उत्तर ‘चलि रहल’ एहि सामान्यताक संवेदनात्मक केन्द्र अछि। पुलिस अधिकारीक प्रश्न अब अन्वेषणक जिरह नहि, सम्बन्ध निभेबाक संक्षिप्त उपस्थिति थिक। दू स्त्रीक हँसी बतबैत अछि जे लम्बा अपराधक जाँचक इतिहास साझा करनिहार सम्बन्ध सेहो बिनु प्रमाण-माँगने एक-दोसराक हालचाल पुछि सकैत अछि।

‘चलि रहल’क उत्तर सुखान्तक दावा नहि। स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव, सीमित शक्ति आ अनिश्चित भविष्यक संग जीबित वर्तमानक स्वीकार अछि। दृश्य कहैत अछि जे अनेक वर्षक पुरान संकट-पश्चात मानवीय जीवन केवल न्यायिक निर्णयसँ परिभाषित नहि रहैत। तथापि दृश्य मृणालिनीक शारीरिक स्वास्थ्यक विशिष्ट निदान अथवा चिकित्सकीय पूर्वानुमान दैत नहि; एकर उपलब्धि दैनिक

लयक विश्वसनीयता अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ सरकारी जाँचक दिनांक आ घरक दवा-पञ्जी अलग अभिलेख होइतहुँ एक स्त्रीक जीवनमे भेटैत अछि।

दृश्य ३६२ : जीवित माएक संग लेखन आ मरणोपरान्त कथाक अधिकार

ईशान माएक निद्राक समय लिखैत अछि, जागल समय हुनका संग बैसैत अछि। मृणालिनी ओकरा लेखन रोकि नहि देबाक कहैत छथि, किएक तँ पछाति स्मृति बदलि जाएत। एहि बातक भीतर संस्मरण आ उपन्यासक अन्तर पर पहिने सँ चलैत विवादक नव रूप अछि। जीवित साक्षीक संग वर्तमान समयमे बातचीत उपलब्ध अछि; मृत्यु-पश्चात कथाकार जँ चाहय तँ ओहि खाली ठामकेँ मनोकल्पनासँ भरि सकैत अछि। मृणालिनी एहि प्रलोभनक पूर्वानुमान करैत छथि, मुदा अपन जीवनकेँ केवल भविष्यक पाण्डुलिपिक सामग्री नहि बनबय चाहैत छथि।

‘हमर मृत्यु लिखबाक जल्दी मत करिह’ वाक्य उपन्यासक कथात्मक उपकरणकेँ ओकर अपन सीमा बतबैत अछि। अपराध-गाथामे मृत्यु कथानकक आरम्भ वा समापनक सरल चिह्न भऽ सकैत अछि। एहि बेर लेखक-पात्रक माए ओहि सुविधा पर आपत्ति करैत छथि। ईशान ‘हम बेटा छी’ कहैत अछि; मृणालिनी ‘दुनू’ कहि पुत्र आ लेखकक दुनू परिचय स्वीकार करैत छथि, किन्तु क्रम स्थापित करैत छथि—पहिने बेटा। एहि क्रमक अर्थ लिखनाइक स्थायी निषेध नहि, सम्बन्धक वर्तमान जिम्मेदारीकेँ साहित्यिक स्वामित्वसँ ऊपर राखब अछि।

दृश्यक हास्य—‘लेखकीय नुकसान’—मरण-विषयक वार्ताक कठोरता घटबैत अछि, बिना मृणालिनीक अधिकार मेटौने। ईशानक आँखि भरब, माएक विनोद आ अन्तिम आँखि मूनि लेनाइ तीन अलग शरीरगत प्रतिक्रिया अछि। एतय घोषित सिद्धान्तक तुलनामे चुप्पीक महत्त्व बेसी। पाश्चात्य आत्मसन्दर्भी आख्यानसँ वैचारिक तुलना करि सकैत छी, मुदा ईशानक रचल भविष्यक किताबकेँ गजेन्द्र ठाकुरक वास्तविक जीवन-वृत्त नहि मानल जाए। कृतिक लेखनाधिकारक प्रश्न कथाक भीतरक पात्रसभक सम्बन्धसँ उत्पन्न होइत अछि।

दृश्य ३६३ : आठम पाँतिक निर्माण आ रक्षा-बन्धनक भेद

आठम पाँति लिखबाक प्रस्ताव मृणालिनीक अछि। ओ ‘पहरा ककरा लेल’ पुछैत छथि; ईशान घर, मनुष्य, सत्य आदि उत्तर दैत अछि। प्रश्नक एहन खुलापन महत्त्वपूर्ण अछि: पहरा यदि केवल ककरो वस्तु बचबाक औजार हो, तँ पहरेदारक इच्छा सर्वोच्च भऽ सकैत अछि। ईशान बहुत देर रिक्त पाँति देखलाक पछाति लिखैत अछि—‘पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।’ ई ओहि सात पाँतिक यान्त्रिक विस्तार नहि, पूर्व सुरक्षाविचारक आन्तरिक समीक्षा अछि।

मृणालिनीक धीरे मूड़ी डोलायब आ ईशानक अपन पिछला आग्रह बुझब महत्त्वपूर्ण कथात्मक क्रम अछि। पुत्र शहरमे रहि इलाज करएबाक आग्रह कएलने छल; माए अपन घरक विकल्प चाहने छलीह। अब ईशान पहिने सँ सही मानल ‘अधिक सुरक्षा’क भीतर सेहो अधिकार-हानिक सम्भावना पहचानैत अछि। एहि सन्दर्भमे व्यक्ति अपन जीवनक निर्णय स्वयं करबाक समर्थ छथि, ताहि अधिकारक सम्मान प्रस्तुत अछि। मुदा एहि पाँतिसँ प्रत्येक चिकित्सा-सन्दर्भमे रोगीक एक बेर कहल बातकेँ बिना क्षमता, जोखिम वा देखभालक स्थिति जाँचने अन्तिम आदेश मानबाक सिद्धान्त नहि निकलैत। उपन्यास स्वयं अगिला दृश्यसभमे परिस्थितिक अनुसार निर्णय बदलब देखबैत अछि।

खिड़की बाहर न बिज्जी अछि, न गोहि; केवल गोधूलि। प्रतीकक अनुपस्थिति एहि नैतिक निष्कर्षक केन्द्र अछि। माँ-पुत्रक निर्णयक महत्त्व सिद्ध करबाक लेल जीवक नाटकीय उपस्थिति आवश्यक नहि। पहराक नीति एतय वन्यजीवक रूपकसँ हटि मानव सम्बन्धक मर्यादामे प्रवेश करैत अछि। कथाक छोट दोष ई जे अन्तिम व्याख्यात्मक पाँति प्रेम, न्याय आ स्वायत्तताक अर्थ स्पष्ट कहि दैत अछि; पाठक माँ-पुत्रक संवादसँ स्वयं सेहो ई निष्कर्ष पाबि सकैत छल। तथापि पोथीमे लिखबाक क्रिया विचारकेँ पहिने सँ चलैत वस्तुगत स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

दृश्य ३६४ : वृद्ध पिताक ‘सुरक्षा’ आ अनिच्छित बन्दीकरण

रचना सिन्हा प्रशिक्षणमे एक वृद्ध पुरुषक प्रसङ्ग सुनैत छथि। परिवार ऑनलाइन ठगीसँ बचेबाक नामपर बाहर जाएब, फोन आ बैंक कार्ड धरब रोकि देने अछि। परिवारक शब्द ‘सुरक्षा’ अछि; वृद्ध पुरुष अपन अवस्थाकेँ ‘कैद’ कहैत छथि। एहि विरोधी नामकरणमे अधिकारक विषय केवल अपराधसँ रक्षा नहि, पीड़ित-होयबाक सम्भावनाक आधारपर जीवनक सम्पूर्ण नियंत्रण सेहो बनैत अछि। अपराधी द्वारा सम्भावित वित्तीय हानिसँ बचबाक उपाय जँ संवाद, आवागमन आ आत्मनिर्णय समाप्त करैत अछि, तँ अपराधक भय अपन स्वतन्त्र सामाजिक हानि पैदा करैत अछि।

ईशानक आठम पाँति रचना जानैत नहि छथि। एहन कथा-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि: एकहि प्रश्न पर अलग जीवन-अनुभवसँ समान समझ पैदा होइत अछि। रचनाक प्रशिक्षणक वाक्य—जोखिम-नियन्त्रण व्यक्तिक जीवन समाप्त करबाक नाम नहि—कुनो परिवारक निजी पोथीसँ उधार नहि लेल गेल। एहि कारण कृतिक नैतिक विचार एक परिवारक बौद्धिक स्वामित्वमे बन्द नहि। घरक समझ आ संस्थाक व्यावहारिक कानून-दृष्टि समानान्तर बढ़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे एहि वृद्ध पुरुषक विशिष्ट आर्थिक क्षमता, वैकल्पिक सहायता अथवा परिवारक कानूनसम्मत अधिकारक विस्तृत तथ्य पाठमे नहि अछि। तँ परिवारक व्यवहार अत्यधिक नियन्त्रणकारी प्रतीत होइतहुँ ओकरा कोनो निश्चित न्यायालयी श्रेणीमे राखब अनुचित। भारतीय न्यायिक विचारमे कल्याण आ स्वातन्त्र्यक सन्तुलन, नव्य न्यायमे शब्दक विषय-सीमा, आ समकालीन अपराध-आख्यानमे पीड़ितक स्वायत्तताक प्रश्न एतय तुलना लेल उपयोगी अछि। एहि दृश्यसँ ठोस बात ई निकलैत अछि जे अत्यधिक पहरा अपराध-पश्चात सामान्य जीवनकेँ अपनहि क्षति पहुँचा सकैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३६१–३६४मे ‘लिखल’क चारि अलग उपयोग अछि—दवाक समयक स्मरण, ईशानक साहित्यिक पाण्डुलिपि, धनेश्वरीक पोथीक आठम पाँति आ रचनाक प्रशिक्षण-कथन। एहि चारूकेँ एकटा विधिक साक्ष्य बनबैत भ्रम उत्पन्न होयत। पहिल व्यवहारिक सहायता अछि; दोसर चयनात्मक कला; तेसर नैतिक स्व-नियन्त्रण; चौठ संस्थागत प्रशिक्षण। मुदा चारू ठाम एक सीमा-सवाल अछि—जे किछु हम जानैत छी, ओकर आधारपर दोसराक जीवनपर कतेक अधिकार जतबैत छी? मृणालिनीक विनोद आ वृद्ध पिताक ‘कैद’ शब्द एही प्रश्नकेँ दार्शनिक अमूर्ततासँ बाहर अनैत अछि। उपन्यासक शिल्पगत उपलब्धि नैतिक सूत्रक समय-सापेक्ष रूपान्तरण अछि; सीमा पुनः वैह जे कथावाचक कतहु-कतहु दृश्यसँ निकलैत भावकेँ दोहराकऽ सीधे कहि दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ९२ — निजी पोथीक सार्वजनिक यात्रा आ बीमारीमे बदलैत निर्णय (मूल दृश्य ३६५–३६८)

दृश्य ३६५ : तृषाक प्रश्न, परिवारक लेखकीय अधिकार आ नामरहित प्रकाशन

तृषा छुट्टीमे गढ़ नारिकेल आबैत छथि, प्रदीप हुनका संग नहि अछि। मृणालिनी हुनका ‘कानूनवाली’ कहि बजबैत छथि; तृषा स्वयं कैं विद्यार्थी कहैत छथि। कानून पढ़लाक पछाति निश्चितता बढ़ल कि घटल—एहि प्रश्न पर तृषाक ‘कम’ उत्तर कृतिक प्रमाण-सम्बन्धी पाठक उत्तरार्धक संक्षेप अछि। विधिक शिक्षा सब प्रश्नक सरल उत्तर देब नहि, अपन निष्कर्षक सीमा बुझब सिखा सकैत अछि। ई संवाद खास अछि किएक तँ मृणालिनी विधि-शिक्षाक औपचारिक अध्यापिका नहि, मुदा जीवित अनुभवक आधारपर एक अत्यन्त उचित प्रश्न रखैत छथि।

तृषा आठ पाँतिक पोथी सार्वजनिक करबाक प्रस्ताव रखैत छथि। मृणालिनी तुरन्त मना करैत छथि—घरक बात अछि। तृषा कहैत छथि जे कतेको घरक बात समाजक काज आओत। दुनू पक्षमे तर्क अछि। ज्ञानक सार्वजनिक उपयोग ओकर स्रोत-व्यक्तिक निजी जीवनक अधिकार स्वतः समाप्त नहि करैत; दोसर दिस अनेक घरमे उपयोगी समझ केवल गोपनीय रहलासँ सीमित रहि सकैत अछि। मृणालिनी बीचक विकल्प स्वयं निश्चित करैत छथि—नाम नहि, पूरा किताब नहि, केवल पाँतिसभ। तृषा एहि सीमा पर सहमत होइत छथि।

एहि सहमतिक आलोचनात्मक महत्त्व बहुते बेसी अछि। अनाम राखब एक तरहक स्वीकृत प्रकाशन-शर्त अछि, बिना शर्त सभ सामग्रीक मुक्त उपयोग नहि। ईशान दूरसँ सुनैत अछि; ओहि क्षण संवादक मुख्य पक्ष मृणालिनी आ तृषा छथि। मृणालिनीकैं ‘समाजक भलाइ’क नाम पर राजी करा कऽ निजत्व छीनल नहि गेल; ओ अपन मर्यादा निर्धारित कऽ सीमित अधिकार देलनि। विदेह समानान्तर इतिहासक सन्दर्भमे परिवारक मौखिक विचार सार्वजनिक लोक-शिक्षामे प्रवेश करैत अछि, मुदा स्रोत-पहिचान संरक्षित रहबाक अनुमति नहि देब सेहो लेखकक आदरणीय निर्णय हो सकैत अछि।

दृश्य ३६६ : आठ पाँतिक अनाम वितरण आ ज्ञानक बहु-संस्थागत जीवन

ईशान बिना शीर्षक आ बिना लेखक-नामक छोट पन्ना बनबैत अछि। ओकर प्रतिलिपि विद्यालयक पुस्तकालय, सिलाइ-दोकान, रितेशक दोकान, शैलेशक विद्यालय, अम्बरक प्रशिक्षण-कक्ष आ रचनाक कार्यालयमे पहुँचैत अछि; प्रदीप अपन कक्षाक देबाल पर सेहो लगबैत अछि। वितरणक एहि स्थान-सूचीमे उपन्यासक पुरान विभिन्न पात्रसभक जीवन-परिसर एक विचारक माध्यम बनैत अछि। परिवारक कागज पुलिस प्रशिक्षणमे जाइत अछि, विद्यालयमे पहुँचैत अछि, छोट कारोबारक देखनिहार धरि अबैत अछि। कथाक सामाजिक फैलाव एहि ठोस गन्तव्यसभसँ देखाइत अछि, केवल ‘सभ लोक पढ़लक’ जकाँ अस्पष्ट दावासँ नहि।

उपन्यास चारि सूत्र उद्धृत करैत अछि—अज्ञानक स्वीकार, भरोसाकेँ आँखि देब, पहराक बादो जीवन जीब आ रक्षित व्यक्तिक स्वातन्त्र्य नहि खायब। मूल पाँतिसभक पूरा आठो पाठ एतय पुनः उद्धृत नहि; समीक्षा एहि दृश्यसँ अनुपस्थित पाँतिसभ स्वयं नहि बनाओत। एहि चारि पाँतिक एक क्रम अछि: जानबाक मर्यादा, जाँचक विवेक, सामान्य जीवनक अधिकार, आ रक्षकक शक्तिपर सीमा। एहिमे पुरान अपराध-जाँचक अभ्यास विद्यालय आ दुकानक सामान्य व्यवहार धरि बढ़ैत अछि।

मृणालिनीक ‘एतय ठीक’ प्रकाशनक उपयुक्त सीमाक स्वीकृति अछि, पूर्ण पोथी सार्वजनिक करबाक सहमति नहि। एहि ठाम दार्शनिक सत्यक सामाजिक प्रसार आ विशिष्ट कागजक मालिकी अलग रहल अछि। अनाम वाक्य पढ़निहारसभ एहि सूत्रपर अमल कएलनि कि नहि, पाठ नहि बतबैत; तेँ जागरूकताक परिणामक मात्रात्मक दावा सम्भव नहि। कलात्मक जोखिम ई अछि जे चारि सूत्र एकत्र होयबासँ घोष-वाक्यक स्वर बढ़ैत अछि; मुदा कथा प्रतिलिपिक गिनती आ वास्तविक स्थान देलाक कारण विचारकेँ वस्तु आ व्यवहारक रूप देबामे सफल अछि।

दृश्य ३६७ : आकस्मिक अस्पताल-प्रवेश आ स्वायत्तताक परिस्थिति-निर्भर रूप

किछु सप्ताह पाछाँ मृणालिनीक साँस खराब होइत अछि। ईशान एम्बुलेंस बजबैत अछि; मृणालिनी अस्पताल जाएबासँ विरोध नहि करैत छथि। ऑक्सीजन आ औषधिक उपचारक बीच दू दिन सुधार होइत अछि; तेसर दिन चिकित्सक संक्रमण आ उमेरक कारण सावधानीक बात कहैत छथि। मृणालिनी घर घुरबाक पुछैत छथि, मुदा चिकित्सक एखन असम्भव बतबैत छथि। ओ सहमति दैत छथि। एहि क्रमसँ आठम पाँतिक अर्थ जटिल होइत अछि—स्वतन्त्रता स्थिर स्थान पर ‘हमेशा घर’ अथवा ‘हमेशा अस्पताल’ चुनबाक व्रत नहि, वर्तमान स्थिति बुझि सकबाक आ उपलब्ध विकल्पक बीच निर्णयक अधिकार अछि।

पूर्व दृश्य ३६३मे ईशान अत्यधिक रक्षा आ स्वायत्तताक भेद सीखलक। एतय ओहि शिक्षाक सरल परीक्षा अछि: स्वास्थ्यक तत्काल जोखिम एतेक अछि जे अस्पताल आवश्यक मानल जाइत अछि, आ मृणालिनी सेहो ओहि निर्णयमे विरोध नहि करैत छथि। परिवारक प्रेम वा व्यक्तिक घर-प्रेम चिकित्सकीय आवश्यकता मेटा नहि दैत। एहि कारण अध्याय ३७३क आगाँक कठिन निर्णयक पृष्ठभूमि विश्वसनीय बनैत अछि। दुनू प्रसङ्गकेँ एकहि नारा सँ नहि नापि सकैत छी।

साहित्यिक रूपमे वाक्यसभ छोट अछि—‘राति’, ‘ऑक्सीजन’, ‘औषधि’, ‘ठीक’। श्वासक कठिनाइ प्रत्यक्ष चिकित्सकीय तथ्यक विस्तारबिना लयमे उपस्थित अछि। मुदा मूल पाठ संक्रमणक नाम, जाँच-संख्या अथवा निदानक पूरा विवरण नहि दैत; ओ सामग्री आलोचनामे जोड़ब मिथ्या होयत। कृतिक विषय उपचारक वास्तविक विकल्प आ माँ-पुत्रक सहमति अछि, चिकित्साविज्ञानक निर्देशिका बनब नहि।

दृश्य ३६८ : मृत्यु-पश्चात जीवन चलबाक आग्रह आ एकल नायिकाक सीमा

अस्पतालमे मृणालिनी ईशानक पाण्डुलिपिक अन्त पुछैत छथि। अन्त नहि लिखल गेल—एहि उत्तर पर ओ प्रसन्न होइत छथि। तकर पाछाँ मृणालिनी

कहैत छथि जे कथा हुनका पाछाँ समाप्त नहि हो; रचना जाँच करतीह, तृषा पढ़तीह, सबीना सिलाइ करतीह, मंजरी अस्पतालमे रहत, बिज्जी अपन काज करत। एहि सूचीमे उपन्यासक दीर्घ सामाजिक परिधि फेर देखाइत अछि। मृणालिनी अपन मृत्युकेँ समस्त समाजक कथात्मक केन्द्र बनबाक अनुमति नहि दैत छथि।

एहि सूचीमे मनुष्यक व्यवसाय आ वास्तविक बिज्जीक जीवित क्रिया अलग अछि; एकरा रूपकक एके पात्र-दल मानि लेलासँ कृतिक उत्तरकथाक विचार बिगड़त। रचनाक जाँच, तृषाक अध्ययन, सबीनाक श्रम, मंजरीक अस्पतालक काज—सभकेँ अपन-अपन समय अछि। मृणालिनी नहि चाहैत छथि जे ओकर जीवन समाप्त भेलाक मतलब दोसर सभक जीवन सेहो अन्तिम अर्थ पाबि गेल। एहन निषेध अपराध-आख्यानक पारम्परिक ‘एक मृत्यु–एक सत्य–एक अन्त’ संरचनाकेँ खोलैत अछि।

‘हम मृत्यु बजा नहि रहल, नियम कहि रहल’ कथन जीवित माएक स्वाभिमान देखबैत अछि। अस्वस्थता हुनकर विचार-क्षमता अथवा कथनाधिकार स्वतः नहि छीनैत। ईशानक रोदन आ माथ पर माएक स्पर्श दुनू उपस्थित अछि; बौद्धिक चर्चा पीड़ा मेटा नहि दैत। दृश्य ३६२क ‘पहिने बेटा’ सँ एतय एक गम्भीर सम्बन्ध बनैत अछि: ईशान लेखकक रूपमे अन्तक चिन्ता कऽ सकैत अछि, मुदा बेटाक रूपमे एहि रातिक उपस्थिति ओकर तात्कालिक काज अछि। एहि भावनात्मक वजनक कारण दृश्य सफल अछि, जँ कि कथनक किछु अंश प्रत्यक्ष जीवन-सूत्रक लयमे अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३६५–३६८मे अनुमति, प्रसार, उपचार आ कथात्मक अन्तक चारि अलग निर्णय देखाइत अछि। पोथीक शब्द सार्वजनिक करबाक अधिकार मृणालिनीक शर्तक अधीन अछि; सार्वजनिक उपयोगक ठाम अनेक अछि; अस्पतालक आवश्यकता परिस्थितिसँ बदलैत अछि; आ उपन्यासक अन्त माएक मृत्युक

आज्ञाकारी प्रतीक नहि बनबाक चाही। एहि चारू ठाम ‘रक्षकक शक्ति’ सीमित कएल जाइत अछि—सामाजिक भलाइ चाहनिहार तृषा सेहो पूछैत छथि; पुत्र माएक उपचार पर अधिकारक बदला संवाद करैत अछि; लेखक अपन पात्रक जीवन पाण्डुलिपिक सुखान्तक लेल बन्द नहि करैत। भारतीय प्रमाण-विचारक वस्तु-प्रयोजनक भेद, पाश्चात्य आत्मसन्दर्भी कथाक समापन-प्रश्न, आ जन-इतिहासक विविध संस्था एक दोसरा पर प्रकाश फेकैत अछि, मुदा पोथी-पत्र, चिकित्सकीय सहमति आ कला-संरचना एकही प्रकारक अधिकार नहि।

अध्ययन-इकाई ९३ — अनाम अधिकारसँ अन्तिम देखभालक निर्णय धरि : साहित्यक संयम आ जीवनक मर्यादा (मूल दृश्य ३६९–३७२)

दृश्य ३६९ : घर वापसीक शर्त, किवाड़क प्रश्न आ वस्तुक मौन

चौठ दिन स्वास्थ्य स्थिर होइत अछि, पाँचम दिन सुधार; सातम दिन चिकित्सक घर घुरबाक अनुमति दैत छथि, मुदा ऑक्सीजन व्यवस्था, नर्सिंग देखभाल आ आकस्मिक योजना सहित। एहि तीन शर्तक उपस्थितिमे घर लौटब केवल भावुक इच्छा नहि। आवासीय देखभाल लेल व्यवस्था आवश्यक अछि, आ मूल कथा एकरा स्वीकार करैत अछि। एतय उपचार-विरोधी सरल निर्णय नहि, अस्पताल आ घरक बीच उत्तरदायित्वक हस्तान्तरण अछि। कथावाचक एहि चिकित्सकीय विवरणकेँ छोट रखैत अछि, मुदा उपचारक व्यवहारिक मर्यादा स्पष्ट अछि।

घरक देहरी पर मृणालिनीक ‘कुंडी?’ प्रश्न पर ईशान हँसैत अछि; ओ दिनक उजासक उल्लेख करैत अछि, मुदा माए किवाड़क स्थिति जानय चाहैत छथि। ई छोट प्रश्न भयक शेष इतिहास, अपन घरपर नियन्त्रण आ परिचित दिनचर्याक इच्छा—तीनू अर्थ देबामे समर्थ अछि। एकरे केवल रोगजनित भ्रम कहब अथवा अपराध-जालक नव उपस्थिति मानब पाठसँ बाहर जाएब होयत। साहित्यिक शक्ति एहि खुलल अर्थमे अछि।

सिरहाना, पोथी, सत्यप्रकाशक फोटो, धनेश्वरीक ओढ़नी आ ओसाराक क्रम घरक अन्तःइतिहास बनैत अछि। घर व्यक्ति जकाँ स्वागत नहि करैत; ओ केवल उपस्थित अछि। एहि अनावेशित वस्तु-वर्णनसँ कथा शोक आ स्मृति लेल जगह बनबैत अछि। मृणालिनीक घरक अधिकार ओकर जीवनक दीर्घ इतिहाससँ जुड़ैत अछि, मुदा घरक उपस्थिति चिकित्सा-सुविधाक विकल्प नहि। दू क्षेत्र एक दोसरा पर निर्भर अछि, समान नहि।

दृश्य ३७० : बिज्जीक अचिन्हार रूप आ निजी क्षण न लिखबाक आज्ञा

मृणालिनी ओसारामे धूप लैत छथि तखन एक बिज्जी देहरी लग रुकैत अछि। ईशान याद दिअबैत अछि जे ई पुरान बिज्जी नहि भऽ सकैत। मृणालिनी उत्तर दैत छथि जे ओ ई बात जानैत छथि। एतय एक विनोदसँ पहचानक प्रश्न सुधरल अछि: कथाक आरम्भमे जीवक पदचिह्न पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहराक प्रतीक बनल, मुदा कोनो वर्तमान बिज्जीकेँ पहिल रातिक वैह जीव घोषित नहि कएल गेल। वंश-निरन्तरता आ व्यक्तिगत समानता पृथक बात अछि।

मृणालिनी ‘व्यक्ति बदलैत, पहरा रहैत’ कहैत छथि। ईशान तुरन्त नोटबुक निकालैत अछि; माए रोकैत छथि—‘सभ बात मत लिख’। एहि रोकमे पोथी सार्वजनिक करबाक पिछला सीमित अनुमतिक अनुगूँज अछि। तृषाकेँ पाँति छपबाक अधिकार देल गेल; ईशानकेँ प्रत्येक निजी संवाद तुरन्त लिखि लेबाक निर्विवाद अधिकार नहि। एक व्यक्ति अपन उपयोगी बातक समाजमे प्रसार चाहि सकैत छथि, किन्तु अपन हर घरेलू क्षणक साहित्यिक रूपान्तरण नहि चाहि सकैत छथि।

ईशान नोटबुक बन्द करैत अछि। एतय नैतिकता घोषणा नहि, क्रियामे अछि। आलोचनाक लेल शिल्पगत विडम्बना देखबाक योग्य अछि—मूल कथावाचक पाठककेँ ई घटनाक विवरण दैत अछि, ताहि कारण पूर्ण निजी अदृश्यता साहित्यिक पाठमे सम्भव नहि। तथापि लेखक-पात्रक व्यवहारमे सीमाक अभ्यास देखाओल गेल अछि। साहित्यिक आत्मालोचनाकेँ सिद्धान्तक बदला एक बन्द नोटबुकक चित्र भेटैत अछि।

दृश्य ३७१ : नाम नहि देब आ शब्द उपयोगक अधिकार—अनाम सामग्री स्वतन्त्र सम्पत्ति नहि

रचना सिन्हा आठ पाँतिक अनाम पन्ना पढ़ैत छथि। रोहित नाम नहि रहबाक लाभ पर टिप्पणी करैत अछि—लोक नामक बदला पाँति पढ़त। रचनाकेँ आठम पाँति पुलिसक शक्ति, परिवारक नियन्त्रण, बैंक-खाता रोकबाक प्रक्रिया, डिजिटल सुरक्षा आ राज्यक अधिकार—पाँच अलग स्तर पर लागू होयबाक सम्भावना

देखाइत अछि। ई बौद्धिक सम्भावना अछि; मूल पाँतिसभ कोनो विशिष्ट विधिक नियमक स्वतः प्रवर्तनीय आदेश नहि। बैंकक नियन्त्रण आ परिवारक पहरा अलग कानूनी व्यवस्था अछि, तखनहुँ अधिकारक मर्यादाक समान प्रश्न उठि सकैत अछि।

रचना एहि पन्नाकेँ प्रशिक्षण-पुस्तिकामे राखबाक पहिने रुकैत छथि। मुख्य शब्द ‘अनुमति’ अछि। अनाम लेखक-नामक अनुपस्थिति एकरा स्वतन्त्र पुनरुत्पादनक सम्पत्ति नहि बनबैत। रचना ईशानकेँ पुछैत छथि, ईशान माएक अनुमति लैत अछि, मृणालिनी मूल पाँति नहि बदलबाक आ नाम नहि देबाक शर्त रखैत छथि। ई क्रम उपन्यासक दीर्घ प्रमाण-नैतिकताकेँ लेखकीय व्यवहारक अधिकारमे रूपान्तरित करैत अछि।

एहि दृश्यक एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पक्ष अछि—आपराधिक अन्वेषणक संस्था घरक लोकज्ञानक उपयोग करैत अछि, मुदा ओकरा अपन लेखनक नाम पर कब्जा नहि करैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक समीक्षा एहि अनुशासनकेँ संस्थागत लेखन आ जन-स्मृतिक सम्बन्धमे पढ़ि सकैत अछि। तथापि कथास्रोत अनुमति प्राप्तिक प्रसङ्गक मात्र बयान करैत अछि; प्रकाशन-अधिकारक औपचारिक कागज अथवा प्रशिक्षणक बादक प्रभावक जानकारी नहि। तकर कल्पित विवरण समीक्षा नहि जोड़त।

दृश्य ३७२ : पाण्डुलिपिक अन्तिम तिहाईक सम्पादन आ प्रतीकक अत्यधिक प्रयोग

ईशान अपन पाण्डुलिपिक अन्तिम तिहाई फेर पढ़ैत अछि आ देखैत अछि जे ‘पहरा’ बहुत बेर दोहरायल अछि। ओ किछु काटैत अछि; बिज्जी आ गोहिक उल्लेख घटबैत अछि; जकर मुँहसँ न्याय-दर्शनक शब्द अस्वाभाविक लगैत अछि, ओ कथन सेहो हटबैत अछि। एहि क्रममे उपन्यास स्वयं अपन आलोचनाक सम्भावित आपत्तिसभ पहचानैत अछि—अधिक रूपक नारा बनि सकैत अछि, सिद्धान्त पात्रक स्वर पर भारी पड़ि सकैत अछि, आ अर्थ स्पष्ट करबाक उतावल कथाक मौन नष्ट करैत अछि।

सम्पादकीय क्रियाक स्वरूप स्पष्ट अछि: कथानकक सम्पूर्ण ढाँचा बदलल गेल, एहन नहि कहल गेल; विशिष्ट पुनरुक्ति, अस्वाभाविक कथन आ आवश्यकता-विहीन प्रतीक हटाओल गेल। ई दृश्य लेखक-पात्रक सम्पादनक विषयमे अछि, स्वयं पाठकक हाथमे उपस्थित सम्पूर्ण उपन्यासक वास्तविक सम्पादित संस्करणक प्रमाण नहि। एहन भेद राखब जरूरी अछि, किएक तँ कथाक भीतरक आत्मालोचना वास्तविक मुद्रित पाठमे रूपक-आधिक्य पूर्णतया हटि गेल, एहन सिद्ध नहि करैत।

मृणालिनीक ‘सभ बात मत लिख’ आठम पाँतिक समान एक व्यावहारिक सीमा बनि गेल अछि। एकटा वाक्य परिवारक निजत्वक रक्षासँ साहित्यक संक्षिप्ततताक साधन धरि पहुँचित अछि। एतय नव्य न्यायक प्रकरण-विशिष्ट भेदक सैद्धान्तिक उपयोग सम्भव अछि—कथनक स्रोत, विषय, उद्देश्य आ भाषिक भार अलग करब। पाश्चात्य आधुनिक कथाशिल्पमे अत्युक्ति-संपादनसँ तुलना सेहो सम्भव, मुदा उपन्यासक उपलब्धि ई अछि जे सिद्धान्त ईशानक वास्तविक काटनाइमे दृश्यमान अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३६९–३७२मे वस्तुक मौन, अनपहिचान जीव, अनुमति-पत्रक नैतिकता आ साहित्यिक सम्पादन मिलि एक नब पाठ-बोध रचैत अछि। घरक वस्तु विगतकेँ उपस्थित करैत अछि, जीव अपन वास्तविक अचिन्हार अस्तित्वमे रहैत अछि, अनाम पाँतिक शब्द उपयोग कएने पहिने मूल कथनकर्ताक स्वीकृति माँगल जाइत अछि, आ लेखक अपन रूपकक बारम्बारता काटैत अछि। एहि चारू दृश्यकेँ एक अर्थमे समेटब उचित नहि—घरक स्वास्थ्य-सुविधा, जीवविज्ञान, प्रकाशन-शर्त आ साहित्य-सम्पादन अलग ज्ञान-क्षेत्र अछि। मुदा सभ ठाम ‘हम जानैत छी, तँ सभक उपयोग करब’ एहन विस्तारवादी आग्रह पर संयम देखाइत अछि। कृतिक आन्तरिक आलोचना एतय वास्तविक उपलब्धि अछि।

अध्ययन-इकाई १४ — अन्तिम चिकित्सकीय निर्णय आ मृत्युकेँ कथात्मक तमाशासँ बचायब (मूल दृश्य ३७३–३७६)

दृश्य ३७३ : निर्णयक्षम मृणालिनी आ घरमे आरामकेँ प्राथमिकता देबाक जटिलता

अगिला भोर मृणालिनीक स्वास्थ्य अचानक बहुत खराब होइत अछि। नर्स ईशानकेँ बजबैत छथि; चिकित्सक फोन पर निर्देश दैत छथि; एम्बुलेंसक तैयारी चलैत अछि। मृणालिनी अस्पताल जाएबाक बात सुनि ‘एहि बेर नहि’ कहैत छथि। ईशानक भय तीव्र अछि, मुदा माए स्पष्ट पुछैत छथि जे निर्णय अहाँ लेब? एहि प्रश्नमे सम्बन्धक भीतर चिकित्सकीय अधिकारक सीमा उद्घाटित होइत अछि। ईशान एकतरफा निर्णय नहि करैत; चिकित्सकसँ फेर बात करैत अछि। घरमे आराम-केंद्रित देखभाल सम्भव, किन्तु जोखिम उच्च—ई सूचना कथा स्पष्ट दैत अछि।

मूल कथावाचक मृणालिनीकेँ सचेत आ निर्णयक्षम बतबैत अछि। एहि पाठाधारपर घर चुनबाक इच्छा केवल असहाय रोगीक अविवेक कहल नहि जा सकैत अछि। मुदा एकर अर्थ ईहो नहि जे जोखिम नगण्य अछि। आठम पाँति एहि कठिन वास्तविकतामे परीक्षा दैत अछि: जकरा बचबय चाहैत छी, ओकरा अपने इच्छा अनुसार कहीं बन्द राखि नहि सकैत छी। ईशानक ‘ठीक’ असहमतिपूर्ण हृदयक भीतर अपन माएक निर्णय स्वीकार करब अछि। दृश्य स्वायत्तता, चिकित्सा-सलाह, सम्भव देखभाल आ परिवारक भय—चारि परस्पर सम्बन्धित पक्ष देखबैत अछि।

एहि प्रसङ्गकेँ चिकित्सा-संस्थानक विरुद्ध सामान्य घोषणापत्र, जीवन-रक्षक उपचार अस्वीकार करबाक सार्वभौम सलाह अथवा मृत्यु चाहबाक निर्णय मानब पाठ-विरुद्ध होयत। मूल कथा स्वयं ओकरा वीरता अथवा मृत्यु-इच्छा नहि कहैत। साहित्यिक दृष्टिसँ अति संक्षिप्त वाक्यसभ निर्णयक गहिर बोझ व्यक्त करैत अछि। पाठकक लेल एतय निश्चयक सुख नहि, अपूर्ण ज्ञानमे लिया गेल उत्तरदायी निर्णयक कठिनता अछि।

दृश्य ३७४ : अन्तिम दिनक सामान्य घरेलू आदेश आ शोकक अनौपचारिक भाषा

घरमे ऑक्सीजन, औषधि, निद्रा आ जागरणक बीच दिन बीतैत अछि। मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो दिस देखि दीर्घ प्रतीक्षाक एक वाक्य कहैत छथि। एहि वाक्यक अर्थ अपराध-जाँचक पूर्ण समाधानक दावा नहि; मृत पति संग मनक लम्बा अपूर्ण वार्ताक स्मृति भऽ सकैत अछि। ओ धनेश्वरीक पोथी छूइ ‘आरो पाँति नहि’ कहैत छथि। पोथीमे आठ पाँति अछि; नवम लिखबाक भविष्यक इच्छा पर एतय स्पष्ट विराम दैत छथि, मुदा एहि कथनक क्षणिक थकान अथवा स्थायी आदेशक अनिश्चितता अगिला दृश्यमे स्वयं कथानक स्वीकार करैत अछि।

वैदेहीक आगमन, तृषाक फोन, रचनाक संदेश, प्रदीपक दूरसँ प्रणाम, सबीनाक पठाओल फूल—ई सभक उपस्थिति मृणालिनीक जीवनक सामाजिक विस्तार देखबैत अछि। मुदा घर भीड़सँ भरल नहि, शान्त अछि। अन्तिम समयकेँ सार्वजनिक मंच नहि बनाओल गेल। विभिन्न पात्रसभ अपन सम्बन्धक मर्यादा अनुसार उपस्थित छथि। एहि ठाम कथाक सन्तुलन महत्त्वपूर्ण अछि: अपराधगाथाक अनेक प्रकरण एक स्त्रीक शय्यापर अन्तिम बयान देबाक लेल नहि जोड़ल गेल; केवल साधारण मानवीय संलग्नता अछि।

मृणालिनीक ईशानसँ भोजन कएल कि नहि पुछब, उत्तरमे हलुक असत्य पकरब आ ‘खा’ कहब उपन्यासक संवेदनात्मक शिखर अछि। मातृत्वक व्याख्या कोनो सूत्रसँ नहि, सामान्य आदेशसँ प्रकट होइत अछि। ईशान दू कौर खा कऽ घुरैत अछि। अन्तिम दिनक महत्त्व भोजनक ओहि लघु व्यवहारसँ बढ़ैत अछि; ई अति-संवेदनशील प्रसङ्गमे कलात्मक संयमक उदाहरण अछि। माएक मृत्यु-पश्चात भोजनकेँ कोनो चमत्कारी संकेत नहि बनाओल गेल।

दृश्य ३७५ : भोरक मृत्यु, घड़ीक समय आ अर्थ अनिवार्य नहि होयबाक बोध

मृणालिनी भोरसँ पहिने चलि जाइत छथि। पाठ कोनो अन्तिम भाषण, रहस्यक उद्घाटन अथवा अपराधीक नाम नहि दैत। साँस विरल होइत अछि आ रुकि

जाइत अछि। ईशान हाथ पकड़े रहैत अछि; नर्स समय लिखैत छथि। कथानकक आरम्भसँ चलैत अभिलेख-विवेक एहि क्षणमे अत्यन्त कठोर भेद पबैत अछि—नर्सक दर्ज समय औपचारिक तथ्य अछि; बेटाक अनुभूत समय ओकरा समकक्ष नहि। ईशान घड़ी नहि देखैत; एहि क्षण ओकर काज मृत्यु-समयक पुनः जाँच नहि, माएक कात रहब अछि।

झाड़ीमे हलुक सरसराहट होइत अछि, मुदा ईशान देखने लेल नहि उठैत। आरम्भक बिज्जी आ साँपक प्रतीकात्मक प्रसङ्ग देखैत पाठक एतय फेर कोनो जीव-रूपक चाहि सकैत अछि; मूल कथा ओहि अपेक्षाकेँ रोकैत अछि। आवाजक स्रोत नहि बताओल गेल, तेँ समीक्षा बिज्जीक आगमन अथवा कोनो परलोक-सङ्केतक कल्पना नहि करब। ‘सभ संकेतक अर्थ खोजब जरूरी नहि’ कथन जाँचक मूल शिक्षा पर निजी जीवनक अधिकार स्थापित करैत अछि। प्रत्येक ध्वनि प्रमाणक वस्तु नहि बनबाक चाही।

दृश्यक अन्त ‘पहिने बेटा, लेखक बादमे’ दृश्य ३६२क पूर्व वार्ताक फल अछि। एहि आवर्तनमे शिल्पगत सुसंगति अछि, किन्तु स्रोतक दुइ क्षण अलग अछि—पहिल जीवित माएक लेखन-सम्बन्धी अनुरोध, दोसर मृत्यु पर पुत्रक व्यवहार। भावक एकता अन्तिम क्षणकेँ अत्युक्ति-बोधसँ बचबैत अछि। कथावाचक द्वारा किछु वाक्यक प्रत्यक्ष व्याख्या पुनरुक्तिक जोखिम रखैत अछि, मुदा मृत्यु-दृश्यक घटना-संयम एहि जोखिमकेँ बहुत घटबैत अछि।

दृश्य ३७६ : साधारण अन्त्येष्टि आ शोकक अलग-अलग मर्यादा

मृणालिनीक इच्छा अनुसार अन्त्येष्टि साधारण होइत अछि। न राजनीतिक भाषण, न समाचार-मञ्च। गामक लोक, परिवार आ किछु मित्र उपस्थित छथि; वैदेही आ तृषा अबैत छथि, रचना चुपचाप उपस्थित रहैत छथि। प्रदीप दूर रहल उचित बुझैत अछि; विहान फूल पठबैत अछि, मुदा ईशान ओकर सार्वजनिक प्रदर्शन नहि करैत। एहि भिन्न व्यवहारसभसँ सम्बन्धक इतिहास

मिटैत नहि, बरु शोकक समय ओहि इतिहासक उचित दूरी स्वीकार कएल जाइत अछि।

शोककेँ सार्वजनिक स्मारक बनबय चाहनिहार सामान्य प्रवृत्तिसँ ई दृश्य अलग अछि। सत्यप्रकाशक फोटो देबाल पर अछि, धनेश्वरीक पोथी घरमे अछि; मृणालिनीक नव फोटो नहि लगाओल गेल, किएक तँ ईशान एखन तैयार नहि अछि। कोनो लोक ओकरा बाध्य नहि करैत। मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य अथवा शोकक ‘सही’ समय-सारणी पाठ नहि दैत; ई केवल एहि परिवारक तत्काल असमर्थताक सम्मान देखबैत अछि।

‘शोकक सेहो स्वतन्त्रता’ शीर्ष नैतिक समझक रूपमे अन्तमे आबैत अछि, मुदा ओकर वस्तुगत आधार ईशानक अनलगाओल फोटो आ दोसरसभक अनाग्रह अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिमे मरणोपरान्त सार्वजनिक अभिलेख, घरक स्मृति-वस्तु आ व्यक्तिक अनुत्तरित अनुभव अलग रहैत अछि। मृत्यु-लेखा सुरक्षित राखब एक बात; प्रत्येक घरेलू शोक सार्वजनिक करब आवश्यक नहि। उपन्यास एहि फरककेँ सुस्पष्ट बनबैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३७३–३७६ उपन्यासक पूर्वक न्यायिक मृत्यु-जाँचसँ भिन्न एक मृत्यु-दृश्य रचैत अछि। सत्यप्रकाशक सन्दिग्ध सड़क-दुर्घटना अन्वेषणक प्रश्न छल; मृणालिनीक मृत्यु रोगावस्थाक अन्तिम प्रसङ्ग अछि। एकरा अपराधक समान रहस्य बनाउ तकर आग्रह पाठ जानि-बुझि अस्वीकार करैत अछि। स्वायत्त निर्णयक आधार, चिकित्सकक परामर्श, नर्सक समय-लेखा, माएक भोजनक आग्रह आ साधारण अन्त्येष्टि पाँच भिन्न प्रमाण आ भाव-क्षेत्र अछि। भारतीय नैतिक चिन्तामे कर्तव्य आ स्वनिर्णयक भेद, आधुनिक अन्तिम-देखभालक निर्णय-विवेक आ पाश्चात्य शोक-कथाक न्यूनोक्ति—ई सभ तुलना योग्य अछि, मुदा उपन्यास चिकित्सा-नियमावली नहि रचैत। एहि खण्डक श्रेष्ठ कलात्मक क्षण

नर्सक समयक विपरीत बेटाक घड़ी नहि देखनाइ आ माएक भोजन कहबाक साधारण स्वर अछि।

अध्ययन-इकाई ९५ — रिक्त नवम पाँति, निजी पत्र आ ‘शायद’ पर रुकल निर्णय (मूल दृश्य ३७७–३८०)

दृश्य ३७७ : तेरहम दिनक पछाति ओसाराक रिक्ति आ बिज्जीक वास्तविक उपस्थिति

तेरहम दिनक पछाति ईशान पहिल बेर अकेले ओसारामे बैसैत अछि। खाली कुर्सी, माएक ऐनक, दवा आ आधा पढ़ल पुस्तक—ई वस्तुसभ मिलि अनुपस्थित व्यक्तिक ठोस रूप बनबैत अछि। कथाकार शोककेँ सीधे ‘असह्य’ नहि कहि, उपयोगक वस्तु असगर पड़ा रहलाक परिस्थिति देखबैत अछि। लैपटॉप बन्द अछि, पाण्डुलिपि बन्द अछि; श्रम न करब एहि समय आलस्य अथवा लेखकक असफलता नहि, शोकक अपन गति अछि।

साँझ एक बिज्जी आँगन पार करैत अछि। ईशान ओकरा देखैत अछि, मुदा मोनमे कोनो रूपक नहि उठैत। एतय कथा पहिने रचल जीव-प्रतीककेँ क्षणभरि लेल वापस वास्तविक जीव बना दैत अछि। ई केवल पुरान प्रतीकक पुनरावृत्ति नहि; आलोचनात्मक संशोधन अछि। माएक निषेध—सभ बात मत लिख—अन्ततः आचरण बनि गेल। ईशानक आँखि भरैत अछि, संगहि मुस्की सेहो उठैत अछि। शोकक मिश्रित अनुभवकेँ एकमेव दुःख अथवा समाधानक पाँतिमे नहि बाँधल गेल।

एहि दृश्यपर कोनो चमत्कारिक दावाक आधार नहि। बिज्जीक उपस्थितिकेँ मृणालिनीक आत्मा, सङ्केत अथवा पुनर्जन्म कहल जाए तँ मूल पाठक खुलापन नष्ट होएत। साहित्यिक उपलब्धि जीवक साधारणता आ लोकक स्मृतिद्वारा ओकर अर्थ ग्रहणक स्वतन्त्रतामे अछि। एतय पाठक ईशानक शोक देखैत अछि, बिज्जीक अनिवार्य अर्थ नहि।

दृश्य ३७८ : नवम पाँतिक रिक्ति आ माएक कथनक अनिश्चित प्रयोजन

कतेको सप्ताह पाछाँ ईशान धनेश्वरीक पोथी खोलैत अछि। आठ पाँति लिखल अछि, नवम खाली। कलम उठबैत अछि, फेर राखि दैत अछि। मृणालिनीक ‘आरो पाँति नहि’ वाक्य ओकरा मोन अछि, मुदा ई अन्तिम निर्देश छल कि ओहि समयक थकान, से ईशान निश्चित नहि जानैत। एतय संशयक महत्त्वपूर्ण अनुशासन अछि—अपूर्ण स्मृतिक ऊपर स्थायी मनसाय आरोपित नहि कएल जाए।

यदि ईशान नवम पाँति अपन निष्कर्षसँ भरि दितय तँ पारिवारिक पोथी फेर एक सर्वज्ञ नैतिक सूची बनि जाइत। यदि माएक क्षणिक वाक्यकेँ निर्विवाद लिखित वसीयत कहि मानि लितय तँ सेहो प्रमाणक सीमाक उल्लंघन रहितय। पाठक देखैत अछि जे ईशान दुनू अतिशयतासँ बचैत अछि। ओ पाँति खाली छोड़ैत अछि। ई निश्चयक अभाव मात्र नहि; अपने ज्ञानक सीमाक आधारपर अनिर्णय स्वीकार करब अछि।

‘असिद्धकेँ असिद्ध, मौनकेँ मौन’ पूर्व अनेक आपराधिक अन्वेषणक अनुशासनक घरेलू, निजी रूप अछि। तथापि पारिवारिक सम्बन्धमे सब अनिश्चितता न्यायालयी तर्कसँ नहि सुलझैत। पोथी बन्द करबाक क्रिया भावुक समापन नहि, अपूर्णताक सम्मान अछि। एहि दृश्यसँ उपन्यासक प्रारम्भिक सबूत-खोज आ अन्तिम जीवनक अर्थ-खोज बीच एक गहिर लय बनैत अछि।

दृश्य ३७९ : रचनाक छोट पत्र आ स्रोतकेँ साहित्यक बाहर राखबाक अधिकार

रचना सिन्हा मृणालिनीक मृत्यु-पछात ईशानकेँ कागज पर छोट पत्र पठबैत छथि, फोन नहि। पत्रमे मृणालिनीक गवाहीसँ सिखल बातक एक विशिष्ट उल्लेख अछि—स्मृतिक सीमा स्वीकार करब कमजोरी नहि। रचना अन्वेषक छथि; ओ जिनकर गवाहीक संग काज कयने छलीह, हुनका स्मरण करैत छथि। एहि पत्रक प्रमाणगत मर्यादा अछि—ई श्रद्धा आ बौद्धिक ऋणक निजी

अभिव्यक्ति अछि, पहिनुक साक्ष्यक नव जाँच वा सत्यप्रकाशक मृत्यु सम्बन्धी नव न्यायिक फैसला नहि।

ईशान पत्रकेँ अपन पाण्डुलिपिमे नहि राखैत अछि, माएक निजी कागजक संग रखैत अछि। एहि निर्णयमे दृश्य ३७०क बन्द नोटबुक आ ३७१क अनुमति-प्रश्नक परिपक्व परिणाम अछि। तथ्यतः पत्र हुनका लग अछि; मुदा उपलब्ध होयब उपयोगक नैतिक अधिकारक पर्याप्त कारण नहि। एक निजी वाक्य सार्वजनिक कथा बनबाक बिना सेहो महत्त्वपूर्ण रहि सकैत अछि। साहित्यिक कृतिकार एहि ठाम अपनहि कामक सीमा स्वीकार करैत छथि—सभ स्रोत कथात्मक सामग्री नहि।

कागज पर पत्र पठेबाक विशेषता डिजिटल अपराध-विषयक उपन्यासमे सूक्ष्म संकेत अछि, मुदा ई साधारण पत्रक किसी प्रौद्योगिक माध्यमसँ श्रेष्ठता सिद्ध करबाक वैज्ञानिक दावा नहि। एतय स्रोतक स्पर्श, संरक्षण आ निजी स्थानक विशेष अर्थ अछि। विदेह समानान्तर इतिहासमे जन-स्मृति, संस्थाक कार्यालयी दस्तावेज आ व्यक्तिक निजी अभिलेख अलग ठाम रहलाक महत्त्व एही निर्णयसँ उजागर होइत अछि।

दृश्य ३८० : तृषाक ‘शायद’, हँसी आ खुलल घरक नियम

तृषा गढ़ नारिकेल आबि पोथीक नवम पाँति पुछैत छथि। ईशान ‘नहि’ कहैत अछि; कारण माएक ‘आरो नहि’ कथन बतबैत अछि। तृषा सम्भावना रखैत छथि जे ओ मजाक सेहो भऽ सकैत छल। ईशान ‘शायद’ कहैत अछि; तृषा सेहो निर्णय पर जोर नहि करैत छथि। अन्तमे दुनू हँसैत छथि। एहि अत्यन्त छोट दृश्यमे कृतिक प्रमाण-नैतिकता कठोर पुलिस-जिरहसँ निकलि पारिवारिक सहज संवाद बनि गेल अछि।

तृषाक प्रश्नक उत्तर निश्चित नहि देब कायरता नहि, बल्कि साक्षी अनुपस्थित भेलाक बाद मंशा सिद्ध नहि कऽ सकबाक स्वीकृति अछि। ईशान एकर कारण पोथीकेँ विसर्जित नहि करैत; नवम पाँति बिनु लिखने घरक जीवन चलैत अछि। तृषा सेहो अपन सम्भावनाक पुष्टि लेल माएक अनुपस्थितिपर अनुमानक बोझ

नहि थोपैत छथि। एहि ‘शायद’मे बिनु समाधानक सम्बन्ध चलि सकबाक अभ्यास अछि।

शिल्पगत दृष्टिसँ दुविधाक संग हँसी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। दृश्य ३७५क मृत्यु आ ३७७क शोकक पाछाँ हास्य पुनः सम्भव भेल, मुदा ई सुखान्तक घोषणापत्र नहि। मूल कथाक एहि खण्डक अन्त नवम पाँति पर निर्णय नहि करबामे अछि; सम्पूर्ण उपन्यासक अन्तिम दृश्य ३८० नहि, किएक तँ मूल पाण्डुलिपिमे ४१८ दृश्य अछि। तँ एहि बिन्दुकेँ समस्त कृतिक अन्तिम समापन मानबाक भूल नहि होयबाक चाही। ई स्थानीय आलोचनात्मक विराम अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३७७–३८० शोकक चारि आन्तरिक अवस्था दैत अछि—वस्तुक संग निःशब्द बैसब, नब पाँति रोकब, निजी पत्र सुरक्षित रखब आ ‘शायद’ पर हँसि सकब। एहि सभ घटना मृणालिनीक मृत्यु बाद घटैत अछि, मुदा कथा हुनका अनुपस्थितिसँ पूरा रिक्त नहि होइत। घरमे पोथी, ऐनक, पत्र आ सम्बन्धसभ जीवित समयक अंश बनि रहल अछि। न्यायिक जाँचमे अनिर्णय सार्वजनिक उत्तरदायित्वक समस्या बनि सकैत अछि; पारिवारिक पोथीमे अनिर्णय कखनो अधिकारक सम्मान बनि सकैत अछि। एहि भेदक अनदेखी कएल जाए तँ कृतिक सूक्ष्मता नष्ट होएत। ई चारि दृश्य एक सादा परन्तु गहिर निष्कर्ष दैत अछि—जे लिखल जा सकैत अछि, से सभ लिखब आवश्यक नहि।

उन्नैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — स्वायत्तताक पहरा, मरणोत्तर स्मृति आ रिक्त पाँतिक न्याय (मूल दृश्य ३६१–३८०)

पहराक इतिहास : भयक पहरासँ जीवनक पहरा धरि। उपन्यासक पहिल दृश्यसभमे बिज्जीक आकस्मिक रक्षा आ गोहिक अदृश्य भय जीवक उपस्थिति द्वारा अपराधक रूपक बनैत अछि। दृश्य ३६१–३८० मे ओहि रूपकक अन्तिम स्थानीय परिवर्तन देखाइत अछि। बिज्जी एखन सेहो अबैत अछि, मुदा ओ सदा पहिचानयोग्य पूर्वजीव नहि, न मनुष्यक सभ घटना पर नैतिक भाष्य देबाक बाध्य पात्र। पहराक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम आब ई अछि जे रक्षित व्यक्ति अपन जीवन, घर आ निर्णयक अधिकार नहि हेराबय। आठम पाँति एहि ऐतिहासिक रूपान्तरणक संक्षिप्त अभिलेख अछि।

दू प्रकारक समय-पञ्जी। आरम्भमे सत्यप्रकाशक धमकी आ अवैध भुगतानक कारी डायरी छल; जाँचमे टोलक दृश्यांश, वाहन-पंजी, बैंक-लेखासभ आ साक्षी-स्मृतिक समय जाँचल गेल। एखन ईशान दवा देबाक समय लिखैत अछि, नर्स मृत्युक समय दर्ज करैत छथि, आ धनेश्वरीक पोथी आठम पाँतिपर रुकैत अछि। तीनू लिखित वस्तुक प्रयोजन अलग अछि। दवा-पञ्जी देखभाल लेल; नर्सक दर्ज समय औपचारिक चिकित्सकीय अभिलेख; पोथी नैतिक–पारिवारिक स्मरण। अभिलेखक भिन्न प्रयोजन अलग राखबाक कारण पाठक सम्पूर्ण कृतिमे एक गहिर आन्तरिक संगति अनुभव करैत अछि।

नव्य न्यायक भेद-विचार आ ‘जानैत नहि’क स्वीकार। रचनाक जाँच मे कथनकर्ताक प्रत्यक्ष ज्ञान, सुनी बात, अनुमान आ दस्तावेजक प्रकृति पृथक करबाक आग्रह रहैत अछि। दृश्य ३७८मे ईशान माएक अन्तिम मंशा नहि बुझि पबैत अछि, तँ नवम पाँति नहि भरैत। दुवै ठाम असिद्ध दावाक रक्षा अछि, तथापि ज्ञानक क्षेत्र अलग: पुलिसक कार्यमे प्रमाणित तथ्य सार्वजनिक निर्णयक आधार अछि; पारिवारिक स्मृतिमे अनिश्चित कथन निजी अधिकार आ शोकक

प्रश्न अछि। ई वैचारिक तुलना अछि, नव्य न्यायक पारम्परिक पदसभक शाब्दिक अनुप्रयोग नहि।

भारतीय नैतिक दृष्टि : कर्तव्य आ व्यक्ति-स्वातन्त्र्यक टकराव। ईशानक कर्तव्य माएक देखभाल करब अछि, मुदा ओ कर्तव्य चिकित्सकीय निर्णय अपने करबाक अनियन्त्रित अधिकार नहि। दृश्य ३६७मे अस्पताल जरूरी लगैत अछि आ मृणालिनी जाएबाक स्वीकार करैत छथि; दृश्य ३७३मे घरपर आराम-केंद्रित देखभाल उपलब्ध रहबाक चर्चा, जोखिमक स्पष्टता आ मृणालिनीक निर्णय-क्षमता प्रस्तुत अछि। एकरे स्थिर सूत्रसँ ‘सदा अस्पताल’ वा ‘सदा घर’ नहि बना सकैत छी। न्याय-विवेकक परिपक्वता परिस्थिति आ विकल्पक भेदमे अछि। मूल उपन्यासक पाठकेँ चिकित्सा-सलाहक स्थानापन्न नहि करब उचित।

साहित्यिक कथनक अधिकार : जीवित व्यक्ति आ पाण्डुलिपिक सीमारेखा। ईशानक लेखनक प्रति मृणालिनी सहानुभूतिशील छथि, मुदा अपन मृत्युकेँ उपन्यासक अन्तिम तमाशा बनबय नहि दैत छथि। ओ अंश छपबाक अनुमति दैत छथि, मुदा नाम नहि; आठ पाँति मात्र, पोथीक पूरा विवरण नहि। रचना संस्थागत प्रकाशनक पहिने सहमति लैत छथि। एहि क्रममे पात्रक स्वीकृति एक व्यावहारिक लेखकीय शर्त अछि। आधुनिक आत्मसन्दर्भी साहित्यसँ तुलना कएल जा सकैत अछि, किन्तु ईशानक काल्पनिक पाण्डुलिपि आ मूल गजेन्द्र ठाकुरक कृति फरक स्तर अछि।

मरणक आख्यान आ न्यूनोक्ति। सत्यप्रकाशक मृत्यु उपन्यासक दीर्घ आपराधिक इतिहासकेँ जन्म देने छल; मृणालिनीक मृत्यु अपराधक नब रहस्य नहि। एहि भेदसँ मृत्यु विषयक कलात्मक रूप बदलेत अछि। मृणालिनीक अन्तिम दिनक ‘खा’ वाक्य, नर्सक समय-लेखा, ईशानक घड़ी नहि देखनाइ आ अन्त्येष्टिमे सार्वजनिक भाषणक अभाव कथाकेँ न्यूनोक्ति प्रदान करैत अछि। मृत्युकेँ ‘सभ उत्तर देबाक’ साहित्यिक अवसर नहि मानि ओकर भीतरक सामान्य मानवीय सम्बन्ध देखाओल गेल। पाठकक सहानुभूति स्वतः बनैत अछि; दार्शनिक वक्तव्यक आवश्यकता घटैत अछि।

सार्वजनिक इतिहासक संग निजी स्मृतिक सहअस्तित्व। सत्यप्रकाशक जाँच-प्रतिवेदन, रचनाक प्रशिक्षण-पुस्तिका, वैदेहीक शोध आ ईशानक उपन्यास सार्वजनिक अथवा अर्द्धसार्वजनिक लेखनक विभिन्न रूप अछि। मृणालिनीक निजी कागज, धनेश्वरीक पोथी आ घरक वस्तुसभ अलग स्रोत अछि। रचनाक निजी पत्र पाण्डुलिपिमे नहि राखबाक निर्णय एहि विभाजनक महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि एहि स्रोतसभकेँ एक-दोसराक उपनिवेश नहि बनाकऽ साथ रखबाक आग्रह करि सकैत अछि। कोनो निजी स्मृति सार्वजनिक इतिहासक मात्र कच्चा माल नहि।

कलात्मक उपलब्धि आ सीमाक परीक्षण। एहि बीस दृश्यक प्रभाव सर्वाधिक तखन अछि जखन विचार एक क्रियामे उतरैत अछि—ईशान दवाक लेखाकेँ स्मरण कहैत अछि, तृषा अनुमतिक शर्त स्वीकार करैत छथि, मृणालिनी अस्पतालमे रहबाक पहिल निर्णय मानैत छथि, ईशान नोटबुक बन्द करैत अछि, आ नवम पाँति खाली छोड़ैत अछि। कमजोर क्षण ओहि ठाम अछि जतय कथावाचक एखनहुँ प्रत्येक सूक्ष्म दृश्यक अन्तमे नीतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि। तथापि मृत्यु-दृश्य आ शोकक वस्तु-चित्र एहि व्याख्यात्मक प्रवृत्तिकेँ संयत करैत अछि। पोथीक रिक्ति कथात्मक असमर्थता नहि; सब जानबाक आग्रहक स्वेच्छित निषेध अछि।

अन्तिम तुलनात्मक निष्कर्ष। दृश्य ३६१–३८०क पाठमे उपन्यास अपराध-संशोधनसँ मानव-सम्बन्धक मर्यादापर आबैत अछि। पूर्व आरोपीसभक विधिक परिणाम एतय फेरसँ उलटि नहि जाइत; विषयक केन्द्र बदलैत अछि। आत्मसंयम, स्वस्थ संशय, सार्वजनिक हितक संग निजत्व, निर्णय-क्षमता आ शोकक व्यक्तिगत लय एकत्र विचारणीय बनैत अछि। तथापि मूल कथा एखन ३८० पर समाप्त नहि होइत; ४१८ दृश्य धरि चालू अछि। तेँ ई अध्ययन उत्तरकथाक एक गम्भीर पड़ाव अछि, सम्पूर्ण उपन्यासक अन्तिम समीक्षा नहि।

अध्ययन-इकाई १६ — शोकक कथनाधिकार, जीवित समय आ पोथीक उपयोग (मूल दृश्य ३८१-३८४)

दृश्य ३८१ : माएक मृत्युक न्यूनोक्ति आ लेखक-पुत्रक अन्तर्द्वन्द्व

ईशान मृणालिनीक मृत्युवला पन्ना पुनः खोलैत अछि। पहिल मसौदामे अन्तिम शब्द, बिज्जी, भोर, सत्यप्रकाश आ पोथीक अनेक प्रसङ्ग जोड़ल छल। ओ ओकर आधासँ बेसी अंश हटाकऽ मात्र ई तथ्य रखैत अछि जे भोरसँ पहिने मृणालिनी चलि गेलीह आ ओ हुनकर हाथ पकड़ने रहल। एहि सम्पादनकेँ केवल शब्द घटेबाक कौशल नहि बुझबाक चाही। मृत्यु-क्षणक संग जुड़ल भावनात्मक वस्तुसभ कथामे उपस्थित भऽ सकैत अछि, मुदा सभ वस्तु मृत व्यक्तिक अन्तिम अर्थ बनेबाक अधिकार नहि दैत। लेखक अपन रचनात्मक सुविधाक विरुद्ध निर्णय करैत अछि। ईशानक साहित्यिक संयम स्रोतक मर्यादा संग जुड़ल अछि।

'कठिन', 'सही', 'शायद'—एहि क्रममे निर्णायक बात अन्तिम अनिश्चय अछि। ईशान एकहि देहमे लेखक आ पुत्र अछि; लेखककेँ कथनक आकार निर्धारित करबाक अछि, पुत्रकेँ माएक अनुपस्थितिसँ जीबाक। पाठ दुनूकेँ पूर्ण सामञ्जस्यक दावा नहि करैत। नव्य न्यायमे प्रत्यक्ष उपलब्ध कथन आ अनिर्धारित आशयक भेद जकाँ एतय देखल घटना आ ओकर प्रतीकात्मक निष्कर्ष अलग रहैत अछि। मुदा ई केवल औपचारिक तर्कक उदाहरण नहि: रोअनिहार पुत्र सम्पादनक ठाम उपस्थित अछि। पुस्तकक भावनात्मक सत्य एही द्विधामे बसैत अछि।

शिल्पगत दृष्टिसँ अनेक परिचित प्रतीक पहिने नामसहित उल्लेखित भेलाक कारण हटेबाक निर्णय पाठकक सोझाँ दृश्यमान होइत अछि। पाठक देखैत अछि जे लेखक कोन सामग्री छोड़लक। एहि आत्मसन्दर्भी संरचनामे कथा अपन अन्त लिखबाक काजकेँ सेहो कथाक विषय बनबैत अछि। जोखिम ई अछि जे अत्यल्प वाक्यक मर्यादाकेँ फेर कथावाचक स्वयं व्याख्या करैत अछि; तथापि सम्पादित अन्तिम वाक्य ओहि व्याख्यासँ स्वतंत्र भावात्मक वजन रखैत अछि।

दृश्य ३८२ : कमला-बलानक किनार आ एक व्यक्तिसँ बाहर निकलल पहरा

महीना पाछाँ ईशान कमला-बलानक कछेर पर जाइत अछि। नदी सामान्य अछि, मछुआ आ बच्चा छथि, दूर एक गोहि अछि; बिज्जी नहि देखाइत अछि। उपन्यासक आरम्भसँ चलि रहल गोहि-बिज्जी विरोध एहि क्षणमे उपस्थित रहितहुँ कोनो प्रत्यक्ष जीव-विज्ञानक निर्णय नहि दैत। गोहि देखाइब नब अपराध-जालक प्रमाण नहि, बिज्जी नहि देखाइब रक्षक समाप्त भेलाक घोषणा नहि। जीवक शाब्दिक उपस्थिति आ प्रतीकक नैतिक प्रयोजन अलग राखनाइ एहि उपन्यासक उत्तरभागक एक महत्त्वपूर्ण आत्म-सुधार अछि।

मृणालिनीक पूर्व कथन—कथा हुनका पाछाँ समाप्त नहि करब—ईशानकेँ गामक सामान्य जीवन दिस घुरबैत अछि। विद्यालय, सिलाइ मशीन, मोबाइल-दोकान आ तृषा, रचना, शैलेश, मंजरी, प्रदीप, विहान, सौरभ तथा केशवक अलग-अलग स्थिति एक समष्टिगत चित्र रचैत अछि। ई सूची सभक उद्धारक घोषणा नहि; सौरभ अपन इतिहास ढोइत अछि आ केशव दण्डक भीतर प्रश्न करैत अछि। किछु जीवन चलि रहल अछि, किछु दायित्व अपूर्ण अछि। एक नायिकाक मृत्युसँ सभक भविष्यक अर्थ निश्चित नहि भेल।

एतय 'पहरा एक व्यक्तिसँ बाहर' निकलनाइ उपन्यासक रूपकक परिवर्तित अर्थ अछि। आरम्भमे आकस्मिक रक्षा एक जीवक साहस छल, फेर परिवारक सजगता, पुलिसक परीक्षण, संस्थाक प्रश्न-संस्कृति आ नागरिकक दैनिक सावधानी बनल। सामाजिक सुरक्षा ककरो एक नायकक चमत्कार नहि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ठेकेदार परिवारसँ आरम्भ कथा आब विद्यालय, गृहिणी, दुकान, अनुसन्धान आ दण्डभोगी सभक परस्पर असमान अनुभवकेँ स्थान दैत अछि।

दृश्य ३८३ : ऋतुचक्र, अनुमानित मातृवाणी आ मृत व्यक्तिक मौन

मृणालिनीक मृत्यु-पछात पहिल वर्ष ईशान लेल ऋतु दूरीक अनुभव बनि जाइत अछि। सावन, धानरोपनी, विद्यालय, दशहरा आ शीतक प्रवाहमें एक वाक्य

बेराबेरी मोन पड़ैत अछि—माए एखन की कहितथि। पहिने ओ वाक्य पूरा करैत अछि, बादमे रोकैत अछि। एकरा मानसिक शोकक सार्वभौम नियम अथवा चिकित्सकीय क्रम नहि मानि, ईशानक विशिष्ट नैतिक-साहित्यिक अभ्यासक रूपमे पढ़ब उचित अछि। अपन विचारकेँ मृतकक मुँहमे रखनाइ अप्रामाणिक प्रतिनिधित्व बनि सकैत अछि।

ई दृश्य ३७८क नवम पाँति नहि भरबाक निर्णयक आगाँक रूप अछि। ओतय पोथीमे रिक्त स्थान, एतय स्मृतिमे अनलिखल वाक्य अछि। दुनूक स्रोत-सीमा एके नहि: पोथी ठोस लिखित वस्तु, माएक सम्भावित वाणी भावनात्मक अनुमान। मुदा दुनूक प्रति समान संयम अपनाओल गेल अछि। नव्य न्यायसँ तुलना करैत कहल जा सकैत अछि जे कथनक वक्ता आ वाक्यक आशयक आधार बिना निश्चित अर्थ आरोपित नहि करब चाही; शोकक मानवीय जटिलता तथापि केवल तार्किक निषेधसँ पूरा नहि बुझाइत।

शिल्पत: ऋतु-सूची वस्तुगत समय आ निजी समयक विरोध रचैत अछि। गाममे मौसम अपन गति सँ चलैत अछि, ईशानक भीतर हर ऋतु एक अभावक चिन्ह बनैत अछि। कथाक उपलब्धि ई जे माएक स्मृतिसँ प्रेम घटि नहि रहल; ओकर प्रतिनिधित्वक आग्रह सीमित भऽ रहल अछि। स्मृतिक ई आत्म-निग्रह मृतककेँ एक स्थिर आदेशदाता बनयबासँ बचबैत अछि।

दृश्य ३८४ : मूल पोथी, विद्यालयक प्रतिलिपि आ संग्रहालयीकरणक सीमा

विद्यालयक पुस्तकालय धनेश्वरीक पोथी काँचक पेटीमे राखबाक प्रस्ताव दैत अछि। ईशान मना करैत अछि आ प्रतिलिपि सार्वजनिक उपयोग लेल देबाक प्रस्ताव राखैत अछि। आठ पाँतिक प्रतिलिपि विद्यालयमे अछि, मूल घरमे रहल। एहि भेदमे अभिलेखीय संरक्षणक दू अलग प्रयोजन देखाइत अछि—मूलक भौतिक सुरक्षा आ शब्दक सामाजिक उपयोग। ईशान मूल पोथीकेँ पारिवारिक पठनक वस्तु बनौने राखय चाहैत अछि; ओकर तर्क साहित्यिक-सामाजिक अछि, वैज्ञानिक संरक्षणक सर्वमान्य निर्देश नहि। मूल पोथीकेँ

निरन्तर धूप लगेनाइ वस्तुगत संरक्षणक दृष्टिसँ जोखिमपूर्ण सेहो भऽ सकैत अछि।

'इतिहास वस्तु बन्द करब मात्र नहि'क कथन उचित प्रश्न उठबैत अछि, मुदा संग्रहालय सदिखन मृत परम्परा बनबैत अछि—एहन सार्वभौमिक निष्कर्ष मूल पाठक अन्तिम पाँतिसँ निकालब उचित नहि। दृश्य स्वयं कहैत अछि जे संग्रहालय बनलासँ किछु वस्तु बचैत अछि आ किछु व्यवहार नष्ट होइत अछि। ई द्वैत आलोचनाक केन्द्र होयबाक चाही। मूल घरमे सुरक्षित रहय कि सार्वजनिक संरक्षण-संस्थामे, एहि निर्णयक भौतिक, पारिवारिक आ सामाजिक मूल्य पृथक जाँच योग्य अछि।

उपन्यासक दीर्घ अभिलेख-यात्रामे एक उलटाव अछि। पहिने लेखा-अभिलेख जाँचक साधन छल; आब पारिवारिक पोथी स्वयं जाँचक विषय अछि—ककरा अधिकार अछि, कतेक सार्वजनिक हो, मूलक प्रयोजन की? विदेहक समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक सन्दर्भमे ई प्रसङ्ग जीवन्त स्थानीय साक्ष्य आ आधिकारिक संग्रहणक बीच सम्बन्धकेँ सरलीकरणसँ बचबैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३८१–३८४ चारि प्रकारक लेखकीय अथवा अभिलेखीय निर्णय देखबैत अछि—मृत्यु-वर्णन छोट करब, मृत व्यक्तिक पाछाँ चलैत समाज देखब, अनुमानित मातृवाणी रोकब आ पारिवारिक पोथीक प्रतिलिपि सार्वजनिक करब। ई निर्णय सभ एकहि निषेधक रूप नहि; किछु शब्द हटाएब अछि, किछु जीवनकेँ कथामे राखब अछि, किछु कथन अनिश्चित मानब अछि, आ किछु कागजक उपयोग सीमित करब अछि। एहि सूक्ष्म भेदमे उपन्यासक आत्मसन्दर्भी कला विकसित होइत अछि। मूल कथा बारम्बार अपन प्रमाण-विधि कहैत अछि, तथापि एहि बैचमे नियमसभ पात्रक ठोस क्रियामे उतरैत अछि—पन्ना काटल, गाम दिस घुरल, कल्पित वाक्य रोकल, प्रतिलिपि देल।

अध्ययन-इकाई १७ — उत्तरदायित्वक पृथक्करण आ छोट सङ्केतक समयोचित परीक्षा (मूल दृश्य ३८५–३८८)

दृश्य ३८५ : तृषाक पहिल विधिक सहायता आ खाता-नामसँ पृथक निर्णयकर्ता

विधि-शिक्षा पूरा कऽ तृषा छोट-छोट मामलासँ वकालत आरम्भ करैत छथि। ग्रामीण वृद्धाक जन-धन खाता सन्देहास्पद लेनदेनक कारण रोकल गेल अछि। बैंक अभिलेख, वृद्धाक कथन आ खाता-खोलबाक कागज देखलाक पछाति पता चलैत अछि जे वृद्धाक पोता रोजगारक आशामे खाता-सम्बन्धी विवरण दोसर व्यक्तिक काज लेल देने छल आ शङ्का भेलाक बादो कमीशन लैत रहल। कथा वृद्धाक अज्ञान आ पोताक जाँचयोग्य भूमिकाकेँ एक नहि करैत। खास बात ई जे पोताक व्यवहारक दोषक अन्तिम विधिक फैसला एहि दृश्यमें नहि देल गेल।

तृषा अदालतमे खाताक नाम आ वास्तविक निर्णयकर्ताक भेद रखैत छथि। न्यायाधीश पोताक भूमिका पुछैत छथि; तृषा ओकर पृथक जाँच स्वीकार करैत छथि। परिणाम वृद्धाक वैध पेंशनक सीमित मुक्ति अछि, सभ लेनदेनक पूर्ण निर्दोषताक अन्तिम आदेश नहि। एहि सीमित न्यायिक राहतक आलोचनात्मक महत्त्व बेसी अछि: जाँच चलैत रहितहुँ बुनियादी जीवन-निर्वाहकेँ निरर्थक रूपेँ बाधित नहि होयबाक प्रश्न उठैत अछि।

एहि दृश्यकेँ भारतीय न्यायक प्रमाण, कर्ता आ परिणामक विमर्शसँ जोड़ि सकैत छी, मुदा तृषा कोन धारा अन्तर्गत आवेदन कएलनि अथवा आदेशक विस्तृत विधिक भाषा की छल, मूल पाठ नहि कहैत। एहन विवरण आलोचनामे जोड़ब स्रोतसँ बाहर होयत। शिल्पगत उपलब्धि ई जे पुरान प्रदीप-कथासँ उपजल पीढ़ीगत अनुभव आब स्वतंत्र पेशागत निर्णय बनैत अछि; तृषा पिता सँ निर्देश नहि माँगैत छथि, स्वयं अभिलेख जाँचैत छथि।

दृश्य ३८६ : पिता-पुत्रीक वार्ता आ अपराधक छायासँ बाहर निकलैत परिवार

राति तृषा प्रदीपकेँ अपन पहिल महत्त्वपूर्ण विधिक सहायता-मामलाक विवरण सुनबैत छथि। प्रदीप पुछैत अछि जे पहिने हुनकासँ किएक नहि पुछल गेल; तृषा उत्तर दैत छथि—ओ अधिवक्ता छथि। एहि सहज प्रतिउत्तरमे पिताक इतिहासक आदर रहितहुँ पेशागत आत्मनिर्णय बनल अछि। प्रदीप विरोध नहि करैत; दू गोटेक बीच हँसी सम्भव होइत अछि। उपन्यास एतय दू पीढ़ीक पुनर्सम्बन्धकेँ लम्बा क्षमायाचना-वृत्तान्तसँ नहि, छोट संवादसँ रचैत अछि।

तृषाक कथन जे नाममात्रक खाताधारक सदिखन धन चलबेनिहार नहि, ई पहिने पुस्तकमे पढ़ल छल मुदा आब अनुभवमे बुझायल, अध्ययन आ व्यवहारक अन्तर चिन्हबैत अछि। प्रदीपक उत्तर—ज्ञान कखनो देर सँ देह पबैत—विधिक सूत्र नहि, घरेलू अनुभवक रूपक अछि। ओ एहि ज्ञानकेँ तृषाक माएक सरल भाषा सँ सेहो जोड़ैत अछि। कथा परिवारक अतीतकेँ नकारैत नहि; ओकरा सभ समयक एकमात्र परिचय सेहो नहि बनबैत।

कलात्मक रूपमे ई दृश्य अगिला अपराध-रहस्य बनबैत नहि, पहिनुक समाजक परिणामकेँ मृदुता दैत अछि। सीमा ई जे छोट संवाद किछु स्पष्ट जीवन-सूत्र बहुते सजिलेसँ रखैत अछि; तथापि हँसी आ तृषाक स्वायत्त पेशागत काज एहि सूत्रकेँ जीवनगत आधार दैत अछि।

दृश्य ३८७ : सात हजारक लेनदेन आ विशालता-विरुद्ध प्रमाणनिष्ठ सावधानी

रचनाक लग एक युवा अधिकारी बीज-दोकानक सात हजारक असामान्य लेनदेनवला फाइल अनैत अछि। ओ रकम छोट मानि पैघ प्रकरणसँ अलग करबाक सोचैत अछि। रचना पुछैत छथि जे असामान्य किएक, व्यवसायसँ मेल नहि खायबाक आधार की, खाताधारकक कथन की। तखन अधिकारीकेँ सत्यापन करबाक निर्देश दैत छथि। तीन दिनक जाँचसँ ई नव ठगी-जालक प्रारम्भिक खाता निकलैत अछि; खाता रोकल जाइत अछि आ पाँच सम्भावित पीड़ित

बचि जाइत छथि। घटना कथित ‘छोट’ रकमकेँ स्वतः अपराध मानबाक उदाहरण नहि: जाँचक निष्कर्ष स्वतंत्र सत्यापनक पाछाँ आएल।

रचनाक सूत्रमे दू निषेध साथ अछि—छोट कहि छोड़ू नहि, पैघ कहि अपराध घोषित सेहो नहि करू। ई द्वैध अनुशासन उपन्यासक पहिल गाड़ी-दुर्घटना जाँचसँ जुड़ैत अछि, जतय अनुमानकेँ प्रारम्भिक दिशा मानल गेल छल, परिणाम नहि। सम्भावित हानि घटेबाक सफलताक आधार तत्काल हस्तक्षेप अछि; मुदा एहि दृश्यसँ सभ छोट असामान्य लेनदेन भविष्यक व्यापक जालक आरम्भ होइत अछि—एहन सांख्यिक दावा नहि निकलैत।

अन्तमे रचना कहैत छथि जे प्रत्येक छोट निशान गोहि नहि होइत। एहि हँसीमे मूल जीव-रूपकक आत्मालोचना अछि: भयक प्रतीक अनुसन्धानमे पूर्वनिर्णय बनि गेल तँ निर्दोष लोककेँ हानि होयत। नव्य न्यायमे व्याप्ति-जाँचक आवश्यकता, पाश्चात्य अन्वेषणक विपरीत-परिकल्पना आ स्थानीय जीवनक छोट कारोबार—तीनू एहि दृश्यपर तुलनात्मक प्रकाश दैत अछि।

दृश्य ३८८ : बचा लेल गेल सम्भावित क्षति आ ‘नहि घटल’ घटनाक साहित्य

ईशान बादमे सार्वजनिक प्रशिक्षण-सामग्रीसँ एहि प्रकरणक विषय जानैत अछि। ओकरा संतोष होइत अछि, किएक तँ कोनो पैघ गिरोह-प्रधानक गिरफ्तारी वा विशाल समाचार-सम्मेलन बिना सम्भावित हानि रोकल गेल। पाँच परिवार सम्भवतः एतबा सेहो नहि जानत जे ओ सभ एक जोखिमसँ बचलाह। सार्वजनिक प्रसिद्धिक अनुपस्थितिमे रोकथामक मूल्य घटि नहि जाइत अछि। एहि दृश्यमें कथा परिणाम देखबैत अछि—समयपर जाँच, खाता रोकब, सम्भावित पीड़ितक संरक्षण। मुदा पाँच व्यक्तिक भविष्यक सम्पूर्ण क्षति निश्चित रूपेँ मापल गेल—एहन परिमाणात्मक दावा पाठ नहि करैत।

अनुसन्धान-कथाक सामान्य मनोरचनामे चरमोत्कर्ष अपराधीक पहिचान, गिरफ्तारी आ दण्ड होइत अछि। एतय जाँचक सफलता एक एहन घटना अछि जे भऽ सकैत छल मुदा भऽ नहि सकल। एहन ‘नकारात्मक घटना’ चित्रित करब

कठिन; लेखक ओकरा ईशानक निजी सन्तोष आ समाचार-प्रसिद्धिक अभावसँ सजीव करैत छथि। ईशानक माएक मृत्युक पाछाँ पहिल गहिर सन्तोष सेहो कोनो निजी न्याय-पूर्ति नहि, आन लोकक सम्भावित रक्षा पर आधारित अछि।

एहि स्थाने आलोचनाक सावधानी आवश्यक अछि: उपन्यास चेतावनी देबाक सम्पूर्ण तकनीकी निर्देशिका नहि। सात हजारक आँकड़ा आ खाताक जाँच एक साहित्यिक प्रकरणक तथ्य अछि; एहि आधारपर वास्तविक बैंकिंग व्यवहारक सर्वमान्य जोखिम-सीमा निश्चित नहि कएल जाए।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३८५–३८८मे एक तरफ विधिक सहायता वृद्धाक वैध जीविकाकेँ खोलैत अछि, दोसर तरफ पुलिसक सत्यापन सम्भावित ठगीकेँ आरम्भे रोकैत अछि। तृषाक प्रश्न अछि—नाममात्रक धारक आ कर्ता एक छथि कि नहि? रचनाक प्रश्न अछि—छोट सङ्केतक वास्तविक कारण की? दुनूमे उचित प्रश्नसँ अनावश्यक हानि घटैत अछि। कथाक तुलनात्मक उपलब्धि ई जे न्याय अपराधी खोजबाक कर्म मात्र नहि, गलत आरोपसँ बचाव आ सम्भावित पीड़ितक आगू संरक्षण सेहो अछि। दुइ पीढ़ीक पेशागत अनुभव अलग थिक, तथापि स्रोतगत विनम्रता हुनका जोड़ैत अछि।

अध्ययन-इकाई १८ — संस्थागत रिक्ति, अपराध-पश्चात संवाद आ इतिहासक स्वार्थ (मूल दृश्य ३८९-३९२)

दृश्य ३८९ : अम्बरक खाली देबाल आ असफलता नहि छिपेबाक नियम

अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे एक कोन जानि-बुझि खाली राखल गेल अछि। नव प्रबन्धक एकरा सज्जाक अपूर्णता मानैत अछि, मुदा विहान ओकरा 'जे एखन नहि देखैत छी'क स्मरण बनौने रखैत अछि। संस्थाक पुरान दुरुपयोगक इतिहास एक सार्वजनिक स्मारकमे नहि, रिक्त देबालक रूपमे उपस्थित अछि। एकर विरोधाभास महत्त्वपूर्ण अछि: संस्थाक प्रतीक एखन कोनो सफल अभियानक फोटो नहि, अपन भविष्यक अज्ञानक स्वीकार अछि।

विहानक व्यवहारमे चेतावनी दर्ज करब, अस्पष्ट जोखिमपर चर्चा करब आ प्रयोगकर्ताक हानिक सङ्केतकेँ विकास-दलसँ पृथक जाँचब शामिल अछि। मूल कथा प्रणाली पूर्ण भेलाक दावा नहि करैत; चूक होइत अछि, मुदा चूक छिपेबाक संस्कार घटल अछि। आर्थिक लाभक दाबी सँ संस्थागत विश्वसनीयताक निर्णय नहि बनाओल गेल; जाँचक प्रक्रिया, स्वतन्त्रता आ पारदर्शिताक आधार बनि रहल अछि। एहि नीति-सूत्रक वास्तविक प्रभावक सम्पूर्ण आँकड़ा स्रोतमे नहि अछि, तेँ पूर्ण सफलताक दावा अनुचित।

कलात्मक जोखिम प्रतीकक अत्यधिक स्पष्टता अछि—खाली देबाल स्वयं एक पाठ बनि जाइत अछि, जकर अर्थ विहानक कथन तुरन्त खोलि दैत अछि। तथापि ई ठोस स्थान पिछला कई बैचक अम्बर-परिसरक दोष, सुधार आ प्रशिक्षणक निरन्तरताकेँ एक दृश्यगत केन्द्र प्रदान करैत अछि।

दृश्य ३९० : केशवक क्षमायाचना, अनेक पीड़ित आ मृत माएक वाणीक सीमा

दण्ड पूरा कऽ बाहर आयल केशव ईशानकेँ ई-पत्र पठबैत अछि आ उत्तर नहि देबाक स्वतन्त्रता सेहो छोड़ैत अछि। ईशान तीन दिन पाछाँ सार्वजनिक स्थानमे

भेटबाक शर्त रखैत अछि। एहि प्रारम्भमे एक समय सत्ता-संबद्ध अपराधी रहल व्यक्तिक संवादक इच्छा आ आहत परिवारक सहमतिक अधिकार पृथक मानल गेल अछि। केशव क्षमा माँगैत अछि; ईशान पुछैत अछि—ककरा? ओ अभिषेक, सबीना, मंजरी, कर्मचारी, जुआरी, बैंक आ समाजक अनेक पक्षक उल्लेख करैत अछि। एक वाक्यक ‘माफ करब’ बहुसंख्यक क्षतिक भरपाई नहि।

केशव कहैत अछि जे संख्यासभ नीक रहबाक कारण ओ हानिकारक व्यवस्थाकेँ बचौने छल; किछु जानैत छल, किछु जानब नहि चाहैत छल। ई स्वीकार जानल अपराध आ जानी-बुझि कऽ अनभिज्ञ रहबाक नैतिक भेद खोलैत अछि, मुदा एतय नव अदालतक दोषसिद्धि प्रस्तुत नहि होइत। ईशान स्वयं सभ पीड़ितक दिससँ क्षमा देबाक अधिकारी नहि। ओ केशवकेँ 'परिवर्तित नायक' बनि अपन कथा नहि कहबाक चेतावनी दैत अछि। एकर लक्ष्य स्वीकारक नकार नहि; आत्म-सुधारक विज्ञापनक विरुद्ध सावधानी अछि।

केशव मृणालिनीक नाम लऽ अनुमानित वाक्य कहैत अछि तखन ईशान तुरन्त रोकैत अछि। ई दृश्य ३८३क स्मृतिगत अनुशासनक कठोर सार्वजनिक परीक्षा अछि—पुत्र स्वयं माएक वाणी गढ़बाक अस्वीकार करैत अछि, दोसरक लेल सेहो वैह सीमा तय करैत अछि। वार्ता अन्तमे सामूहिक क्षमा वा पूर्ण मेल-मिलाप नहि रचैत। एहि अपूर्णतामे दृश्य विश्वसनीय बनैत अछि; दण्ड पूरा करब, पश्चात्ताप व्यक्त करब आ विश्वास अर्जित करब तीन पृथक प्रक्रिया अछि।

दृश्य ३९१ : सौरभक अभिलेखदान आ सुधारक दावाक आत्म-संशय

सौरभ शासन-अध्ययन केन्द्रकेँ निजी अभिलेख दान करैत अछि, कानूनी अनुमति तथा संवेदनशील सूचनाक निष्कासनक शर्तपर। ओ सफलता-संबन्धी कागज मात्र नहि, विवादक विवरण सेहो रखबाक आग्रह करैत अछि। एक शोधार्थी छवि सुधारबाक सम्भावना पुछैत अछि; सौरभ एकर सम्भावना नकारैत नहि, बल्कि अपन प्रयोजन पर नहि, अभिलेखक तुलनात्मक जाँच पर भरोसा करबाक

कहैत अछि। एतय पात्रक आत्मसम्बन्धी कथन स्वयं अपन हितसँ मुक्त नहि मानल गेल।

अभिलेख दान कएल गेलाक अर्थ ओ स्वतः सत्यक सम्पूर्ण स्रोत बनि गेल नहि। कागज चयनित भऽ सकैत अछि, संवेदनशील अंश हटाओल जाइत अछि, आ पात्रक कारण स्वयं अस्पष्ट रहि सकैत अछि। मुदा विवादसहित कागजक सार्वजनिक अध्ययन एक आंशिक सुधार अछि—कमसँ-कम बाहरी पाठक तुलना कऽ सकैत अछि। नव्य न्यायक स्रोत-विशेषण, पाश्चात्य दस्तावेजी आलोचना आ ऐतिहासिक साक्ष्यक पक्षपात-विचार एहि दृश्यसँ सम्बन्धित अछि।

शिल्पगत रूपमे सौरभक उत्तर संक्षिप्त अछि आ ओकर कथित पश्चात्ताप पर कथावाचक न्यायिक मुहर नहि लगबैत। ई आत्म-संशय दृश्यकेँ नैतिक प्रवचन होयबासँ कने दूर राखैत अछि। तथापि दान कएल सामग्रीक स्वतन्त्र विश्लेषणक परिणाम पाठ नहि दैत; ओकरा स्वतः सार्वजनिक प्रायश्चित्तक पूर्णता मानल नहि जाए।

दृश्य ३९२ : आठम पाँतिक फ्रेम, पारिवारिक अनुमति आ नियन्त्रणक प्रश्न

तृषा धनेश्वरीक आठ पाँति फ्रेम करि प्रदीपक घर आनैत छथि। प्रदीप पहिने ईशानक अनुमति पुछैत अछि, फेर मृणालिनीक जीवनकालक प्रकाशन-सीमा। तृषाक उत्तरक अनुसार नामरहित प्रसारक पूर्व अनुमति छल, आ ईशान सेहो सहमत छथि। एहि संवादकेँ निजी पत्र अथवा मूल पोथीक पूर्ण सार्वजनिक हस्तान्तरण नहि मानब। अनुमति जे रूपमे देल गेल छल, ओहि सीमाक प्रश्न एखनहुँ महत्त्वपूर्ण अछि।

फ्रेमक आठम पाँति—जकर रक्षा करैत छी ओकर स्वातन्त्र्य नहि छीनू—प्रदीपक अपन अतीतकेँ प्रश्न करैत अछि। कारागारसँ मुक्त भेलाक पछात ओ परिवारक सभ काज नियंत्रित करबाक चेष्टा करैत छल, विश्वास जल्दी लौटय से आशामे। पत्नी ओहि व्यवहारकेँ रोकने छलीह। एखन ओ देखैत अछि जे सुधार, प्रेम आ सुरक्षा—तीनू कखनो नियन्त्रणक भाषा बनि सकैत अछि। परिवारक भीतर

सहमति केवल अपराधी–पीड़ित सम्बन्धसँ नहि, निकटता आ देखभालसँ सेहो जुड़ल अछि।

ई दृश्य धनेश्वरीक पोथीक सामाजिक यात्रा दोहरा रहल अछि, मुदा नब निजी अर्थसहित। विद्यालयमे ओ शिक्षाक वस्तु, अम्बरमे संस्थागत आलोचनाक चिह्न, प्रदीपक घरमे आत्म-नियन्त्रणक स्मरण बनैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ एकहि पाँतिक बहु-सन्दर्भीय उपयोग कृतिक प्रतीक-व्यवस्थाकेँ विस्तार दैत अछि। सीमा ई अछि जे फ्रेम लगबामात्रसँ प्रदीपक भविष्यक व्यवहार पूर्ण बदलि गेल अछि—ई पाठ प्रमाणित नहि करैत।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३८९–३९२मे 'सुधार' चारि रूपमे उपस्थित अछि—अम्बरक खाली देबाल, केशवक क्षमायाचनाक असफल पूर्णता, सौरभक विवादसहित अभिलेखदान आ प्रदीपक घरक आत्मपरीक्षण। एक रूप संस्थागत, एक व्यक्तिगत, एक ऐतिहासिक आ एक पारिवारिक अछि। चारू पर प्रश्न समान अछि: की व्यक्ति अथवा संस्था अपन पुरान हानिकेँ अपन सुविधाक सफलताकथा बना रहल अछि? सन्देहक ई अधिकार सुधारक विरोध नहि, ओकर विश्वसनीयताक कसौटी अछि। उपन्यास सहज सुखान्तसँ बचैत अछि, मुदा एकाधिक जगह नैतिक कथन बहुत स्पष्ट होइत अछि; पात्रसभक असमान अनुभव एहि स्पष्टताकेँ आवश्यक प्रतिरोध दैत अछि।

अध्ययन-इकाई ९९ — विद्यालय, दोकान, शोध आ अनाम आवाजक सार्वजनिक जीवन (मूल दृश्य ३९३–३९६)

दृश्य ३९३ : शैलेशक विद्यार्थीक पुनःप्रवेश आ इच्छा–कर्मक भेद

जुआ-सदृश खेलमे एक बेर फँसल छात्र विद्यालय-परीक्षा पास कऽ शहर पढ़य जा रहल अछि। ओ शैलेशकेँ बतबैत अछि जे पुरान समूहसभकेँ रोकने अछि, मुदा फेर खेलबाक मन कखनो उठैत अछि। शैलेश एहि इच्छाकेँ अपराध घोषित नहि करैत; ओ ओकर पाछाँ करबाक कर्मपर ध्यान देबाक कहैत अछि। एहि भेदक महत्त्व अछि—विचार अथवा आवेग आ वास्तविक हानिकारक निर्णय एक स्तरक घटना नहि। विद्यालयक विश्वास योग्य वातावरण तखन बनैत अछि जखन छात्र अपन कमजोरी स्वीकार कऽ सकैत अछि।

एहि दृश्यकेँ स्वास्थ्य-विज्ञानक उपचार-पद्धति अथवा व्यसनक चिकित्सकीय सफलता मानब अनुचित। मूल पाठ छात्रक परामर्श-इतिहास, जोखिम-मापन वा दीर्घकालिक परिणाम नहि दैत। ओ केवल एतेक देखबैत अछि जे परीक्षा पास भेल, शहर पढ़य जा रहल अछि आ अपन मनक असुविधाजनक बात शिक्षकक सोझाँ रखि सकैत अछि। एहन आंशिक परिणाम उपन्यासक पूर्व दण्ड-विमर्शसँ अलग सामाजिक शिक्षाक स्थान खोलैत अछि।

रचनात्मक रूपमे शैलेश आ विद्यार्थी एक-दोसराक कमजोरी जानैत छथि, जाहिसँ लाज घटैत अछि। पहरा ऊपरसँ देल आदेश नहि, साझा स्वीकार बनैत अछि। पहिनुक बिज्जी-प्रतीक एतय जीवक आकस्मिक साहससँ शिक्षक–छात्रक लम्बा सम्बन्धमे रूपान्तरित होइत अछि।

दृश्य ३९४ : सबीनाक देबाल पर सहज चेतावनी आ भाषा-अधिकार

सबीना खातूनक दोकानक बाहर सरकारी पोस्टर पर धन-वाहक खाताक सावधानी लिखल अछि, मुदा ओकर भाषा कठिन। सबीना ओकर नीचाँ हाथसँ साधारण वाक्य लिखैत छथि—अपन खाता किराया पर नहि दिअ। लोक एहि

नीचाँ लिखल बात बेसी पढ़ैत अछि। एतय नीति-सूचना आ वास्तविक जनसम्पर्कक बीच दूरी प्रत्यक्ष दृश्य बनैत अछि। सरकारक चेतावनी देनाइ पर्याप्त नहि जँ चेतावनीक भाषा लक्षित लोक बुझि नहि सकैत।

सबीना अपन अनुभवक उपयोग करब दैत छथि, मुदा फोटो प्रशिक्षणमे प्रयोग करबाक अनुमति देलाक समय नाम छिपेबाक स्पष्ट शर्त रखैत छथि। एहि निर्णयमे निजत्वक व्यवहारिक अर्थ अछि। पीड़ित अथवा पूर्व सन्दिग्ध व्यक्तिक सामाजिक पहिचान सार्वजनिक शिक्षाक अनिवार्य मूल्य नहि होयबाक चाही। शब्दक उपयोग आ व्यक्तिक नामक प्रकाशन दुई पृथक अधिकार अछि। विदेहक लोक-इतिहासक दृष्टिसँ कारीगरी, दोकान आ स्थानीय लेखन सार्वजनिक ज्ञानक सक्रिय स्रोत बनैत अछि।

दृश्य पोस्टर पढ़निहारक संख्या अथवा ठगी घटबाक सांख्यिक परिणाम नहि दैत। तें साधारण भाषा सफल होएबाक अनुभवक संकेत अछि, प्रमाणित व्यापक प्रभाव नहि। तथापि दृश्य वास्तविक सामाजिक जटिलताकेँ एक मूर्त भेदमे पकड़ैत अछि—ऊपर कठिन शब्द, नीचाँ बुझबाक योग्य चेतावनी।

दृश्य ३९५ : वैदेहीक पुस्तक, आभारमे मृणालिनी आ छपल शब्दक अपर्याप्तता

वैदेही झाक शोध पुस्तक रूपमे अबैत अछि। मृणालिनीक नाम आभारमे अछि; पुस्तकमे एक अनाम पाँति सेहो छपल अछि—दुःख सन्तुष्ट नहि होइत। ईशान पढ़ि भावविह्वल होइत अछि। एहि छोट दृश्यमें दुइ तरहक उपस्थिति अछि: एक जीवित व्यक्ति द्वारा लिखल शोध-अभिलेख, दोसर शोकाकुल बेटाक लग अपन माएक वाणी। शब्दक छपल रूप आवाजक पूरा देह नहि रखैत, मुदा ओकर किछु अंश भविष्य धरि पहुँचबैत अछि।

एतय शास्त्रीय उद्धरण-प्रमाण आ निजी भावनात्मक साक्ष्यक अन्तर पुनः उभरैत अछि। पुस्तकमे उपस्थित अनाम वाक्यक सार्वजनिक विधिक अथवा समाजशास्त्रीय अर्थ अलगसँ जाँच योग्य अछि; ईशानक आँखिमे नोर ओकर व्यक्तिक स्तरपर वास्तविक प्रभाव अछि। एकरे दोसरक प्रमाण बनायब नहि

चाही। पुस्तकक पाठसँ मृणालिनीक सम्पूर्ण विचार, जीवन वा शोक समाप्त भेलाक दावा निकालब अनुचित।

शिल्पगत दृष्टिसँ छपल अक्षर 'ठंढा' लगबाक अनुभव पाठकीयता आ स्वरक अन्तर सूक्ष्म ढङ्गसँ खोलैत अछि। ई दृश्य पोथी, सरकारी फाइल, प्रशिक्षण-पत्र, पत्रिका आ निजी पत्रक लम्बा रूपक-शृंखला जोड़ैत अछि। सभ कागज मूल्यवान अछि, मुदा कोनो कागज सम्पूर्ण जीवन नहि।

दृश्य ३९६ : दण्ड-पछात जीवन आ सर्वव्यापी मोक्षक अस्वीकृति

ईशान अपन पाण्डुलिपिक अन्त लिखैत पुछैत अछि जे दोषी व्यक्तिसभक बादक जीवन कथामे रहत कि नहि। माएक पूर्व आग्रह—कथा हुनका पाछाँ समाप्त नहि करब—एतय अपराधीक भविष्यक विषयमे सेहो लागू होइत अछि। ईशान लिखैत अछि जे दण्ड अन्तिम दृश्य नहि। तकर पाछाँ पात्रसभक छोट-छोट उत्तरजीवन अबैत अछि: कियो सुधरैत अछि, कियो आंशिक रूपेँ; कियो केवल भाषा बदलैत अछि, कियो बदनामी ढोइत अछि; कियो क्षमा नहि पबैत अछि।

एहि वितरणमे कथात्मक न्याय आ विधिक न्याय एक नहि। न्यायालय विशेष घटना आ साक्ष्य पर निर्णय दैत अछि; उपन्यास दण्ड-पछात सम्बन्ध, अवसर आ अपूर्णताक जीवन देखाबि सकैत अछि। मुदा लेखक सभ पात्रकेँ अन्तमे मोक्ष देबाक दायित्व नहि लेत। ई कथाक नैतिक उपलब्धि अछि: सहानुभूति साक्ष्य-विलोपन नहि, पश्चात्ताप दोषक अपने क्षालन नहि, आ दण्डक समाप्ति सामाजिक विश्वासक सुनिश्चित पुनरागमन नहि।

पाश्चात्य अपराध-उपन्यासक निर्णायक समाधानक शिल्पसँ तुलना करैत एतय एक उत्तरकथात्मक विस्तार अछि। तथापि 'कियो सुधारल, कियो केवल भाषा बदललक' जकाँ अनिर्दिष्ट समष्टि-वाक्य व्यक्तिक विशिष्ट अनुभवकेँ छोट बनबैत अछि। उपन्यासक पूर्व ठोस पात्र-दृश्यसभ एहि सामान्य कथनकेँ आधार

दैत अछि; आलोचना ओहि आधार आ समष्टिगत वाक्यक सीमाकेँ दुनू चिन्हैत अछि।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३९३–३९६मे शिक्षक, दोकान, शोध-पुस्तक आ उपन्यास-लेखन चारि पृथक सामाजिक भाषा बनैत अछि। शैलेश छात्रक विचार आ कर्म अलग करैत अछि; सबीना जटिल सरकारी चेतावनीकेँ बुझबाक योग्य बनबैत छथि; वैदेहीक पुस्तक मृत व्यक्तिक किछु वाणी बचबैत अछि; ईशान दोषी लोकक भविष्यकेँ नितान्त निश्चित सुखान्त नहि दैत। ई चारू ठाम ज्ञानक मूल्य ओकरा प्रसारित करबाक ढङ्गसँ जुड़ल अछि। भाषा सम्भावित हानिसँ बचा सकैत अछि, मुदा भाषा अपनहि सम्पूर्ण सुधारक प्रमाण नहि बनैत। कृतिक उत्तरभागक शक्ति एहि आलोचनात्मक विवेकमे अछि।

अध्ययन-इकाई १०० — घरक वस्तु, विपरीत प्रमाण आ जाँच-पछात विनम्रता (मूल दृश्य ३९७–४००)

दृश्य ३९७ : पोथी, कलम आ चश्माक निजी चित्र

ईशान एक संध्या धनेश्वरीक पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा एके मेजपर देखैत अछि। वस्तुसभ अलग जीवन-क्षेत्रसँ आएल—पारिवारिक सूत्र, जाँचक लेखन-साधन आ माएक निजी उपस्थिति। ईशान फोटो लैत अछि, मुदा तुरन्त निर्णय करैत अछि जे ई निजी चित्र अछि; न पाण्डुलिपिक अंश बनत, न सार्वजनिक सामग्री। ओ चित्रक पृथक संचिकाक नाम 'घर' रखैत अछि। एहि साधारण नाममे कथा अपन दीर्घ साक्ष्य-अनुशासनक एक अपेक्षाकृत अनौपचारिक निष्कर्ष पाबैत अछि।

हरेक वस्तुकेँ साक्ष्य बनयबाक प्रवृत्ति पर एहि निर्णयसँ सीमा लगैत अछि। वस्तु जँ अनुसन्धानमे प्रासङ्गिक हो तँ ओकर स्रोत-क्रम जाँचल जा सकैत अछि; मुदा परिवारमे वैह वस्तु अपन अन्तरंग अर्थक लेल सेहो रहि सकैत अछि। ई भेद स्रोतक उपयोगक नैतिकता अछि, साक्ष्यक सम्भावना नष्ट करबाक आदेश नहि। मूल पाठ फोटो लेल गेलाक बाद ओकरा सार्वजनिक नहि करबाक निर्णय स्पष्ट करैत अछि; फोटो मेटा देल गेल—एहन बात नहि कहैत।

शिल्पतः तीन वस्तुक समवर्ती उपस्थिति बहु-पीढ़ीक जीवनकेँ एक क्षणमे समेटैत अछि। उपन्यास पहिनेसँ पोथी, डायरी, बैंक-अभिलेख आ प्रशिक्षण-पञ्जीक विशाल कागजी संसार रचने अछि; 'घर' नामक छोट संचिका एहि संसारमे निजत्वक आवश्यक स्थान बनबैत अछि।

दृश्य ३९८ : रचनाक विपरीत-परिकल्पना आ गलतीक जोखिमक लेखा

सेवा-निवृत्तिक नजिक रचना अन्तिम प्रशिक्षण-दलकेँ कहैत छथि जे गिरफ्तारीसँ पहिने अपन मान्य परिकल्पनाक विपरीत सम्भावना सत्य हो तँ कोन तथ्य

देखाइत, ई पुछबाक चाही। युवा अधिकारीक आपत्तिपर ओ स्पष्ट करैत छथि जे अपराधीक नहि, सत्यक लाभ होइत अछि। समय कम हो तखनो गलतीक जोखिम लिखबाक चाही, छिपेबाक नहि। ई उपन्यासक प्रारम्भिक अनिरुद्ध-जाँचक पद्धतिक व्यवस्थित उत्तराधिकार अछि।

एहि प्रशिक्षणकेँ नव्य न्यायक अनुमान-विवेचनसँ सावधानीपूर्वक तुलना कएल जा सकैत अछि। प्रमाणकेँ एक मात्र अनुमानक पुष्टिक लेल चुनब व्याप्ति-जाँचक दोष उत्पन्न करैत अछि; प्रतिकूल सम्भावनाकेँ सक्रिय रूपेँ खोजनाइ जाँचक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। मुदा साहित्यिक संवादमे रचनाक भाषा न्याय-पद्धतिक पाठ अछि, नव्य न्यायक पूर्ण तकनीकी ग्रन्थ नहि। वास्तविक विधिक गिरफ्तारीक विस्तृत प्रक्रिया, नियन्त्रणकारी मानक अथवा प्रमाणक कानूनी भार दृश्य निर्दिष्ट नहि करैत।

रचना तीस वर्षक अनुभवक बादो पूर्ण निश्चितताक दावा नहि करैत छथि। एतय वृद्ध अनुसन्धानकर्ताक आत्म-विडम्बना आ कक्षाक हँसी गम्भीर कथनकेँ मानवीय बनबैत अछि। अनुभवक अर्थ निरपवाद सत्य जानब नहि, गलतीक सम्भावित ठाम जल्दी चिन्हब बनैत अछि।

दृश्य ३९९ : सेवानिवृत्ति, अनाम आठ पाँति आ अधिकारसँ पृथक अनुभव

रचनाक सेवा-निवृत्ति दिन छोट कार्यालयी आयोजन होइत अछि। रोहित, आब स्वयं वरिष्ठ, हुनका आठ अनाम पाँतिक फ्रेम दैत अछि। रचना पहिने पूछैत छथि जे एहि पर ककरो नाम नहि; ई सुनिश्चित भेलाक बाद स्वीकार करैत छथि। एहि एक प्रश्नमे पोथीक पुरान सीमित प्रकाशन-अनुमति फेर उपस्थित अछि। कथा अनुभवक सम्मान करैत अछि, मुदा मूल सूत्रक लेखकत्व अथवा स्वामित्व सार्वजनिक पदक नाममे परिवर्तित नहि करैत।

रचना फ्रेमकेँ प्रमाणपत्रक कात नहि, अध्ययन-कक्षमे रखैत छथि जतय नव अधिकारी परामर्श लेल आबि सकैत छथि। ई ठामक चयन पुरस्कार आ उपयोगक भेद अछि। औपचारिक अधिकार समाप्त होइत अछि, अनुभव रहि

जाइत अछि; मुदा अनुभवी व्यक्तिक सलाह न्यायिक आदेश अथवा पुलिसक वैधानिक अधिकारक विकल्प नहि। ई भेद कायम राखनाइ आवश्यक अछि।

दृश्य एक नायक-केन्द्रित अन्तसँ बचैत अछि। अनिरुद्धक जाँचक परम्परा रचनामे, रचनाक प्रशिक्षण रोहित आ नव अधिकारीसभमे आगाँ बढ़ैत अछि। ज्ञानक उत्तराधिकार व्यक्तिक पदसँ बेसी प्रश्न करबाक संस्कार पर निर्भर अछि।

दृश्य ४०० : अन्तिम औपचारिक साक्षात्कारक निषेध आ स्मृतिक विसरबाक अधिकार

ईशान रचनाक संग अन्तिम औपचारिक साक्षात्कार नहि करैत। साधारण चाहक समय ओ पुछैत अछि जे जाँचकर्ता अन्तमे की सीखैत अछि। रचना उत्तर दैत छथि जे हर प्रकरण फेर विद्यार्थी बनबैत अछि; अनुभवसँ एतेक लाभ अछि जे गलतीक सम्भावना जल्दी देखाइत अछि। ई विचार दृश्य ३९८क प्रशिक्षणक संग जुड़ैत अछि, मुदा एतय उत्तर अनौपचारिक संवादमे आबैत अछि, प्रशिक्षण-मञ्चक भाषणमे नहि।

ईशान नोटबुक नहि निकालैत अछि। यदि वाक्य बिसरि जाए तँ सेहो ठीक—एहि स्वीकारसँ उपन्यासक अभिलेखक आग्रह एक नव सीमा पर पहुँचैत अछि। आरम्भमे सत्यप्रकाशक अदृश्य खर्चाक डायरी, अनिरुद्धक सङ्केत-सङ्ग्रह, बैंकक डिजिटल पाँति आ माएक पोथीक प्रतिलिपि कथा बढ़ौने छल। एतय एक नीक वाक्य जानि-बुझि कऽ कागज पर नहि उतारल गेल। सभ ज्ञानक स्थायित्व अनिवार्य नहि, सभ अन्तरंग बात भविष्यक स्रोत बनबाक चाही नहि।

शिल्पगत दृष्टिसँ एहि दृश्यकेँ पूर्ण कथा-समापन नहि कहि सकैत, किएक तँ मूल उपन्यासमे दृश्य ४०१ सँ आगू सेहो अछि। एहि स्तरपर ई दृश्य ईशानक साहित्यिक उत्तरदायित्वक एक अवस्था पूरा करैत अछि, लेखकक सम्पूर्ण उपन्यासक अन्तिम निष्कर्ष नहि। आलोचनामे ई क्रमगत मर्यादा सुरक्षित रहबाक चाही।

अध्ययन-इकाईक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ३९७–४००मे निजी फोटो, अनिश्चिततताक प्रशिक्षण, कार्यालयी उत्तराधिकार आ अनलिखल बातचीतक चारि दृष्टान्त अछि। तीन प्रश्न एकठाम अबैत अछि—की चीज लिखल जाए, कोन आधार पर विश्वास कएल जाए, आ ककरा प्रकाशित करबाक अनुमति अछि? ईशान अपन घरक वस्तु सार्वजनिक नहि करैत; रचना अपन मान्य अनुमानक प्रतिकूल तथ्य खोजबाक सिखबैत छथि; रोहित अनाम सूत्रक पहचान सुरक्षित रखैत अछि; ईशान सम्भावित उद्धरण लिखबो नहि चाहैत। कृतिक नैतिक भार गोहिक भय वा बिज्जीक वीरतासँ हटि सामान्य मनुष्यक निर्णयक मर्यादामे टिकैत अछि।

बीसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — रिक्तिक साक्ष्य, अपराध-पश्चात उत्तरजीवन आ विश्वसनीय पहराक अभ्यास (मूल दृश्य ३८१–४००)

एक जीवनक समापन आ अनेक जीवनक निरन्तरता। मृणालिनीक मृत्युक बाद ईशान पहिल मसौदाक अनेक परिचित प्रतीक हटबैत अछि, नदीक कछेर पर सामान्य जीवन देखैत अछि, ऋतु बदलैत मृत माएक सम्भावित वाक्य नहि गढ़ैत। ई क्रम कथा-समापनक संकटसँ सामाजिक समयक पुनर्स्वीकार धरि जाइत अछि। मृणालिनीक इच्छा साहित्यिक आदेश बनि सभ पात्रक जीवन नियंत्रित नहि करैत; ओकर अर्थ एतेक जे एक मृत्युक कारण दुनियाक आन लोकक अनुभव शून्य नहि। ई शिल्पक आत्मालोचना अछि।

भारतीय प्रमाण-दृष्टि आ स्रोतक प्रकार। दृश्य ३८५मे बैंक-अभिलेख वृद्धाक खाते मे लेनदेन देखबैत अछि, मुदा कर्ताक मनोभाव अथवा सक्रिय नियन्त्रणक सम्पूर्ण ज्ञान नहि दैत। दृश्य ३८७मे छोट असामान्य लेनदेन जाँचक प्रश्न अछि, अन्तिम अपराध-सिद्धि नहि। दृश्य ३९१मे सौरभक कागज शोध लेल उपयोगी अछि, मुदा चयन आ छवि-सुधारक सम्भावनासँ मुक्त नहि। भारतीय प्रमाण-विमर्शक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक भेद एहि तीन घटनाकेँ तुलना करबाक उपकरण दैत अछि। साहित्यिक पाठ मूल न्यायशास्त्रीय सूत्रक प्रमाणित उद्धरण नहि देलक; तेँ तुलना विधिक अथवा शास्त्रीय अधिकारक नामपर कल्पित श्लोक जोड़ि नहि कएल जाए।

नव्य न्याय आ प्रतिकूल सम्भावनाक जाँच। रचनाक अन्तिम प्रशिक्षणक प्रश्न—जँ हमर अनुमान गलत हो तँ कोन तथ्य देखाइत—मूल कृतिक अनुसन्धान-पद्धति एक वाक्यमे स्पष्ट करैत अछि। एतय संशय उद्देश्यहीन विलम्ब नहि, गलत निश्चयक विरुद्ध सक्रिय अनुशासन अछि। दृश्य ३८७क सात हजारक खाता एक दिस उपेक्षा योग्य मानल जा सकैत छल, दोसर दिस ओकरा बिना जाँच अपराध घोषित कएल जा सकैत छल। उचित बाट सत्यापन छल। ई

नव्य न्यायक अनुमान-परीक्षणक एक समकालीन साहित्यिक अनुरूपता अछि, शाब्दिक शास्त्रीय प्रतिपादन नहि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यानसँ तुलना। अनेक अपराध-आख्यान अपराधीक पर्दाफास आ अदालतक परिणाम पर समाप्त होइत अछि; एहि उपन्यासक वर्तमान बीस दृश्य दण्डक पछाति क्षमायाचना, आंशिक पुनर्वास, पेशागत शिक्षण आ संस्थागत स्मृतिक परिपाटी बनबैत अछि। केशवक ईशानसँ भेंट भावनात्मक मेल-मिलापक अपेक्षा जटिल प्रश्नमे परिणत होइत अछि। तृषाक विधिक सहायता अदालतक राहतक बादो पोताक भूमिकाक पृथक जाँच खुलल रखैत अछि। ई संरचनामे ‘समाधान’ एक बिन्दु नहि, असमान उत्तरजीवनक श्रृंखला अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि : राजकीय फाइल आ गामक आवाज। सबीनाक पोस्टर, धनेश्वरीक पोथी, वैदेहीक अनुसन्धान, अम्बरक प्रशिक्षण-कक्ष आ रचनाक कार्यालय—सभ सूचना-स्थान अलग सामाजिक स्तरक अछि। कथा एहि स्रोतसभकेँ एक क्रमबद्ध आधिकारिक इतिहासमे विलय नहि करैत। स्थानीय भाषामे खाता-किराया विरुद्ध चेतावनी अधिक पठनीय बनैत अछि; आठ पाँतिक अनाम फ्रेम परिवारक सहमतिक सन्दर्भसँ जुड़ल अछि; शासकीय सूचना अपनहि पर्याप्त नहि। विदेहक पद्धतिमे सामुदायिक अनुभवक अधिकार आ अभिलेखक प्रमाण-सीमा साथ पढ़ल जाए तखन ई भिन्न स्वर स्पष्ट होइत अछि।

क्षमा, उत्तरदायित्व आ नागरिकक स्वातन्त्र्य। केशव दण्ड-पछाति क्षमा माँगैत अछि, मुदा ईशान अन्य पीड़ितसभक दिससँ क्षमा नहि दैत। प्रदीप फ्रेमक पाँति देखि अपन परिवारपर पहराक नाममे नियंत्रणक पुरान चेष्टा परखैत अछि। शैलेश विद्यार्थीक मनमे खेलबाक इच्छा उठबाकेँ अपराध नहि कहैत। एहि तीनू घटनामे रक्षक, सुधरल व्यक्ति वा शिक्षक—कियो दोसराक जीवनक सम्पूर्ण मालिक नहि। भारतीय नैतिक कर्तव्यक विचार आ आधुनिक व्यक्तिगत

स्वातन्त्र्यक संवेदना एहि प्रसङ्गसभमे संवाद करैत अछि, परस्पर समरूप नहि भऽ जाइत।

मृत व्यक्तिक स्मृति आ कथनक अनुमति। ईशानक माएक कल्पित वाक्य नहि गढ़बाक नियम दृश्य ३९०मे केशव पर सेहो लागू होइत अछि। दृश्य ३९५मे मृणालिनीक अनाम वाक्य शोध-पुस्तकमे छपैत अछि, मुदा ओकरा पढ़ि ईशानकेँ वाणीक सम्पूर्ण जीवन वापस नहि भेटैत। दृश्य ३९७मे पारिवारिक वस्तुक फोटो निजी रखल जाइत अछि। ई भिन्न निर्णय स्मृतिक नीति रचैत अछि—अनुपस्थितिक अर्थ दमन नहि, आ सार्वजनिक उपयोगक अधिकार स्वतः असीमित नहि।

नकारात्मक घटना आ नदेखल जोखिम। दृश्य ३८८मे रोखल गेल सम्भावित हानि समाचारक केन्द्र नहि बनैत; अम्बरक खाली देबाल नदेखल जोखिमक स्मरण अछि। दुनू 'जे नहि अछि' ओकर अर्थ दैत अछि, मुदा समान नहि। पहिल स्थिति सम्भावित अपराध घटबाक पहिने रोकबाक प्रभाव अछि; दोसर भविष्यक गलती सम्भव रहबाक संस्था-द्वारा स्वीकार। एहि दू दृश्यकेँ जोड़ि लेखक सामाजिक सतर्कताक सफलताकेँ सनसनीक बदला प्रक्रियामे नापबाक प्रस्ताव रखैत छथि।

कथाक कारीगरी आ पुनरुक्तिक प्रश्न। एहि बीस दृश्यमे कथा छोट-छोट अनुच्छेद, वस्तुक समुच्चय, अनौपचारिक बातचीत आ दृष्टान्तात्मक वाक्यसँ अर्थ बनबैत अछि। एहि प्रविधिक उपलब्धि शोकक क्षणमे अत्यल्प भाषा, सात हजारक खातामे स्पष्ट प्रश्न-क्रम, सबीनाक दो पाँतिक पोस्टर आ अन्तिम चाहक बातचीतमे देखाइत अछि। सीमा बारम्बार एक्के सूत्र पर घुरनाइ अछि—प्रमाण अलग, अनुमान अलग; पहरा हो, नियन्त्रण नहि; सभ बात लिखब जरूरी नहि। किछु ठाम उपदेश कथात्मक आविष्कारसँ आगाँ निकलैत अछि। तथापि अलग सामाजिक स्थानमे एहि सूत्रक प्रयोग ओकरा हर बेर नव व्यावहारिक परीक्षा दैत अछि।

पाठक-स्थितिक अंतिम समीक्षा। एतय दृश्य ४०० धरि पढ़ल भागक तुलना सम्पन्न अछि, मुदा मूल ४१८ दृश्यक कथा एखन शेष अछि। तँ एहि तुलनात्मक निष्कर्षकेँ अन्तिम १८ दृश्यक अर्थक स्थानापन्न बनाओल नहि जाए। ई बीस दृश्यक तात्कालिक प्राप्ति अछि—अपराध-संबद्ध भयक रक्षक-रूपक आब जानकारीक सीमा, साधारण भाषाक पहुँच, सम्भावित हानि-निवारण, क्षमाक अधिकार आ शोकक निजत्वक विवेक बनैत अछि। ई कृतिक सम्पूर्ण निर्णय नहि, ओकर उत्तरभागक एक समर्थ अवस्था अछि।

अध्ययन-इकाई १०१ — किनारक परिवर्तन, अन्तक तैयारी आ अधूर प्रमाण (मूल दृश्य ४०१-४०४)

दृश्य ४०१ : नव पक्का पथ आ नदीक कछेर पर साझा अधिकार

कमला-बलानक किनार पक्का पथ बनलाक बाद टहलनिहार, साइकिल चलबनिहार नेना आ धूप लेनिहार वृद्धक लेल खुलैत अछि। ईशानकेँ पुरान कादो आ पदचिह्न घटबाक दुख लगैत अछि, मुदा ओ तुरन्त बुझैत अछि जे किनार केवल ओकर अपन कथा अथवा निजी स्मृतिक सम्पत्ति नहि। एहि छोट संशोधनमे उपन्यासक सामाजिक दृष्टि अनायास प्रकट होइत अछि। पहिनुक अनेक दृश्य नदीक कातकेँ अपराध, भय आ प्रतीकक भूगोल बनबैत छल; एतय ओहि भूगोलक वास्तविक उपयोग नागरिकसभक दैनिक जीवनमे फेनु स्थापित होइत अछि। पक्का पथकेँ केवल विकासक विजय घोषित नहि कएल गेल अछि—माटिक छोट अवशिष्ट भागमे बिज्जीक पग एखनहुँ देखाइत अछि। प्रकृति आ निर्माणक बीच सरल विरोध नहि, अवशिष्ट सहअस्तित्वक एक अस्थिर स्थिति अछि।

ईशान पानिमे गोहि अछि कि नहि, एकर निश्चित दर्शन करबाक आग्रह छोड़ि दैत अछि। ई परिवर्तन अनुसन्धानक परित्याग नहि; कथा-कथनमे प्रतीककेँ बाध्य कऽ उपस्थित करबाक पुरान प्रवृत्तिसँ मुक्ति थिक। प्रत्यक्ष जे देखल गेल, ओ बिज्जीक पग अछि; गोहिक उपस्थितिक अभावक विषयमे दृश्य कोनो निर्णय नहि दैत। साहित्यिक समीक्षाक लेल ई भेद अनिवार्य अछि। यदि आलोचक ‘गोहि समाप्त’ अथवा ‘गोहि बचल’ कहि देत तँ मूल दृश्यक स्वीकृत अनिश्चितता नष्ट भऽ जाएत। उपन्यासक उत्तरभाग प्रतीकक कठोर व्याख्यासँ हटि साझा स्थानक साधारण अधिकार स्वीकार करैत अछि।

दृश्य ४०२ : प्रतीककेँ कम करबाक साहस आ पात्रकेँ जटिल रखबाक विधि

ईशान उपन्यासक अन्तिम पन्नाक दृश्य-योजना करैत अछि, मुदा तुरन्त ओकर लेखन स्थगित करैत अछि। ओकरा न विजयोत्सव चाही, न गोहिक मृत्यु, न

अपराध समाप्त भेलाक मिथ्या घोषणा, न पुलिसक विजय-गीत। ओ किनार, बिज्जी, साँप आ पानि चाहैत अछि; मुदा एहि चारि चिह्नक पुनरागमनकेँ कमाइत अछि, दोहरबैत नहि। मूल पाठमे ओ अधिक बिज्जी काटैत अछि, नारा बनल गोहि हटबैत अछि, दर्शनक उपदेश संवादमे घोलैत अछि। ई कथाक भीतर लेखक-पात्रक सम्पादकीय आत्मालोचना अछि, उपन्यासकारक निजी कार्य-दैनिकी मानबाक प्रमाण नहि।

एहि दृश्यक सबसँ तीक्ष्ण बिन्दु पात्रसभक नैतिक रचनामे अछि। ‘अत्यधिक साफ’ पात्रमे दोष जोड़ब आ ‘अत्यधिक कारी’ अपराधीमे मनुष्यक साधारणता घुरायब—ई अपराधकेँ माफ करब नहि, मानवीय जटिलताकेँ स्थान देब थिक। पीड़ितकेँ केवल पीड़ित नहि रखि ओकर निर्णयक अधिकार फेर देल जाइत अछि। पाश्चात्य अपराध-आख्यानक निश्चयात्मक समाप्ति आ भारतीय प्रमाण-दृष्टिक संशयक बीच एहि दृश्यकेँ संवादक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा ई पूरा दृश्य शिल्पक विषयमे अछि, न्यायिक निर्णयक नव दस्तावेज नहि। शिल्पक उपलब्धि एतेक जे कथा अपनहि पहिनुक अतिव्याख्यात्मक प्रवृत्तिकेँ आलोचनाक विषय बनबैत अछि।

दृश्य ४०३ : अनुपस्थित व्यक्तिक बीच जीवित घर आ रक्षकक अलक्षित उपस्थिति

भोरमे ईशान घरसँ प्रशिक्षणक लेल निकलैत अछि। सत्यप्रकाश, धनेश्वरी, मृणालिनी आ अनिरुद्धक अनुपस्थिति चारि छोट वाक्यमे अबैत अछि; तकर बाद भानसघर, पोथी, किताब, फाइल, पौधा, आँगन आ विद्यालयक घंटी घरक जीवनसँ भरल संरचना प्रस्तुत करैत अछि। शोकक ई रूप भावनाकेँ शब्दक भारसँ नहि, वस्तुक ठाम आ क्रियाक क्रमसँ व्यक्त करैत अछि। कथा मृत पात्रसभक कृत्यक पुनर्वर्णन नहि करैत; ओ जे संस्थागत आ घरेलू अभ्यास छोड़ि गेलाह, से जीवित लोकक दिनचर्यामे उपस्थित अछि।

बिज्जी एतय देखाइत नहि। ईशान ओकर प्रतीक्षा सेहो नहि करैत अछि। पहराक अर्थ एक विशेष जीवक दर्शनसँ हटि प्रशिक्षित सावधानी आ सामूहिक जिम्मेदारीक व्यवहारमे सरकि गेल अछि। एहि ठाम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्षक समीक्षात्मक भेद उपयोगी अछि: जीवक दृश्य अनुपस्थिति, पहराक नैतिक अनुपस्थितिक प्रमाण नहि; ताहि संग पहरा ‘पूर्ण सुरक्षित’ भऽ गेल—एहन निष्कर्षक आधार सेहो नहि। लेखकक चयन छोट, गद्य लगभग सूचीजेकाँ; तकर लय आवेगक बादक धीर कार्यमे बदलैत अछि।

दृश्य ४०४ : ‘लगभग पूरा’ आ सम्पूर्ण सत्यक असम्भव दाबी

एक वर्ष बाद ईशानक पाण्डुलिपि लगभग पूर्ण अछि। मूल दृश्य ‘लगभग’ शब्द पर अटकैत अछि, किएक तँ सम्पूर्ण कृति लिखबाक अर्थ सभ प्रश्नक निर्णायक उत्तर भेटब नहि। सत्यप्रकाशक मृत्यु सम्पूर्णत: प्रमाणित नहि; देवांशुक दायित्व एक सीमा धरि सिद्ध; हरिचरण आ रामअवतार मृत; जुआ-जालक एक व्यवस्था विघटित भेल, मुदा ऑनलाइन दाँव समाप्त नहि; कियो बदलल, कियो सावधान भेल, कियो सामाजिक कलङ्क ढोइत रहल। ई छोट-छोट वाक्य उपन्यासक बहुस्तरीय न्याय-स्थितिक निचोड़ छथि।

ईशान शीर्ष पृष्ठपर ‘समाप्त पाण्डुलिपि’ लिखि ‘समाप्त’ काटि दैत अछि। एहि संशोधनकेँ न्यायिक अनिश्चिततताक सीधा पर्याय कहब सहज होइत, मुदा ओहिमे अधिक कलात्मक प्रश्न अछि: साहित्य अपन वस्तुक सीमा मानि पूर्ण रचना बनि सकैत अछि, बिना एहन घोषणा कएने जे जीवनक फाइल सेहो बन्द भऽ गेल। ‘पाण्डुलिपि’ शब्द एक तैयार कएल जा रहल पाठक नाम अछि, न्याय-घटनाक अन्तिम आदेश नहि। एकर संग पूर्व दृश्यसभक आंशिक निर्णय, अनकहल पारिवारिक इतिहास आ संस्थागत परिवर्तन तुलनीय अछि।

एहि चारि दृश्यक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ४०१–४०४ नदीक किनारसँ लेखकीय मेज धरि चारि चरण बनबैत अछि: साझा सार्वजनिक स्थान, प्रतीकक संयम, जीवित घरक निरन्तरता आ अपूर्ण सत्यक स्वीकार। साहित्यिक दृष्टिसँ उल्लेखनीय ई अछि जे नाटकात्मक उद्घाटनसँ आरम्भ भेल आख्यान अपन अन्तमे उत्सव अथवा विनाशक प्रतिमा नहि चुनैत, बल्कि विश्वसनीय सीमाक गद्य चुनैत अछि। एहि सफलताक सीमा सेहो अछि: लेखनक विषयमे ईशानक स्पष्ट नियम कखनो कथाक स्वतन्त्र दृश्यपर टिप्पणी बनि जाइत अछि। तथापि एतय ओ नियमक संग व्यवहारिक सम्पादन जोड़ैत अछि, जाहिसँ आत्मालोचना घोषित सिद्धान्त नहि, दृश्यमान क्रिया बनि उठैत अछि।

अध्ययन-इकाई १०२ — निर्दोष विसंगति, उत्तरदायित्वक भाषा आ सुधारक असुविधा (मूल दृश्य ४०५–४०८)

दृश्य ४०५ : जाँचक सफलता अपराध नहि भेटब सेहो अछि

सेवानिवृत्त रचना सिन्हा ईशानकेँ एक सार्वजनिक प्रशिक्षण-सामग्री पठबैत छथि। गामक कृषि-सहायता सम्बन्धी छोट खातामे दू असामान्य आवागमन देखल गेल छल; स्थानीय पुलिस पहिने ओकरा धन-वाहक खाता बुझैत छल। पछिला जाँचमे ज्ञात होइत अछि जे एक परिवार अपन रिश्तेदारक वैध रकम गलत खातामे पठौने छल। एतय जाँचक अन्तिम उपलब्धि अपराधी पकड़ब नहि, निर्दोष व्यवहारकेँ सही रूपमे पुनः पहिचानब अछि। ई उपन्यासक प्रमाण-शास्त्रीय अन्वेषणक अन्तिम चरण लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रतिदृष्टान्त अछि।

रचनाक सार ई अछि जे छोट विसंगति सदिखन पैघ आपराधिक जालक सङ्केत नहि। एतय विरोधी सम्भावनाक खोज प्रत्यक्ष प्रक्रिया बनैत अछि: आरम्भिक सन्देह, बैंकक रोक, छानबीन आ वैध हस्तान्तरणक पुष्टि। तर्कक दृष्टिसँ सामान्यीकरणक दोष स्पष्ट अछि—बैंकक विचित्रता एक सङ्केत भऽ सकैत अछि, अपनहि अपराधक कारण अथवा निश्चय नहि। ईशान पाण्डुलिपिमे बदलि लिखैत अछि जे छोट चिह्न कखनो जालक आरम्भ होइत अछि, कखनो मानवीय भूल। कथा अनावश्यक भयक उत्पादक साहित्य आ सजग सम्भावनापरीक्षक साहित्यक अन्तर स्थापित करैत अछि। एकर शक्ति ई अछि जे पूर्व दृश्यक प्रशिक्षण-नियमकेँ एक नव नकारात्मक परिणामसँ जाँचैत अछि।

दृश्य ४०६ : बैंक-खाता आ व्यक्ति बीचक दूरी, सम्पादित समाचारक सीमा

तृषा नियमित वकालत करैत छथि। पत्रकार ‘जानि-बुझि कऽ’ शब्दक सावधानी पर प्रश्न करैत अछि; ओ एक छोट वाक्यमे व्यक्ति आ खाताक भेद स्पष्ट कऽ आगाँ बढ़ि जाइत छथि। प्रदीप समाचारक छोट चलचित्र देखि बधाई दैत अछि; तृषा कहैत छथि जे तीन क्षणक अंशमे बात आधा रहि गेल अछि। ई दृश्य

अभियुक्तक मानसिक अवस्था, खाताक तकनीकी उपयोग आ समाचारक सम्पादन—तीन स्तरक अपूर्णताकेँ एकसंग अनैत अछि।

खातामे रकम गेल मात्रसँ खाताधारकक ज्ञान, सहमति, लाभ अथवा आपराधिक उद्देश्यक स्तर स्थापित नहि होइत। एहि सिद्धान्तक साहित्यिक परीक्षण तृषाक पेशागत भाषामे अछि; ओकरा वास्तविक न्यायिक आदेश अथवा सार्वभौम कानूनी नियमक रूपमे उद्धृत नहि करब उचित। प्रदीप आ पुत्रीक हँसी पारिवारिक सम्बन्धमे धीरे लौटैत सहजताक चिह्न अछि, यद्यपि पूर्व अपराधसँ उत्पन्न सभ क्षतिक भरपाइ एहीसँ सिद्ध नहि। शिल्पक विशेषता अछि जे गंभीर विधिक सूक्ष्मता घरक दैनन्दिन अपनत्वक संग बिना दीर्घ उपदेशक जुड़ैत अछि।

दृश्य ४०७ : सार्वजनिक पुनर्वासक मंच अस्वीकार करबाक नैतिकता

केशव पुनर्वासक सार्वजनिक आयोजनमे बाजबाक निमन्त्रण स्वीकार नहि करैत। ओकर आशङ्का अछि जे मंच अपराध, कारागार, परिवर्तन आ मुक्ति केँ अतिसरल नैतिक कथा बनाकऽ प्रस्तुत करत। ओ एक लिखित टिप्पणी पठबैत अछि, जाहिमे स्वतः निर्दोष बनबाक आग्रह नहि; अपन काजक दायित्व जारी रहबाक स्वीकार अछि। मंच पर वएह टिप्पणी ओकर नाम सहित पढ़ल जाइत अछि; तेँ कार्यक्रममे ओकर शारीरिक अनुपस्थिति आ सार्वजनिक कथनक उपस्थिति एक नहि अछि।

ई दृश्य आत्मालोचना आ आत्मप्रचारक बीचक सूक्ष्म रेखा पर अछि। भाषण नहि देबाक निर्णय स्वतः नैतिक सुधार सिद्ध नहि करैत; तथापि अपन अपराधकेँ एक चमकदार उद्धार-कथामे बदलबाक अवसर टारब विचारणीय अछि। ‘संख्या’ जखन मनुष्यक चेहराक स्थान लैत अछि, तखन निर्णय दुर्बल होइत—ई कथन पहिनुक वित्तीय-लेनदेन, अनाम खाताधारक आ पीड़ितक अनुभवक संग अर्थवान् होइत अछि। लेखक सुधारकेँ एक दृश्य-क्षणक बदला निरन्तर उत्तरदायित्वक प्रश्न बनबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे केशवक

पश्चात्ताप पर बादक सार्वजनिक प्रतिक्रिया दृश्य विस्तारसँ नहि देखबैत; एकर प्रतिफल निश्चित मानब सम्भव नहि।

दृश्य ४०८ : दान देल अभिलेख पर आलोचनाक अधिकार

सौरभ बर्धनक नाम समाचारसँ धीरे ओझराइत अछि, मुदा ओकर दान देल संस्थागत अभिलेख शोधार्थीक उपयोगमे अबैत अछि। शोध-पत्र प्रारम्भिक शासन-रचनामे प्रतिष्ठा, लाभ आ जोखिमक कारण सूचना रोकबाक संस्कृतिक आलोचना करैत अछि। सौरभकेँ किछु निष्कर्ष गलत, किछु कठोर आ किछु यथार्थ लगैत अछि। ओ शोधकर्ताकेँ फोन करबाक विचार छोड़ि दैत अछि। ई घड़ी संस्थागत इतिहास आ निजी आत्मछविक बीचक सम्बन्ध पर निर्णायक अछि।

स्रोतदानक अर्थ लिखित विवरण पर दाताक अन्तिम नियन्त्रण स्थापित करब नहि। आ फेर, शोधकर्ताक सभ निर्णय अनिवार्यतः सही—ई बात सेहो मूल पाठ नहि कहैत अछि; सौरभ अपन मतभेद राखैत अछि, मुदा हस्तक्षेप नहि करैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक सन्दर्भमे ई बिन्दु महत्त्वपूर्ण: दस्तावेज, लिखनिहारक हित, शोधकर्ताक व्याख्या आ सामुदायिक परिणाम पृथक स्तर छथि। साहित्य एतय स्रोतक उपलब्धता आ आलोचनात्मक स्वातन्त्र्यक बीच समुचित दूरीक दृश्य रचैत अछि।

एहि चारि दृश्यक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ४०५–४०८मे ‘निष्कर्ष’क चारि अलग सीमा अछि—असामान्य कारोबार अपराध नहि, खाता व्यक्ति नहि, सार्वजनिक क्षमायाचना सुधारक सरल प्रमाण नहि, आ अभिलेख दान व्याख्याक मालिकाना नहि। ई बीस वर्षक अपराध-इतिहासक उत्तरभागक उपयोगी नैतिक सघनता अछि। रचना, तृषा, केशव आ सौरभक सामाजिक स्थिति बहुत अलग अछि; ई भिन्नता आर पार समान प्रश्न उठबैत अछि: कोन तथ्य सँ कतेक निष्कर्ष निकालल जा सकैत अछि? तथापि चारू दृश्य छोट दृष्टान्तक रूपमे बहुत व्यवस्थित छथि, जाहिसँ स्वाभाविक

संवादक स्थाने एतय-ओतय सूत्रवाक्य अधिक देखाइत अछि। मूल कथा एहि जोखिमकेँ तृषा–प्रदीपक हँसी आ सौरभक मनक द्विधासँ कने संतुलित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई १०३ — संस्थागत पहरा, अधूर पोथी आ कथाक काट-छाँट (मूल दृश्य ४०९–४१२)

दृश्य ४०९ : खाली देबाल पर प्रश्न आ अपराध बिना सुधार

अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे एक कर्मचारी पूछैत अछि जे आइ संस्था की नहि देखि रहल अछि। दोसरो कर्मचारीसभ शिकायतक छोट सङ्केत, रातिक बढ़ैत व्यय आ साझेदारक अस्पष्ट भुगतान-वर्णन लिखैत अछि। छानबीनमे कोनो नव आपराधिक काण्ड नहि भेटैत; बिलिङक दोष, उत्पादनक डिजाइन-दोष आ किछु उपयोगकर्ताक बाध्यकारी व्यवहारक सङ्केत भेटैत अछि। संस्था तत्काल सुधार करैत अछि। एहि प्रसङ्गक अर्थ एतबे नहि जे प्रबन्धक ‘जागरूक’ छथि; मुख्य उपलब्धि ई जे रोकथामक प्रश्न अपराधक अनिवार्य उपस्थितिक प्रतीक्षा नहि करैत।

एहि अभ्यासमे सूचना नदेखबाक स्वीकार संस्थागत परिपक्वताक आरम्भ अछि। खाली देबाल पूर्व भागक ऐतिहासिक अभिलेखक संग विरोध रचैत अछि: पहिने दीबाल पर घोषित सफलता, आब एक खुलल प्रश्न। मुदा एहिमे न तऽ स्वतः सम्पूर्ण सुरक्षा सिद्ध अछि, न संस्था पुरान अपराधसँ पूर्ण मुक्त। कथा विशिष्ट प्रकारक गैर-आपराधिक त्रुटि चिह्नैत अछि, जाहिसँ समीक्षक ओकरा कल्पित गिरोह अथवा हेरायल नकदीक प्रमाण बना नहि सकैत। ई दृश्य रोकथामक नकारात्मक उपलब्धिक मार्मिक उदाहरण अछि।

दृश्य ४१० : घरक अधूर पन्ना आ नबम सूत्र नहि गढ़बाक अनुशासन

ईशान पुरान घरक दराज मरम्मति करबबैत अछि। बढ़ई दराज तोड़बाक प्रस्ताव दैत अछि, मुदा ईशान तोड़बाक बदला खोलबाक कहैत अछि। भीतर कर-रसीद, सूत, सत्यप्रकाशक टूटल कलम, मृणालिनीक विवाह-सूची आ एक लिफाफा अछि। धनेश्वरीक लिखल अधूर वाक्य—घर बचेनाइ केवल देबाल बचेनाइ नहि

—पढ़ि ओ अनेक अर्थ सोचि सकैत अछि, मुदा कोनो अर्थकेँ वाक्यक शेष अंश नहि बना दैत। ओ पन्ना पोथीमे राखि दैत अछि; एकरा नवम सूत्र नहि कहैत।

एहि प्रसङ्गमे अभिलेख-संरक्षणक विधि प्रत्यक्ष क्रियामे देखाइत अछि। बिना तोड़ने खोलब, मूल लेख अलग चिन्हब, पन्नाक अधूर अवस्था स्वीकार करब आ सम्भावित अर्थकेँ मूल पाठक स्थान पर नहि लिखब—ई चारि क्रिया स्रोत-निष्ठ अध्येताक लेल सेहो आदर्श प्रश्न उपस्थित करैत अछि। परिवारक नैतिकता पर अधूर वाक्यक सम्भावना बहुत व्यापक अछि, मुदा मूल लेखक अर्थ निश्चित नहि करैत। ‘नबम’ सूत्रक अभाव आलस्य नहि; अनधिकृत पूर्तिक विरुद्ध अनुशासन अछि। एतय धनेश्वरीक पोथी कथानकक बचेबाक वस्तु होइतहुँ भी अब विवेकपूर्ण अपूर्णताक आख्यान बनि उठैत अछि।

दृश्य ४११ : कथाक सम्पादन आ दर्शनक स्थान-निर्धारण

ईशान अन्तिम पाण्डुलिपिमे घटना चलैत दर्शनक टिप्पणी रोकैत अछि, अदालतक प्रश्नक बाद पाठक पर भरोसा करैत अछि, मृणालिनीक शोकमे अश्रुक गणना नहि करैत, आ बिज्जीक उपस्थितिक बाद रूपकक व्याख्या तुरन्त नहि करैत। ओ आरम्भिक गहुमन-बिज्जी दृश्य सेहो काटि छोट करैत अछि। कथा भीतर सम्पादकीय हस्तक्षेप दृश्यमान अछि: लेखन केवल घटना जमा करब नहि, पाठकक अनुभवक गति तय करब सेहो अछि।

ई आत्मालोचनाक विशेष महत्त्व मूल उपन्यासक शिल्पगत असमानता पर अछि। पूर्व अनेक भागमे पात्रक कथनक बाद स्पष्ट दार्शनिक निष्कर्ष दोहराओल जाइत अछि। एहि दृश्यमे ईशान ओ कमजोरी स्वयं चिन्हि पाठककेँ अर्थ निकालबाक अवकाश दैत अछि। एकरा सीधा लेखक गजेन्द्र ठाकुरक निजी स्वीकार मानब उचित नहि; ओ उपन्यासक पात्रक सम्पादन-क्रिया अछि। मुदा ई आत्मसन्दर्भक कारण रचना अपन शिल्पक आलोचनाकेँ भीतर जगह दैत अछि। साहित्यिक उपलब्धि एहि स्वीकारक प्रयोगमे अछि, केवल साहित्य-सिद्धान्तक नामोल्लेखमे नहि।

दृश्य ४१२ : तृषाक सीमित सम्पादन आ पूर्ण चरित्र-सूचीक निषेध

तृषा ईशानक पाण्डुलिपिक अन्तसँ पहिनुक अंश पढ़ैत छथि। ओ गति, अनावश्यक लम्बा अदालत-अंश आ जे बात निर्णय नहि बदलैत ओकरा कम करबाक परामर्श दैत छथि। ईशान अन्तिम दृश्य एखन नहि पढ़बैत, किएक तँ ओकरा लिखनाइ बाकी अछि। दुनूक सहज हँसी एक भारी आपराधिक आ पारिवारिक इतिहासक उत्तरभागमे श्रमक सामान्यताक दर्शन करबैत अछि।

तृषाक सम्पादकीय दृष्टि ओकर विधिक अभ्याससँ जुड़ैत अछि: जकर कथन परिणाम नहि बदलैत ओकरा हटेनाइ विवेचनकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि। तथापि ‘जे निर्णय नहि बदलैत’ साहित्यक लेल सर्वथा निरर्थक—एहन नियम नहि; अनेक साधारण दृश्य चरित्रक जीवनबोध बनबैत छथि। ई बहस उपन्यासक भीतर आन्तरिक रूपेँ उपस्थित अछि। तृषा पूर्ण पात्र-भाग्य-सूची नहि चाहैत छथि; कथा अपन पाठककेँ एकल निर्णायक कड़ीक बदला अनेक असमान जीवन-रेखाक बीच छोड़बाक तयारी करैत अछि।

एहि चारि दृश्यक संयुक्त मूल्याङ्कन

अम्बरक संस्थागत जाँच, धनेश्वरीक अधूर पन्ना, ईशानक सम्पादन आ तृषाक टिप्पणी—चारू ठाम सुधारक अर्थ बेसी जोड़ब नहि, अनावश्यक दावा घटायब अछि। बैंकक आँकड़ा, पोथीक अक्षर आ उपन्यासक वाक्य विभिन्न वस्तु छथि, मुदा तिनकर स्रोत-सापेक्ष सीमा स्वीकार करब एक साझा नैतिक गुण अछि। तुलना करैत काल ध्यान रहय जे साहित्यिक गद्यक संक्षेप सम्पूर्ण विधिक जाँचक नमूना नहि, आ अधूर पारिवारिक वाक्य वैज्ञानिक प्रतिवेदनक रिक्ति नहि। एहि भिन्नताकेँ यथावत् राखि कृति सूचना-युगक सजग लेखनक एक व्यवहारिक रूप प्रस्तावित करैत अछि।

अध्ययन-इकाई १०४ — जीवित जीवक दृश्य आ उपन्यासक संयमित अन्त (मूल दृश्य ४१३–४१६)

दृश्य ४१३ : साँपक पाछाँ हटब, गोहिक क्षणिक उदय आ फोटो नहि लेबाक निर्णय

राति ईशान नदीक कात जाइत अछि। पक्का पथ समाप्त भेला पर माटि शुरू होइत अछि; बिज्जी घासक कात चलैत देखाइत अछि। किछु दूर गहुमन बाहर अबैत अछि, दुनू थमकि जाइत अछि, मुदा एहि बेर लड़ाइ नहि होइत। साँप पाछाँ दिशा बदलि घासमे समा जाइत अछि। पानिमे भारी आवाज होइत अछि; गोहि एक क्षण लेल आँखि आ नाकक रेखासँ ऊपर आबि फेर डूबि जाइत अछि। ईशान बिज्जी नदी दिस तकलक कि नहि, कहबाक असम्भवता स्वयं मानैत अछि।

उपन्यासक पहिल जीव-संघर्षसँ एहि अन्तिम दृश्यक तुलना निर्णायक अछि। पहिने बिज्जीक साहस साँपक मृत्यु, शिशुक रक्षा आ धनेश्वरीक कहबीमे परिणत भेल छल; आब सहअस्तित्वक एक क्षणमे कोनो रक्तपात नहि। ई अहिंसाक अन्तिम विजय सिद्ध नहि करैत—जीवसभक आगेक व्यवहार अज्ञात अछि—मुदा कथाक प्रतीक पर थोपल युद्धक अनिवार्यता भङ्ग करैत अछि। ईशान फोटो लेबाक आवेग रोकैत अछि। कैमरा छोड़ब सत्यापनक सार्वभौम नियम नहि; एहि विशेष निजी अवलोकनमे वस्तुकेँ तुरन्त सार्वजनिक प्रमाण बनयबाक इच्छा पर नियन्त्रण अछि। एतय प्रत्यक्ष दृश्य, संदेह आ कथा-प्रयोगक तीन भेद अत्यन्त सुन्दर ढङ्गसँ बचल अछि।

दृश्य ४१४ : अन्तिम तीन वाक्य आ नैतिक उपदेशक विलोपन

ईशान घर घुरि उपन्यासक अन्त लिखैत अछि। पहिल मसौदा लम्बा; ओ दू बेर काटैत अछि। अन्तमे घासमे गहुमनक दिशा बदलनाइ, पानिमे गोहिक एक क्षणक उदय आ बिज्जीक किनार नहि छोड़ब—तीन दृश्यात्मक कथन बचैत अछि। ईशान अपराधक बदलैत रूप आ सावधान पहिचानक आवश्यकता पर

एक स्पष्ट वाक्य जोड़ैत अछि, मुदा अपनहि ओकरा काटि दैत अछि। ई कटाव उपन्यासक अन्तिम शिल्पगत निर्णय अछि।

एहि तीन वाक्यमे नैतिक सूचनाक अभाव नहि, नैतिक दाबीक विस्तार नहि करबाक संयम अछि। पाठक ई बुझि सकैत अछि जे गोहि अज्ञात जोखिमक रूपक, बिज्जी सतर्कता आ गहुमन प्रत्यक्ष भय अछि; मुदा जीवसभक वास्तविक अस्तित्व एहि एकार्थी व्याख्याकेँ चुनौती दैत अछि। कृतिक अन्तमे दर्शन कथासँ बाहर उपदेशक रूपमे नहि ठाढ़ होइत। न्याय-दर्शनक उपशीर्षक रहितहुँ अन्तिम कथन दृश्यसापेक्ष बनैत अछि। ई उत्कर्ष उपन्यासक पहिनुक पुनरुक्ति-प्रधान दृश्यमालाकेँ आलोचनात्मक दृष्टिसँ फेनु पढ़बाक कारण दैत अछि।

दृश्य ४१५ : चारि वस्तु, अधूर पाँति आ नामकरणक शुद्धि

ईशान धनेश्वरीक आठ पाँति, अधूर लिखल पन्ना, अनिरुद्धक कलम, मृणालिनीक चश्मा आ सत्यप्रकाशक टूटल कलम एकठाम राखैत अछि। लेखक ‘चारि वस्तु, चारि जीवन’ कहैत अछि; सूचीमे पोथी आ पन्नाक सम्बन्धकेँ देखैत चारि जीवनक प्रत्यक्ष संकेत धनेश्वरी, अनिरुद्ध, मृणालिनी आ सत्यप्रकाश छथि। कियो सम्पूर्ण उत्तर नहि देने, कियो सत्यक एकमात्र स्वामी नहि। तथापि पाण्डुलिपि बनल अछि। एहि विरोधमे कृतिक ज्ञानमीमांसक सार व्यक्त होइत अछि।

ईशान शीर्षक आ उपशीर्षक ज्योंक-त्यों पढ़ैत अछि—‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’ आ ‘न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा’। संचिकाक नाममे ‘Final’ शब्द नहि, केवल तिथि रखैत अछि। ई छोट क्रिया दृश्य ४०४क ‘समाप्त’ काटबाक समानान्तर अछि; अपन कार्य पूरा करब आ ज्ञानक सम्पूर्ण समाप्तिक दावा करब पृथक अछि। ध्यानयोग्य ईहो जे मूल पोथीक प्रथम पृष्ठपर साहित्यकारक नाम गजेन्द्र ठाकुर अछि; ईशान उपन्यासक काल्पनिक पात्र आ आत्मसन्दर्भक लेखकीय केंद्र थिक, वास्तविक कृतिक बाह्य लेखक नहि। एहि स्तरभेद बिना समीक्षा भ्रम उत्पन्न करत।

दृश्य ४१६ : अनाम आठ पाँति आ बाल-पाठकक खुलल प्रश्न

विद्यालयक दू बच्चा घरमे पोथी घुरेबाक लेल अबैत छथि। एक बच्चा आठ अनाम पाँतिक पर्चा देखि लेखकक नाम पुछैत अछि; ईशान कहैत अछि ई घरक अछि, व्यक्तिगत नाम जरूरी नहि। बच्चा चौठ पाँति पढ़ैत अछि—दोषारोपणसँ पहिने लोकक काज देखबाक विचार—आ पुछैत अछि जे ई पुलिस लेल अछि कि सामान्य जीवन लेल। ईशान उत्तर दैत अछि जे सभ लेल, ओकरो लेल। बच्चा प्रश्नसँ गुजरि पोथी लऽ विदा होइत अछि।

एहि प्रसङ्गमे पोथी न्यायालय अथवा शोधक स्वामित्वमे सीमित नहि रहैत; सामुदायिक पठनक नव पीढ़ीक हाथमे अबैत अछि। तथापि नाम नहि देबाक निर्णयक अधिकार ककरा छल, ई प्रश्न पाठककेँ बचल रहैत अछि; मूल दृश्य अनाम सार्वजनिक पर्चाक परम्परा देखबैत अछि, सभ मूल पारिवारिक दस्तावेज स्वतः सार्वजनिक—एहन दावा नहि करैत। बालकक प्रश्न ज्ञानक वास्तविक प्रसारक चिह्न अछि। कथाक पहिल दृश्य शिशु ईशानकेँ जीव-संघर्षक स्मृति दैत छल; अन्तमे ईशान एक बालककेँ निष्कर्ष नहि, प्रश्न करबाक अभ्यास दैत अछि। एहि पीढ़ी-संवादमे पहराक अर्थ शारीरिक रक्षा सँ ज्ञानक आत्मनियन्त्रण धरि फैलैत अछि।

एहि चारि दृश्यक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ४१३–४१६ चारि प्रकारक सीमाक स्वीकृति अछि: जीवक व्यवहार अनिवार्य युद्ध नहि, अन्तिम कथामे व्याख्याक अधिकता अनिवार्य नहि, पाण्डुलिपिक तिथि सत्यक अन्तिम बन्दीकरण नहि, आ बालककेँ विद्या देबाक अर्थ पूर्ण निर्णय थोपब नहि। कथा अपन आरम्भक प्रतिमाकेँ फेर आनैत अछि, मुदा बदलल नैतिक भार सहित। ई सफल समापनक महत्त्वपूर्ण युक्ति अछि; तथापि उपन्यासक आखिरी दू दृश्य एहि घरेलू आ दृश्यात्मक अन्तकेँ व्यापक सामाजिक विन्यासमे खोलैत अछि, तेँ दृश्य ४१६केँ कृतिक वास्तविक अन्तिम वाक्य मानब ठीक नहि।

अध्ययन-इकाई १०५ — वितरित पहरा आ अन्हारक भीतर अविरत जीवन (मूल दृश्य ४१७–४१८)

दृश्य ४१७ : ककरो एक नायक बिना अनेक जीवित कर्म

साँझक गढ़ नारिकेलमे नदीक लहर, किसानक घर-फेर, विद्यालयसँ साइकिल चलबनिहार लड़की, अस्पतालक वाहन, मोबाइल टावर, नव निविदाक सूचना आ बैंकक केवाड़ी बन्द होयब—सभ एके दृश्य-पटल पर उपस्थित अछि। तकर संग रितेशक दोकान, सबीनाक मशीन, शैलेशक उपस्थिति-पञ्जी, मंजरीक रात्रि-ड्यूटी, तृषाक मुकदमा, रचनाक पुस्तक, प्रदीपक प्रशिक्षण, विहानक नोट, केशवक प्रश्न आ सौरभक अनलिखल टिप्पणी आओर खुलैत अछि। ई पात्र-पञ्जी अन्तमे ककर की विजय भेल से बतबैत नहि; ई देखबैत अछि जे सामाजिक जीवन अनेक ठाम एकसंग चलैत अछि।

उपन्यासक प्रारम्भमे ईशानक घरक रक्षाक केन्द्र एक बिज्जी छल। अन्तमे पहरा विद्यालय, बैंक, अदालत, कार्यस्थल, शोधकक्ष आ घरे-घरमे बाँटल अछि। मुदा सूचीमात्रक रूपात्मक खतरा सेहो अछि: कुछ क्षण लेल पात्रसभ व्यक्तिगत मनुष्य कम, संस्थागत कर्मक प्रतिनिधि अधिक बुझाइत छथि। ई कारीगरीक सीमा स्वीकार कएलाक बादो दृश्य अपन लक्ष्य प्राप्त करैत अछि—एकल नायकक चमत्कार नहि, अनेक अधूर प्रयासक सामूहिक उत्तरजीवन। विशेषतः नव निविदाक सूचना ई याद करबैत अछि जे आर्थिक अवसर आ ओकर जोखिम फेर आबि सकैत अछि; कहानीक आदिम संघर्ष अन्तिम बेर सदिखन लेल बन्द नहि भेल।

पाश्चात्य बहुपात्रीय उत्तरकथासँ एकर तुलना सम्भव अछि, मुदा एतय मिथिलाक भूगोल आ सार्वजनिक संस्थाक परस्पर सम्बन्ध इसे एक विशिष्ट सामाजिक स्थल बनबैत अछि। सरकारी सूचना, गामक दोकान, वित्तीय व्यवहार आ सामान्य चलन चारि पृथक इतिहास-रेखा छथि। विदेह समानान्तर

ऐतिहासिक दृष्टिमे एहि एकसंग चलनिहार सूचनाकेँ एक आधिकारिक विजयोत्सवमे विलय नहि करब ओकर मूल उपलब्धि अछि।

दृश्य ४१८ : पाँच छोट पाँतिमे अनिर्णीत पहराक समापन

अन्तिम दृश्य बहुत छोट अछि: राति नदीक कात शान्ति; गहुमन घासमे, गोहि पानिक भीतर, बिज्जी किनार पर; दूर घरक दीप एक-एक कऽ मिझाइत अछि; अन्हार बढ़ैत अछि; पहरा समाप्त नहि। एहि संक्षिप्त दृश्यकेँ उपन्यासक बाहरी रूपसँ घटनारहित अन्त कहि सकैत छी, मुदा लम्बा अपराधकथा पढ़ल पाठक लेल ई मौन खाली नहि। साँप, गोहि आ बिज्जी अपन-अपन स्थानमे उपस्थित अछि; कियो पूर्ण विजय पाबि दोसराक अस्तित्व मेटा नहि देलक।

अन्हार बढ़नाइ एक नब अपराध घटलाक प्रमाण नहि; ओ दृश्यात्मक रातिक क्रम अछि, जाहिमे असुरक्षाक सम्भावना रूपकक रूपमे जागल रहैत अछि। ‘पहरा समाप्त नहि’ उपन्यासक अन्तिम नैतिक कथन अछि; मुदा ई आदेश केवल प्रहरी संस्थाक लेल नहि, प्रश्न करनिहार पाठक, काम करनिहार नागरिक आ स्मृति सँ व्यवहार सीखल समुदाय सभ लेल खुलल अछि। पहिल दृश्य मे बिज्जीक छलाँग तुरन्त जीवन-रक्षा करैत छल; अन्तिम दृश्य मे बिज्जी स्थिर पहरा अछि, जखन जीबनक सब संस्था अपन काजमे आबि चुकल। ई सूक्ष्म रूपान्तरण उपन्यासक संरचनात्मक वृत्त पूरा करैत अछि।

एहि दू दृश्यक संयुक्त मूल्याङ्कन

दृश्य ४१७क बहु-स्थानिक सूची आ दृश्य ४१८क लघु प्रतीकात्मक चित्र एक-दोसराकेँ संतुलित करैत अछि। पहिल सामाजिक ठोसपन दैत अछि, दोसर कलात्मक संक्षेप। उपन्यास नैतिक जागरूकताक अनन्त दायित्व देखबैत अछि, मुदा सभ आशङ्काकेँ सत्य, सभ अपराधकेँ सिद्ध, सभ अभियुक्तकेँ एके रूपेँ दोषी अथवा सभ पुनर्वासकेँ सम्पूर्ण नहि घोषित करैत। आखिरी पाँति पाठकक

हाथमे प्रश्न राखैत अछि—ककर रक्षा, कोन आधारपर, कतेक अधिकारसँ, आ अनिश्चित भविष्यमे केहन सजगतासँ? ई कृतिक सजीव अन्त अछि।

एकैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अपराध, प्रमाण, स्मृति आ पहराक अन्तिम वृत्त (मूल दृश्य ४०१–४१८)

आरम्भ आ अन्तक जीव-सम्बन्ध। उद्घाटनमे गहुमन शिशुक नजदीक पहुँचैत अछि आ बिज्जीक अचानक आक्रमणसँ संकट घटैत अछि। अन्तिम नदीक दृश्य मे ओही तीन जीव-प्रतीक—गहुमन, बिज्जी आ गोहि—एक नब दूरीमे उपस्थित छथि। गहुमनक पाछाँ हटब हत्या नहि; गोहिक क्षणिक उदय निर्णायक सामना नहि; बिज्जीक ठाढ़ रहब विजय-घोषणा नहि। एहि परिवर्तनसँ उपन्यासक हिंसक रक्षक-प्रतिमाक अर्थ विवेकपूर्ण सतर्कतामे परिणत होइत अछि। जीव-विज्ञानक यथार्थ आ रूपकक अर्थकेँ एक नहि कएल जाए—ई शिक्षा ईशानक सम्पादनमे स्वयं उपस्थित अछि।

भारतीय प्रमाण-दृष्टि : प्रत्यक्षक सीमा। दृश्य ४०१मे बिज्जीक पग देखल गेल, गोहि नहि। दृश्य ४०५मे असामान्य बैंक-आवागमन देखल गेल, अपराध नहि। दृश्य ४१३मे गोहि एक क्षण ऊपर आयल, बिज्जी ओतय तकलक कि नहि, से अनिश्चित। एहि तीन घटनाक मिलान प्रत्यक्ष, अनुमान आ सन्देहक अन्तर रचैत अछि। शास्त्रीय प्रमाण-परम्परासँ एकर तुलनात्मक अध्ययन कएल जा सकैत अछि, मुदा आख्यानमे वास्तविक शास्त्रीय सूत्रक सम्पूर्ण पाठ उपस्थित नहि; अतः ई विवेचन रचनात्मक अनुरूपता अछि, प्राचीन पाठक प्रमाणित शाब्दिक अर्थ नहि।

नव्य न्याय : असिद्ध सामान्यीकरणक प्रतिरक्षा। रचनाक छोट खाता-जाँच एहि कृतिक प्रमुख प्रतिदृष्टान्त अछि। छोट असामान्य सङ्केत जुआ-जालक पक्का लक्षण—एहन व्याप्ति असत्य निकलि सकैत अछि। तृषाक ‘खाता’ आ ‘आदमी’क भेद, सौरभक अभिलेख दानक बाद आलोचनाक अधिकार, आ धनेश्वरीक अधूर वाक्य नहि पूरब—ई सभ अलग-अलग क्षेत्रमे अनुचित सामान्यीकरण आ अनधिकृत अर्थ-पूर्तिक विरुद्ध स्थित छथि। तथापि

अदालतक प्रमाण-भार, वित्तीय विश्लेषण आ साहित्यक रूपक अलग विधि छथि; आलोचनामे एहि पृथक्करणक रक्षा आवश्यक अछि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यान आ अनसमाधानित उत्तरकथा। अपराधक मुख्य समय, गिरफ्तारी, दोषनिर्णय आ अपील उपन्यासक पहिने भागमे विस्तारसँ उपस्थित अछि। आखिरी अठारह दृश्यमे कोनो नव रहस्यमय अपराधीकेँ अन्तिम क्षणमे प्रकट नहि कएल गेल; यथास्थान अपूर्ण प्रमाण रहैत अछि। एकल समाधानक बदला कथा निर्दोष ठहरल खाता, प्रशिक्षणक विफलता, विधिक पेशा, ऐतिहासिक शोध, पुनर्वास आ स्मृतिक अप्रकाशित अधिकारक सहजीवन देखबैत अछि। ई शिल्प सामाजिक अपराध-उपन्यासक उत्तरजीवनक आकाङ्क्षा रचैत अछि; एकर सीमा ई जे किछु उत्तरदृश्य उदाहरणात्मक सूचीमे बदलि जाइत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : दस्तावेजक असमान स्वभाव। धनेश्वरीक पोथी, सत्यप्रकाशक पुरान वित्तीय लिखावट, तृषाक अदालत-संबन्धी अभ्यास, रचनाक प्रशिक्षण-सामग्री, सौरभक संस्थागत अभिलेख आ सबीनाक लोक-चेतावनी परस्पर बदलबाक वस्तु नहि। एक स्रोत घरक स्मृति अछि, दोसर जाँचक सङ्केत, तेसर सार्वजनिक नीति, चौठ शोधार्थीक आलोचनाक सामग्री। कृतिक मूल्य एहि असमान स्रोतक बीच सहसम्बन्धक जाँचमे अछि। केवल एक संस्थाक अधिकृत इतिहास बनबैत उपन्यास एहि जीवित बहुस्वरकेँ समाप्त नहि करैत।

लेखकीय आत्मपरीक्षणक अन्तिम फल। दृश्य ४०२ आ ४११मे ईशान बिज्जी-रूपकक अत्यधिक उपयोग, पात्रक सरल नैतिक रंग आ दर्शनक पुनरुक्ति काटैत अछि। दृश्य ४१४मे निष्कर्षक स्पष्ट वाक्य हटबैत अछि। ई कलात्मक पद्धति पछिला दृश्यसभक दोहराव-विषयक आलोचनाकेँ उत्तर दैत अछि; मुदा एकरा आधार बना पुरान सम्पूर्ण पाठमे अवश्य सब दोष दूर भऽ गेल—एहन कल्पना नहि कएल जा सकैत। उपन्यास आत्मालोचनाक क्रिया चित्रित करैत अछि,

एहि कारण ओकर शिल्पगत असमानताक अध्ययन आओर अधिक सूक्ष्म बनैत अछि।

मृतकक स्मृति आ नामक अधिकार। अनिरुद्धक कलम, मृणालिनीक चश्मा, सत्यप्रकाशक टूटल कलम, धनेश्वरीक पोथी—एहि वस्तुसभक साहित्यिक महत्त्व किछु आन अछि, कागजी कानूनी प्रमाणक स्थिति किछु आन। धनेश्वरीक अधूर वाक्यकेँ ईशान नवम नियम नहि बनबैत; बालककेँ पर्चाक निजी लेखकत्व नहि थोपैत; पात्रक अन्तिम भाग्यक सम्पूर्ण सूची नहि छपबैत। स्मृति बचेनाइ आ मृतकक मुँहमे नव वाक्य रखब अलग काज अछि। ई नैतिक सावधानीक उच्चतम साहित्यिक उपलब्धि मानल जा सकैत अछि।

न्याय, दायित्व आ सामाजिक सुधारक पृथक समय। देवांशुक सीमित दोषसिद्धि सत्यप्रकाशक मृत्युकेँ सम्पूर्ण स्पष्ट नहि करैत; केशवक पुनर्वासक कथन ओकर पूर्व दायित्व मेटा नहि दैत; अम्बरक नव बिलिङ-सुधार पुरान संस्थागत दोषकेँ अपने धो नहि दैत; रचनाक निर्दोष बैंक-लेनदेनक खुलासा ई स्थापित करैत अछि जे जाँचक शुद्धि आरोप कम करब सेहो अछि। एकरे कारण उपन्यास सार्वजनिक संशयक अनन्त विस्तार नहि, प्रमाणपरीक्षक विवेकक आग्रह करैत अछि।

अन्तिम शिल्पगत निर्णय। दृश्य ४१७क सामाजिक बहुस्थानिक सूची आ दृश्य ४१८क अति लघु चित्रक संयोजन उपन्यासकेँ एक नायकसँ अनेक नागरिक दिस खोलैत अछि। नदीक पानि, अन्हार, गोहि आ बिज्जी बाहरी कथानकक अन्तिम घटना नहि, कथाक दीर्घ विचारक नाट्यात्मक संक्षेप छथि। अन्हार बढ़ैत अछि; पहरा समाप्त नहि। पाठमे कोनो सर्वज्ञ निरपेक्ष न्यायाधीश एहि वाक्यकेँ प्रमाणित नहि करैत; पाठककेँ सजग विवेकक भार सौंपल जाइत अछि।

सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

कृतिक पहचान, विधा आ मूल समस्या

गजेन्द्र ठाकुरक ‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’ अपन उपशीर्षक ‘न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा’क भीतर अपराध-रहस्य, सामाजिक उपन्यास, पारिवारिक उत्तरकथा आ प्रमाण-विवेचनकेँ एक संयुक्त कथात्मक रचनामे रखैत अछि। मूल पाण्डुलिपिमे लेखकक क्रमाङ्कित अध्याय नहि अछि; कथा ४१८ ❖-विभाजित दृश्य-प्रसङ्गमे चलैत अछि। ई दृश्य-विभाजनक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक प्रसङ्ग एक समान समय, आकार अथवा कथात्मक भारक अछि। आरम्भिक अध्यायसदृश दृश्य अनेक पृष्ठ धरि विस्तृत अछि; अन्तिम दृश्य बहुत छोट। एकर वास्तविक विन्यास दृश्यगत गतिक, अनुसन्धानक दस्तावेज आ पीढ़ी-दर-पीढ़ीक कालान्तरक संयोजनसँ बनैत अछि। एहि समीक्षाक एक सय पाँच अध्ययन-इकाई सम्पादकीय सुविधा लेल बनाओल गेल अछि; ओ मूल लेखकक कल्पित अध्याय नहि।

कृतिक केन्द्रीय प्रश्न ‘अपराधी के?’ धरि सीमित नहि। प्रश्न अछि—एक विचित्र घटना कैँ घटना कहबाक अधिकार ककरा अछि; आशङ्काक आधार पर व्यक्ति कैँ कतेक दूर तक दोषी मानल जा सकैत अछि; लिखल अभिलेख आ जीवित अनुभव कोना एक-दोसराकेँ सुधारि सकैत अछि; निर्णय भऽ गेलाक बाद परिवार, निर्दोष व्यक्ति आ समुदाय कोना जिबैत छथि? उपन्यासक उत्तर एक व्यक्ति, एक अदालत अथवा एक वैज्ञानिक उपकरणमे समाहित नहि। एकर सशक्तता एहि व्यापक प्रश्न-विन्यासमे अछि।

कथानकक आरम्भ : जीव-रूपक आ निविदाक अन्धेरा

गढ़ नारिकेलक घरमे गहुमनक प्रवेश आ बिज्जीक हस्तक्षेप उपन्यासक स्मरणीय आरम्भ अछि। धनेश्वरी देवी, मृणालिनी आ बालक ईशानक उपस्थितिसँ संकट देहगत बनैत अछि। आठ बरखक अन्तरालक बाद कमला-बलानक कात बदलैत

ठेका-व्यवस्था, सड़क आ डिजिटल निविदा देखबैत लेखक प्राकृतिक भयकेँ संस्थागत भयमे रूपान्तरित करैत छथि। सत्यप्रकाश कर्णक छोट कम्पनीक वैध अनुबन्धक पछात ‘छओ प्रतिशत’क अनौपचारिक माँग, काममे बाधा आ कारी दैनिकी अपराधी शक्तिक नग्न घोषणासँ बेसी ओकर साधारण प्रशासनिक रूपक परिचय दैत अछि।

निविदाक अलग कागज, गिट्टीक जाँच, मजदूरक उपलब्धता, प्रयोगशालाक प्रतिवेदन आ स्थानीय समन्वय—एहि सबक बीच अनियमितताक सम्भावना बनैत अछि। मुदा आरम्भसँ लेखक हर रोक-टोककेँ एके अपराधी षडयन्त्रक सिद्ध परिणाम नहि कहैत। मृणालिनी एक धागा देखैत छथि, सत्यप्रकाश अलग घटनाक सम्भावना खोलि रखैत छथि। एहि टकरावसँ नैतिक साहस आ प्रमाणक अधैर्यक अन्तर बनैत अछि। बादमे सत्यप्रकाशक सड़कक मृत्युक घटना एहि संरचनाकेँ दीर्घ अन्वेषणक आधार दैत अछि।

अनिरुद्ध चौधरी आ रचना सिन्हा : जाँचक विचारशील उत्तराधिकार

अनिरुद्ध चौधरीक अनुसन्धान-पद्धति उपन्यासक प्रमुख बौद्धिक उपलब्धि अछि। मृत देह, दू वाहनक टक्कर, फरार चालक—एतबे तत्काल ज्ञात; हत्या वा दुर्घटनाक निष्कर्ष एखनहि बन्द नहि। गोदामक जारल वाहनक गलत पहिचान आ ‘कौ. म.’ सन संक्षिप्ताक्षरक सम्भावित गलत अर्थ एहि पद्धतिक कथात्मक परीक्षण अछि। जाँचकर्ता अपन अनुमानक पुष्टि करबाक अतिउत्साहसँ सावधान रहैत अछि। बादक भागमे रचना सिन्हा एहि दृष्टिकेँ डिजिटल खाताक असामान्य लेनदेन, कृत्रिम आवाजक धोखा आ निर्दोष नागरिकक खातामे गलतीसँ आएल रकमक जाँच धरि बढ़बैत छथि।

अनिरुद्धक मृत्यु आ रचनाक सेवानिवृत्ति कथाकेँ शून्य नहि करैत। प्रशिक्षण, अभिलेख, रोहितक अनुभव आ सार्वजनिक सामग्रीमे पद्धति चलैत रहैत अछि। ई ‘नायकक उत्तराधिकार’ केवल नामक उत्तराधिकार नहि; विपरीत सम्भावना जाँचबाक नियमक सामाजिक उत्तरजीवन अछि। हँ, कतेको दृश्य मे जाँचकर्ताक दार्शनिक कथन बहुत स्पष्ट होइत अछि; मुदा कृतिक श्रेष्ठ दृश्य ओ अछि

जाहिमे कोनो सुराग असत्य सिद्ध होइतहुँ जाँच अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

मयंक झा, वित्तीय अभिलेख आ सङ्ख्याक नैतिक सीमा

मयंक झाक दू प्रतिशतक भुगतान-समानता देखबाक स्वभाव आर्थिक अपराधक कथा कैं दस्तावेजी यथार्थ दैत अछि। समान अनुपात, एके परामर्श कम्पनी, पुनरावृत्त भाषा आ विभागीय टिप्पणी—एहि सभक मेल अनुसन्धानक प्रश्न बनैत अछि। किन्तु ‘एकहि अङ्क’ अपने अपराधक प्रमाण नहि। बादक कथामे एके वित्तीय मार्गसँ गुजरल खातासभकैं समान अपराधी उद्देश्यक मानब गलत ठहरैत अछि। एहि विरोधाभासमे उपन्यास डिजिटल आँकड़ाक अनिवार्य नैतिक सीमा चिन्हैत अछि।

अर्थशास्त्रीय आँकड़ा निष्प्राण नहि; ओकर पाछाँ रोजीरोटी, भरोसा, घरक समय आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्न होइत अछि। बैंकक खातामे रकम भेल मात्रसँ खाताधारकक सक्रिय ज्ञान, नियन्त्रण, लाभ अथवा दोष प्रमाणित नहि होइत—तृषा आ रचनाक अलग भूमिकामे ई विचार फैलैत अछि। तथापि उपन्यास अभियोजनक तकनीकी समस्त नियमक प्रामाणिक पाठ्यपुस्तक नहि। एकर वित्तीय प्रसङ्ग कथा आ नैतिक विवेचनक स्रोत छथि; वास्तविक अधिनियमक विशिष्ट धारा, डिजिटल फॉरेन्सिक विधि वा बैंकक तकनीकी मानक एकर पाठसँ अनुमान कऽ नहि जोड़ल जा सकैत।

सत्यप्रकाशक मृत्यु : अनिर्णीत हत्या-प्रश्नक शिल्पगत महत्त्व

उपन्यासक एक प्रमुख साहस ई अछि जे दीर्घ अन्वेषण, पुरान परिवहन-बही, रामअवतार यादवक अधूर स्मरण, देवांशुक बयान आ भुगतान-आपत्ति पत्रक बादो सत्यप्रकाशक मृत्यु पूर्ण रूपसँ स्पष्ट नहि होइत। गैरकानूनी दबावक दायित्वक प्रमाण आ विशेष रूपसँ हत्या करएबाक निर्देश देबाक प्रमाणक भार अलग अछि। ई अन्तर पाठकक रहस्य-समाधानक स्वाभाविक अपेक्षाकैं बाधित करैत अछि, मुदा आरम्भसँ घोषित प्रमाण-अनुशासनकैं अन्तिम परीक्षण पर खरा उतारैत अछि।

यदि लेखक अन्तमे कोनो नव साक्षी अथवा चमत्कारी दस्तावेजसँ सभ प्रश्न समाप्त करि दैत, तँ आरम्भसँ चलैत अनिश्चितता पर ओहि चमत्कारक प्रभुत्व भऽ जाइत। कृति ई सरल समाधान टारैत अछि। एकर मूल्य ई नहि जे न्याय असम्भव अछि; बल्कि ई जे न्यायिक निर्णय अपन प्रमाणिक सीमा स्वीकार करए तखनहि विश्वसनीय होइत अछि। मृणालिनीक दीर्घ प्रतीक्षा असम्पूर्ण रहैतहुँ ओकर साक्ष्यक महत्त्व समाप्त नहि होइत।

डिजिटल खेल-जाल, लत, श्रम आ सामाजिक क्षति

कथा पारम्परिक ठेका-जालसँ अम्बरक खेल-मञ्च, प्रतियोगिता-शुल्क, धन-वाहक खातासभ आ डिजिटल प्रचारक दुनिया धरि जाइत अछि। अभिषेकक आर्थिक संकट, मंजरीक पढ़ाइमे बाधा, सबीना खातूनक रोजीरोटीक पुनःप्राप्ति आ निर्दोष खाताधारकक सामाजिक कलङ्क उपन्यासकेँ केवल अनुसन्धानक तकनीकी कथासँ अलग करैत अछि। अपराधक लेखामे पैसा अगुआ होइत अछि, मुदा सामाजिक क्षतिमे समय, लाज, विश्वास आ भावी अवसरक ह्रास सेहो गनल जाएबाक चाही।

अपराधबोध आ पुनर्वासक वर्णन सेहो एकरे संग जुड़ैत अछि। केशवक क्षमायाचना ओकर पीड़ितसभक सभ अधिकार समाप्त नहि करैत; सौरभक अभिलेखदान ओकरा स्वतः निर्दोष नहि बनबैत; प्रदीपक पारिवारिक सम्बन्ध धीरे सामान्य होइत अछि; शैलेश विद्यालयमे गलतीक चर्चा करैत अछि। उपन्यासक सामाजिक उपलब्धि ई जे अपराध-पश्चात जीवनकेँ दण्डादेशक अन्तिम पाँति पर रोकि नहि दैत। सीमा ई अछि जे किछु पात्रक पुनर्वास छोट उदाहरणक रूपमे देखाइत अछि, सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाक विस्तृत दृश्य नहि बनि पबैत।

स्त्री-पात्रसभक निर्णय आ सामान्य मानवीय स्वातन्त्र्य

धनेश्वरीक प्रारम्भिक सजगता आरम्भिक जीव-संकटक केन्द्रीय शक्ति अछि। मृणालिनी मृत्युक विवेचनक समय अनुमानक आसान समाधान नहि मानैत

छथि; दीर्घ काल धरि सत्यप्रकाशक मृत्यु-जाँचक स्मृति आ अपन जीवित घरक आवश्यकताक बीच ठाढ़ रहैत छथि। उत्तरभागमे ओ अपन बीमारीक स्थिति, देखभाल आ घरमे रहबाक इच्छा सम्बन्धी निर्णयमे सक्रिय छथि। मूल दृश्य चिकित्सकसँ जोखिम-विचारक सन्दर्भ दैत अछि; एहि पात्रक स्वातन्त्र्यकेँ उपचारक अविवेकपूर्ण निषेधक सामान्य आदर्श कहब असत्य होयत।

तृषाक विधिक भाषा, रचनाक अनुसन्धान, सबीनाक लोकचेतावनी, मंजरीक शैक्षणिक आ आर्थिक प्रश्न, वैदेहीक शोध-सहमति—ई सभ स्त्री-पात्रकेँ केवल पीड़िता अथवा गवाहीक उपकरण नहि बनबैत। ओ सभ प्रश्न पूछैत, साक्ष्य जाँचैत, असहमति व्यक्त करैत आ अपन जीवनक व्यवहार सुधारैत छथि। तथापि कहियो-कहियो पात्र एक विशिष्ट नीति-सूत्रक प्रतिनिधि भऽ जाइत छथि; जे ठाम हुनकर निजी संकोच, द्विधा आ जीवनक असंगति अधिक देखाइत अछि, ओ ठाम साहित्यिक प्रभाव गहिर होइत अछि।

धनेश्वरीक पोथी : लोकज्ञान आ अभिलेखक अनधिकृत पूर्तिक जोखिम

धनेश्वरीक पोथीक क्रमिक पाँति उपन्यासक भावनात्मक आ ज्ञानमीमांसक पुल अछि। पैघ अपराधक सरकारी दस्तावेजक समक्ष घरक संक्षिप्त सूत्र कोई छोट वा हीन ज्ञान-प्रणाली नहि, मुदा ओ स्वतः न्यायालयक प्रमाण सेहो नहि। पोथीक अनाम प्रतिलिपि, सार्वजनिक शिक्षामे ओकर उपयोग, अनुमति आ निजत्वक मर्यादा—एहि विषयसभ पर उत्तरभाग अनेक दृश्य रचैत अछि।

घरक दराजसँ भेटल ‘घर बचेनाइ देबाल बचेनाइ मात्र नहि’ वला अधूर पन्ना ईशान नवम सूत्र कहि पूर्ण नहि करैत। एहि निर्णयमे कृतिक स्रोत-निष्ठता एक अन्तरंग रूप पबैत अछि। जे लिखल नहि गेल, ओकर अभाव ‘लापरवाही’ कहि भरबाक प्रलोभन विद्यमान अछि; ईशान ओकरा नहि भरैत। एक समीक्षकक लेल ई महत्त्वपूर्ण पाठ अछि: मूल वाक्य आधा हो तँ ओकरा आधे रूपमे उद्धृत करब, सम्भावित शेष अर्थ आलोचकक विवेचनमे पृथक राखब।

भारतीय ज्ञान-परम्परा आ नव्य न्यायसँ आलोचनात्मक संवाद

उपन्यासमे प्रमाण, संशय, परिकल्पना, कारण, अनुमान, वैध निष्कर्ष आ प्रतिकूल सम्भावनापर बारम्बार चर्चा अछि। भारतीय न्याय-परम्पराक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक वैधता-विचारक संग एहि प्रश्नक गहन संवाद स्थापित कएल जा सकैत अछि। नव्य न्यायमे अनुमानक आधार, व्याप्ति आ दोषजाँचक विश्लेषण साहित्यिक पाठक प्रश्न-क्रम बुझबामे उपयोगी दृष्टि दैत अछि। अनिरुद्धक पहिल घटनास्थल, मयंकक वित्तीय समानता, रचनाक विपरीत-परिकल्पना आ अन्तिम निर्दोष खाते-कथा एहि पद्धतिक चारि परीक्षास्थल छथि।

मुदा शास्त्रीय अनुवाद आ साहित्यिक अनुरूपताक भेद बनौने राखब आवश्यक अछि। मूल उपन्यास परम्पराक सम्पूर्ण संस्कृत शास्त्रार्थ, प्रमाणित सूत्र अथवा तकनीकी परिभाषाक विस्तृत पुस्तक नहि। अतः एहि समीक्षामे नव्य न्यायक अवधारणाक उपयोग अर्थोन्मेषक विश्लेषणात्मक उपकरणक रूपमे कएल गेल अछि, मूल पाठमे अनुपस्थित शास्त्रीय उद्धरणक दाबी नहि। ई पद्धतिगत सीमा पाठककेँ कल्पित अधिकार-प्रमाणसँ बचबैत अछि।

पाश्चात्य अपराध-आख्यान, सामाजिक उपन्यास आ अनसमाधानित अन्त

पाश्चात्य अपराध-आख्यानक अनेक रूपमे रहस्यक बीज, सन्दिग्ध व्यक्ति, भ्रमक सुराग, जाँचकर्ता आ खुलासाक क्रम भेटैत अछि। एहि उपन्यासमे सेहो वाहनक सुराग, कम्पनीक कागज, वित्तीय मार्ग, पूछताछ, साक्षी आ न्यायालयक निर्णय अछि। मुदा कथा केवल पहिल अपराधक अन्तिम हत्याराक नाम खोलबामे रुचि नहि राखैत। उलटा, अपूर्ण प्रमाणक स्वीकार आ अपराध-पश्चात सामान्य जीवनक विस्तार ओकर उत्तरभागक वास्तविक प्रश्न बनैत अछि।

ई शिल्पगत विस्तार एक दिस मौलिक ताकत, दोसर दिस कथात्मक तनावक चुनौती अछि। जब निर्णयक बाद अनेक पात्रक छोट-छोट दृश्य लगातार अबैत छथि, तखन जाँचक आरम्भिक तीव्र गति स्वाभाविक रूपसँ धीमी होइत अछि।

किछु दृश्य दृष्टान्त अथवा शिक्षापरक सूत्रजेकाँ लगैत छथि। तथापि एहि दीर्घ उत्तरकथाक बिना अनिरुद्ध-रचनाक प्रमाण-पद्धतिक वास्तविक सामाजिक फल पूरा देखाइत नहि। लेखक रोमाञ्चक समाधानक बदला न्याय-संस्कारक निरन्तरताकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : गाम, राजकीय फाइल आ विस्मृत जीवन

गामक भूगोल आ नदीक किनार उपन्यासक स्थानिक आधार अछि; राजधानीक विभाग, ठेकेदारक कार्यालय, अदालत, बैंक, डिजिटल मञ्च आ कारागार अलग-अलग अभिलेखीय सत्ता-स्थान। एतय सत्य एकेक रूपमे दर्ज होइत अछि। सरकारी फाइल ककरो नामक विधान बना सकैत अछि; गामक बोली ओकरे सम्बन्धक आन स्मृति बचा सकैत अछि; बैंकक लेनदेन आर्थिक गति कहैत अछि, भावनात्मक अनुभव नहि; घरेलू पोथी अपन नैतिक परम्परा बचबैत अछि, विधिक निर्णय नहि दैत।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ एहि स्रोतक समानान्तरता विशेष पठनीय अछि। एकल अधिकृत इतिहासक बदला अनेक स्रोतक बीच तनाव, मेल आ अनुपस्थिति पढ़ल जाए। मोहन पासवानक परिवार, कन्हैया रजकक सामाजिक प्रतिष्ठा, सबीनाक रोजीरोटी आ धनेश्वरीक घरेलू स्मृति एहि दृष्टिमे केन्द्र धरि अबैत अछि। घटना-क्रमक ऐतिहासिक सामान्यीकरण करैत काल मूल कृतिक लेखकीय सूचना मानब आवश्यक अछि—निजी पात्र, निजी संस्था आ अपराधक स्थिति कल्पित आख्यानक भाग छथि; एकरा वास्तविक अपराध-पञ्जी कहि प्रस्तुत नहि करब।

कालरचना आ पीढ़ीक अन्तराल

आरम्भिक रातिसँ सत्यप्रकाशक मृत्युक बादक दीर्घ जाँच, डिजिटल अपराधक नव दौर, फैसला, अपील, मृत्यु, सेवानिवृत्ति आ ईशानक लेखन—ई सभ एक सीधी अल्पकालिक घटनाक श्रृंखला नहि। कथा वर्षान्तरक सहायता लैत अछि।

आठ वर्षक पहिल अन्तराल लेखककेँ बालकक स्मृतिक धीरे कथा बनबाक अवसर दैत अछि। बादमे ‘बीस वर्ष पुरान’ मृत्यु-विवेचन परिवारक जीवनमे न्यायिक समयक असामञ्जस्य देखबैत अछि।

कालगत छलाँगक लाभ ई जे अपराधक पहिल घावक दीर्घ असर स्पष्ट होइत अछि। सीमा ई जे बहुतेक उत्तरदृश्य अत्यन्त छोट हुँदा कालपरिवर्तनक सामाजिक विस्तार सङ्केतमे रहि जाइत अछि। एहि शिल्पमे वस्तु—कारी डायरी, अभिलेख, धनेश्वरीक पोथी, पुरान कलम, चश्मा—कालक पुल बनैत अछि; वस्तुक पुनरागमन कथाक अनेक दशकक खाली ठाम भरैत अछि, मुदा हरेक ठाम घटनाक सम्पूर्ण इतिहास नहि दैत।

भाषा, संवाद, दृश्य-लय आ दोहरावक आलोचना

उपन्यासक भाषा अनेक ठाम छोट-छोट वाक्य, नाटकीय विराम, प्रश्नोत्तर आ वस्तुक सूचीसँ बनल अछि। प्रथम दृश्य मे सुतल नेना, गहुमनक फन आ बिज्जीक छलाँगक गतिक भाषा तीक्ष्ण अछि। सत्यप्रकाशक कारी दैनिकी, मयंकक अङ्क, अनिरुद्धक पूछताछ आ सबीनाक लोकचेतावनीमे स्रोतक रूप अनुसार भाषाक रजिस्टर बदलैत अछि। अन्तिम दृश्य ४१८ अति संक्षिप्त होइतहुँ पहिनुक चारि सयसँ बेसी दृश्यक अर्थ उठबैत अछि।

एहि कारीगरीक सीमा पुनरावृत्ति अछि। ‘प्रमाण अलग, अनुमान अलग’, ‘पहरा हो, नियन्त्रण नहि’, ‘निष्कर्षक सीमा’ सन विचार कखनो-कखनो पात्रक कार्यसँ अधिक व्याख्यात्मक वाक्यमे दोहरैत अछि। अनेक उत्तरदृश्य अत्यन्त स्पष्ट दृष्टान्तक रूप लैत अछि। उपन्यास एहि आलोचनाकेँ स्वयं ईशानक पाण्डुलिपि-संशोधनमे सामने अनैत अछि: अधिक बिज्जी काटब, नारा बनल गोहि हटायब, दर्शन केँ संवादमे रखब आ अन्तिम उपदेशक वाक्य काटि देब। ई आत्मसन्दर्भक उपलब्धि अछि, मुदा मूल रचनाक सभ पुनरावृत्ति स्वतः नष्ट भऽ गेल—एहन कहब उचित नहि।

बिज्जी, गहुमन आ गोहि : प्रतीकक रूपान्तरण

तीन जीवक उपस्थितिक अर्थ पूरे कथामे स्थिर नहि। पहिल भागमे साँप प्रत्यक्ष देहगत संकट, बिज्जी तत्क्षण रक्षक, गोहि नदेखल गहिर जोखिमक कहबी-सम्बद्ध छवि अछि। मध्यभागमे गोहि संस्थागत अपराधक रूपक बनैत अछि, बिज्जी सावधान जाँचक प्रतीक। उत्तरभागमे कथाकार स्वयं स्वीकार करैत अछि जे जीवकेँ नैतिक वर्गमे स्थायी रूपसँ फँसा देनाइ अशुद्ध होइत; गोहि जीव स्वयं अपराधी नहि, बिज्जी हर परिस्थिति मे युद्धक चिह्न नहि।

अन्तमे गहुमन दिशा बदलि जाइत अछि, गोहि ऊपर आबि डूबैत अछि, बिज्जी किनार नहि छोड़ैत। जीवसभक एहि व्यवहारमे हत्या वा विजयक ऐतिहासिक फैसला नहि, प्रतीकक लघु पुनर्रचना अछि। उपन्यासक अन्तिम पाँति पहराक निरन्तरता कहैत अछि, अपराधक अनन्त विजय नहि। रूपकक एहि जटिल रूपान्तरणमे कृतिक कलात्मक उपलब्धि निहित अछि।

न्यायिक सीमा, नैतिक दायित्व आ क्षमाक अधिकार

अनेक पात्रक पाछाँ बाँचल जीवन दण्डक वितरणसँ एकसरि निर्धारित नहि। देवांशुक सिद्ध दायित्व आ असिद्ध विशेष हत्या-आदेश, केशवक क्षमा-याचना आ पीड़ितक अस्वीकारक सम्भावना, सौरभक शोध-स्रोतदान आ इतिहासकारक स्वतंत्र आलोचना, निर्दोष बैंकखाताक सामाजिक पुनर्वास—ई सभ न्यायिक, नैतिक आ सामाजिक मानदण्डकेँ पृथक करैत अछि।

कृतिक राजनीतिक वा दार्शनिक मूल्य एक निश्चित दण्ड-सूत्रमे नहि, भिन्न भारक निष्कर्ष कहबाक संयममे अछि। जकरा अदालत मुक्त करैत अछि ओकरा सामाजिक न्याय फेर दोषी ठहराऽ समाप्त नहि करय; जकर अपराध सिद्ध अछि ओकर आत्मकथा माफी लेल पर्याप्त नहि; जकर क्षति भेल ओकरा सार्वजनिक क्षमा देबाक आदेश नहि। एहन असमान न्याय-स्थितिकेँ एक ठाम राखब कृतिक गंभीरता अछि।

उपन्यासक उत्तरभागमे लेखन स्वयं एक पात्र

ईशानक लिखल जा रहल उपन्यास कथाक भीतर अवस्थित अछि। दृश्य ४०२–४१५ मे ओ अपन लेखनपर पुनर्विचार करैत अछि, अन्तक व्याख्यात्मक वाक्य काटैत अछि आ मूल जीव-प्रतिमाकेँ फेनु रचैत अछि। एहि कारण वास्तविक उपन्यास आ पात्रक कल्पित पाण्डुलिपि बीच स्तर-भेद उभरैत अछि। शीर्षक समान होइतहुँ लेखक गजेन्द्र ठाकुर आ पात्र ईशानकेँ एकरूप करब पाठ-विरुद्ध होयत। ई लेखकीय आत्मसन्दर्भक महत्त्वपूर्ण सावधानी अछि।

ईशानक मरल व्यक्तिक मुँहमे कल्पित वाक्य नहि रखबाक निश्चय अनुसन्धानक नैतिकताकेँ साहित्यिक रूप दैत अछि। पोथीक अधूर वाक्य नहि पूरब, निजी फोटो सार्वजनिक नहि करब आ अपराधीक भाग्यक सम्पूर्ण सूची नहि देब—ई सभ संपादकीय निर्णय साक्ष्यक सीमा आ रचनात्मक संयमक संयुक्त अभ्यास बनैत अछि।

उपलब्धि, सीमासभ आ समेकित निर्णय

‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क प्रमुख उपलब्धि तीन धरातलपर अछि। प्रथम, अपराधक कथा मे प्रमाणक अनुशासन, भ्रामक सुरागक सुधार आ असिद्ध आरोपक मर्यादा स्थापित करब। दोसर, डिजिटल वित्तीय जालक पीड़ितसभक जीवनमे लाज, समय, रोजीरोटी, परिवार आ नव अवसरक हानिकेँ दस्तावेजी अंकक समकक्ष नैतिक प्रश्न बनायब। तेसर, अपराध-पश्चात दीर्घ उत्तरकथामे जीवित समुदाय, संस्थागत शिक्षा, पारिवारिक स्मृति आ लेखकीय संयमक निरन्तरता देखायब।

एहि संग कृतिक कमीसँ आँखि नहि मूँदि सकैत छी। किछु दृश्य उपदेशात्मक छथि; दार्शनिक निष्कर्ष कथनक तुरन्त बाद फेर स्पष्ट कएल जाइत अछि; दीर्घ उत्तरभागक प्रसङ्गसभमे मनोवैज्ञानिक विस्तारक बदला दृष्टान्तात्मक संक्षेप अधिक अछि; पात्रक अनेक नाम आ संस्थागत सम्बन्ध नव पाठकक लेल भार बनि सकैत अछि। मुदा ई सीमासभ कृतिक तथ्यसाक्ष्य-सम्बद्ध निष्ठा, प्रयोगशील कालरचना आ नैतिक सूक्ष्मताकेँ नष्ट नहि करैत।

अन्तिम मूल्याङ्कन एहि रूपमे कएल जा सकैत अछि: ई उपन्यास अपराधक सम्पूर्ण अन्तिम समाधानक दावा नहि, दोषारोपणसँ पहिने सत्यापन, सत्तासँ अलग विवेक आ शोकक बादो सामाजिक जीवनक निरन्तरताक कथा अछि। पहिल दृश्य मे एक बिज्जी बालकक जीवन बचबैत अछि; अन्तमे पहरा अनेक नागरिक, विद्यालय, बैंक, न्याय-प्रक्रिया, लेखन आ घरक साधारण काममे वितरित भऽ जाइत अछि। अन्हार बढ़ैत अछि; पहरा समाप्त नहि। एहि अनिर्णीत, मुदा सक्रिय अन्तमे कृतिक साहित्यिक विशिष्टता टिकैत अछि।

ग्रन्थाधार

ठाकुर, गजेन्द्र। बिज्जी : गोहि सभक बीच : न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा। विदेह, मूल मैथिली पाण्डुलिपि, संस्करण २०२१/२०२६।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय · खण्ड १६

‘अपराधी के ?’ मात्र नहि — ‘अभिलेख कतेक कहैत अछि ?’



बिज्जी : गोहि सभक बीच

‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’ गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली उपन्यासक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा अछि। एहिमे उपन्यासक ४१८ दृश्यकेँ एक सय पाँच अध्ययन-इकाईमे पढ़ल गेल अछि। प्रत्येक दृश्यक अलग आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, आ प्रत्येक दृश्य-समूहक बाद तुलनात्मक मूल्याङ्कन देल गेल अछि।

कथा निविदा-व्यवस्था, आर्थिक दबाव, मृत्यु-जाँच, डिजिटल वित्तीय अपराध, अदालत, पारिवारिक शोक आ सामाजिक पुनर्वास धरि पसरैत अछि; समीक्षा ओकरा न्याय-दर्शनक कसौटीपर परखैत अछि। केन्द्रमे ‘निर्दोष व्यक्तिक सम्मान कोना सुरक्षित रहय ?’ आ ‘दोषसिद्धि आ नैतिक दायित्वमे की अन्तर अछि ?’ सन प्रश्न अछि।

अन्तमे सम्पूर्ण कृतिक कथात्मक, भाषिक, दार्शनिक आ सामाजिक मूल्याङ्कन प्रस्तुत अछि।

४१८ दृश्य · **१०५ अध्ययन-इकाई** · **समग्र समीक्षा**

विदेह वेबसाइट

www.videha.co.in

स्कैन करू

विदेह ई-जर्नल

videha-ejournal.github.io/videha

स्कैन करू

© प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर, २०२६ · सर्वाधिकार सुरक्षित · विदेह · ISSN 2229-547X